

फैजाने सुन्नत जिल्द-2 का एक बाब

गीबत के ज़रूरी अहकाम सीखना फ़र्ज़ है।



गीबत की तबाहकारियां

GIBAT KI TABAHKARIYA (HINDI)

इस किताब में गीबत वगैरा की 1800 से जाइद मिसालें भी शामिल हैं

गीबत एक नज़र में
26

ना बालिग की गीबत
52

गीबत करने वाले से पीछा
छुड़ने का तरीका 214

गीबत की 12 जाइज़ सूक्तें
238

ज़ाहिरी अच्छी सोहबतों में
भी गीबत का मरज़ 261

गीबत से बचने का
अनोखा तरीका 264

40 हिक्कयात 301

गीबत के बारे में
सुवाल जवाब 438

शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दावते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इब्न्यास अज़्ज़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم
العالیہ



किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले (المستطرف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।



तालिबे गुमे मदीना

व बक़ीअ

व मग़िफ़रत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

गीबत की तबाह कारियां

येह किताब (ग़ीबत की तबाह कारियां)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाई है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाई है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा,

अहमद आबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 079-25391168

MO. 9377111292, (FOR SMS ONLY)

e-mail : maktabahind@gmail.com

गीबत के ज़रूरी अहकाम सीखना फ़र्ज है

गीबत की तबाह कारियां

मुअल्लिफ़ :

शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بُرُكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अहमद आबाद

याद दाशत

दौराने मुता-लआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये ।

इल्म में तरक्की होगी । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

[illegible]

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ،

नाम किताब : गीबत की तबाह कारियां

मुअल्लिफ़ : शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

साले इशाअत : मुहर्रमुल हराम-सिने 1432 हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अहमद आबाद

: मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :

मुम्बई : 19,20, मुहम्मदअली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने,

मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महेल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुहम्मद अली सराय रोड (C/0) जामिअतुल मदीना, कमाल शाह बाबा दरगाह

के पास मोमिनपुरा नागपुर फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद. नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह,

E-mail: maktaba@dawateislami.net

Ph : +9179 2539 1168 - Email : maktabahind@gmail.com

www.dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

कुछ इस किताब के बारे में.....

सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : “**طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ**” या’नी इल्म का हासिल करना हर मुसल्मान पर फ़र्ज है।” (سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ١ ص ١٤٦ حديث ٢٢٤) ‘यहां स्कूल कोलेज की दुन्यवी ता’लीम नहीं बल्कि ज़रूरी दीनी इल्म मुराद है। लिहाजा सब से पहले बुन्यादी अक्काइद का सीखना फ़र्ज है, इस के बा’द नमाज़ के फ़राइज व शराइत व मुफ़्सिदात, फिर र-मजानुल मुबारक की तशरीफ़ आ-वरी पर फ़र्ज होने की सूरत में **रोज़ों** के ज़रूरी मसाइल, जिस पर ज़कात फ़र्ज हो उस के लिये **ज़कात** के ज़रूरी मसाइल, इसी तरह **हज़** फ़र्ज होने की सूरत में हज़ के, **निकाह** करना चाहे तो इस के, **ताजिर** को ख़रीदो फ़रोख़्त के, **नोकरी** करने वाले को नोकरी के, नोकर रखने **±** (या’नी और इसी पर क़ियास करते हुए) **हर मुसल्मान अक़िल व बालिग़ मर्द व औरत पर उस की मौजूदा हालत के मुताबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज ऐन है।** इसी तरह हर एक के लिये मसाइले हलाल व हराम भी सीखना फ़र्ज है। नीज़ **मसाइले क़ल्ब** (बातिनी मसाइल) या’नी फ़राइजे क़ल्बिया (बातिनी फ़राइज) म-सलन अज़िज़ी व इख़लास और **तवक्कुल** वगैरहा और इन को हासिल करने का तरीका और **बातिनी गुनाह म-सलन तकब्बुर, रियाकारी, हसद** वगैरहा और इन का इलाज सीखना हर मुसल्मान पर अहम फ़राइज से है। (तफ़सील के लिये देखिये फ़तावा र-जविय्या, जि. 23, स. 623, 624) **मोहलिकात** या’नी हलाकत में डालने वाली चीज़ों जैसा कि झूट, **गीबत**, चुग़ली, बोहतान वगैरा के बारे में ज़रूरी मा’लूमात हासिल करना भी **फ़र्ज** है ताकि इन गुनाहों से बचा जा सके इस ज़िम्न में **गीबत की तबाह कारियां** आप के हाथ में हैं, इस में **गीबत के मु-तअल्लिक़** सदहा मिसालों समेत तफ़सीली जब कि बा’ज दीगर **मोहलिकात** के बारे में इज्माली (या’नी मुख़्तसरन) बयान है। मैं ने तो दर अस्ल अपने एक मत्बूआ मक्तूब “गीबत की तबाह कारियां” के तख़रीज शुदा नुस्खे की नोके पलक संवारने का इरादा किया था ताकि कुछ तरमीम व इज़ाफ़ा कर के मज़ीद बेहतर तरीके पर इस को तब्बअ करवाया जा सके, मगर फिर ज़ेहन बना कि क्यूं न ख़ूब तफ़सीलात से मुज़य्यन कर के इस को **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द 2 का एक बाब बना दिया जाए। इस सिलसिले में **दा’वते इस्लामी** के उ-लमा पर मन्नी मजलिस, **अल मदीनतुल**

इल्मिय्या से इस्तिआनत की, इस के इस्लामी भाइयों ने दस्त गीरी फ़रमाई और उन्होंने ने मुझे आयात व रिवायात व हिकायात पर मब्नी बहुत सारा मवाद फ़राहम कर दिया। ग़ीबत की बे शमार मिसालें भी मुझे मेइल कीं। दा'वते इस्लामी की मजलिसे दारुल इफ़ता के मुफ़्ती साहिब ने निहायत गहरी दिल चस्पी ली, इस किताब को बिल इस्तीआब या'नी अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा पढ़ा, और अपनी उम्दा रहनुमाई के ज़रीए मुफ़ीद तब्दीलियां फ़रमाई इस किताब को इल्मी जामा पहना दिया। हकीक़त तो येह है कि मेरी येह किताब बल्कि हर किताब व तमाम रसाइल का तरतुब उ-लमाए अहले सुन्नत (كَرَّمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى) के क़दमों की धूल का सदक़ा है वरना मन आनम कि मन दानम (या'नी मैं जैसा हूं खुद ही जानता हूं)

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ! “ग़ीबत की तबाह कारियां” के मुआविनीन उ-लमाए दीन और साथ देने वाले तमाम इस्लामी भाइयों को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमा, मेरी इख़लास से क़तअन आरी इस काविश को मुख़्लसीन के तुफ़ैल क़बूल फ़रमा और इसे नाफ़ेए मुस्लिमीन बना। मुझ गुनाहगारों के सरदार, अत्तारे ख़ताकार को और फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 के इस बाब “ग़ीबत की तबाह कारियां” मुकम्मल तौर पर पढ़ने या सुनने वाले और वालियों को ग़ीबत की तबाह कारियों से बचा और बे हिसाब बख़्श कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पड़ोस में बसा। ऐ खुदाए रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ताजदारे रिसालत की सारी उम्मत की ग़ीबत से हिफ़ाज़त और सभी की मग़िफ़रत फ़रमा। آمين بِجَاوِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



तालिबे ग़मे मदीना व
बकीअ वमग़िफ़रत व
बे हिसाब
जन्नतुल फ़िरदौस
में आका का पड़ोस

14 र-मज़ानुल मुबारक 1430 हि.
05 सितम्बर सि. 2009 ई.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“या अल्लाह ! फ़ैज़ाने सुन्नत आम हो जाए” के तेईस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 23 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है । (معجم كبير طبرانی حديث ٥٩٤٢ ج ٦ ص ١٨٥ بيروت)

दो म-दनी फूल : ﴿1﴾ बिगैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ-मले खैर का सवाब नहीं मिलता ।

﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

﴿1﴾ हर बार हम्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअव्वुज व ﴿4﴾ तस्मिया से आगाज़ करूंगा (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो² अ-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों⁴ निय्यतों पर अमल हो जाएगा) ﴿5﴾ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुता-लआ करूंगा ﴿6﴾ हत्तल व्सअ इस का बा वुजू और ﴿7﴾ क़िब्ला रू मुता-लआ करूंगा ﴿8﴾ कुरआनी आयात और ﴿9﴾ अहादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴿10﴾ जहां जहां “अल्लाह” का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿11﴾ जहां जहां “सरकार” का इस्मे मुबारक आएगा वहां ﷺ पढ़ूंगा ﴿12﴾ शर-ई मसाइल सीखूंगा ﴿13﴾ अगर कोई बात समझ न आई तो उ-लमा से पूछ लूंगा ﴿14﴾ हज़रते सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इस कौल “عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِيلُ الرَّحْمَةِ” या’नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रहमत नाज़िल होती है ।” (हिल्यतुल औलिया, जि. 7, स. 335, रक़म : 10750) पर अमल करते हुए ज़िक्रे सालिहीन की ब-र-कतें लूटूंगा ﴿15﴾ (अपने ज़ाती नुस्खे पर) इन्दज़रूरत खास खास मक़ामात पर अन्दर लाइन करूंगा ﴿16﴾ (अपने ज़ाती नुस्खे पर) “याद दाश्त” वाले सफ़हे पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴿17﴾ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते हुसूले इल्मे दीन रोज़ाना चन्द स-फ़हात पढ़ कर इल्मे दीन हासिल करने के सवाब का हक़दार बनूंगा ﴿18﴾ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरगीब दिलाऊंगा ﴿19﴾ इस हदीसे पाक تَهَادُّوا تَحَابُّوا या’नी एक दूसरे को तोहफ़ा दो आपस में महब्बत बढ़ेगी । ﴿20﴾ पर अमल की निय्यत से (एक या हस्बे तौफ़ीक़ ता’दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगा ﴿21﴾ जिन को दूंगा हत्तल इम्क़ान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने दिन (म-सलन 25) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴿22﴾ जो नहीं जानते उन्हें सिखाऊंगा ﴿23﴾ इस किताब के मुता-लआ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा किताबत वगैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा (नाशिरीन व मुसन्निफ़ को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना खास मुफीद नहीं होता)

उन्वान	सफ़हा नम्बर	उन्वान	सफ़हा नम्बर
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	25	दो ² फ़रामैने मुस्तफ़ा ﷺ	38
अक्सरियत ग़ीबत की लपेट में है	25	क्या ग़ीबत से रोज़ा टूट जाता है ?	38
ग़ीबत की तबाह कारियां एक नज़र में	26	ख़ौलते पानी और आग के दरमियान दौड़ने वाला	39
म-दनी हिक्क़ायत	27	ख़ौफ़े गुनाह हो तो ऐसा !	39
ग़ीबत हराम होने की हिक्मत	28	तूने अपने भाई का गोश्त खाया है	40
ग़ीबत के मु-तअल्लिक़ एक ए'तिराज़ का जवाब	29	बैठक से उठ कर जाने वाले की ग़ीबत की 16 मिसालें	41
ग़ीबत व बोहतान का फ़र्क़	29	मुंह से गोश्त निकला	41
ग़ीबत की ता'रीफ़ बहारे शरीअत में	30	औरतों में की जाने वाली ग़ीबतों की 23 मिसालें	42
ग़ीबत की ता'रीफ़ अज़ इब्ने जौज़ी	30	शहन्शाहे मदीना ﷺ का	
ग़ीबत क्या है ?	31	दीदार नसीब हो गया	42
मैं अ़लाके का नामी गिरामी बद मअ़श था !	32	तुम ने अभी अभी गोश्त खाया है	44
इन्फ़रादी कोशिश की ब-र-क़त से राहे जन्नत मिल गईं	34	मुर्दार ख़ोर जहन्नमी	45
हर कलिमे के बदले एक साल की इबादत का सवाब	34	मुर्दार का गोश्त खाना आसान नहीं	45
अक्सर घर मैदाने जंग बने हुए हैं	35	जहन्नमी बन्दर व खिन्ज़ीर	46
सीनों से लटके हुए लोग	35	चार ⁴ नसीहतें	46
तांबे के नाख़ुन	35	ग़ीबत ईमान के लिये नुक़सान देह है	46
औरतें ज़ियादा ग़ीबतें करती हैं	36	कुफ़्र पर मरने वाले के अज़ाबे क़ब्र की कैफ़ियत	47
पहलूओं से गोश्त काट कर खिलाने का अज़ाब	36	जहन्नम में हमेशा रहने की लर्ज़ा ख़ैज़ कैफ़ियत	47
क़ियामत में मुर्दा भाई का गोश्त खिलाया जाएगा	36	नफ़ली इबादत न करने वाले से नफ़रत करना कैसा ?	49
ज़बान जलने से महफूज़ रहेगी	37	मुस्तहब्बात व नवाफ़िल में ग़ीबत की 9 मिसालें	50
नमाज़ व रोज़े की नूरानियत गई	38	ग़ीबत के अन्दाज़	50

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
ना बालिग़ की ग़ीबत	52	ज़ेहनी कश्मक़श से नज़ात मिली	68
किस बच्चे की ग़ीबत जाइज़ है और किस की ना जाइज़ ?	53	इज्तिमाअ में सवाब की निय्यत से शिर्कत करनी चाहिये	70
छोटे बच्चे की ग़ीबत की 17 मिसालें	53	दो ^२ क़ब्रों में होने वाले अज़ाब के अस्बाब	70
बच्चों को ग़ीबत मत करने दीजिये	54	ﷺ आका को इल्मे ग़ैब है	71
बच्चों की फ़रियाद रसी कीजिये	55	क़ब्र में अज़ाब हो रहा है	71
बच्चों से सादिर होने वाली ग़ीबत की 22 मिसालें	55	क़ब्रों पर फूल डालना मुस्तहब है	72
बच्चों को झूटे बहलावे मत दीजिये	56	ग़ीबत ज़िना से भी सख़्त तर है	73
गूंगा क़ादियानी कैसे मुसल्मान हुवा	56	मैं समझा शायद तूने ग़ीबत की है	73
मुसल्मान की बे इज़्ज़ती कबीरा गुनाह है	58	ग़ीबत ज़िना से कब सख़्त है	73
ﷺ खुदा व मुस्तफ़ा को ईज़ा देने वाला	58	ग़ीबतों वग़ैरा गुनाहों के मु-तअल्लिक़ एक मा'लूमाती फ़तवा	74
मोमिन की हुरमत का'बे से बढ़ कर है	59	ज़िना छोटा गुनाह नहीं	75
कामिल मुसल्मान की ता'रीफ़	59	दो ^२ सांप नोच कर खाएंगे	75
दाइरए ईमान से निकल जाने का ख़तरा	59	जहन्नमी ताबूत	75
बद अक़ीदगी से तौबा	60	जन्नत में दाख़िले से महरूम	75
बद मज़हबों से दूर रहने की हदीसों में ताकीद	62	नज़र दिल में शहवत का बीज बोती है	76
बद मज़हब को उस्ताद बनाना	63	आंखों में पिघला हुवा सीसा	76
अज़ाबे क़ब्र के होलनाक मनाज़िर	64	आंखों में आग भर दी जाएगी	77
मुसल्मानो ! डर जाओ !	65	आग की सलाई	77
पेशाब से न बचने वाले की क़ब्र से पुकार !	65	जहन्नम से आज़ाद होने वाली आंखें	77
हर गुनाह के बदले एक उज़्र क़टा जाएगा !	67	तुम जन्नत में मेरे साथ होगे	77
नज़अ, क़ब्र और मुन्कर नकीर की ख़ौफ़नाक मन्ज़र क़शी	67	इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत	78

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
इन्फ़ि़ादी कोशिश सवाब का आसान ज़रीआ है	79	ईमां की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में	96
जहन्नम का खाना और लिबास मिलेगा	80	गीबत करने वाले की दुआ क़बूल नहीं होती	97
दोज़ख़ की आग के अंगारे खाएगा	80	जन्नत की ज़मानत	98
जहन्नम की ग़िज़ा और मशरूब	81	जन्नत में आका का पड़ोसी	98
बे जा ए'तिराज़ात करने वाले	82	जन्नत की 22 झलकियां	98
खुद चाहे ह़राम खाते हों मगर.....	82	हूरें पाने का अमल	101
दूसरे की आंख का तन्का तो नज़र आता है मगर...	83	मुसलमानों की आबरू वग़ैरा दूसरे मुसलमान पर ह़राम है	101
ऐसे काम न करो कि लोग ग़ीबत करें	83	तकब्बुर किसे कहते हैं	102
म-दनी चैनल पर म-दनी मुज़ाकरा सुनने की म-दनी बहार	86	किसी को ह़क़ारत से मत देखो	102
बहार में चार ग़ीबतें	87	मुसलमान कौन ? मुहाजिर कौन ?	103
رَبِّیُّ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمُ صَلَی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आका की सहाबा से महब्बत	88	इशारे से तक्लीफ़ देना भी जाइज़ नहीं	104
तुम को तो गुलामों से है कुछ ऐसी महब्बत	89	दिल हिला देने वाली ख़ारिश	104
पीर की नज़र से मुरीद को गिराने की कोशिश करने वालों को तम्बीह	90	जश्ने विलादत की ब-र-कत से किस्मत खुल गई	105
“बड़ों” को भी चाहिये “छोटों” की ग़ीबत न सुनें	91	चरागा देख कर काफ़िर ने इस्लाम क़बूल कर लिया	106
चुगुल ख़ोर कभी सच्चा नहीं हो सकता	92	जश्ने विलादत का चरागां	107
सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का तर्ज़े अमल	93	एक हज़ार शम्पूं	107
तुम मेरे पास तीन बुराइयां ले कर आए	93	हकीकी मुफ़िलस	108
महब्बतों के चोरों से बचो	94	आह ! क़ियामत के रोज़ क्या होगा !!	108
जुदा होने तक हालते जिहाद में	94	मैं ने अपनी इज़्ज़त लोगों पर स-दका की	110
म-दनी चैनल की बदौलत मौत से 17 दिन क़बूल ईमान मिल गया	95	पेशगी मुआफ़ करने वाले की मग़िफ़रत हो गई	110
मरने से क़बूल कोई सुधरता है तो कोई बिगड़ता है	95	इमामे मज़लूम की अपनी इज़्ज़त के मु-तअल्लिक़ सखावत	110

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
1 मुआफ़ करने की अज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत	111	गेहूँ का दाना तोड़ने का उख़वी नुक़सान	124
2 जन्नत पाने के तीन ³ नुस्ख़े	111	जो अपने लिये पसन्द करे वोही दूसरे के लिये कहे	125
म-दनी वसिय्यतें	112	फुलान ने मेरी ग़ीबत की येह जान कर गुस्से न हों	125
मैं ने इल्यास कादिरी को मुआफ़ किया	113	गीबत करने वाले को समझाने का एक नया अन्दाज़	126
क़र्ज़ ख्वाहों से म-दनी इल्तिजा	113	अल्लाहु ^{عَزَّوَجَلَّ} ज़ब्बार की खुफ़्या तदबीर का शिकार	127
दिल का दर्द दूर हो गया	114	सामने कुछ पीछे कुछ	127
दिल का बातिनी मरज़ बाइसे हलाकत है	115	निफ़ाक़ से नफ़रत	127
दिल का सियाह नुक़्ता	115	आज कल निफ़ाक़ का अन्दाज़	128
नसीहत का असर न होने की वजह	115	गुनाह पर शरमिन्दा करने का अन्जाम	129
ज़बान का ग़लत इस्ति'माल क़ब्र में फंसा सकता है	116	ताइब को शरमिन्दा किया तो खुद गुनाह में फंस गया	129
क़ब्र में आका क्यूँ नहीं आ सकते !	117	दरख़्त लगा रहा हूँ	129
पुल सिरात पर रोक दिया जाएगा	117	जन्नत में चार दरख़्त लगेंगे	131
पुल सिरात से गुज़रने वालों के मुख़लिफ़ अन्दाज़	118	80 बरस के गुनाह मुआफ़	123
किसी की तकलीफ़ देख कर खुश न हों	119	बिस्मिल्लाह कीजिये कहना मम्मूअ है	130
किसी की मुसीबत पर खुश होने की मिसालें	119	बिस्मिल्लाह कहना कब कुफ़्र है	131
तीन काम नहीं कर सकते तो यूँ कर लो	120	कब ज़िक्कुल्लाह करना गुनाह है !	131
मुसल्मान की इज़ज़त बुजुर्गों की नज़र में	120	इस्तिक्बाल के लिये अल्लाह अल्लाह की सदाएं बुलन्द करना	131
दुन्या ज़हान की दौलत एक तरफ़ और ग़ीबत एक तरफ़	121	अपनी नेकियां तुम्हें क्यूँ दूँ ?	132
हरनया के दर्द का ख़ातिमा	122	ग़ीबत गोया नेकियां फेंकने की मशीन है	132
बीमारी की फ़ज़ीलत	123	कभी ग़ीबत नहीं की	132
एक तिन्के ने जन्नत से रोक दिया	124	जो ज़ियादा बोलता है वोह ज़ियादा ग़-लतियां करता है	133

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
दीवाने हो जाओ	133	“मौलवी लोग क्या जानते हैं” कहना कैसा ?	143
जन्नत के महल्लात हासिल करने का नुस्खा	133	“दीन पर अमल को मौलवियों ने मुश्किल बना दिया है” कहना कैसा ?	144
गीबत की बदबू	134	मौलवियों वाला अन्दाज़	144
हर बाल के बदले एक एक नूर	135	“आलिम सारे ज़ालिम” कहने का हुक्म शर-ई	144
दर्स देने वालों के लिये दुआए अन्तार	136	आलिमे दीन को इफ़्कारत से मुल्ला कहना	144
तन्हा दर्स देने की ब-र-कत	136	“मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे” कहना	145
मक़बूलियत का मदार किल्लत व कसरत पर नहीं	137	तौहीने उ-लमा के मु-तअल्लिक 10 पैरे	145
सिर्फ एक फ़र्द ने तस्दीक की	137	काश मैं दरख़्त होता !	146
950 साल में सिर्फ 80 आदमी ईमान लाए	138	काश मुझे ज़ब्द कर दिया जाता	147
गीबत गुनाहे कबीरा है	138	आह ! मेरे गुनाह !!	147
आलिम के बारे में एहतिyत की हिकायत	138	ता'लीमे कुरआन के दो फ़ज़ाइल	148
अच्छ गुमान इबादत है	139	गुस्ताख़े रसूल का अन्जाम	149
आलिम की गीबत करने वाला रहमत से मायूस	139	गर्मियों में रोज़ा आसान मगर चुप रहना मुश्किल	150
दोज़ख़ के कुत्ते काटेंगे	139	जिगर का केन्सर ठीक हो गया	151
रात के सन्नाटे में कुत्ता हम्ला आवर हो तो.....	140	कोई मरज़ ला इलाज नहीं	152
उ-लमा की गीबत की 11 मिसालें	140	केन्सर के दो इलाज	153
आलिम की तौहीन कब कुफ़्र है और कब नहीं	141	गीबत के मुख़ालिफ़ तरीक़े	153
उ-लमा की तौहीन के बारे में चन्द सुवाल जवाब	141	मोमिनों पर तीन एहसान करो !	153
आलिमे बे अमल की तौहीन	141	मुसल्मान की भलाई बयान करने वालों के लिये फ़िरिश्तों की दुआ	153
जाहिल को आलिम से बेहतर जानना कैसा ?	143	मीठे बोल की मीठी हिकायत	154
तालिबे इल्मे दीन को कूएं का मेंडक कहना	143	मीठी ज़बान	155

उन्वान	सफ़हा नम्बर	उन्वान	सफ़हा नम्बर
ज़िक्रो दुआ के अन्दाज़ पर ग़ीबत	153	सियासी तब्सरों की बैठकें	170
क्रियामत का होशरुबा मन्ज़र	157	फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं	170
लोग मुता-लबे कर रहे होंगे	159	अख़्तारी ख़बरों का हाल बे हाल	170
इस्लाह का हसीन अन्दाज़	160	कुत्तों की तरह काटते और नोचते होंगे !	171
हाजी मुश्ताक़ सुनहरी जालियों के रू बरू	160	दुआए कुनूत पढ़ने वाला अपना वा'दा निभाए	172
मुक़द्दर वालों के सौदे	161	नेकी की दा'वत देने के लिये फ़ासिकों के पास जाना जाइज़ है	173
दीदारे मुस्तफ़ा <small>صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم</small> का वजीफ़ा	162	हज़्ज़ाज बिन यूसुफ़ की ग़ीबत से भी परहेज़	173
ग़ीबत नेकियों को जला देती है	163	तीन उयूब की नुहूसत की इब्रतनाक हिक्मयत	174
मेरी नेकियां कहां गई ?	163	नज़्ज़ में कुफ़्र बकने का शर-ई मस्अला	175
क्रियामत में एक एक लफ़्ज़ का हिसाब होगा	164	अक्सर ख़ताएं ज़बान से होती हैं	175
जिस की ग़ीबत की जाए वोह फ़ाएदे में.....	165	रोज़ाना सुब्द आ'ज़ा ज़बान की खुशामद करते हैं	175
मेरी मां मेरी नेकियों की ज़ियादा हक़दार है	165	जो दिल में होता है वोही ज़बान पर आता है	176
मां के पूरे हुक्क़ अदा नहीं किये जा सकते	165	ज़बान की बे एहतियाती की आफ़तें	176
आधे गुनाह मुआफ़	166	हमेशा की रिज़ा व नाराज़ी	176
सारी रात की इबादत और ग़ीबत	166	पहले तोलो फिर मुंह से बोलो	177
100 बरस की नफ़ली इबादत और एक ग़ीबत	166	कुफ़ले मदीना लगाने ही में आफ़िय्यत है	177
हाज़त रवाई और बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत	167	दिल की सख़्ती का अन्जाम	177
जन्नत के दो जोड़े	168	बक बक की आदत कुफ़्र में डाल सकती है	178
ग़ीबत सुनना भी हराम है	168	ग़ीबत करने वाला क़ाबिले रहम है	178
ग़ीबत में शिर्क़त के तमाम अन्दाज़ गुनाह हैं	169	“बहुत सोता है” कहना ग़ीबत है	179
बादशाह की सड़ी हुई लाश	169	ग़ीबत सुनने वाला भी ग़ीबत करने में शरीक़ है	179

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
खाने और बोलने से मु-तअल्लिक गीबत की 12 मिसालें	179	गस्साल मुर्दे की बुराई बयान न करे	193
पीछे से इशारतन “ठिगना” कहना गीबत है	180	मरने के बा’द बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ !	193
किसी के फ़ित्ती ऐब बयान करना बड़े ख़ौफ़ की बात है	180	मरे हुए काफ़िर की गीबत	193
किसी को “कमज़ोर है” कहना !	181	6 मुर्दों की सन्सनी खैज़ हिकायात	194
किसी की कमज़ोरी के इज़हार की गीबत की 9 मिसालें	181	﴿1﴾ आग का कुरता	194
किसी के मा’यूब मरज़ का तज़्किरा करना	182	صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم सरकार से कुछ छुपा हुवा नहीं	194
लूले लंगड़े की गीबत	182	﴿2﴾ बे दीन की गरदन में सांप	195
लिबास की ख़ामी बताना भी गीबत है	182	﴿3﴾ गरदन में सांप लिपटा हुवा था	195
लिबास के मु-तअल्लिक गीबत की 24 मिसालें	183	सहाबा के हक़ में खुदा से डरो !	196
जूए के कारोबार से तौबा	184	सहाबए किराम का निहायत अदब कीजिये	196
जूआ हराम है	184	﴿4﴾ क़ब्र में भयानक काला सांप	197
जूआ खेलना गुनाह है	185	धोकाबाज़ी जहन्नम से है	197
जूआ शैतानी काम है	185	मिलावट वाला माल बेचने का जाइज़ तरीक़ा	198
जूआ में जीता हुवा माल हराम है	186	﴿5﴾ परिन्दे ने कैकी तो उस में से इन्सान निकल पड़ा !	199
गोया खिन्ज़ीर के खून और गोश्त में हाथ डबोया	187	इब्ने मुल्जिम ने मौला अली को क्यूं शहीद किया ?	220
जूए की दा’वत देने वाला कफ़्फ़ारे में स-दक़ा करे	187	﴿6﴾ हौज़ पर उलटा लटका हुवा आदमी	201
जूआ की ता’रीफ़	188	क़ाबील के सियाह कारनामे	201
जूए की 6 सूरतें	188	दर्स में शिक़्त मेरी इस्लाह का सबब बन गई	202
जूए से तौबा का तरीक़ा	190	क़ब्र की रोशनी	203
फ़ौत शुदा की बुराई करना भी गीबत है	191	क़ब्रें जगमगा रही होंगी	204
“फ़ुलाने ने खुदकुशी कर ली” येह कहना गीबत है	192	दा’वत में गीबत की हिकायात	204

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
किसी को सुस्त वगैरा कहने के मु-तअल्लिक 19 मिसालें	205	गला घोटने का अज़ाब	219
दोनों जहां की ज़िल्लत	206	घर जा कर नेकी की दा'वत देते	220
अल्लाह की दी हुई इज़्ज़त कौन छीन सकता है !	207	“गुनाह उठा लिये” की वज़ाहत	220
ﷺ आका ने ख़्वाब में फ़रमाया	208	रहमत पलट जाती है	221
मस्जिद भरो इज्तिमाअ़ मरहबा !	209	अज़ाबे क़ब्र के तीन हिस्से	221
दाढ़ी के मु-तअल्लिक एक इब्रतनाक ख़्वाब	209	कुत्तों की शक़ल में उठेंगे	221
ﷺ आका की महबूबत की निशानी सजा लीजिये	210	गोश्त की छोटी सी बोटी	222
सूद से बड़ा गुनाह कौन सा है ?	210	हर बात पर साल भर की इबादत का सवाब	222
मुसल्मान की इज़्ज़त पर हाथ डालना सूद से बड़ा गुनाह है	211	आशिक़ाने रसूल के मीठे बोल की ब-रकात	223
मुसल्मान की इज़्ज़त की हिफ़ज़त का सवाब	212	क़ब्र का भयानक तसव्वुर	224
गीबत से रोकने के चार फ़ज़ाइल	213	भाभी ने जादू करवा दिया है	225
गीबत करने वाले के सामने ता'रीफ़	214	अगर घर से सूइयों वाला पुतला बर आमद हो जाए तो !	226
गीबत करने वाले से पीछा छुड़ाने का तरीक़ा	214	जो बाबा पैसे न मांगते हों वोह कैसे ग़लत हो सकते हैं ?	226
गीबत करने वाले को इशारे से नहीं ज़बान से रोकिये	215	अगर तकिये के नीचे से ता'वीज़ निकल आए तो ?	227
उ-लमा को अ़वाम न टोकें	215	मुंह की बदबू के बा वुजूद शराबी न कहा जाए	227
अ़लिम को टोकने के मु-तअल्लिक फ़रमाने आ'ला हज़रत	216	शर-ई सुबूत किसे कहते हैं	228
जिस को सलामती की दुआ दी उसी की गीबत !!!	217	तूने चोरी की	228
ख़ौफ़नाक हादिसा होते होते रह गया	217 कि मेरी आंखों ने देखने में ग़-लत की	228
क्या खुदकुशी से जान छूट जाती है ?	218	तौबा और मुआफ़ी का तरीक़ा	229
आग में अज़ाब	219	ड्राइवर की जान बच गई	230
उसी हथियार से अज़ाब	219	सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रहमतों का नुज़ूल होता है	230

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
ज़िक्र किसे कहते हैं ?	231	बद अक़ीदा शख्स की ग़ीबत	243
पूरी क़ौम की ग़ीबत का मस्अला	232	मन्हूस बद मज़हबों की बात सुननी ही नहीं है	244
लंगड़े की नक्काली	232	बद मज़हबी की बू	245
नाम लिये बिग़ैर ग़ीबत करना	232	बद मज़हबों के पास बैठना कैसा ?	2456
मुंह पर भी कह सकता हूं !	232	ग़ैर मुस्लिम का क़बूले इस्लाम	246
बन्द अल्फ़ाज़ में ग़ीबत	233	25 ग़ैर मुस्लिम क़ैदियों का क़बूले इस्लाम	247
कुछ कहूंगा तो ग़ीबत हो जाएगी	233	ग़ीबत पर उभारने वाली 16 चीज़ों का बयान	248
ऐब पोशी केलिये झूट जाइज़ होने की एक सूरत	233	ग़ीबत से बचने का आसान तरीन विर्द	249
खुद को ज़िल्लत पर पेश करना जाइज़ नहीं	234	ग़ीबत का इज्माली (या'नी मुख़्तसर) इलाज	250
दुआ के लिये दर-ख़्वास्त देने का तरीका	235	मियां बीवी के क़बूले इस्लाम की ईमान अपोज़ बहार	252
तबीब को उयूब बयान करने का तरीका	236	मुश्रिका का शोहर मुसल्मान हो गया निकाह का क्या बना ?	254
रुहानी इलाज के बस्ते पर राज़दारी का तरीका	236	बे अमल मुसल्मानों का क़िरदार क़बूले इस्लाम में रुकवट	255
कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा	237	ग़ीबत के तफ़्सीली 10 इलाज	257
डॉक्टरों और आमिलों वग़ैरा के लिये	238	तन्हा रहे या अच्छी सोहबत इख़्तियार करे	257
ग़ीबत की 12 जाइज़ सूरतें	238	नेक बन्दे की दुआ पर आमीन कहने की ब-र-क़त	257
पहचान के लिये ज़रूरतन गूंगा बहरा वग़ैरा कहना	239	ज़ाती दोस्तियों में ग़ीबतों से बचना दुश्वार है	258
जो खुल्लम खुल्ला बुराई करता हो उस की ग़ीबत	240	फ़ालतू बैठकों से दूर रहिये	259
बतौरै अफ़सोस किसी की बुराई बयान करना	240	"टाइम पास" करने की बैठक का नक्शा पेश करनी वाली हिक़यत	259
बतौरै अफ़सोस ग़ीबत करने से बचने ही में आफ़िज़्यत है	241	मेलजोल का अहल कौन ?	260
काफ़िर और मुरतद की ग़ीबत के अहक़ाम	242	ज़ाहिरी अच्छी सोहबतों में भी ग़ीबतों का मरज़ !	261
बद मज़हबों से हदीस व आयत न सुनी	243	हर आने वाला वक़्त पिछले वक़्त से बुरा है	261

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
हर हर फ़र्द ग़ीबत गो नहीं	262	सुवारी के जानवर पर ला'नत मत करो	274
50 सिद्दीकीन का सवाब	262	जानवर को बुरा कहना	274
ग़ीबत ख़ोर से तो कुत्ता ही भला	263	मरे हुए कुत्ते की बुराई से भी बचो	275
तो कुत्ता मुझ जैसे सेंकड़ों से अच्छा	263	ख़िन्ज़ीर के लिये उम्दा फ़िक्का इस्ति'माल फ़रमाया	275
हसन बसरी और एक गोशा नशीन	263	खिचड़े को हलीम कहना	276
तन्हाई में भलाई ही भलाई है	264	ज़बान का तीर ख़ता नहीं होता	276
ग़ीबत से बचने का अनोखा तरीका	264	ज़बान का ज़ख़्म तलवार के ज़ख़्म से सख़्त होता है	277
ग़ैर मुस्लिम मुसल्मान हो गया	265	ग़ीबत की आदत निकालने का बेहतरीन नुस्खा	277
चूहे भगाने के लिये बिल्ली न रखने का ईमान अफ़ोज़ सबब	266	ग़ीबत नेकियों की बरबादी और जहन्नम में दाख़िले का सबब बन गई तो !	278
“भड़ास” निकालना ग़ीबत में डाल सकता है	267	माल देने में बख़ील मगर नेकियां लुटाने में सख़ी !	278
मुआफ़ करने वालों का बे हिसाब जन्नत में दाख़िला	268	गुर्दे का दर्द दूर हो गया	279
बुरा कहने से बचने वाले का खुश अन्जाम	268	मफ़्लूज की हाथों हाथ शिफ़ायाबी	280
ग़ीबत के अज़ाबात याद कीजिये	269	सिर्फ़ अपने ऐबों को देखिये	281
ग़ीबत का ताइब आख़िर में जन्नत में जाएगा	269	अपने ऐबों को याद करो	281
गुल मचाएगा, दोज़ख़ में जाएगा	270	अपने ऐबों को जानने के बा वुजूद.....	281
सोने का पहाड़ स-दक्क करने से भी पसन्दीदा	270	जो अपने ऐबों को जान लेता है	282
ग़ीबत हो जाती तो ख़ैरात करते	271	छुपी हुई बातों की टटोल मत करो !	282
दो दिरहम की हिकायत	271	अल्लाह ऐब पोशी फ़रमाएगा	282
मज़क़ूर हिकायत की वज़ाहत	271	ऐब छुपाओ जन्नत पाओ	283
एक चुप सो ¹⁰⁰ सुख	272	जहन्नम में चीख़ रहे होंगे !	283
परिन्दे की नेकी की दा'वत	273	ग़ीबत ईमान में फ़साद पैदा करती है	284

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
एक नौ मुस्लिम की दर्दनाक आपबीती	284	सभी ग़ीबत से बचने की तरकीब करें	300
ग़ीबत से तौबा का तरीक़ा	290	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	301
बन्दे से भी मुआफ़ी मांगे	291	40 हिकायात	301
तौबा के बा'द जिस की ग़ीबत की थी उस को पता चल गया तो ?	292	﴿1﴾ दो ग़ीबत करने वालियों की हिकायत	301
जिस की ग़ीबत की उस को पता चल गया..... फिर मर गया	292	﴿1﴾ <small>صلى الله تعالى عليه وآله وسلم</small> इल्मे ग़ैबे मुस्त्फ़ा	303
हाए शामते नफ़्स !	293	﴿2﴾ ग़ीबत से बाज़ रखने का हसीन अन्दाज़	303
दुन्या ही में मुआफ़ करवा लेने में अफ़ि़य्यत है	294	﴿3﴾ रूई वाले ने ख़ियानत की !	304
बोहतान की ता'रीफ़	294	ताजि़रों की ग़ीबत की 17 मिसालें	305
बोहतान से तौबा का तरीक़ा	294	मुलाज़िमीन की ग़ीबतों की 18 मिसालें	306
बोहतान का अज़ाब	295	दुक्कनदारों की आपसी ग़ीबत की 10 मिसालें	306
गुनाह के इल्ज़ाम का अज़ाब	295	﴿4﴾ मर्हमा अम्मीज़ान ने म-दनी काम करने की इज़ाज़त दिलवाई	307
शक्की मिज़ाज़ों को तम्बीह	295	म-दनी काम की तड़प मरहबा !	308
औरत पर तोहमत लगाने के सबब हलाक़त	296	चार ⁴ फ़रामीने मुस्त्फ़ा <small>صلى الله تعالى عليه وآله وسلم</small>	309
एक दूसरे को ग़ीबत से बचाने का तरीक़ा	296	﴿5﴾ इमामे आ'ज़म का अपने गुस्ताख़ के साथ हुस्ने सुलूक	309
किसी को काला कहना भी ग़ीबत है	297	गुस्से पर काबू के भी क्या ख़ूब फ़ज़ाइल हैं !	310
बिग़ैर शरमाए फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये	297	क्या इमामे आ'ज़म ने हसन बसरी की ग़ीबत की ?	311
गुनाह होते ही फ़ौरन तौबा करना वाजिब है	298	﴿6﴾ <small>عليه رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم</small> इमामे आ'ज़म ने कभी दुश्मन की भी ग़ीबत नहीं की	311
किसी की बात ग़ीबत न थी मगर आप ने ग़ीबत कह दी तो ?	298	आधे अहले ज़मीन से भी इमामे आ'ज़म की अक्ल ज़ियादा	312
झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत	298	﴿7﴾ क़ब्र वाले ग़ीबत नहीं किया करते	312
﴿اَسْتَغْفِرُالله﴾ कहने की फ़ज़ीलत	299	﴿8﴾ हम अब सिर्फ़ म-दनी चेनल देखते हैं	313
तौबा के तीन अरकान हैं	299	नमाज़ बुराइयों से बचाती है	314

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
इत्तिबाए न-बवी में खुशक टहनी हिलाई	314	अमरद के साथ 70 शैतान	329
《9》 ग़ीबत के सबब बरज़ख़ में कैद	316	《20》 शैख़ सा'दी के उस्ताज़ ने क्या ख़ूब टोका	330
《10》 हिजड़े की महब्बत में फंसने की वजह	317	ग़ीबत से रोकना कब वाजिब है	330
कहीं ग़ीबत तो नहीं ले डूबी !	317	हसद के मु-तअल्लिक़ ग़ीबत की सात मिसालें	331
《11》 नमाज़ दोहराओ	318	《21》 मिनी सिनेमा घर बन्द कर दिया	332
क्या ग़ीबत से रोज़ा टूट जाता है ?	318	《22》 दोनों में से कौन बेहतर ?	333
《12》 एक हीजड़े की मग़िफ़रत की हिक़ायत	319	हकीकी मुत्तकी कौन ?	334
《13》 राना बद मअ़ाश	320	《23》 एक बार की हुई ग़ीबत के सबब बेहेश हो गए	334
चाहे गुनाह आस्मान तक पहुंच गए हों	322	बरोजे ह़शर ईट और धागे का मुता-लबा	335
《14》 ग़ीबत में लज़ज़त की वजह	323	चालीस बरस से रो रहा हूं	335
नाम निहाद भयानक सुकून	323	《24》 ग़ीबत करने वाले का वक़ार जाता रहता है	336
《15》 मरा हुवा ख़च्चर	324	《25》 माज़ी की याद..... दो नाबीना	336
《16》 इन्सान नुमा कुत्तों का सालन	324	नाबीना को चालीस क़दम चलाने की फ़ज़ीलत	337
《17》 अनोखी छींक	325	नाबीना को चलाने का तरीक़ा	337
छींक की ब-र-कतें	325	गुलाम आज़ाद करने की फ़ज़ीलत	337
《18》 अमरद के साथ मज़ाक़ करने वाले की ग़ीबत	326	《26》 म-दनी चैनल की ब-र-क़त से ग़ीबत से परहेज़	338
किसी को “अमरद परस्त” कहना	326	《27》 “वोह मुर्दे की तरह सोया है” कहना	339
हुस्ने ज़न का ज़ाम पीजिये	327	नफ़ली कमों के मु-तअल्लिक़ ग़ीबत की 14 मिसालें	339
《19》 दो अमरद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी	327	《28》 बुराई करने वाले के साथ भलाई की अनोखी हिक़ायत	340
रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा	328	ईट का जवाब नायाब गोहर से	341
अमरद को शहवत से देखना हराम है	329	हुस्ने सुलूक का नतीजा	341

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
«29» हम्ला आवर के साथ हैरत अंगेज़ हुस्ने सुलूक	341	पड़ोसियों के बारे में ग़ीबतों की 20 मिसालें	358
«30» दो गुदड़ियों वाला	342	मंगनी/शादी में ग़ीबतों की 17 मिसालें	359
बद गुमानी भी ग़ीबत है	343	रिश्वत से तौबा का तरीक़ा	360
«31» पुर असरार हबशी	344	सुसराली रिश्तों की ग़ीबतों की 22 मिसालें	361
«32» हबशी ने जूँ ही दुआ मांगी.....	345	मैके जा कर सुसराल के मु-तअल्लिक़ की	
«33» औलादे नरीना हो गई	346	जाने वाली ग़ीबतों की 17 मिसालें	361
जितनी निय्यतें ज़ियादा सवाब भी ज़ियादा	347	मंगनी टूटने या त़लाक़ होने पर की जाने	
«34» ग़ीबत करने वाले को तोहफ़ा	347	वाली ग़ीबतों की 37 मिसालें	362
ग़ीबत करने वाले को दुआए ख़ैर से नवाज़िये	348	घर की बात बाहर करने वाला कमज़ात होता है	363
«35» इत्र की शीशी का तोहफ़ा	348	जोड़ों की बीमारी भी गई और बे रोज़गारी भी गई	364
«36» म-दनी मुन्ने की जान बच गई	349	मुर्दे को अच्छा पड़ोस दो	364
«37» 15 सालह मरीज़ा की ईमान अफ़ोज़ सिद्दहत याबी	350	गुलाब के फूल या अज़्दहों के मुंह !	365
«38» लम्बा सियाह आदमी	352	दा'वतों में की जाने वाली ग़ीबतों की 14 मिसालें	366
«39» अमरद बीनी वग़ैरा की हाथों हाथ ग़ैबी सज़ाएं	352	बेटे के बारे में ग़ीबत की 16 मिसालें	366
«40» लिफ़्ट का पंखा	353	बाप के बारे में ग़ीबत की 17 मिसालें	367
ऐब बयान करना ग़ीबत है भी और नहीं भी	354	मां की तरफ़ से बेटे की ग़ीबत की 13 मिसालें	368
दुआए अ़त्तार	355	घरों में उमूमन बोले जाने वाले ग़ीबतों के	
ग़ीबत की मिसालें	356	अल्फ़ाज़ की 67 मिसालें	368
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	356	ज़ाती मुआ-मलात के फ़ुज़ूल सुवालात की 15 मिसालें	369
एह्याउल इलूम से ग़ीबत की ता'रीफ़ और मिसालें :	356	ख़ानदान के मु-तअल्लिक़ ग़ीबत की 15 मिसालें	370
आह ! हमारी ज़बान की बे एह्तियातियां !!!	357	परेशान हालाँ के मु-तअल्लिक़ ग़ीबत की 21 मिसालें	371

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
मरीजों की गीबतों की 11 मिसालें	371	ताजिरी के मु-तअल्लिक 26 गीबतें	383
मरने वाले मुसल्मान की गीबत की 25 मिसालें	372	सेठ और मुलाज़िम की एक दूसरे के मु-तअल्लिक गीबतों की 8 मिसालें	384
डॉक्टर के बारे में गीबत की 17 मिसालें	372	मुख़लिफ़कारीग़ों के मु-तअल्लिक गीबतों की 14 मिसालें	384
डॉक्टरों की रहनुमाई के लिये	373	दफ़्तर के खादिम के मु-तअल्लिक गीबतों की 20 मिसालें	385
दवा की कम्पनियों की तरफ़ से डॉक्टरों को रिश्वत	374	मक़ान व साहिबे मक़ान की गीबत की 17 मिसालें	385
रिश्वत किसे कहते हैं ?	374	किरायादार के बारे में की जाने वाली गीबतों की 16 मिसालें	386
रिश्वत की एक सूरत	375	सियासी तब्सरों में की जाने वाली गीबत की 35 मिसालें	386
रिश्वत लेने देने वाले पर ला'नत	375	फुज़ूल जुम्लों की 14 मिसालें	387
अगर कम्पनी वाले डॉक्टर को तोहफ़ा कह कर दें तो ?	375	थोक बन्द गीबतों की चार मिसालें	388
बिला हाज़त टेस्ट या दवा लिख देना ख़ियानत है	376	बक़र ईद पर किये जाने वाले फुज़ूल सुवालात की 19 मिसालें	389
रिश्वत से तौबा का तरीक़ा	376	झूट पर मजबूर करने वाले सुवालात की 14 मिसालें	389
क़ब्र का भयानक सियाह कुत्ता	376	सब से ख़तरनाक अबुल फुज़ूल	390
ड्राइवर की गीबत की 8 मिसालें	377	फ़ोन पर की जाने वाली फुज़ूल बातों की 5 मिसालें	3914
लम्बे रूट की बसें और मख़सूस होटलें	378	फ़ोन करने के हवाले से गीबत की 13 मिसालें	391
लुक्मए ह़राम की नुहूसत	378	फ़ोन वुसूल कर के सवाब कमाइये	392
लुक्मए हलाल की फ़ज़ीलत	379	किसी का फ़ोन आने की सूरत में गीबत की 17 मिसालें	393
सुवारी और सुवार की गीबत की 15 मिसालें	379	किसी का फ़ोन न आने की सूरत में गीबत की 9 मिसालें	393
रेल्वे का सफ़र और मु-तवक्क़अ 10 गीबतें	380	किसी को फ़ोन करते देख कर की जाने	
एक हेरोइन्ची की आपबीती	380	वाली गीबतों की 11 मिसालें	394
मे'मार व मजदूर की मु-तवक्क़अ गीबतों की 12 मिसालें	382	SMS के हवाले से की जाने वाली	
होटल वाले की मु-तवक्क़अ गीबत की 17 मिसालें	383	गीबतों की 10 मिसालें	394

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
CHATTING के हवाले से की जाने वाली गीबतों की 3 मिसालें :	395	ईको साउन्ड वालों और केमेरा मेन के मु-तअल्लिक गीबतों की 13 मिसालें	412
INTERNET के हवाले से की जाने वाली गीबतों की 5 मिसालें :	395	मुबल्लिगीन व मुक्करीन के मु-तअल्लिक गीबतों की 10 मिसालें	412
चोक दर्स की बहार, आका का दीदार	395	इमाम व खतीब के बारे में की जाने वाली मु-तवक्कअ गीबतों की 37 मिसालें	412
दा'वते इस्लामी दुरूदो सलाम के जाम पिलाती है	397	मस्जिद इन्तिजामिया के मु-तअल्लिक की जाने वाली गीबतों की 15 मिसालें	414
नूरे मुस्तफ़ा की जल्वा सामानियां	397	मज़हबी तक्फ़े में की जाने वाली गीबतों की 68 मिसालें	414
दोस्तों में की जाने वाली गीबतों की 92 मिसालें	398	गीबत की मु-तफ़रक़ 61 मिसालें	416
मुसनिफ़ के बारे में की जाने वाली गीबतों की 19 मिसालें	399	वक्फ़ के अजीरों के मु-तअल्लिक गीबतों की 15 मिसालें	417
वेबसाइट के मु-तअल्लिक मु-तवक्कअ 5 गीबतें	400	बग़ल में केन्सर के गुद्द	417
इस्तिन्जा ख़ाने की लाइन में गीबत की 8 मिसालें	400	त-लबा में की जाने वाली गीबतों की 26 मिसालें	418
जिस्मानिय्यत में गीबत की 58 मिसालें	401	असातिज़ा की गीबतों की 22 मिसालें	419
इबादात के बारे में गीबत की 20 मिसालें	402	म-दनी माहोल में की जाने वाली गीबत की 67 मिसालें	421
हाफ़िज़े कुरआन की गीबतों की 11 मिसालें	402	म-दनी क़ाफ़िले के मु-तअल्लिक की जाने वाली गीबत की 26 मिसालें	423
सफ़रे हज़ के बारे में की जाने वाली 34 गीबतें	403	म-दनी माहोल से रूठे हुए को मनाने	
हज़ से लौटने वाले से फ़ुज़ूल सुवालात की 13 मिसालें	405	के गीबतों भरे अन्दाज़ का फ़र्ज़ी ख़ाका	424
ना'त ख़ान के बारे में गीबत के अल्फ़ज़ की 25 मिसालें	406	अफ़्सोस ! हमें बात करनी ही नहीं आती	425
ना'त ख़ानी/जल्से या इज्तिमाअ में होने वाली गीबतों की 19 मिसालें	406	ना जाइज़ गुफ़्त-गू जहन्म में गिराएगी	426
ला उबाली नौ जवान	407	पहले इज्तिमाअ में आता था अब नहीं आता उसे समझने के	
गुनाह की दस नुहूसतें	409	मु-तअल्लिक मु-तवक्कअ 14 गुनाहों भरे जुम्ले और गीबतें	426
ना'त ख़ानों के माबैन होने वाली गीबतों की 40 मिसालें	410	बात अमानत होने का क़रीना	428
		सुधरने की जिद्दो जहद जारी रखिये	428
		तो क्या तू तौबा को मा'मूली शै ख़याल करता है ?	429

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
“मजलिस” के बारे में की जाने वाली गीबतों की 16 मिसालें	430	फ़तावा र-ज़विय्या में एक वस्वासी की गोशमाली	447
मजलिस बराए इज्तिमाअ और मु-तवक्कअ 11 गीबतें	431	दा'वत में जाने के लिये अच्छी अच्छी नियतें कर लेनी चाहिए	448
सिनेमा घर के मालिक की तौबा	432	सिर्फ़ लोगों के डर से गुनाह छोड़ने का नुक्सान	449
इज्तिमाए ज़िक्र में गुनहगार भी बख़्शे जाते हैं	433	गीबत से बचने की तरबियत किस तरह हासिल हो ?	450
हारिसीन व खादिमीन के बारे में की जाने		हमारी अक्सरियत को बात करना ही नहीं आती	451
वाली गीबतों की 41 मिसालें	435	गीबत के ज़रूरी अहक़ाम सीखना फ़र्ज़ है।	452
म-दनी चैनल के मु-तअल्लिक़ गीबत की 15 मिसालें	436	गीबत करूंगा न सुनूंगा	452
गीबत के बारे में सुवाल जवाब		क्या शिकायत सुन ही नहीं सकते ?	453
और दीगर अहम मा'लूमात	438	तन्ज़ीमी मसाइल का हल और गीबत	454
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	438	फ़ितने फैलाने की वइदें	455
गीबत जाइज़ ना जाइज़ होने का कैसे पता चले ?	440	फ़ितना जगाने वाले पर ला'नत	456
क्या गीबत सुनते ही सामने वाले को गुनहगार समझ लिया जाए	440	इन्फ़िरादी कोशिश के ग़लत अन्दाज़ का फ़र्ज़ी मुक़-लमा	456
जाइज़ समझ कर सुन ले फिर पता चले कियेह ना जाइज़ गीबत थी तो.....?	441	इन्फ़िरादी कोशिश म-दनी कामों की जान है	458
अवाम जाइज़ व ना जाइज़ गीबत में कैसे तमीज़ करें ?	441	आप नमाज़ पढ़ते हैं या नहीं ?	459
घर में गीबत से किस तरह बचे ?	442	सुवालात के बजाए तरगीबात से काम लीजिये	460
दा'वते इस्लामी को जाहिलों का टोला कहना कैसा ?	443	वा'दा करने के अल्फ़ाज़.....	461
बहुत सारे मुसल्मानों की इकठ्ठी ईज़ा	443	“वा'दा नहीं इरादा कर लीजिये” कहलवाना कैसा ?	462
इज्तिमाई दिल आज़ारियों के 12 जुम्लों की मिसालें	444	“कोशिश करूंगा” कहलवाना	462
सुवाल करने वाले के भूलने पर हंसना	445	اِنْ شَاءَ اللّٰهُ कह कर भी बात को निभाइये	462
इस किताब के बारे में वस्वसा	445	बद गुमानी मत कीजिये	463
बद गुमानी मत कीजिये	447	हां में सर हिला देना	463

उन्वान	सफ़्हा नम्बर	उन्वान	सफ़्हा नम्बर
वा'दा ख़िलाफ़ी मुनाफ़िक़ की निशानियों में से है	463	दुन्या व आख़िरत के अफ़ज़ल अख़्लाक़	480
वा'दा ख़िलाफ़ी की वईदात पर मन्बी चार रिवायात	464	मुआफ़ करो मुआफ़ी पाओ	481
झूटा वा'दा करना ह़राम है	464	मुआफ़ करने वालों की बे हिसाब मग़िफ़रत	481
वा'दा ख़िलाफ़ी किसे कहते हैं ?	464	क़तिलाना हमले की कोशिश करने वाले को मुआफ़ फ़रमा दिया	481
वा'दा पूरा करने की निय्यत न हो मगर इतिफ़ाक़न पूरा हो जाए तो.....	465	जुल्म करने वाले के लिये दुआए हिदायत	482
शर-ई क़बाह़त हो तो वा'दा पूरा न करे	465	जादू करने वाले से दर गुज़र	483
मुफ़ितये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली	465	शाने मुस्तफ़ा ﷺ	483
निगरान की तब्दीली पर तश्वीश न किया करें	469	रोज़ाना 70 बार मुआफ़ करो	483
हमें निगरान का कुसूर बताया जाए	470	गालियों भरे खुतूत पर आ'ला हज़रत का अफ़वो दर गुज़र	484
तमाम ओहदे दारान केलिये लाइक़ेतक़लीद मिसाल	471	एक अहम म-दनी वसिय्यत	485
ज़िम्मेदारी सोंपने के लिये मा'लूमात	472	फ़तावा र-ज़विय्या के अहम इक़्तिबासात	486
नेक कामों में ग़ैर हज़िर रहने वालों को पूछना	473	जिस ने तशख़्ख़ुस तब्दील कर लिया !	487
ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग	474	बुरा चरचा करना ह़राम है	488
अफ़वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत मअ़ एक अहम्म म-दनी वसिय्यत	478	दा'वते इस्लामी से बिछड़ने वालों के लिये इत्मा मे हुज्जत	489
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	478	अगर आप दा'वते इस्लामी के साथ काम करना नहीं चाहते तो.....	489
म-दनी आक़ा का अफ़वो दर गुज़र	478	या अल्लाह ! तू गवाह रहना	490
हिसाब में आसानी के तीन अस्बाब	479	ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग	491
जन्नत का महल	479	मैं ने इल्य़ास क़ादिरि को मुआफ़ किया	492
मुआफ़ करने से इज़्जत बढ़ती है	480	क़र्ज़ ख़्वाहों से म-दनी इल्तिजा	493
मुअज़्ज़ज़ कौन ?	480	गूंगी बोल उठी !	494
जो मुआफ़ नहीं करता उसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा	480	दर्स का तरीक़ा	495
		मआख़ज़ो मराजेअ़	501

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुहुदे पाक पढ़ा उसे क़ियमत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमूअुज्जवाइद)

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

गीबत की तबाह कारियां

शैतान बहुत रोकेगा मगर येह किताब पूरी पढ़ लीजिये إِنْ شَاءَ اللّٰهُ غَوَّلَ

आप को मा'लूम हो जाएगा कि शैतान क्यूं नहीं पढ़ने दे रहा था !

दुरुद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : हज़रते अल्लामा मज्दुहीन फ़ीरोज़ आबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي

से मन्कूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो

तो بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى مُحَمَّدٍ: तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्र

फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा । और जब मजलिस से उठो तो कहो :

तो بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى مُحَمَّدٍ लोगों को तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज़ रखेगा ।

(الْقَوْلُ الْبَرِّيع ص २७८)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَى مُحَمَّدٍ

अक्सरिख्यत ग़ीबत की लपेट में है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मां बाप, भाई बहन,

मियां बीवी, सास बहू, सुसर दामाद, नन्द भावज बल्कि अहले ख़ाना व ख़ानदान नीज़ उस्ताद

व शागिर्द, सेठ व नोकर, ताजिर व गाहक, अफ़सर व मजदूर, मालदार व नादार, हाकिम व

महकूम, दुन्यादार व दीनदार, बूढ़ा हो या जवान अल ग़रज़ तमाम दीनी और दुन्यवी शो'बों

से तअल्लुक रखने वाले मुसलमानों की भारी अक्सरिख्यत इस वक़्त ग़ीबत की

फ़रमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

ख़ौफ़नाक आफ़त की लपेट में है, अफ़सोस ! सद करोड़ अफ़सोस ! बे जा बक बक की आदत के सबब आज कल हमारी कोई मजलिस (बैठक) उमूमन ग़ीबत से ख़ाली नहीं होती ।

ग़ीबत की तबाह कारियां एक नज़र में : बहुत सारे परहेज़ गार नज़र आने वाले लोग भी बिला तकल्लुफ़ ग़ीबत सुनते, सुनाते, मुस्कराते और ताईद में सर हिलाते नज़र आते हैं, चूँकि ग़ीबत बहुत ज़ियादा आम है इस लिये उमूमन किसी की इस तरफ़ तवज्जोह ही नहीं होती कि ग़ीबत करने वाला नेक परहेज़ गार नहीं बल्कि फ़ासिक़ व गुनहगार और अज़ाबे नार का हक़दार होता है । कुरआनो हदीस और अक्वाले बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللهُ الْفَبِينَ से मुन्तख़ब कर्दा ग़ीबत की 20 तबाह कारियों पर एक सरसरी नज़र डालिये, शायद ख़ाइफ़ीन के बदन में झुरझुरी की लहर दौड़ जाए ! जिगर थाम कर मुला-हज़ा फ़रमाइये : ★ ग़ीबत ईमान को काट कर रख देती है ★ ग़ीबत बुरे ख़ातिमे का सबब है ★ ब कसरत ग़ीबत करने वाले की दुआ क़बूल नहीं होती ★ ग़ीबत से नमाज़ रोज़े की नूरानिय्यत चली जाती है ★ ग़ीबत से नेकियां बरबाद होती हैं ★ ग़ीबत नेकियां जला देती है ★ ग़ीबत करने वाला तौबा कर भी ले तब भी सब से आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा, अल गरज़ ग़ीबत गुनाहे कबीरा, क़र्ह हुराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ★ ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है ★ मुसल्मान की ग़ीबत करने वाला सूद से भी बड़े गुनाह में गरिफ़्तार है ★ ग़ीबत को अगर समुन्दर में डाल दिया जाए तो सारा समुन्दर बदबूदार हो जाए ★ ग़ीबत करने वाले को जहन्नम में मुर्दा खाना पड़ेगा ★ ग़ीबत मुर्दा भाई का गोश्त खाने के मु-तरादिफ़ है ★ ग़ीबत करने वाला अज़ाबे क़ब्र में गरिफ़्तार होगा ! ★ ग़ीबत करने वाला तांबे के नाखुनों से अपने चेहरे और सीने को बार बार छील रहा था ★ ग़ीबत करने वाले को उस के पहलूओं से गोश्त काट काट कर खिलाया जा रहा था ★ ग़ीबत करने वाला क़ियामत में कुत्ते की शक्ल में उठेगा ★ ग़ीबत करने वाला जहन्नम का बन्दर होगा ★ ग़ीबत करने वाले को दोज़ख़ में खुद अपना ही गोश्त खाना पड़ेगा ★ ग़ीबत करने वाला जहन्नम के ख़ौलते हुए पानी और आग के दरमियान मौत मांगता दौड़ रहा होगा और उस से जहन्नमी भी बेज़ार

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पहना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

होंगे ★ गीबत करने वाला सब से पहले जहन्नम में जाएगा ।

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْتُوا لِي اللَّهَ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

म-दनी हिकायत : सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عليه رحمة الله الهادي ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़हा 823 पर लिखते हैं : मीठे मीठे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा ﷺ जब जिहाद के लिये रवाना होते या सफ़र फ़रमाते तो हर दो मालदार के साथ एक नादार मुसलमान को कर देते कि येह ग़रीब उन की ख़िदमत करे और वोह उस को खिलाएं पिलाएं इस तरह हर एक का काम चलता रहे । इसी तरह एक मौक़अ पर हज़रते सय्यिदुना सलमान رضي الله تعالى عنه दो आदमियों के साथ किये गए थे । एक रोज़ आप رضي الله تعالى عنه सो गए और खाना तय्यार न कर सके तो उन दोनों ने उन्हें खाना त़लब करने के लिये बारगाहे रिसालत में भेजा । सरकारे मदीना رضي الله تعالى عليه وآله وسلم के “खादिमे मत्बख़” (या’नी बावर्ची ख़ाने के खादिम) हज़रते सय्यिदुना उसामा رضي الله تعالى عنه थे । उन के पास खाना ख़त्म हो चुका था लिहाज़ा उन्होंने ने कहा : मेरे पास कुछ नहीं । जब हज़रते सय्यिदुना सलमान رضي الله تعالى عنه ने दोनों रु-फ़का को आ कर बताया तो उन्होंने ने कहा : “उसामा (رضي الله تعالى عنه) ने बुख़ल किया ।” जब बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो सरकारे नामदार رضي الله تعالى عليه وآله وسلم ने (बि इज़्ने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया : “मैं तुम्हारे मुंह में गोश्त की रंगत देखता हूं ।” उन्होंने ने अर्ज किया : हम ने गोश्त खाया ही नहीं । फ़रमाया : तुम ने गीबत की और जो मुसलमान की गीबत करे उस ने मुसलमान का गोश्त खाया ।

(تفسير بغوى ج 4 ص 194)

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़ाक)

अल्लाह रब्बुल इबाद तबा-र-क व तआला इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا يَعْتَبُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۖ يُحِبُّ أَعَدَّكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और एक दूसरे की गीबत न करो। क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोشت खाए ? तो यह तुम्हें गवारा न होगा।

(پ ۲۶ الحُجرات ۱۲)

गीबत हराम होने की हिक्मत : हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हज़र मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعُی नक्ल करते हैं : किसी की बुराई बयान करने में ख़्वाह कोई सच्चा ही क्यों न हो फिर भी उस की गीबत को हराम करार देने में हिक्मत मोमिन की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त में मुबा-लगा करना है और इस में इस बात की तरफ़ इशारा है कि इन्सान की इज़्ज़त व हुर्मत और इस के हुक्क की बहुत ज़ियादा ताकीद है, नीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस की इज़्ज़त को गोشت और खून से तश्बीह दे कर मज़ीद पुख़्ता व मुअक्कद कर दिया और इस के साथ ही मुबा-लगा करते हुए इसे मुर्दा भाई का गोشت खाने के मु-तरादिफ़ करार दिया चुनान्चे पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत नम्बर 12 में इर्शाद फ़रमाया : **أَيُّحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ** (तर-ज-मए कन्जुल ईमान : क्या तुम में कोई पसन्द करेगा कि अपने मरे भाई का गोشت खाए तो यह तुम्हें गवारा न होगा) इज़्ज़त को गोشت से तश्बीह देने की वजह यह है कि इन्सान की बे इज़्ज़ती करने से वोह ऐसी ही तकलीफ़ महसूस करता है जैसा कि उस का गोشت काट कर खाने से उस का बदन दर्द महसूस करता है बल्कि इस से भी ज़ियादा। क्यों कि अक्ल मन्द के नज़्दीक मुसल्मान की इज़्ज़त की कीमत खून और गोشت से बढ़ कर है। समझदार आदमी जिस तरह लोगों का गोشت खाना अच्छा नहीं समझता इसी तरह उन की इज़्ज़त पामाल करना ब द-र-जए औला अच्छा तसव्वुर नहीं करता क्यों कि यह एक तकलीफ़ देह अम्र (या'नी मुआ-मला) है और फिर अपने भाई का गोشت खाने की ताकीद लगाने की वजह यह है कि किसी के लिये अपने भाई का गोشت खाना तो बहुत दूर की बात है (मा'मूली सा) चबाना भी मुम्किन नहीं होता लेकिन दुश्मन का मुआ-मला इस के बर अक्स है।

(الزَّوْجَرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكِبَائِرِ ج ۲ ص ۱۰)

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस ने मुझ पर रोजे जुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (कजुल उम्माल)

गीबत के मु-तअल्लिक एक ए'तिराज का जवाब : इमाम अहमद बिन हजर عليه رحمة الله الاكبر ने गीबत के बारे में समझाने के लिये खुद ही ए'तिराज वारिद किया और खुद ही इस का जवाब इर्शाद फरमाया है लिहाजा मुला-हाजा हो :

ए'तिराज : किसी के मुंह पर उस का ऐब बयान करना हराम है क्यूं कि इस से उसे हाथों हाथ तकलीफ पहुंचती है जब कि गैर मौजूदगी में गीबत करने से उसे तकलीफ नहीं पहुंचती क्यूं कि उसे इस की इत्तिलाअ ही नहीं होती।

जवाब : इस का एक जवाब येह है कि (पारह 26 सू-स्तुल हुजुरात आयत नम्बर 12 में इस लफ्ज) **مَيِّتًا** (या'नी मुर्दा) की कैद से येह ए'तिराज खुद ब खुद खत्म हो जाता है वोह इस तरह कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने से खुद खाए जाने वाले को (ज़ाहिरन) कोई तकलीफ नहीं होती, हालां कि येह इन्तिहाई घटिया और बुरा फे'ल है। ताहम वोह मुर्दा जान ले कि मेरा गोश्त खाया जा रहा है तो उसे ज़रूर तकलीफ पहुंचे। इसी तरह किसी की गैर मौजूदगी में उस के ऐब बयान करना भी हराम है क्यूं कि जिस की गीबत की गई अगर उसे इत्तिलाअ हो जाए तो उसे भी तकलीफ होगी।

(الرَّوَا جِرُ عَنْ اقْتِرَافِ الْكِبَائِرِ ج ٢ ص ١٠)

गीबत व बोहतान का फ़र्क : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार ﷺ ने इस्तिफ़सार फरमाया : क्या तुम जानते हो गीबत क्या है ? अर्ज की गई : **अल्लाह** और उस का **रसूल** ﷺ बेहतर जानते हैं। फरमाया : (गीबत येह है कि) तुम अपने भाई का इस तरह जिक्र करो जिसे वोह ना पसन्द करता है। अर्ज की गई : अगर वोह बात उस में मौजूद हो तो ? फरमाया : जो बात तुम कह रहे हो अगर वोह उस में मौजूद हो तो तुम ने उस की गीबत की और अगर उस में न हो तो तुम ने उस पर **बोहतान** बांधा। (صحيح مسلم ص ١٣٩٧ حديث ٢٥٨٩)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عليه رحمة الختان फरमाते हैं : गीबत सच्चे ऐब बयान करने को कहते हैं और **बोहतान** झूटे ऐब बयान करने को, गीबत होती है सच मगर है हराम। अक्सर गालियां सच्ची होती हैं मगर हैं

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज्जवाइद)

बे हयाई व हराम, (मा'लूम हुवा कि) हर सच हलाल नहीं होता । खुलासा येह है कि ग़ीबत एक गुनाह है बोहतान दो गुनाह ।

(مرآة السائح ج ۶ ص ۴۰۶)

ग़ीबत की ता 'रीफ़ बहारे शरीअत में : सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने ग़ीबत की ता 'रीफ़ इस तरह बयान की है : किसी शख्स के पोशीदा ऐब को उस की बुराई करने के तौर पर ज़िक्र करना ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 175)

ग़ीबत की ता 'रीफ़ अज़ इब्ने जौज़ी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़सोस कि आज हमारी अक्सरिय्यत को ग़ीबत की ता 'रीफ़ तक मा'लूम नहीं हालां कि इस के बारे में ज़रूरी अहकाम जानना फ़र्ज़ उलूम में से है । दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "आंसूओं का दरिया" सफ़हा 256 पर हज़रते अल्लामा अबुल फ़रज़ अब्दुरहमान बिन जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने अहादीसे मुबा-रका की रोशनी में ग़ीबत की जो ता 'रीफ़ बयान फ़रमाई है, वोह येह है : तू अपने भाई को ऐसी चीज़ के ज़रीए याद करे कि अगर वोह सुन ले या येह बात उसे पहुंचे तो उसे ना गवार गुज़रे अगरचे तू इस में सच्चा हो ख़्वाह उस की ज़ात में कोई नक्स (ख़ामी) बयान करे या उस की अक्ल में या उस के कपड़ों में या उस के फ़े'ल या क़ौल में कोई कमी बयान करे या उस के दीन या उस के घर में कोई नक्स (ऐब) बयान करे या उस की सुवारी या उस की औलाद, उस के गुलाम या उस की कनीज़ में कोई ऐब बयान करे या उस से मु-तअल्लिक़ (या'नी तअल्लुक़ रखने वाली) किसी भी शै का (बुराई के साथ) तज़िक़रा करे यहां तक कि तेरा येह कहना कि उस की आस्तीन या दामन लम्बा है सब ग़ीबत में दाख़िल हैं ।

(بَحْرُ الدُّمُوعِ ص ۱۸۷)

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया। (इब्ने सुन्नी)

गीबत क्या है ? : हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हज़र मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرِ

नक्ल करते हैं : उ-लमाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّالِم फ़रमाते हैं : इन्सान के किसी ऐसे ऐब का जिक्र करना जो उस में मौजूद हो **गीबत** कहलाता है, अब वोह ऐब चाहे उस के दीन, दुन्या, ज़ात, अख़्लाक़, माल, औलाद, बीवी, ख़ादिम, गुलाम, इमामा, लिबास, ह-रकात व स-कनात, मुस्कराहट, दीवानगी, तुर्श रूई और खुश रूई वगैरा किसी भी ऐसी चीज़ में हो जो उस के मु-तअल्लिक़ हो। जिस्मानिय्यत में गीबत की मिसालें : अन्धा, लंगड़ा, गन्जा, ठिगना लम्बा, काला और जर्द वगैरा कहना। दीन में गीबत की मिसालें : फ़ासिक़, चोर, ख़ाइन, ज़ालिम, नमाज़ में सुस्ती करने वाला, और वालिदैन का ना फ़रमान वगैरा कहना। मज़ीद आगे चल कर नक्ल फ़रमाते हैं : कहा जाता है कि “गीबत में खजूर की सी मिठास और शराब जैसी तेज़ी और सुरुर है।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस आफ़त से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए और हमारी तरफ़ से गीबत वालों के हुक्क़ (महज़ अपने फज़लो करम से) खुद ही अदा फ़रमाए क्यूं कि उस عَزَّوَجَلَّ के इलावा इन्हें कोई शुमार नहीं कर सकता। (الرّواجر عن اقترااف الكبائر ج ٢ ص ١٩)

गु-नहे गदा का हिसाब क्या वोह अगर्चे लाख से हैं सिवा

मगर ऐ अफ़ुव्व तेरे अफ़व का तो हिसाब है न शुमार है

(अपने कलाम के इस मक्ताअ के मिस्रए ऊला में आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن ने ख़ूब इन्किसारी फ़रमाई है। लिहाज़ा “रज़ा” की जगह सगे मदीना عَلَيْهِ ने अपने गुनाहों के तसव्वुर से “गदा” लिखा है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُونُوا إِلَى اللَّهِ اسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्क और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज्जवाइद)

मैं अलाके का नामी गिरामी बद् मआश था ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गीबत की आदत से सच्ची तौबा कीजिये, ज़बान की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाइये, तौबा पर इस्तिफ़ामत पाने के लिये “दा’वते इस्लामी” के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये और सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक म-दनी बहार पेश की जाती है । एक मुबल्लिगे दा’वते इस्लामी का बयान है कि जुमादल आख़िरह सि. 1429 हि., जून सि. 2008 ई.में हमारा म-दनी क़ाफ़िला ओकाड़ा (पंजाब, पाकिस्तान) पहुंचा । वहां पर एक बा रीश (या’नी दाढ़ी वाले) उम्र रसीदा इस्लामी भाई से मेरी मुलाक़ात हुई । उन के सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ अपने जल्वे लुटा रहा था । दौराने गुफ़्त-गू उन्होंने ने इन्किशाफ़ किया कि दा’वते इस्लामी के म-दनी माहोल में आने से पहले मैं अपने अलाके का नामी गिरामी बद् मआश था । मैं शराब का ऐसा रसिया था कि जब कहीं जाता तो शराब के कनस्तर मेरी गाड़ी में धरे होते । मैं अपने साथ गन मेन रखता और खुद भी मुसल्लह रहता था । मेरे काले करतूतों की वजह से लोग मुझ से इस क़दर नफ़रत करते कि मेरे क़रीब से गुज़रना पसन्द न करते थे ।

मैं ने “म-दनी लाइन” कैसे इख़्तियार की, इस की तफ़सील कुछ यूं है कि हमारे अलाके में नेकी की दा’वत की धूमें मचाने वाले दा’वते इस्लामी के मुबल्लिगीन मुझे भी नेकी की दा’वत देने के लिये आया करते, मगर मैं गुफ़लत की गहरी वादियों में गुम था इस लिये उन की दा’वत तवज्जोह से सुनने के बजाए उन का हाथ पकड़ कर बोलता : “मेरे साथ बैठ कर शराब पियो ।” उन को कभी डांटता तो कभी झाड़ता मगर वोह मौक़अ पा कर फिर इन्फ़िरादी कोशिश के लिये आ जाया करते । यूं एक तवील अर्से वोह मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करते रहे और मैं सुनी अनसुनी करता रहा । एक रोज़ मेरे दिल में ख़याल आया कि येह बेचारे इतने अर्से से मुझ पर कोशिशें कर रहे हैं क्यूं न आज इन की बात तवज्जोह से सुन ली जाए देखूं तो सही आख़िर येह कहते क्या हैं ! अब की बार इस्लामी भाई “नेकी की दा’वत” देने आए तो मैं ने बड़ी तवज्जोह से उन की दा’वत सुनी अल्लाह ﷻ की शान कि

फरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदवख्त हो गया । (इन्हे सुनी)

उन की दा'वत मेरे दिल में उतर गई और लब्बैक (या'नी मैं हाज़िर हूं) कहते हुए उन के साथ मस्जिद की तरफ चल दिया, ग़ालिबन होश संभालने के बा'द ज़िन्दगी में पहली बार मैं मस्जिद के अन्दर दाखिल हुवा । आशिक़ाने रसूल की सोहबत और मस्जिद में होने वाले सुन्नतों भरे बयान ने मेरे दिल की कैफ़ियत को बदल कर रख दिया । मैं ने इस्लामी भाइयों के पास आना जाना शुरूअ कर दिया और फिर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ وَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के सिल्सिले में मुरीद बन गया । मुरीद तो क्या हुवा मेरे अन्दाज़ बदलते चले गए । मैं ने सब गुनाहों से तौबा कर ली, शराब पीना छोड़ दी, नमाज़ी बन गया और चेहरा सुन्नत के मुताबिक़ दाढ़ी और सर इमामा शरीफ़ से "सर सब्ज़" हो गया । लोग मेरी इस तब्दीली पर हैरान थे । बा'जों को तो यकीन ही नहीं आ रहा था कि इस क़दर बिगड़ा हुवा इन्सान भला कैसे सुधर सकता है ! एक रोज़ अजीब चुटकुला हुवा कि दो अख़्बारी नुमाइन्दे मेरे करीब से गुज़रे तो एक ने मेरी तरफ़ इशारा कर के दूसरे को बताया येह वोही शख़्स है ! मेरा तब्दील शुदा हुलिया देख कर दूसरे को यकीन न आया और उस ने मुझ से बा काइदा तस्दीक़ की, कि क्या आप वाक़ेई "वोही" हैं ? मेरे हां करने पर वोह दम बखुद रह गया और कहने लगा कि अपनी तब्दीली का राज़ बताइये हम अख़बार में आप की ख़बर छापेंगे । मगर मैं ने मन्अ कर दिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कतें हैं कि मुझ जैसा रुस्वाए ज़माना इन्सान भी सलातो सुन्नत की राह पर चलने लगा और मुआशरे का एक बा इज़्ज़त फ़र्द बन गया ।

عَزَّوَجَلَّ
अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

اٰمِنْ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

इन्फिरादी कोशिश की ब-र-कत से राहे जन्नत मिल गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि इख्लास व इस्तिकामत के साथ की गई इन्फिरादी कोशिश की कैसी ब-र-कतें नसीब हुईं और बरबादिये आखिरत के रास्ते पर चलने वाले इस्लामी भाई को जन्नत में ले जाने वाले रास्ते पर गामजून होने की तौफीक मिल गई। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि घबराए और शरमाए बिगैर हर तरह के इस्लामी भाइयों को नेकी की दा'वत पेश किया करें, क्या अजब कि आप के चन्द कलिमात किसी की दुनिया व आखिरत संवरने का सबब और आप के लिये सवाबे जारिया का जरीआ बन जाएं। नेकी की दा'वत के सवाब की तो क्या ही बात है !

हर कलिमे के बदले एक साल की इबादत का सवाब : एक बार हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَی نَبِیِّنَا وَعَلِیْہِ الصَّلٰوَةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अर्ज की : **या अल्लाह** जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? अल्लाह तबा-र-क व तआला ने इर्शाद फरमाया : मैं उस के हर हर कलिमे के बदले एक एक साल की इबादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे हया आती है।

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ٤٨)

मुझे तुम ऐसी दो हिम्मत आका
बना दो मुझ को भी नेक ख़स्तल

दूँ सब को नेकी की दा'वत आका
नबिय्ये रहमत शफीए उम्मत

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُؤْبُوْا اِلَی اللہِ اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

फरमाने मुस्तफा ﷺ : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह عزوجل तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

अक्सर घर मैदाने जंग बने हुए हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खुदा عزوجل की कसम ! गीबत इन्तिहाई तबाह कार है, इसी गीबत के बाइस आज अक्सर घर मैदाने कारजार बने हुए हैं, खानदानों और बिरादरियों में, महल्लों और बाजारों में, अ़वाम व ख़वास के अक्सर तब्कों में बल्कि सुन्नत की ख़िदमत का जज़्बा रखने वाले मु-तअहिद अफ़राद के दरमियान भी इसी गीबत के बाइस नफ़रत की मन्हूस दीवारें काइम हैं । आह ! मरने के बा'द नाजुक बदन गीबत का होलनाक अज़ाब कैसे बरदाश्त कर सकेगा ! सुनो ! सुनो !

सीनों से लटके हुए लोग : सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात, महबूबे रब्बुल अर्दि वस्समावात ﷺ का फ़रमाने इब्रत निशान है : मे'राज की रात मैं ऐसी औरतों और मर्दों के पास से गुज़रा जो अपनी छातियों के साथ लटक रहे थे, तो मैं ने पूछा : **ऐ जिब्रईल !** येह कौन लोग हैं ? अर्ज़ की : येह मुंह पर ऐब लगाने वाले और पीठ पीछे बुराई करने वाले हैं और इन के मु-तअल्लिक अल्लाह عزوجل इर्शाद फ़रमाता है :

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ①

(प ३० अल्हमज़े: १)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे, पीठ पीछे बदी करे ।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ५ ص ३०९ حديث १७०)

तांबे के नाखून : सरकारे दो अ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम ﷺ का फ़रमाने इब्रत निशान है : मैं शबे मे'राज ऐसी क़ौम के पास से गुज़रा जो अपने चेहरों और सीनों को तांबे के नाखूनों से नोच रहे थे । मैं ने पूछा : **ऐ जिब्रईल !** येह कौन लोग हैं ? कहा : येह लोगों का गोश्त खाते (या'नी गीबत करते) थे और उन की इज़ज़त ख़राब करते थे ।

(سُنَنِ ابوداؤد ج ४ ص ३०३ حديث ४८७८)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

औरतें ज़ियादा गीबतें करती हैं : मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَان फ़रमाते हैं : उन पर ख़ारिश का अज़ाब मुसल्लत कर दिया गया था और नाखुन तांबे के धारदार और नोकीले थे उन से सीना चेहरा खुजलाते थे और ज़ख्मी होते थे। खुदा (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह येह अज़ाब सख़्त अज़ाब है, येह वाकिआ बा'दे क़ियामत होगा जो हुजूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ने आंखों से देखा मज़ीद फ़रमाते हैं : या'नी येह लोग मुसल्लमानों की गीबत करते थे और उन की आबरू रेज़ी (इज़्ज़त ख़राब) करते थे येह काम औरतें ज़ियादा करती हैं उन्हें इस से इब्रत लेनी चाहिये। (مراة ج ۲ ص ۲۱۹)

पहलूओं से गोश्त काट कर खिलाने का अज़ाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कभी तन्हाई में ग़ौर कीजिये कि हमारी कमज़ोरी की हालत तो येह है कि मा'मूली ख़ारिश भी बरदाश्त नहीं होती, नाखुन का मा'मूली चरका (या'नी हलका सा चीरा) भी सहा नहीं जाता तो अगर गीबत कर के बिगैर तौबा किये मर गए और तांबे के नाखुनों से चेहरा और सीना छीलने और नोचने की सज़ा दी गई तो इस सख़्त तरीन अज़िय्यत की सहार क्यूं कर होगी ! गीबत के एक और दिल हिला देने वाले अज़ाब की रिवायत सुनिये और थर थर कांपिये। हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात ﷺ का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस रात मुझे आस्मानों की सैर कराई गई तो मेरा गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुवा जिन के पहलूओं से गोश्त काट कर खुद उन ही को खिलाया जा रहा था। उन्हें कहा जाता, खाओ ! तुम अपने भाइयों का गोश्त खाया करते थे। मैं ने पूछा : ऐ जिब्रईल ! येह कौन हैं ? अर्ज़ की : अ़का ! येह लोगों की गीबत किया करते थे।

(دَلَالُ النَّبُوَّةِ لِلْبَيِّنَاتِ ج ۲ ص ۳۹۳، تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ۸۶)

क़ियामत में मुर्दा भाई का गोश्त खिलाया जाएगा : हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَام का फ़रमाने अज़ीम है : जो दुन्या में अपने (जिस) भाई का गोश्त खाएगा (या'नी

फरमाने मुस्तफा ﷺ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

गीबत करेगा) वोह (या'नी जिस की गीबत की थी) क़ियामत के दिन उस के क़रीब लाया जाएगा और उस से कहा जाएगा : “इसे मुर्दा हालत में (भी) खा जिस तरह इसे ज़िन्दा खाता था।” पस वोह उसे खाएगा और तेवरी चढ़ा लेगा (या'नी मुंह बिगाड़ेगा) और (सख़्त तकलीफ़ की वजह से) शोरो गुल मचाएगा।

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ٤٥٠ حديث ١٦٥٦)

ज़बान जलने से महफूज़ रहेगी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गीबतों और गुनाहों भरी बातों से रिश्ता तोड़िये और अल्लाह عزوجل की यादों, मीठे मीठे मुस्तफा ﷺ की ना'तों से रिश्ता जोड़िये ख़ूब दुरुदो सलाम के लिये ज़बान का इस्ति'माल कीजिये और ख़ूब ख़ूब तिलावते कुरआने पाक कीजिये और सवाब का ढेरों ख़ज़ाना हासिल कीजिये। चुनान्वे “रूहुल बयान” में येह हदीसे कुदसी है : जिस ने एक बार بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ को अल हम्द शरीफ़ के साथ मिला कर (या'नी الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ) ख़त्म सूरह तक) पढ़ा तो तुम गवाह हो जाओ कि मैं ने उसे बख़्श दिया, उस की तमाम नेकियां क़बूल फ़रमाई और उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये और उस की ज़बान को हरगिज़ न जलाऊंगा और उस को अज़ाबे क़ब्र, अज़ाबे नार, अज़ाबे क़ियामत और बड़े ख़ौफ़ से नजात दूंगा। (तफ़सीर रूह البیان ج ١ ص ٩) मिलाने का मज़ीद वाज़ेह तरीक़ा मुला-हज़ा फ़रमा लीजिये : بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ सूरह पूरी कीजिये।

रिहाई मुझ को मिले काश ! नफ़्सो शैतां से
गुनाह बे अ़दद और जुर्म भी हैं ला ता'दाद

तेरे हबीब का देता हूँ वासिता या रब
कर अ़पव सह न सकूंगा कोई सज़ा या रब

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्त्फा ﷺ : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उहद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज्जाक)

नमाज़ व रोज़े की नूरानिय्यत गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गीबत की तबाह कारियों में से येह भी है कि इस की नुहूसत से इबादत की नूरानिय्यत रुख़सत हो जाती है चुनान्चे एक बार का ज़िक्र है कि दो रोज़ादार जब नमाज़े ज़ोहर या अस्स से फ़ारिग़ हुए तो (ग़ैब जानने वाले) प्यारे प्यारे आका मक्की म-दनी मुस्त्फा ﷺ ने फ़रमाया : तुम दोनों वुजू करो और नमाज़ दोहराओ और रोज़ा पूरा करो और दूसरे दिन इस रोज़े की क़ज़ा करना। उन्होंने ने अर्ज की : या रसूलल्लाह ﷺ येह हुक्म किस लिये हुवा ? फ़रमाया : तुम ने फुलां शख़्स की गीबत की है।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٥ ص ٣٠٣ حديث ٦٧٢٩)

दो² फ़रामैने मुस्त्फा ﷺ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गीबत इबादत के हक़ में बड़ी तबाह कार है, इस ज़िम्न में दो फ़रामैने मुस्त्फा ﷺ मुला-हज़ा फ़रमाइये : 《1》 रोज़ा सिपर है, जब तक उसे फाड़ा न हो। अर्ज की गई : किस चीज़ से फाड़ेगा ? इर्शाद फ़रमाया : झूट या गीबत से। 《2》 रोज़ा इस का नाम नहीं कि खाने और पीने से बाज़ रहना हो, रोज़ा तो येह है कि लगव व बेहूदा बातों से बचा जाए।

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِم ج ٢ ص ٦٧ حديث ١٦١١)

क्या गीबत से रोज़ा टूट जाता है ? : गीबत से रोज़ा वगैरा इबादत की नूरानिय्यत चली जाती है। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 984 पर सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : एहतिलाम हुवा या गीबत की तो रोज़ा न गया (دُرِّمُخْتَار ج ٣ ص ٤٢١-٤٢٨) अगर्चे गीबत बहुत सख़्त कबीरा (गुनाह) है। कुरआने मजीद में गीबत करने की निस्बत फ़रमाया : “जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना।” और हदीस में फ़रमाया : “गीबत ज़िना से भी सख़्त तर है।”

अगर्चे गीबत की वजह से रोज़े की नूरानिय्यत जाती

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुक़दे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

रहती है। सफ़ह 996 पर फ़रमाते हैं : झूट, चुगली, ग़ीबत, गाली देना, बेहूदा (या'नी बे हयाई की) बात, किसी को तकलीफ़ देना कि येह चीज़ें वैसे भी ना जाइज़ व हराम हैं रोज़े में और ज़ियादा हराम और इन की वजह से रोज़े में कराहत आती है।

खौलते पानी और आग के दरमियान दौड़ने वाला : नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : चार तरह के जहन्नमी जो कि हमीम और जहीम (या'नी खौलते पानी और आग) के दरमियान भागते फिरते वैल व सुबूर (या'नी हलाकत) मांगते होंगे। इन में से एक शख्स वोह होगा कि जो अपना गोश्त खाता होगा। जहन्नमी कहेंगे : इस बद बख़्त को क्या हुवा हमारी तकलीफ़ में इज़ाफ़ा किये देता है ? कहा जाएगा : येह “बद बख़्त” लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) और चुगली करता था।

(دَمُّ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ٨٩ رقم ٤٩)

ख़ौफ़े गुनाह हो तो ऐसा ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आह ! जहन्नम का ख़ौफ़नाक अज़ाब !! ग़ीबत व मा'सिय्यत से कनारा कशी निहायत ही ज़रूरी है वरना सख़्त सख़्त सख़्त मुसीबत का सामना हो सकता है। हमें अपने गुनाहों पर नदामत होनी और इस की वजह से दहशत खानी चाहिये। काश ! नसीब हो जाए ! इस ज़िम्न में एक हिकायत पढ़िये और तड़पिये : एक मर्तबा अबिदीन या'नी नेक बन्दों का एक काफ़िला जिस में हज़रते सय्यिदुना अता رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ भी मौजूद थे सफ़र पर चला, कसरते इबादत के सबब उन अबिदीन की आंखें अन्दर की तरफ़ हो गई थीं, पाउं सूज गए थे और इतने कमज़ोर हो गए थे जैसे कि ख़रबूज़े के छिलके ! ऐसा महसूस होता था गोया अभी अभी क़ब्रों से निकल कर आए हैं ! राह में एक अबिद बेहोश हो गए और बा वुजूद येह कि वोह दिन सख़्त सर्दी के थे उन के सर से ब सबबे दहशत पसीना टपकने लगा ! होश आने के बा'द लोगों के इस्तिफ़सार पर बताया : जब मैं इस जगह से गुज़रा तो मुझे याद आया कि फुलां रोज़ इस मक़ाम पर मैं ने गुनाह किया था, इस ख़याल से मेरे दिल में हिसाबे आख़िरत की दहशत तारी हो गई और मैं बेहोश हो गया।

(احیاء العلوم ج ٤ ص ٢٢٩ مَلْخَصاً)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (अबू या'ला)

किसी की खामियां देखें न मेरी आंखें और
तुलें न हृश में अत्तार के अमल मौला

करे ज़बान न ऐबों का तज़्किरा या रब
बिला हिसाब ही तू इस को बख़्शना या रब

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُؤْبَوَالِی اللہُ اَسْتَغْفِرُ اللہُ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

तूने अपने भाई का गोश्त खाया है : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हम बारगाहे रिसालत में हाज़िर थे कि एक आदमी उठ कर चला गया । उस के जाने के बा'द एक शख्स ने उस की गीबत की तो नबिय्ये हाशिर, रसूले साबिरो शाकिर, महबूबे रब्बे कादिर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म सादिर फ़रमाया : “ख़िलाल करो !” उस ने अर्ज की : किस वजह से ख़िलाल करूं मैं ने गोश्त तो नहीं खाया ! तो इर्शाद फ़रमाया : बेशक तूने अपने भाई का गोश्त खाया (या'नी गीबत की) है । (المَعْجَمُ الْکَبِیْرُ لِلطَّبْرَانِی ج ۱۰ ص ۱۰۲ حدیث ۱۰۰۹۲)

“गीबत बहुत बड़ा गुनाह है” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से बैठक से उठ कर जाने वाले की गीबत की 16 मिसालें

इस हदीसे पाक से वोह लोग इब्रत हासिल करें जो कि अपनी मजलिस या'नी बैठक से उठ कर जाने वाले के बारे में इस तरह की बातें कर के गीबतों का इरतिकाब करते हैं म-सलन ★ यार ! वोह गया, जान छूटी ★ इस ने बोर कर दिया था ★ ख़्वाह म ख़्वाह बहस कर रहा था ★ अपनी चलाए जा रहा था ★ किसी की नहीं सुनता था ★ डेढ़ हुशयार है ★ चिकनी करता है ★ बात बात पर हा हा कर के हंसता था ★ सीधे मुंह बात कहां कर रहा था ★ ज़रा वायड़ा (या'नी लुच्चा, टेढ़ा) है ★ हां भई ऐसों से अल्लाह बचाए ★ पेट का भी

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

थोड़ा हलका है ★ B.B.C है ★ ढोल है ★ तुम ने वोह बात जो उस के सामने की ना इस का अब ख़ूब डंका बजाएगा ★ हां यार ! आइन्दा ये आए तो बात बदल दिया करो क्यूं कि उस के पेट में कोई बात नहीं रहती वगैरा वगैरा।

तू ग़ीबत की आदत छुड़ा या इलाही
हो बेज़ार दिल तोहमतों चुग़लियों से

बुरी बैठकों से बचा या इलाही
मुझे नेक बन्दा बना या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ اَسْتَغْفِرُ اللَّه

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

मुंह से गोश्त निकला : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से किसी ने ग़ीबत के बारे में (मा'लूमात के लिये) सुवाल किया तो उम्मुल मुअमिनीन ने फ़रमाया : एक दफ़आ जुमुआ के रोज़ मैं सुब्ह के वक़्त उठी, रसूलुल्लाह ﷺ सुब्ह के लिये तशरीफ़ ले गए। इतने में अन्सार की औरतों में से एक पड़ोसन मेरे पास आई और कुछ मर्दों और औरतों की ग़ीबत करने लगी, मैं भी ग़ीबत में शरीक हुई और हम दोनों हंसने लगीं। रसूलुल्लाह ﷺ सुब्ह की नमाज़ अदा कर के तशरीफ़ लाए तो उन की आवाज़ सुन कर हम दोनों ख़ामोश हो गईं। आप ﷺ ने घर के दरवाज़े में खड़े हो कर अपनी चादरे मुबारक का कोना पकड़ कर अपनी नाक पर रख लिया और इर्शाद फ़रमाया : उफ़ ! जाओ तुम दोनों कै कर के पानी से (मुंह) साफ़ करो। मैं ने कै की तो मुंह से बहुत सा गोश्त निकला ! इसी तरह दूसरी औरत ने भी गोश्त की कै की। मैं (या'नी सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) ने रसूलुल्लाह ﷺ से गोश्त निकलने की वजह पूछी तो फ़रमाया : येह गोश्त उस शख़्स का है जिस की

फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिगफ़र करते रहेंगे। (त-बरानी)

तुम ने गीबत की है।

(تفسير لار منشور ج ٧ ص ٥٧٢)

“औरतें दोज़ख़ में ज़ियादा होंगी” के तेईस हुरूफ़ की निस्बत से औरतों में की जाने वाली गीबतों की 23 मिसालें

इस हदीसे पाक को इस्लामी बहनें बार बार सुनें और इब्रत से सर धुनें ! अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस ! जब येह मिल कर बैठती हैं तो उमूमन ग़ैर मौजूद इस्लामी बहन की ख़ैर नहीं रहती, इन की आपस में गीबत की 23 मिसालें कुछ इस तरह हैं : ★ वोह त़लाक़न (या'नी त़लाड़ी) है ★ उस की सवा गज़ की ज़बान है ★ अपने मियां को कभी सुख का सांस नहीं लेने दिया ★ अपने मियां के सामने बहुत ज़बान चलाती है ★ हां भई ! फिर मियां के हाथों पिटती भी है ★ जी ! जी ! फिर भी इस की नाक कहां है ! ★ लगता है त़लाक़ लेगी तब सीधी बैठेगी ★ उस ने अपनी बहू के नाक में दम कर रखा है ★ बहू से नोकरानी की तरह काम करवाती है ★ अरे भई ! बहू को अपने हाथ से मारती है ★ बहू को रोटी कहां देती है ! ★ बहू बेचारी बीमार है तब भी आराम नहीं करने देती ★ पड़ोसनों से लड़ती रहती है ★ चिड़चिड़ी बहुत है ★ मियां के हाथ में दो पैसे आ गए हैं तो मिज़ाज आस्मान पर पहुंच गया है ★ बच्चों पर चीख़ती बहुत है ★ ऐसी कन्जूस है कि चमड़ी जाए मगर दमड़ी न जाए ★ ख़ाली ग़रीब बनती है काफ़ी सोना दबा रखा है ★ बच्ची बहुत शरीफ़ है मगर इस की मां की वजह से बेचारी की मंगनी टूटी है ★ उम्र काफ़ी हो गई है मगर इस को कहां कोई लेता है ★ बेटी जवान हो गई है मगर घर में नहीं बिठाती ★ दो दो बेटियों की शादी की मगर पड़ोस में किसी को झूटे मुंह भी दा'वत न दी ★ वोह तो सुसराल में झगड़ कर मैके आ बैठी है।

शह-शाहे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **का दीदार नसीब हो गया : इस्लामी बहनो !**

गीबत से सच्ची तौबा कीजिये और ज़बान की हिफ़ाज़त की तरकीब बनाइये इस पर इस्तिफ़ामत पाने के लिये तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अ़ालमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये। दा'वते इस्लामी का म-दनी

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

काम भी करती रहिये और दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफिलों की मुसाफिरा बनने की सआदत भी हासिल फरमाती रहिये।⁽¹⁾ अगर कोई पूछे कि म-दनी काफिलों में क्या मिलता है? तो मैं कहूंगा कि म-दनी काफिलों में क्या नहीं मिलता! इस म-दनी बहार को मुला-हज़ा फरमाइये और इश्के रसूल से लबरेज़ दिल का फ़ैसला म-दनी बहार के इख़िताम पर दिये हुए शे'र पर **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कह कर मोहरे तस्दीक लगा कर कीजिये। चुनान्वे हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूँ है कि हमारे अलाके में दा'वते इस्लामी की इस्लामी बहनों का एक म-दनी काफ़िला तशरीफ़ लाया। दूसरे दिन अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के बा'द होने वाले सुन्नतों भरे बयान में मुझे भी शिकत की सआदत मिली, बयान के बा'द जब सलातो सलाम के येह अशआर पढ़े गए, **”اے فہمّٰتِ مَدِیْنَةِ الصَّلٰوةِ وَالسَّلَامِ”** तो **اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने जागती आंखों से देखा कि शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** फूलों का हार पहने वहां तशरीफ़ ले आए हैं। अपने ग़म ख़्वार आका **صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** को देख कर मैं खुद पर काबू न रख सकी और मेरी आंखों से आंसूओं की झड़ी लग गई। फिर वोह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र मेरी निगाहों से ओझल हो गया यहां तक कि इज्तिमाअ इख़िताम को पहुंचा।

मिल गए वोह तो फिर कमी क्या है

दोनों आलम को पा लिया हम ने

صَلُّوْا عَلَی الْخَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

دینہ

(1) इस्लामी बहनों के म-दनी काफ़िले की हर मुसाफ़िरा के साथ उस के बच्चों के अब्बू या काबिले ए'तिमाद महरम का साथ होना लाज़िमी है नीज़ जिम्मेदारान को अपनी मरज़ी से म-दनी काफ़िले सफ़र करवाने की इजाज़त नहीं म-सलन पाकिस्तान की इस्लामी बहनों के म-दनी काफ़िले के लिये “इस्लामी बहनों की मजलिस बराए पाकिस्तान” की मन्ज़ूरी ज़रूरी है।



फरमाने मुस्फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अब्दुर्रज़ाक)

तुम ने अभी अभी गोश्त खाया है : एक बार सुल्ताने दो जहान, रहमते आ-लमियान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मकाने आलीशान में तशरीफ़ फ़रमा थे जब कि अस्हाबे सुफ़्फ़ा मस्जिद में थे और हज़रते सय्यिदुना जैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अहादीसे मुबा-रका सुना रहे थे, इतने में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में गोश्त हाज़िर किया गया । अस्हाबे सुफ़्फ़ा हज़रते सय्यिदुना जैद रَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहने लगे कि जाओ ! ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के पास जा कर अर्ज करो कि हम ने कई दिनों से गोश्त नहीं खाया ताकि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم हमें कुछ गोश्त इनायत फ़रमा दें । जब हज़रते सय्यिदुना जैद रَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ वहां से चले गए तो येह हज़रात आपस में कहने लगे : हज़रते सय्यिदुना जैद रَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी उसी तरह सरकारे का एनात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात करते हैं जिस तरह हम करते हैं फिर येह कैसे हमें अहादीसे मुबा-रका सुनाते हैं ! जब हज़रते सय्यिदुना जैद रَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ सरकारे नामदार صَلَّय اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के दरबार में हाज़िर हुए और अस्हाबे सुफ़्फ़ा की दर-ख्वास्त पेश की तो ग़ैब दान आका صَلَّय اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “जाओ उन से कहो कि तुम ने अभी अभी गोश्त खाया है !” आप रَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वापस आ कर उन्हें बताया तो वोह हज़रात क़सम खा कर कहने लगे कि हम ने तो कई दिनों से गोश्त नहीं खाया ! फिर हज़रते सय्यिदुना जैद रَضِयَ اللہُ तَعَالٰی عَنْہु सरकारे रिसालत صَلَّय اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में हाज़िर हुए और दोबारा अर्ज की तो फिर रसूलुल्लाह صَلَّय اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “उन्होंने ने अभी अभी गोश्त खाया है !” वोह वापस हुए और अस्हाबे सुफ़्फ़ा को येही जवाब बता दिया । अब की बार वोह सब सरकारे आली वकार صَلَّय اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार में हाज़िर हो गए । आप صَلَّय اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “तुम ने अभी अभी अपने भाई का गोश्त खाया है और इस का असर तुम्हारे दांतों में मौजूद है, थूक कर देख लो गोश्त की सुर्खी को ।” उन्होंने ने ऐसा ही किया तो वहां खून ही खून था, सब ने तौबा की, अपनी बात से रुजूअ किया और हज़रते सय्यिदुना जैद रَضِयَ اللہُ तَعَالٰی عَنْہु से मुआफ़ी मांगी ।

(تَنْبِیْہُ الْغَافِلِیْنَ ص ۸۶)

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे । (कन्जुल उम्माल)

मुर्दार खोर जहन्नमी : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात, शाहे मौजूदात ﷺ ने मे'राज की रात जहन्नम में ऐसे लोग देखे जो मुर्दार खा रहे थे ! इस्तिफ़सार फ़रमाया (या'नी पूछा) : **ऐ जिब्रईल !** येह कौन लोग हैं ? अर्ज़ की : येह वोह हैं जो लोगों का गोश्त खाते (या'नी ग़ीबत करते) थे । और एक शख़्स देखा जिस का रंग सुर्ख और आंखें इन्तिहाई नीली थीं तो पूछा : **ऐ जिब्रईल !** येह कौन है ? अर्ज़ की : येह (हज़रते सालेह عليه الصّلوٰة والسلام की) ऊंटनी की कूचें (या'नी टांगें) काटने वाला है । (मुसन्द امام احمد بن حنبل ج ١ ص ٥٥٣ حديث ٢٣٢٤)

मुर्दार का गोश्त खाना आसान नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बज़ाहिर ग़ीबत करना बहुत ही आसान लगता है, मगर याद रखिये ! जहन्नम में मुर्दार का गोश्त खाना कोई आसान बात नहीं, आज ज़िन्दगी में बकरे का ताज़ा कच्चा गोश्त कोई नहीं खा सकता, बल्कि अगर पकाने में कसर रह जाती है, नमक मसा-लहा कम होता है या ठन्डा हो जाता है तो बसा अवकात खाने को जी नहीं करता तो ज़रा तसव्वुर कीजिये कि कच्चा गोश्त और वोह भी ज़ब्द शुदा नहीं मुर्दार, फिर हलाल हैवान का नहीं मरे हुए इन्सान का ! ऐसा गोश्त भला कौन खा सकता है ! मज़ीद इस रिवायत में जिस गहरे सुर्ख और नीले रंग के आदमी का ज़िक्र है : वोह कौमे समूद का सब से परले द-रजे का शरीर और ख़बीसुन्नफ़्स शख़्स "क़दार बिन सालिफ़" था जिस ने हज़रते सय्यिदुना सालेह عليه الصّلوٰة والسلام की मुक़द्दस ऊंटनी की मुबारक टांगें काटी थीं ।

मुझे ग़ीबतों से बचा या इलाही
पए मुर्शिदी दे मुआफ़ी खुदाया

गुनाहों की आदत छुड़ा या इलाही
न दोज़ख़ में मुझ को जला या इलाही

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज्जवाइद)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُونُوا إِلَى اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

जहन्नमी बन्दर व खिन्ज़ीर : गीबत की तबाहकारी तो देखिये कि मशहूर वलियुल्लाह हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَمُ फ़रमाते हैं हमें येह बात पहुंची है कि : गीबत करने वाला जहन्नम में बन्दर की शकल में बदल जाएगा, झूटा दोज़ख़ में कुत्ते की शकल में बदल जाएगा, झूठा हासिद जहन्नम में सुवर की शकल में बदल जाएगा । (تَنْبِيْهُ الْمُنْتَزِعِيْنَ ص १९६)

चार⁴ नसीहतें : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 344 स-फ़हात पर मुशतमिल किताब, "मिन्हाजुल आबिदीन" सफ़हा 163 ता 164 पर है : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَمُ इर्शाद फ़रमाते हैं : मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की सोहबत में रहा उन में से हर एक ने मुझे येही वसियत की, कि जब लोगों में जाओ तो उन्हें इन चार बातों की नसीहत करना : (1) जो पेट भर कर खाएगा उसे इबादत की लज़ज़त नसीब नहीं होगी (2) जो ज़ियादा सोएगा उस की उम्र में ब-र-कत न होगी (3) जो सिर्फ़ लोगों की खुशनूदी चाहेगा वोह रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो जाएगा (4) जो गीबत और फुज़ूल गोई ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा । (مِنْهَاجُ الْعَابِدِيْنَ (عَرَبِي) ص ९८)

गीबत ईमान के लिये नुक़सान देह है : महबूबे रब्बुल इबाद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : गीबत और चुग़ली ईमान को इस तरह काट देती हैं जिस तरह चरवाहा दरख़्त को काट देता है । (التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ३ ص ३३२ حَدِيْث २८)

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया। (इन्ने सुन्ती)

कुफ़र पर मरने वाले के अज़ाबे क़ब्र की कैफ़ियत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

मा'लूम हुवा ग़ीबत से ﷺ ईमान जाएअ हो जाने का ख़ौफ़ है। आह ! जिस का ईमान बरबाद हो गया खुदा की क़सम ! वोह कहीं का न रहेगा, जब कुफ़र पर मरने वाला बद नसीब आदमी क़ब्र में पहुंचेगा तो मुन्कर नकीर के सुवालात के दुरुस्त जवाबात न दे सकेगा और फिर ख़ौफ़नाक अज़ाबात का सिल्सिला शुरू हो जाएगा। चुनान्वे दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द अव्वल सफ़हा 110 ता 111 पर सदरुशशरीअह बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : उस वक़्त एक पुकारने वाला आस्मान से पुकारेगा कि येह झूटा है, इस के लिये आग का बिछोना बिछोओ और आग का लिबास पहनाओ और जहन्नम की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दो। उस की गरमी और लपट उस को पहुंचेगी और उस पर अज़ाब देने के लिये दो फ़िरिशते मुक़रर होंगे, जो अन्धे और बहरे होंगे, उन के साथ लोहे का गुर्ज होगा कि पहाड़ पर अगर मारा जाए तो ख़ाक हो जाए, उस हथोड़े से उस को मारते रहेंगे। नीज़ सांप और बिच्छू उसे अज़ाब पहुंचाते रहेंगे, नीज़ आ'माल अपने मुनासिब शक़ल पर मु-तशक्किल हो कर कुत्ता या भेड़िया या और शक़ल के बन कर उस को ईज़ा पहुंचाएंगे।

जहन्नम में हमेशा रहने की लर्ज़ा ख़ैज़ कैफ़ियत : क़ियामत के मैदान में भी काफ़िर पर तरह तरह के अज़ाबात का सिल्सिला होगा और बिल आख़िर मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा जहां उसे हमेशा हमेशा रहना होगा। सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي मुख़्तलिफ़ दिल हिला देने वाले अज़ाबों का तज़्किरा करने के बा'द फ़रमाते हैं : फिर आख़िर में कुफ़ार के लिये येह होगा कि उस के क़द बराबर आग के सन्दूक में उसे बन्द करेंगे, फिर उस में आग भड़काएंगे और आग का कुफ़ल (या'नी आग का ताला) लगाया जाएगा, फिर येह सन्दूक आग के दूसरे सन्दूक में रखा जाएगा और उन दोनों के दरमियान

फरमाने मुस्तफा ﷺ : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमूउज्जवाइद)

आग जलाई जाएगी और उस में भी आग का कुफल लगाया जाएगा, फिर इसी तरह उस को एक और सन्दूक में रख कर और आग का कुफल लगा कर आग में डाल दिया जाएगा, तो अब हर काफ़िर येह समझेगा कि इस के सिवा अब कोई आग में न रहा, और येह अज़ाब बालाए अज़ाब है और अब हमेशा उस के लिये अज़ाब है। जब सब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो लेंगे और जहन्नम में सिर्फ़ वोही रह जाएंगे जिन को हमेशा के लिये उस में रहना है, उस वक़्त जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान मौत को मेंढे की तरह ला कर खड़ा करेंगे, फिर मुनादी (पुकारने वाला) जन्नत वालों को पुकारेगा : वोह डरते हुए झांकेंगे कि कहीं ऐसा न हो कि यहां से निकलने का हुक्म हो, फिर जहन्नमियों को पुकारेगा वोह खुश होते हुए झांकेंगे कि शायद इस मुसीबत से रिहाई हो जाए, फिर उन सब से पूछेगा कि इसे पहचानते हो ? सब कहेंगे : हां ! येह मौत है। वोह ज़ब्द कर दी जाएगी और कहेगा : ऐ अहले जन्नत ! हमेशगी है, अब मरना नहीं और ऐ अहले नार ! हमेशगी है, अब मौत नहीं, उस वक़्त उन (या'नी अहले जन्नत) के लिये खुशी पर खुशी है और इन (या'नी दोज़ख़ियों) के लिये ग़म बालाए ग़म। نَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّينِ وَالْ دُنْيَا (या'नी हम अल्लाह के लिये ग़म बालाए ग़म) से मुआफ़ी का सुवाल करते हैं और दीन व दुन्या और आख़िरत में आफ़ियत मांगते हैं)

(बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल, स. 170, 171)

अत़ार है ईमां की हिफ़ाज़त का सुवाली

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ख़ाली नहीं जाएगा येह दरबारे नबी से

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

نُؤْبِوْا اِلَی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

फरमाने मुस्तफा ﷺ जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया। (इन्हे सुनी)

नफ़ली इबादत न करने वाले से नफ़रत करना कैसा ? : हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन वासिला رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि महबूबे रब्बे का एनात, शहन्शाहे मौजूदात ﷺ की (जाहिरी) मुबारक हयात में एक साहिब किसी कौम के पास से गुज़रे तो उन्होंने ने उन्हें सलाम किया, उन लोगों ने सलाम का जवाब दिया। जब वोह साहिब वहां से तशरीफ़ ले गए तो उन में से एक शख्स ने उन साहिब के बारे में कहा : “मैं अल्लाह तआला के लिये इस शख्स से नफ़रत करता हूं।” जब उन साहिब को इस बात की ख़बर पहुंची तो उन्होंने ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हो कर सारा माजरा अर्ज किया और फ़रियाद की, कि आप ﷺ उन को बुला कर दरयाफ़्त फ़रमाइये कि मुझ से क्यूं नफ़रत करते हैं ? नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम ﷺ ने उसे बुलवा कर पूछा तो उन्होंने ने इक़्ार किया कि मैं ने येह बात कही है। इर्शाद फ़रमाया : तुम इस से क्यूं नफ़रत करते हो ? अर्ज की : मैं इन साहिब का पड़ोसी हूं और मैं इन की भलाई का ख़्वाहां हूं, खुदा عزّوجلّ की क़सम ! मैं ने कभी भी फ़र्ज नमाज़ के इलावा इन्हें (नफ़ल) नमाज़ पढ़ते हुए नहीं देखा, जब कि फ़र्ज नमाज़ तो हर नेक व बद पढ़ता है। फ़रियादी साहिब ने अर्ज की : या रसूलुल्लाह ﷺ ! इन से पूछिये, क्या इन्होंने ने मुझे फ़र्ज नमाज़ में ताख़ीर करते हुए देखा है ? या मैं ने वुज़ू में कोई कोताही की है ? या रुकूअ व सुजूद में कोई कमी की है ? आप ﷺ ने पूछा तो उन्होंने ने इन्कार करते हुए अर्ज की : मैं ने इस में ऐसी कोई बात नहीं देखी। फिर उस ने मज़ीद अर्ज की : अल्लाह عزّوجلّ की क़सम ! मैं ने इन साहिब को र-मज़ानुल मुबारक के इलावा कभी (नफ़ली) रोज़े रखते हुए नहीं देखा, इस महीने (या'नी माहे र-मज़ानुल मुबारक) का रोज़ा तो हर नेक व बद रखता है। येह सुन कर फ़रियादी ने अर्ज की : या रसूलुल्लाह ﷺ ! इन से पूछिये, क्या मैं ने कभी र-मज़ानुल मुबारक में रोज़ा छोड़ा है ? या रोज़े के हक़ में कोई कमी की है ? पूछने पर उन्होंने ने अर्ज की : नहीं। फिर उस ने कहा : अल्लाह तआला की

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

कसम ! मैं ने नहीं देखा कि इन साहिब ने ज़कात के इलावा किसी मिस्कीन या साइल को कुछ दिया हो या अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च किया हो, ज़कात तो हर नेक व बद अदा करता है। फरियादी ने अर्ज की : या रसूलल्लाह ﷺ ! इन से पूछिये, क्या इन्होंने मुझे ज़कात की अदाएगी में कोताही करते हुए देखा है ? या मैं ने कभी इस में टालम टोल से काम लिया है ? दरयाफ्त करने पर उन्होंने अर्ज की : नहीं। हुज़ूरे पुरनूर ﷺ ने उस नफ़्त करने वाले से फरमाया : उठ जाओ, शायद येह तुम से बेहतर हो।

(मुसन्द इमाम अहमद ज ९ ص २१० حديث २३८६)

“गीबत मत करो” के नव हुरूफ़ की निस्बत से मुस्तहब्बात व नवाफ़िल में गीबत की 9 मिसालें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस तरह फ़राइज़ व वाजिबात की कोताही करने वालों की कोताहियों का बिला इजाज़ते शर-ई पीछे से तज़्किरा गीबत है, मुस्तहब्बात व नवाफ़िल में भी बुराई बयान करने के तौर पर तज़्किरा करने का येही हुक्म है। क्यूं कि येह भी ईज़ाअ {إِذْأ} का बाइस है। मुस्तहब्बात व नवाफ़िल में सुस्ती करने वालों की गीबतों की 9 मिसालें मुला-हज़ा हों : ★ वोह तहज्जुद नहीं पढ़ता ★ उस ने ज़िन्दगी में कभी आशूरा का रोज़ा नहीं रखा ★ इश्राक़ चाशत नहीं पढ़ता ★ वोह अक्वाबीन क्या पढ़ेगा ! उस को येह तो पूछो कि येह नवाफ़िल किस वक़्त पढ़े जाते हैं ★ वोह तबर्क़ कह कर नियाज़ तो खा लेता है मगर इस के लिये चन्दा कभी नहीं देता ★ मेरा सेठ ज़रा वायड़ा (या'नी टेढ़ा) है तीन दिन के म-दनी काफ़िले के लिये छुट्टी ही नहीं देता ★ मैं ने उस से कहा भी कि सब पढ़ रहे हैं तुम भी सलातुतौबा पढ़ लो मगर उस ने नहीं पढ़ी ★ कुरआन ख़्वानी में सब से आख़िर में पहुंचता है शायद इस को कुरआन पढ़ना नहीं आता ★ वोह ना'त ख़्वानी में ताख़ीर से बल्कि नियाज़ के वक़्त पहुंचता है।

गीबत के अन्दाज़ : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 413 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “उयूनुल हिक्कायात” हिस्सा दुवुम स-फ़हा 313 पर हज़रते



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह غُذُول तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

सय्यिदुना हारिस मुहासिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ग़ीबत से बच ! बेशक वोह ऐसा अजीब शर (या'नी बुराई) है जिसे इन्सान खुद आगे बढ़ कर हासिल करता है। तेरा उस चीज़ के बारे में क्या खयाल है जो तुझे एहसान फ़रामोशी पर उभारे, तेरी इतनी नेकियां छीन कर उन को दे दे जिन की तूने ग़ीबत की है यहां तक कि वोह राज़ी हो जाएं क्यूं कि बरोजे क़ियामत दरहम व दीनार काम नहीं आएंगे। बेशक ! जितना तू मुसलमानों की इज़्ज़त को नुक़सान पहुंचाएगा उतनी ही मिक्दार में तेरा दीन तुझ से ले लिया जाएगा, लिहाज़ा ग़ीबत से बच, ग़ीबत के मम्बअ (या'नी निकलने की जगह) और इस के अस्बाब को पहचान कि तुझ पर ग़ीबत किन किन जगहों से आती है। मज़ीद फ़रमाते हैं : तवज्जोह से सुन ! बेशक बा'ज जाहिल व नादान इस अन्दाज़ पर भी ग़ीबत में मुव्तला होते हैं कि गुनहगारों पर ख़्वाह म ख़्वाह गुस्से होते और उन से हसद और बद गुमानी करते हैं फिर शैतान के बहकावे में आ कर مَعَاذِ اللّٰهِ غُذُول उस गुस्से को “दीनी ग़ैरत” का नाम देते और येह कहते सुनाई देते हैं कि मैं अपनी ज़ात के लिये गुस्सा नहीं कर रहा मैं तो दीन के नुक़सान की वजह से फुलां को बुरा भला कहता या डांट डपट करता हूं ! येह ऐसी बुराइयां हैं जो कि अक्ल मन्दों से पोशीदा नहीं। बा'ज लोग अहले इल्म होने के बा वुजूद शैतान के धोके में आ कर जब किसी की बुराई बयान करते हैं तो कहते हैं : “हम तो उस की नसीहत और इस्लाह के लिये ऐसा कर रहे हैं, हम तो उस के ख़ैर ख़्वाह और भलाई चाहने वाले हैं।” हालां कि हकीकत में ऐसा नहीं होता क्यूं कि अगर वाक़ेई वोह ख़ैर (या'नी भलाई) के तालिब होते तो कभी ग़ीबत जैसी आफ़त में न पड़ते और उन की नसीहत उन के लिये ग़ीबत पर मुआविन (मददगार) न होती। (बल्कि जिस ने ग़-लती की है बराहे रास्त उस को समझाते या इस्लाह का शर-ई तरीक़ा इख़्तियार करते, पीठ पीछे ग़ीबत करते फिरना येह कौन सा इस्लाह का तरीक़ा है !)

तवज्जोह से सुन ! बसा अवक़ात नेक परहेज़गार लोग भी हैरत का इज़हार करने के अन्दाज़ में अपने मुसलमान भाई की ग़ीबत कर बैठते हैं। रहे उस्ताद, सरदार और अफ़सर वग़ैरा तो बा'ज दफ़आ वोह शफ़क़त व रहम दिली के तरीक़े से ग़ीबत की गहरी खाई में जा गिरते हैं। म-सलन अपने शागिर्द या मा तहत के बारे में कहते हैं : “अफ़सोस ! वोह फुलां फुलां ग़लत काम (म-सलन बुरी सोहबत या नशे की नुहूसत) में पड़ गया, काश ! बेचारा फुलां बुराई (म-सलन हेरोईन

फरमाने मुस्तफा ﷺ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

पीने) का मुर-तकिब न होता !” दर हकीकत वोह अफ़सोस नहीं कर रहे होते इस तरह की बातें कर के इस बहाने वोह उस की पोलें खोल डालते हैं मगर समझते येह हैं कि हम उस से महबबत और हमदर्दी की वजह से ऐसा कह रहे हैं हालां कि वोह गीबत के गुनाह में पड़ चुके होते हैं, वरना अपने मा तहत या शागिर्द का क्या खौफ़ ? पीछे से इस तरह गीबत करने के बजाए बराहे रास्त उस को समझा कर सच्ची महबबत का सुबूत दे सकते थे। बा’ज अवकात एक शख्स किसी की बुराई को दूसरों के सामने ज़ाहिर करते हुए कहता है : “मैं ने उस की बुराई पर तुम को इस लिये मुत्तलअ किया है ताकि तुम अपने भाई के लिये खुसूसी दुआ करो।” अपने गुमान में येह इसे हमदर्दी व शफ़क़त समझता है लेकिन हकीकत में येह गीबत कर रहा होता है। अल्लाहु रहमान عَزَّوَجَلَّ हमें शैतान के खुफ़्या वारों से बचाए। हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाहे रहमत में दुआ करते हैं कि वोह मुसल्मानों की गीबत से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए।

امین بجاہ النبی الامین ﷺ

(عیون الحکایات (عربی) ص ۳۸۱ ملخصاً)

अफ़सोस मरज़ बढ़ता ही जाता है गुनाहों का
हो नज़रे शिफ़ा अर्ज़ ऐ सरकारे मदीना है

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُونُوا لِي اللهُ اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ना बालिग़ की गीबत : जिस तरह बच्चे के साथ झूट बोलने की इजाज़त नहीं इसी तरह उस की गीबत की भी मुमा-न-अत है। ख़्वाह एक ही दिन का बच्चा हो, बिला मस्ल-हते शर-ई उस



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

की भी बुराई बयान न की जाए। मां बाप और घर के दीगर अफ़ाद के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या है उन को चाहिये कि बिला ज़रूरत अपने बच्चों को पीछे से (और मुंह पर भी) ज़िद्दी, शरारती, मां बाप का ना फ़रमान वगैरा न कहा करें।

किस बच्चे की ग़ीबत जाइज़ है और किस की ना जाइज़ ? : हज़रते अल्लामा अब्दुल हय्य लख्खवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : हज़रते अल्लामा सय्यिदुना इब्ने आबिदीन शामी قَدِيسُ سِرَّةِ السَّامِي ने इमाम इब्ने हजर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَر से नक़ल किया है : “जिस तरह बालिग़ की ग़ीबत हराम है उसी तरह ना बालिग़ और मजनून (या'नी पागल) की ग़ीबत भी हराम है।”

(رَدُّ الْمُحْتَار ج ٦ ص ١٧٦) लेकिन राक़िमुल हुरूफ़ (या'नी मौलाना अब्दुल हय्य साहिब) के नज़्दीक तफ़्सील बेहतर है : 《1》 ऐसा ना बालिग़ बच्चा जो फ़िल जुम्ला (या'नी थोड़ी बहुत) समझ रखता हो कि अपनी ता'रीफ़ पर खुश और अपनी बुराई से नाखुश होता हो जैसा कि मा'तूह (या'नी आधा पागल भी अपनी ता'रीफ़ और मज़म्मत की समझ रखता है) तो ऐसे ना बालिग़ (बच्चे) की ग़ीबत जाइज़ नहीं इसी तरह नीम पागल की भी ना जाइज़ है 《2》 ऐसे ना समझ बच्चे (म-सलन दूध पीते बच्चे) और पागल की भी ग़ीबत जाइज़ नहीं जिन का कोई वाली वारिस है, बेशक वोह बच्चा या पागल अपनी ता'रीफ़ या बुराई समझने की तमीज़ नहीं रखता ताहम उन के ऐब बयान करने से उन के मां बाप वगैरा को बुरा लगेगा 《3》 ऐसा ला वारिस बच्चा या ला वारिस पागल जो अपनी ता'रीफ़ व ग़ीबत से खुश और नाखुश होने की सलाहियत नहीं रखता उस की ग़ीबत जाइज़ है मगर ज़बान को ऐसों की ग़ीबत से भी रोकना ही बेहतर है (क्यूं कि बा'ज़ फु-क़हाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने मुत्लक़न या'नी एक दिन के बच्चे और मुकम्मल पागल की ग़ीबत को भी हराम क़रार दिया है)

(माखूज़ अज़ : ग़ीबत क्या है, स. 20, 21)

छोटे बच्चे की ग़ीबत की 17 मिसालें : बहर हाल पागल हो या समझदार, बालिग़ हो या ना बालिग़, बूढ़ा हो या दूध पीता बच्चा हर एक की ग़ीबत से बचना चाहिये, बच्चों की ग़ीबतों की बे शुमार मिसालें हो सकती हैं, क्यूं कि इन की ग़ीबत के गुनाह होने की तरफ़ बहुत कम लोगों की तवज्जोह है, जो मुंह में आया बोल दिया जाता

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عزوجل उस के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उहद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज्जाक)

है। यहां नुमूनतन सिर्फ 17 मिसालें पेश की जाती हैं जो कई सूरतों में गीबत में दाखिल हो सकती हैं : ★ बिस्तर गन्दा कर देता है ★ इतना बड़ा हो गया मगर तमीज़ नहीं आई ★ इस को झूट की आदत पड़ गई है ★ छोटी बहन को नोचता है ★ छोटे मुन्ने को गोद में लो तो बड़ा मुन्ना हसद करता है ★ दोनों मुन्ने एक दूसरे की चुगलियां खाते रहते हैं ★ छोटा पढ़ाई में बहुत ज़हीन है मगर बड़ा 8 साल का हुवा अभी तक कुन्द ज़ेहन है ★ मां को बहुत तंग करता है ★ मुन्नी रात को बहुत चीखती है न सोती है न किसी को सोने देती है ★ मुन्ने ने गुस्से में लात मार कर पानी का कूलर उलट दिया ★ बहुत चिड़चिड़ा हो गया है ★ बात बात पर रूठ जाता है ★ रोज़ाना खाने के वक़्त झगड़ता है ★ पढ़ने में कमज़ोर है ★ बड़ी बच्ची ने छोटी वाली को बाल खींच कर गिरा दिया ★ बस लड़ता ही रहता है ★ सुब्ह उठा उठा कर थक जाते हैं मगर जवाब नहीं देता वगैरा।

बच्चों को गीबत मत करने दीजिये : उमूमन बच्चे अपने छोटे बहन भाइयों और दीगर घर वालों की अपनी तुतली ज़बान में या इशारों से गीबतें करते रहते हैं और घर वाले हंस हंस कर दाद देते हैं, कभी किसी को लंगड़ाता देख लेते हैं तो खुद भी उस की नक़ल उतारते हुए लंगड़ा कर चलते हैं और घर वालों से दाद वसूल करते हैं हालां कि किसी मुअय्यन व मा'लूम मा'जूर की इस तरह की नक़ाली भी गीबत है। बाप जब काम काज से शाम को लौटता है तो आम तौर पर बच्चा या बच्ची दिन भर की “कारकदर्गी” सुनाते हैं, इस से लुत्फ़ तो बहुत आता है मगर उस कारकदर्गी में गीबतों की भी अच्छी खासी भरमार होती है ! बच्चों को तो गुनाह नहीं होता मगर औलाद की सही तरबियत करना चूंकि वालिदैन की ज़िम्मेदारी है और यूँ बच्चों की ज़बानी गीबतें सुनने से औलाद की ग़लत तरबियत होती है लिहाज़ा औलाद की ग़लत तरबियत का वबाल मां बाप के सर आ जाता है, यकीनन बच्चों के गीबत करने पर हंस पढ़ने से उन की हौसला अफ़ज़ाई होती है और वोह गोया इस तरह गीबत की तरबियत हासिल करते रहते हैं और बेचारे बालिग़ होने के बा'द अक्सर गीबत के गुनाह में पक्के हो चुके होते हैं। लिहाज़ा जब भी बच्चा गीबत करे, चुगली खाए या झूट बोले तो उस की तुतली ज़बान से महज़ूज़ या'नी लुत्फ़ अन्दोज़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुक़दे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

होते हुए शैतान के बहकावे में आ कर हंसा मत कीजिये, ऐसे मौक़अ पर एक दम सन्जीदा हो जाइये उस बात पर उस की हौसला शिकनी कीजिये और मुनासिब अन्दाज़ में उस को समझाइये, जब बार बार उस को समझाते रहेंगे और उस को घर का कोई भी फ़र्द ग़ीबत वग़ैरा पर उसे दाद नहीं देगा तो اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ खुद भी ग़ीबत वग़ैरा सुनने की आफ़त व गुनाहों से बचे रहेंगे और मुन्ना भी बड़ा हो कर اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ नेक बन्दा बनेगा और ग़ीबत वग़ैरा से नफ़रत रखेगा।

बच्चों की फ़रियाद रसी कीजिये : हां अगर मुन्ना महज़ बोलने की खातिर नहीं बोल रहा बल्कि आप से फ़रियाद कर के इन्साफ़ त़लब कर रहा है तो बेशक उस की फ़रियाद सुनिये और इमदाद कीजिये। म-सलन मुन्ना कहने लगा कि मुन्नी ने मेरा खिलौना छीन कर कहीं छुपा दिया है तो येह ग़ीबत नहीं, क्यूं कि मुन्ना मां बाप से फ़रियाद नहीं करेगा तो किस से करेगा ! लिहाज़ा आप मुन्नी से उस का खिलौना दिला दीजिये। अब अगर खिलौना मिल जाने के बा'द मुन्ना इसी बात को मुन्नी की ग़ैर मौजूदगी में म-सलन अपनी अम्मी से ज़िक्र करता है कि “मुन्नी ने मेरा खिलौना छीन कर छुपा दिया था तो अब्बू ने मुन्नी को डांट पिलाई और मुझे मेरा खिलौना वापस दिलाया” तो येह बहर हाल ग़ीबत है अगर बच्चों को इस का गुनाह न हो। उमूमन बच्चे जिन लोगों से मानूस होते हैं उन को फ़रियाद करते रहते हैं तो अगर किसी से मज़क़ूरा मिसाल की मानिन्द फ़रियाद की और वोह फ़रियाद रसी या'नी इमदाद नहीं कर सकता। तो अब ग़ीबत पर मन्बी फ़रियाद न सुने बल्कि हतल इम्कान अच्छे अन्दाज़ में बच्चे को टाल दे।

बच्चों से सादिर होने वाली ग़ीबत की 3 मिसालें

★ मेरा खिलौना तोड़ दिया है ★ मेरी टोफ़ी छीन कर खा ली ★ मेरी आइस्क्रीम गिरा दी ★ मुझे पीछे से “हाउ” कर के डरा देता है, शरीर कहीं का ★ मुझ पर बिल्ली का बच्चा डाल दिया ★ मुझे “गन्दा बच्चा” कह कर चिड़ाता है ★ मेरी नोटबुक फाड़ दी ★ मुझे धक्का दे कर गिरा दिया ★ मेरे कपड़े गन्दे कर दिये ★ अपनी बाबा साइकिल मेरे पाउं पर चढ़ा दी ★ अपने कपड़े गन्दे कर देता है ★ वोह गन्दा बच्चा है ★ अम्मी के पास मेरी चुग़लियां लगाता है ★ झूट बोल कर उस्ताद से मुझे मार



फरमाने मुस्तफा ﷺ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (अबू या'ला)

खिलाई थी ★ अम्मी मद्रसे का बोलती है तो रोता है ★ मुन्नी अम्मी को मारती है ★ उस्ताद ने उस को कल “मुर्गा” बनाया था ★ इतना बड़ा हो गया मगर निप्पल चूसता है ★ हर वक्त उस की नाक बहती रहती है ★ रोज़ रोज़ पेन्सिल गुमा देता है ★ उस दिन अब्बू की जेब से पैसे चुरा लिये थे ★ उस दिन अम्मी ने उस की ख़ूब पिटाई लगाई थी।

बच्चों को झूटे बहलावे मत दीजिये : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 159 ता 160 पर है : अबू दावूद व बैहकी ने अब्दुल्लाह बिन अमिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत की, कहते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ हमारे मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे। मेरी मां ने मुझे बुलाया कि आओ तुम्हें दूंगी। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़रमाया : क्या चीज़ देने का इरादा है ? उन्होंने ने कहा, खजूर दूंगी। इर्शाद फ़रमाया : “अगर तू कुछ नहीं देती तो येह तेरे ज़िम्मे झूट लिखा जाता।”

(سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٨٧ حديث ٤٩٩١)

देखा आप ने ! बच्चों के साथ भी झूट बोलने की इजाज़त नहीं, अफ़सोस ! आज कल बच्चों को बहलाने के लिये अक्सर लोग झूट मूट इस तरह कह दिया करते हैं कि तुम्हारे लिये खिलौने लाएंगे, हवाई जहाज़ ला कर देंगे वगैरा। इसी तरह डराने के लिये अक्सर माएं भी झूट बोल दिया करती हैं कि वोह बिल्ली आई, कुत्ता आया वगैरा। जिन लोगों ने ऐसा किया उन को चाहिये कि सच्ची तौबा करें।

गूंगा क़ादियानी कैसे मुसल्मान हुवा : म-दनी मुन्नों की गीबतों से खुद को बचाने और उन का भी गीबतों से बचने का ज़ेहन बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये, सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में पाबन्दी से शिर्कत कीजिये, म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिये। आप की तरगीब के लिये एक अनोखी म-दनी बहार पेश की जाती है, ग़ौर से सुनिये और

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

झूमिये : चुनान्चे सूबए पंजाब के शहर **खुशाब** में एक गूंगे बहरे इस्लामी भाई जो दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** की ब-र-कत से गुनाहों से ताइब हो कर नेकियों की राह पर गामज़न हो चुके थे। उन के घर के करीब एक गूंगे बहरे शख्स की रिहाइश थी जो **कादियानी** था। येह "गूंगे इस्लामी भाई" उस गूंगे कादियानी से मुलाकात कर के इशारों की ज़बान में **इन्फ़िरादी** कोशिश करते हुए राहे हक़ की दा'वत पेश किया करते और उसे समझाते कि दीने इस्लाम ही वोह वाहिद मज़हब है जिस में दुन्या व आख़िरत की भलाइयां पोशीदा हैं और हकीकी क़ल्बी सुकून भी इसी मज़हबे हक़ की क़बूलिय्यत में है। वोह गूंगा कादियानी दा'वते इस्लामी के गूंगे मुबल्लिग़ की पुर तासीर म-दनी बातों में दिलचस्पी तो लेता मगर कोई वाज़ेह जवाब न देता। वोह (गूंगा कादियानी) कुछ दुन्यवी मसाइल की वजह से बहुत परेशान था और सुकून की तलाश में था। इसी दौरान दा'वते इस्लामी के गूंगे मुबल्लिग़ ने उसे दा'वते इस्लामी के बैनल अक्वामी तीन रोज़ा **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ** में शिक़त की दा'वत दी, जिसे उस ने क़बूल कर लिया। जब वोह "गूंगा कादियानी" मदी-नतुल औलिया (मुलतान शरीफ़) दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिक़त के लिये **सहराए मदीना** पहुंचा तो हर तरफ़ सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ की बहारें और **दुरूदो सलाम की सदाएं** थीं, अल ग़रज़ एक अज़ीब रूह परवर समां था। येह मनाज़िर देख कर वोह गूंगा कादियानी इस **म-दनी माहोल** से इस क़दर मु-तअस्सिर हुवा कि उस ने वहीं इज्तिमाअ में अपने बातिल मज़हब कादियानिय्यत से तौबा की और **कलिमा पढ़ कर मुसल्मान** हो गया और ग़ौसे पाक ﷺ की गुलामी का पट्टा अपने गले में डाल कर "कादिरी र-ज़वी" भी बन गया।

दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये
अर्सए महशर में आका लाज रखना आप ही

ﷺ

मेरी हाजत से मुझे जाइद न करना मालदार
दामने अत्तार है सरकार ! बेहद दाग़दार

ﷺ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (त-बरानी)

मुसल्मान की बे इज़्ज़ती कबीरा गुनाह है : रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने अलीशान है : बेशक किसी मुसल्मान की नाहक़ बे इज़्ज़ती करना कबीरा गुनाहों में से है।

(سُنَنِ ابودَاوُد ج ٤ ص ٣٥٣ حديث ٤٨٧٧)

खुदा व मुस्तफ़ा को ईज़ा देने वाला : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हकीकत येह है कि एक मुसल्मान अपने दूसरे मुसल्मान भाई की इज़्ज़त का मुहाफ़िज़ है मगर अफ़सोस ! ऐसा नाजुक दौर आ गया है कि अब अक्सर मुसल्मान ही दूसरे मुसल्मान भाई की इज़्ज़त के पीछे पड़ा हुवा है जी भर कर ग़ीबतें कर रहा है और चुग़लियां खा रहा है, बिला तकल्लुफ़ तोहमतें लगा रहा है, बिला वजह दिल दुखा रहा है, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला, "ज़ुल्म का अन्जाम" सफ़हा 19 ता 20 पर है : हुक्कूल इबाद का मुआ-मला बड़ा नाजुक है मगर आह ! आज कल बेबाकी का दौर दौरा है, अ़वाम तो कुजा ख़वास कहलाने वाले भी उमूमन इस की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं। गुस्से का मरज़ अ़म है इस की वजह से अक्सर "ख़वास" भी लोगों की दिल आज़ारी कर बैठते हैं और इस की तरफ़ उन की बिल्कुल तवज्जोह नहीं होती कि किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शर-ई दिल आज़ारी गुनाह व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ जिल्द 24 सफ़हा 342 में त-बरानी शरीफ़ के हवाले से नक्ल करते हैं : सुल्ताने दो जहान مَن اَذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اَذٰىنِيْ وَمَنْ اَذٰىنِيْ فَقَدْ اَذٰى اللّٰهَ. : **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने इब्रत निशान है : (या'नी) जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **اَللّٰهُ** व **رَسُول** (الْمُحَمَّدُ الْاَوْسَطُ ج ٢ ص ٣٨٧ حديث ٣٦٠٧) **اَللّٰهُ** व **رَسُول** को ईज़ा दी। **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को ईज़ा देने वालों के बारे में **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** पारह 22 सू-रतुल अहज़ाब आयत 57 में इर्शाद फ़रमाता है :

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ
لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا ۝ (پ ۲۲ الاحزاب ۵۷)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : : बेशक जो ईजा देते हैं अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल को उन पर अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की ला'नत है दुनिया व आखिरत में और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने उन के लिये जिल्लत का अज़ाब तय्यार कर रखा है।

मोमिन की हुरमत का 'बे से बढ़ कर है : सु-नने इब्ने माजह में है : खा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन ﷺ ने का'बए मुअज़्जमा को मुखातब कर के इर्शाद फरमाया : मोमिन की हुरमत तुझ से ज़ियादा है।

(سَنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ۴ ص ۳۱۹ حدیث ۳۹۳۲)

कामिल मुसल्मान की ता'रीफ़ : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा ﷺ का फरमाने अ-ज़मत निशान है : اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ : या'नी मुसल्मान वोह है कि उस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसल्मान महफूज़ रहें।

(صَحِيحُ بُخَارِي ج ۱ ص ۱۵۰ حدیث ۱۰)

दाइरए ईमान से निकल जाने का ख़तरा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कामिल मुसल्मान वोही है जो ज़बान से किसी को गाली न दे, बिला इजाज़ते शर-ई किसी को बुरा न कहे, किसी की ग़ीबत न करे, किसी को बे वुकूफ़ न कहे, किसी के ऐब को न खोले, किसी का भेद न खोले और हाथ से किसी को तकलीफ़ न दे, किसी की दिल आज़ारी न करे, बिला इजाज़ते शर-ई किसी को न मारे, किसी को तन्कीदे बे जा का निशाना न बनाए, जो शख्स ऐसा न हुवा बल्कि लोगों को उस ने हर तरह की तकलीफ़ दी, हाथ से मारा, आंख से किसी की तरफ़ ईजा देने वाले अन्दाज़ से इशारा किया, हर शख्स उस से तंग व बेज़ार रहा तो वोह शख्स कामिल मुसल्मान नहीं है, ईमान उस के दिल में मज़बूत नहीं है,

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफा की । (अब्दुर्रज्जाक)

इन्तिकाल के वक्त एहूतिमाल है कि **مَعَاذُ اللَّهِ** शैतान ग़ालिब आ जाए और हर तरह से उसे वस्वसे डाले और **مَعَاذُ اللَّهِ** वोह शख्स दाइरए ईमान से निकल जाए और **اَللّٰهُ** न करे उस का क़दम सिराते मुस्तकीम से फिसल जाए और वोह जहन्नम की राह इख़्तियार करे, जन्नत से महरूम रहे । ब ख़िलाफ़ इस के जिस का ईमान कामिल हो, इस्लाम की सच्ची **महब्बत** उस के दिल को हासिल हो, कामिल मुसलमानों वाले आ'माल व अफ़्आल उस के अन्दर पाए जाते हों, बन्दों के हुकूक गरदन पर न उठाए हों, इस सूरत में **بِقَضَائِهِ** शैतान का वस्वसा मौत के वक्त असर अन्दाज़ न होगा, दरियाए ईमान जोश मारेगा, फिरिश्ता इब्लीस को भगा देगा, वसाविस को दूर करेगा, इस लिये ख़ातिमा बिलखैर होगा, शैतान अपना सर पीटेगा, अपने सर पर ख़ाक उड़ाएगा और बहुत चीखेगा चिल्लाएगा ।

जिन्दगी और मौत की है या इलाही कश्मकश
जां चले तेरी रिज़ा पर बे कसो मजबूर की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَوَنُّوْا إِلَى اللَّهِ اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बद अक़ीदगी से तौबा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कामिल मुसल्मान बनने के लिये, गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब जिन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आमात** के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये और हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

अव्वल ता आखिर शिर्कत कीजिये। आप की तरगीब के लिये ईमान अफ़ोज म-दनी बहार पेश की जाती है चुनान्चे लतीफ़ आबाद हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह बताया : बा'ज लोगों की सोहबत में बैठने की बिना पर मेरा जेहन खराब हो गया और मैं तीन साल तक नियाज़ शरीफ़ और मीलाद शरीफ़ बग़ैरा पर घर में ए'तिराज़ करता रहा मुझे पहले दुरुद शरीफ़ से बहुत शग़फ़ था (या'नी बेहद दिलचस्पी व रग़बत थी) मगर ग़लत सोहबत के सबब दुरुदे पाक पढ़ने का ज़ब्बा ही दम तोड़ गया। इत्तिफ़ाक़ से एक बार मैं ने दुरुद शरीफ़ की फ़ज़ीलत पढ़ी तो वोह ज़ब्बा दोबारा जागा और मैं ने कसरत के साथ दुरुदे पाक पढ़ने का मा'मूल बना लिया। एक रात जब दुरुद शरीफ़ पढ़ते पढ़ते सो गया तो الْحَمْدُ لِلَّهِ مُحَمَّدٌ मुझे ख़्वाब में सब्ज़ गुम्बद का दीदार हो गया और बे साख़्ता मेरी ज़बान से الصلوة والسلام عليك يا رسول الله जारी हो गया। सुब्ह जब उठा तो मेरे दिल के अन्दर हलचल मची हुई थी, मैं इस सोच में पड़ गया कि आखिर हक़ का रास्ता कौन सा है? हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से दा'वते इस्लामी वाले आशिक़ाने रसूल का सुन्नतों की तरबिय्यत का म-दनी क़ाफ़िला हमारे घर की क़रीबी मस्जिद में आया तो किसी ने मुझे म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत दी, मैं चूँकि मु-तज़ब्ज़ब (Confused) था इस लिये तलाशे हक़ के ज़ब्बे के तहत म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। मैं ने सफ़ेद इमामा बांधा था मगर सब्ज़ इमामे वाले म-दनी क़ाफ़िले वालों ने सफ़र के दौरान मुझ पर न किसी किस्म की तन्कीद की न ही तन्ज़ किया बल्कि अज्जबिय्यत ही महसूस न होने दी। अमीरे क़ाफ़िला ने म-दनी इन्आमात का तआरुफ़ करवाया और इस के मुताबिक़ मा'मूल रखने का मश्वरा दिया। मैं ने म-दनी इन्आमात का बग़ैर मुता-लआ किया तो चोंक उठा क्यूं कि मैं ने इतने ज़बर दस्त तरबिय्यती म-दनी फूल ज़िन्दगी में पहली ही बार पढ़े थे। आशिक़ाने रसूल की सोहबत और म-दनी इन्आमात की ब-र-कत से मुझ पर रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़ल हो गया। मैं ने म-दनी क़ाफ़िले के तमाम मुसाफ़िरों को जम्अ कर के ए'लान किया कि कल तक मैं बद अक़ीदा था आप सब गवाह हो जाइये कि आज से तौबा करता हूं और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता रहने की निय्यत करता हूं। इस्लामी भाइयों ने इस पर फ़रहत व मुसररत का इज़हार किया। दूसरे दिन 30 रुपै की नुक्ती (एक बेसन की मिठाई जो मोती के दानों

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़यामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी । (मजमउज्जवाइद)

की तरह बनी होती है) मंगवा कर मैं ने सरकारे बग़दाद हुजूरे गौसे आ'ज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी قُدَس سرُّہ الرّبّانی की नियाज़ दिलवाई और अपने हाथों से तक्सीम की । मैं 35 साल से सांस के मरज़ में मुब्तला था, कोई रात बिगैर तकलीफ़ के न गुज़रती थी, नीज़ मेरी सीधी दाढ़ में तकलीफ़ थी जिस के बाइस सहीह तरह खा भी नहीं सकता था । م-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से दौराने सफ़र मुझे सांस की कोई तकलीफ़ न हुई और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं सीधी दाढ़ से बगैर किसी तकलीफ़ के खाना भी खा रहा हूँ । मेरा दिल गवाही देता है कि अक़ाइदे अहले सुन्नत हक़ हैं और मेरा हुस्ने ज़न है कि दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल अल्लाह और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक्बूल है ।

छाए गर शैतनत तो करें देर मत
सोहबते बद में पड़ कर, अक़ीदा बिगड़

क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
गर गया हो, चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْخَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ مُحَمَّدٌ

बद मज़हबों से दूर रहने की हदीसों में ताकीद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी के आशिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की कैसी ब-र-कतें हैं बल्कि हकीक़त यह है कि उस खुश नसीब इस्लामी भाई को दुरूदे पाक की कसरत की ब-र-कत से दा'वते इस्लामी का म-दनी क़ाफ़िला भी मिला और उस पर हिदायत का रास्ता भी खुला । येह इस्लामी भाई बद मज़हबों की सोहबत की वजह से सीधे रास्ते से भटक गए थे, हम सभी को चाहिये कि बुरी सोहबत से हमेशा दूर रहें और फ़क़त आशिक़ाने रसूल ही की सोहबत अपनाएं । बद मज़हबों की सोहबत ईमान के लिये ज़हरे क़ातिल है, इन से दोस्ती और तअल्लुकात रखने की अहादीसे मुबा-रका में मुमा-न-अत है । चुनान्चे सुल्ताने अरब, महबूबे रब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : “जो किसी बद मज़हब को सलाम करे या उस से ब कुशादा पेशानी मिले या ऐसी बात के साथ उस से पेश आए जिस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया । (इन्ने सुन्नी)

में उस का दिल खुश हो, उस ने उस चीज़ की तहकीर की जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **मुहम्मद**
 ﷺ पर उतारी ।” (تاریخ بغداد ج ۱۰ ص ۲۶۲) **रसूले नज़ीर**, **सिराजे मुनीर**, **महबूबे रब्बे**
क़दीर ﷺ का फ़रमाने दिल पज़ीर है : “जिस ने किसी **बद मज़हब** की (ता’ज़ीम
 व) तौकीर की उस ने दीन के ढा देने पर मदद दी ।” (حدیث ۱۱۸ ص ۶۷۷۲) मेरे आका
आ’ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ **फ़तावा र-ज़विय्या** शरीफ़ जिल्द 21 सफ़हा 184 पर फ़रमाते
 हैं : सुन्नियों को ग़ैर मज़हब वालों से इख़्तिलात (मेलजोल) ना जाइज़ है खुसूसन यूँ कि वोह (बद
 मज़हब) अफ़सर हों (और) येह (सुन्नी) मा तहूत । (قَالَ اللهُ تَعَالٰی) (या’नी **अल्लाह** तआला फ़रमाता है)
 : : और जो कहीं तुझे शैतान
 وَمَا يُدْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ
 بَعْدَ الذِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ ١٥ ۝
 भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ ।

(پ ۷ الانعام ۶۸)

रहमते अलम ﷺ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : तुम उन से दूर रहो और वोह तुम से दूर रहें, कहीं वोह तुम्हें गुमराह न कर दें और फ़ितने में न डाल दें ।

(مُقَدِّمَهُ صَاحِبِ مُسْلِمٍ ص ۹۹ حَدِيث ۷)

बद मज़हब को उस्ताद बनाना : बद मज़हब से दीनी या दुन्यावी ता'लीम लेने की मुमा-न-अत करते हुए मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : ग़ैर मज़हब वालियों (या वालों) की सोहबत आग है, जी इल्म अक़िल बालिग़ मर्दों के मज़हब (भी) इस में बिगड़ गए हैं । इमरान बिन हत्तान रक्काशी का क़िस्सा मशहूर है, येह ताबिईन के ज़माने में एक बड़ा मुहद्दिस था, ख़ारिजी मज़हब की औरत (से शादी कर के उस) की सोहबत में (रह कर) مَعَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ खुद ख़ारिजी हो गया और येह दा'वा किया था कि (उस से शादी कर के) उसे सुन्नी करना चाहता है । (यहां वोह नादान लोग इब्रत हासिल करें जो ब जो'मे फ़ासिद खुद को बहुत “पक्का सुन्नी” तसव्वुर करते और

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुद्ध और दस मर्तबा शाम दुल्हे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़्फ़ात मिलेगी । (मजमूअुज्जवाइद)

कहते सुनाई देते हैं कि हमें अपने मस्लक से कोई हिला नहीं सकता, हम बहुत ही मज़बूत हैं ! मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ मज़ीद फ़रमाते हैं : जब सोहबत की ये हालत (कि इतना बड़ा मुहद्दिस गुमराह हो गया) तो (बद मज़हब को) उस्ताद बनाना किस द-रजा बदतर है कि उस्ताद का असर बहुत अज़ीम और निहायत जल्द होता है, तो ग़ैर मज़हब औरत (या मर्द) की सिपुर्दगी या शागिर्दी में अपने बच्चों को वोही देगा जो आप (खुद ही) दीन से वासिता नहीं रखता और अपने बच्चों के बद दीन हो जाने की परवाह नहीं रखता ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 692)

عَزَّوَجَلَّ

महफूज़ खुदा रखना सदा बे अ-दबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

अज़ाबे क़ब्र के होलनाक मनाज़िर : हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि महबूबे रब्बे समद, नबिय्ये अहमद, मीठे मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बक़ीए गरक़द तशरीफ़ ला कर दो क़ब्रों के पास खड़े हो कर इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने फुलां और फुलाना को, या फ़रमाया : फुलां फुलां को दफ़न कर दिया ? सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज की : जी हां, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! (बि इज़्ने परवर्द गार ग़ैब की ख़बरें देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : अभी अभी फुलां को (क़ब्र में) बिठा कर मारा गया है । फिर फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! उसे इतना मारा गया है कि उस का हर हर उज़्व जुदा हो चुका है और उस की क़ब्र में आग भड़का दी गई है और उस ने ऐसी चीख़ मारी है जिसे सिवाए ज़िन्नो इन्स के तमाम मख़लूक ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों में फ़साद न होता और तुम ज़ियादा बातें न करते तो तुम भी वोह सुनते जो



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझे पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदखत हो गया । (इन्ने सुनी)

मैं सुनता हूं। फिर फ़रमाया : अब दूसरे को भी मारा जा रहा है। फिर फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते कुदरत में मेरी जान है ! उसे भी इस क़दर ज़ोर से मारा गया है कि उस की भी हर हर हड्डी जुदा हो गई है और उस की क़ब्र में भी आग भड़का दी गई है, उस ने भी ऐसी चीख़ मारी है जिसे ज़िन्नो इन्सान के इलावा तमाम मख़्लूक ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों में फ़साद न होता और तुम ज़ियादा कलाम न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन दोनों का गुनाह क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : पहला पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा लोगों का गोश्त खाता (या'नी गीबत करता) था ।

(صَرِيحُ السُّنَّةِ لِلطَّبْرِي ص ۲۹ حديث ۴۰)

मुसल्मानो ! डर जाओ ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में गीबत करने और पेशाब से न बचने वालों के लिये इब्रत के बे शुमार म-दनी फूल हैं, पेशाब कर के जो लोग पाकी हासिल न कर के बदन और कपड़े वगैरा नापाक कर लेते हैं उन को भी डर जाना चाहिये, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : पेशाब से बचो आ़म तौर पर अज़ाबे क़ब्र इसी की वजह से होता है ।

(سُنَنِ دَارَقُطْنِي ج ۱ ص ۱۸۴ حديث ۴۰۳)

इस ज़िम्न में एक लरज़ा ख़ैज़ हिक़ायत मुला-हज़ा हो चुनान्चे

पेशाब से न बचने वाले की क़ब्र से पुकार ! : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 413 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “उयूनुल हिक़ायत” हिस्सा दुवुम सफ़हा 187 पर है हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : एक मर्तबा दौराने सफ़र मेरा गुज़र ज़मानए जाहिलिय्यत के क़ब्रिस्तान से हुवा । यकायक एक मुर्दा क़ब्र से बाहर निकला, उस की गरदन में आग की जन्जीर बंधी हुई थी, मेरे पास पानी का एक बरतन था । जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : “ऐ अब्दुल्लाह ! मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो !” मैं ने दिल में कहा : इस ने मेरा नाम ले कर मुझे पुकारा है या तो येह मुझे जानता है या अ-रबों के तरीक़े के मुताबिक़ “अब्दुल्लाह” कह कर पुकार रहा है । फिर



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

अचानक उसी क़ब्र से एक और शख्स निकला, उस ने मुझ से कहा : “ऐ अब्दुल्लाह ! इस ना फ़रमान को हरगिज़ पानी न पिलाना, येह काफ़िर है।” दूसरा शख्स पहले को घसीट कर वापस क़ब्र में ले गया। मैं ने वोह रात एक बुढ़िया के घर गुज़ारी, उस के घर के क़रीब एक क़ब्र थी, मैं ने क़ब्र से येह आवाज़ सुनी :؟ شَنْ وَمَا شَنْ؟ “पेशाब ! पेशाब क्या है ?” मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ? इस आवाज़ के मु-तअल्लिक़ बुढ़िया से पूछा तो उस ने कहा : येह मेरे शोहर की क़ब्र है, इसे दो ख़ताओं की सज़ा मिल रही है। पेशाब करते वक़्त येह पेशाब के छींटों से नहीं बचता था, मैं इस से कहती कि तुझ पर अफ़सोस ! जब ऊंट पेशाब करता है तो वोह भी अपने पाउं कुशादा कर के छींटों से बचता है, लेकिन तू इस मुआ-मले में बिल्कुल भी एहतियात नहीं करता, मेरा शोहर मेरी इन बातों पर कोई तवज्जोह न देता, फिर येह मर गया तो मरने के बा’द से आज तक इस की क़ब्र से रोज़ाना इसी तरह की आवाज़ें आती हैं। मैं ने पूछा : شَنْ وَمَا شَنْ ? या’नी “मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?” की आवाज़ आने का क्या मक़सद है ? बुढ़िया ने कहा : एक मर्तबा इस के पास एक प्यासा शख्स आया, उस ने पानी मांगा तो (इस ने उस को परेशान करने के लिये ख़ाली मश्कीज़े की तरफ़ इशारा करते हुए) कहा : जाओ ! इस मश्कीज़े से पानी पी लो, वोह प्यासा बे ताबाना मश्कीज़े की तरफ़ लपका, जब उठाया तो उसे ख़ाली पाया, प्यास की शिद्दत से वोह बेहोश हो कर गिर गया और उस की मौत वाक़ेअ हो गई। फिर जब से मेरा शोहर मरा है आज तक रोज़ाना उस की क़ब्र से आवाज़ आती है : شَنْ وَمَا شَنْ या’नी “मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?” हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर हो कर सारा वाक़िआ अर्ज किया तो सरकारे अली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तन्हा सफ़र करने से मन्अ फ़रमाया दिया।

(عیونُ الحَکایات (عربی) حصّہ ۲ ص ۳۰۷)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

हर गुनाह के बदले एक इज़्व काटा जाएगा ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाह चाहे कितना ही छोटा हो अगर उस पर पकड़ हुई तो खुदा की कसम ! उस का अज़ाब न सहा जा सकेगा। गुनाहों की सज़ा से डराते हुए हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वहहाब शा'रानी قدس سرہ النورانی नक्ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उबैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : पांच दिरहम (अहनाफ़ के नज़्दीक दस दिरहम) की चोरी पर हाथ काटा जाता है और इस में शक नहीं कि तुम्हारा सब से छोटा गुनाह भी पांच दिरहम की चोरी से तो ज़ियादा ही क़बीह (या'नी बुरा) है लिहाज़ा तुम्हारे हर गुनाह के बदले आख़िरत में तुम्हारा एक इज़्व काटा जाएगा।

(تَنْبِيْہُ الْمَغْتَرِبِیْنَ ص ۱۷۲)

नज़्अ, क़ब्र और मुन्कर नकीर की ख़ौफ़नाक मन्ज़र कशी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई क़ब्र का मुआ-मला बेहद तशवीश नाक है, क्या मा'लूम आज ही मौत आ जाए और देखते ही देखते हम क़ब्र की तन्हाइयों में जा पहुंचें, अव्वल तो मौत के सदमे का तसव्वुर ही जान को घुलाने वाला है और ऊपर से **खुदा व मुस्तफा** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में अज़ाब हुवा तो कैसे बरदाश्त हो सकेगा ! **मुर्दे के सदमे** का नक्शा खींचते हुए मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَةُ الرُّحْمٰن फ़रमाते हैं : वोह मौत का ताज़ा सदमा उठाए हुए रूह (के निकलते वक़्त) जिस का अदना झटका सो ज़र्बे शमशीर (या'नी तलवार के सो वार) के बराबर, जिस का सदमा हज़ार ज़र्बे तैग़ (या'नी तलवार के हज़ार वार) से सख़्त तर, बल्कि म-लकुल मौत (عَلِیْہِ السَّلَام) का देखना ही हज़ार तलवार के सदमे से बढ़ कर। वोह नई जगह, वोह निरी तन्हाई, वोह हर तरफ़ भयानक बे कसी छाई, इस पर वोह नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) का अचानक आना, वोह सख़्त हैबतनाक सूरतें दिखाना कि आदमी दिन को हज़ारों के मज्मअ में देखे तो हवास बजा न रहें, काला रंग, नीली आंखें देगों के बराबर बड़ी, अबरक (चमकीली धात) की तरह शो'ला ज़न, सांस जैसे आग की लपट, बैल के सींगों की तरह लम्बे नोकदार कीले (या'नी अगले दांत), ज़मीन पर घिसटते सर के पेचीदा बाल, क़दो कामत जिस्म व जसामत बला व क़ियामत कि एक शाने (या'नी कन्धे) से दूसरे (कन्धे) तक

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

मन्जिलों (या'नी बे शुमार किलो मीटर्ज) का फ़ासिला, हाथों में लोहे का वोह गुर्ज (या'नी हथोड़ा) कि अगर एक बस्ती के लोग बल्कि जिनो इन्स जम्अ हो कर उठाना चाहें न उठा सकें, वोह गरज कड़क की होलनाक आवाजें, वोह दांतों से ज़मीन चीरते ज़ाहिर होना, फिर इन आफ़ात पर आफ़त येह कि सीधी तरह बात न करना, आते ही झन्झोड़ डालना, मोहलत न देना, कड़कती झिड़कती आवाजों में इम्तिहान लेना।

وَحَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ اِرْحَمْ ضَعْفَنَا يَا كَرِيْمُ يَا جَمِيْلُ
صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی نَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَاِلٰهِ الْكَرَامِ وَ سَائِرِ الْاُمَمِ اَمِيْنٌ اَمِيْنٌ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

तरजमा : (और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) हमारे लिये काफ़ी है और वोह सब से बड़ा कारसाज है। ऐ करम फ़रमाने वाले ! हमारी कमजोरी पर रहमो करम फ़रमा, ऐ रब्बे जमील ! दुरुदो सलाम भेज नबिय्ये रहमत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर और उन की इज़्ज़त वाली आल और बक़िय्या तमाम उम्मत पर। क़बूल फ़रमा, क़बूल फ़रमा, ऐ सब से ज़ियादा रहमो करम फ़रमाने वाले !)

(फ़तावा र-जविय्या, जि. 9, स. 934 ता 937)

खड़े हैं मुन्कर नकीर सर पर न कोई हामी न कोई यावर
बता दो आ कर मेरे पयम्बर कि सख़्त मुश्किल जवाब में है

صَلُّوْا عَلٰی الْخَبِيْبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

تُؤْبُوْا اِلٰی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوْا عَلٰی الْخَبِيْبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

ज़ेहनी कश्मक़श से नजात मिली : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह

फरमाने मुस्तफा ﷺ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये। सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में हाज़िरी दीजिये और वहां बग़ैर बयान सुनने की सआदत हासिल कीजिये। आप की तरगीब के लिये एक **म-दनी बहार** पेश की जाती है मुला-हज़ा फ़रमाइये : **बाबुल मदीना** (कराची) के एक इस्लामी भाई की ह-लफ़िय्या (या'नी ब क़सम) तहरीर का खुलासा है कि मैं दावूद इन्जीनियरिंग कोलेज का तालिबे इल्म हूं, बुरे और बद अक़ीदा लोगों की सोहबतों ने मुझे नज़रियात के मुआमलात में **“ज़ेहनी कश्मक़श”** में मुब्तला कर दिया था, मैं फ़ैसला नहीं कर पा रहा था कि कौन सीधे रास्ते पर है। 2 साल का तवील अर्सा यूंही गुज़र गया। एक रोज़ मेरी मुलाक़ात एक ऐसे नौ जवान से हुई जिस का अन्दाज़ व किरदार मेरे दिल में उतर गया। उस आशिके रसूल ने सफ़ेद लिबास पहना हुआ था, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ था और उस के चेहरे पर **इबादत का नूर** था, उस इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे **सहराए मदीना**, मदी-नतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक्वामी **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ** में शिर्कत की दा'वत पेश की। मैं पहले ही उन से मु-तअस्सिर हो चुका था, इन्कार क्यूंकर हो सकता था। चुनान्चे मैं ने बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की। हज़ के बा'द कसीर ता'दाद में मुसल्मानों के जम्अ होने का मन्ज़र देख कर मेरी आंखें डबडबा गई, मेरे दिल ने गवाही दी कि येही **“अहले हक़”** हैं। आख़िरी दिन होने वाले बयान **“अल्लाह عزّوجلّ की खुफ़्या तदबीर”** सुन कर मेरे रौंगटे खड़े हो गए। फिर रिक्कत अंगेज़ दुआ ने ऐसा असर किया कि मेरी ज़िन्दगी बदल गई, मैं पहले हैवान था, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल ने मुझे **इन्सान** बना दिया है। आज मैं अपने दिल में कसरत से **नेकियां** करने का जज़्बा पाता हूं। चेहरे पर सुन्नत के मुताबिक़ **दाढ़ी** शरीफ़ भी सजा ली है, कुरआने पाक हिफ़ज़ करने की भी निय्यत है। एक और **अहम बात** येह कि जब मैं इज्तिमाअ में शिर्कत के लिये **सहराए मदीना** मदी-नतुल औलिया **मुलतान** शरीफ़ जा रहा था तो मेरे वालिद और वालिदा के हाथ पर **फ़ालिज** का हम्ला हो गया था, वोह ज़रा सा भी हाथ नहीं हिला सकते थे। इज्तिमाअ में दुआ की ब-र-क़त से उन के **फ़ालिज** ज़दा हाथ भी ठीक हो गए।



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह غُذُوخِل उस के लिये एक क़िरात अज़्र लिखता है और क़िरात उदुद पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज़ाक़)

तेरा शुक्र मौला दिया म-दनी माहोल
खुदा के करम से खुदा की अता से

न छूटे कभी भी खुदा म-दनी माहोल
न दुश्मन सकेगा छुड़ा म-दनी माहोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

इज्तिमाअ में सवाब की निय्यत से शिर्कत करनी चाहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! एक इस्लामी भाई के सुन्तों भरा म-दनी हुलिया अपनाने और इन्फ़रादी कोशिश फ़रमाने की ब-र-कत से “राहे हक़” के मु-तलाशी को अपनी मन्ज़िल मिल गई ! इस म-दनी बहार से ये भी मा’लूम हुवा कि दा’वते इस्लामी के सुन्तों भरे इज्तिमाआत में शिर्कत की ब-र-कत से बसा अवकात दुन्यावी मसाइल भी हल हो जाते हैं, म-सलन मरीजों को शिफ़ा मिल जाती है, बे रोज़गार बर सरे रोज़गार हो जाते हैं । लेकिन सिर्फ़ दुन्यावी मसाइल के हल की निय्यत करने के बजाए त-लबे इल्म और सवाबे आख़िरत कमाने की भी निय्यतें ज़रूर करनी चाहिए ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

दो² क़ब्रों में होने वाले अज़ाब के अस्बाब : हज़रते सय्यिदुना अबी बकरह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِیْمِ के साथ चल रहा था और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ थामा हुवा था । एक आदमी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के बाई तरफ़ था । दर्री अस्ना हम ने अपने सामने दो क़ब्रें पाई तो महबूबे खुदाए तव्वाब, नुबुव्वत के आप़ताब, जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन दोनों को अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े अम्र की वजह से नहीं हो रहा, तुम में से कौन है जो मुझे एक टहनी ला दे । हम ने एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश की तो मैं सब्क़त ले गया और एक टहनी (या’नी शाख़) ले कर हाज़िरे ख़िदमत हो गया । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने उस के दो टुकड़े कर दिये और दोनों क़ब्रों पर एक एक रख

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुक़दे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (त-बयानी)

दिया फिर इर्शाद फ़रमाया : येह जब तक तर रहेंगे इन पर अज़ाब में कमी रहेगी और इन दोनों को ग़ीबत और पेशाब की वजह से अज़ाब हो रहा है।

(मुसन्द الإمام احمد ج ۷ ص ۳۰۴ حدیث ۲۰۳۹۵)

आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इल्मे ग़ैब है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ग़ीबतों और पेशाब के छींटों से न बचना क़ब्र के अज़ाब के अस्बाब में से है। आह ! हमारा वोह नाजुक बदन जो कि मा'मूली कांटे की चुभन, दोपहर की धूप की तपश व जलन और बुख़ार की मा'मूली सी अगन बरदाश्त नहीं कर सकता वोह क़ब्र का होलनाक अज़ाब कैसे सह सकेगा। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पेशाब की आलूदगियों के जुर्मों, ग़ीबतों, चुग़लियों और छोटे बड़े तमाम गुनाहों से तौबा करते हैं, प्यारे प्यारे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! हम से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो जा और हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमा اٰمِنْ بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْنِ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। बयान कर्दा रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इल्मे ग़ैब है जभी तो ब अताए खुदाए वहहाब क़ब्र का अज़ाब मुला-हज़ा फ़रमा लिया जैसा कि बयान कर्दा हृदीसे पाक से ज़ाहिर है। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلِیْہِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن हदाइके बख़्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र
म-लकूतो मुल्क में कोई शै

दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

क़ब्र में अज़ाब हो रहा है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अता से ग़ैब की ख़बरें देने वाले मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक क़ब्र के पास तशरीफ़ लाए जिस में मय्थित को अज़ाब हो रहा था तो इर्शाद फ़रमाया : “येह लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) था।” फिर एक तर टहनी मंगवाई और उसे क़ब्र पर रख कर इर्शाद फ़रमाया : उम्मीद है कि जब तक येह तर रहेगी इस के अज़ाब में कमी रहेगी।

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ۲ ص ۳۰ حدیث ۲۴۱۳)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (अबू या'ला)

कब्रों पर फूल डालना मुस्तहब है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुज़स्ता दोनों अहादीसे मुबा-रका में पेशाब से न बचने वाले और गीबत करने वाले के अज़ाबे क़ब्र में मुब्तला होने का तज़्किरा है। हर मुसल्मान को एहतियात के साथ ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये। इन रिवायात में क़ब्र पर तर शाख़ रखने का ज़िक्र है। इस ज़िम्न में मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَنَانُ अपनी मशहूर किताब “जाअल हक़” हिस्सा अव्वल सफ़हा 240 ता 241 पर फ़रमाते हैं : कहा गया है कि इस लिये अज़ाब कम होगा कि जब तक (येह शाख़ें) तर रहेंगी तस्बीह पढ़ेंगी। इस हदीस की शर्ह में अल्लामा न-ववी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْفَوَّی) फ़रमाते हैं : इस हदीस से उ-लमा ने क़ब्र के पास कुरआन पढ़ने को मुस्तहब फ़रमाया। क्यूं कि तिलावते कुरआन शाख़ की तस्बीह से ज़ियादा इस की हक़दार है कि इस से अज़ाब कम हो। तहतावी अला मराक़िल फ़लाह सफ़हा 364 में है : हमारे बा'ज़ मु-तअख़िख़रीन अस्हाब ने इस हदीस की वजह से फ़तवा दिया कि “खुशबू और फूल चढ़ाने की (मुसल्मानों में) जो आदत है वोह सुन्नत है।” मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ मज़ीद फ़रमाते हैं : इस हदीस और मुहद्दीसीन व फु-क़हा की इबारत से दो बातें मा'लूम हुईं। एक तो येह कि हर सब्ज़ चीज़ (या'नी सब्जे) का रखना हर मुसल्मान की क़ब्र पर जाइज़ है। हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالسَّلَامِ ने उन क़ब्रों पर (तर) शाख़ें रखीं जिन को अज़ाब हो रहा था और दूसरे येह कि अज़ाबे क़ब्र की कमी सब्जे की तस्बीह की ब-र-कत से है..... लिहाज़ा अगर हम भी आज (क़ब्रों पर) फूल वगैरा रखें तो भी اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ मय्यित को फ़ाएदा होगा बल्कि आ़म मुसल्मानों की क़ब्रों को कच्चा रखने में येह ही मस्लहत है कि बारिश में इस पर सब्ज़ घास जमे और उस की तस्बीह से मय्यित के अज़ाब में कमी हो।

है कौन कि जो गिर्या करे फ़ातिहा को आए

बरसाए कौन क़ब्र पे बेकस की भरन फूल

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ात करूंगा। (कजुल उम्मा)

गीबत ज़िना से भी सख़्त तर है : मुस्तफा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत, मम्बए जूदो सखावत, सरापा फज़लो रहमत ﷺ ने इर्शाद फरमाया : **يَا رَسُوْلَ اللهِ أَشَدُّ مِنْ الزَّيْنَةِ** या'नी गीबत ज़िना से सख़्त तर है। लोगों ने अर्ज की : **يَا رَسُوْلَ اللهِ أَشَدُّ مِنْ الزَّيْنَةِ** ! गीबत ज़िना से ज़ियादा सख़्त क्यूंकर है ? फरमाया : “मर्द ज़िना करता है फिर तौबा करता है, अल्लाह तआला उस की तौबा क़बूल फरमाता है और गीबत करने वाले की मर्ग़िफ़रत न होगी, जब तक वोह न मुआफ़ कर दे जिस की गीबत की है।” (شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٥ ص ٢٠٦ حديث ٦٧٤١) और हज़रते सय्यिदुना अनस رضي الله تعالى عنه की रिवायत में है कि “ज़िना करने वाला तौबा करता है और गीबत करने वाले की तौबा नहीं है।”

(ऐज़न, हदीस : 6742)

मैं समझा शायद तूने गीबत की है : एक नौ जवान हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمه الله تعالى عليه की खिदमत में आ कर अर्ज गुज़ार हुवा : मुझ से बहुत बड़ा गुनाह हो गया है, शर्म की वजह से आप رحمه الله تعالى عليه के सामने बयान करने की भी हिम्मत नहीं। फिर कुछ देर के बा'द कहने लगा : अफ़सोस ! मैं ने ज़िना किया है। आप رحمه الله تعالى عليه ने फरमाया : “मैं तो समझा था कि शायद तूने गीबत का गुनाह किया है।” (تذكرة الاولياء ص ١٧٣)

गीबत ज़िना से कब सख़्त है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! गीबत किस क़दर ज़ियादा तबाहकार है ! अलबत्ता येह ज़ेहन में रहे कि जिस ज़िना में हुक्कूल इबाद शामिल नहीं सिर्फ़ उस ज़िना से गीबत सख़्त तर है। गीबत में हुक्कूल अब्द या'नी बन्दे का हक़ उस सूरत में शामिल होगा जब कि जिस की गीबत की है उस को पता चल जाए कि फुलां ने मेरी गीबत की है और अब गीबत करने वाले के लिये तौबा के साथ साथ उस से मुआफ़ी मांगनी भी ज़रूरी है जिस की गीबत की है वरना ख़ाली तौबा काफ़ी थी।

फरमाने मुस्फा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिगफ़र करते रहेंगे । (त-बरानी)

गीबतों वगैरा गुनाहों के मु-तअल्लिक एक मा'लूमाती फ़तवा : अब गीबत वगैरा गुनाहों के मु-तअल्लिक फ़तावा र-जविय्या जिल्द 21 सफ़हा 162 ता 163 का एक मा'लूमाती इस्तिफ़ता और फ़तवा मुला-हज़ा फ़रमाइये :

सुवाल : गीबत करना, झूट बोलना, खास कर वोह झूट जिन से खल्के खुदा में फ़ितना हो । दो दोस्त में या शोहर बीवी में या बाप बेटे में या भाई भाई में उस झूट से रन्जिश हो जाए, बाहम जुदाई हो के घर की खराबी की नौबत आ जाए, और मुसल्मान के ऐब की तलाश व तजस्सुस में रहना, कोई मुसल्मान अगर पोशीदगी से कोई गुनाह करता हो तो उस की तजस्सुस में लगे रहना और पता पाने पर या महज़ अपनी शुबा व क़ियास से उस को फ़ाश (ज़ाहिर) करना शोहरत देना किस द-रजे का गुनाह है और गुनाहाने मज़कूरए बाला का मुर-तकिब फ़ासिक व मुस्तहिक्के ला'नते खुदा व रसूल है या नहीं ? और येह सब गुनाह शरअन द-र-जए फ़िस्क में ज़िना से कम हैं या ज़ियादा या बराबर ? जवाब मुफ़स्सल और मुदल्लल (या'नी दलाइल के साथ) दरकार है । **يَبْنُوا تُوَجَّرُوا** (या'नी बयान फ़रमाइये और अज़्र व सवाब कमाइये)

अल जवाब : येह सब गुनाहाने कबीरा हैं और इन का मुर-तकिब फ़ासिक व मुस्तहिक्के ला'नत । हदीस में फ़रमाया : **الْغِيْبَةُ أَشَدُّ مِنَ الزِّنَا** (या'नी) गीबत सख़्त है ज़िना से । (الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ٥ ص ٦٤ حديث ٦٥٩٠) और ज़ाहिर है कि क़त्ले मोमिन गीबत से अशद (या'नी सख़्त तर) है । और **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : **”وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ”** (البقرة: ١٩١) फ़ितना क़त्ल से सख़्त तर है । और इन सब में हक्कुल इबाद (या'नी बन्दों का हक़) है तो उस ज़िना से ज़रूर बदतर है जिस में हक्कुल इबाद न हो मगर वोह झूट जिस से किसी का ज़रर (या'नी नुक़सान) न हो कि बे मस्लहत शर-ई हो तो गुनाह ज़रूर है मगर इसे ज़िना के बराबर नहीं कह सकते कि येह सगीरा है बा'दे इसरार कबीरा होगा । **والله تعالى اعلم**

पीछ मेरा गीबत की मुसीबत से छुड़ा दे
हर बात संभल कर करूं तौफीक ^{عَزَّوَجَلَّ} खुदा दे

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

ज़िना छोटा गुनाह नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां शैतान कहीं वस्वसे डाल कर ज़िना पर न उक्साए कि येह तो मा'मूली सा गुनाह है। वल्लाह ! हरगिज़ ऐसा नहीं, येह बात हमेशा ज़ेहन में रखिये कि छोटे गुनाह को भी अगर कोई छोटा समझ कर करता है तो वोह **सख़्त कबीरा गुनाह** बन जाता है और ज़िना छोटा गुनाह भी नहीं बल्कि **गुनाहे कबीरा** है, इस का अज़ाब पढ़िये और थरथराइये नीज़ जब ज़िना का अज़ाब इतना होलनाक है तो **गीबत** का अज़ाब कितना दर्दनाक होगा इस का तसव्वुर जमा कर खुद को डराइये :

दो² सांप नोच नोच कर खाएंगे : हज़रते सय्यिदुना मसरूक عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْقُدُّوس से रिवायत है : जो शख्स चोरी या शराब खोरी या ज़िना में मुत्बला हो कर मरता है उस पर दो सांप मुकर्रर कर दिये जाते हैं जो उस का गोश्त नोच नोच कर खाते रहते हैं।

(شَرْحُ الصُّدُور ص १७२)

जहन्नमी ताबूत : मन्कूल है : जहन्नम में आग के ताबूत में कुछ लोग कैद होंगे कि जब वोह राहत मांगेंगे तो उन के लिये ताबूत खोल दिये जाएंगे और जब उन के शो'ले जहन्नमियों तक पहुंचेंगे तो वोह बयक ज़बान फ़रियाद करते हुए कहेंगे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन ताबूत वालों पर ला'नत फ़रमा। येह वोह लोग हैं जो औरतों की शर्मगाहों पर हराम तरीक़े से कब्ज़ा करते थे।

(بَحْرُ الدُّمُوع ص १६७)

जन्नत में दाख़िले से महरूम : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "आंसूओं का दरिया" सफ़हा 229 ता 230 पर है मन्कूल है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब जन्नत को पैदा फ़रमाया तो उस से फ़रमाया : "कलाम कर।" तो वोह बोली : जो मुझ में दाख़िल होगा वोह सआदत मन्द है। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! तुझ में आठ क़िस्म के लोग दाख़िल न होंगे : शराब का आदी, ज़िना पर इसरार करने वाला, चुगुल ख़ोर, दय्यूस, (ज़ालिम) सिपाही, हीजड़ा और रिश्तेदारी तोड़ने वाला और वोह शख्स जो खुदा की क़सम खा कर कहता

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफा की। (अब्दुर्रज्जाक)

है कि फुलां काम ज़रूर करूंगा फिर वोह काम नहीं करता।

(إتحاف السادة للريبيدي ج ٩ ص ٣٤٥)

येह रिवायत नक़ल करने के बा'द हज़रते अल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : जिना पर इसरार करने वाले से मुराद हमेशा जिना करते रहने वाला नहीं, इसी तरह शराब के आदी से मुराद येह नहीं जो हमेशा शराब पीता रहे बल्कि मुराद येह है कि जब उसे शराब मुयस्सर हो तो वोह पी ले और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के खौफ़ की वजह से शराब पीने से बाज़ न आए। इसी तरह जब उसे जिना का मौक़अ मिले तो (कर ले और) इस से बाज़ न रहे और न ही अपने नफ़्स को इस बुरी ख़्वाहिश की तक्मिल से रोके। बेशक ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम ही है।

(بَحْرُ الدُّمُوعِ ص ١٦٧)

नज़र दिल में शहवत का बीज बोती है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्क़द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सखावत, सरापा रहमत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त ﷺ का फ़रमाने इब्रत निशान है : **يَا أَلْعَيْنَانِ تَزْنِيَانِ** । (सुनैद इमाम अहमद ज २ व ४६८ हदीथ ३९१२) लिहाज़ा आंखों की हिफ़ाज़त ज़रूरी है। हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली का फ़रमाने हैं : जो आदमी अपनी आंख को बन्द करने पर क़ादिर नहीं होता वोह अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त भी नहीं कर सकता।

(أَحْيَاءُ الْعُلُومِ ج ३ ص १२०)

आंखों में पिघला हुवा सीसा : मन्कूल है : जो शख़्स शहवत से किसी अज्जबिय्या के हुस्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा।

(هُدَايَه ج २ ص ३६८)

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे । (कन्जुल उम्माल)

आंखों में आग भर दी जाएगी : हुज्जतुल इस्लाम हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद गज़ाली رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي नक्ल करते हैं : जो कोई अपनी आंखों को नज़रे हराम से पुर करेगा क़ियामत के रोज़ उस की आंखों में आग भर दी जाएगी ।

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص १०)

आग की सलाई : हजरते सय्यिदुना अल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ الْفَرَى नक्ल करते हैं : औरत के महासिन (या'नी हुस्नो जमाल) को देखना इब्नीस के ज़हर में बुझे हुए तीरों में से एक तीर है, जिस ने ना महरम से आंख की हिफ़ाज़त न की उस की आंख में बरोजे क़ियामत **आग की सलाई** फैरी जाएगी ।

(بَحْرُ الدُّمُوعِ ص १७१)

जहन्नम से आज़ाद होने वाली आंखें : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "आंसूओं का दरिया" सफ़हा 235 पर है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हजरते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वह्य फ़रमाई : "ऐ मूसा ! मैं ने तीन क़िस्म की आंखों को जहन्नम पर हराम फ़रमा दिया है, एक वोह आंख जो राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में पहरा देती है, दूसरी वोह आंख जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हराम कर्दा चीज़ों से रुक जाती है और तीसरी वोह आंख जो मेरे ख़ौफ़ से रोती है, और आंसू के इलावा हर शै की एक जज़ा है और आंसू की जज़ा रहमत, मग़िफ़रत और जन्नत में दाख़िले के इलावा कुछ नहीं ।"

(بَحْرُ الدُّمُوعِ ص १७२)

तुम जन्नत में मेरे साथ होंगे : एक शख्स ने बारगाहे रिसालत में हज़िर हो कर अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं सिर्फ़ एक महीने के रोजे रखता हूँ इस पर इज़ाफ़ा नहीं करता, और सिर्फ़ पांच नमाज़ें पढ़ता हूँ इस से ज़ियादा नहीं पढ़ता और मेरे माल में ज़कात फ़र्ज़ नहीं और न ही मुझ पर हज़ फ़र्ज़ है और न ही नफ़ल हज़ करता हूँ, मैं मरने के बा'द कहां जाऊंगा ? **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तबस्सुम फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : तुम

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मर्तबा सुद्ध और दस मर्तबा शाम दुल्ह पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शपथ अत मिलेगी । (मजमउज़्जवाइद)

जन्नत में मेरे साथ होंगे जब कि तुम अपने दिल को दो बातों या'नी ख़ियानत और हसद से बचाओ और अपनी ज़बान को दो बातों या'नी ग़ीबत और झूट से और दो बातों से आंखों को बचाओ या'नी जिस की तरफ़ नज़र करना अल्लाह तआला ने हराम करार दिया है उस की तरफ़ न देखो और किसी मुसलमान को हक़ारत से न देखो ।

(قُوْتُ الْقُلُوب ج ۱ ص ۴۳)

इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत से ज़बान और बद निगाही से आंखों की हिफ़ाज़त करने का ज़ेहन बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बनाइये, म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिये اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ غَوَّلُ दोनों ज़हां में बेड़ा पार होगा, आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार करता हूं

चुनान्वे सरदार आबाद (फ़ैसलआबाद, पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि मैं अपने शहर के एक मशहूर दीनी मद्रसे में **दर्से निज़ामी** का तालिबे इल्म था । अटक शहर (पंजाब) के एक इस्लामी भाई कभी कभार सरदारआबाद अपने मामूंजान के घर तशरीफ़ लाते थे और उन के मामूं हमारे मद्रसे के क़रीब रिहाइश पज़ीर थे, वोह इस्लामी भाई दौराने क़ियाम हमारे मद्रसे में भी आते और त-लबा से मुलाक़ात कर के उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाते, मेरी उन से दोस्ती हो गई थी, वोह मुझे दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल के बारे में बताया करते, उन की बातें सुन सुन कर मैं दा'वते इस्लामी के मुहिब्बीन में शामिल हो चुका था । उन्हीं की दा'वत पर मुझे **फ़ैज़ाने मदीना** सरदारआबाद (सूसां रोड नज़्द पुरानी टंकी मदीना टाऊन) में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की सअ़ादत हासिल हुई, मेरी शिर्कत के पहले ही इज्तिमाअ में मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी ने **इमामा शरीफ़** के फ़ज़ाइल पर बयान किया, जिसे सुन कर मैं इतना मु-तअस्सिर हुवा कि हाथों हाथ इमामा ख़रीद कर अपने सर पर सजा लिया और बस्ते से **फ़ैज़ाने सुन्नत** भी ख़रीदी और अपनी मस्जिद में इस का **दर्स** शुरूअ कर दिया । वक़्त गुज़रने के साथ मैं ने मुकम्मल तौर पर म-दनी

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया। (इब्ने सुन्नी)

हुलिया अपना लिया। इज्तिमाअ में अपने साथ दीगर त-लबा को भी ले जाता, पहले हफ्ते 3 इस्लामी भाई थे दूसरे हफ्ते बढ़ कर इन की ता'दाद 12 हो गई। मैं ने दा'वते इस्लामी के म-दनी काफिलों में भी सफर किया और अपने अलाके में म-दनी कामों की धूमें मचाना शुरूअ कर दीं। सि. 1994 ई. फैजाने मदीना सरदारआबाद में मद्रसतुल मदीना में बतौर नाजिम सुन्नतों की खिदमत का मौकअ मिला और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ मैं ता दमे तहरीर मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (पंजाब) का रुक्न भी हूं। अल्लाह रब्बुल इज्जत غَوْحَلُ मुझे दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिकामत इनायत फरमाए।

اَتَاَءَ هَبِيبِى خُودَا م-دَنِى مَاهُول
اِغَر سُونَتِي سِيخِنِي كَا هِي جَزْبَا

هِي فَايْزَانِي غَايَسُو رَجَا م-دَنِى مَاهُول
تُومَا جَاओ देगा सिखा म-दनी माहोल

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इन्फिरादी कोशिश सवाब का आसान जरीआ है : इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! किस तरह एक तालिबे इल्म किसी इस्लामी भाई की इन्फिरादी कोशिश से दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया। इज्तिमाई कोशिश के मुकाबले में इन्फिरादी कोशिश उमूमन सहल होती है क्यूं कि कसीर इस्लामी भाइयों के सामने “बयान” करने की सलाहिyyत हर एक में नहीं होती जब कि इन्फिरादी कोशिश हर कोई कर सकता है ख्वाह उसे बयान करना आता हो या न आता हो। इन्फिरादी कोशिश सवाब कमाने का आसान जरीआ है। म-दनी मर्कज के दिये हुए तरीकए कार के मुताबिक इन्फिरादी कोशिश के जरीए खूब खूब खूब नेकी की दा'वत देते जाइये और सवाब का खजाना लूटते जाइये।

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुद्ध और दस मरतबा शाम दुख्दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़अत मिलेगी । (मजमउज़्ज़वाहद)

जहन्नम का खाना और लिबास मिलेगा : सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है : जिस शख्स को किसी मर्दे मुस्लिम की **बुराई** करने की वजह से खाने को मिला, **अल्लाह** तआला उस को उतना ही जहन्नम से खिलाएगा और जिस को मर्दे मुस्लिम की **बुराई** की वजह से कपड़ा पहनने को मिला, **अल्लाह** तआला उस को जहन्नम का उतना ही कपड़ा पहनाएगा । और जो किसी शख्स की वजह से सुनाने और दिखाने की जगह में खड़ा हो तो **अल्लाह** तआला उसे क़ियामत के दिन सुनाने और दिखाने की जगह में खड़ा करेगा ।

(سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٥٤ حدیث ٤٨٨١)

दोज़ख़ की आग के अंगारे खाएगा : मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْحَنَانِ मिरआत जिल्द 6 सफ़हा 619 ता 620 पर फ़रमाते हैं : या'नी इस तरह (पर) कि दो लड़े हुए मुसल्मानों में से एक के पास जावे और उसे खुश करने के लिये दूसरे की **गीबत** करे, उसे बुरा कहे, उसे नुक्सान पहुंचाने की तदबीरें बताए ताकि इस ज़रीए से यह शख्स इसे कुछ दे दे या खिला दे । ऐसे खुशा-मदी लोग आजकल बहुत हैं । मज़ीद फ़रमाते हैं : यह दोज़ख़ की आग के अंगारे उन लुक़्मों के इवज़ में जिस क़दर यहां लुक़्मे खाए उतने ही वहां **अंगारे** खाएगा । जो किसी को खुश करने के लिये मुसल्मान भाई की **गीबत** करे या उसे सताए (और) इस **गीबत** वगैरा के इवज़ कपड़ों का जोड़ा पाए तो उसे क़ियामत में इस जोड़े के इवज़ **आग का जोड़ा** पहनाया जाएगा । मुफ़्ती साहिब मज़ीद इस फ़रमाने आली ("जो किसी की वजह से दिखाने और सुनाने की जगह खड़ा हो....عَلَى" के बारे में फ़रमाते हैं कि इस) के बहुत मआनी हैं : एक यह कि जो शख्स किसी मशहूर शरीफ़ आदमी की पगड़ी उछाले (या'नी उस को बदनाम करे) उस का मुक़ाबला करे ताकि इस मुक़ाबले से मेरी **शोहरत** हो दूसरे यह कि जो किसी शख्स को दुन्या में झूटे तरीक़े से उछाले ताकि इस के ज़रीए मुझे **इज़्ज़त व रोज़ी** मिले । जैसे आज कल बा'ज़ झूटे पीरों के मुरीद उस की झूटी करामतें बयान करते फिरते हैं ताकि हम को भी उस के ज़रीए **इज़्ज़त** मिले कि हम उस (पहुंचे हुए मुर्शिद) के बालके (या'नी मुरीद या शागिर्द) हैं । तीसरे यह कि जो

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया। (इन्हे सुनी)

शख्स दुन्या में नामो नुमूद चाहे नेकियां करे मगर नामवरी के लिये, या जो शख्स किसी के ज़रीए से अपने (आप) को मशहूर व नामवर करे कियामत में ऐसे शख्सों को (सरे) आम रुस्वा किया जावेगा कि फिरिश्ता उसे ऊंची जगह खड़ा कर के ए'लान करेगा कि (ऐ) लोगो ! येह बड़ा झूटा मक्कार फ़रेबी (धोकेबाज़) था। (مراة)

जहन्नम की गिज़ा और मशरूब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से वोह लोग इब्रत हासिल करें जो अपने अमीर, निगरान, अफ़सर, सेठ, लीडर या किसी मालदार को अच्छा लगाने, उन की हमदर्दियां पाने, अपने आप को “वफ़ादार” जताने मगर हकीकत में अपनी हमाक़त पर मोहर लगाने और खुद को दोज़ख़ का हक़दार बनाने के लिये उस सेठ वगैरा के सामने उस के मुख़ालिफ़ की पोलें खोलते और मुख़्तलिफ़ ज़ावियों से उन की बुराइयां करते हैं। आह ! न जहन्नम की गिज़ा खाई जा सकेगी न दोज़ख़ का लिबास पहना जा सकेगा। **जहन्नम की गिज़ा** का नक़शा खींचते हुए **सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह** हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عليه رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي** मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ **बहारे शरीअत** जिल्द अव्वल सफ़हा 167 ता 168 पर फ़रमाते हैं : (जहन्नमियों को) ख़ारदार थूहड़ (एक कांटेदार ज़हरीला पौदा) खाने को दिया जाएगा, वोह ऐसा होगा कि अगर उस का एक क़तरा दुन्या में आए तो उस की सोज़िश व बदबू तमाम अहले दुन्या की मईशत बरबाद कर दे और वोह गले में जा कर फन्दा डालेगा, उस के उतारने के लिये (दोज़खी लोग) पानी मांगेंगे, उन को वोह खौलता पानी दिया जाएगा कि मुंह के क़रीब आते ही मुंह की सारी खाल गल कर उस में गिर पड़ेगी, और पेट में जाते ही आंतों को टुकड़े टुकड़े कर देगा और वोह शोरबे की तरह बह कर क़दमों की तरफ़ निकलेंगी, प्यास इस बला की होगी कि उस पानी पर ऐसे गिरेंगे जैसे तौनस (या'नी सख़्त प्यास) के मारे हुए ऊंट। (बहारे शरीअत)

नारे जहन्नम से तू अमां दे, खुल्दे बरीं दे बागे जिनां दे
अज़ पए हज़रते अबू हनीफ़ा, या अल्लाह मेरी झोली भर दे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُؤْبَوَالِی اللّٰهُ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

बे जा ए'तिराज़ात करने वाले : हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुआज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ मुआज़ फ़रमाते हैं : मुझे उन लोगों पर तअज्जुब है जो सालिहीन या'नी नेक लोगों के लिये मुबाह (या'नी जाइज़ चीज़) को भी ऐब समझते हैं लेकिन अपने लिये क़बीह (या'नी बद तरीन) गुनाहों को भी मा'यूब ख़याल नहीं करते। तू देखेगा कि उन लोगों में कोई खुद तो ग़ीबत, चुगली, हसद, कीना, धोका, तकब्बुर और खुद पसन्दी की नुहूसतों में गरिफ़्तार है और तौबा भी नहीं करता जब कि नेक लोगों पर मुबाह (या'नी जाइज़) लिबास, लज़ीज़ खाने और मुबाह (जाइज़) मिठाई के इस्ति'माल पर भी ए'तिराज़ करता है।

(تَنْبِيْهُ الْمَغْتَرِبِین ص ٦٦)

खुद चाहे हराम खाते हों मगर..... : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बा'ज़ लोगों की येह आदत होती है कि खुद चाहे सूदी कर्ज़ें ले कर, झूट बोल कर, मिलावटें और टेक्स की चोरियां कर के नापाक या हराम रोज़ी कमाएं मगर किसी अलिम, ख़तीब या इमाम साहिब को कहीं से नज़राना मिला, इन को लोगों के घर दा'वते तअ़ाम में आता जाता देखा, किसी ने बच्चे वग़ैरा की विलादत की खुशी में इन्हें मिठाई का डिब्बा पेश किया तो येह लोग अपने गन्दी आमदनियों को भूल कर उस अलिम साहिब की ग़ीबत पर उतर आते और عَمَّا اللّٰهُ عُزَّوَجَلَّ इस तरह के गुनाहों भरे जुम्ले कहते सुनाई देते हैं : **1** खाऊ मौलवी है **2** पेटू है **3** हलवा ख़ोर है **4** नज़रानों के लिये मरता है **5** मुफ़्त की दा'वतें खा कर पेट निकल आया है **6** खा खा कर गरदन मोटी कर ली है **7** लालची मौलाना है वग़ैरा।

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह غُذُوْعَلْ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

दूसरे की आंख का तिन्का तो नज़र आता है मगर..... : याद रखिये ! इमाम या अल्लिम साहिब का किसी मुसल्मान से नज़राना, दा'वत या मिठाई क़बूल करना जाइज़ काम है गुनाह व ह़राम नहीं बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतें हों तो कारे सवाब है । मो'तरिज़ को अपनी आमदनी पर नज़र दौड़ानी चाहिये, ह़राम हो तो उस से भी नीज़ ग़ीबतों, तोहमतों और बद गुमानियों से तौबा और इस के तकाज़े पूरे करने चाहिएं । ग़ौर तो कीजिये ! जब आप किसी की तरफ़ एक उंगली उठाते हैं तो हाथ की तीन उंगलियों का रुख़ खुद आप की तरफ़ हो जाता है गोया येह ख़ामोश तम्बीह (नोटिस) है कि उस को बा'द में छेड़ना पहले अपने आप को सुधार ! हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : दूसरे की आंख का तिन्का तो तुम्हें नज़र आ जाता है (या'नी ज़रा ज़रा सी बात में उस का ऐब बयान करता फिरता है) मगर अपनी आंख का शहतीर (या'नी बड़ी लकड़ी, मल्लब येह कि अपना बहुत बड़ा ऐब भी) नज़र नहीं आता !

(دَمُّ الْغَيْبَةِ لِأَبِي الدُّنْيَا ص ٩٥ رقم ٥٧)

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब
कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा

नेक कब ऐ मेरे अल्लाह बनूंगा या रब
कब मैं बीमार मदीने का बनूंगा या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

تُؤْبَوَالِی اللہ اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

ऐसे काम न करो कि लोग ग़ीबत करें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़वाम व ख़वास हर एक को चाहिये कि मोहतात ज़िन्दगी गुज़ारें ऐसे मुबाह आ'माल व अफ़अल से भी अपने आप को बचाएं जो कि फ़त्हे बाबे ग़ीबत या'नी ग़ीबत का दरवाज़ा खुलने का सबब बनें इस ज़िम्न में फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़हा 612 ता 616 पर एक फ़ारसी सुवाल जवाब (जिस का तरजमा भी वहीं मौजूद है) का अक्सर हिस्सा पेश किया जाता है, इसे पढ़ कर अन्दाज़ा किया जा

फरमाने मुस्तफा ﷺ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

सकता है कि ऐसी ह-र-कतें करना किस क़दर बुरा है जो मुसलमानों में ग़ीबतों, तोहमतों और बद गुमानियों और आपसी नफ़रतों का सबब बनें चुनान्चे मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमतें बा ब-र-कत में सुवाल हुवा : उ-लमाए शरीअत और मुफ़्तियाने तरीक़त इस मस्अले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद एक मक़ाम पर इमामत व नयाबत के फ़राइज़ अन्जाम देता है लेकिन जो लोग सुवर और मुर्दार का गोश्त पका कर ईसाइयों (या'नी क्रिस्चेनों) को खिलाते हैं ज़ैद उन लोगों के घरों से खाना खाता है और कहता है कि "मुर्दार और सुवर का गोश्त ईसाइयों (या'नी क्रिस्चेनों) के लिये पकाने में कोई हरज नहीं, पकाने के बा'द हाथ धो डाले तो पाक हो जाते हैं।" शहर के अक्सर लोग ज़ैद के इस तर्ज़े अमल को देख कर उन लोगों के घरों से खाना खाने लगे हैं जब कि कुछ लोग इस अमल से नफ़रत और सख़्त इख़िलाफ़ कर रहे हैं और निज़ाअ (या'नी फ़साद) की सूरत बन गई है। लिहाज़ा किताबो सुन्नत की रोशनी में बयान फ़रमाया जाए कि शख़्से मज़कूर (या'नी ज़ैद) के बारे में क्या शर-ई हुक्म है और इस की मुआ-वनत व इमदाद और इस से तआवुन करने वालों के बारे में शरीअत क्या फ़रमाती है **بَيِّنُوا تَوَجَّرُوا**? (बयान फ़रमाओ ताकि अज़्रो सवाब पाओ)

अल जवाब : ऐसे निडर, बे ख़ौफ़ और तक्वा से आरी लोग जो काफ़िरों ग़ैर मुस्लिमों के लिये (सुवर व मुर्दार जैसी) ख़बीस तरीन और नजिस (या'नी नापाक) व हराम चीज़ें पकाने खिलाने का पेशा इख़्तियार करते हैं। ऐसे लोगों के हां से दीनदारों और तक्वादार लोगों को खाना हरगिज़ नहीं खाना चाहिये क्यूं कि जहां हराम चीज़ों का इस्ति'माल कसरत से हो वहां बरतनो के नापाक अश्या से आलूदा होने का एहतिमाल (या'नी शुबा) होता है। और दीनदार व तक्वादार लोगों का ऐसे लोगों के हां जाना और उन के हां से ऐसे मशकूक बरतनों में खाना खाना अवामुन्नास की निगाहों में बाइसे इल्ज़ाम व बाइसे तोहमत हो सकता है। हदीस शरीफ़ में है : "जो कोई अल्लाह तआला और क़ियामत पर ईमान रखता है तो वोह मक़ामाते तोहमत से बचे।" लिहाज़ा ऐसी सूरते हाल में इल्ज़ाम, ता'न और तोहमत से बचना ज़रूरी है ब सूरते दीगर येह इक़दाम अपने दीनी भाइयों को कबीरा गुनाहों ग़ीबत, बोहतान, कीना और बुरे अल्काब

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

के इस्ति'माल में मुब्तला कर देगा। हदीसे मुबारक है : (लोगो!) जिन कामों को कान ना पसन्द करते हैं उन से बचो। (मुसन्द इमाम अहमद ज ५ व ६०० व १०००) और दूसरी हदीसे पाक में है : और ऐसे कामों से परहेज करो जिन के इरतिकाब पर मा'जिरत करनी पड़े। (अलहावित् अलमुहताज़ ज ६ व १८८ व २१९९) और बिगैर शर-ई मजबूरी के मुसल्मानों को मु-तनफ़िफ़र करना (या'नी मुसल्मानों को नफ़त दिलाना) मम्नूअ है। चुनान्चे हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **بَشِّرُوا وَلَا تَنْفَرُوا** या'नी मुसल्मानों को खुश ख़बरी दो और नफ़त न दिलाओ। (बुख़ारी ज १ व ६२ व ६९) शरीअत का मक्सद जोड़ना, इत्तिहाद पैदा करना है न कि तोड़ना। अक्ले सलीम का तकाज़ा भी येही है कि लोगों को बे क़रारी में डाल कर नाराज़ न किया जाए और कराहत व इल्ज़ाम वाली जगह खड़े होने से परहेज किया जाए, हदीसे पाक में इर्शादे न-बवी है : **अल्लाह** तआला पर ईमान लाने के बा'द अक्ल की बुन्याद लोगों से दोस्ती और महबूबत रखना है। (रुम्ह अल्लाह तआला عَلَيْهِ हज़रत या'नी आ'ला हज़रत) ने इस बाब की हदीसों को अपने रिसाले **जमालुल इज्माल** और इस की शर्ह **कमालुल इक्माल** में तफ़सीलन बयान कर दिया है। खुलासा येह कि अक्ल व नक्ल के ए'तिबार से इस तरह का काम या इक्दाम अपने अन्दर कई किस्म की क़बाहतें (ख़राबियां) रखता है कि जिन का इन्कार नहीं किया जा सकता और ऐसे कामों का अन्जाम मज़्मूम होता है। (और) जब येह काम या इक्दाम फ़ितना व फ़साद और मुसल्मानों के दरमियान तफ़रीक़ और फूट पड़ने की हद तक जा पहुंचे तो जुमें अज़ीम बन जाता है चुनान्चे इर्शादे रब्बानी है : **“وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ”** तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और इन का फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है। (प २ बक़र १९१) और हदीस शरीफ़ में है कि फ़ितना सो रहा है उस के जगाने वाले पर **अल्लाह** غَوَّحَل की ला'नत। (अलजामुल वुग़ैर लिलसुयू व ३७० व २७०) अगर आप अच्छी तरह ग़ौर करें तो येह वाजेह होगा कि इस किस्म के अफ़आल उन्ही लोगों से सरज़द होते हैं जो दीन और तकाज़ाए दीन को चन्दां (या'नी बिल्कुल) अहम्मियत नहीं देते, बे ख़ौफ़ हो कर बिल्कुल आज़ादाना ला परवाही वाली ज़िन्दगी गुज़ारना ज़िन्दगी का हासिल (या'नी मक्सदे हयात) समझते हैं। कुछ आगे चल कर आ'ला हज़रत عَلَيْهِ रज़्म अल्लाह तआला फ़रमाते हैं : ईसाइयों (या'नी क्रिस्चवनों) के साथ मिल कर खाना पीना और इस किस्म के दूसरे काम करना कज फ़ितरत (या'नी

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عُزَّوَجَلَّ के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उद्द पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज्जाक)

बद अख़लाक) और फ़ितने बाज़ लोगों का काम होता है। मजीद आगे चल कर फ़रमाते हैं : और जिस किसी ने येह कहा कि सुवर और मुर्दार का गोशत पकाने और ग़ैर मुस्लिमों को खिलाने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता या कुछ मुज़ा-यक़ा और ख़तरा नहीं, वोह शख़्से मज़कूर (या'नी ज़ैद) ग़लत बात कहने का मुर-तकिब हुवा बग़ैर इल्म व तहकीक के इस क़िस्म का फैसला सादिर कर देना हरगिज़ मुनासिब नहीं, बग़ैर शर-ई मजबूरी के गन्दगियों से आलूदा होना सख़्त मम्मूअ और ना जाइज़ है बिल खुसूस ऐसे कामों से परहेज़ करना बहुत ज़रूरी है जिन का हासिल (या'नी नतीजा) उन कामों की इस्लाह करने का इरादा करना है जिन्हें अल्लाह तआला ने बिगाड़ दिया है और काफ़िरों को खाना खिलाने के लिये मुसल्मानों का अपने हाथों ना जाइज़ व हराम चीज़ों को पकाना यकीनन ना जाइज़ और हराम है। और येह क़ाइदा व उसूल है कि जिस चीज़ का लेना हराम है उस का देना भी हराम है। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है : وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ : और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न दो । (प १६ المائدة २) और अल्लाह तआला पाक, बरतर और सब कुछ जानने वाला है।

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह वोह ख़बरदार है क्या होना है

अरे ओ मुजरिम बे परवा देख सर पे तलवार है क्या होना है

म-दनी चेनल पर म-दनी मुज़ाकरा सुनने की म-दनी बहार : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! تَبْلِیْغِی تَحْمِیْدُ اللّٰہِ عُزَّوَجَلَّ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के मु-तअद्दिद शो'बे हैं जिन के ज़रीए दुन्या में इस्लाम की बहारें लुटाई जा रही हैं, इन्हीं में एक शो'बा "म-दनी चेनल" भी है जिस के ज़रीए दुन्या के कई मुमालिक में T.V. के ज़रीए घरों के अन्दर दाख़िल हो कर दा'वते इस्लामी इस्लाम का पैग़ाम आम कर रही है। म-दनी चेनल दुन्या का वाहिद चेनल है जो कि सो फ़ीसदी इस्लामी रंग में रंगा हुवा है, इस में न फ़िल्में डिरामे हैं न गाने बाजे और न औरत की नुमाइश है न ही किसी क़िस्म की मूसीक़ी। تَحْمِیْدُ اللّٰہِ عُزَّوَجَلَّ म-दनी चेनल के ज़रीए कई कुफ़्फ़ार दामने इस्लाम में आ चुके हैं, बे शुमार बे नमाज़ी नमाज़ों के पाबन्द बने हैं और ला ता'दाद अफ़्फ़ाद गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों पर अमल



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुक़दे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

करने लगे हैं। म-दनी चैनल की ब-र-कतों का अन्दाज़ा लगाने के लिये इस की एक म-दनी बहार मुला-हज़ा हो चुनान्वे एक इस्लामी भाई ने मुझे बर्की डाक (E.MAIL) के ज़रीए एक “म-दनी बहार” पेश की उस का लुब्बे लुबाब है : आज कल येह हाल है कि दौराने गुफ़्त-गू अक्सर इस बात का अन्दाज़ा नहीं हो पाता कि ग़ीबत का सिल्लिसला शुरू हो चुका है ! एक बार हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) से बाबुल मदीना आए हुए एक इस्लामी भाई ने चन्द इस्लामी भाइयों की मौजूदगी में कहा : मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया कि मेरी बहन जो कि इन्तिहाई गुसीली तबीअत की है, अगर कभी किसी से नाराज़ हो जाए तो खुद से बढ़ कर मुलाकात में पहल नहीं करती, मेरी भाभी और बहन में चन्द मुआ-मलात की बिना पर आपस में चप-कलश हुई और बहन ने बात चीत बन्द कर दी, हुस्ने इत्तिफ़ाक़ कि उसी रात दा 'वते इस्लामी के हर दिल अज़ीज़ सो फ़ीसदी इस्लामी म-दनी चैनल पर “म-दनी मुज़ाकरा” नशर किया गया जिस में ग़ीबत की तबाह कारियों से बचने का ज़ेहन दिया गया था। मेरी बहन ने जब वोह म-दनी मुज़ाकरा सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मेरी वोही गुसीली बहन जो बढ़ कर किसी से मुलाकात नहीं करती थी अज़ खुद आगे बढ़ी और उस ने मेरी भाभी से न सिर्फ़ मुलाकात की बल्कि मुआफ़ी भी मांगी और दोनों में सुल्ह हो गई।

बहार में चार ग़ीबतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी जो आप ने म-दनी बहार मुला-हज़ा की उस के आगाज़ में लिखा है कि दौराने गुफ़्त-गू अक्सर अन्दाज़ा ही नहीं होता कि ग़ीबत का सिल्लिसला शुरू हो चुका है तो वाक़ेई ऐसा ही है, खुद इस म-दनी बहार में भी 4 ग़ीबतें की गई हैं। अलबत्ता इन ग़ीबतों को “गुनाहों भरी ग़ीबतें” नहीं कहेंगे कि गुनाह होने के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह किसी मुअय्यन या'नी मख़सूस फ़र्द की ग़ीबत हो, यहां म-दनी बहार में ऐब के हवाले से सिर्फ़ “बहन” का तज़्किरा है मगर कौन सी बहन येह तै नहीं है, हो सकता है कि काइल की कई बहनें हों। हां जिस के सामने म-दनी बहार बयान की उस को मुअय्यन (PARTICULAR) बहन का मा'लूम है या येह जानता है की काइल की एक ही बहन है और म-दनी बहार भी बग़ैर शर-ई इजाज़त के बयान की गई हो तो अब वोह चारों ग़ीबतें गुनाहों



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (अबू या'ला)

भरी हैं, बहर हाल गुफ़्त-गू में एहति यात का ज़ेहन देने के लिये इस म-दनी बहार में मौजूद चार ग़ीबतों का ज़िक्र किया जा रहा है : (1) मेरी बहन इन्तिहाई गुसीली है (2 ता 3) अगर किसी से नाराज़ हो जाए तो खुद से बढ़ कर सुल्ह की सूरत नहीं बनाती । येह दोनों ग़ीबतें दो दो मर्तबा की गई हैं (4) बहन और भाभी की आपस में चप-क़लश और नाराज़ी का तज़्किरा करना घर का राज़ फ़ाश करना हुवा जो कि एक ना शाइस्ता ह-र-कत और मिन जुम्ला अस्बाबे ग़ीबत है । इस म-दनी बहार को बयान करने वाले इस्लामी भाई ने अपनी बहन के गुसीली होने वगैरा का तज़्किरा अगर इस निय्यत से किया है कि इस से सुन्नतों भरे म-दनी चेनल की तशहीर हो और लोगों को इस की अहमिय्यत का पता चले तो येह एक बहुत अच्छी निय्यत है । मगर ऐसे मौक़अ पर इशारे किनाए में बात करनी अन्सब (मुनासिब तर) है या'नी नाम लिये और अ़लामत ज़ाहिर किये बगैर इस तरह रम्ज़ (या'नी इशारे) में बात करे की मुखातब (या'नी जिस से बात की जा रही है वोह) समझ ही न सके कि किस के बारे में गुफ़्त-गू की जा रही है, म-सलन यूं कहे : एक इस्लामी भाई के साथ येह वाक़िआ पेश आया कि उन की बहन गुसीली थी.....عَلَّ। मगर इस दौरान सन्जीदा अन्दाज़ ज़रूरी है वरना मख़सूस अन्दाज़ में मुस्कराने वगैरा से हो सकता है कि सुनने वाले समझ जाएं कि येह तो खुद सुनाने वाले के अपने ही घर का किस्सा है !

إِلاٰہِی ! اٰپنی رُحْمَت سے تُو ھِکْمَت کا خُرْجِیٰنا دے
خُدا یا غُفّت-گُ کرنے کا تُو م-دنی کُریٰنا دے

ہم ے اِکْلے سَلِیْم مَیْلَا ! پ ا شَاہے مَدِیٰنا دے
ب_ا گِی_ب_ت سے, ب_ک_ب_ک سے, ہم ے کُفْلے مَدِیٰنا دے

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُونُوْا اِلَی اللہِ اَسْتَغْفِرُ اللہَ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से महब्बत : सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّय اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : मुझे कोई सहाबी किसी की तरफ़ से कोई बात न पहुंचाए, मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (कन्जुल उम्माल)J

साफ़ सीना आया करूं ।

(سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٤٨ حدیث ٤٨٦٠)

मुहक्किक्के अलल इत्लाक़, ख़ातिमुल मुहद्दिसीन, हज़रते अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوٰی हदीसे पाक के इस हिस्से “मुझे कोई सहाबी किसी की तरफ़ से कोई बात न पहुंचाए” की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं : “या’नी किसी की कोताही, फे’ले बद, आदते बद, उस ने येह किया या उस ने येह कहा, फुलां इस तरह कह रहा था ।” (اشعۃ اللمعات ج ٤ ص ٨٣) हदीस शरीफ़ के इस हिस्से “मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं” का खुलासा करते हुए मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنّٰن फ़रमाते हैं : या’नी किसी की अ़दावत, किसी से नफ़रत दिल में न हुवा करे । येह भी हम लोगों के लिये बयाने क़ानून है कि अपने सीने (मुसल्मानों के कीने से) साफ़ रखो ताकि इन में मदीने के अन्वार देखो, वरना हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सीनए रहमत, नूरे करामत का गन्जीना है वहां कदूरत (या’नी बुग़्जो कीने) की पहुंच ही नहीं ।

(مرآة السائج ج ٦ ص ٤٧٢)

तुम को तो गुलामों से है कुछ ऐसी महब्बत : سُبْحٰنَ اللّٰهِ ! मज़क़ूरा हदीसे मुबारक में वारिद शुदा इशादि गिरामी मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अपने गुलामों से महब्बत की अथाह गहराइयों का पता देता है ! मेरे आक़ा आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرُّحْمٰن के भाई जान, शहन्शाहे सुख़न, उस्ताजे ज़मन हज़रते मौलाना हसन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنّٰन ने कितना प्यारा शे’र कहा है :

तुम को तो गुलामों से है कुछ ऐसी महब्बत

है तर्के अदब वरना कहें हम पे फ़िदा हो (जौके ना’त)

फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़र करते रहेंगे । (त-बरानी)

पीर की नज़र से मुरीद को गिराने की कोशिश करने वालों को तम्बीह :

मज़कूरा हदीसे पाक से वोह लोग इब्रत हासिल करें जो कि शागिर्द की उस्ताज़ से, बेटे की बाप से, मुलाज़िम की सेठ से, मा तहूत की निगरान से और मुरीद की उस के पीर साहिब से बिला मस्लहतें शर-ई कमजोरियां और बुराइयां बयान कर के गीबत का कबीरा गुनाह करने के साथ साथ उस को उन की नज़र से गिरा देते हैं, शायद उन्हें इस बात का होश भी नहीं होता कि वोह ऐसा कर के कितनी बड़ी ख़राबियों का बाइस बनते हैं, ज़ाहिर है जब शागिर्द अपने उस्ताद की, मा तहूत अपने निगरान की और मुरीद अपने पीरो मुर्शिद की नज़र से गिर गया तो बेचारे का जो अन्जाम होगा वोह हर जी शुक्र समझ सकता है । काश ! येह गीबत करने वाला गीबत करने से क़बूल खुद अपने लिये गौर कर लेता कि अगर मुझे कोई अपने पीर साहिब या दीनी उस्ताज़ की निगाह से गिरा दे तो मुझ पर क्या गुज़रे ! ऐ काश ! पीरो मुर्शिद की नज़र से हम कभी भी न गिरें ! सद करोड़ काश ! हम हमेशा हमेशा अपने मुर्शिदे गिरामी की सीधी और मीठी मीठी नज़र में रहें :

सदा पीरो मुर्शिद रहें हम से राज़ी

कभी भी न हों येह ख़फ़ा या इलाही

आह ! काश हमारे प्यारे प्यारे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा ﷺ हम गुनहगारों से सदा खुश रहें, कभी भी हमें अपनी निगाहे इनायत से दूर न फ़रमाएं कि

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम !

कि जिस को तूने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

या रब्बे मुस्तफ़ा ﷺ ! हमारी तमाम ख़ताओं को मुआफ़ फ़रमा दे और हमेशा हम पर रहमत की नज़र रख । आह ! अगर तू नाराज़ हो गया तो हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह ! हम किस के दरवाज़े पर जाएंगे !



गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
कर मुआफ़ और सदा के लिये राज़ी हो जा

हाए मैं नारे जहन्म में जलूंगा या रब !
येह करम होगा तो जन्नत में रहूंगा या रब !

“बड़ों” को भी चाहिये “छोटों” की गीबत न सुनें : “बड़ों” या’नी उस्तादों, निगरानों वगैरा की खिदमतों में म-दनी इल्लिजा है कि जब कोई शख्स आप के पास आ कर आप के किसी मा तहूत की बिला मस्लहतें शर-ई गीबत करने लगे तो कुदरत होने की सूरत में फ़ौरन उसे रोक दीजिये, वरना गीबत सुनने के गुनाह में पड़ सकते हैं। अगर गीबत सुन कर आप को गुस्सा आ गया और ज़बान से “कुछ” निकल गया तो हो सकता है कि वोही गीबत करने वाला मुग्ताब को या’नी जिस की गीबत कर रहा था उस को आप के “अल्फ़ाज़” पहुंचा दे और फिर मज़ीद गुनाहों भरे मसाइल पैदा हों। बिलफ़र्ज़ गीबत करने वाला आप के पास किसी की बुराई पहुंचाने में काम्याब हो भी गया हो और आप ने भी गीबत से बचने के तरीकों पर अमल न किया हो तो अपनी आखिरत की भलाई की खातिर हाथों हाथ तौबा और इस के तकाज़े पूरे कर लीजिये और गीबत करने वाले पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के उसे भी तौबा करवा दीजिये नीज़ मुग्ताब या’नी जिस की गीबत की गई है उस के मु-तअल्लिक हरगिज़ बद गुमानी मत कीजिये, न ही उस पर अपनी शफ़क़तें कम कीजिये कि आप को जो कुछ किसी के बारे में बताया गया इस का कोई सुबूत भी नहीं, مَعَاذَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ गीबत करने वाले के ज़रीए मिली हुई बात किसी और को बताने का ज़ब्बए शर पैदा होते ही इस फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़ेहन में दोहराइये : كَفَى بِالْمَرْءِ كَذِبًا اَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ : किसी इन्सान के झूटा होने को येही काफ़ी है कि वोह हर सुनी सुनाई बात (बिगैर तहकीक किये) बयान कर दे। (مُقَدِّمَةُ صَحِيحِ مُسْلِمٍ ص ۸ حدیث ۵) फिर इस हदीसे पाक में की हुई मुमा-न-अत के मुताबिक अमल करने की निय्यत से उस बात को किसी के आगे बयान मत कीजिये वरना खुद

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

भी गीबत व इफ़क (तोहमत, बोहतान) वगैरा के गुनाहों की आफ़त में फंस जाएंगे। हां जिस की गीबत की गई थी उस की तस्दीक़ हो जाने पर अच्छी अच्छी निय्यतें कर के उस मा तहत की ज़रूर इस्लाह फ़रमा दीजिये। आप को अगर्चे बज़ाहिर कोई बड़ाई मिल भी गई हो मगर अल्लाहु क़दीर عزّوجلّ की खुफ़या तदबीर से हमेशा डरते रहिये, महज़ रस्मी कलामी नहीं दिल की गहराई से अज़िज़ी अज़िज़ी और अज़िज़ी करते रहिये, अपनी कम मा-यगी व बे बिज़ा-अती (या'नी कम हैसिय्यती) का ए'तिराफ़ करते हुए बारगाहे रिसालत में अर्ज़ कीजिये

खाक मुझ में कमाल रखखा है
मेरे ऐबों पे डाल कर पर्दा

मुस्तफ़ा ने संभाल रखखा है
मुझ को अच्छों में डाल रखखा है

तेरा ए'जाज़ कब का मर जाता

तेरे टुकड़ों ने पाल रखखा है

चुगुल ख़ोर कभी सच्चा नहीं हो सकता : जब भी आप के पास कोई आ कर किसी की गीबत करे उस पर हरगिज़ ए'तिमाद मत कीजिये, क्यूं कि गीबत करने के सबब वोह फ़ासिक़ हो जाता है और फ़ासिक़ की ख़बर मो'तबर नहीं होती। हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन शिहाब ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي एक मर्तबा बादशाह सुलैमान बिन अब्दुल मलिक के पास तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख्स आया, बादशाह ने क़दरे ना गवारी के साथ उस से कहा : “मुझे पता चला है तुम ने मेरे खिलाफ़ फुलां फुलां बात की है !” उस ने जवाब दिया : मैं ने तो ऐसा कुछ नहीं कहा। बादशाह ने इसरार करते हुए कहा : जिस ने मुझे बताया है, वोह (कैसे झूट बोल सकता है बहुत) सच्चा आदमी है। तो हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने बादशाह को मुखातब कर के फ़रमाया : (आप को जिस ने इस तरह की ख़बर दी वोह तो चुगली खाने वाला हुवा और) “चुगुल ख़ोर कभी सच्चा हो नहीं सकता !” येह सुन कर बादशाह संभल गया और कहने लगा : हुज़ूर ! आप ने बिल्कुल बजा फ़रमाया। फिर उस शख्स से कहा : اِدْهَبْ بِسَلَامٍ या'नी तुम सलामती के साथ लौट जाओ।

(احياء العلوم ج ۳ ص ۱۹۳)

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़ाक)

सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رضي الله عنه का तर्जें अमल : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رضي الله تعالى عنه की खिदमते बा ब-र-कत में एक शख्स हाज़िर हुवा और उस ने किसी के बारे में कोई मन्फ़ी (NEGATIVE) बात की। आप رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारे मुआ-मले की तहकीक़ करें ! अगर तुम झूटे निकले तो इस आयते मुबा-रका के मिस्दाक़ क़रार पाओगे :

إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا
(پ ۲۶ الحُجرات ۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : : अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहकीक़ कर लो।

और अगर तुम सच्चे हुए तो येह आयते करीमा तुम पर सादिक़ आएगी :

هَمَّا نِمْشَاءُ بِنَيْمٍ ۝
(پ ۲۹ القلم ۱۱)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : : बहुत ता'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।

और अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें मुआफ़ कर दें ! उस ने अर्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! मुआफ़ कर दीजिये आइन्दा मैं ऐसा (या'नी गीबतें और चुगुल खोरियां) नहीं करूंगा। (احیاء العلوم ج ۳ ص ۱۹۳) अल्लाह عز وجل की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़रत हो। امین بجاء النبی الامین صلی الله تعالی علیہ والہ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तुम मेरे पास तीन बुराइयां ले कर आए : एक शख्स ने किसी बुजुर्ग رحمة الله تعالى عليه की बारगाह में हाज़िर हो कर उन्हें उन के दोस्त की कुछ मन्फ़ी (NEGATIVE) बातें बताईं, इस पर उन्होंने ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़सोस ! तुम मेरे पास तीन बुराइयां ले कर आए : (1) मुझे मेरे इस्लामी भाई से नफ़रत दिलाई (2) इस वजह से मेरे दिल को (तश्वीशों और वस्वसों में) मशगूल किया और (3) अपने अमीन नफ़्स पर तोहमत लगाई। (या'नी मैं तुम्हें अमानत दार

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

समझता था मगर तुम तो पेट के हलके निकले !)

(احياء العلوم ج ۳ ص ۱۹۳)

महब्बतों के चोरों से बचो : बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْفَيْنِ फरमाते हैं : अक्लों के दुश्मनों और महब्बतों के चोरों से बचो, ये चोर बदगोई करने वाले और चुगली खाने वाले हैं और चोर तो माल चुराते हैं जब कि ये (गीबतें और चुगलियां करने वाले) लोग महब्बतें चुराते हैं।

(الْمُسْتَرْف ج ۱ ص ۱۵۱)

जुदा होने तक हालते जिहाद में : हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन जाज़ान رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْفَيْنِ फरमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे पास उमूमन जो भी आ कर बैठता है वोह जब तक चला न जाए मैं गोया उस के साथ हालते जिहाद में होता हूं क्यूं कि वोह मुझे मेरे दोस्त से मु-तनफ़िफ़र करने (या'नी नफ़रत दिलाने) से बाज़ नहीं रहता, या मेरी ग़ीबत करने वालों की ग़ीबतें मुझ तक पहुंचा कर मुझे तशवीश में डालता और आजमाइश में मुब्तला करता है। (تنبيه المغترين ص ۱۹۶) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी मफ़िरत हो।

امين بجاه النبي الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

मुझे ग़ीबतों से बचा या इलाही
कभी भी लगाऊं न तोहमत किसी पर

बचूं चुगलियों से सदा या इलाही
दे तौफ़ीके सिद्को वफ़ा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

تُؤْبِوَالِي اللَّهِ اَسْتَغْفِرُ اللَّه

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

फरमाने मुस्तफ़ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मर्तबा सुद्ध और दस मर्तबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़अत मिलेगी । (मजमउज़्जवाइद)

म-दनी चेनल की बदौलत मौत से 17 दिन क़ब्ल ईमान मिल गया : सिद्दीक़ आबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि 20 अप्रील सि. 2009 ई. बरोज़ पीर शरीफ़ बाबुल मदीना कराची के रिहाइशी तक़रीबन 50 सालह एक ग़ैर मुस्लिम ने जब म-दनी चेनल पर इस्लाम की हकीकी ता'लीमात को सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मु-तअस्सिर हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया, उन का इस्लामी नाम मुहम्मद सिद्दीक़ रखा गया । वोह जुमा'रात को दा'वते इस्लामी के आ-लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शरीक हुए और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ हाथों हाथ आशिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के 12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए । म-दनी क़ाफ़िले से वापस आने के दूसरे या तीसरे रोज़ ककरी ग्राउन्ड बाबुल मदीना कराची के नज़्दीक़ एक गाड़ी ने उन्हें कुचल दिया, येह हादिसा जान लेवा साबित हुवा, यूं वोह इस्लाम की अनमोल दौलत से मालामाल होने के तक़रीबन 17 या 18 दिन बा'द इस दुन्या से रुख़्सत हो गए । अल्लाह तआला उन की मर्ग़िरत फ़रमाए ।

امین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

म-दनी चेनल की मुहिम है नफ़्फ़ो शैत़ां के ख़िलाफ़
नफ़्फ़े अम्मारा पे ज़र्ब ऐसी लगेगी ज़ोरदार

जो भी देखेगा करेगा (اَللّٰہُمَّ صَلِّ عَلٰی سُلَیْمٰنَ بْنِ دَاوُدَ) ए'तिराफ़
कि नदामत के सबब होगा गुनहगार अशक़बार

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

मरने से क़ब्ल कोई सुधरता है तो कोई बिगड़ता है : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ खुश नसीब बन्दे को मौत से सिर्फ़ 17 या 18 दिन क़ब्ल इस्लाम की दौलत नसीब हो गई । अल्लाहु क़दीर عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर किस के बारे में क्या है येह किसी को नहीं पता, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है, कोई तो अपनी सारी उम्र कुफ़्र में गुज़ार दे मगर मरते वक़्त ईमान की दौलत से सरफ़राज़ हो जाए जब कि कोई सारी उम्र नेकियों में बसर करने के बा वुजूद

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया। (इब्ने सुन्नी)

ब वक्ते रुख़सत बुरे ख़ातिमे से दो चार हो। हम रब्बे जुल जलाल ﷻ से भलाई का सुवाल करते हैं। एक इब्रत अंगेज़ हदीसे पाक मुला-हज़ा फ़रमाइये : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका رضي الله تعالى عنها से रिवायत है कि जब अल्लाह ﷻ किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के मरने से एक साल पहले एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उस को राहे रास्त पर लगाता रहता है हत्ता कि वोह ख़ैर (या'नी भलाई) पर मर जाता है और लोग कहते हैं : फुलां शख़्स अच्छी हालत पर मरा है। जब ऐसा खुश नसीब और नेक शख़्स मरने लगता है तो उस की जान निकलने में जल्दी करती है। उस वक़्त वोह अल्लाह ﷻ से मुलाक़ात को पसन्द करता है और अल्लाह ﷻ उस की मुलाक़ात को। जब अल्लाह ﷻ किसी के साथ बुराई का इरादा करता है तो मरने से एक साल क़ब्ल एक शैतान उस पर मुसल्लत कर देता है जो उसे बहकाता रहता है हत्ता कि वोह अपने बद तरीन वक़्त में मर जाता है। उस के पास जब मौत आती है तो उस की जान अटकने लगती है। उस वक़्त येह शख़्स अल्लाह ﷻ से मिलने को पसन्द नहीं करता और अल्लाह ﷻ उस से मिलने को।

(مسند ابن راهويه ج 3 ص 503)

ईमान पे दे मौत मदीने की गली में

मदफ़न मेरा महबूब के क़दमों में बना दे

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ثَوْبُوا إِلَى اللَّهِ اسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ईमां की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में : सुल्तानआबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि हमारे अ़लाक़े में एक ग़ैर मुस्लिम (उम्र तक़रीबन 30 साल) अपने दोस्तों के साथ रहता था जिन में कुछ मुसल्मान भी थे, आज कल के अक्सर नौ जवानों

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मारता सुबह और दस मारता शाम दुहुदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमूअुलवाइद)

की तरह येह लोग भी केबल पर फ़िल्में डिरामे देखा करते थे । जब र-मज़ानुल मुबारक (सि. 1429 हि.) में म-दनी चैनल का आगाज़ हुवा तो केबल पर इस के म-दनी सिल्लिसले जारी हुए, उस ग़ैर मुस्लिम ने जब येह सिल्लिसले देखे तो उसे बड़े अच्छे लगे । अब वोह अक्सरो बेशतर म-दनी चैनल ही देखा करता, म-दनी चैनल की ब-र-कत से आख़िरे कार वोह कुफ़्र के अंधेरे से नजात पाने और इस्लाम के नूर से अपने दिल को चमकाने के लिये दा'वते इस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना हाज़िर हुवा, और कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया । फिर येह इस्लामी भाई हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में हजारों इस्लामी भाइयों और म-दनी चैनल के नाज़िरीन के सामने सरकारे ग़ौसे आ 'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم' का मुरीद हो कर कादिरी र-ज़वी भी बन गया । नमाज़े बा जमाअत की पाबन्दी शुरूअ कर दी, चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, कभी कभार सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सर पर सजा कर इस का फ़ैज़ भी लूटने लगा, दा'वते इस्लामी के मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) में कुरआने मजीद पढ़ने का सिल्लिसला भी शुरूअ कर दिया । सह्राए मदीना मदी-नतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में भी शरीक हुवा । अल्लाह तआला उन को और हम सब को ईमान पर साबित क़दम रखे ।

امین بحاوالہ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

नाच गानों और फ़िल्मों से येह चैनल पाक है म-दनी चैनल हक़ बयां करने में भी बेबाक है
म-दनी चैनल में नबी की सुन्नतों की धूम है और शैताने लई रन्ज़ूर है मग्मूम है

صَلُّوا عَلَی الْکَیِّبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

गीबत करने वाले की दुआ क़बूल नहीं होती : हज़रते सय्यिदुना फ़कीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : तीन आदमियों की दुआ क़बूल नहीं होती 1) जो माले हराम खाता हो 2) जो ब कसरत ग़ीबत करता हो 3) जो कि मुसल्मानों से हसद रखता हो ।

(تَنْبِیْہُ الْغَافِلِین ص ۹۵)

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदवख्त हो गया । (इन्ने सुनी)

जन्नत की ज़मानत : नबियों के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, सरदारो दो जहान, महबूबे रहमान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फरमाने ब-र-कत निशान है : जो शख्स अपने घर में बैठ रहे और किसी मुसलमान की गीबत न करे तो अल्लाह तआला उस के लिये (जन्नत का) जामिन है ।

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج 3 ص 466 حديث 3822)

जन्नत में आका का पड़ोसी : हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया : जो शख्स अच्छी तरह नमाज़ पढ़ता हो, उस के अयाल (या'नी घर वाले) ज़ियादा और माल कम हो और वोह शख्स मुसलमानों की गीबत न करता हो मैं और वोह जन्नत में इन दो की तरह होंगे । (या'नी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने अंगुशते शहादत और बीच वाली उंगली मिला कर दिखाया)

(مُسْنَدُ أَبِي يَعْقُبَ ج 1 ص 428 حديث 986)

“या अल्लाह हमें जन्नत नसीब फरमा” के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से जन्नत की 22 झलकियां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحَنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! मज़कूरा हदीसे पाक में जन्नत के अन्दर मदीने के ताजवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने का क्या खूब म-दनी नुस्खा बयान किया गया है ! سُبْحَنَ اللّٰهِ ! سُبْحَنَ اللّٰهِ ! سُبْحَنَ اللّٰهِ ! जन्नत की अ-ज़मत की भी क्या ही बात है ! दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द अव्वल सफ़हा 152 ता 162 पर तहरीर कर्दा “जन्नत का बयान” में से चन्द झलकियां मुला-हज़ा फ़रमाइये, اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ मुंह में पानी आ जाएगा । अल्लाह रब्बुल इज़ज़त की रहमत भरी जन्नत की चाहत में बेताब हो जाइये और इसे पाने की जिद्दो जहद तेज़ तर कर दीजिये चुनान्चे लिखा है : ★ अगर जन्नत की कोई नाखुन भर चीज़ दुन्या में ज़ाहिर

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

हो तो तमाम आस्मान व ज़मीन उस से आरास्ता हो जाएं और ★ अगर जन्नती का कंगन (या'नी कलाई का एक ज़ेवर) ज़ाहिर हो तो आप़ताब (सूरज) की रोशनी मिटा दे, जैसे आप़ताब सितारों की रोशनी मिटा देता है ★ जन्नत की इतनी जगह जिस में कोड़ा (चाबुक, दुर्गा) रख सकें दुनिया व मा फ़ीहा (या'नी दुनिया और इस के अन्दर जो कुछ है उस) से बेहतर है ★ जन्नत की दीवारें सोने और चांदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हैं ★ जन्नतियों को जन्नत में हर किस्म के लज़ीज़ से लज़ीज़ खाने मिलेंगे, जो चाहेंगे फ़ौरन उन के सामने मौजूद होगा ★ अगर किसी परिन्द को देख कर उस का गोश्त खाने को जी हो तो उसी वक़्त भुना हुवा उन के पास आ जाएगा ★ अगर पानी वगैरा की ख़्वाहिश हो तो कूजे खुद हाथ में आ जाएंगे, उन में ठीक अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ पानी, दूध, शराब, शहद होगा कि उन की ख़्वाहिश से एक क़तरा कम न ज़ियादा, बा'द पीने के खुद बखुद जहां से आए थे चले जाएंगे ★ वहां की शराब दुनिया की सी नहीं जिस में बदबू और कड़वाहट और नशा होता है और पीने वाले बे अक्ल हो जाते हैं, आपे से बाहर हो कर बेहूदा बकते हैं, वोह पाक शराब इन सब बातों से पाक व मुनज़्ज़ह है ★ वहां नजासत, गन्दगी, पाख़ाना, पेशाब, थूक, रीठ, कान का मैल, बदन का मैल अस्लन (या'नी बिल्कुल) न होंगे ★ एक खुशबूदार फ़रहत बख़्श डकार आएगी, खुशबूदार फ़रहत बख़्श पसीना निकलेगा ★ सब खाना हज़्म हो जाएगा और ★ डकार और पसीने से मुश्क की खुशबू निकलेगी ★ हर वक़्त ज़बान से तस्बीह व तक्बीर ब क़स्द (या'नी इरादतन) और बिला क़स्द (या'नी बिला इरादा) मिस्ले सांस के जारी होगी ★ कम से कम हर शख्स के सिरहाने दस हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे, ख़ादिमों में हर एक के एक हाथ में चांदी का पियाला होगा और दूसरे हाथ में सोने का और हर पियाले में नए नए रंग की ने'मत होगी, जितना खाता जाएगा लज़्ज़त में कमी न होगी बल्कि ज़ियादती होगी, हर निवाले में सत्तर मजे होंगे, हर मज़ा दूसरे से मुम्ताज़, वोह (मजे) मअन (या'नी एक ही साथ) महसूस होंगे, एक का एहसास दूसरे से मानेअ (या'नी रोकने वाला) न होगा ★ जन्नतियों के न लिबास पुराने पड़ेंगे, न उन की जवानी फ़ना होगी ★ अगर जन्नत का कपड़ा दुनिया में पहना जाए तो जो देखे बेहोश हो जाए, और लोगों की निगाहें उस का तहम्मूल (या'नी बरदाश्त) न कर

फरमाने मुस्तफा ﷺ: मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह عزوجل तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

सकें ★ अगर कोई हूर समुन्दर में थूक दे तो उस के थूक की शीरीनी (मिठास) की वजह से समुन्दर शीरीं (मीठा) हो जाए और एक रिवायत है कि अगर जन्नत की औरत सात समुन्दरों में थूके तो वोह शहद से ज़ियादा शीरीं (या'नी मीठे) हो जाएं ★ सर के बाल और पलकों और भवों के सिवा जन्नती के बदन पर कहीं बाल न होंगे, सब बे रीश होंगे, सुर्मगीं (या'नी सुरमा लगी) आंखें, तीस बरस की उम्र के मा'लूम होंगे कभी इस से ज़ियादा मा'लूम न होंगे ★ फिर लोग (अल्लाह عزوجل के हुक्म से) एक बाज़ार में जाएंगे जिसे मलाएका घेरे हुए हैं, उस में वोह चीज़ें होंगी कि उन की मिस्ल न आंखों ने देखी न कानों ने सुनी, न कुलूब (या'नी दिलों) पर उन का ख़तरा (ख़याल) गुज़रा, उस में से जो (चीज़) चाहेंगे, उन के साथ कर दी जाएगी और ख़रीदो फ़रोख़्त न होगी और ★ जन्नती उस बाज़ार में बाहम मिलेंगे, छोटे मर्तबे वाला बड़े मर्तबे वाले को देखेगा, उस का लिबास पसन्द करेगा, हुनूज़ (या'नी अभी) गुफ़्त-गू ख़त्म भी न होगी कि ख़याल करेगा, मेरा लिबास उस से अच्छा है और येह इस वजह से कि जन्नत में किसी के लिये ग़म नहीं ★ जन्नती बाहम मिलना चाहेंगे तो एक का तख़्त दूसरे के पास चला जाएगा। और उन में अल्लाह عزوجل के नज़्दीक सब में मुअज़्ज़ज़ वोह है जो अल्लाह तआला के वज्हे करीम के दीदार से हर सुब्ह व शाम मुशरफ़ होगा ★ जब जन्नती जन्नत में जा लेंगे अल्लाह عزوجل उन से फ़रमाएगा : कुछ और चाहते हो जो तुम को दूं ? अर्ज़ करेंगे : तूने हमारे मुंह रोशन किये, जन्नत में दाख़िल किया, जहन्नम से नजात दी। उस वक़्त पर्दा कि मख़्लूक पर था उठ जाएगा तो दीदारे इलाही से बढ़ कर उन्हें कोई चीज़ न मिली होगी।

اللَّهُمَّ ارْزُقْنَا زِيَارَةَ وَجْهِكَ الْكَرِيمِ بِجَاهِ حَبِيبِكَ الرَّؤُوفِ الرَّحِيمِ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالتَّسْلِيمُ، آمِينَ!

(तरजमा : या अल्लाह عزوجل अपने हबीब रऊफ़रहीम عليه الصلوة والتسليم के सदके अपना दीदार नसीब फ़रमा, आमीन)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मत्तबा सुब्ह और दस मत्तबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्जवाइद)

हो नज़रे करम बहरे ज़िया सूए गुनहगार
जन्नत में पड़ोसी मुझे आका का बना दे

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

تُؤْتُوا لِيَ اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

हूँ पाने का अमल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबतों और गुनाहों भरी बातों से जान छुड़ाइये और खुद को जन्नत का हक़दार बनाइये । थोड़ी सी ज़बान चलाइये, اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيمَ ज़बान पर लाइये और जन्नत की हूँ पाइये । चुनान्चे एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ ने चालीस साल तक अल्लाह غَزُوْحَل की इबादत की । एक बार दुआ की : يا اَللّٰهُ ! तेरी रहमत से मुझे जो कुछ जन्नत में मिलने वाला है उस की कोई झलक दुनिया में भी दिखा दे । अभी दुआ जारी थी कि यकदम मेहराब शक़ हुई और उस में से एक हसीना व जमीला हूर बर आमद हुई, उस ने कहा कि तुझे जन्नत में मुझ जैसी सो हूँ इनायत की जाएंगी, जिन में हर एक की सो सो ख़ादिमाएं और हर ख़ादिमा की सो सो कनीज़ें होंगी और हर कनीज़ पर सो सो नाज़िमाएं (या'नी इन्तिज़ाम करने वालीयां) होंगी । येह सुन कर वोह बुजुर्ग खुशी के मारे झूम उठे और सुवाल किया : क्या किसी को जन्नत में मुझ से ज़ियादा भी मिलेगा ? जवाब मिला : इतना तो हर उस आ़म जन्नती को मिलेगा जो सुब्ह व शाम اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيمَ पढ़ लिया करता है ।

(رَوْضُ الرّیّاجین ص ۵۵)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

मुसल्मानों की आबरू वगैरा दूसरे मुसल्मान पर हराम है : नबियों के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, सरदारे दो जहान, महबूबे रहमान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : मुसल्मान की सब चीज़ें मुसल्मान पर हराम हैं इस का माल और इस की आबरू और इस का ख़ून । आदमी को बुराई से इतना ही काफ़ी है कि वोह अपने

फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे । (त-बरानी)

मुसलमान भाई को हकीर जाने ।

(سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٥٤ حديث ٤٨٨٢)

तकब्बुर किसे कहते हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने से किसी को हकीर जानना तकब्बुर कहलाता है, तकब्बुर एक तो खुद हराम है मजीद इस की वजह से गीबत का गुनाह भी सरजद होता है । मगरूर आदमी जिस को हकीर जानता है उस की हंसी उड़ाता है **अल्लाह** عزوجل पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत नम्बर 11 में फरमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّنْ نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُنَّ ۚ

(پ ٢٦ الحجرات ١١)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! न मर्द मर्दों से हंसे, अजब नहीं कि वोह इन हंसने वालों से बेहतर हों और न औरतों औरतों से, दूर नहीं कि वोह इन हंसने वालियों से बेहतर हों ।

किसी को हकारत से मत देखो : हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हज़र मक्की शाफेई رحمه الله القوی इस आयत के तहत फरमाते हैं : “**सुख़ियह**” से मुराद येह है कि जिस की हंसी उड़ाई जाए, उस की तरफ़ हकारत से देखना । इस हुक्मे खुदावन्दी عزوجل का मक़सद येह है कि किसी को हकीर न समझो, हो सकता है वोह **अल्लाह** عزوجل के नज़दीक तुम से बेहतर, अफ़ज़ल और ज़ियादा मुकर्रब हो । चुनान्चे सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फरमाने खुशबूदार है : “कितने ही परेशान हाल, परागन्दा बालों और फटे पुराने कपड़ों वाले ऐसे हैं कि जिन की कोई परवाह नहीं करता लेकिन अगर वोह **अल्लाह** عزوجل पर किसी बात की क़सम खा लें तो वोह ज़रूर उसे पूरा फरमा दे ।” (سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٥ ص ٤٥٩ حديث ٣٨٨٠)

सफ़िय्युल्लाह عَلَی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हकीर जाना तो **अल्लाह** عزوجل ने उसे हमेशा हमेशा के लिये ख़सारे (या'नी नुक़सान) में मुब्तला कर दिया और हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हमेशा की इज़ज़त के साथ काम्याब हो गए, इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है । यहां



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह ज़न्नत का रास्ता भूल गया । (त-वरानी)

इस मा'ना का भी एहतिमाल (इम्कान) है कि किसी दूसरे को हकीर न जाने क्युंकि मुम्किन है कि वोह अज़ीज़ (या'नी इज़्ज़त वाला) हो जाए और तू ज़लील हो जाए फिर वोह तुझ से इन्तिक़ाम ले ।

لَا تُهَيِّنَنَّ الْفَقِيرَ عَلَيْكَ أَنْ

تَرْكَعَ يَوْمًا وَالْذُّرْقُدُ رَفَعَهُ

या'नी : फ़कीर (या'नी ग़रीब आदमी) की तौहीन न कर शायद तू किसी दिन फ़कीर (या'नी ग़रीब) हो जाए और ज़माने का मालिक عَزَّوَجَلَّ उसे अमीर कर दे ।

(الرّوَا جُرْعَن اَقْتِرَاف الْكِبَائِر ج ٢ ص ١١)

मुसल्मान कौन ? मुहाजिर कौन ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मान के लिये ज़रूरी है कि उस की ज़ात से किसी मुसल्मान को किसी तरह की भी नाहक तकलीफ़ न पहुंचे, न इस का माल लूटे, न इज़्ज़त ख़राब करे, न इसे झाड़े न इसे मारे नीज़ **मुसल्मानों** को आपस में झगड़ने से क्या वासिता ! येह तो एक दूसरे के मुहाफ़िज़ होते हैं, चुनान्चे **अल्लाह के महबूब**, **दानाए गुयूब**, **मुनज़्ज़हुन अनिल डयूब** ﷺ का फ़रमाने हिदायत निशान है : (कामिल) **मुसल्मान** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसल्मान को तकलीफ़ न पहुंचे और (कामिल) **मुहाजिर** वोह है जो उस चीज़ को छोड़ दे जिस से **अल्लाह** तआला ने मन्अ फ़रमाया है ।

(صَحِيح بُخَارِي ج ١ ص ١٥ حديث ١٠)

इस हदीसे पाक के तहत मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَلْقَانِ फ़रमाते हैं कि **कामिल मुसल्मान** वोह है जो लु-ग़तन (या'नी लु-ग़वी ए'तिबार से) और शरअन (भी) हर तरह मुसल्मान हो । (और) वोह **मोमिन** है जो किसी मुसल्मान की **गीबत** न करे, गाली, ता'ना, चुगली वगैरा न करे, किसी को न मारे पीटे, न उस के ख़िलाफ़ कुछ तहरीर करे । मज़ीद फ़रमाते हैं कि **कामिल मुहाजिर** वोह मुसल्मान है जो तर्क वतन के साथ तर्क गुनाह भी करे, या गुनाह छोड़ना भी लु-ग़तन (या'नी लु-ग़वी ए'तिबार से)

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अब्दुर्रज़ाक)

हिजरत है जो हमेशा जारी रहेगी ।

(مرآة المناجیح ج ۱ ص ۲۹)

इशारे से तकलीफ़ देना भी जाइज़ नहीं : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदार मक्कए मुकर्रमा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : किसी मुसल्मान को जाइज़ नहीं कि वोह किसी मुसल्मान को ख़ौफ़ज़दा करे । (سُنَنِ ابوداؤد ج ۴ ص ۳۹۱ حدیث ۵۰۰۴) एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे मुसल्मान की तरफ़ आंख से इस तरह इशारा करे जिस से तकलीफ़ पहुंचे ।

(الرُّهْد لابْنِ مُبَارَك ص ۲۴۰ رقم ۶۸۹، اتحاف السّادة للزّبيدي ج ۷ ص ۱۷۷)

दिल हिला देने वाली ख़ारिश : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मान को यूं तो तकलीफ़ व ईज़ा देना बहुत ही आसान लगता है । उस को झाड़ दिया इस को लताड़ दिया, उस की ग़ीबत कर दी इस पर तोहमत जड़ दी, लेकिन नाराजिये रब्बुल इज़्ज़त की सूरत में आख़िरत में येह सब बहुत भारी पड़ जाएगा, चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला, "ज़ुल्म का अन्जाम" सफ़्हा 21 पर है : हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन श-जरह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जिस तरह समुन्दर के कनारे होते हैं इसी तरह जहन्नम के भी कनारे हैं जिन में बुख़्ती ऊंटों जैसे सांप और ख़च्चरों जैसे बिच्छू रहते हैं । अहले जहन्नम जब अज़ाब में कमी के लिये फ़रियाद करेंगे तो हुक्म होगा कनारों से बाहर निकलो वोह जूँ ही निकलेंगे तो वोह सांप उन्हें होंटों और चेहरों से पकड़ लेंगे और उन की खाल तक उतार लेंगे वोह लोग वहां से बचने के लिये आग की तरफ़ भागेंगे फिर उन पर खुजली मुसल्लत कर दी जाएगी वोह इस क़दर खुजाएंगे कि उन का गोश्त पोस्त सब झड़ जाएगा और सिर्फ़ हड्डियां रह जाएंगी, पुकार पड़ेगी : ऐ फुलां ! क्या तुझे तकलीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां । तो कहा जाएगा : येह उस ईज़ा का बदला है जो तू मोमिनो को दिया करता था ।

(التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ۴ ص ۲۸۰ حدیث ۵۶۴۹)



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुअफ होगे। (कन्जुल उम्माल)

ऐ खासए खासाने रुसुल वक्ते दुआ है
तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई

उम्मत पे तेरी आ के अजब वक्त पड़ा है
हां एक दुआ तेरी कि मक्बूले खुदा है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जशने विलादत की ब-र-कत से क़िस्मत खुल गई : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा 'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये और आशिक़ाने रसूल के साथ मिल कर जशने विलादत की ख़ूब धूमें मचाइये इस की ब-र-कत के भी क्या कहने ! शहर तराड़ कहल ज़िल्अ सद हनोती (कश्मीर) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : रबीउन्नूर शरीफ़ (1430 हि.) की बारहवीं शब हमारे यहां की मस्जिद में जशने विलादत की खुशी में सब्ज़ झण्डे और चरागां की तरकीब की जा रही थी। दर्री अस्ना चार अफ़राद जो कि नशाबाज़ थे मस्जिद के इमाम साहिब की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुए : हम नशा करने की तय्यारी कर ही रहे थे कि ख़याल आया आज ईदे मीलादुन्नबी ﷺ की रात भी क्या हम नशे का गुनाह करेंगे ! क्यूं न हम तौबा कर लें। लिहाज़ा आप के पास हाज़िर हुए हैं। चुनान्चे उन्होंने ने तौबा की और मस्जिद में होने वाले जशने विलादत की बहारें लूटने में शरीक हो गए। इमाम साहिब ने दा 'वते इस्लामी के ज़िम्मेदारान से राबिता किया, इस्लामी भाई मस्जिद पहुंचे और उन्होंने ने उन से पुर तपाक तरीक़े पर मुलाक़ात की और हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले के जदवल के मुताबिक़ उन की तरबियत शुरू कर दी, उन का सीखने सिखाने का शौक़ दीदनी था। جَشْنِے مُحَمَّدُ اللهِ ﷺ विलादत की ब-र-कत से चारों ने नमाजों की पाबन्दी निभाने, दाढ़ी मुबारक सजाने,



फरमाने मुस्फा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी। (मजमउज्जवाइद)

63 रोज़ा सुन्नतों भरे तरबिय्यती कोर्स की सआदत पाने और मसाजिद आबाद फरमाने वगैरा वगैरा नेकियां बजा लाने की अच्छी अच्छी निय्यतें भी कीं, नीज़ घर वालों समेत सिल्लिसलए आलिया कादिरिय्या र-ज़विय्या में दाखिल हो कर अत्तारी हो गए। येह बयान देते वक़्त दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए उन्हें अभी चन्द ही रोज़ हुए हैं और वोह इस वक़्त सुन्नतों की तरबिय्यत के 12 दिन के म-दनी काफ़िले में आशिकाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र में हैं।

ख़ूब झूमो ऐ गुनहगारो तुम्हारी ईद है
हो गया बख़्शिश का सामां ईदे मीलादुन्नबी

صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْخَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

चरागां देख कर काफ़िर ने इस्लाम क़बूल कर लिया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! जश्ने विलादत की भी क्या ख़ूब म-दनी बहारें हैं, आशिकाने रसूल जश्ने विलादत मनाते हैं जभी तो उन नशा बाजों को इस रहमतों भरी रात का पता चला और उन के दिल में एहतिराम पैदा हुवा और सीधे ऐसी मस्जिद में पहुंचे जहां जश्ने विलादत का चरागां हो रहा था और सब्ज़ सब्ज़ परचम लहरा रहे थे। जश्ने विलादत के चरागां की तो क्या बात है। एक इस्लामी भाई ने मुझे बताया कि एक बार जश्ने विलादत के मौक़अ पर मस्जिद को सजा कर दुल्हन बनाया हुवा था, एक ग़ैर मुस्लिम क़रीब से गुज़रा उस ने सजावट के बारे में मा'लूमात की जब उसे बताया गया कि हम ने अपने प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत की खुशी में येह अज़ीमुश्शान चरागां किया है, तो उस का दिल नबिय्ये आखिरुज़मां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की अ-ज़मत से लबरेज़ हो गया कि आज विलादत को 1500 साल गुज़र गए इस के बा वुजूद मुसल्मान अपने नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم का इस क़दर तुज़को एहतिशाम से जश्ने विलादत मनाते और अपनी मस्जिदों और घरों को यूं सजाते हैं तो बस येही दीन सच्चा है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ उस ने कुफ़्र से तौबा की, कलिमा पढ़ा और हल्का बगोशे इस्लाम हो गया।

फरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बदबड़ा हो गया । (इन्ने सुनी)

जशने विलादत का चरागां : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत” (मुकम्मल) सफ़हा 174 पर है : **अर्ज़ :** मीलाद शरीफ़ में झाड़ (या'नी पन्जशाखा मुशइल), फ़ानूस,¹ फ़रूश वगैरा से जैबो जीनत इस्राफ़ है या नहीं ? **इर्शाद :** उ-लमा फ़रमाते हैं : **لَا خَيْرَ فِي الْإِسْرَافِ وَلَا إِسْرَافَ فِي الْخَيْرِ :** (या'नी इस्राफ़ में कोई भलाई नहीं और भलाई के कामों में खर्च करने में कोई इस्राफ़ नहीं ।) जिस शै से ता'जीमे जिक्र शरीफ़ मक्सूद हो, हरगिज़ **मम्नूअ नहीं हो सकती ।**

एक हज़ार शम्ः इमाम गज़ाली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي) ने एहयाउल उलूम शरीफ़ में सय्यद अबू अली रूज़बारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ से नक्ल किया कि एक बन्दए सालेह ने मजलिसे जिक्र शरीफ़ तरतीब दी और उस में **एक हज़ार शम्ः** रोशन कीं । एक शख्स ज़ाहिर बीन पहुंचे और येह कैफ़ियत देख कर **वापस** जाने लगे । बानिये मजलिस ने हाथ पकड़ा और अन्दर ले जा कर फ़रमाया कि जो **शम्ः** मैं ने ग़ैरे खुदा के लिये रोशन की हो वोह **बुझा** दीजिये । कोशिशें की जाती थीं और कोई शम्ः **ठन्डी** न होती ।

(احیاء العلوم ج ۲ ص ۲۶ مُلَخَّصًا)

लहराओ सब्ज पर चम ऐ आका के आशिको !
घर घर करो चरागां कि सरकार आ गए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُؤْتُوْا لِي اللّٰهُ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

دینہ

1. एक किस्म का शम्ःदान जिस पर पिंजरे की शकल का बारीक कपड़ा या कागज़ चढ़ा होता है जो घुमाने या हवा के जोर पर गर्दिश करता है ।

2. येह फ़र्श की जम्ः है । या'नी चूने वगैरा से ज़मीन की सत्ह हमवार करना ।



फरमाने मुस्ताफा ﷺ: जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज्जवाहद)

हकीकी मुफ़्लिस : पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार ﷺ

ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो मुफ़्लिस कौन है ?

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज की : हम में मुफ़्लिस (या'नी ग़रीब मिस्कीन) वोह है जिस के पास न दिरहम हों और न ही कोई माल । तो **फ़रमाया :** मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात ले कर आएगा लेकिन उस ने फुलां को गाली दी होगी, फुलां पर तोहमत लगाई होगी, फुलां का माल खाया होगा, फुलां का खून बहाया होगा और फुलां को मारा होगा । पस उस की नेकियों में से उन सब को उन का हिस्सा दे दिया जाएगा । अगर उस के ज़िम्मे आने वाले हुक्क के पूरा होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा ।

(صحيح مسلم من ۱۳۹۴ حديث ۲۵۸۱)

आह ! क़ियामत के रोज़ क्या होगा !! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! डर जाओ ! लरज़

उठो ! हकीकत में मुफ़्लिस वोह है जो नमाज़, रोज़ा, हज़्ज, ज़कात व स-दक़ात, सखावतों, फ़लाही कामों और बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद क़ियामत में ख़ाली का ख़ाली रह जाए ! कभी गाली दे कर, कभी तोहमत लगा कर, बिला इजाज़ते शर-ई डांट कर, बे इज़्ज़ती कर के, ज़लील कर के, मार पीट कर के, अरिख्यतन (या'नी अरिज़ी तौर पर) ली हुई चीज़ें क़स्दन न लौटा कर, क़र्ज दबा कर और दिल दुखा कर जिन को दुन्या में नाराज़ कर दिया होगा वोह उस की सारी नेकियां ले जाएंगे और नेकियां ख़त्म हो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का बोझ उस पर डाल कर वासिले जहन्नम कर दिया जाएगा । लिहाज़ा अगर किसी की ग़ीबत कर ली है और उस को पता चल गया है या किसी तरह की भी हक़ त-लफ़ी की है तो तौबा के साथ साथ दुन्या ही में जिस की हक़ त-लफ़ी की है उस से बिग़ैर शरमाए मुआफ़ी तलाफ़ी कर लेने में अफ़िय्यत है । मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرُّحْمَن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 24 सफ़हा 463 पर फ़रमाते हैं : यहां (दुन्या में) मुआफ़ करा लेना सहल (या'नी



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया । (इन्ने सुनी)

आसान) है, क़ियामत के दिन इस की उम्मीद मुश्किल कि वहां हर शख्स अपने अपने हाल में गरिफ़्तार, नेकियों का तलबगार (और) बुराइयों से बेज़ार होगा । पराई नेकियां अपने हाथ आते अपनी बुराइयां उस (या'नी दूसरे) के सर जाते किसे बुरी मा'लूम होती हैं ! यहां तक कि हदीस में आया है कि मां बाप का बेटे पर कुछ दैन (हुकूक का मुता-लबा) आता होगा उसे रोज़े क़ियामत पीटेंगे कि हमारा दैन (हक़) दे ! वोह कहेगा : मैं तुम्हारा बच्चा हूं, या'नी शायद रहम करें, वोह (या'नी वालिदैन) तमन्ना करेंगे काश ! और ज़ियादा (हक़) होता (ताकि बेटे से नेकियां ले कर या अपने गुनाह उस के सर डाल कर अपनी ख़लासी करवाएं) । त-बरानी में इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, उन्होंने ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे कि वालिदैन का बेटे पर दैन होगा क़ियामत के रोज़ वालिदैन बेटे पर लपकेंगे तो बेटा कहेगा : मैं तुम्हारा बेटा हूं ! तो वालिदैन को हक़ दिलाया जाएगा और वोह तमन्ना करेंगे काश ! हमारा हक़ और ज़ाइद होता । जब मां बाप का येह हाल तो औरों से उम्मीद ख़ाम ख़याल (या'नी फुज़ूल ख़याल), हां करीम व रहीम मालिको मौला جَلَّ جلالہٗ وَتَبَارَكَ وَتَعَالٰی जिस पर रहम फ़रमाना चाहेगा तो यूं करेगा कि हक़ वाले को बे बहा कुसूरे जन्नत (या'नी जन्नत के आलीशान महल्लात) मुआ-वजे में अता फ़रमा कर अफ़वे हक़ (या'नी हक़ मुआफ़ करने) पर राजी कर देगा । एक करिश्मए करम में दोनों का भला होगा ! न इस की ह-सनात (या'नी नेकियां) उसे दी गई न उस की सय्यिआत (या'नी बदियां) इस के सर रखी गई न उस का हक़ ज़ाएअ होने पाया बल्कि हक़ से हज़ारों द-रजे बेहतर अफ़ज़ल पाया, रहमते हक़ की बन्दा नवाज़ी (भी ख़ूब कि ज़ालिम नाज़ी (या'नी नजात पाए और) मज़लूम राजी (हो जाए), فَلِلّٰہِ الْحَمْدُ حَمْدًا کَثِيرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِیْہِ کَمَا یُحِبُّ رَبُّنَا وَیَرْضٰی (पस अल्लाह तआला ही के लिये है ऐसी हम्दो सना जो बहुत ज़ियादा, पाकीज़ा और बा ब-र-कत है जैसा कि हमारे रब की पसन्द और रिज़ा है)

या इलाही ! जब पड़े महशर में शोरे दारोगीर²

अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो

۱۔ الْمُعْجَمُ الْکَبِيرُ لِلطَّبْرَانِی ج ۱۰ ص ۲۱۹ حدیث ۱۰۵۲۶۔

2. शोरे दारोगीर या'नी पकड़ धकड़ का शोर



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमते भेजता है। (मुस्लिम)

मैं ने अपनी इज्जत लोगों पर स-दका की : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गीबत एक ऐसी आफत है कि इस से बहुत ही कम मुसल्मान महफूज होंगे, हमें गीबत और दीगर गुनाहों से बचने, दूसरों को बचाने और गुनहगारों के गुनाहों का बोझ कम करने की सअय करनी चाहिये। दूसरों का बोझ कम करने की एक सूरत येह भी है कि जितना हो सके हम अपने हुकूक मुसल्मानों को मुआफ़ कर दें। इस की तरगीब दिलाते हुए रसूले बे मिसाल, साहिबे जूदो नवाल, हबीबे रब्बे जुल जलाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कसरत के साथ येह इर्शाद फरमाते : क्या तुम में से कोई एक इस बात से अजिज है कि वोह अबू ज़मज़म की तरह हो। उन्होंने ने अर्ज की : अबू ज़मज़म कौन है ? इर्शाद फरमाया : पहले लोगों (या'नी पिछली उम्मत) में एक शख्स था वोह सुब्ह के वक़्त यूँ कहता : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने आज के दिन अपनी इज्जत को उस आदमी पर स-दका कर दिया जो मुझ पर जुल्म करे।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٦ ص ٢٦١ حدیث ٨٠٨٢)

पेशगी मुआफ़ करने वाले की मग़ि़रत हो गई : एक मुसल्मान ने बारगाहे खुदा वन्दी इज्जत में अर्ज की : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे पास माल नहीं कि मैं स-दका करूँ तो जो शख्स मेरी इज्जत के दरपै हो तो येह मेरी तरफ़ से उस पर स-दका है। अल्लाह तआला ने नबी صَلَّय اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ वहूय भेजी कि मैं ने इस शख्स को बख़्शा दिया।

(حیاءُ الْعُلُوم ج ٣ ص ٢١٩)

इमामे मज़्लूम की अपनी इज्जत के मु-तअल्लिक़ सखावत : इमामे मज़्लूम हज़रते सय्यिदुना इमाम जैनुल अ़बिदीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब अपने घर से निकलते तो कहते : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं आज स-दका करूंगा और वोह येह कि आज जो मेरी गीबत करे उस को मैं ने अपनी इज्जत दे दी।

(حیاءُ الْحِیَوانِ الْکُبْرٰی ج ١ ص ٢٠٢)

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह غُذُوْحَلْ तुम पर रहमत भेजेगा । (इने अदी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इमाम जैनुल आबिदीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इशादि गिरामी के मा'ना येह हैं कि आज के रोज मेरी गीबत करने वाले से दुन्या व आखिरत में बदला नहीं लूंगा । इस से मुराद हरगिज येह नहीं कि गीबत करना जाइज हो गया । गीबत बदस्तूर गुनाह ही रहेगी और इस की तौबा भी वाजिब होगी, हां गीबत के तअल्लुक से हक्कुल अब्द मुआफ हो गया । वोह भी फ़क़त उस दिन का जिस दिन आप رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने इज़ज़त स-दक्का की । इस से तरगीब लेते हुए हमें भी चाहिये कि हम भी अपनी गीबत व दिल आजारी वगैरा करने वाले को पेशगी ही मुआफी दे दें और अब तक जिन्होंने ने जितने हुक्क तलफ़ किये उन्हें भी रिज़ाए इलाही غُذُوْحَلْ के लिये मुआफ़ कर दें । मुआफ़ करने के फ़ज़ाइल की भी क्या बात है इस ज़िम्न में दो रिवायात मुला-हज़ा हों चुनान्हे

① मुआफ़ करने की अज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ 32 स-फ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "गुस्से का इलाज" सफ़हा 32 पर है : क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा जिस का अज़्र अल्लाह غُذُوْحَلْ के ज़िम्मा करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए । पूछा जाएगा किस के लिये अज़्र है ? वोह कहेगा : "उन लोगों के लिये जो मुआफ़ करने वाले हैं ।" तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।

(الْمَغْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِي ج ١ ص ٥٤٢ حديث ١٩٩٨)

② जन्नत पाने के तीन³ नुस्खे : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ 48 स-फ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "नाचाक़ियों का इलाज" सफ़हा 28 ता 29 पर है : हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन³ बातें जिस शख़्स में होंगी अल्लाह तआला (क़ियामत के दिन) उस का हिसाब बहुत आसान तरीक़े से लेगा और उस को (अपनी रहमत से) जन्नत में

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स को नाक खक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े । (हाकिम)

दाखिल फरमाएगा । मैं ने अर्ज की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कौन सी बातें हैं ? फरमाया : ﴿1﴾ जो तुम से क़तए तअल्लुक़ करे (या'नी तअल्लुक़ तोड़े) तुम उस से मिलाप करो ﴿2﴾ जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अता करो और ﴿3﴾ जो तुम पर जुल्म करे तुम उस को मुआफ़ कर दो ।

(अल्लैज्जुम अल्ला वुसुतज १ ص २६३ حدیث ९०९)

हज़रते मौलाना रूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَيُّوم फरमाते हैं :

نے برائے فصل کردن آمدی

تو برائے وصل کردن آمدی

(या'नी तू जोड़ पैदा करने के लिये आया है तोड़ पैदा करने के लिये नहीं आया)

म-दनी वसिय्यतें : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! सगे मदीना غُف़ी عَنْہ ने रिज़ाए इलाही पाने की निय्यत से अपने कर्जदारों को पिछले कर्जों, माल चुराने वालों को चोरियों, हर एक को ग़ीबतों, तोहमतों, तज़लीलों, ज़र्बों समेत तमाम जानी माली हुकूक़ मुआफ़ किये और आइन्दा के लिये भी तमाम तर हुकूक़ पेशगी ही मुआफ़ कर दिये हैं चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ 16 स-फ़हात पर मुश्तमिल रिसाला "म-दनी वसिय्यत नामा" सफ़हा 10 पर इज़ज़त व आबरू और जान के मु-तअल्लिक़ है : मुझे जो कोई गाली दे, बुरा भला कहे (ग़ीबतें करे), ज़ख्मी कर दे या किसी तरह भी दिल आज़ारी का सबब बने मैं उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये पेशगी मुआफ़ कर चुका हूं, मुझे सताने वालों से कोई इन्तिक़ाम न ले । बिलफ़र्ज कोई मुझे शहीद कर दे तो मेरी तरफ़ से उसे मेरे हुकूक़ मुआफ़ हैं । वु-रसा से भी दर-ख़्वास्त है कि उसे अपना हक़ मुआफ़ कर दें (और मुक़द्दमा वगैरा दाइर न करें) । अगर सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने क़ातिल या'नी मुझे शहादत का जाम पिलाने वाले को भी जन्नत में लेता जाऊंगा बशर्ते कि उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा हो । (अगर मेरी शहादत अमल में आए तो इस की वजह से किसी किस्म के हंगामे और हड़तालें न की जाएं । अगर "हड़ताल" इस का नाम है कि लोगों का कारोबार ज़बर दस्ती बन्द करवाया जाए । नीज़ दुकानों और गाड़ियों पर पथराव वगैरा हो । तो बन्दों की ऐसी हक़ त-



फरमाने मुस्तफा ﷺ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

लफियों को कोई भी मुफ़्तए इस्लाम जाइज़ नहीं कह सकता। इस तरह की हड़ताल हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। इस तरह के ज़ब्बाती इक़दामात से दीन व दुनिया के नुक्सानात के सिवा कुछ हाथ नहीं आता। उमूमन हड़ताली जल्द ही थक जाते हैं और बिल आखिर इन्तिज़ामिया उन पर काबू पा लेती है।)

ज़रूरी वज़ाहत : क़त्ले मुस्लिम में शरअन तीन हुक्क हैं : 《1》 हक्कुल्लाह 《2》 हक्के मक्तूल 《3》 हक्के वु-रसा। मक्तूल ने अगर ज़िन्दगी में पेशगी मुआफ़ कर दिया हो तो सिर्फ़ उसी का हक्क मुआफ़ होगा, हक्कुल्लाह से ख़लासी के लिये सच्ची तौबा करे, हक्के वु-रसा का तअल्लुक सिर्फ़ वारिसों से है वोह चाहें तो मुआफ़ करें, चाहें तो क़िसास लें। अगर दुनिया में मुआफ़ी या क़िसास की तरकीब न बनी तो क़ियामत के रोज़ वु-रसा अपने हक्क का मुता-लबा कर सकते हैं।

सदका प्यारे की हया का कि न ले मुझ से हिसाब

बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

मैं ने इल्यास कादिरी को मुआफ़ किया : तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से दस्त बस्ता आजिज़ाना अर्ज़ करता हूं कि अगर मैं ने आप में से किसी की गीबत की हो, तोहमत धरी हो, डांट पिलाई हो, किसी तरह से दिल आज़ारी की हो मुझे मुआफ़ मुआफ़ और मुआफ़ फ़रमा दीजिये। दुनिया का बड़े से बड़ा हक्कुल अब्द जो तसव्वुर किया जा सकता है फ़र्ज़ कीजिये कि वोह मैं ने आप का तलफ़ कर दिया है वोह भी और छोटे से छोटा हक्क जो ज़ाएअ किया हो उसे भी मुआफ़ कर दीजिये और सवाबे अज़ीम के हक्कदार बनिये। हाथ बांध कर म-दनी इल्तिजा है कि कम अज़ कम एक बार दिल की गहराई के साथ कह दीजिये : “मैं ने अल्लाह عزّوجلّ के लिये मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी को मुआफ़ किया।”

क़र्ज़ख़ाहों से म-दनी इल्तिजा : जिस का मुझ पर क़र्ज़ आता हो या मैं ने कोई चीज़ आरियतन ली हो और वापस न लौटाई हो तो वोह दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान या गुलाम ज़ादों से रुजूअ करे, अगर वुसूल करना नहीं चाहता तो अल्लाह عزّوجلّ की रिज़ा के लिये मुआफ़ी की भीक से नवाज़ कर सवाबे आख़िरत का हक्कदार बने। जो लोग

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عُزَّوَجَلَّ के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उद्द पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज्जाक)

मेरे मक्कूज हैं, उन को मैं ने अपने तमाम ज़ाती कर्जे मुआफ़ किये । या इलाही عُزَّوَجَلَّ

तू बे हिसाब बख़्शा कि हैं बे हिसाब जुर्म

देता हूं वासिता तुझे शाहे हिजाज़ का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللہِ اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

दिल का दर्द दूर हो गया : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये । आप की तरगीब के लिये एक म-दनी बहार पेशे ख़िदमत है चुनान्चे पक्का क़लआ हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस तरह का बयान है : अचानक मेरे दिल में दर्द हुवा । जब दवाओं से फ़ाएदा न हुवा तो बाबुल मदीना कराची आ कर जिन्नाह अस्पताल में दिल का ओपरेशन करवाया । मगर तक्लीफ़ ख़त्म होने के बजाए मज़ीद बढ़ गई, दर्द की बे शुमार दवाएं इस्ति'माल कीं, लेकिन फ़ाएदा न हुवा । आख़िरे कार एक इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में आशिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र पर रवाना हो गया । म-दनी क़ाफ़िले में किसी किस्म की दवा इस्ति'माल की न ही परहेज़ी की । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عُزَّوَجَلَّ उस म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से अल्लाह तआला ने मेरे मरज़ को दूर कर दिया ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह ﷻ उस पर सो रहमते नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

दिल में गर दर्द हो, या कि सर दर्द हो
ओपरेशन टलें, और शिफाएं मिलें

पाओगे सिद्दहतें, काफिले में चलो
कर के हिम्मत चलें, काफिले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दिल का बातिनी मरज़ बाइसे हलाकत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने !

म-दनी काफिले की भी कैसी कैसी ब-र-कतें हैं ! म-दनी काफिले की ब-र-कत से दिल का ज़ाहिरी दर्द दूर हो गया, बातिनी अमराज़ वालों के **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** दिल का बातिनी मरज़ भी म-दनी काफिले की ब-र-कत से दूर होगा । **खुदा की क़सम !** ज़ाहिरी दर्द के मुक़ाबले में दिल का बातिनी मरज़ करोड़ों द-र-जे ख़तरनाक है । बल्कि दोनों में मुमा-सलत की कोई सूरत ही नहीं ।

दिल का ज़ाहिरी दर्द **सब्र** करने वाले के लिये सबबे दुख़ूले **जन्नत** है जब कि दिल का बातिनी मरज़ दुन्या व आख़िरत में बाइसे हलाकत है । बातिनी मरज़ को इस रिवायत से समझने की कोशिश फ़रमाइये चुनान्वे

दिल का सियाह नुक्ता : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अब्वल सफ़हा 920 ता 921 पर है : हदीसे मुबारक में आता है : जब कोई इन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता बन जाता है, जब दूसरी बार गुनाह करता है तो दूसरा सियाह नुक्ता बनता है यहां तक कि उस का दिल सियाह हो जाता है । नती-जतन भलाई की बात उस के दिल पर असर अन्दाज़ नहीं होती ।

(तफ़सीरुल मन्थूर ज ८ व ६६)

नसीहत का असर न होने की वजह : अब ज़ाहिर है कि जिस का दिल ही जंग आलूद और सियाह हो चुका हो उस पर भलाई की बात और नसीहत कहां असर करेगी ! ऐसे इन्सान का गुनाहों से बाज़ व बेज़ार रहना निहायत ही दुश्वार हो जाता है, उस का दिल नेकी की तरफ़ माइल ही नहीं होता, अगर वोह नेकी की तरफ़ आ भी गया तो बसा अवकात उस का

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हायत है। (अबू या'ला)

जी इसी सियाही के सबब नेकी में नहीं लगता और वोह सुन्नतों भरे म-दनी माहोल से भागने ही की तदबीरें सोचता है। उस का नफ़्स उसे लम्बी उम्मीदें दिलाता, ग़फ़लत उसे घेर लेती और वोह बद नसीब सुन्नतों भरे म-दनी माहोल से दूर जा पड़ता है।

عَزَّوَجَلَّ

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली मेरा हशर में होगा क्या या इलाही
बना दे मुझे नेक नेकों का सदका गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

عَزَّوَجَلَّ

امین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُونُوْا لِی اللہ تُونُوْا لِی اللہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

ज़बान का ग़लत इस्ति'माल क़ब्र में फंसा सकता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की खुफ़या तदबीर किस के बारे में क्या है कोई नहीं जानता वोह चाहे तो सगीरा गुनाह पर पकड़ फ़रमा ले और चाहे तो ढेरों गुनाह भी मुआफ़ फ़रमा दे और चाहे तो किसी एक अच्छे अमल के सबब अपने दामने रहमत में ले ले चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली बग़दादी

अल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَاهِي फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्हूम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा, يا مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ? वोह बोला : मैं सख़्त होलनाकियों से दो चार हुवा, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : "दुन्या में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की वजह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है।" अब अज़ाब के फ़िरिश्ते मेरी तरफ़ बढ़े। इतने में एक साहिब जो हुस्नो जमाल के पैकर और मुअत्तर मुअत्तर थे

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर रोने जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (कजुल उम्मा)

वोह मेरे और अज़ाब के दरमियान हाइल हो गए । और उन्होंने ने मुझे मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी तरह जवाबात दे दिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अज़ाब मुझ से दूर हुवा । मैं ने उन बुजुर्ग से अर्ज़ की : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए आप कौन हैं ? फ़रमाया : “तेरे कसरत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की ब-र-कत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी इमदाद पर मामूर किया गया है ।”

(الْقَوْلُ الْبَدِيع ص २६०)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आप का नामे नामी ऐ सल्ले अला

हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

صَلُّوْا عَلٰى الْخَبِيْب ا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र में आका क्यूं नहीं आ सकते ! سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! कसरते दुरूद शरीफ़ की ब-र-कत से मदद करने के लिये क़ब्र में जब फ़िरिशता आ सकता है तो तमाम फ़िरिशतों के भी आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा ﷺ करम क्यूं नहीं फ़रमा सकते ! किसी ने बिल्कुल बजा तो फ़रियाद की है :

मैं गोर अंधेरी में घबराऊंगा जब तन्हा

इमदाद मेरी करने आ जाना मेरे आका

रोशन मेरी तुर्बत को लिल्लाह शहा करना

जब नज़अ का वक़्त आए दीदार अता करना

صَلُّوْا عَلٰى الْخَبِيْب ا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पुल सिरात पर रोक दिया जाएगा : मदीने के सुल्तान, रहमते अल-मियान, सरवरे ज़ीशान ﷺ का फ़रमाने इब्रत निशान है : जो शख्स मुसल्मान पर कोई बात कहे उस से मक्सूद ऐब लगाना हो, अल्लाह तअला उस को पुल सिरात पर रोकेगा जब तक उस चीज़ से न निकले जो उस ने कही ।

(سُنَنِ ابوداؤد ج ४ ص ३०४ حديث ४८८३)

फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिगफ़र करते रहेंगे । (त-बरानी)

पुल सिरात से गुज़रने वालों के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

देखा आप ने ! किसी पर ऐब लगाना कितनी ख़तरनाक बात है ! तलवार की धार से तेज़ बाल से बारीक जहन्नम पर बने हुए पुल सिरात पर रोक दिया जाना, खुदा की क़सम ! बहुत बड़ी सज़ा है । पुल सिरात के मु-तअल्लिक़ एक हृदीसे पाक मुला-हज़ा हो चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है, मेरे सरताज, साहिबे मे'राज, महबूबे रब्बे बे नियाज़ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जहन्नम पर एक पुल है जो बाल से ज़ियादा बारीक और तलवार से तेज़ तर है, उस पर लोहे के आंकड़े (या'नी हुक) और कांटे हैं जो कि उसे पकड़ेंगे जिसे अल्लाह तअ़ाला चाहेगा । लोग उस पर गुज़रेंगे, बा'ज़ पलक झपकने की तरह, बा'ज़ बिजली की तरह, बा'ज़ हवा की तरह, बा'ज़ बेहतरीन और अच्छे घोड़ों और ऊंटों की तरह (गुज़रेंगे) और फिरिश्ते कहते होंगे : "رَبِّ سَلِّمْ، رَبِّ سَلِّمْ" ऐ परवर्द गार सलामती से गुज़ार, ऐ परवर्द गार सलामती से गुज़ार । बा'ज़ मुसल्मान नजात पाएंगे, बा'ज़ ज़ख़्मी होंगे, बा'ज़ औंधे होंगे, बा'ज़ मुंह के बल जहन्नम में गिर पड़ेंगे । (मुस्नो' इमाम अहमद ज ९ ص ४१० حديث २४८४७) तफ़्सीली मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला "पुल सिरात की दहशत" (48 सफ़हात) का ज़रूर मुता-लआ फ़रमाइये बल्कि अपने अज़ीजों के ईसाले सवाब के लिये तक्सीम फ़रमाइये ।

عَزَّوَجَلَّ
या इलाही जब चलूं तारीक राहे पुल सिरात
عَزَّوَجَلَّ
या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े

आफ़ताबे हाशिमि नूरुल हुदा का साथ हो
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मजुदा का साथ हो

عَزَّوَجَلَّ
या इलाही ! नामए आ'माल जब खुलने लगे

ऐब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़ता का साथ हो

لَا يَنْفَعُ

1. ग़मजुदा या'नी ग़म दूर करने वाला

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْتُوا لِي اللَّهَ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

किसी की तकलीफ़ देख कर खुश न हों : अल्लाह के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब, तबीबों के तबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फरमाने इब्रत निशान है : अपने भाई की शुमातत न कर (या'नी उस की मुसीबत पर इज़्हारे मुसरत न कर) कि अल्लाह तआला उस पर रहम करेगा और तुझे उस में मुब्तला कर देगा ।

(سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٤ ص ٢٢٧ حَدِيث ٢٠١٤)

किसी की मुसीबत पर खुश होने की मिसालें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शुमातत या'नी मुसल्मान की तकलीफ़ पर खुशी के इज़्हार से परहेज़ कीजिये । अगर किसी मुसल्मान की मुसीबत पर दिल में खुद बखुद खुशी पैदा हुई तो इस का कुसूर नहीं ताहम इस खुशी को दिल से निकालने की भरपूर सअय करे अगर खुशी का इज़्हार करेगा तो शुमातत का मुर-तकिब होगा । आज कल शुमातत के नज़ारे आम हैं । एक तालिबे इल्म पढ़ाई में कमज़ोर हो जाए, इम्तिहान में नाकाम हो जाए तो बा'ज अवकात दूसरा तालिबे इल्म खुश हो जाता है । इसी तरह किसी बड़े ना'त ख़्वान की आवाज़ बैठ जाए तो कभी छोटा ना'त ख़्वान राज़ी होता है, यूं ही कुरा (या'नी क़ारी साहिबान) मुबल्लिगीन, मुक़र्रीन, कारीगरों, दुकानदारों, कारख़ानेदारों वगैरा वगैरा के दिल में आज कल अक्सर एक दूसरे के ख़िलाफ़ “शुमातत” का मज़मूम जज़्बा दाख़िल हो जाता है । अगर आपस में नाराज़ी हो जाए फिर तो शुमातत की आफ़त ब आसानी फ़रीक़ेन के दिलों में दाख़िल हो जाती है । इस के बा'द ज़ेहन येह बन जाता है म-सलन जिस से नाराज़ी होती है अगर वोह या उस का बच्चा बीमार हो जाए, उस के यहां डाका पड़ जाए, माल चोरी हो जाए, कारोबार ठप हो जाए, घर ढे (या'नी गिर) पड़े, हादिसा हो जाए, मुक़द्दमा क़ाइम हो जाए, पोलीस गरिफ़्तार कर ले, गाड़ी



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफा की। (अब्दुर्रज्जाक)

का नुक़सान या चालान हो जाए, अल गरज़ किसी किस्म की भी मुसीबत आए इस पर बा'ज लोग खुशी का इज़हार कर के शुमातत की आफ़त में जा पड़ते हैं बल्कि बा'ज जो कि ज़रूरत से ज़ियादा बातूनी और बे अमल होने के बा वुजूद अपने आप को “पहुंचा हुवा” समझ बैठते हैं वोह तो यहां तक बोल पड़ते हैं कि देखा ! हम को सताया तो उस के साथ “ऐसा” हो गया ! गोया वोह छुपी बातों और सर बस्ता (या'नी खुफ़या) राजों के जानने वाले हैं और आं बदौलत (या'नी इन) को अपने मुख़ालिफ़ पर आने वाली मुसीबत के अस्बाब मा'लूम हो जाते हैं, ऐसे लोगों को डर जाना चाहिये कि हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عليه رَحْمَةُ اللهِ تَوَالِي एहयाउल उलूम जिल्द अव्वल सफ़हा 171 पर फ़रमाते हैं : कहा गया है कि कुछ गुनाह ऐसे हैं जिन की सज़ा “बुरा ख़ातिमा” है हम इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं। येह गुनाह “विलायत और करामत का झूटा दा'वा करना है।”

म-दनी ! गुनाह की आदतें नहीं जातीं आप ही कुछ करें

मैं ने कोशिशें की बहुत मगर मेरी हालत आह ! बुरी रही

तीन³ काम नहीं कर सकते तो यूं कर लो : एक दाना का कौल है कि अगर तीन काम करने से आजिज़ हो तो फिर तीन काम यूं कर लो (1) अगर भलाई नहीं कर सकते तो बुराई से भी रुक जाओ (2) अगर लोगों को नफ़अ नहीं दे सकते तो तकलीफ़ भी मत दो (3) अगर नफ़ली रोज़ा नहीं रख सकते तो (गीबत कर के) लोगों का गोश्त भी मत खाओ।

(تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٨٩)

मुसल्मान की इज़ज़त बुजुर्गों की नज़र में : एक बुजुर्ग عليه رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى फ़रमाते हैं : “हम ने अस्लाफ़ (या'नी गुज़श्ता बुजुर्गों) को देखा कि वोह हज़रात लोगों की बे इज़ज़ती करने से बचने को नमाज़ रोज़े से बढ़ कर इबादत तसव्वुर किया करते थे।”

(دَمُ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ٩٤ رَقْم ٥٥)



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर येजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे । (कन्जुल उम्माल)

दुन्या जहान की दौलत एक तरफ़ और ग़ीबत एक तरफ़ : हज़रते सय्यिदुना वहब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : दुन्या की आफ़रीनिश (या'नी पैदाइश) से ले कर फ़ना होने तक की तमाम दुन्यवी ने'मतें भी बिलफ़र्ज मेरे पास हों और मैं उन्हें राहे खुदा ﷻ में लुटा दूं तब भी इतने बड़े अज़ीम सवाब के काम के मुक़ाबले में बेहतर येह समझता हूं कि ग़ीबत छोड़ दूं । इसी तरह दुन्या और इस की तमाम ने'मतों को अल्लाह ﷻ की राह में लुटाने से बेहतर समझता हूं कि अल्लाह ﷻ की हराम कर्दा अश्या की जानिब मेरी नज़र न उठे । इस के बा'द पारह 26 सू-रतुल हुजुरात की आयत नम्बर 12 का येह हिस्सा तिलावत किया :

لَا يَغْتَبُ بَعْضُكُم بَعْضًا तर-ज-मए कन्जुल ईमान : एक दूसरे की ग़ीबत न करो ।
(پ ۲۶ الحُجرات ۱۲)

और पारह 18 सू-रतुन्नूर की आयत नम्बर 30 का येह हिस्सा तिलावत किया :

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें ।
(پاره ۸ النُّور ۳۰)

(تنبيه الغافلين ص ۸۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ الْفَيْنِ ग़ीबत वग़ैरा गुनाहों से किस क़दर नफ़रत करते थे, वोह हज़रात जानते थे कि अल्लाह ﷻ की नाराज़ी से बड़ कर कोई नुक़सान मु-तसव्वर ही नहीं, अगर किसी एक गुनाह पर ही आख़िरत में पकड़ हो गई तो खुदा की क़सम ! सख़्त रुस्वाई का सामना होगा और अगर ज़िन्दगी में एक ही बार ग़ीबत की और मु़ताब (या'नी जिस की ग़ीबत की गई उस) को मा'लूम हो गया और उस से मुआफ़ करवाना रह गया और उस पर बरोज़े क़ियामत गरिफ़्त कर ली गई तो न जाने क्या बनेगा ! आह ! हुकूक़ुल इबाद का मुआ-मला बहुत सख़्त है ।



फरमाने मुस्तफा ﷺ जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब् और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी। (मजमउज्जवाइद)

हरनया के दर्द का ख़ातिमा : ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये ज़िक्कुल्लाह की कसरत का ज़ब्बा बढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस से दीनो दुन्या की ढेरों भलाइयां हाथ आएंगी और रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो बीमारियों से भी शिफ़ाएं मिलेंगी। इस ज़िम्न में एक म-दनी बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये। चुनान्वे बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है, मेरा हरनया का ओपरेशन हुवा था लेकिन 12 माह गुज़र जाने के बा वुजूद तकलीफ़ ब दस्तूर बाकी थी, मुख़्तलिफ़ किस्म की दवाएं इस्ति'माल की, डॉक्टरों को भी दिखाया मगर फ़ाएदा न हुवा। एक दिन एक इस्लामी भाई ने म-दनी काफ़िले में सफ़र की दावत दी तो मैं ने उन से कहा, भाई साहिब ! मेरे साथ येह बीमारी लगी हुई है और आप हज़रात मस्जिद में फ़र्श पर सोते हैं इस से मेरी तकलीफ़ बढ़ जाएगी। उस इस्लामी भाई ने मुझ पर काफ़ी इन्फ़िरादी कोशिश की यहां तक कि मेरा ज़ेहन बन गया और मैं म-दनी काफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार हो कर आलमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना हाज़िर हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने तीन दिन के म-दनी काफ़िले में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआदत हासिल की मेरा हरनया का वोह दर्द जो किसी दवा को जवाब नहीं दे रहा था اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी काफ़िले के दौरान ही ख़त्म हो गया।

हरनया का हो दर्द इस से हो रंग ज़र्द
रहमतें लूटने ब-र-कतें लूटने

मत डरें चल पड़ें, काफ़िले में चलो
आइये ना चलें काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّد

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख़ा हो गया । (इन्ने सुन्नी)



बीमारी की फ़ज़ीलत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हरनया का दर्द जो किसी दवा से न जाता था म-दनी काफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से चला गया । देखिये शिफ़ा मिन जानिबिल्लाह عَزَّوَجَلَّ या'नी शिफ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से मिलती है, बिलफ़र्ज किसी का म-दनी काफ़िले में दर्द न भी जाए और बीमारी दूर न भी हो तब भी दिल बरदाश्ता नहीं होना चाहिये, बीमारी के फ़ज़ाइल पर नज़र रखते हुए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये । चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द अव्वल सफ़हा 802 पर है : रसूलुल्लाह ﷺ ने बीमारियों का ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया कि मोमिन जब बीमार हो फिर अच्छा हो जाए, उस की बीमारी गुनाहों से कफ़ारा हो जाती है और आइन्दा के लिये नसीहत और मुनाफ़िक़ जब बीमार हुवा फिर अच्छा हुवा, उस की मिसाल ऊंट की है कि मालिक ने उसे बांधा फिर खोल दिया तो न उसे येह मा'लूम कि क्यूं बांधा, न येह कि क्यूं खोला ! एक शख़्स ने अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह ! (ﷺ) बीमारी क्या चीज़ है, मैं तो कभी बीमार न हुवा ? फ़रमाया : हमारे पास से उठ जा कि तू हम में से नहीं ।

(सुन्न अबुदावूद ज ३ व २४० حديث ३०८९)

मैं अपने ख़ैरुल वरा के सदक़े, मैं उन की शाने अता के सदक़े
भरा है ऐबों से मेरा दामन, हुज़ूर फिर भी निभा रहे हैं

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْنِوَالِي اللَّهَ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर दस मारतबा सुब्ह और दस मारतबा शाम दुख्खे पाक पड़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज्जवाइद)

एक तिन्के ने जन्नत से रोक दिया : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला, "जुल्म का अन्जाम" सफ़हा 11 ता 13 पर हज़रते अल्लामा अब्दुल वहहाब शा'रानी قدس سرہ النورانی की किताब "तम्बीहुल मुग़्तररीन" के हवाले से नक़ल किया गया है : मशहूर ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनव्वेह رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक इस्राईली शख्स ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की, सत्तर साल तक लगातार इस तरह बन्दगी करता रहा कि दिन को रोज़ा रखता और रात को जाग कर इबादत करता, न कोई उम्दा गिज़ा खाता न किसी साए के नीचे आराम करता। उस के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : **يا'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** ने आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **"अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरा हिसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर एक लकड़ी जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाज़त के बिगैर दांतों में खिलाल कर लिया था (और यह मुआ-मला हुक्कुल इबाद का था) और वोह मुआफ़ करवाना रह गया था उस की वजह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूँ।"** (تَنْبِيْهُ الْمَغْتَرِبِينَ ص ५)

गेहूं का दाना तोड़ने का उख़वी नुक्सान : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा गौर तो कीजिये ! एक तिन्का जन्नत में दाखिले से मानेअ (या'नी रुकावट) हो गया ! और अब मा'मूली लकड़ी के खिलाल की तो बात ही कहां है। बा'ज लोग दूसरों के लाखों बल्कि करोड़ों रुपै हड़प कर जाते हैं और डकार तक नहीं लेते। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** हिदायत इनायत फ़रमाए। आमीन। एक और इब्रत नाक हिकायत मुला-हज़ा फ़रमाइये जिस में सिर्फ़ एक गेहूं के दाने के बिला इजाज़त खाने के नहीं सिर्फ़ तोड़ डालने के उख़वी नुक्सान का तज़्किरा है। चुनान्चे मन्कूल है कि एक शख्स को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : **يا'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** ने आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ? कहा : **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया, लेकिन हिसाब किताब हुवा यहां तक कि उस दिन के बारे में भी मुझ से पूछगछ हुई जिस रोज़ मैं रोज़े से था और अपने एक दोस्त की दुकान पर बैठा हुवा था जब इफ़्तार का वक़्त हुवा तो मैं ने गेहूं की**



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बदबख़्त हो गया । (इन्ने सुनी)

एक बोरी में से गेहूं का एक दाना उठा लिया और उस को तोड़ कर खाना ही चाहता था कि एक दम मुझे एहसास हुवा कि येह दाना मेरा नहीं, चुनान्वे मैं ने उसे जहां से उठाया था फ़ौरन उसी जगह डाल दिया । और उस का भी हिसाब लिया गया यहां तक कि उस पराए गेहूं के तोड़े जाने के नुक़सान के ब क़दर मेरी नेकियां मुझ से ली गई ।

(مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيحِ ج ۸ ص ۸۱۱ تحت الحديث ۵۰۸۳)

हम डूबने ही को थे कि आका की मदद ने गिर्दाब से खींचा हमें तूफ़ान से निकाला
लाखों तेरे सदक़े में कहेंगे दमे महशर ज़िन्दा^१ से निकाला हमें ज़िन्दा से निकाला

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

تُؤْنُوْا اِلٰی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो अपने लिये पसन्द करे वोही दूसरे के लिये कहे : हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी
फ़रमाते हैं : अपने भाई की ग़ैर मौजूदगी में उस का ज़िक्र उसी तरह करो जिस तरह
अपनी ग़ैर मौजूदगी में तुम अपना ज़िक्र होना पसन्द करते हो ।

(تَنْبِيْهُ الْمَغْتَرِبِیْنَ ص ۱۹۲)

फुलां ने मेरी गीबत की येह जान कर गुस्से न हों : हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल
वहहाब शा'रानी قدس سره الخواری फ़रमाते हैं : अपनी गीबत करने वाले पर मुश्तइल (या'नी
गुस्से) होना मुनासिब नहीं उस से तो तुम्हें महब्बत करनी चाहिये कि उस के गीबत करने
की वजह से तुम्हें सवाब हासिल हो रहा है ! अगर्चे उस ने इस बात का क़स्द (या'नी इरादा)
नहीं किया । मज़ीद फ़रमाते हैं : जो शख़्स उस आदमी पर गुस्सा करे जिस की नेकियां अपने

1 ज़िन्दा या'नी कैद ख़ाना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमते भेजता है। (मुस्लिम)

हाथ आ रही हैं वोह बे वुकूफ़ है अलबत्ता किसी शर-ई वजह से ग़ज़बनाक होना सहीह है।

(تَنْبِيْهُ الْمَغْتَرِبِین ص ۱۹۳)

ग़ीबत करने वाले को समझाने का एक नया अन्दाज़ : شَيْخُ اللّٰهِ عُزَّوَجَلَّ ! हज़रते सय्यिदुना

शैख़ अब्दुल वहहाब शा'रानी قدس سره العورانی ने कितने प्यारे अन्दाज़ में समझाया है आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ

के इशारे गिरामी से हमें ये भी दर्स मिल रहा है कि अगर ग़ीबत करने वाले के साथ जवाबी कारवाई की गई तो नफ़्त की दीवार मज़ीद मज़बूत हो जाएगी, फ़साद बढ़ेगा और अगर उस को

महबूबत से समझाने की कोशिश की गई तो إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عُزَّوَجَلَّ वोह ग़ीबत ही से बाज़ आ जाएगा। दा'वते

इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला, "ना चाकियों का

इलाज" सफ़हा 22 ता 23 पर है : येह उसूल याद रखिये कि नजासत को नजासत से नहीं, पानी

से पाक किया जाता है लिहाज़ा अगर कोई आप के साथ नादानी भरा सुलूक करे तब भी आप उस

के साथ महबूबत भरा सुलूक करने की कोशिश फ़रमाइये إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عُزَّوَجَلَّ इस के मुस्बत नताइज देख

कर आप का कलेजा ज़रूर ठन्डा होगा। **वल्लाहिल मुजीब** ! عُزَّوَجَلَّ वोह लोग बड़े खुश नसीब हैं

जो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए जुल्म करने वाले को मुआफ़ कर देते और बुराई को भलाई

से टालते हैं। बुराई को भलाई से टालने की तरगीब के ज़िम्न में पारह 24 حَمَّ السَّجْدَةِ की

34 वीं आयते करीमा में इशारे है :

ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِي

بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهُ وَلِيٌّ

حَمِيمٌ (۳۴) (ب ۲۴ حَمَّ السَّجْدَةِ ۳۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ सुनने वाले ! बुराई को

भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी

थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त।

चश्मे करम हो ऐसी कि मिट जाए हर ख़ता

कोई गुनाह मुझ से न शैतां करा सके

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह عُزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

अल्लाहु जब्बार عُزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर का शिकार : हज़रते सय्यिदुना बक्र मु-ज़िनय्य عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَلِیّی फ़रमाते हैं : जब तुम किसी शख्स को देखो कि वोह लोगों के ऐबों का वकील बना हुवा है (या'नी सब की पोलें खोलता और ग़ीबतें करता फिरता है) तो जान लो कि वोह अल्लाह عُزَّوَجَلَّ का दुश्मन है और अल्लाहु जब्बार عُزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर का शिकार है।

(تَنْبِیْہُ الْمَغْتَرِبِینَ ص ۱۹۷)

सामने कुछ पीछे कुछ : हज़रते सय्यिदुना बिशरे हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : उन लोगों पर तअज्जुब है जो पीछे से तो इस्लामी भाइयों की ग़ीबत कर के उन की इज़्ज़त की धज्जियां उड़ाते हैं मगर जब सामने आते हैं तो ख़ूब महब्वत का इज़हार करते और उन की ता'रीफ़ शुरू कर देते हैं।

(تَنْبِیْہُ الْمَغْتَرِبِینَ ص ۱۹۷)

निफ़ाक़ से नफ़रत : जब हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक् तारिकुहुन्या عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِی़ तारिकुहुन्या (या'नी गोशा नशीन) हो गए तो हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने हाज़िरे ख़िदमत हो कर कहा : तारिकुहुन्या होने से मख़्लूक आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی के फ़ुयूज़ो ब-रकात से महरूम हो गई है ! आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने इस के जवाब में मुन्द-र-जए ज़ैल दो शे'र पढ़े

نَهَبَ الْوَفَاءُ ذَهَابَ أَمْسِ الذَّاهِبِ وَالنَّاسُ بَيْنَ مَخَايِلٍ وَمَارِبِ

يُفْشُونَ بَيْنَهُمُ الْمَوَدَّةَ وَالْوَفَا وَقُلُوبُهُمْ مَحْشُوَّةٌ بِعَقَارِبِ

या'नी वफ़ किसी जाने वाले कल की तरह चली गई और लोग अपने खयालात में ग़रक़ हो कर रह गए। लोग यूं तो एक दूसरे के साथ इज़्हारे महब्वत व वफ़ा करते हैं लेकिन उन के दिल एक दूसरे के बुग़ज़ो कीना के बिच्छूओं से लबरेज हैं !

(تَذْکَرَةُ الْاَوْلِیَاءِ ص ۲۲)



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

आज कल निफ़ाक़ का अन्दाज़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सय्यिदुना

इमाम जा'फ़रे सादिकِ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِقِ लोगों की मुना-फ़क़त वाली रविश से तंग आ कर ख़ल्बत (तन्हाई) में तशरीफ़ फ़रमा हो गए। उस पाकीज़ा दौर में भी येह सूरते हाल होने लगी थी तो अब तो जो हाल बे हाल है उस का किस से शिक्वा कीजिये। आह ! आज कल तो अक्सर लोगों का हाल ही अजीब हो गया है जब बाहम मिलते हैं तो एक दूसरे के साथ निहायत ता'ज़ीम के साथ पेश आते और ख़ूब हाल अहवाल पूछते हैं, हर तरह की खातिर दारी और ख़ूब मेहमान दारी करते हैं कभी ठन्डी बोतल पिला कर निहाल करते हैं तो कभी चाय पिला कर, पान गुटके से मुंह लाल करते हैं। ब जाहिर हंस हंस कर खुश कलामी व कीलो काल करते हैं मगर अपने दिल में उस के बारे में बुज़ व मलाल रखते हैं, इसी लिये तो मिलने वाले जूँ ही जुदा होते हैं उन की ग़ीबतें शुरू कर देते हैं, उन के उयूब बयान कर के हंसते हैं कि फुलां शख्स ऐसा है फुलां वैसा है फुलां शख्स को क्या हो गया है हमेशा बन ठन कर फिरता है और फुलां शख्स की चाल कैसी अजीब है कि देख कर हंसी आती है और फुलां शख्स कितना बे हया है कि उस की बातों को बयान करने ही से हम को शर्म आती है और फुलां शख्स मगरूर मा'लूम होता है कि लोगों से बातें बहुत कम करता है और फुलां शख्स बे वुकूफ़ है लोगों से बात करने की तमीज़ नहीं रखता और फुलां शख्स अजीब मस्खरा है कि गोया हीजड़ा हो ! फुलां बहुत शरारती है, फुलां मेरे पैसे खा गया है, अरे वोह तो पक्का 420 है।

गीबतो चुगली की आफ़त से बचें
जाहिरो बातिन हमारा एक हो

يَهِي اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
येह करम या मुस्तफ़ा फ़रमाइये
يَهِي اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
येह करम या मुस्तफ़ा फ़रमाइये

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُؤْبُوْا اِلَی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

गुनाह पर शरमिन्दा करने का अन्जाम : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 सफ़हा 173 पर है : रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : जिस ने अपने भाई को ऐसे गुनाह पर आर दिलाया जिस से वोह तौबा कर चुका है, तो मरने से पहले वोह खुद उस गुनाह में मुब्तला हो जाएगा। (सुन्न तिरमिज़ी ज ६ व २२६ हदीथ २०१३)

ताइब को शरमिन्दा किया तो खुद गुनाह में फंस गया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जब कोई मुसलमान किसी गुनाह से तौबा कर ले तो अब उस गुनाह के बारे में उस को शरमिन्दा नहीं करना चाहिये इस ज़िम्न में हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल वह्हाब शा'रानी नक्ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुआज़ राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : अक्ल मन्द को चाहिये कि किसी को उस के उस गुनाह की वजह से आर (या'नी शर्म) न दिलाए (जिस से वोह तौबा कर चुका हो) क्यूं कि मैं ने एक बार किसी को (तौबा के बा वुजूद) उस के गुनाह के सबब आर दिलाई (या'नी शरमिन्दा किया) तो बीस साल के बा'द मैं खुद उस में मुब्तला हो गया। (तَنْبِيهُ الْمَغْتَرِبِينَ ص १९७)

दरख़्त लगा रहा हूँ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बे जा बक बक की आदत आदमी को न बोलने का बुलवाती और नाकों चने चबवाती है, ख़ूब ग़ीबतें करवाती और चुग़लियां खिलवाती है, आदमी चुप रहे इसी में आफ़ियत है और बोलना है तो अच्छा बोले, ज़िक्रुल्लाह करे देखिये ! हमारे मीठे मीठे आक़ा ﷺ ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को ज़बान का कितना प्यारा इस्ति'माल बताया आप भी सुनिये और झूमिये चुनान्वे "सु-नने इब्ने माजह" की रिवायत में है : (एक बार) मदीने के ताजदार ﷺ कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को मुला-हज़ा फ़रमाया कि एक पौदा लगा रहे हैं। इस्तिफ़सार फ़रमाया : क्या कर रहे हो ? अर्ज़ की : दरख़्त लगा रहा हूँ। फ़रमाया : मैं बेहतरीन दरख़्त लगाने का तरीक़ा बता दूँ ! وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ! पढ़ने से

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अज्र लिखता है और किरात उहद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज्जाक)

हर कलिमे के इवज़ (या'नी बदले) जन्नत में एक दरख़्त लग जाता है।

(سَنَنِ ابْنِ مَاجَہ ج ٤ ص ٢٥٢ حدیث ٣٨٠٧)

जन्नत में चार⁴ दरख़्त लगेंगे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हदीसे पाक में चार कलिमे इर्शाद फ़रमाए गए हैं : ﴿١﴾ سُبْحَنَ اللّٰہِ ﴿٢﴾ الْحَمْدُ لِلّٰہِ ﴿٣﴾ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ﴿٤﴾ اَللّٰہُ اَكْبَرُ येह चारों कलिमात पढ़ें तो जन्नत में चार दरख़्त लगाए जाएं और कम पढ़ें तो कम। म-सलन अगर कहा तो एक दरख़्त। इन कलिमात को पढ़ने के लिये ज़बान चलाते जाइये और जन्नत में ख़ूब ख़ूब दरख़्त लगवाते जाइये।

عَمْرَ رَاضِیْعَ مَلْکَنٍ دَر گَفْتَنُو ذِکْرِ اَوْگَن ذِکْرِ اَوْگَن ذِکْرِ اَوْ

(या'नी फ़ालतू बातों में उम्रे अज़ीज़ जाएअ मत कर, ज़िक्रुल्लाह कर, ज़िक्रुल्लाह कर, ज़िक्रुल्लाह)

80 बरस के गुनाह मुआफ़ : इसी तरह ज़बान का एक अच्छा इस्ति'माल येह भी है कि दुरूदो सलाम पढ़ते रहिये और गुनाह बख़्शावाते रहिये जैसा कि दुर्रे मुख़्तार में है : जो सरकारे नामदार **उस के** عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** पर एक बार दुरूद भेजे और वोह क़बूल हो जाए तो **अस्सी (80) बरस के गुनाह मिटा देगा।**

(لُرْمُخْتَار ج ٢ ص ٢٨٤)

बिस्मिल्लाह कीजिये कहना मम्मूअ है : बा'ज़ लोग ज़बान का ग़लत इस्ति'माल करते हुए इस तरह कह देते हैं : “बिस्मिल्लाह कीजिये !” “आओ जी बिस्मिल्लाह !” “मैं ने बिस्मिल्लाह कर डाली”, ताजिर हज़रात जो दिन में पहला सौदा बेचते हैं उस को उमूमन “बोनी” कहा जाता है मगर बा'ज़ लोग इस को भी “बिस्मिल्लाह” कहते हैं, म-सलन “मेरी तो आज अभी तक बिस्मिल्लाह ही नहीं हुई !” जिन जुम्लों की मिसालें पेश की गईं येह सब ग़लत अन्दाज़ हैं। इसी तरह खाना खाते वक़्त अगर कोई आ जाता है तो अक्सर खाने वाला उस से



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

कहता है : आइये ! आप भी खा लीजिये, आम तौर पर जवाब मिलता है : “बिस्मिल्लाह” या इस तरह कहते हैं : “बिस्मिल्लाह कीजिये !” मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत हिस्सा 16 सफ़्हा 22 पर है कि इस मौक़अ पर इस तरह बिस्मिल्लाह कहने को उ-लमा ने बहुत सख़्त मन्मूअ करार दिया है। (बहारे शरीअत) हां येह कह सकते हैं : बिस्मिल्लाह पढ़ कर खा लीजिये। बल्कि ऐसे मौक़अ पर दुआइया अल्फ़ाज़ कहना बेहतर है, म-सलन **بَارِكْ اللّٰهُ لَنَا وَنَکْمُ** या’नी **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** हमें और तुम्हें ब-र-कत दे। या अपनी मादरी ज़बान में कह दीजिये : **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** ब-र-कत दे।

बिस्मिल्लाह कहना कब कुफ़्र है : हराम व ना जाइज़ काम से कब्ल बिस्मिल्लाह शरीफ़ हरगिज़, हरगिज़, हरगिज़ न पढ़ी जाए, हरामे कर्त्त काम से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना कुफ़्र है चुनान्वे “फ़तावा आलमगीरी” में है : शराब पीते वक़्त, ज़िना करते वक़्त या जूआ खेलते वक़्त बिस्मिल्लाह कहना कुफ़्र है। (फ़तावा आलमगीरी, जि. 2, स. 273)

कब ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करना गुनाह है ! : याद रखिये ! ज़बान से ज़िक्रो दुरुद बाइसे अज़्रो सवाब भी है और बा’ज सूरतों में मन्मूअ भी म-सलन “मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ “बहारे शरीअत” जिल्द अव्वल सफ़्हा 335 पर है : गाहक को सौदा दिखाते वक़्त ताजिर का इस गरज से दुरुद शरीफ़ पढ़ना या **اللّٰهُ سُبْحٰنَکَ** कहना कि उस चीज़ की उम्दगी ख़रीदार पर ज़ाहिर करे ना जाइज़ है। यूँही किसी बड़े को देख कर इस निय्यत से दुरुद शरीफ़ पढ़ना कि लोगों को उस के आने की ख़बर हो जाए ताकि उस की ता’जीम को उठें और जगह छोड़ दें ना जाइज़ है।

(رَدُّ الْمُحْتَرَج ٢ ج ص ٢٨١)

इस्तिक्बाल के लिये अल्लाह अल्लाह की सदाएं बुलन्द करना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़क़ूरा जुज़्ज़िये के पेशे नज़र मैं (सगे मदीना عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अक्सर इस्लामी भाइयों को समझाता रहता हूं कि मेरी आमद पर “अल्लाह अल्लाह” की सदाएं बुलन्द न किया करें क्यूं कि ब ज़ाहिर यहां ज़िक्रुल्लाह नहीं इस्तिक्बाल मक़सूद होता है।



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (अबू या'ला)

जो है ग़ाफ़िल तेरे ज़िक्र से जुल जलाल उस की ग़फ़लत है उस पर वबालो नकाल¹
कअरे ग़फ़लत² से हम को खुदाया निकाल हम हों ज़ाकिर³ तेरे और मज़कूर⁴ तू
अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُؤْتُوْا لَی اللہ اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

अपनी नेकियां तुम्हें क्यों दूँ ? : एक शख्स ने हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللہِ الْقَوِی से कहा : मुझे ख़बर मिली है आप मेरी ग़ीबत करते हैं ! फ़रमाया : मेरे नज़्दीक तुम्हारी अहम्मिय्यत इतनी ज़ियादा भी नहीं कि मैं अपनी नेकियां तुम्हारे हवाले कर दूँ ।

(احیاء العلوم ج ۳ ص ۱۸۳)

गीबत गोया नेकियां फेंकने की मशीन है : हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : ग़ीबत करने वाले की मिसाल उस शख्स जैसी है : जो मिन्जनीक़ (या'नी पथ्थर फेंकने की हाथ से चलाई जाने वाली पुराने दौर की मशीन) के ज़रीए अपनी नेकियों को मशिरक़ व मग़िब हर तरफ़ फेंकता है ।

(تنبيه المغترين ص ۱۹۳)

कभी ग़ीबत नहीं की : हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللہِ الْبَارِی का इर्शाद है कि हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ासिम عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللہِ الْحَاकِم फ़रमाते हैं : मुझे जब से अक्ल (या'नी समझ) आई है कि ग़ीबत हराम है मैं ने कभी भी ग़ीबत नहीं की ।

(تهذيب الاسماء واللغات للنووي ص ۸۳۶)

لَدِينِهِ

1. दुख, अज़ाब । 2. ग़फ़लत का गढ़ा । 3. ज़िक्र करने वाला । 4. ज़िक्र किया गया

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमआ दुरुद शरीफ पढेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कन्ज़ुल उम्माल)

जो ज़ियादा बोलता है वोह ज़ियादा ग-लतियां करता है : दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 344 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "मिन्हाजुल आबिदीन" के सफ़हा 108 पर हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : ज़बान की हिफ़ाज़त से नेक आ'माल महफूज़ होते हैं क्यूं कि जो शख्स ज़बान का ध्यान नहीं रखता, हर वक़्त बोलता ही रहता है, वोह उमूमन लोगों की ग़ीबत में मुब्तला हो जाता है । (مِنْهَاجُ الْعَابِدِينَ (عَرَبِي) ص ٦٥) मशहूर मुहावरा है : مَنْ كَثُرَ لَعَطُهُ كَثُرَ سَقَطُهُ : या'नी जो जियादा बोलता है जियादा ग-लतियां करता है ।

दीवाने हो जाओ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर लब खोलना और मुंह से बोलना ही है तो तिलावत कीजिये, ना'त शरीफ पढ़िये, खूब खूब जिक्रे इलाही कीजिये । दो फ़रामैने मुस्तफ़ा

﴿ 1 ﴾ **عَزَّوَجَلَّ** किया करो कि लोग दीवाना कहने लगे । (المُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج २ ص १७३ حديث १८८२) ।

﴿ 2 ﴾ **اَللّٰهُ** का इतनी कसरत से जिक्र करो कि मुनाफ़िकीन तुम्हें रियाकार कहने लगे । (المُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج १२ ص १३१ حديث १२७८६) ।

जन्नत के महल्लात हासिल करने का नुस्खा : ज़बान के उम्दा इस्ति'माल के लिये एक ईमान अफ़्फ़ोज़ रिवायत सुनिये और झूमिये चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने **قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ** (पूरी सूरत) को 10 बार पढ़ा अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में महल बनाता है जिस ने 20 बार पढ़ा उस के लिये दो महल बनाता है जिस ने 30 बार पढ़ा उस के लिये तीन महल बनाता है। हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** उस वक़्त हमारे बहुत से महल्लात होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह तआला का फज़ल इस से भी ज़ियादा वसीअ है।**

(سُنن دارمی ج ۲ ص ۵۵۲ حدیث ۳۴۲۹)

फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्ताग़फ़र करते रहेंगे। (त-बरानी)

عَزَّوَجَلَّ
अल्लाह की रहमत से तो जन्नत ही मिलेगी

ऐ काश ! महल्ले में जगह उन के मिली हो

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْنِوَالِي اللَّهِ اسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ग़ीबत की बदबू : ग़ीबत करने से एक मख़सूस बदबू निकलती है। पहले जब कोई ग़ीबत करता था तो बदबू के सबब सब को मा'लूम हो जाता था कि ग़ीबत हो रही है ! मगर अब ग़ीबत की इस क़दर कसरत हो गई है कि हर तरफ़ इस की बदबू के भबके उठ रहे हैं मगर हमें बदबू नहीं आती क्यूं कि हमारी नाक इस की बदबू से अट गई है। इस को यूं समझिये कि जब गटर साफ़ की जा रही होती है तो आम शख्स उस की बदबू के बाइस वहां खड़ा नहीं रह सकता मगर भंगी को कुछ भी पता नहीं चलता इस लिये कि उस की नाक उस गन्दगी की बदबू से अट चुकी होती है। चुनान्वे फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द अव्वल सफ़हा 720 पर है : झूट और ग़ीबत मा'नवी नजासत (या'नी बातिनी गन्दगियां) हैं व लिहाज़ा झूटे के मुंह से ऐसी बदबू निकलती है कि हिफ़ाज़त के फिरिश्ते उस वक़्त उस के पास से दूर हट जाते हैं जैसा कि हदीस में वारिद हुवा है और इसी तरह एक बदबू की निस्बत रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने ख़बर दी कि येह उन के मुंह की सड़ांध (या'नी बदबू) है जो मुसलमानों की ग़ीबत करते हैं और हमें जो झूट या ग़ीबत की बदबू महसूस नहीं होती उस की वजह येह है कि हम उस से मालूफ़ (या'नी इस के आदी) हो गए हमारी नाकें उस से भरी हुई हैं जैसे चमड़ा पकाने वालों के महल्ले में जो रहता है उसे उस की बदबू से ईज़ा नहीं होती दूसरा आए तो उस से नाक न रखी जाए। मुसल्मान इस नफ़ीस फ़ाएदे (या'नी उम्दा नतीजे) को याद रखें और अपने

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

रब (عَزَّوَجَلَّ) से डरें, झूट और गीबत तर्क करें। क्या مَعَاذُ اللَّهِ मुंह से पाखाना निकलना किसी को पसन्द होगा ? बातिन की नाक खुले तो मा'लूम हो कि झूट और गीबत में पाखाने से बदतर सड़ांद (या'नी बदबू) है रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : “जब बन्दा झूट बोलता है, उस की बदबू से फ़िरिश्ता एक मील दूर हो जाता है।” (سنن ترمذی ج ۳ ص ۳۹۲ حدیث ۱۹۷۹) जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रावी है हम ख़िदमते अक़दस हुज़ूर सय्यिदे आलम ﷺ में हाज़िर थे कि एक बदबू उठी, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जानते हो कि येह बदबू क्या है, येह उन की बदबू है जो मुसलमानों की गीबत करते हैं।

(دَمُ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ۱۰۴ رقم ۷۰)

عَزَّوَجَلَّ
अल्लाह हमें झूट से गीबत से बचाना

عَزَّوَجَلَّ
मौला हमें कैदी न जहन्नम का बनाना

عَزَّوَجَلَّ
ऐ प्यारे खुदा अज़ पए सुल्लाने ज़माना

عَزَّوَجَلَّ
जन्नत के महल्लात में तू हम को बसाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْتُوا لِي اللَّهَ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हर बाल के बदले एक एक नूर : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें ज़बान का दुरुस्त इस्ति'माल सीखना चाहिये। वरना खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! गीबतें और तोहमतें और मुख़लिफ़ गुनाहों की शामतें आख़िरत में फंसा सकती हैं। वाक़ेई अगर हम अपनी ज़बान का दुरुस्त इस्ति'माल करें तो वक़्तन फ़ वक़्तन ढेर सारी नेकियां हासिल कर सकते हैं। ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहूमतुल्लिल आ-लमीन ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बाज़ार में अल्लाह ﷻ का ज़िक्र करने वाले के लिये हर बाल के बदले क़ियामत में नूर होगा।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۱ ص ۴۱۲ حدیث ۵۶۷)



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफा की । (अब्दुर्रज्जाक)

दर्स देने वालों के लिये दुआए अतार : याद रहे ! तिलावते कुरआन, हम्दो सना, मुनाजात व दुआ, दुरूदो सलाम, ना'त, खुत्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वगैरा सब “**عَزَّوَجَلَّ** जिक्रुल्लाह में शामिल हैं। इस्लामी भाइयों को चाहिये कि रोज़ाना कम से कम 12 मिनट बाज़ार में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स दें। जितनी देर तक दर्स देंगे **عَزَّوَجَلَّ** उतनी देर तक के लिये दीगर फ़ज़ाइल के इलावा उसे बाज़ार में जिक्रुल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** करने का सवाब भी हासिल होगा। **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स की भी क्या ख़ूब **म-दनी बहारें** हैं, काश ! इस्लामी भाई मस्जिद, घर, बाज़ार, चोक, दुकान वगैरा में और इस्लामी बहनें घर में रोज़ाना दो दर्स देने या सुनने का मा'मूल बना कर ख़ूब ख़ूब सवाब लूटें और साथ ही साथ इस **दुआए अतार** के भी हक़दार बन जाएं : **या रब्बे मुहम्मद** **عَزَّوَجَلَّ** जो इस्लामी भाई या इस्लामी बहन रोज़ाना दो दर्स दें या सुनें उन को और मुझे बे हिसाब बख़्श और हमें हमारे **म-दनी आका** **عَزَّوَجَلَّ** के पड़ोस में इकठ्ठा रख।

امين بِجَاهِ النَّبِيِّ الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

तन्हा दर्स देने की ब-र-कत : फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स की बहारों के तो क्या कहने ! लाइन्ज़ एरिया (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह बयान दिया, मैं अपने घर की छत पर खड़ा था कि मेरी नज़र गली में खड़े **दा'वते इस्लामी** के एक बा इमामा इस्लामी भाई पर पड़ी जो अकेले ही **चोक दर्स** दे रहे थे एक भी इस्लामी भाई दर्स सुनने के लिये नहीं बैठा था। मैं यूं तो दीन से अ-मली तौर पर इस क़दर दूर था कि सब्ज़ इमामे वालों को देख कर भाग जाता था मगर न जाने क्यूं उन को तन्हा दर्स देता देख कर मुझे तरस आ गया सोचा कि चलो बेचारे के साथ कोई नहीं बैठा तो मैं ही जा कर बैठ जाता हूं चुनान्चे मैं **चोक दर्स** में शरीक हो गया। मेरा चोक दर्स में शरीक होना मेरी इस्लाह का सबब बन गया और मैं **म-दनी माहोल** से वाबस्ता हो गया। यह बयान देते वक़्त **عَزَّوَجَلَّ** अपने यहां **म-दनी इन्आमात** का अलाकाई ज़िम्मेदार हूं। एक दिन तो वोह था कि मैं सब्ज़ इमामे वालों को देख कर भाग



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे । (कन्जुल उम्माल)

जाया करता था और الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ आज वोह दिन है कि खुद मेरे सर पर सब्ज सब्ज इमामे शरीफ का ताज जगमगा रहा है ।

मक्बूलियत का मदार किल्लत व कसरत पर नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

देखा आप ने ! फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स की कितनी ज़बर दस्त ब-र-कत है ! वोह इस्लामी भाई कैसे ज़ब्बे वाले थे कि कोई न मिला तो तन्हा चोक दर्स शुरू कर दिया ! इस में सभी के लिये दर्स के म-दनी फूल हैं उन का अकेले दर्स देना एक मुसल्मान के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने का सबब बन गया । येह भी अन्दाज़ा लगाइये कि तन्हा दर्स देते हुए देख कर जब ऐसे शख्स को रहम आ गया जो कि इन चीज़ों से दूर भागता था तो अल्लाह तबा-र-क व तआला तन्हा या कम ता'दाद में दर्स देने वालों से कितनी महबूबत करता और किस क़दर उन पर रहमो करम फ़रमाता होगा ।

याद रखिये ! किल्लत व कसरत पर मक्बूलियत का दारो मदार नहीं । जो इस्लामी भाई भीड़ भाड़ के बिगैर और ईको साउन्ड न हो तो बयान या ना'त शरीफ पढ़ने के लिये तय्यार नहीं होते उन की तरगीब के लिये अर्ज है कि बारगाहे खुदा वन्दी में सिर्फ़ इख़लास देखा जाता है । हाज़िरीन और चाहने वालों की कसरत हो मगर खुलूस न हो तो कोई फ़ाएदा नहीं होता । यकीनन जितने भी ؎ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى رَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى رَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ के मक्बूल तरीन बन्दे हैं और हर एक ने 100 फीसदी अपनी ज़िम्मेदारी निभाई मगर बा'ज अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर सिर्फ़ एक ही आदमी ईमान लाया चुनान्चे

सिर्फ़ एक फ़र्द ने तस्दीक की : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मैं जन्नत के बारे में सब से पहले शफ़ाअत करने वाला होउंगा, और किसी नबी की तस्दीक इतनी न की गई जितनी मेरी तस्दीक की गई, बा'ज अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام) वोह हैं जिन की तस्दीक उन की उम्मत में से सिर्फ़ एक शख्स ने की है ।

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص ١٢٨ حَدِيثُ ٣٣٢)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: جس نے मुझ पर दस मर्तबा सुब् और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़यामत के दिन मेरी शफ़ात मिलेगी (मजमउज्जवाइद)

950 साल में सिर्फ़ 80 आदमी ईमान लाए : मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَنَان इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : इस फ़रमाने आली के एक मा'ना येह हैं कि जितने ज़ियादा लोगों ने मुझ पर ईमान क़बूल किया इतने लोग किसी और नबी पर ईमान नहीं लाए येह बिल्कुल ज़ाहिर है क्यूं कि दूसरे नबी किसी ख़ास क़ौम के नबी होते थे हुज़ूरे अन्वर ﷺ सारे ज़हान के नबी हैं नीज़ और नबियों का ज़मानए नुबुव्वत महदूद था, हुज़ूर ﷺ की नुबुव्वत ता क़ियामत है। मज़ीद लिखते हैं : हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السّलाम ने साढ़े नव सो (950) साल तब्लीग़ फ़रमाई मगर सिर्फ़ अस्सी (80) आदमी ईमान लाए आठ (8) आदमी अपने घर के, बहत्तर (72) आदमी दूसरे, हुज़ूर ﷺ ने तेईस (23) साल तब्लीग़ फ़रमाई, देख लो आज तक क्या हाल है !

(मराة ج ८ ص ७६)

गीबत गुनाहे कबीरा है : हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हज़र मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सहीह अहदीसे मुबा-रका में है कि (1) गीबत सूद से बढ़ कर है (2) अगर इसे (या'नी गीबत को) समुन्दर के पानी में डाल दिया जाए तो उसे भी बदबूदार कर दे (3) (गीबत करने वाले) दोज़ख़ में मुर्दार खा रहे थे (4) उन (गीबत करने वालों) की फ़ज़ा बदबूदार थी (5) उन्हें (या'नी गीबत करने वालों को) क़ब्रों में अज़ाब दिया जा रहा था ।" इन में से बा'ज़ अहदीसे मुबा-रका ही इस के कबीरा होने के लिये काफ़ी हैं, पस जब येह सारी जम्अ हो जाएं तो फिर गीबत क्यूंकर कबीरा गुनाह न कहलाएगी ?

(الرّوّا ج २ ص २८)

अलिम के बारे में एहतियात की हिकायत : हज़रते शैख़ अफ़ज़लुद्दीन رحمه الله الفین से जब किसी अलिमे दीन के मक़ाम के बारे में पूछा जाता तो (गीबत में जा पड़ने के ख़ौफ़ से) फ़रमाते : मेरे इलावा किसी और से पूछो मैं तो लोगों को कमाल और बेहतरी ही की निगाह से देखता (और हर



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बदबख़ हो गया । (इन्ने सुनी)

एक के बारे में हुस्ने ज़न से काम लेता) हूं, मेरे पास कश्फ नहीं जिस के ज़रीए इन के उन मक़मात की मा'लूमात कर सकूं जो रब्बे का एनात عَزَّوَجَلَّ के यहां हैं। और हदीस शरीफ में है : **الظَّنُّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ**¹ :

(तन्बीह المغترين ص १९३) (तरजमा : बद गुमानी सब से झूटी बात है।)

अच्छा गुमान इबादत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल बद गुमानी का मरज़ आम है। मुसल्मान के बारे में अच्छा गुमान कर के सवाब कमाना चाहिये चुनान्वे फ़रमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : **حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ** : या'नी हुस्ने ज़न उम्दा इबादत से है। (सुन्न अबुदावुद ज ६ व ३८८ हदित ६९९३) मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّ इस हदीसे पाक के मुख़्तलिफ़ मतलिब बयान करते हुए लिखते हैं : या'नी मुसल्मानों से अच्छा गुमान करना, इन पर बद गुमानी न करना येह भी अच्छी इबादात में से एक इबादत है।

अलिम की ग़ीबत करने वाला रहमत से मायूस : अफ़्सोस ! आज कल **مَعَادُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** उलमा की ब कसरत ग़ीबत की जाती है। लिहाज़ा शैतान किसी अलिमे दीन की ग़ीबत पर उभारे तो हज़रते सय्यिदुना अबू हफ़्स कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير के इस इर्शाद को याद कर के खुद को डराइये : जिस ने किसी फ़कीह (अलिम) की ग़ीबत की तो क़ियामत के रोज़ उस के चेहरे पर लिखा होगा : **“येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से मायूस है।”** (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ७१)

दोज़ख़ के कुत्ते काटेंगे : ग़ीबत उलमा की हो या अ़वाम की, ग़ीबत फिर ग़ीबत ही है, खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस का अज़ाब न सहा जा सकेगा चुनान्वे एक बार मदीने के ताजदार **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** से फ़रमाया : लोगों की ग़ीबत न करो **لَدِينِہ**

۱۔ صحیح بخاری ج ६ व ११७ हदित ६०६६

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज्जवाहद)

वरना दोज़ख़ के कुत्ते तुम्हें काटेंगे ।

(तफ़सीरुद्दर्र मन्थूर ज ७ व ८, ७५२, منهاج العाबدين ص ६६)

रात के सन्नाटे में कुत्ता हम्ला आवर हो तो..... : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़क़ूर रिवायत को बार बार पढ़िये और तसव्वुर कीजिये कि रात का सन्नाटा हो, कुत्ता भौंकता हुवा पीछे आ रहा हो और आप उस से बचने के लिये तदबीरें कर रहे हों कि यकायक झपट कर आप के कुरते का दामन अपने मुंह से पकड़ ले ! उस वक़्त आप की हालत क्या होगी ! अब ग़ौर कीजिये किसी मुसल्मान की ग़ीबत कर दी और मरने के बा'द अगर सज़ाअन जहन्नम के कुत्ते ने कुरते के दामन को नहीं बदन को और वोह भी पकड़ा ही नहीं काटना शुरूअ कर दिया तो उस वक़्त क्या गुज़रेगी !

कर ले तौबा रब की रहमत है बड़ी

नार में वरना सज़ा होगी कड़ी

उ-लमा की ग़ीबत की 15 मिसालें : हालात बहुत ना गुफ़्ता बिह हैं, शैतान ने अक्सर मुसल्मानों को उ-लमाए हक़ से काफ़ी दूर कर दिया है, अफ़सोस ! सद करोड़ अफ़सोस ! मुंह भर कर अब उ-लमाए किराम की ग़ीबतें की जाती हैं । उ-लमा की ग़ीबत की चन्द मिसालें मुला-हज़ा हों : ★ वा'ज के पैसे लेता है ★ बड़ा बद ज़बान है ★ पेटू है ★ हलवे मांडे खाता है ★ खाना डट कर खाता है ★ उस दिन उलटे हाथ से पानी पी रहा था ★ अपने आप को सब से बड़ा अलिम समझता है ★ वा'ज में नाक से बोलता है ★ बहुत लम्बा बयान करता है ★ बयान में बस किस्से कहानियां सुनाता है ★ आवाज़ भी "खास" नहीं ★ भई ! ज़रा बच के रहना "अल्लामा साहिब" हैं ★ लालची है ★ छोड़ो छोड़ो यार ! वोह तो मौलवी है ★ (مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ) अलिमों को बा'ज लोग हक़ारत से कह देते हैं) येह मुल्ला लोग ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुर्हदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदखत हो गया। (इन्ने सुनी)

आलिम की तौहीन कब कुफ़्र है और कब नहीं : आम आदमी और आलिमे दीन की गीबत में बड़ा फ़र्क है, आलिम की गीबत में अक्सर उस की तौहीन का पहलू भी होता है जो कि काफ़ी तश्वीशनाक है। आलिम की तौहीन की तीन सूरतें और इन के बारे में हुक्मे शर-ई बयान करते हुए मेरे आका आ 'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़हा 129 पर फ़रमाते हैं : 《1》 अगर आलिमे (दीन) को इस लिये बुरा कहता है कि वोह “आलिम” है जब तो सरीह काफ़िर है और 《2》 अगर ब वच्चे इल्म उस की ता'ज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी खुसूमत (या'नी दुश्मनी) के बाइस बुरा कहता है, गाली देता (है और) तहकीर करता है तो सख़्त फ़ासिक़ फ़ाजिर है और (3) अगर बे सबब (या'नी बिना वजह) रन्ज (बुज़) रखता है तो مَرِيضُ الْقَلْبِ وَ خَبِيثُ الْبَاطِنِ (या'नी दिल का मरीज़ और नापाक बातिन वाला) है और उस (या'नी आलिमे दीन से ख़्वाह म ख़्वाह बुज़ रखने वाले) के कुफ़्र का अन्देशा है। “खुलासा” में है : “खुलासा” में है : या'नी जो बिना किसी ज़ाहिरी वजह के आलिमे दीन से बुज़ रखे उस पर कुफ़्र का खौफ़ है।

(खुला-सतुल फ़तावा, जि. 4, स. 388)

उ-लमा की तौहीन के बारे में चन्द सुवाल जवाब पेश किये जाते हैं :

आलिमे बे अमल की तौहीन

सुवाल : क्या आलिमे बे अमल की तौहीन भी कुफ़्र है ?

जवाब : ब सबबे इल्मे दीन आलिमे बे अमल की तौहीन करना भी कुफ़्र है। आलिमे बे अमल भी इल्मे दीन की वजह से जाहिल इबादत गुज़ार से ब द-र-जहा अफ़ज़ल व बेहतर है। मेरे आका आ 'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फरमाते हैं : और कुरआन शरीफ़ इन्हें (या'नी उ-लमाए हक़ को) मुल्लक़न वारिस बता रहा है, हत्ता कि इन (में) के बे अमल (आलिम) को भी या'नी जब कि अक़ाइदे हक़ पर मुस्तकीम (या'नी सहीहुल अक़ीदा सुन्नी) और हिदायत की तरफ़ दाई (बुलाने वाला) हो कि गुमराह (आलिम) और गुमराही की तरफ़ बुलाने वाला (मौलवी) वारिसे नबी नहीं नाइबे इब्लीस है। وَالْعِبَادُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی हां, रब عَزَّوَجَلَّ ने तमाम उ-लमाए शरीअत को कहां वारिस फरमाया है ? यहां तक कि इन के बे अमल को भी ! हां, वोह हम से पूछिये, मौला عَزَّوَجَلَّ फरमाता है :

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا
مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۗ
وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ
بِالْخَيْرَاتِ يُأْتِنُ اللّٰهُ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ
الْكَبِيرُ ۝ (پ ۲۲ فاطر ۳۲)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : फिर हम ने किताब का वारिस किया अपने चुने हुए बन्दों को तो इन में कोई अपनी जान पर जुल्म करता है और इन में कोई मियाना चाल पर है और इन में कोई वोह है जो अल्लाह के हुक्म से भलाइयों में सब्कत ले गया येही बड़ा फज़ल है।

मज़क़ूरा बाला आयते करीमा फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़हा 530 पर नक्ल करने के बा'द मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰन मज़ीद फरमाते हैं : देखो बे अमल (उ-लमा जो) कि गुनाहों से अपनी जान पर जुल्म कर रहे हैं उन्हें भी किताब का वारिस बताया और निरा (या'नी फ़क़त) वारिस ही नहीं बल्कि अपने चुने हुए बन्दों में गिना। अह्दादीस में आया, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस आयत की तफ़सीर में फरमाया : हम में का जो सब्कत (बरतरी) ले गया वोह तो सब्कत ले ही गया और जो मु-तवस्सित (या'नी दरमियाना) हाल का हुवा वोह भी नजात वाला है और जो अपनी जान पर ज़ालिम (या'नी गुनहगार) है उस की भी मग़ि़रत है। (तफ़सीर लरमन्थोर ज ७ व २०)

आलिमे शरीअत अगर अपने इल्म पर आमिल भी हो (जब तो वोह मिस्ले) चांद है (जो) कि आप (खुद भी) ठन्डा और तुम्हें (भी) रोशनी दे

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह غَوْضَلْ तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

वरना (आलिमे बे अमल मिस्ले) शम्अ है कि खुद (तो) जले मगर तुम्हें नफ़ा दे।
रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : उस शख्स की मिसाल जो लोगों को खैर
(या'नी भलाई) की ता'लीम देता और अपने आप को भूल जाता है उस फ़तीले (या'नी
चराग़ की बत्ती) की तरह है कि लोगों को रोशनी देता है और खुद जलता है।

(التَّوْبَةُ وَالْغَيْبُ وَالْغَيْبُ ج ١ ص ٧٤ حديث ١١)

जाहिल को आलिम से बेहतर जानना कैसा ?

सुवाल : जाहिल को आलिम से बेहतर समझना कैसा ?

जवाब : अगर इल्मे दीन से नफ़त के सबब जाहिल को आलिम से बेहतर समझता है तो यह
कुफ़्र है। फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : इस तरह कहना : “इल्म से
जहालत बेहतर है या आलिम से जाहिल अच्छा होता है।” कुफ़्र है। (مَجْمَعُ الْأَنْهَارِ ج ٢ ص ٥١)
जब कि इल्मे दीन की तौहीन मक़सूद हो।

तालिबे इल्मे दीन को कूएं का मेंडक कहना

सुवाल : दीनी तालिबे इल्म या आलिमे दीन को ब नज़रे हक़ारत कूएं का मेंडक कहना
कैसा है ?

जवाब : कुफ़्र है।

“मौलवी लोग क्या जानते हैं” कहना कैसा ?

सुवाल : एक शख्स ने किसी बात पर हक़ारत के साथ कहा : “मौलवी लोग क्या जानते हैं !”
उस का इस तरह कहना कैसा ?

जवाब : कुफ़्र है। मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद
रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : “मौलवी लोग क्या जानते हैं !” कहना कुफ़्र है।
(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 244) जब कि उ-लमा की तहक़ीर मक़सूद हो।

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

“दीन पर अमल को मौलवियों ने मुश्किल बना दिया है” कहना कैसा ?

सुवाल : येह कहना कैसा है कि “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दीन को आसान उतारा था मगर मौलवियों ने मुश्किल बना दिया !”

जवाब : येह उ-लमा की तौहीन की वजह से कलिमए कुफ़्र है। क्यूं कि फु-क़हाए किराम لَا سِخْفَاتٍ بِأَشْرَافٍ وَالْعُلَمَاءُ كُفَرٌ : फ़रमाते हैं : رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام किराम) और उ-लमा की तहक़ीर (इन्हें घटिया जानना) कुफ़्र है।

(مَجْمَعُ الْأَنْهَرِ ج ٢ ص ٥٠٩)

मौलवियों वाला अन्दाज़

सुवाल : सुन्नी अलिमे दीन की तर्ज़ पर कुरआनो सुन्नत के मुताबिक किये जाने वाले किसी मुबल्लिग़ के बयान को हक़ारतन “मौलवियों वाला अन्दाज़” कहना कैसा ?

जवाब : कुफ़्र है। क्यूं कि इस में उ-लमाए हक़ की तौहीन है।

“अलिम सारे ज़ालिम” कहने का हुक्मे शर-ई

सुवाल : “अलिम सारे ज़ालिम” येह मक़ूला कैसा है ?

जवाब : मुल्लक़न उ-लमाए हक़ के बारे में ऐसा जुम्ला कहना कुफ़्र है।

अलिमे दीन को हक़ारत से मुल्ला कहना

सुवाल : जो उ-लमाए किराम को तहक़ीर की निय्यत से “मुल्ला मुल्ला” या “मुल्ला लोग” कहे उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर ब सबबे इल्मे दीन उ-लमाए किराम की तहक़ीर (या’नी हक़ारत) की निय्यत से कहा तो कलिमए कुफ़्र है। चुनान्चे मुल्ला अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِئِي फ़रमाते हैं : जिस ने (तौहीन की निय्यत से) अलिम को उवैलिम या अ-लवी (या’नी मौला अली عَلَيْهِ الرّوح) की औलाद) को उलैवी कहा उस ने कुफ़्र किया।

(مَنْعُ الرَّوْضِ لِلْقَارِئِ ص ٤٧٢) उर्दू ख़्वां “उवैलिम” या “उलैवी” नहीं बोलते। अलबत्ता



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

बा'ज अवकात बेबाकों की ज़बानों से मौलवा, मुल्लड वगैरा अल्फाज सुनना (सगे मदीना عَنَّا को) याद पड़ता है। बहर हाल अलिमे दीन की ब सबबे इल्मे दीन तौहीन करना या अ-लवी साहिबान या सादाते किराम की शराफ़ते हसब नसब के सबब किसी किस्म का तौहीन आमेज़ लफ़ज़ बोलना कुफ़्र है।

“मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे” कहना

सुवाल : “दुन्यवी ता'लीम हासिल करोगे तो ऐश करोगे, इल्मे दीन सीख कर मौलवी बनोगे तो भूके मरोगे” यह कहना कैसा ?

जवाब : इस जुम्ले में इल्मे दीन की तौहीन का पहलू नुमायां है इस लिये कुफ़्र है। काइल पर तौबा व तजदीदे ईमान लाज़िम है और अगर इल्म व उ-लमा की तौहीन ही मक्सूद थी तो क़र्इ कुफ़्र है काइल काफ़िर व मुरतद हो गया और उस का निकाह भी टूटा और पिछले नेक आ'माल भी जाएअ हुए।

तौहीने उ-लमा के मु-तअल्लिक 10 पैरे

《1》 जितने मौलवी हैं सब बद मआश हैं कहना कुफ़्र है जब कि ब सबबे इल्मे दीन, उ-लमाए किराम की तहकीर की निय्यत से कहा हो। (माखूज़ अज़ फ़तावा अम्जदिया, जि. 4, स. 454)

《2》 यह कहना : “अलिम लोगों ने देस ख़राब कर दिया।” कलिमए कुफ़्र है (माखूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 605) 《3》 यह कहना कुफ़्र है कि “मौलवियों ने दीन के टुकड़े टुकड़े कर दिये” 《4》 जो कहे : “इल्मे दीन, को क्या करूंगा ! जेब में रुपै होने चाहिएं।” कहने वाले पर हुक्मे कुफ़्र है। 《5》 किसी ने अलिम से कहा : “जा और इल्मे दीन को किसी बरतन में संभाल कर रख।” यह कुफ़्र है। (अलमगीरी, जि. 2, स. 271) 《6》 जिस ने कहा : “उ-लमा जो बताते हैं उसे कौन कर सकता है !” यह कौल कुफ़्र है। क्यूं कि इस कलाम से लाज़िम आता है कि शरीअत में ऐसे अहकाम हैं जो ताक़त से बाहर हैं या उ-लमा ने अम्बियाए किराम :

《7》 यह कहना : “सरीद का पिआला इल्मे दीन से बेहतर है।” कलिमए कुफ़्र है। (ऐज़न, स. 472) 《8》 अलिमे दीन

《7》 (يَنْتَعِزُّ الرُّؤُوسُ مِنْ ۙ) ! مَعَاذَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ पर झूट बांधा है عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام यह कहना : “सरीद का पिआला इल्मे दीन से बेहतर है।” कलिमए कुफ़्र है। (ऐज़न, स. 472) 《8》 अलिमे दीन



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उदुद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज्जाक)

से उस के इल्मे दीन की वजह से बुग़्ज रखना कुफ़्र है या'नी इस वजह से कि वोह अल्लिमे दीन है। (9) जो कहे : “फ़साद करना अल्लिम बनने से बेहतर है” ऐसे शख्स पर हुक्मे कुफ़्र है। (अल्लमगीरी, जि. 2, स. 271) (10) याद रहे ! सिर्फ़ उ-लमाए अहले सुन्नत ही की ता'जीम की जाएगी। रहे बद मज़हब उ-लमा, तो उन के साए से भी भागे कि उन की ता'जीम हराम, उन का बयान सुनना, उन की कुतुब का मुता-लआ करना और उन की सोहबत इख़्तियार करना हराम और ईमान के लिये ज़हरे हलाहिल है।

काश मैं दरख़्त होता ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लिमे दीन की शाने अ-ज़मत निशान में बे अ-दबी से बचना बहुत ज़रूरी है। खुदा न ख़्वास्ता कोई ऐसी भूल हो गई जिस से ईमान से हाथ धोना पड़ गया तो **खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम !** बहुत रुस्वाई होगी कि बरोजे क़ियामत काफ़िरों को मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा जहां उन्हें हमेशा हमेशा अज़ाब में रहना पड़ेगा। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** हमें ज़बान की लग़ज़िशों से भी बचाए और हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन। हमारे सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان क़ब्रों आख़िरत के मुआ-मले में **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** से बहुत डरते थे, ग़-ल-बए ख़ौफ़ के वक़्त इन हज़रात की ज़बान से बसा अवकात इस तरह के कलिमात अदा होते थे : काश ! हमें दुनिया में बतौर इन्सान न भेजा जाता कि इन्सान बन कर दुनिया में आने के बाइस अब ख़ातिमा बिल ईमान, क़ब्र व क़ियामत के इम्तिहान वगैरा के कठिन मराहिल दरपेश हैं। एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ में डूब कर फ़रमाया : अगर तुम वो जान लो जो मौत के बा'द होना है तो तुम पसन्दीदा खाना पीना छोड़ दो, सायादार घरों में न रहो बल्कि वीरानों का रुख़ कर जाओ और तमाम उम्र आहो ज़ारी में बसर कर दो इस के बा'द फ़रमाने लगे : **काश ! मैं दरख़्त होता जिसे काट दिया जाता।**

(الرُّہد للإمام أحمد بن حنبل ص ١٦٢ رقم ٧٤٠)

मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या
नख़ल¹ बन के तयबा के बाग़ में खड़ा होता

لَدِينِهِ

1. खजूर का दरख़्त, आम दरख़्त



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

काश मुझे ज़ब्ह कर दिया जाता : इब्ने असाकिर ने “तारीख़े दिमिशक़” जिल्द 47 सफ़्हा

193 पर हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से येह कलिमात नक़ल किये हैं : **काश !**

मैं दुम्बा होता, मुझे किसी मेहमान के लिये ज़ब्ह कर दिया जाता, मुझे खाते और खिला देते।

जां कनी¹ की तक्लीफ़ें ज़ब्ह से हैं बढ कर काश ! मुर्ग़ बन के तयबा में ज़ब्ह हो गया होता

मर्ग़ज़ारे² तयबा का कोई होता परवाना गिर्दे शम्अ फिर फिर कर काश ! जल गया होता

काश ! ख़र³ या ख़च्चर या घोड़ा बन कर आता और

ﷺ

मुस्तफ़ा ने खूटे से बांध कर रखा होता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! ﷺ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! ﷺ

आह ! मेरे गुनाह ! ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ-लमाए किराम का मक़ाम समझने,

इन के एहतिराम का ज़ब्बा पाने, ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों

की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये,

सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा

सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात

के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक्के मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर

म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये। आशिक़ाने

रसूल की सोहबत उठाने का एक बेहतरीन ज़रीआ मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) भी है। इन

में कुरआने करीम पढ़िये अगर पढ़े हुए हैं तो पढ़ाइये। आप की तरगीब व तहरीस के लिये

अर्ज़ है, एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मेरे गुनाह बहुत ज़ियादा थे। जिन

لَدِينِهِ

1. नज़्अ का आलम, इन्सान की रूह निकलने का अमल, 2. सब्ज़ा ज़ार 3. ग़धा



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (अबू या'ला)

में **مَعَادُ اللّٰہِ** V.C.R की लीड सप्लाय करना, रातों को औबाश लड़कों के साथ घूमना, रोज़ाना दो बल्कि तीन तीन फ़िल्में देखना, वेरायटी प्रोग्राम्ज़ में रातें काली करना शामिल है। **اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ** बाबुल मदीना कराची के अलाके नया आबाद के एक इस्लामी भाई की मुसल्लसल इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से अलाके के मद्र-सतुल मदीना (बराए बालिग़ान) में जाने की तरकीब बनी, और इस तरह आशिकाने रसूल की सोहबत मिली और मैं तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा 'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर म-दनी कामों में मसरूफ़ हो गया।

हमें आलिमों और बुजुर्गों के आदाब सिखाता है हर दम सदा म-दनी माहोल हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई है बेहद महबूबत भरा म-दनी माहोल ता'लीमे कुरआन के दो² फ़ज़ाइल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ** रोज़ाना इशा के बा'द हजारहा मद्रसतुल मदीना काइम किये जाते हैं जहां फी सबीलिल्लाह कुरआने करीम की ता'लीम दी जाती है। ता'लीमे कुरआने करीम के फ़ज़ाइल के क्या कहने ! चुनान्चे दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 सफ़हा 127 से दो फ़रामैने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** मुला-हज़ा हों : **﴿1﴾** तुम में बेहतर वोह शख्स है, जो कुरआन सीखे और सिखाए। **﴿2﴾** जो कुरआन पढ़ने में माहिर है, वोह किरामन कातिबीन के साथ है और जो शख्स रुक रुक कर कुरआन पढ़ता है और वोह उस पर शाक़ है (या'नी उस की ज़बान आसानी से नहीं चलती, तकलीफ़ के साथ अदा करता है) उस के लिये दो अज़्र हैं।

(صَحِیحُ مُسْلِمٍ ص ٤٠٠ حدیث ٧٩٨)

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आम हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ا صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تَوْبُوْا اِلَی اللّٰہِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ا صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

गुस्ताख़े रसूल का अन्जाम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर गीबत की कसरत के सबब रब्बुल इज़्ज़त ﷻ नाराज़ हुवा और हुज़ूर ताजदारे रिसालत ﷻ रूठ गए और ईमान बरबाद हो गया और कोई बद नसीब ﷻ काफ़िर हो कर मरा तो खुदा ﷻ की कसम कहीं का न रहेगा। कुफ़्र पर मरने वाला हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा, काफ़िरों के अन्जाम के बारे में मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का इर्शाद पढ़िये और तौबा तौबा कीजिये और अपने ईमान की हिफ़ाज़त के लिये ख़ूब कुदिये चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 502 स-फ़हात पर मुशतमिल किताब "मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत" (मुकम्मल, मुख़र्रजा) सफ़हा 147 पर है : एक मर्तबा आस (जो कि बहुत बड़ा गुस्ताख़े रसूल काफ़िर था वोह) सफ़र को गया। तकान (या'नी थकन) के बाइस एक दरख़्त से तकिया (या'नी टेक) लगा कर बैठ गया। जिब्रईले अमीन (عليه السلام) ब हुक्मे रब्बुल आ-लमीन (ﷻ) तशरीफ़ लाए और उस का सर पकड़ कर दरख़्त से टकराना शुरूअ किया। वोह चिल्लाता था कि अरे कौन मेरे सर को दरख़्त से टकरा रहा है ? उस के साथी कहते थे कि हमें कोई नज़र नहीं आता। यहां तक कि जहन्नम वासिल हुवा (या'नी मर कर जहन्नम पहुंचा)। क़ियामत के दिन अबू जहल की सब से जुदा हालत होगी : येह अपने आप को ﷻ "अज़ीज़ व करीम" कहा करता या'नी इज़्ज़त वाला व करम वाला। दारोग़ाए दोज़ख़ (या'नी दोज़ख़ के निगरान फ़िरिशते) को हुक्म होगा कि इस के सर पर गुर्ज़ मारो ! जिस के लगते ही एक बड़ा ख़ला (बहुत बड़ा गढ़ा) सर में हो जाएगा और जिस की वुस्अत इतनी न होगी जितनी तुम ख़याल करते हो बल्कि जिस की एक दाढ़ कोहे उहुद (या'नी उहुद पहाड़) के बराबर होगी उस के सर फटने से जो ख़ला (गढ़ा) होगा वोह किस क़दर वसीअ होगा ! गरज़ उस ख़ला (गढ़े) में जहन्नम का ख़ौलता हुवा पानी भरा जाएगा और उस से कहा जाएगा :

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٣٩﴾

(प २०५ दख़ान १९)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : चख तू तो इज़्ज़त व करम वाला है।

फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिग़फ़र करते रहेंगे। (त-बरानी)

और काफ़िर को येही पानी पिलाया जाएगा कि जब मुंह के करीब आएगा मुंह उस में गल कर गिर पड़ेगा और जब पेट में उतरेगा, आंतों के टुकड़े कर देगा, और उस पानी को ऐसा पियेंगे जैसे तौनस (या'नी न बुझने वाली प्यास) के मारे ऊंट। भूक से बेताब होंगे तो ख़ारदार थूहड़¹ खौलता हुवा, चर्ख़ दिये (या'नी पिघले) हुए तांबे की तरह उबलता हुवा खिलाएंगे जो पेट में जा कर खौलते हुए पानी की तरह जोश मारेगा और भूक को कुछ फ़ाएदा न देगा। अन्वाअ अन्वाअ (या'नी तरह तरह) के अज़ाब होंगे। हर तरफ़ से मौत आएगी और मरेंगे कभी नहीं, न कभी उन के अज़ाब में तख़फ़ीफ़ (या'नी कमी) होगी।

خُودَايَا بُرَةِ خَرَاتِمِهِ سَے بَچَانَا
गुनाहों से भरपूर नामा है मेरा

पढ़ू कलिमा जब निकले दम या इलाही
तेरे हाथ में है भरम या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤَيِّدُوا لِي اللَّهِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गर्मियों में रोज़ा आसान मगर चुप रहना मुश्किल : जिन लोगों की ज़बान कैंची की तरह चलती रहती है वोह झूट, गीबत, तोहमत और चुगली वगैरा आफ़तों में अक्सर मुब्तला होते रहते हैं, वाक़ेई ज़बान पर कुफ़ले मदीना लगाना या'नी इस को काबू में रखना निहायत ज़रूरी है अगर्चे येह मुश्किल ही सही मगर कोशिश करेंगे तो अल्लाह عزّوجلّ आसानी कर देगा। दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 344 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "मिन्हाजुल आबिदीन" सफ़हा 107 पर हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي नक्ल करते हैं

1. एक ख़ारदार ज़हरीला पौदा जिस के पत्ते सब्ज़ और फूल रंग बिरंगे होते हैं

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

हैं : हजरते सय्यिदुना यूनस बिन उबैदुल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ, फरमाते हैं : मेरा नफ्स बसरा जैसे गर्म शहर के अन्दर और वोह भी सख्त गर्मियों में रोज़ा रखने की तो कुव्वत रखता है मगर फुज़ूल गोई से ज़बान को रोकने की ताक़त नहीं रखता ! (منهاج العابدین (عربی) ص ٦٤) अगर इन तीन उसूलों को पेशे नज़र रख लिया जाए तो إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ बड़ा नफ़अ होगा : 《1》 बुरी बात कहना हर हाल में बुरा है 《2》 फुज़ूल बात से ख़ामोशी अफ़ज़ल है 《3》 भलाई की बात करना ख़ामोशी से बेहतर है ।

मेरी ज़बान पे कुफ़ले मदीना लग जाए
करें न तंग ख़यालाते बद कभी कर दे

फुज़ूल गोई से बचता रहूं सदा या रब !
शुक्रो फ़िक्र को पाकीज़गी अता या रब !

ब वक़ते नज़अ सलामत रहे मेरा ईमां

मुझे नसीब हो कलिमा है इल्तिजा या रब !

जिगर का केन्सर ठीक हो गया : ज़बान पर कुफ़ले मदीना लगाने का ज़ेहन बनाने, गीबत करने सुनने की आदत मिटाने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल का ज़ब्बा बढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये और जहां कहीं “दर्स फ़ैज़ाने सुन्नत” होता देखें उस में खुश दिली के साथ ब निय्यते सवाब ज़रूर शिर्कत फ़रमाएं नीज़ हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की हाज़िरी किसी सूरत में भी तर्क न फ़रमाएं, आप की तरगीब के लिये एक ईमान अफ़रोज़ म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्वे गुलिस्ताने मुस्तफ़ा (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : मैं ने एक ऐसे इस्लामी भाई को दा'वते इस्लामी के मदी-नतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे तीन



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़ाक)

रोज़ा इज्तिमाअ की दा'वत पेश की जिन की बेटी को जिगर का केन्सर था। वोह दुआए शिफ़ा करने का जज़्बा लिये सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शरीक हो गए। उन का कहना है मैं ने इज्तिमाए पाक में ख़ूब दुआ की। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** वापसी के बा'द जब अपनी बेटी का चेकअप करवाया तो येह देख कर डॉक्टर हैरान व शशदर रह गए कि उस के जिगर का केन्सर ख़त्म हो चुका था! डॉक्टरों की पूरी टीम वर्तए हैरत में डूबी हुई थी कि आख़िर केन्सर गया कहां! जब कि मरीज़ा की हालत इस क़दर ख़राब थी कि इज्तिमाए पाक में जाने से पहले उस के जिगर से रोज़ाना कम अज़ कम एक सिरिन्ज भर कर मवाद निकाला जाता था! **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** इज्तिमाए पाक (मदी-नतुल औलिया, मुलतान) में शिर्कत की ब-र-कत से अब उस लड़की के जिगर में केन्सर का नामो निशान तक न रहा था, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** ता दमे बयान वोह लड़की अब न सिर्फ़ रू ब सिद्हत है बल्कि उस की शादी भी हो चुकी है।

अगर दर्दे सर हो, कहीं केन्सर हो दिलाएगा तुम को शिफ़ा म-दनी माहोल
शिफ़ाएं मिलेंगी, बलाएं टलेंगी यकीनन है ब-र-कत भरा म-दनी माहोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कोई मरज़ ला इलाज नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की ब-र-कत से डॉक्टरों के बकौल ला इलाज माना जाने वाला केन्सर भी ठीक हो गया, हकीकत येह है कि कोई मरज़ ऐसा नहीं जिस की दवा न हो चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 114 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "घरेलू इलाज" सफ़हा 1 पर है : **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के हबीब **وَالِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने सिद्हत निशान है : हर बीमारी की दवा है, जब दवा बीमारी तक पहुंचा दी जाती है तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म से मरीज़ अच्छा हो जाता है।

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص ١٢١٠ حَدِيثُ ٢٢٠٤)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

केन्सर के दो इलाज : ﴿1﴾ पिसा हुआ काला ज़ीरा तीन तीन ग्राम दिन में तीन मर्तबा पानी से इस्ति'माल कीजिये ﴿2﴾ रोज़ाना चुटकी भर पिसी हुई ख़ालिस हलदी खाने से إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ कभी केन्सर नहीं होगा।

ग़ीबत के मुख़्तलिफ़ तरीक़े : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत सिर्फ़ ज़बान ही से नहीं और तरीक़ों से भी की जा सकती है म-सलन ﴿1﴾ इशारे से ﴿2﴾ लिख कर ﴿3﴾ मुस्करा कर (म-सलन आप के सामने किसी की खूबी, बयान हुई और आप ने तन्ज़िया अन्दाज़ में मुस्करा दिया जिस से ज़ाहिर होता हो कि “तुम भले ता'रीफ़ किये जाओ, मैं इस को ख़ूब जानता हूँ!”) ﴿4﴾ दिल के अन्दर ग़ीबत करना या'नी बद गुमानी को दिल में जमा लेना। म-सलन बिग़ैर देखे बिला दलील या बिग़ैर किसी वाज़ेह करीने के ज़ेहन बना लेना कि “फुलां में वफ़ा नहीं है।” या “फुलां ने ही मेरी चीज़ चुराई है” या “फुलां ने यूँही गप लगा दिया है” वग़ैरा ﴿5﴾ अल ग़रज़ हाथ, पाउं, सर, नाक, होंठ, ज़बान, आंख, अबरू, पेशानी पर बल डाल कर या लिख कर, फ़ोन पर SMS कर के, इन्टरनेट पर चेटिंग के ज़रीए, बर्की डाक (या'नी E.MAIL) से या किसी भी अन्दाज़ से किसी के अन्दर मौजूद बुराई या ख़ामी दूसरे को बताई जाए वोह ग़ीबत में दाख़िल है।

मोमिनों पर तीन एहसान करो ! : हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुआज़ राज़ी रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : तुम से मोमिनों को अगर तीन फ़वाइद हासिल हों तो तुम मुहसिनीन (या'नी एहसान करने वालों) में शुमार किये जाओगे ﴿1﴾ अगर इन्हें नफ़अ नहीं पहुंचा सकते तो नुक़सान भी न पहुंचाओ ﴿2﴾ इन्हें खुश नहीं कर सकते तो रन्जीदा भी न करो ﴿3﴾ इन की ता'रीफ़ नहीं कर सकते तो बुराई भी मत करो।

(تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٨٨)

मुसल्मान की भलाई बयान करने वालों के लिये फिरिशतों की दुआ : मशहूर ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد (जिन का सि. 103 हि. में मक्कए मुअज़्ज़मा ۱۳۱۱ھ الله شَرَفًاوُتَعْظِيْمًا में सज्दे की हालत में विसाल हुआ) फ़रमाते हैं : जब कोई शख्स अपने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्ज़वाइद)

इस्लामी भाई का भलाई के साथ ज़िक्र करता है तो उस के साथ रहने वाले फ़िरिश्ते उसे दुआ देते हैं कि “तुम्हारे लिये भी इस की मिस्ल हो” और जब कोई अपने भाई को बुराई (या’नी ग़ीबत वगैरा) से याद करता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : तूने उस की पोशीदा बात ज़ाहिर कर दी ! ज़रा अपनी तरफ़ देख और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कर कि उस ने तेरा पर्दा रखा हुवा है ।

(تنبيه الغافلين ص ۸۸)

मुजरिम हूं दिल से ख़ौफ़े क़ियामत निकाल दो

पर्दा गुनहगार पे दामन का डाल दो

मीठे बोल की मीठी हिकायत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मुसल्मान के बारे में भलाई वाला **मीठा बोल** बोलने वाले को फ़िरिश्ते दुआए ख़ैर से नवाज़ते हैं और **गीबत** वगैरा करने वालों को तम्बीह करते हैं लिहाज़ा हमें हमेशा ज़बान से **मीठा बोल** अदा करने की सअय करनी चाहिये और **मीठा बोल** तो फिर **मीठा बोल** है इस की मिठास वोह रंग लाती है कि अक्लें दंग रह जाती हैं ! इस ज़िम्न में एक **हिकायत** सुनिये और झूमिये चुनान्चे **ख़ुरासान** के एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ को ख़्वाब में हुक्म हुवा : “तातारी क़ौम में इस्लाम की दा’वत पेश करो !” उस वक़्त **हलाकू** का बेटा तग़ूदार बर सरे इक्तदार था । वोह **बुजुर्ग** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ सफ़र कर के तग़ूदार के पास तशरीफ़ ले आए । सुन्नतों के पैकर बा रीश मुसल्मान मुबल्लिग़ को देख कर उसे मस्ख़री सूझी और कहने लगा : “मियां ! येह तो बताओ तुम्हारी दाढ़ी के बाल अच्छे या मेरे कुत्ते की दुम ?” बात अगर्चे गुस्सा दिलाने वाली थी मगर चूँकि वोह एक समझदार मुबल्लिग़ थे लिहाज़ा निहायत नरमी के साथ फ़रमाने लगे : “मैं भी अपने ख़ालिफ़ व मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कुत्ता हूं अगर जां निसारी और वफ़ादारी से उसे खुश करने में काम्याब हो जाऊं तो मैं अच्छा वरना आप के कुत्ते की दुम ही मुझ से अच्छी ।” चूँकि वोह एक बा अमल मुबल्लिग़ थे **गीबत** व चुग़ली, ऐबजूई और बद कलामी नीज़ फुज़ूल गोई वगैरा से दूर रहते हुए अपनी ज़बान ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हमेशा तर रखते थे लिहाज़ा उन की ज़बान से



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया । (इन्ने सुनी)

निकले हुए मीठे बोल तासीर का तीर बन कर तगूदार के दिल में पैवस्त हो गए कि जब उस ने अपने “जहरीले कांटे” के जवाब में उस बा अमल मुबल्लिग की तरफ से “खुशबूदार म-दनी फूल” पाया तो पानी पानी हो गया और नरमी से बोला : आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ मेरे मेहमान हैं मेरे ही यहां कियाम फरमाइये । चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ उस के पास मुकीम हो गए । तगूदार रोजाना रात आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ की खिदमत में हाज़िर होता, आप रَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ निहायत ही शफ़क़त के साथ उसे नेकी की दा'वत पेश करते । आप रَحْمَةُ اللّٰہِ तَعَالٰی عَلَیْہِ की इन्फ़िरादी कोशिश ने तगूदार के दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया ! वोही तगूदार जो कल तक इस्लाम को सफ़हए हस्ती से मिटाने के दर पै था आज इस्लाम का शैदाई बन चुका था । उसी बा अमल मुबल्लिग के हाथों तगूदार अपनी पूरी तातारी क़ौम समेत मुसल्मान हो गया उस का इस्लामी नाम अहमद रखा गया । तारीख़ गवाह है कि एक मुबल्लिग के मीठे बोल की ब-र-कत से वस्ते एशिया की खूख़ार तातारी सल्तनत इस्लामी हुकूमत से बदल गई । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो ।

امین بِجَاوِ النَّبِیِّ الْاَمِینِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मीठी ज़बान : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? मुबल्लिग हो तो ऐसा ! अगर तगूदार के तीखे जुम्ले पर वोह बुजुर्ग رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ गुस्से में आ जाते तो हरगिज़ येह म-दनी नताइज बर आमद न होते । लिहाज़ा कोई कितना ही गुस्सा दिलाए हमें अपनी ज़बान को क़ाबू में ही रखना चाहिये कि जब येह बे क़ाबू हो जाती है तो बा'ज़ अवक़ात बने बनाए खेल भी बिगाड़ कर रख देती है । मीठी ज़बान ही तो थी कि जिस की शीरीनी और चाशनी ने तगूदार जैसे वहशी और खूख़ार इन्साने बद तर अज़ हैवान को इन्सानिय्यत के बुलन्दो बाला मन्सब पर फ़ाइज़ कर दिया ।

है फ़लाहो कामरानी नरमी व आसानी में

हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में



फरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुख्खे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज्जवाइद)

ज़िक्रो दुआ के अन्दाज़ पर गीबत : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْوَالِی ने एहयाउल उलूम जिल्द 3 में सब से बद तरीन गीबत का तज़्किरा करते हुए जो कुछ फ़रमाया है उस की रोशनी में अर्ज करने की सअूय करता हूं : बा'ज लोग ज़रूरत से कुछ ज़ियादा ही होशियार होते हैं और वोह शैतान के झांसे में आ कर, الْحَمْدُ لِلّٰهِ कह कर नीज़ दुआइया जुम्ले बोल कर गीबत बल्कि साथ ही साथ रियाकारी के भी मुर-तकिब हो जाते हैं ! म-सलन शख़िसय्यात या अरबाबे इक्तिदार की तरफ़ मैलान रखने वाले किसी आदमी का तज़्किरा निकलने पर साफ़ लफ़्जों में बुराई करने के बजाए कुछ इस तरह बोलेंगे : الْحَمْدُ لِلّٰهِ वज़ीरों, अफ़्सरों और सरमाया दारों से अपना कोई वासिता नहीं, इन दुन्यादारों के आगे कौन ज़लील हो ! (यूं इनडायरेक्ट उस मख़सूस आदमी की जो बड़े लोगों से मैलजोल रखता है गीबत हो चुकी) या किसी की बात चलने पर उस के बारे में यूं कहेंगे : हम बे हयाई से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं, इलाही खैर फ़रमा । यूं ज़िक्र व दुआ के अन्दाज़ में किसी मख़सूस आदमी के तज़्किरे के मौक़अ पर बिला इजाज़ते शर-ई उस के “बे हया” होने का इज़हार कर के उस की गीबत में मुब्तला हुए और बन्द लफ़्जों में अपनी पारसाई (या'नी बा हया होने) का ए'लान कर के रियाकारी की तबाहकारी में जा पड़ने का ख़तरा मोल लिया । इसी अन्दाज़ में दुआ ही दुआ के अन्दर मख़सूस आदमियों की दीगर ख़ामियों के इनडायरेक्ट या'नी बन्द अल्फ़ाज़ में तज़्किरे कर डालते और सवाब के बजाए अज़ाब के हक़दार बनते हैं । इसी तरह बा'ज अवकात किसी की ता'रीफ़ कर के भी गीबत की अमीक़ (या'नी गहरी) खाई में जा पड़ते हैं म-सलन कहेंगे : “سَيِّئُ الْفُلَاں ! पक्का नमाज़ी परहेज़ गार है, उस के अख़्लाक़ भी उम्दा हैं मगर बेचारा ऐसी बात में मुब्तला है जिस में हम सभी घिरे हुए हैं मेरा मत्लब है कि उस में सब्र की कमी है !” देखा आप ने ! शैतान ने किस क़दर चालाकी के साथ ता'रीफ़ करवा कर और काइल की तवाज़ोअ और इन्किसारी खुद अपनी ही ज़बानी बुलवा कर अगले को “बे सब्र” कहलवा कर गीबत की आफ़त में फंसा दिया ! इस मिसाल को आसान अन्दाज़ में यूं समझिये जैसा कि बा'जों की आदत होती है कि यार वोह है तो शरीफ़ आदमी मगर उस का मेरी तरह दिल



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुर्कदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बदख़ा हो गया । (इब्ने सुननी)

ज़रा छोटा है, उस को यूं तो दीन से बहुत महबबत है मगर मेरी तरह नमाज़ों में सुस्त है, फुलां आदमी अच्छा है मगर मेरी तरह ठन्डा है कि इस्तिन्जा खाने में जाता है तो बैठ जाता है वगैरा । इसी तरह बा'ज अवकात किसी के ऐब या उस की ख़ता का यूं तज़्किरा किया जाता है : “बेचारे से गुस्से ही गुस्से में फुलां को थप्पड़ मार देने की जो भूल हुई है इस पर मुझे सख़्त अफ़सोस है ! मैं दुआ करता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रहम फ़रमाए ।” इस तरह दुआ के अन्दाज़ में उस मुसलमान के गुस्से में आ कर जुल्मन किसी को थप्पड़ जड़ देने के ऐब व ख़ता का तज़्किरा कर डाला, और गीबत की मुसीबत गले पड़ी । दुआ वाली मिसाल देने के बा'द हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ फ़रमाते हैं : **इज़्हारे अफ़सोस और दुआ में येह शख्स झूट बोलता है, दुआ करनी ही थी तो नमाज़ के बा'द चुपके से भी की जा सकती थी और अगर अफ़सोस ही था तो उस की ख़ता का जो अब इस ने डंका बजाया इस पर भी अफ़सोस होना चाहिये था ! इसी तरह अगर किसी के गुनाह का पता लग जाता है तो बा'ज नादान लोग सब के सामने इस तरह कहते हैं :** “बेचारा (म-सलन फुलां के पैसे ख़ुर्द बुर्द करने की) बहुत बड़ी आफ़त में फंस गया है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की और हमारी तौबा क़बूल फ़रमाए ।” **येह दुआ भी हकीकत में दुआ नहीं बल्कि गीबत का एक बद तरीन अन्दाज़ है ।**

(ماخوذ از: إحياء العلوم ج ۳ ص ۱۷۹)

क़ियामत का होशरुबा मन्ज़र : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गीबत की हकीकत को समझने और अपनी ज़बान को क़ाबू में रखने का ज़ेहन बनाइये, खुद को कहूरे इलाही جَلَّ جَلَالُہ سے डराइये और ज़रा क़ियामत के होशरुबा मन्ज़र को तसव्वुर में लाइये । दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द अव्वल सफ़हा 133 ता 135 के मज़मून का खुलासा है : इस वक़्त सूरज चार हज़ार बरस की राह पर है और इस तरफ़ उस की पीठ है, क़ियामत के दिन सूरज सिर्फ़ सवा मील पर होगा और उस का मुंह इस तरफ़ होगा, भेजे खौलते होंगे और इस कसरत से पसीना निकलेगा कि सत्तर गज़ ज़मीन में ज़ब्ब हो जाएगा, फिर जो पसीना ज़मीन न पी सकेगी वोह ऊपर



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमते भेजता है। (मुस्लिम)

चढ़ेगा, किसी के टख्नों तक होगा, किसी के घुटनों तक, किसी के कमर, किसी के सीने, किसी के गले तक, और काफ़िर के तो मुंह तक चढ़ कर मिस्ल लगाम के जकड़ जाएगा, जिस में वोह डुबकियां खाएगा। उस गरमी की हालत में प्यास की जो कैफ़ियत होगी मोहताजे बयान नहीं, ज़बानें सूख कर कांटा हो जाएंगी, बा'जों की ज़बानें मुंह से बाहर निकल आएंगी, दिल उबल कर गले को आ जाएंगे, हर मुब्तला ब क-दरे गुनाह तकलीफ़ में मुब्तला किया जाएगा, जिस ने चांदी सोने की ज़कात न दी होगी उस माल को ख़ूब गर्म कर के उस की करवट और पेशानी और पीठ पर दाग़ करेंगे, जिस ने जानवरों की ज़कात न दी होगी उस के जानवर क़ियामत के दिन ख़ूब तय्यार हो कर आएंगे और उस शख्स को वहां लिटाएंगे और वोह जानवर अपने सींगों से मारते और पाउं से रौंदते उस पर गुज़रेंगे, जब सब इसी तरह गुज़र जाएंगे फिर उधर से वापस आ कर यूहीं उस पर गुज़रेंगे, इसी तरह करते रहेंगे, यहां तक कि लोगों का हिसाब ख़त्म हो। وَعَلَىٰ هَٰذَا الْقِيَاسُ । फिर बा वुजूद इन मुसीबतों के कोई किसी का पुरसाने हाल न होगा, भाई से भाई भागेगा, मां बाप औलाद से पीछा छुड़ाएंगे, बीबी बच्चे अलग जान चुराएंगे, हर एक अपनी अपनी मुसीबत में गरिफ़्तार, कौन किस का मददगार होगा.....! हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म होगा, ऐ आदम ! दो ज़ख़ियों की जमाअत अलग कर, अर्ज़ करेंगे : कितने में से कितने ? इर्शाद होगा : हर हज़ार से नव सो निनानवे, येह वोह वक़्त होगा कि बच्चे मारे ग़म के बूढ़े हो जाएंगे, हम्ल वाली का हम्ल साक़ित हो जाएगा, लोग ऐसे दिखाई देंगे कि नशे में हैं, हालां कि नशे में न होंगे, व लेकिन अल्लाह का अज़ाब बहुत सख़्त है, गरज़ किस किस मुसीबत का बयान किया जाए, एक हो, दो² हों, सो¹⁰⁰ हों, हज़ार¹⁰⁰⁰ हों तो कोई बयान भी करे, हज़ारहा मसाइब और वोह भी ऐसे शदीद कि अल अमां अल अमां.....! और येह सब तकलीफ़ें दो चार घण्टे, दो चार दिन, दो चार माह की नहीं, बल्कि क़ियामत का दिन कि पचास हज़ार बरस का एक दिन होगा।

(बहारे शरीअत, जिल्द अब्वल, स. 133 ता 135)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह عُذُّوْهُ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

लोग मुता-लबे कर रहे होंगे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसे होशरुबा हालात में चारों जानिब से नफ़सी नफ़सी की आवाज़ बुलन्द होगी, हर तरफ़ से वावेला की आवाज़ कान में पड़ेगी, दोज़ख़ सामने जोश मारती हुई होगी, हर हक़ वाला अपने हक़ का मुता-लबा करेगा और रब्बुल इज़्ज़त की ख़िदमत में नालिश (या'नी फ़रियाद) करेगा, कोई कहेगा : इस ने मेरी ग़ीबत की, इस ने मेरा मज़ाक़ उड़ाया, कोई बोलेगा : इस ने मुझ पर जुल्म किया, कोई कहेगा : इस ने मुझे अहमक कहा, कोई कहेगा : इस ने मुझे बे वुकूफ़ बोला, कोई पुकारेगा : इस ने मुझे क़त्ल किया, कोई फ़रियाद करेगा : इस ने मेरा क़र्ज़ा दबा लिया, कोई कह रहा होगा : इस ने मेरी किताब छुपाई, कोई कहेगा : इस ने मुझे घूर कर देखा और डरा दिया था, किसी का दा'वा होगा : इस ने मुझे बिला वजह झाड़ा था, कोई बोल रहा होगा : इस ने मेरा ऐब खोल दिया था, कोई कहता होगा : इस ने मुझे धक्का मारा था । बहर हाल तमाम अहले हुकूक और जिन्होंने ने हक़ तलफ़ किये होंगे उन को फ़िरिश्ते परवर्द गार عُذُّوْهُ के सामने हाज़िर करेंगे, येह लोग नदामत से सर झुकाए हुए होंगे, और अल्लाह तबा-र-क व तआला हर एक के साथ अदलो इन्साफ़ फ़रमाएगा, हर हक़ वाले को खुश करेगा, उन लोगों की नेकियां इन को देगा और इन की बदियां उन के सर डालेगा । फिर अगर फ़ज़्ले खुदा عُذُّوْهُ शामिले हाल हुवा तो उन की नजात हो जाएगी वरना जहन्नम में पड़े एक मुद्दत तक जलेंगे ।

शानो शौकत के होने का अज़ीज़

है अबस अरमान आख़िर मौत है

ऐशो ग़म में साबिरो शाकिर रहे

है वोही इन्सान आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُونُوْا لِی اللہ اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफा ﷺ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

इस्लाह का हसीन अन्दाज़ : मीठे मीठे म-दनी आका ﷺ को जब किसी की बात पहुंचती जो ना गवार गुज़रती तो उस का पर्दा रखते हुए उस की इस्लाह का येह हसीन अन्दाज़ होता कि इर्शाद फ़रमाते : **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا كَذًا وَكَذَا** या 'नी लोगों को क्या हो गया जो ऐसी बात कहते हैं। (سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٢٩ حديث ٤٧٨٨)

काश ! हमें भी इस्लाह का ढंग आ जाए, हमारा तो अक्सर हाल येह होता है कि अगर किसी को समझाना भी हो तो बिला ज़रूरते शर-ई सब के सामने नाम ले कर या उसी की तरफ़ देख कर इस तरह समझाएं कि बेचारे की पोलें भी खोल कर रख देंगे। अपने ज़मीर से पूछ लीजिये कि येह समझाना हुवा या अगले को ज़लील (DEGRADE) करना हुवा ? इस तरह सुधार पैदा होगा या मज़ीद बिगाड़ बढ़ेगा ? याद रखिये ! अगर हमारे रो'ब से सामने वाला चुप हो गया या मान गया तब भी उस के दिल में ना गवारी सी रह जाएगी जो कि बुज़ो कीना गीबत व तोहमत वगैरा के दरवाज़े खोल सकती है। हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “जिस किसी ने अपने भाई को ए'लानिया नसीहत की उस ने उसे ऐब लगाया और जिस ने चुपके से की तो उसे ज़ीनत बख़्शी।” (شُعَبُ الْإِيمَان ج ٦ ص ١١٢ رقم ٧٦٤١) अलबत्ता अगर पोशीदा नसीहत नफ़्अ न दे तो फिर (मौक़अ और मन्सब की मुना-सबत से) ए'लानिया नसीहत करे। (تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٤٩)

हाजी मुशताक़ सुनहरी जालियों के रू बरू : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा मुकम्मल शिक़त कीजिये न जाने किस के सदक़े किस पर कब करम हो जाए ! आप की तरगीब के लिये एक ईमान अफ़रोज़ म-दनी बहार गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे बाबुल इस्लाम सिन्ध की एक मस्जिद के



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

मुअज़्ज़िन साहिब ने कुछ इस तरह हलफ़िया तहरीर दी कि सि. 2004 ई. में सहराए मदीना (बाबुल मदीना, कराची) में होने वाले तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की आखिरी निशस्त में जब ज़िक्रुल्लाह शुरू हुआ तो मैं आंखें बन्द कर के ज़िक्रुल्लाह में मस्त हो गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ खुल गया और मैं ने खुद को मक्कतुल मुकर्रमा رَاٰی اللّٰہُ شَرْفًاوُتَعْظِیْمًا में पाया। लोग जूक दर जूक तवाफ़े ख़ानए का'बा में मशगूल थे। ज़िक्रुल्लाह के बा'द जब रिक्कत भरे अन्दाज़ में तसव्वुरे मदीना का सिलसिला शुरू हुआ तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ मैं ने खुद को मदीनए मुनव्वरह رَاٰی اللّٰہُ شَرْفًاوُتَعْظِیْمًا में पाया, सब्ज़ गुम्बद निगाहों के सामने था, इतने में सुनहरी जालियां जल्वे बिखेरने लगीं। वहां मैं ने देखा कि दा'वते इस्लामी की मरकज़ी मजलीसे शूरा के मर्हुम निगरान, खुश इल्हान ना'तख़्वान बुलबुले रोज़ए रसूल हाजी मुश्ताक अत्तारी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْبَارِئِ सुनहरी जालियों के रू बरू दस्त बस्ता हाज़िर हैं, मैं भी हाथ बांध कर चन्द क़दम पीछे खड़ा हो गया, मुझ पर रिक्कत तारी थी, जज़्बात काबू में न रहे और मैं दीवानगी के आलम में आगे बढ़ते हुए सुनहरी जालियों के मज़ीद करीब हो गया, करम बालाए करम कि जालियां खुल गईं, हर तरफ़ नूरुन अला नूर हो गया, खुदा की क़सम ! मेरी निगाहों के सामने मक्की म-दनी आका मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जल्वे फ़रमा थे उन्होंने ने मुझ गुनहगार को मुसा-फ़हा की सआदत इनायत फ़रमाई। वल्लाह عَزَّوَجَلَّ हाथ ऐसे मुलाइम थे जिस की कोई मिसाल नहीं।

करम तुझ पे शाहे मदीना करेंगे

तू अपना ले दिल से ज़रा म-दनी माहोल

खुदा के करम से दिखाएगा इक दिन

तुझे जल्वे मुस्तफ़ा म-दनी माहोल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

मुक़द्दर वालों के सौदे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुक़द्दर वालों के सौदे हैं, बस जिस पर करम हो जाए ! हम सभी को चाहिये कि जल्वे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हसरत दिल



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझे पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عُزَّوَجَلَّ के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उदुद पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज्जाक)

में बढ़ाएं और तमन्नाए दीदार में अशक बहाएं, वोह आशिकाने रसूल किस क़दर बख्त बेदार हैं
जो जल्वए यार से अपनी आंखें ठन्डी करते हैं, उश्शाक की भी क्या शान है,

बहारे खुल्द सदक़े हो रही है रूए आशिक पर
खिली जाती हैं कलियां दिल की तेरे मुस्कराने से

दीदारे मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वज़ीफ़ा : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे
मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब "मल्फ़ूज़ाते आ'ला
हज़रत" (मुकम्मल) सफ़हा 115 ता 116 पर है :

अर्ज़ : हबीबे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारते शरीफ़ हसिल होने का क्या तरीका है ?

इर्शाद : दुरुद शरीफ़ की कसरत शब में और सोते वक़्त के इलावा हर वक़्त तक्सीर (या'नी
कसरत) रखे बिल ख़सूस इस दुरुद शरीफ़ को बा'दे इशा सो बार या जितनी बार पढ़ सके पढ़े

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرْتَنَا اَنْ نُصَلِّيَ عَلَیْہِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا هُوَ اَهْلُهُ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی رُوْحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَرْوَاحِ
اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی جَسَدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَجْسَادِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی قَبْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْقُبُوْرِ صَلِّی اللّٰهُ عَلٰی سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ ؕ

हुसूले ज़ियारते अक्दस (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लिये इस से बेहतर सीगा नहीं मगर ख़ालिस
ता'जीमे शाने अक्दस (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के लिये पढ़े इस निय्यत को भी जगह न दे कि मुझे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुक़दे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

ज़ियारत अता हो, आगे उन का करम बेहद व बे इन्तिहा है।

فِرَاقٌ وَوَصْلٌ چہ خَوَاضِی رِضائِی دُوسْتِ طَلَبِ

کَہ حَیْفٌ بَاشَدِ اَز وَغَیْرِ اَوْ تَمَنّائِی

(या 'नी नज़्दीकी व दूरी से क्या मतलब ! दोस्त की खुशनूदी तलब कर कि इस के इलावा दोस्त से किसी और शै की आरजू करना काबिले अफ़सोस है)

जल्वए यार इधर भी कोई फ़ैरा तेरा

हस्रतें आठ पहर तकती हैं रस्ता तेरा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

ग़ीबत नेकियों को जला देती है : आह ! हमारे मुआशरे की बरबादी ! अफ़सोस सद करोड़

अफ़सोस ! ग़ीबत करने और सुनने की आदत ने हर तरफ़ तबाही मचा रखी है। मन्कूल है : आग

भी खुशक लकड़ियों को इतनी जल्दी नहीं जलाती जितनी जल्दी ग़ीबत बन्दे की नेकियों को

जला कर रख देती है।

(احیاء العلوم ج ۳ ص ۱۸۳)

मेरी नेकियां कहां गई ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत की तबाह कारियों में से येह

भी है कि इस की वजह से नेकियां जाएँ हो जाती हैं जैसा कि अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब,

मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक क़ियामत के रोज़ इन्सान

के पास उस का खुला हुवा नामए आ'माल लाया जाएगा, वोह कहेगा मैं ने जो फुलां फुलां नेकियां

की थीं वोह कहां गई ? कहा जाएगा : तूने जो ग़ीबतें की थीं इस वजह से मिटा दी गई हैं।

(التَّوْبَةُ وَالتَّوْبَةُ ج ۳ ص ۳۲۲ حدیث ۳۰)

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हाहत है। (अबू या'ला)

क़ियामत में एक एक लफ़्ज़ का हिसाब होगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आह !

बरोजे क़ियामत एक एक लफ़्ज़ का हिसाब होगा। ग़ौर कीजिये ! इस फ़ानी दुन्या में “उम्मे अज़ीज के चार दिन” गुज़ारने के बा'द हमें अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा और फिर उस की वहशत आमेज़ तन्हाइयों में न जाने कितना अर्सा हमारा क़ियाम होगा। फिर जब अर्से महशर में हिसाबो किताब के लिये हाज़िरी होगी तो अपना हर हर अमल अपने नामए आ'माल में लिखा हुवा दिखाई देगा जैसा कि कुरआने मजीद, फुरक़ाने हमीद के पारह 30 सू-रतुज़्ज़िल्ज़ाल आयत नम्बर 6 ता 8 में इर्शाद होता है :

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا
أَعْمَالَهُمْ ۖ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ
خَيْرًا يَرَهُ ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ
شَرًّا يَرَهُ ۖ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ फिरंगे कई राह हो कर ताकि अपना किया दिखाए जाएं तो जो एक ज़रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

आह ! अल्लाहु क़दीर عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर हमारे बारे में क्या है कुछ नहीं मा'लूम, आया बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त से परवानए मग़ि़रत जारी होगा या (مَعَاذَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ) दुख़ूले जहन्नम का हुक्म मिलेगा इस का कुछ नहीं पता। (نَسْأَلُ الْعَاقِبَةَ) या'नी हम अफ़ियत का सुवाल करते हैं)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी !

हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब ^{عَزَّوَجَلَّ}

अफ़व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब ^{عَزَّوَجَلَّ}

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

تُونُوا إِلَى اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)J

जिस की गीबत की जाए वोह फ़ाएदे में..... : जब आप को मा'लूम हो कि मेरी गीबत की गई है तो सीख पा होने (या'नी गुस्से में आ जाने) के बजाए सब्रो तमम्मुल से काम लीजिये और यूं भी नुक्सान उसी का होता है जिस ने गीबत की, जिस की गीबत की गई वोह तो फ़ाएदे ही में रहता है चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं : बन्दे को क़ियामत के दिन जब उस का नाम आ'माल दिया जाएगा तो वोह उस में ऐसी नेकियां देखेगा जो इस ने न की होंगी, अर्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब عز وجل ! येह मेरे लिये कहां से आ गई ? कहा जाएगा : येह वोह नेकियां हैं जो लोगों ने तुम्हारी गीबत की थी।

(تنبيه المغترين ص ۱۹۲)

मेरी मां मेरी नेकियों की ज़ियादा हक़दार है : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رضي الله تعالى عنه के सामने किसी ने गीबत का तज़्किरा किया तो फ़रमाया : अगर मैं किसी की गीबत करना दुरुस्त जानता तो अपनी मां की गीबत करता क्यूं कि मेरी नेकियों की सब से ज़ियादा हक़दार वोही है।

(مشاهع العابدین ص ۶۵)

मां के पूरे हुकूक अदा नहीं किये जा सकते : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दिल को चोट लगाने के लिये इस हिकायत में इब्रत के काफ़ी म-दनी फूल हैं, गोया फ़रमा रहे हैं कि नेकियां चूंक अनमोल हैं और मां के हुकूक से भी सुबुकदोशी मुम्किन नहीं लिहाज़ा अगर नेकियां किसी को देनी ही हों तो इन्सान अपनी मां ही को क्यूं न दे दे ! इस हिकायत से मां की अहम्मियत का भी पता चलता है। बहर हाल गीबत में कोई भलाई नहीं इस में रुस्वाई ही रुस्वाई है।

ऐ प्यारे खुदा अज़ पए सुल्लाने मदीना صلی الله تعالى علیه وآله وسلم

गीबत की नुहूसत से मेरी जान छुड़ा दे



फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे । (त-बरानी)

आधे गुनाह मुआफ़ : हज़रते सय्यिदुना अता खुरासानी سُورَةُ الرَّبَّانِي फरमाते हैं : अगर कोई आप की ग़ीबत करे तो परेशान न हों, ग़ीबत करने वाला ना दानिस्ता तौर पर आप ही के साथ भलाई कर रहा है ! हमें येह बात पहुंची है कि जिस की एक बार ग़ीबत की जाए उस के निस्फ़ (या'नी आधे) गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं ।

(تنبيه المغترين ص १९६)

सारी रात की इबादत और ग़ीबत : एक बार हज़रते सय्यिदुना हातिम असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْثَرُ ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को इस पर आ़र (या'नी ग़ैरत) दिलाई । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फरमाया : गुज़श्ता शब कुछ अफ़राद सारी रात नवाफ़िल में मसरूफ़ रहे हैं और सुब्ह उन्होंने ने मेरी ग़ीबत की है तो उन की उस रात की इबादत बरोज़े क़ियामत मेरे मीज़ाने अमल (या'नी आ'माल तुलने की तराजू) में रख दी जाएगी !

(وَبُهَاجُ الْعَابِدِينَ ص ६६)

100 बरस की नफ़ली इबादत और एक ग़ीबत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुजुर्गानि दीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ الْفَرِيقِينَ के फ़रामीन में हिक्मत के बे शुमार म-दनी फूल होते हैं, मज़कूरा हिकायत में ग़ीबत करने वालों को बड़े अच्छूते अन्दाज़ में चोट लगाई गई है ताकि वोह ग़ीबतें कर के अपनी इबादतें दाव पर न लगाएं, इस हिकायत से येह म-दनी फूल भी मिला कि जो आदमी ख़्वाह सारी सारी रात इबादात में गुज़ारे मगर ग़ीबतों से बाज़ न आए तो उस की इबादात व रियाज़ात उन लोगों को दे दी जाएंगी जिन की ग़ीबतें और हक़ त-लफ़ियां की हैं ! सच पूछो तो 100 बरस की नफ़ली इबादत के मुक़ाबले में सिर्फ़ एक बार की ग़ीबत ज़ियादा ख़तरनाक है क्यूं कि अगर कोई शख्स ज़िन्दगी में कभी भी नफ़ली इबादत नहीं करेगा तब भी क़ियामत में इस पर उस की गरिफ़्त (या'नी पकड़) नहीं है जब कि ग़ीबत में रब्बुल इज़ज़त की मा'सिय्यत (या'नी ना फ़रमानी) और सवाबे आख़िरत की इज़ाअत (या'नी ज़ाएअ होना) और हलाकत है । दुन्या की सारी दौलत का



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

हाथ से जाते रहना अगर्चे नफ़्स पर गिरांबार है मगर हकीकत में बहुत छोटा नुक़सान है और क़ियामत में “एक नेकी” भी अगर किसी को हक़ त-लफ़ी के इवज़ देनी पड़ी तो खुदा की क़सम येह बहुत बड़ा नुक़सान है।

मीज़ां पे सब खड़े हैं आ 'माल तुल रहे हैं

रख लो भरम खुदारा अत्तार क़ादिरि का

हाजत रवाई और बीमार पुर्सी की फ़ज़ीलत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत की बद ख़स्लत से जान छुड़ाइये, नेकियां बचाइये बल्कि ख़ूब बढ़ाइये, नेकियां बढ़ाने के मक्की म-दनी नुस्ख़े अपनाइये और जन्नतुल फ़िरदौस के हक़दार बन जाइये, **سَيِّحِنَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ! कितने खुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें जो अपनी ज़बान को **नेकी की दा'वत**, सुन्नतों भरे **बयान** और ज़िक्रो दुरूद में लगाए रखते हैं। मुसल्मान की हाजत रवाई करना कारे सवाब है नीज़ बीमार या परेशान मुसल्मान को तसल्ली देना भी **ज़बान** का अज़ीमुश्शन इस्ति'माल है। चुनान्चे **हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर** **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا** और **हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा** **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से रिवायत है दोनों फ़रमाते हैं : जो अपने किसी मुसल्मान भाई की हाजत रवाई के लिये जाता है **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस पर **पछत्तर हज़ार मलाएका** के ज़रीए साया फ़रमाता है, वोह फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ करते हैं और वोह फ़ारिग़ होने तक रहमत में गोताज़न रहता है और जब वोह इस काम से फ़ारिग़ हो जाता है तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस के लिये एक हज़ और एक उम्रे का सवाब लिखता है। और जिस ने मरीज़ की इयादत की **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस पर **पछत्तर हज़ार मलाएका** के ज़रीए साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक द-रजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रहमत उसे ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रहमत उसे ढांपे रहेगी।

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ٣ ص ٢٢٢ حديث ٤٣٩٦)



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़ाक)

जन्नत के दो² जोड़े : जब किसी का बच्चा बीमार हो जाए, कोई बे रोज़गार या कर्ज़दार हो जाए, हादसे का शिकार हो जाए, चोर या डाकू माल ले कर फ़िरार हो जाए, कारोबार में नुक़सान से हम कनार हो जाए कोई चीज़ गुम हो जाने के सबब बे क़रार हो जाए, अल ग़रज़ किसी तरह की भी परेशानी से दो चार हो जाए उस की दिलजूर्ई के लिये ज़बान चलाना बहुत बड़े सवाब का काम है चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना जाबिर رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि हुस्ने अख़लाक के पैकर, नबियों के ताजवर, रसूले अन्वर, महबूबे रब्बे अक्बर صلى الله تعالى عليه و آله و سلم का इर्शादि रूह परवर है: “जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ताजिय्यत करेगा अल्लाह عزّوجلّ उसे तक्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह पर रहमत फ़रमाएगा और जो किसी मुसीबत ज़दा से ताजिय्यत करेगा अल्लाह عزّوجلّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की कीमत (सारी) दुनिया भी नहीं हो सकती।”

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ٦ ص ٤٢٩ حديث ٩٢٩٢)

या खुदा सदक़ा नबी का बख़्श मुझ को बे हिसाब

नज़ओ क़ब्रो हशर में मुझ को न देना कुछ अज़ाब

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْتُوا لِي اللهُ ا اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गीबत सुनना भी हराम है : ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने गाना गाने और गाना सुनने से और गीबत करने और गीबत सुनने से और चुगली करने और चुगली सुनने से मन्अ फ़रमाया। (हज़रते الْجَامِعُ الصَّغِيرُ لِلْسُّيُوطِي ص ६० حديث ९३४८)। अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मुनावी عليه رحمة الله الهادي फ़रमाते हैं: गीबत सुनने वाला भी गीबत करने वालों में से एक होता है।

(فيض القدير ج ٣ ص ٦١٢ تحت الحديث ٣٩٦٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुअफ़ होंगे । (कन्जुल उम्माल)

ग़ीबत में शिर्कत के तमाम अन्दाज़ गुनाह हैं : ग़ीबत सुनने पर खुश होना और इस की तरफ़ तवज्जोह से कान लगाना दिलचस्पी लेते हुए हां, हूं, हैं, जी वगैरा आवाजें निकालना भी ग़ीबत है । ग़ीबत सुनने वाले की इस ह-र-कत से ग़ीबत करने वाले को मज़ीद तक्विय्यत मिलती है और वोह मज़ीद बढ़ चढ़ कर ग़ीबत करता है, इसी तरह ग़ीबत सुन कर खुशी और तअज्जुब का इज़हार भी गुनाह है म-सलन हैरत के साथ कहना : अरे ! येह ऐसा शख्स है ! मैं तो इस को अच्छा आदमी समझता था । दिलचस्पी के साथ ग़ीबत सुनने, तअज्जुब का इज़हार करने, हां में हां मिलाने के अन्दाज़ में सर हिलाने वगैरा में ग़ीबत करने वाले की पज़ीराई और हौसला अफ़ज़ाई का सामान है बल्कि ऐसे मौक़अ पर बिला इजाज़ते शर-ई ख़ामोश रहने वाला भी ग़ीबत में शरीक ही माना जाएगा ।

(माखुद अ: إحياء العلوم ج ३ ص १८०)

बादशाह की सड़ी हुई लाश : एक मर्तबा कुछ लोगों ने हज़रते सय्यिदुना मैमून रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से सामने एक बादशाह की बुराइयां बयान करना शुरू कर दीं, आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ख़ामोशी से सुनते रहे, खुद उस के बारे में कोई अच्छी या बुरी बात नहीं की । जब रात सोए तो ख़्वाब में देखा कि उसी बादशाह की सड़ी हुई बदबूदार लाश आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ के सामने रखी है और एक आदमी कह रहा है : “इसे खाओ !” फ़रमाया : मैं इसे क्यूं खाऊं ? उस ने जवाब दिया : इस लिये कि तुम्हारे सामने इस बादशाह की ग़ीबत की गई थी । फ़रमाया : मगर मैं ने तो इस के बारे में कोई अच्छा या बुरा कलाम नहीं किया ! जवाब मिला : लेकिन तुम इस की ग़ीबत सुनने पर रिज़ा मन्द थे । (صَفَةُ الصَّفْوَةِ لابن الجوزي ج ३ ص १०६) हज़रते सय्यिदुना हज़म रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मैमून रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ खुद किसी की ग़ीबत करते न अपने सामने किसी को ग़ीबत करने देते बल्कि अगर कोई ग़ीबत करने की कोशिश करता तो उसे मन्अ फ़रमा देते अगर वोह बाज़ आ जाता तो ठीक वरना आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ वहां से उठ खड़े होते ।

(حَلِيَّةُ الْأَوْلِيَاءِ ج ३ ص १२७ رقم ३६१८)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज्जवाइद)

सियासी तब्सरों की बैठकें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि सियासी काइदीन, अरबाबे इक्तदार और हुक्मरान तब्के की गीबत की भी खुली छूट नहीं । सद करोड़ अफ़सोस ! आज कल शायद ही हमारी कोई निशस्त ऐसी हो जिस में किसी सियासी लीडर या वज़ीर या क़ौमी या सूबाई एसेम्बली के किसी रुक्न की इज़्ज़त की धज्जियां न उड़ाई जाती हों । कभी वज़ीरे आ'ज़म ह-दफ़े तन्कीद होता है तो कभी सद्र, कभी वज़ीरे आ'ला की शामत आती है तो कभी गवर्नर की । मुख़्तलिफ़ लोगों के मु-तअल्लिक़ नाम बनाम जोरदार मन्फ़ी (NEGATIVE) बहसों की जातीं, जी भर कर कीचड़ उछाला जाता और एक से एक बुरे नाम रखे जाते हैं । ग़ौर से सुनिये ! रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत नम्बर 11 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَا تَنَابَرُوا بِلَأَلِقَابٍ ط
(پ ۲۶ الحجرات: ۱۱)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो ।

फ़िरिशते ला 'नत करते हैं : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "आंसूओं का दरिया" सफ़हा 246 ता 247 पर येह हदीसे पाक लिखी है : हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अमिर رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इशादि हकीकत बुन्याद है : जिस ने किसी मुसल्मान को उस के नाम के इलावा किसी लफ़्ज़ (या'नी बुरे नाम) से पुकारा उस पर मलाएका ला'नत भेजते हैं ।
(الْجَامِعُ الصَّغِيرُ لِلْسُّيُوطِيِّ ص ۵۲۰ حَدِيثُ ۸۶۶۶)

अख़्बारी ख़बरों का हाल बे हाल : मनचले नौ जवानों की अक्सर मंडलियों और बड़े बूढ़ों की कसीर बैठकों में हुक्मरानों और सियासी लीडरों के बारे में गीबतों, तोहमतों, बद गुमानियों और ऐब दरियों का वोह मन्हूस सिल्सिला चलता है कि **أَلَامَانُ وَالْحَفِیْظُ !** फिर सितम बालाए सितम येह कि दलील भी किसी के पास कुछ नहीं होती ! शायद कोई कहे



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख़ हो गया । (इन्ने सुनी)

कि क्यूं नहीं हम ने फुलां अख़बार में पढ़ा था, अब बिलफ़र्ज वोह अख़बार फिल्मी अदाकाराओं की फ़ोहूश अदाओं की तस्वीरों से भरपूर इश्तिहारों, गन्दी ह-र-कतों की जज़्बात भड़काने वाली (SEX APEALING) ख़बरों, छुप कर गुनाह करने वालों की बिला ज़रूरते शर-ई आबरू रेज़ियों, हुक्मरानों, सियासत दानों और मुआशरे के हर तब्क़े के मुसलमानों की तज़्लीलों, तोहमतों और इल्ज़ाम तराशियों और मरे हुए मुसलमानों तक की ग़ीबतों से भरपूर रहता हो तो मेरे खयाल में अगर कोई वलिय्युल्लाह भी ग़ीबतों और गुनाहों भरी ख़बरों से भरपूर और बे पर्दा औरतों की तस्वीरों से मा'मूर ऐसा अख़बार पढ़ने में मशगूल हो तो शायद अपनी विलायत न बचा पाए ! बुराइयों से सरशार किसी ऐसे अख़बार में छपी हुई "ऐब दरियों और ग़ीबतों भरी ख़बर" को दलील कैसे बनाया जा सकता है ! अगर ख़बर सच्ची भी थी तब भी बिला मस्लहते शर-ई किसी मुसलमान की बुराई (छापने और) बयान करने और इस तरह की गुनाहों भरी ख़बर बिला इजाज़ते शर-ई पढ़ने की शरीअत ने कब इजाज़त दी है ! इसी को तो इस्लाम ने ऐब दरी और ग़ीबत क़रार दे कर इस की भरपूर अन्दाज़ में हौसला शिकनी फ़रमाई है ।

कुत्तों की तरह काटते और नोचते होंगे ! : बहर हाल ऐसी सोहबतों और बैठकों को तर्क करना ज़रूरी है जिन में गुनाहों भरी बहसें छिड़तीं, हालाते हाज़िरा पर फुज़ूल तब्सरे होते, मुसलमानों की इज़्ज़तें पामाल होतीं और ख़ूब ग़ीबतें की जाती हैं । आप की तख़वीफ़ (या'नी अज़ाब से डराने) के लिये अर्ज़ है कि दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूअ़ा 300 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "आंसूओं का दरिया" सफ़हा 253 पर है : एक बुजुर्ग رحمه الله تعالى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि जब क़ियामत का दिन आएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के लिये मिल कर बैठने वाले और गुनाहों पर एक दूसरे की मदद करने वाले जम्अ होंगे, फिर वोह घुटनों के बल खड़े होंगे और एक दूसरे को कुत्तों की तरह काटते और नोचते होंगे, येह वोह बद नसीब होंगे जो बिगैर तौबा किये दुन्या से रुख़्सत हुए होंगे ।

(بَحْرُ الدُّمُوعِ (عربی) ۱۸۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुद्ध और दस मरतबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे क़ियमत के दिन मेरी शफ़अत मिलेगी । (मजमूअुन्नुवाइद)

मैं फ़ालतू बातों से रहूँ दूर हमेशा
चुप रहने का अल्लाह ! सलीक़ा तू सिखा दे

दुआए कुनूत पढ़ने वाले अपना वा 'दा निभाएं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुरी सोहबतों से बचना बेहद ज़रूरी है वरना आख़िरत तबाह हो सकती है । मेरे आका आ 'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : शरीअते मुतहहरा ने नमाज़ में कोई ज़िक्र ऐसा नहीं रखा है जिस में "सिर्फ़ ज़बान" से लफ़ज़ निकाले जाएं और मा'ना मुराद न हों । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 567) तो आप की याद दहानी के लिये अर्ज़ है कि नमाज़े वित्र में आप येह दुआए कुनूत तो पढ़ते ही होंगे जिस में है :
يَا نِیّی وَنَخْلَعُ وَنَتْرُکُ مَنْ یَقْجُرُکَ ط
जो तेरी ना फ़रमानी करे" अगर आज से पहले मा'ना मा'लूम नहीं थे तो चलिये अब पता चल गया लिहाज़ा अपने रब غُزُوعِل से किये जाने वाले रोज़ रोज़ के इस वा'दे को अब अ-मली जामा पहना ही दीजिये और नमाज़ न पढ़ने वालों, गालियों, बद गुमानियों, तोहमतों, ग़ीबतों, चुग़लियों और तरह तरह से ना फ़रमानियों में मुलव्वस रहने वालों फ़ासिकों और फ़ाजिरों की बैठकों और उन की सोहबतों से तौबा कर लीजिये । और कुरआने करीम भी ऐसों की सोहबत से मन्अ फ़रमाता है, जैसा कि पारह 7 सू-रतुल अन्आम आयत नम्बर 68 में इर्शाद होता है :

وَإِمَّا یُنِیْسُکَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَتَّبِعْهُ بَعْدَ ١١

الذِّکْرِی مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِیْنَ ١١

तफ़सीराते अहमदिय्या में इस आयते मुबा-रका के तहूत लिखा है : यहां ज़ालिमीन से मुराद काफ़ीरीन, मुब्तदिईन या'नी गुमराह व बद दीन और फ़ासिकीन हैं ।

(تفسیرات احمديه ص ۳۸۸)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख़ हो गया । (इब्ने सुन्नी)

नेकी की दा'वत देने के लिये फ़ासिकों के पास जाना जाइज है : जो इस्लामी भाई मुत्तकी परहेज़गार हो, वोह यारी दोस्ती में नहीं बल्कि सिर्फ़ नेकी की दा'वत की हद तक ना फ़रमानों और बिगड़े हुए लोगों के साथ बैठ सकता है चुनान्वे पारह 7 सू-रतुल अन्आम आयत 69 में रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَاعَلِ الْإِیْمَنِ یَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ

مِنْ شَیْءٍ وَلَٰكِنْ ذِکْرًا لِّعَلَّہُمْ یَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾

(پ ٧، الانعام: ٦٩)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और परहेज़ गारों पर उन के हिसाब से कुछ नहीं, हां नसीहत देना शायद वोह बाज़ आएँ ।

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی

ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते करीमा के तहत फ़रमाते हैं : इस आयत से मा'लूम हुवा कि पन्दो नसीहत और इज़्हारे हक़ के लिये इन के पास बैठना जाइज है ।

हज्जाज बिन यूसुफ़ की ग़ीबत से भी परहेज़ : हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ الْفَیْنِ को ग़ीबत के मुआ-मले में अल्लाहु दावर عَزَّوَجَلَّ का इस क़दर डर रहता था कि जिन के जुल्मो सितम की दास्तानें मशहूर व मा'रूफ़ होतीं उन का भी बिला ज़रूरते शर-ई तज़्किरा करने से बचते थे जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद इब्ने सीरीन رَحْمَةُ اللّٰهِ الْفَیْنِ से अर्ज की गई : क्या बात है कि आप ने कभी भी हज्जाज (बिन यूसुफ़) के बारे में दो लफ़ज़ नहीं बोले ! (या'नी उसे बुरा भला नहीं कहा) फ़रमाया : “मैं (अल्लाह की खुफ़्या तदबीर से) डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि क़ियामत के दिन अल्लाह तआला तौहीद की ब-र-कत से उसे तो छोड़ दे (या'नी चूंकि वोह मुसल्मान था लिहाज़ा इस निस्बत के सबब अपने फ़ज़्लो करम से उसे बे हिसाब बख़्श दे) और मुझे उस की ग़ीबत करने की वजह से अज़ाब में मुब्तला फ़रमा दे ।”

(تفسير روح البیان ج ٩ ص ٩٠)

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

तीन उयूब की नुहूसत की इब्रतनाक हिकायत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عزوجل बे नियाज है, उस की ख़ुफ़्या तदबीर किस के बारे में क्या है वोह कोई नहीं जानता, लिहाजा कोई मुसल्मान ख़्वाह कितना ही बड़ा गुनहगार हो उस के बारे में हम येह नहीं कह सकते कि येह ज़रूर ही जहन्नम में जाएगा, जब उस की तदबीर ग़ालिब आती है तो बड़े बड़ों की वोह पकड़ हो जाती है कि **اَلْاَمَانُ وَالْحَفِیْظُ !** दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 480 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, **“बयानाते अत्तारिख्या”** हिस्सा अव्वल के सफ़हा 113 ता 115 पर है : **“मिन्हाजुल आबिदीन”** में है : हज़रते सय्यिदुना **फुज़ैल बिन इयाज़** رحمه الله تعالى عليه अपने एक शागिर्द की नज़अ के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस के पास बैठ कर सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ने लगे। तो उस शागिर्द ने कहा : **“सूरए यासीन पढ़ना बन्द कर दो।”** फिर आप رحمه الله تعالى عليه ने उसे कलिमा शरीफ़ की तल्कीन¹ फ़रमाई। वोह बोला : **“मैं हरगिज़ येह कलिमा नहीं पढ़ूंगा मैं इस से बेज़ार हूँ।”** बस इन्हीं अल्फ़ाज़ पर उस की मौत वाक़ेअ हो गई। हज़रते सय्यिदुना **फुज़ैल** رحمه الله تعالى عليه को अपने शागिर्द के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुवा। चालीस⁴⁰ रोज़ तक अपने घर में बैठे रोते रहे। चालीस⁴⁰ दिन के बा'द आप رحمه الله تعالى عليه ने ख़्वाब में देखा कि फ़िरिश्ते उस शागिर्द को जहन्नम में घसीट रहे हैं। आप رحمه الله تعالى عليه ने उस से इस्तिफ़सार फ़रमाया : किस सबब से **अल्लाह** عزوجل ने तेरी मा'रिफ़त सल्ब फ़रमा ली ? मेरे शागिर्दों में तेरा मक़ाम तो बहुत ऊंचा था ! उस ने जवाब दिया : **तीन उयूब** के सबब से : (1) **चुग़ली** कि मैं अपने साथियों को कुछ बताता था और आप رحمه الله تعالى عليه को कुछ और (2) **हसद** कि मैं अपने साथियों से हसद करता था (3) **शराब नोशी** कि एक बीमारी से शिफ़ा पाने की ग़रज़ से तबीब के मश्वरे पर हर साल शराब का एक गिलास पीता था। (منهاج العابدین ص ۱۰۱)

لَدِينِهِ

1. मरने वाले को येह न कहा जाए कि कलिमा पढ़ बल्कि तल्कीन का सहीह तरीक़ा येह है कि सक़्ात वाले के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ का विर्द किया जाए ताकि उसे भी याद आ जाए।



फरमाने मुस्तफा ﷺ : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह عزوجل तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

नज़अ में कुफ़्र बकने का शर-ई मस्अला : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खौंफे खुदा से लरज़ उठिये ! और घबरा कर अपने मा'बूदे बरहक को राजी करने के लिये उस की बारगाहे बेकस पनाह में झूक जाइये । आह ! चुगली, हसद और शराब नोशी के सबब वलिये कामिल का शागिर्द कुफ़्रिया कलिमात बोल कर मरा । यहां एक ज़रूरी मस्अला समझ लीजिये चुनान्वे सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عليه رحمه الله القوي फ़रमाते हैं : मरते वक़्त مَعَالِ اللَّهِ उस की ज़बान से कलिमाए कुफ़्र निकला तो कुफ़्र का हुक्म न देंगे कि मुम्किन है मौत की सख़्ती में अक्ल जाती रही हो और बेहोशी में येह कलिमा निकल गया ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 158, दुर्रे मुख़्तार, जि. 3, स. 96)

अक्सर ख़ताएं ज़बान से होती हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ग़लत चलने वाली ज़बान इन्सान को बहुत परेशान करती है, इन्सान इसी ज़बान से गालियां निकाल कर, झूट बोल कर, ग़ीबतें कर के चुग़लियां खा कर अपनी आख़िरत को दाव पर लगाता है । इस ज़बान की आफ़तों से अल्लाह عزوجل की पनाह ! मशहूर सहाबी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्क़द رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि ख़ल्क के रहबर, शाफ़ेए महशर, महबूबे दावर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : इन्सान की अक्सर ख़ताएं उस की ज़बान से होती हैं ।

(المعجم الكبير للطبرانی ج ١٠ ص ١٩٧ حديث ١٠٤٤٦)

रोज़ाना सुब्ह आ 'ज़ा ज़बान की खुशामद करते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رضي الله تعالى عنه से रिवायत है : जब इन्सान सुब्ह करता है तो उस के तमाम आ'ज़ा ज़बान के सामने अज़िज़ाना येह कहते हैं : हमारे बारे में अल्लाह عزوجل से डर ! क्यूं कि हम तुझ से वाबस्ता हैं अगर तू सीधी रहेगी तो हम सीधे रहेंगे अगर तू टेढ़ी होगी तो हम भी टेढ़े हों जाएंगे ।

(سنن ترمذی ج ٤ ص ١٨٣ حديث ٢٤١٥)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

जो दिल में होता है वोही ज़बान पर आता है : मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते

मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَيْرَان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : नफ़अ व नुक्सान, राहत व आराम, तकालीफ़ व आलाम में (ऐ ज़बान!) हम तेरे साथ वाबस्ता हैं अगर तू ख़राब होगी हमारी शामत आ जावेगी तू दुरुस्त होगी हमारी इज़्ज़त होगी। ख़याल रहे कि ज़बान दिल की तरजुमान है इस की अच्छाई बुराई दिल की अच्छाई बुराई का पता देती है। (मिरआत, जि. 6, स. 465)

ज़बान की बे एह्तियाती की आफ़तें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ज़बान अगर टेढ़ी चलती है तो बा'ज अवकात फ़सादात बरपा हो जाते हैं, इसी ज़बान से अगर मर्द अपनी बीवी को तलाक़ कह दे तो (कई सूरतों में) तलाक़ मुग़ल्लज़ा वाक़ेअ़ हो जाती है, इसी ज़बान से अगर किसी को बुरा भला कहा और उस को तैश (या'नी गुस्सा) आ गया तो बा'ज अवकात क़त्लो ग़ारत गरी तक नौबत पहुंच जाती है। इसी ज़बान से अगर किसी मुसल्मान को बिला इजाज़ते शर-ई डांट दिया और उस की दिल आज़ारी कर दी तो यकीनन इस में गुनहगारी और जहन्नम की हक़दारी है। “त-बरानी शरीफ़” की रिवायत में है, सरकारे मदीना ﷺ का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने अल्लाह ﷻ को ईज़ा दी।

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ٢ ص ٣٨٦ حديث ٣٦٠٧)

हमेशा की रिज़ा व नाराज़ी : हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन हारिस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं, सुलताने दो जहान, रहमते आ-लमियान ﷺ का फ़रमाने हकीक़त निशान है : कोई शख्स अच्छी बात बोल देता है उस की इन्तिहा नहीं जानता इस की वजह से उस के लिये अल्लाह ﷻ की रिज़ा उस दिन तक के लिये लिखी जाती है जब वोह उस से मिलेगा। और एक आदमी बुरी बात बोल देता है जिस की इन्तिहा नहीं जानता अल्लाह ﷻ इस की वजह से अपनी



फरमाने मुस्तफा ﷺ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

नाराज़ी उस दिन तक लिख देता है जब वोह उस से मिलेगा।

(सुन्न त्रिमिज़ी ज ४ ص १६३ حديث २३२६)

पहले तोलो फिर मुंह से बोलो : मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عليه رَحْمَةُ اللهِ الْخَيْرُ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : (बा'ज अवकात आदमी) कोई बात ऐसी बुरी बोल देता है जिस से रब तआला हमेशा के लिये नाराज़ हो जाता है लिहाज़ा इन्सान को चाहिये कि बहुत सोच समझ कर बात किया करे। हज़रते सय्यिदुना अल्क़मा (رضي الله تعالى عنه) फ़रमाया करते थे कि मुझे बहुत सी बातों से बिलाल इब्ने हारिस (رضي الله تعالى عنه) की (मज़कूरा) हदीस रोक देती है। (मिरकात) या'नी मैं कुछ बोलना चाहता हूँ कि येह हदीस सामने आ जाती है और मैं (इस ख़ौफ़ से) ख़ामोश हो जाता हूँ (कि कहीं ऐसी बात मुंह से न निकल जाए जिस की वजह से अल्लाह عز وجل हमेशा के लिये मुझ से नाराज़ हो जाए)। (मिरआत, जि. 6, स. 462)

कुफ़ले मदीना लगाने ही में अफ़ियत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बे सोचे समझे बोल पड़ना बेहद ख़तरनाक नताइज का हामिल हो सकता और अल्लाह عز وجل की हमेशा हमेशा की नाराज़ी का बाइस बन सकता है। यकीनन ज़बान का कुफ़ले मदीना लगाने या'नी अपने आप को ग़ैर ज़रूरी बातों से बचाने ही में अफ़ियत है। ख़ामोशी की आदत डालने के लिये कुछ न कुछ गुप्त-गू लिख कर या इशारे से कर लिया करना बेहद मुफ़ीद है क्यूं कि जो ज़ियादा बोलता है उमूमन ख़ताएं भी ज़ियादा करता है, राज़ भी फ़ाश कर डालता है। गीबत व चुगली और ऐबजूई जैसे गुनाहों से बचना भी ऐसे शख्स के लिये बहुत दुश्वार होता है बल्कि बक बक का आदी बा'ज अवकात مَعَاذُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ कुफ़िय्यात भी बक डालता है !

दिल की सख़्ती का अन्जाम : अल्लाहु रहमान عز وجل हम पर रहम फ़रमाए और हमारी ज़बान को लगाम नसीब करे कि येह ज़िक्रुल्लाह से गाफ़िल रह कर फुज़ूल बोल बोल कर दिल को भी सख़्त कर देती है। अल्लाहु ग़नी عز وجل के प्यारे नबी मक्की म-दनी صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عُزَّوَجَلَّ के लिये एक क़िरात अज़्र लिखता है और क़िरात उहद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज़ाक)

फ़रमाने इब्रत निशान है : फ़ोहूश गोई सख़्त दिली से है और सख़्त दिली आग में है।

(سُنَنِ تَرْمِذِي ج ۳ ص ۴۰۶ حدیث ۲۰۱۶)

बक बक की आदत कुफ़्र में डाल सकती है : मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ الْحَنَان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी जो शख्स ज़बान का बेबाक हो कि हर बुरी भली बात बे धड़क मुंह से निकाल दे तो समझ लो कि उस का दिल सख़्त है उस में हया नहीं। सख़्ती वोह दरख़्त है जिस की जड़ इन्सान के दिल में है और इस की शाख़ दोज़ख़ में। ऐसे बे धड़क इन्सान का अन्जाम येह होता है कि वोह अल्लाह रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बारगाह में भी बे अदब हो कर काफ़िर हो जाता है।

(مرآة ج ۶ ص ۶۴۱)

जी चाहता है ख़ूब गुनाहों पे मैं रोऊं
अफ़्सोस मगर दिल की क़सावत^१ नहीं जाती

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللہ اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

गीबत करने वाला क़ाबिले रहम है : एक बुजुर्ग से किसी ने कहा : फुलों शख्स आप की इस क़दर बुराई बयान करता है कि मुझे आप पर रहम आता है। फ़रमाया : “क़ाबिले रहम तो वोह शख्स खुद है।” (تَفْسِیْرُ قُرْطُبِی ج ۸ ص ۲۴۲) हमारे बुजुर्गों का इख़लास व अख़्लाक़ सद करोड़ मरहबा ! इन की म-दनी सोच की भी क्या बात है ! अपनी बे तहाशा बुराइयां करने वाले पर भी गुस्सा नहीं आ रहा बल्कि दिल मुत्मइन है कि मेरा अपना क्या जाता

دینہ

1. या'नी सख़्ती



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अब्दुर्रज़ाक)

है ! गीबत करने वाला ही नुक्सान उठाता है और वोह नादान इन मा'नों में काबिले रहूम ही है कि अपनी नेकियां बरबाद कर रहा और गुनहगार हो कर अज़ाबे नार का हक़दार करार पा रहा है ।

ददें सर हो या बुख़ार आए तड़प जाता हूँ मैं जहन्नम की सज़ा कैसे सहूंगा या रब !
अफ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

“बहुत सोता है” कहना गीबत है : हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के बारे में मरवी है कि इन में से एक ने दूसरे से फ़रमाया कि **يَا نِي فُلَانٌ شَاخِصٌ بَهُوتٌ سَوْتَا** है फिर उन्होंने ने सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सालन मांगा ताकि रोटी खाएं, नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तुम सालन खा चुके हो । उन्होंने ने अर्ज़ की : हमें तो इस का इल्म नहीं । फ़रमाया : हां क्यूं नहीं तुम दोनों ने अपने भाई का गोश्त ख़ाया है ।

(احياء العلوم ج ٣ ص ١٨٠، إتحاف السادة للريبيدي ج ٩ ص ٣٠٧)

गीबत सुनने वाला भी गीबत करने में शरीक है : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَوَالِي येह हदीसे पाक नक़ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : तो देखो किस तरह सुल्ताने अम्बिया صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दोनों को इस मस्अले में जम्अ किया (हालांकि ज़बान से सिर्फ़) एक ने गीबत की मगर दूसरे ने उसे सुना (लिहाज़ा वोह भी गीबत में शरीक ठहराए गए)

(احياء العلوم ج ٣ ص ١٨٠)

खाने और बोलने से मु-तअल्लिक़ गीबत की 12 मिसालें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा ज़ियादा सोने वाले के बारे में पीछे से कहना कि “सोता बहुत है” गीबत है । मज़ीद खाने और बोलने से मु-तअल्लिक़ गीबत की 12 मिसालें मुला-हज़ा हों : ★ खाता बहुत है ★ जब देखो खाता रहता है ★ इस को तो हर वक़्त खाने ही की पड़ी रहती है ★ बे



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُذَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

चबाए निगल जाता है ★ बोटियां अपनी तरफ सरका लेता है ★ जहां नियाज़ का खाना हो वहां पहुंच जाता है ★ कुरआन ख़्वानी/ इज्तिमाअ/ इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त/ उर्स शरीफ में खाने के वक़्त पहुंचता है ★ मय्यित के तीजे का खाना भी नहीं छोड़ता ★ बोलता बहुत है ★ दूसरों की बारी नहीं आने देता ★ दूसरों की बात काट देता है ★ अगले को बातों ही बातों में खा जाता है वगैरा वगैरा। मज़कूरा रिवायत से مَعَاذُ اللّٰهِ عُذَّوَجَلَّ हज़रते शैख़ैने करीमैन या'नी सय्यिदैना सिद्दीक़े अकबर व फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बारे में किसी तरह की बुराई ज़ेहन में न लाई जाए, येह ज़मानए तरबिय्यत के मुआ-मलात हैं। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के इस तरह के मु-तअद्दिद वाकिआत कुतुबे अहादीस में मिलते हैं। चुनान्चे

पीछे से इशारतन "ठिगना" कहना गीबत है : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना

आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَوةِ وَالسَّلَام से अर्ज़ की : सफ़िया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये येह काफ़ी है कि वोह ऐसी हैं ऐसी हैं या'नी पस्ता क़द है, हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इर्शाद फ़रमाया कि "तुम ने ऐसा कलिमा कहा (या'नी ऐसी बात कही) कि अगर समुन्दर में मिलाया जाए तो उस पर ग़ालिब आ जाए।" (سَنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٥٣ حدیث ٤٨٧٥)

या'नी किसी पस्ता क़द को भी ★ पस्ता क़द ★ नाटा ★ ठिगना कहना गीबत में दाख़िल है, जब कि बिला ज़रूरत हो।

किसी के फ़ितरी ऐब बयान करना बड़े ख़ौफ़ की बात है : मीठे मीठे इस्लामी

भाइयो ! लम्बा और ठिगना वगैरा होना येह फ़ितरी उयूब हैं बिला मस्लहतें शर-ई पीठ पीछे

किसी मुसलमान के इन ऐबों का तज़िकरा भी गीबत है बल्कि इस के बारे में हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : अगर उस के ऐब का तअल्लुक उस की ख़िल्क़त (या'नी फ़ितरत) से है तो उस की बुराई बयान करना गोया



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रहत है । (अबू या'ला)

(مَعَادُ اللّٰہِ) अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ बुराई को मन्सूब करना है क्यूं कि जो आदमी किसी सन्अत (या'नी बनावट, कारीगरी) में ऐब निकालता है वोह गोया सानेअ (या'नी बनाने वाले) की ख़राबी बयान करता है । किसी शख़्स ने एक दाना से कहा : ओ बद सूरत ! उस ने जवाब दिया कि चेहरा बनाना मेरे इख़्तियार में नहीं वरना ख़ूबसूरत बना लेता । (احیاءُ الْعُلُوم ج ۳ ص ۱۸۴)

किसी को “कमज़ोर है” कहना ! : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : शफ़ीए रोज़े शुमार, दो अ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार में हम लोग हाज़िर थे कि एक आदमी जब उठ कर चला गया तो सहाबए किराम फुलां कितना : مَا أَضْعَفَ فُلَانًا ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अर्ज़ की : یا रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कमज़ोर है ! फ़रमाया : “तुम ने अपने रफ़ीक़ (या'नी साथी) की ग़ीबत की और उस का गोश्त खाया ।” (مُسْنَدُ أَبِي یَعْلَى ج ۵ ص ۳۶۲ حدیث ۶۱۲)

“गीबत मत करो” के नव हुरूफ़ की निस्बत से किसी

की कमज़ोरी के इज़हार की ग़ीबत की 9 मिसालें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, बिला इजाज़ते शर-ई किसी को “कमज़ोर” कहना भी ग़ीबत में दाख़िल है । इसी तरह ★ सूखा साखा ★ मरयल ★ मरयल टट्टू ★ बुड्डू फूंस (खूसट) ★ हड्डियों का ढांचा ★ हड पिन्जर ★ क़ब्र में पाउं लटक चुके हैं ★ सूखी लकड़ी ★ फूंक मारो तो उड़ जाए वगैरा अल्फ़ाज़ भी ग़ीबत के हैं क्यूं कि कोई समझदार इन्सान अपने लिये इस तरह के अल्फ़ाज़ सुनना पसन्द नहीं करता ।

बचूं ग़ीबतों से बचूं चुग़िलियों से
ज़बां पर लगाम मेरी लग जाए मौला

हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही
सदा तोहमतों से बचा या इलाही



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा। (कन्जुल उम्मा)

किसी के मा'यूब मरज़ का तज़्किरा करना : सुल्ताने अम्बियाए किराम, शहन्शाहे खैरुल अनाम, महबूबे रब्बुस्सलाम ﷺ की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक आदमी का तज़्किरा करते हुए जब अर्ज़ की गई : फुलां शख्स खुद नहीं खा सकता यहां तक कि कोई उसे खिलाए और न ही चल सकता है यहां तक कि कोई उसे चलाए। तो फ़रमाया : “तुम ने उस की ग़ीबत की।” सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** ﷺ **جَلِيَّةُ الْاَوْلِيَاءِ ج ٨ ص ٢٠٤ رقم ١١٨٨٣** ! हम ने तो वोह बात बयान की है जो उस में मौजूद है। इर्शाद फ़रमाया : **गीबत के लिये इतना ही काफी है कि तुम ने अपने भाई का ऐब बयान किया।**

लूले लंगड़े की ग़ीबत : ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना मुअविया बिन कुर्रह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى कुर्रह फ़रमाते हैं : “अगर तुम्हारे पास से कोई लुन्जा (या'नी लूला या लंगड़ा) गुज़रे और तुम उस के लुन्जे पन के ऐब का तज़्किरा करो तो येह भी ग़ीबत है।” (تفسير درّ منثور ج ٧ ص ٥٧١) मा'लूम हुवा कि किसी लुन्जे को भी बिला इजाज़ते शर-ई पीठ पीछे लुन्जा कहना ग़ीबत है इसी तरह किसी को **★ लंगड़ा ★ गन्जा ★ अन्धा ★ काना ★ लूला ★ तुतला ★ हक्ला ★ गूंगा ★ बहरा ★ कुबड़ा वगैरा कहना भी ग़ीबत है।**

लिबास की ख़ामी बताना भी ग़ीबत है : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا इर्शाद फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा मैं नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थी, मैं ने एक औरत के बारे में कहा : **يا'नी येह लम्बे दामन वाली है।** तो आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : **يا'नी जो कुछ तेरे मुंह में है निकाल फेंक।** तो मैं ने मुंह से गोश्त का टुकड़ा निकाल कर फेंका।

(الصّمت مع موسوعة ابن أبي الدنيا ج ٧ ص ١٤٥ حديث ٢١٦)



“गीबत करना निहायत ही सख्त गुनाह है” के चौबीस हुरूफ़ की

निस्बत से लिबास के मु-तअल्लिक़ गीबत की 24 मिसालें

मा'लूम हुवा कि पीठ पीछे किसी के लिबास की खराबी का बयान करना भी गीबत है लिबास के मु-तअल्लिक़ गीबत की 24 मिसालें मुला-हज़ा हों : (दर्जे ज़ैल बातें दुरुस्त हों तो गीबत वरना इस से बड़े गुनाह तोहमत में दाख़िल होंगी) ★ उस की आस्तीन लम्बी है ★ कपड़े बे ढंगे हैं ★ कपड़े मैले हैं ★ कपड़ों को गन्दगी से नहीं बचाता ★ कपड़ों से बदबू आती है ★ कपड़ों का डीज़ाइन सहीह नहीं ★ बड़े भाई का कुरता चढ़ा लिया है ★ इस को कपड़े पहनने का ढंग नहीं आता ★ इमामा सहीह से बांधना नहीं आता ★ उस की चादर मैली चिकट हो गई है ★ मोज़े फटे हुए पहनता है ★ लन्डा बाज़ार के (सेकन्ड हेन्ड) कपड़े पहनता है ★ घटिया वाला कपड़ा है ★ औरतों वाले रंगों के कपड़े पहनने का बहुत शौक़ है ★ उस लिबास में तो वोह मस्त मलंग लगता है ★ ज़रा देखो तो बड़े भाई की कमीस और छोटे भाई की शलवार चढ़ा ली है, कितना अज़ीब लग रहा है ★ कितना कन्जूस है कि इतना पैसे वाला हो कर भी कपड़े बिल्कुल सादे पहनता है ★ बाप चपरासी है मगर बेटे के कपड़े तो देखो ! ★ मांगा हुवा सूट पहना होगा वरना इस की इतनी अवकात कहां ! ★ येह इस लिये फटे पुराने कपड़े पहनता है ताकि पार्टियों से माल बटोरना आसान हो ★ जब देखो उस के कपड़े कहीं न कहीं से फटे हुए होते हैं ★ अपनी गुरबत ज़ाहिर करने और लोगों की हमदर्दियां पाने के लिये पैवन्द लगे कपड़े पहनता है ★ कर्जे ले कर इतना महंगा सूट लेने की इसे क्या ज़रूरत थी ★ उफ़! उस ने किस क़दर अज़ीब लिबास पहना हुवा था।

शराबे महब्बत कुछ ऐसी पिला दे
मुझे अपना आशिक़ बना कर बना दे

कभी भी नशा हो न कम या इलाही
तू सर ता पा तस्वीरे ग़म या इलाही

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े । (हाकिम)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُؤْبَوَالِی اللہُ اَسْتَغْفِرُ اللہَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

जूए के कारोबार से तौबा : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़्रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये । आप की तरगीब के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार करता हूँ चुनान्वे सोई डिवीज़न डेरा बगटी (बलूचिस्तान) के एक स्कूल टीचर ने कुछ इस तरह हलफ़िया तहरीर दी है कि मैं तम्बोला (एक क़िस्म का खेल जिस में पैसों का जूआ होता है) की दुकान चलाता था । 2004 इ. में पाकिस्तान के सूबे बाबुल इस्लाम (सिन्ध) सत्ह पर सहराए मदीना (बाबुल मदीना कराची) में होने वाले तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में खुश क़िस्मती से शिर्कत की सआदत मिल गई, आख़िर में जब दुआ हुई तो मुझ पर रिक्कत तारी हो गई । मैं ने साबिक़ा तमाम गुनाहों से तौबा करने के साथ साथ नमाज़े बा जमाअत पाबन्दी से अदा करने की निय्यत कर ली । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ से वापस आते ही तम्बोला का काम यक्सर ख़त्म कर दिया, दाढ़ी शरीफ़ रख ली और स्कूल में दर्स भी जारी कर दिया और दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना (बराए बालिग़ान) में कुरआने पाक पढ़ना शुरूअ कर दिया ।

जूआ हराम है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत की भी क्या बात है ! अल्लाहु तव्वाब عَزَّوَجَلَّ की रहमत से इन में शरीक होने वालों में से न जाने कितने



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

ही दिलों में म-दनी इन्किलाब बरपा हो जाता है, इन इज्तिमाआत में शिर्कत दोनों जहानों के लिये बाइसे सआदत है। अभी आप ने म-दनी बहार समाअत फरमाई इस में तम्बोला के कारोबार से तौबा का तज़्किरा है। तम्बोला “जूआ” ही की एक सूरत है, जूआ में एक दूसरे का माल नाहक़ खाया जाता है जो कि शरअन ह़राम है। जूआ खेलना, जूआ का अड्डा चलाना जूए के आलात बेचना खरीदना सब इस्लाम में ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। अफ़सोस ! आज कल मुसलमानों में जूआ काफ़ी अ़ाम है, जूआ की ऐसी भी सूरतें हैं कि लोग ला इल्मी की वजह से उन में मुब्तला हो जाते हैं। लिहाज़ा अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ जूआ के बारे में कुछ मा'लूमात हासिल कर लीजिये।

जूआ खेलना गुनाह है : पारह 2 सू-रतुल ब-करह की आयत नम्बर 219 में अल्लाहु रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़अ भी और इन का गुनाह इन के नफ़अ से बड़ा है।

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल सय्यिदुना मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي

ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते करीमा के तहत लिखते हैं : जूए में कभी मुफ़्त का माल हाथ आता है और गुनाहों और मुफ़िसदों (या'नी ख़राबियों) का क्या शुमार ! अक्ल का ज़वाल, ग़ैरत व ह़मिय्यत का ज़वाल, इबादात से महरूमी लोगों से अ़दावतें (या'नी दुश्मनियां) सब की नज़र में ख़्वार (या'नी ज़लील) होना दौलत व माल की इज़ाअत (या'नी बरबादी)।

जूआ शैतानी काम है : पारह 7 सू-रतुल माइदह की आयत नम्बर 90 ता 91 में अल्लाहु रहमान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उहद पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज्जाक)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ
وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ
عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ①
إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ
وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ

قَهْلَ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ ② (پ ۷ المائدہ: ۹۰، ۹۱)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैतानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह पाओ । शैतान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवावे शराब और जूए में और तुम्हें अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए ?

हज़रते सदरुल अफ़ज़िल सय्यिदुना मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस के तहत लिखते हैं : इस आयत में शराब और जूए के नताइज और वबाल बयान फ़रमाए गए कि शराब ख़ोरी और जूए बाज़ी का एक वबाल तो येह है कि इस से आपस में बुज़ और अ़दावतें पैदा होती हैं और जो इन बदियों (या'नी बुराइयों) में मुब्तला हो वोह ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के अवकात की पाबन्दी से महरूम हो जाता है ।

जूआ में जीता हुवा माल हराम है : पारह 2 सू-रतुल ब-क़रह की आयत नम्बर 188 में इशदि रब्बुल इबाद होता है :

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ
(پ ۲ البقره: ۱۸۸)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और आपस मे एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ ।

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में फ़रमाते हैं : इस आयत में बातिल तौर पर किसी का माल



फरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عزوجل उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

खाना हुराम फरमाया गया ख़्वाह लूट कर या छीन कर या चोरी से या जूए से या हुराम तमाशों या हुराम कामों या हुराम चीज़ों के बदले या रिश्वत या झूटी गवाही या चुगुल खोरी से येह सब मन्मूअ व हुराम है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 47)

गोया ख़िन्ज़ीर के ख़ून और गोश्त में हाथ डबोया : हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम ﷺ ने फरमाया : जिस ने नर्द शेर (जूआ खेलने का सामान) से जूआ खेला तो गोया उस ने अपना हाथ ख़िन्ज़ीर के गोश्त और ख़ून में डबोया।

(सुन्न इब्न माजह ज ६ स २३१ حديث ३७१३)

जूए की दा'वत देने वाला कफ़ारे में स-दका करे : हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ का इशादि इब्रत बुन्याद है : जिस शख़्स ने अपने साथी से कहा : “आओ जूआ खेलें।” तो उस (कहने वाले) को चाहिये कि स-दका करे। (صحيح مسلم ج १ ص ८९६ حديث १६६७)

हज़रते अल्लामा यहूया बिन शरफ़ न-ववी عليه رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इस हदीस की शर्ह में लिखते हैं : उ-लमा फरमाते हैं कि सरकार ﷺ ने स-दका करने का हुक्म इस लिये दिया है कि उस शख़्स ने गुनाह की दा'वत दी थी, हज़रते अल्लामा ख़िताबी عليه رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने कहा कि जितने पैसों का जूआ खेलने का कहा था उतने पैसों का स-दका करे मगर सहीह वोह है जो मुहक्किनी ने कहा है और येही हदीसे पाक का ज़ाहिर है कि स-दके की कोई मिक्दार मुअय्यन नहीं, आसानी से जितना स-दका कर सके कर दे। (شرح مسلم للنَوَوِي ج ६ स १०७)

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 19 सफ़हा 646 पर फरमाते हैं : सूद और चोरी और ग़सब और जूए का रुपिया क़र्ह हुराम है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 19, स. 646)

फरमाने मुस्तफा ﷺ: मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (अबू या'ला)

जूआ की ता'रीफ़ : जूआ को अ-रबी में किमार कहते हैं इस की ता'रीफ़ मुला-हज़ा फ़रमाइये : हज़रते मीर सय्यिद शरीफ़ जुरजानी سُرَّةُ الرَّبَّانِي लिखते हैं : हर वोह खेल जिस में येह शर्त हो कि मग़लूब (या'नी नाकाम होने वाले) की कोई चीज़ (ग़ालिब होने वाले) को दी जाएगी येह “किमार” (या'नी जूआ) हैं।

(التعريفات ص ١٢٦)

जूए की 6 सूरतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल दुन्या में जूए के नित नए तरीक़े राइज हैं, इन में से 6 येह हैं :

1] लोटरी : इस तरीक़ा कार में लाखों करोड़ों रुपै के इन्आमात का लालच दे कर लाखों टिकट मा'मूली रक़म के बदले फ़रोख़्त किये जाते हैं फिर कुरआ अन्दाज़ी के ज़रीए काम्याब होने वालों में चन्द लाख या चन्द करोड़ रुपै तक्सीम कर दिये जाते हैं जब कि बक़िय्या अफ़़ाद की रक़म डूब जाती है, येह भी जूआ ही की एक सूरत है जो कि हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

2] प्राइज़ बॉन्ड की परची : हुकूमते पाकिस्तान 200, 750, 1500, 7,500, 15,000, 40,000 रुपै की कीमत के इन्आमी बॉन्डज़ बैंक के ज़रीए जारी करती है और जदवल के मुताबिक़ हर माह कुरआ अन्दाज़ी के ज़रीए करोड़ों रुपै के इन्आमात ख़रीदारों में तक्सीम करती है, जिस का इन्आम नहीं निकलता उस की भी रक़म महफूज़ रहती है वोह उसे जब चाहे भुना (या'नी केश करवा) सकता है। येह जवाज़ (या'नी जाइज़ होने) की सूरत है और जूए में दाख़िल नहीं। लेकिन इस के मु-तवाज़ी बा'ज़ लोग इन्आमी बॉन्डज़ की परचियां बेचते हैं इन परचियों की ख़रीद व फ़रोख़्त, ग़ैर क़ानूनी ना जाइज़ व हराम है क्यूं कि बेचने वाला हुकूमत की तरफ़ से जारी कर्दा प्राइज़ बॉन्डज़ अपने ही पास रखता है (बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो प्राइज़ बॉन्डज़ भी बेचने वाले के पास नहीं होते) परची बेचने वाला ख़रीदार को क़लील रक़म के बदले परची पर महज़ एक नम्बर लिख कर दे देता है कि अगर इस नम्बर पर इन्आम निकल आया तो मैं तुम्हें इतनी रक़म दूंगा। इन्आमी परची



फरमाने मुस्तफा ﷺ: جَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْبَرُّ وَسَلَّمَ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कन्जुल उम्मा)

का येह काम भी जूआ है क्यूं कि इस में इन्आम न निकलने की सूरत में ख़रीदार की रक़म डूब जाती है।

3 मोबाइल मेसेजिज़ और जूआ : मोबाइल पर मुख़लिफ़ सुवालात पर मब्नी मेसेजिज़ (MESSAGES) भेजे जाते हैं जिस में म-सलन कौन सी टीम जीतेगी ? या पाकिस्तान किस दिन बना था ? दुरुस्त जवाब देने वालों के लिये मुख़लिफ़ इन्आमात रखे जाते हैं, शिर्कत करने वाले के “मोबाइल बेलेन्स” से क़लील रक़म म-सलन दस रुपै कट जाती है, जिन का इन्आम नहीं निकलता उन की रक़म ज़ाएअ हो जाती है, येह भी जूआ है जो कि हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

4 मुअम्मा : इस में एक या एक से ज़ियादा सुवालात हल करने के लिये दिये जाते हैं जिस का हल मुन्तज़िमीन की मरज़ी के मुताबिक़ निकल आए उसे इन्आम दिया जाता है, इन्आमात की ता’दाद तीन या चार या इस से ज़ा़द भी होती है। लिहाज़ा दुरुस्त हल ज़ियादा ता’दाद में निकलें तो कुरआ अन्दाज़ी के ज़रीए फ़ैसला होता है। इस खेल में बहुत सारे अफ़राद शरीक होते हैं, उन की शिर्कत दो तरह से होती है : (1) मुफ़्त (2) मा’मूली फ़ीस दे कर, अगर शु-रका से किसी क़िस्म की फ़ीस न ली जाए तो और कोई मानेए शर-ई न होने की सूरत में उस इन्आम का लेना जाइज़ है। जिस में शु-रका से फ़ीस ली जाती है उस में इन्आम मिले या न मिले रक़म डूब जाती है, येह सूरत जूआ की है जो कि हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

5 पैसे जम्अ कर के कुरआ अन्दाज़ी करना : बा’ज अफ़राद या दोस्त आपस में थोड़ी थोड़ी रक़म जम्अ कर के कुरआ अन्दाज़ी करते हैं कि जिस का नाम निकला सारी रक़म उस को मिलेगी, येह भी जूआ है क्यूं कि बक़िय्या अफ़राद की रक़म डूब जाती है। इसी तरह बा’ज अवकात पैसे जम्अ कर के कोई किताब या दूसरी चीज़ ख़रीदी जाती है कि जिस का नाम कुरआ अन्दाज़ी में निकल आया उसे येह किताब दे दी जाएगी येह भी जूआ ही है। याद रहे कि बा’ज



फरमाने मुस्तफा ﷺ: मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह عزوجل तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

कम्पनियां अपनी मसनूआत खरीदने वालों को कुरआ अन्दाजी कर के इन्आमात देती है येह जाइज है क्यूं कि इस में किसी की भी रक़म नहीं डूबती।

6] मुख़्तलिफ़ खेलों में शर्त लगाना : हमारे यहां मुख़्तलिफ़ खेल म-सलन घुड़ दौड़, क्रिकेट, केरम, बिलयर्ड, ताश, शतरन्ज वगैरा दो तरफ़ा शर्त लगा कर खेले जाते हैं कि हारने वाला जीतने वाले को उतनी रक़म या फुलां चीज़ देगा येह भी जूआ है और ना जाइज व हराम। केरम और बिलयर्ड क्लब वगैरा में खेलते वक़्त उमूमन येह शर्त रखी जाती है कि क्लब के मालिक की फ़ीस हारने वाला अदा करेगा, येह भी जूआ है। बा'ज "नादान" घरों में मुख़्तलिफ़ खेलों म-सलन ताश या लूडो पर दो तरफ़ा शर्त लगा कर खेलते हैं और कम इल्मी के बाइस इस में कोई हरज नहीं समझते वोह भी संभल जाएं कि येह भी जूआ है और जूआ हराम और जहन्म में ले जाने वाला काम है।

जूए से तौबा का तरीक़ा : जूआ खेलने वाला अगर नादिम हुवा तो उस को चाहिये कि बारगाहे इलाही عزوجل में सच्ची तौबा करे मगर जो कुछ माल जीता है वोह ब दस्तूर हराम ही रहेगा इस ज़िम्न में रहनुमाई करते हुए मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عليه رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जिस क़दर माल जूए में कमाया महज़ हराम है। और इस से बराअत (या'नी नजात) की येही सूरत है कि जिस जिस से जितना जितना माल जीता है उसे वापस दे, या जैसे बने उसे राज़ी कर के मुआफ़ करा ले। वोह न हो तो उस के वारिसों को वापस दे, या उन में जो आक़िल बालिग़ हों उन का हिस्सा उन की रिज़ा मन्दी से मुआफ़ करा ले। बाक़ियों का हिस्सा ज़रूर उन्हें दे कि इस की मुआफ़ी मुम्किन नहीं, और जिन लोगों का पता किसी तरह न चले, न उन का, न उन के व-रसा का, उन से जिस क़दर जीता था उन की निय्यत से ख़ैरात कर दे, अगर्चे (खुद) अपने (ही) मोहताज बहन भाइयों, भतीजों, भान्जों को दे दे।" आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : ग़रज़ जहां जहां जिस क़दर याद हो सके कि इतना माल फुलां से हार जीत में ज़ियादा पड़ा था, उतना तो उन्हें या उन के वारिसों को दे, येह न हों तो उन की निय्यत से तसहुक़ (या'नी स-दक़ा) करे, और ज़ियादा पड़ने के

फरमाने मुस्तफा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

येह मा'ना कि म-सलन एक शख्स से दस बार जूआ खेला कभी येह जीता कभी येह, उस (या'नी सामने वाले जूआरी) के जीतने की (रकम की) मिक्दार म-सलन सो रुपै को पहुंची, और येह (खुद) सब दफ़आ के मिला कर सवा सो जीता, तो सो सो बराबर हो गए, **पच्चीस** उस (या'नी सामने वाले जूआरी) के देने रहे। इतने ही उसे वापस दे। وَعَلَى هَذَا الْقِيَاس (या'नी और इसी पर कियास कर लीजिये) और जहां याद न आए कि (जूआ खेलने वाले) कौन कौन लोग थे और कितना (माल जूए में जीत) लिया, वहां ज़ियादा से ज़ियादा (मिक्दार का) तख्मीना (या'नी अन्दाज़) लगाए कि इस तमाम मुद्दत में किस क़दर माल जूए से कमाया होगा उतना मालिकों (या'नी उन ना मा'लूम जूआरियों) की निय्यत से ख़ैरात कर दे, अकिबत यूंही पाक होगी। وَاللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰم

(फ़तावा र-जविय्या, जि. 19, स. 651)

फ़ौत शुदा की बुराई करना भी गीबत है : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हुंरैरा फ़रमाते हैं : माइज़ अस्लमी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को जब रज्म किया गया था, (या'नी ज़िना की "हद" में इतने पथ्थर मारे गए कि वफ़ात पा चुके थे) दो शख्स आपस में बातें करने लगे, एक ने दूसरे से कहा : उसे तो देखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की पर्दा पोशी की थी मगर उस के नफ़्स ने न छोड़ा, **يَا'नी कुत्ते की तरह रज्म किया गया**। हुज़ुरे पुरनूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुन कर सुकूत फ़रमाया (या'नी ख़ामोश रहे)। कुछ देर तक चलते रहे, रास्ते में मरा हुवा गधा मिला जो पाउं फैलाए हुए था। **सरकारे वाला तबार**, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दोनों शख्सों से फ़रमाया : जाओ उस मुर्दार गधे का गोशत खाओ। उन्होंने ने अर्ज़ की : या नबिय्यल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इसे कौन खाएगा ? इर्शाद फ़रमाया : वोह जो तुम ने अपने भाई की आबरू रेज़ी की, वोह इस गधे के खाने से भी ज़ियादा सख़्त है। क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है ! वोह (या'नी माइज़) इस वक़्त जन्नत की नहरों में गोते लगा रहा है।

(सुन्न अबुदावुद ज ४ स १९७ १ हदीथ ४६२८)



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

फुलां ने खुदकुशी कर ली येह कहना गीबत है : मा'लूम हुवा फ़ौत शुदा लोगों की बुराई करना भी गीबत है। बा'ज अवकात बड़ा सब्र आजमा मुआ-मला होता है। म-सलन डाकू, दहशत गर्द, अपने अज़ीज के कातिल वगैरा क़त्ल कर दिये जाएं या उन्हें फांसी लगा दी जाए तो बा'ज अवकात लोग गीबत के गुनाह में पड़ ही जाते हैं। इसी तरह **खुदकुशी** करने वाले मुसलमान के बारे में बिला इजाज़ते शर-ई येह कह देना कि "फुलां ने खुदकुशी की" येह गीबत है यूं ही नाम व पहचान के साथ किसी मुसलमान की **खुदकुशी** की अख़बार में ख़बर भी न लगाई जाए कि इस से मरने वाले की गीबत भी होती और इस के साथ साथ मर्हूम के अहलो अयाल की इज़ज़त पर भी बट्टा लगता है। हां इस अन्दाज़ में तज़्किरा किया कि पढ़ने या सुनने वाले **खुदकुशी** करने वाले को पहचान ही न जाए कि वोह कौन था तो हरज नहीं मगर येह ज़ेहन में रहे कि नाम न लिया मगर गाउं, महल्ला, बिरादरी, अवकात, **खुदकुशी** का अन्दाज़ वगैरा बयान करने से **खुदकुशी** करने वाले की शनाख़्त मुम्किन है लिहाज़ा पहचान हो जाए इस अन्दाज़ में तज़्किरा भी गीबत में शुमार होगा। मस्अला येह है कि मुसलमान **खुदकुशी** करने से इस्लाम से ख़ारिज नहीं हो जाता इस की नमाज़े जनाज़ा भी अदा की जाएगी, इस के लिये **दुआए मग़ि़रत** भी करेंगे, मरने वाले मुसलमान को बुराई से याद करने की शरीअत में इजाज़त नहीं। इस ज़िम्न में दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा हों : **﴿1﴾** अपने मुर्दे को बुरा न कहो क्यूं कि वोह अपने आगे भेजे हुए आ'माल को पहुंच चुके हैं। (بخاری ج ۱ ص ۴۷۰ حدیث ۱۳۹۳) **﴿2﴾** अपने मुर्दे की ख़ूबियां बयान करो और उन की बुराइयों से बाज़ रहो। (سنن ترمذی ج ۲ ص ۳۱۲ حدیث ۱۰۲۱) हज़रते अल्लामा मुहम्मद अब्दुरऊफ़ मुनावी علیہ رحمۃ اللہ الهادی लिखते हैं : **मुर्दे की गीबत ज़िन्दे की गीबत से बदतर है, क्यूं कि ज़िन्दा शख़्स से मुआफ़ करवाना मुम्किन है जब कि मुर्दा से मुआफ़ करवाना मुम्किन नहीं।**

(فَيْضُ الْقَوَایِدِ لِلْمُنَاوِی ج ۱ ص ۶۲ تَحْتَ الْحَدِیثِ ۸۵۲)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अज़ लिखता है और किरात उहुद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज़ाक)

ग़स्साल मुर्दे की बुराई बयान न करे : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द अव्वल सफ़हा 811 पर है : (मय्यित को गुस्ल देते वक़्त) जो अच्छी बात देखे म-सलन चेहरा चमक उठा या मय्यित के बदन से खुशबू आई, तो उसे लोगों के सामने बयान करे और कोई बुरी बात देखी, म-सलन चेहरे का रंग सियाह हो गया या बदबू आई या सूरत व आ'ज़ा में तगय्युर आया तो उसे किसी से न कहे और ऐसी बात कहना जाइज़ भी नहीं कि हदीस में इर्शाद हुवा : "अपने मुर्दों की खूबियां ज़िक्र करो और उस की बुराइयों से बाज़ रहो।"

मरने के बा'द बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ा ! : अगर किसी मुसलमान ने मरते वक़्त ब ज़ाहिर कलिमा न पढ़ा और किसी ने कहा कि "इस को कलिमा नसीब नहीं हुवा" उस ने इस मरने वाले की गीबत की, इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ हिक्कायत मुला-हज़ा फ़रमाइये चुनान्चे हज़रते अल्लामा अब्दुल हय्य लखनवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मेरे बुजुर्गों में एक वलियुल्लाह या'नी मौलाना मुहम्मद इज़हारुल हक़ लखनवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने इन्तिक़ाल किया और मरते वक़्त उन की ज़बान से कलिमा न निकला, लोगों ने उन पर चादर डाल दी और तजहीज़ व तक्फ़ीन का इन्तिज़ाम किया, जब सब लोग बाहर निकले तो बा'जों ने बतौर ता'न के कहा कि ज़ाहिर में निहायत मुत्तक़ी थे और मरते वक़्त ज़बान से कलिमा भी न निकला, इस बात से तमाम हाज़िरीन को रन्ज हुवा, इतने में मौलाना मर्हूम ने दोनों पाउं को समेटा और ब आवाजे बुलन्द कलिमा पढ़ा, जब लोगों के कानों में आवाज़ पहुंची तो ता'न करने वालों को लोगों ने मत्ज़ुन किया (या'नी बुरा भला कहा)।

(गीबत क्या है, स. 19)

मरे हुए काफ़िर की गीबत : शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती शरीफुल हक़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं : कुफ़्फ़ार की बुराई बयान करनी जाइज़ है अगरचें वोह मर गए हों अलबत्ता अगर मरने वाले कुफ़्फ़ार के अहलो अयाल मुसलमान हों और उन के काफ़िर मां बाप, उसूल (या'नी दादा वगैरा) की बुराई करने से उन्हें ईज़ा पहुंचे तो इस से बचना ज़रूरी है कि अब येह ईज़ाए मुस्लिम



फरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुझ पर दस مرتबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عزوجل उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

है और मुसल्मान को ईजा देना जाइज़ नहीं।

(नुज़हतुल कारी, जि. 2, स. 886)

शहा मंडला रही है मौत सर पर फिर भी मेरा नफ़्स

ﷺ

गुनाहों की तरफ़ हर दम है माइल या रसूलल्लाह

6 मुर्दों की सन्सनी खैज़ हिकायात : लोगों की इब्रत के लिये फ़ौत शुदा मुसल्मानों की बुराई बयान करने में भी शरअन हरज नहीं है मुहद्दिसीने किराम ﷺ ने मुसल्मानों को गुनाहों से डराने के लिये किताबों में मरे हुए काफ़िरों के इलावा बद मज़हबों और मुसल्मानों के अज़ाबों के भी तज़िकरे फ़रमाए हैं चुनान्वे इस ज़िम्न में छ मुर्दों की सन्सनी खैज़ हिकायात मुला-हज़ा फ़रमाइये :

(1) आग का कुरता : हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं : मैं रसूलुल्लाह

ﷺ के हमराह बकीअ में गुज़रा तो आप ﷺ ने फ़रमाया : उफ़ ! उफ़ ! तो मैं ने गुमान किया कि शायद आप ﷺ मेरा इरादा फ़रमाते हैं। मैं ने अर्ज की : या रसूलल्लाह ﷺ ! क्या मुझ से कोई ग़-लती हुई ? फ़रमाया : नहीं, बल्कि इस क़ब्र वाले शख़्स को मैं ने बनू फुलां के पास स-दका वुसूल करने भेजा था तो इस ने एक चादर बतौरै ख़ियानत बचा ली थी। आख़िर वैसा ही आग का कुरता इस को पहनाया गया।

(सुन्न नसाई स. १०० हदीथ ४०९)

सरकार ﷺ से कुछ छुपा हुवा नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दर्से इब्रत देने के लिये इस हदीसे पाक में फ़ौत शुदा शख़्स के अज़ाबे क़ब्र का ज़िक्र किया गया है। इस रिवायत से येह भी रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर हुवा कि हमारे मक्की म-दनी आका ﷺ अल्लाह عزوجل की अता से इल्मे ग़ैब रखते हैं जभी तो क़ब्र में होने वाले अज़ाब के साथ साथ सबबे अज़ाब की भी हाथों हाथ ख़बर इर्शाद फ़रमा दी। मेरे आका



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है। (अबू या'ला)

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का कितना प्यारा अक़ीदा था चुनान्वे आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की हदाइके बख़्शिाश शरीफ़ का शे'र सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये :

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
म-लकूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

(या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इनायत से अर्श आप की गुज़र गाह है और फ़र्श ज़ेरे निगाह है। अल ग़रज़ मलाएका हों या आलमे अरवाह, काएनात में कोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पोशीदा हो)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

(2) बे दीन की गरदन में सांप : हाफ़िज़ अबू ख़ल्लाल ने “किताब करामातुल औलिया” में अपनी सनद से रिवायत की, कि मुझे से अब्दुल्लाह बिन हाशिम ने फ़रमाया : मैं एक मय्यित को नहलाने गया, जब मैं ने उस के जिस्म से कपड़ा खोला तो उस की गरदन पर सांप लिपटे हुए थे ! मैं ने उन सांपों से कहा कि आप को इस पर मुसल्लत किया गया है और हमें इस को गुस्ल देना है, अगर आप इजाज़त दें तो हम इस को गुस्ल दे दें फिर आप अपनी जगह वापस आ जाइये, तो वोह सांप हट कर एक कोने में हो गए। जब हम गुस्ले मय्यित से फ़ारिग़ हुए तो वोह अपनी जगह वापस आ गए। येह शख्स बे दीनी (या'नी गुमराही) में मशहूर था।

(شَرَحُ الصُّدُور ص ۱۷۷)

(3) गरदन में सांप लिपटा हुवा था : हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الرَّزّاق फ़रमाते हैं : मुझे एक मय्यित को गुस्ल देने के लिये बुलाया गया, जब मैं ने उस के चेहरे से कपड़ा हटाया तो उस की गरदन में सांप लिपटा हुवा था, लोगों ने बताया कि येह सहाबए किराम

مَعَاذَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ को गालियां देता था।

(شَرَحُ الصُّدُور ص ۱۷۲)



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़अत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

सहाबा के हक़ में खुदा से डरो ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ सहाबए

किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को गालियां देना गुनाह, गुनाह, बहुत सख़्त गुनाह, क़र्ई हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ 192 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "सवानेहे करबला" सफ़हा 31 पर है : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़ल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि मेरे अस्हाब के हक़ में खुदा से डरो ! खुदा का ख़ौफ़ करो !! इन्हें मेरे बा'द निशाना न बनाओ, जिस ने इन्हें महबूब रखा मेरी महब्बत की वजह से महबूब (या'नी प्यारा) रखा और जिस ने इन से बुज़ किया वोह मुझ से बुज़ रखता है, इस लिये उस ने इन से बुज़ रखा, जिस ने इन्हें ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी, जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने बेशक खुदाए तआला को ईज़ा दी, जिस ने अल्लाह तआला को ईज़ा दी क़रीब है कि अल्लाह तआला उसे गरिफ़्तार करे।

(सुन्न त्रिमझी ज ०५ व ६३३ हदीथ ३८८८)

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का निहायत अदब कीजिये : सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عليه رحمة الله الهادي फ़रमाते हैं : मुसल्मान को चाहिये कि सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का निहायत अदब रखे और दिल में इन की अक़ीदत व महब्बत को जगह दे। इन की महब्बत हुज़ूर (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की महब्बत है और जो बद नसीब सहाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की शान में बे अ-दबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने खुदा व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) है। मुसल्मान ऐसे शख्स के पास न बैठे। (सुअख़ क़रब्लास ३१) मेरे आका आ'ला हज़रत (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर

नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की

(या'नी अहले सुन्नत का बेड़ा पार है क्यूं कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इन के लिये सितारों की मानिन्द और अहले बैते अत्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कश्ती की तरह हैं)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُؤْبِوْا إِلَى اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

(4) क़ब्र में भयानक काला सांप : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की ख़िदमत में कुछ लोग हाज़िर हुए और अर्ज की : हम सफ़रे हज पर निकले हुए हैं, मक़ामे सफ़ाह पर हमारे क़ाफ़िले का आदमी फ़ौत हो गया है। हम ने उस के लिये जब क़ब्र खोदी तो एक बहुत बड़ा काला सांप बैठा नज़र आया, जिस ने क़ब्र को भर रखा था उसे छोड़ कर दूसरी क़ब्र खोदी तो उस में भी वोही सांप नज़र आया। आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में इस गम्भीर मस्अले के हल की ख़ातिर हाज़िर हुए हैं। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُمْ ने फ़रमाया : “येह उस की ख़ियानत की सज़ा है जिस का वोह मुर-तकिब हुवा करता था।” और बैहक़ी के अल्फ़ाज़ येह हैं : **يَا'نِي ذَاكَ عَمَلُهُ الَّذِي كَانَ يَعْمَلُ** : “येह उस के अमल की सज़ा है जो वोह किया करता था।” आप हज़रात उसे उन दोनों में से किसी एक क़ब्र में दफ़न कर दीजिये, खुदा की क़सम ! अगर इस दुन्या की सारी ज़मीन भी खोद डालेंगे तब भी हर जगह येही कुछ पाएंगे।” बिल आख़िर हम ने उस को सांप भरी क़ब्र में दफ़ना दिया। वापस आ कर हम ने उस का सामान उस के घर वालों को दे दिया और उस की बेवा से उस के आ'माल के बारे में सुवाल किया तो उस ने बताया : येह खाना बेचता था और उस में से अपने घर वालों के लिये कुछ निकाल लेता था फिर कमी पूरी करने के लिये उस में उतनी ही मिलावट कर देता था।

(شَرْحُ الصُّدُور ص ١٧٤، شُعَبُ الْإِيمَان ج ٤ ص ٣٣٤ حديث ٥٣١١)

धोकाबाज़ी जहन्नम से है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ज़रूरतन इब्रत के लिये मुर्दे की बुराई बयान करना जाइज़ था जभी तो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُمْ ने उस मरे हुए हाजी की बुराई बयान फ़रमाई, नीज़ जवाज़ ही के सबब बुलन्द पाया मुहद्दीसीन ने इस हिकायत को अपनी अपनी कुतुब में नक़ल किया। इस हिकायत

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े । (हाकिम)

से मिलावट वाला माल धोके से बेचने की तबाहकारी मा'लूम हुई । दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 480 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बयानाते अत्तारिय्या" हिस्सा अव्वल के सफ़हा 218 पर है : अल्लाह के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब, तबीबों के तबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जो हमारे साथ धोकाबाज़ी करे वोह हम में से नहीं और मक्र और धोकाबाज़ी जहन्नम में हैं । (الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِی ج ۱۰ ص ۱۳۸ حدیث ۱۰۲۳۴) एक और मक़ाम पर सरकारे नामदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि तीन अशख़ास दाख़िले जन्नत न होंगे (1) धोकाबाज़ (2) बख़ील (3) एहसान जताने वाला । (سُنَنِ تِرْمِذِی ج ۳ ص ۳۸۸ حدیث ۱۹۷۰)

मिलावट वाला माल बेचने का जाइज़ तरीक़ा : यहां वोह लोग इब्रत हासिल करें जो मिलावट वाला माल धोके से बेचते हैं अगर मरने के बा'द पकड़ में आ गए तो क्या होगा ! अगर माल मिलावट वाला है और गाहक को मिलावट वगैरा की मिक्दार बता दी या मिलावट बिल्कुल नुमायां नज़र आ रही है तो ऐसा माल बेचना जाइज़ है जब कि इस में से कुछ छुपाया न गया हो म-सलन मिलावट की मिक्दार बताई मगर कम बताई जैसा कि 50 फ़ीसद मिलावट थी और 25 फ़ीसद कहा या जितनी मिलावट ऊपर से नज़र आ रही हो उस से ज़ियादा नीचे मिलावट कर रखी हो और वोह ज़ाहिर न करे तो ना जाइज़ है । इसी तरह धोका देने के लिये ऊपर उम्दा फल और नीचे या बीच में गले सड़े फल रखने वालों और यूं ही दूसरी चीज़ों में धोका बाज़ी से काम लेने वालों को इन गुनाहों से बचना चाहिये ।

धोकाबाज़ी में नुहूसत है बड़ी

याद रख इस की सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ مُحَمَّد

تُونُوْا اِلٰی اللہِ اَسْتَغْفِرُ اللہَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफा ﷺ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

(5) परिन्दे ने कै की तो उस में से इन्सान निकल पड़ा ! : इस्मह अब्बादानी कहते

हैं : मैं किसी जंगल में घूम रहा था कि मैं ने एक गिरजा देखा, गिरजा में एक राहिब की खानकाह थी उस के अन्दर मौजूद राहिब से मैं ने कहा कि तुम ने इस (वीरान) मक़ाम पर जो सब से अजीबो ग़रीब चीज़ देखी हो वोह मुझे बताओ ! तो उस ने बताया : मैं ने एक रोज़ यहां शुतर मुर्ग़ जैसा एक देव हैकल सफ़ेद परिन्दा देखा, उस ने उस पथ्थर पर बैठ कर कै की, उस में से एक इन्सानी सर निकल पड़ा, वोह बराबर कै करता रहा और इन्सानी आ'जा निकलते रहे और बिजली की सी सुरअत (या'नी फुरती) के साथ एक दूसरे से जुड़ते रहे यहां तक कि वोह मुकम्मल आदमी बन गया ! उस आदमी ने जूं ही उठने की कोशिश की उस देव हैकल परिन्दे ने उस के टूंग मारी और उस को टुकड़े टुकड़े कर दिया, फिर निगल गया। कई रोज़ तक मैं येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देखता रहा, मेरा यकीन खुदा عزّوجلّ की कुदरत पर बढ़ गया कि वाक़ेई अल्लाह तआला मार कर जिलाने पर कादिर है। एक दिन मैं उस देव हैकल परिन्दे की तरफ़ मु-तवज्जेह हुवा और उस से दरयाफ़्त किया कि ऐ परिन्दे ! मैं तुझे उस ज़ात की क़सम दे कर कहता हूं जिस ने तुझ को पैदा किया कि अब की बार जब वोह इन्सान मुकम्मल हो जाए तो उस को बाकी रहने देना ताकि मैं उस से उस का अमल मा'लूम कर सकूं। तो उस परिन्दे ने फ़सीह अ-रबी में कहा : “मेरे रब عزّوجلّ के लिये ही बादशाहत और बका है हर चीज़ फ़ानी है और वोही बाकी है मैं उस का एक फ़िरिश्ता हूं और इस शख्स पर मुसल्लत किया गया हूं ताकि इस के गुनाह की सज़ा देता रहूं।” जब कै में वोह इन्सान निकला तो मैं ने उस से पूछा : ऐ अपने नफ़्स पर जुल्म करने वाले इन्सान ! तू कौन है और तेरा क़िस्सा क्या है ? उस ने जवाब दिया : “मैं हज़रते मौलाए काएनात अलिय्युल मुर्तज़ा शोरे खुदा عزّوجلّ का कातिल अब्दुरहमान इब्ने मुल्जिम हूं, जब मैं मर चुका तो अल्लाह तआला के सामने मेरी रूह हाज़िर हुई, उस ने मेरा नामए आ'माल मुझ



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: जो मुझ पर एक दुहुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उहुद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज्जाक)

को दिया जिस में मेरी पैदाइश से ले कर हज़रते अली كُوْمِ اللّٰہِ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को शहीद करने तक की हर नेकी और बदी लिखी हुई थी। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस फ़िरिश्ते को हुक्म दिया कि वोह क़ियामत तक मुझे अज़ाब दे।” येह कह कर वोह चुप हो गया और देव हैकल परिन्दे ने उस पर दूंगें मारीं और उस को निगल गया और चला गया।

(شَرْحُ الصُّوَر ص ۱۷۰)

इब्ने मुल्जिम ने मौला अली को क्यों शहीद किया ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

देखा आप ने ! मौला अली शेर ख़ुदा كُوْمِ اللّٰہِ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के क़ातिल का जो कि ख़ारिजी बद दीन व गुमराह था कैसा दर्दनाक अन्जाम हुवा ! वोह बद नसीब क्यों इतना बड़ा गुनाह करने के लिये आमादा हुवा इस सिल्लिसले में हज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی ने “मुस्तदरक” के हवाले से लिखा है कि इब्ने मुल्जिम एक क़िताम नामी ख़ारिजिया औरत के इश्क़े मजाज़ी में गरिफ़्तार हो गया था, उस ने शादी के लिये महर में तीन हज़ार दिरहम और हज़रते मौला अली كُوْمِ اللّٰہِ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के क़त्ल का मुता-लबा रखा था। (تَارِیْخُ الْخُلَفَاءِ ص ۱۳۹، التَّسْتَدْرِك ج ۴، ص ۱۲۱ رقم ۴۷۴۴) अफ़सोस ! इश्क़े मजाज़ी में इब्ने मुल्जिम अन्धा हो गया और उस ने हज़रते मौलाए काएनात, मौला अली शेर ख़ुदा كُوْمِ اللّٰہِ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم जैसी अज़ीम हस्ती को शहीद कर दिया, इस ना बकार को वोह औरत तो ख़ाक मिलनी थी हाथों हाथ येह सज़ा मिली कि लोगों ने देखते ही देखते उसे पकड़ लिया, बिल आख़िर उस के बदन के टुकड़े टुकड़े कर के टोकरे में डाल कर आग लगा दी गई और वोह जल कर ख़ाकिस्तर हो गया ! और मरने के बा’द ता क़ियामत जारी रहने वाले इस के लरज़ा ख़ैज़ अज़ाब का अभी आप ने तज़्किरा सुना। वोह बद बख़्त, न इधर का रहा न उधर का रहा। हज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बिल्कुल सच फ़रमाया है कि “शहवत की घड़ी भर के लिये पैरवी तवील गुम का बाइस बनती है।” (सहाबी का क़ौल यहीं तक है) क़ाबील भी तो शहवत ही की वजह से हज़रते सय्यिदुना हाबील عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی को शहीद कर के बरबाद हुवा और बरबाद भी कैसा हुवा कि सिर्फ़ सुन कर ही झुरझुरी आ जाए ! तो इस की भी ह़िकायत मुला-हज़ा फ़रमाइये और शहवत की आफ़त से रब्बुल इज़्ज़त की पनाह मांगिये :



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुहुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमूअुन्नुवाइद)

(6) हौज़ पर उलटा लटका हुवा आदमी : अब्दुल्लाह कहते हैं : हम चन्द अफ़राद समुन्दरी सफ़र पर रवाना हुए । इत्तिफ़ाक़न चन्द रोज़ तक अंधेरा छाया रहा, जब रोशनी हुई तो एक बस्ती आ गई । अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैं पीने के लिये पानी की तलाश में रवाना हुवा तो बस्ती के दरवाज़े बन्द थे, मैं ने बहुत आवाज़ें दीं, कोई जवाब न आया, इसी अस्ना में दो शह सुवार (या'नी दो घोड़े सुवार) नुमूदार हुए, उन्होंने ने कहा : ऐ अब्दुल्लाह ! उस गली में दाख़िल हो जाओ तो तुम्हें पानी का एक हौज़ मिलेगा उस में से पानी ले लेना और वहां के मन्ज़र को देख कर ख़ौफ़ज़दा न होना । मैं ने उन से उन बन्द दरवाज़ों के बारे में दरयाफ़्त किया जिन में हवाएं चल रही थीं, उन्होंने ने बताया : “येह वोह घर हैं जिन में मुर्दों की रूहें रहती हैं ।” फिर मैं हौज़ पर पहुंचा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स पानी पर उलटा लटका हुवा है वोह अपने हाथ से पानी लेना चाहता है लेकिन नाकाम हो जाता है, मुझे देख कर पुकारने लगा : ऐ अब्दुल्लाह ! मुझे पानी पिलाओ । मैं ने बरतन ले कर डबोया ताकि उसे पानी पिला सकूं लेकिन किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया, मैं ने उस लटके हुए आदमी से कहा : ऐ बन्दए खुदा ! तूने देख लिया कि मैं ने अपनी तरफ़ से कोशिश की, कि तुझे पानी पिलाऊं लेकिन मेरा हाथ पकड़ा गया, तू मुझे अपना वाकिआ बता । उस ने कहा : मैं हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का लड़का (क़ाबील) हूं, जिस ने दुन्या में सब से पहला क़त्ल किया ।

(کتاب من عاش بعد الموت مع موسوعة ابن أبي الدنيا ج ٦ ص ٢٩٧ رقم ٤٨)

क़ाबील के सियाह कारनामे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ाबील शुरूअ में मुसल्मान था बा'द में मुरतद हो गया था, उसी ने दुन्या का सब से पहला क़त्ल किया, उसे दुन्या में येह सज़ाएं मिलीं कि क़त्ल करते ही उस का गोरा रंग सियाही में तब्दील हो गया, दिल एक दम सख़्त हो गया, अपनी बहन लयूज़ा को अ़दन की तरफ़ ले कर भाग गया, हराम औलाद हुई, जब बुढ़ा हो गया तो उस की औलाद इस को पथ्थर मारती थी, यहां तक कि अपनी औलाद के पथ्थर ही से हलाक हो गया । हलाकत के बा'द मिलने वाली सज़ा का लरज़ा ख़ैज़ वाकिआ आप सुन चुके । मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن



फ़रमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

क़ाबील के सियाह कारनामे बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : हज़रते आदम عليه السلام का हुक्म न मानना, ना जाइज़ निकाह का इरादा करना, हाबील के क़त्ल का इरादा करना, हाबील के क़त्ल के बा'द मुरतद हो जाना, गाना बजाना, बाजे ताशे ईजाद करना । मज़ीद फ़रमाते हैं : मुरतद व बे दीन को नबी ज़ादा होना बिल्कुल ही बेकार है, पैग़म्बर ज़ादगी (सिर्फ़) ईमान के साथ मुफ़ीद है, देखो क़ाबील नबी ज़ादा था मगर हलाक हो गया ।

(माख़ूज़ अज़ तफ़्सीरे नईमी, जि. 6, स. 403, 405)

तेरी रहमतों ही से ईमां मिला है
मुसल्मां है अत्तार तेरे करम से

न हो अब येह मुझ से जुदा या इलाही عزوجل
हो ईमान पर खातिमा या इलाही عزوجل

दर्स में शिर्कत मेरी इस्लाह का सबब बन गई : ईमान की हिफ़ाज़त का ज़ब्बा पाने, ग़ीबत करने सुनने की ख़स्लत मिटाने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये । फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स, इन्फ़िरादी कोशिश, माहे र-मज़ानुल मुबारक में आशिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ की भी बड़ी ब-र-कतें हैं ! आइये ! इस ज़िम्न में एक म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार करूं । भीम्बर, कश्मीर के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह तहरीर दी कि मैं उन दिनों फ़र्स्ट इयर में पढ़ता था, कोलेज का आज़ादाना माहोल था, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने का शौक़ जुनून की हद तक था हत्ता कि उस गाड़ी में सफ़र नहीं करता था जिस में गाने या फ़िल्म न होती ! हमारी कोलोनी में दा'वते इस्लामी के एक इस्लामी भाई तशरीफ़ लाए उन्होंने ने फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स दिया और एक दुआ याद करवाई । इस से मैं बहुत ज़ियादा मु-तअस्सिर हुवा, इस के बा'द से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत सुनना शुरूअ कर दिया । मेरे



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

म-दनी माहोल से बा काइदा वाबस्तगी की एक बहुत बड़ी वजह हमारे अलाके के एक मुबल्लिग की इन्फिरादी कोशिश है उन का हुस्ने अख्लाक, आ'ला किरदार, जब्बए हुस्ने अमल और महब्बत भरा अन्दाज है। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने माहे र-मजानुल मुबारक में आशिकाने रसूल के साथ दस दिन के ए'तिकाफ की भी सआदत हासिल की। इस का मुझ पर बड़ा गहरा असर हुवा और मैं गुनाहों से ताइब हो गया। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** बयान देते वक्त कश्मीर की मुशा-वरत के एक रुक्न की हैसियत से नमाजों और सुन्नतों की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं। साथ ही साथ **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** कश्मीर में दा'वते इस्लामी की एक "मजलिस" का निगरान बना दिया गया हूं और कश्मीर के एक डिवीज़न की निगरानी से भी मुशर्रफ हूं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **दसैं फ़ैज़ाने सुन्नत** की ब-र-कत से म-दनी माहोल की तरफ़ रबत मिली, इस्लामी भाई की इन्फिरादी कोशिश व शफ़क़त ने मजीद तक्वियत बख़्शी और सद करोड़ मरहबा ! म-दनी माहोल के अन्दर होने वाले सुन्नते भरे ए'तिकाफ़े र-मजान ने गुनाहों की गहरी खाई में गिरे हुए इन्सान को सहारा दे कर निकाला और इतनी ज़बर दस्त अ-ज़मत बख़्शी कि दा'वते इस्लामी के बहुत सारे ज़िम्मेदारों का भी ज़िम्मेदार बना दिया। काश ! तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें (ब शुमूल सब के सब छोटे बड़े ज़िम्मेदारान) रोज़ाना दो **दसैं फ़ैज़ाने सुन्नत** देने या सुनने की तरकीब फ़रमा लिया करें।

क़ब्र की रोशनी : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1548 स-फ़हात पर मुशतमिल किताब, "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" सफ़हा 195 ता 196 पर है : **दसैं** बयान के सवाब का भी क्या कहना ! हज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूतिश्शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعْدِي** "शर्हुस्सुदूर" में नक़ल करते हैं : **अल्लाह** तबा-र-क व तआला ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** की तरफ़ वह्य फ़रमाई, "भलाई की बातें खुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अब्दुर्रज़ाक)

ताकि उन को किसी किस्म की वहशत न हो ।”

(حلیۃ الاولیاء ج ۶ ص ۵ حدیث ۷۶۲۲)

क़ब्रें जगमगा रही होंगी : इस रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा । **ان شاء الله عزوجل** सीखने सिखाने की निय्यत से सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे, **ان شاء الله عزوجل** उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी किस्म का खौफ़ महसूस नहीं होगा । अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ इन्फ़रादी कोशिश करते हुए नेकी की दा'वत देने वालों, म-दनी काफ़िले में सफ़र और फ़िक्रे मदीना कर के म-दनी इन्आमात का रिसाला रोज़ाना पुर करने की तरगीब दिलाने वालों और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की दा'वत पेश करने वालों नीज़ ब निय्यते सवाब मुबल्लिगीन की नेकी की दा'वत को सुनने वालों की कुबूर भी **ان شاء الله عزوجل** **हुज़ूर मुफ़ीज़ुनूर** **صلی الله تعالیٰ علیہ والہ وسلم** के नूर के सदके नूरुन अला नूर होंगी ।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़शर चश्मे नूर के

صلی الله تعالیٰ علیہ والہ وسلم

जल्वा फ़रमा होगी जब तलअत रसूलुल्लाह की

(हदाइके बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

تُؤْتُوا لِيِ اللهِ **أَسْتَغْفِرُ اللهَ**

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

दा'वत में गीबत की हिकायत : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम **عليه ورحمة الله الاكرم** कहीं खाने की दा'वत पर तशरीफ़ ले गए, लोगों ने आपस में कहा कि फुलां शख़्स अभी तक नहीं आया । एक शख़्स बोला : वोह मोटा तो बड़ा सुस्त है । इस पर हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम **عليه ورحمة الله الاكرم** अपने आप को मलामत करते हुए फ़रमाने लगे : अफ़सोस !



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (कजुल उमाल)

मेरे पेट की वजह से मुझ पर येह आफ़त आई है कि मैं एक ऐसी मजलिस (या'नी बैठक) में पहुंच गया जहां एक मुसलमान की ग़ीबत हो रही है। येह कह कर वहां से वापस तशरीफ़ ले गए और (इस सदमे से) तीन (और ब रिवायते दीगर सात) दिन तक खाना न खाया।

(تنبيه الغافلين ص ८९)

“ग़ीबत करना गुनाहे कबीरा है” के उन्निस हुरूफ़ की निस्बत से किसी को सुस्त वग़ैरा कहने के मु-तअल्लिक़ 19 मिसालें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! अल्लाह ﷻ के नेक बन्दे मुसलमान की आबरू रेज़ी बिल्कुल बरदाश्त नहीं करते और ऐसी बैठकों और दा'वतों को भी तर्क कर देते हैं जहां मुसलमानों की ग़ीबतों का सिलसिला हो। क्या कभी हम भी किसी ग़ीबतों भरी दा'वत या बैठक से “वोक आउट” हुए ? हां, वहां से उठ कर चल देने से पहले अपनी बात का वज़्न देखना होगा या'नी अगर येह ज़न्ने ग़ालिब हो कि समझाने से ग़ीबत करने वाले तौबा कर लेंगे तब तो उन्हें ग़ीबत से बाज़ रखना आप पर वाजिब हो जाएगा और अगर ऐसी सूरत नहीं तो जिस तरह मुम्किन हो ग़ीबत सुनने से बचिये और अगर फ़ितना व फ़साद का ख़ौफ़ न हो तो वहां से उठ कर चल दीजिये। चूँकि ग़ीबत की जाइज़ सूरतें भी मौजूद हैं लिहाज़ा समझाने और उठ कर जाने वाले के पास इतना इल्म होना ज़रूरी है जिस से वोह येह तै कर सके कि वाक़ेई गुनाहों भरी ग़ीबत हो रही है। इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि पीठ पीछे किसी को “मोटा” और “सुस्त” कहना भी ग़ीबत में दाख़िल है। मोटा और सुस्त दोनों अलग अलग अल्फ़ाज़ हैं या'नी अगर किसी भारी भरकम आदमी को पीछे से बिला इजाज़ते शर-ई मोटा कहा तब भी ग़ीबत है इसी तरह बिला इजाज़ते शर-ई पीछे से किसी को ★ सुस्त ★ काहिल ★ नाकारा ★ ढीला ★ कामचोर ★ निकम्मा ★ निखटू ★ गंवार ★ जाहिल ★ अनपढ़ ★ कम अक्ल ★ अहमक ★ बे बुकूफ़ ★ नादान ★ पगला ★ बावला ★ पागल ★ देर से समझने वाला ★ मोटी अक्ल वाला वग़ैरा कहना भी ग़ीबत है।



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुर्हुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमूज़्जवाइद)

मेरे सर पर इस्यां का बार आह मौला !
ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है

बढ़ा जाता है दम बدم या इलाही
येह तेरा ही तो है करम या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُونُوْا لِی اللہ اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

दोनों जहां की ज़िल्लत : मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने 'मत, अज़ीमुल ब-र-कत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्पू रिसालत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहि्ये बिदअत, अल्लिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे खैरो ब-र-कत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल कारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ जिल्द 24 सफ़हा 347 पर फ़रमाते हैं : जो मज़्लूम की दाद रसी पर क़ादिर हो और न करे तो उस के लिये ज़िल्लत का अज़ाब है। हदीस में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : “जिस शख्स के सामने उस के मुसल्मान भाई की गीबत की जाए और येह उस की मदद पर क़ादिर हो और न करे, अल्लाह तआला उसे दुन्या व आख़िरत में पकड़ेगा।” (مَجْدِدُ اِسْمِ الْغَيْبَةِ لَا بَيْنَ اَبِي الدُّنْيَا ص ۱۳۴ رقم ۱۰۸) मज़ीद इसी जिल्द के सफ़हा 426 ता 427 पर लिखते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “जिस शख्स के सामने किसी मुसल्मान की बे इज़ज़ती की जाए और वोह ताक़त के बा वुजूद उस की इमदाद न करे तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उसे लोगों के सामने ज़लील व रुस्वा करेगा।” (مُسْنَدُ اِمَامِ اَحْمَد ج ۵ ص ۴۱۲ حدیث ۱۵۹۸۵) आ'ला हज़रत येह हदीसे पाक लिखने के बा'द तहरीर फ़रमाते हैं : अन्दाज़ा किया जा सकता है कि मुसल्मान की (गीबत वगैरा के ज़रीए) बे इज़ज़ती को देख कर ख़ामोश रहना ऐसे (या'नी क़ियामत की रुस्वाई के) अज़ाब का बाइस है तो खुद उसे (या'नी किसी मुसल्मान को



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बदबज़ हो गया । (इन्ने सुनी)

ग़ीबत वगैरा के ज़रीए) ज़लील करने के दरपै होना और जिस (मन्सब और) मर्तबे की वजह से उसे मुसलमानों के नज़दीक इज़्ज़त हासिल हो उस में (ग़ीबतों, इल्ज़ाम तराशियों और बद गुमानियों वगैरा के ज़रीए) रखना अन्दाज़ी (या'नी ख़लल डालने) की कोशिश करना किस क़दर अज़ाब और अल्लाह तआला के ग़ज़ब का सबब होगा ! (फ़तावा र-ज़विय्या)

अल्लाह की दी हुई इज़्ज़त कौन छीन सकता है ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायात और आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ के फ़र्मूदात (या'नी इर्शादात) से वोह हज़रात इब्रत हासिल करें जो बिला इजाज़ते शर-ई किसी सुन्नी आलिम, पेशवा, सर-बराह किसी तन्ज़ीमी जिम्मेदार या किसी भी आम मुसलमान के पीछे पड़ जाते हैं । उस को ह-दफ़े तन्कीद बनाते हुए उस की इज़्ज़त उछालने लगते हैं, यूं ग़ीबतों, चुग़लियों, तोहमतों, बद गुमानियों, ऐब दरियों, दिल आज़ारियों और न जाने किन किन गुनाहों के मुर-तक़िब होते हैं । जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुअज़्ज़ज़ किया हो उस की इज़्ज़त कौन छीन सकता है ! सुनो ! सुनो ! जो बद नसीब बिला वज्हे शर-ई किसी मुसलमान की मुख़ा-लफ़त करते उन को बदनाम करते फिरते हैं ऐसों के बारे में कुरआने करीम क्या फ़रमाता है चुनान्वे पारह 18 सू-रतुन्नूर आयत नम्बर 19 में अल्लाहु रहमान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसलमानों में बुरा चरचा फैले उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है दुनिया और आख़िरत में ।

मुझे ग़ीबतों से तू महफूज़ फ़रमा **पए सरवरे दो जहां या इलाही**
जो शाहे मदीना की ना तें सुनाए **अता कर दे ऐसी ज़बां या इलाही**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللّٰهِ ا اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज्जवाइद)

आक़ा ﷺ ने ख़्वाब में फ़रमाया : गीबत करने सुनने की आदत निकालने,

नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये

म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये। आइये

“मस्जिद भरो इज्तिमाअ” की एक अनोखी म-दनी बहार सुनते हैं चुनान्वे 10 الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ

सितम्बर 2004 बरोज़ जुमअतुल मुबारक तहसील ठरी मीरवाह से मुत्तसिल “गोठ हाजी इल्यास खास ख़ैली” (पाकिस्तान) की जीलानी मस्जिद में बा'द नमाज़े इशा “मस्जिद भरो इज्तिमाअ”

हुवा। मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी ने सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया और तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के बैनल अक्वामी इज्तिमाअ सितम्बर

(2004) में शिक़त और हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की भरपूर तरगीब दिलाई।

7 الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाई 12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले के लिये हाथों हाथ तय्यार हो गए। उसी

रात उसी गाड़ के एक खुश नसीब इस्लामी भाई जो कि दुरूद शरीफ़ पढ़ते पढ़ते सोए थे उन को

सरकारे रिसालत मआब ﷺ की ख़्वाब में ज़ियारत हुई, मीठे मीठे आक़ा मदीने

वाले मुस्तफ़ा ﷺ ने सलाम इर्शाद फ़रमाने के बा'द खुद ही अपना तआरुफ़ भी

करवाया कि मैं मुहम्मद ﷺ हूं और जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस में येह भी था

“तुम्हारे गाड़ पर खुसूसी करम हो गया है।” मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : “जो चेहरे पर दाढ़ी सजाए

उस की मुझ से महब्बत है और जो दाढ़ी मुंडाए उस की मुझ से महब्बत नहीं और तू रोज़ तहज्जुद

की निय्यत करता है मगर सुस्ती कर जाता है, उठ और तहज्जुद अदा कर।” जब भरे मज्मअ में

उस इस्लामी भाई ने क़सम खा कर अपना ख़्वाब सुनाया तो सुन कर कई इस्लामी भाइयों ने चेहरे



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबर्ज़ हो गया । (इन्ने सुनी)

पर दाढ़ी सजाने और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र पर जाने की निय्यतें कीं ।

गोठ में गाउं में, धूप में छाउं में सब से कहते रहें, क़ाफ़िले में चलो
जंगलो कोह में, कोह की खोह में दी के डंके बजें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मस्जिद भरो इज्तिमाअ़ मरहबा ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! “मस्जिद भरो इज्तिमाअ़” की ब-र-कतों की भी क्या बात है ! बा’ज अवकात सियासी तौर पर “जेल भरो” तहरीक चलाई जाती है, दा’वते इस्लामी चूँकि सुन्नतों भरी ग़ैर सियासी म-दनी तहरीक है येह मस्जिद भरो के अज़ाइम रखती है और चाहती है कि बस किसी तरह भी उम्मत का बच्चा बच्चा नमाज़ी बन जाए । इस म-दनी बहार का अहम्म हिस्सा ख़्वाब में महबूबे रब्बुल इज़ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत और येह पैग़ामे रिसालत है : जो चेहरे पर दाढ़ी सजाए उस की मुझ से महब्वत है और जो दाढ़ी मुंडाए उस की मुझ से महब्वत नहीं । ख़्वाब की इस बात की ताईद इस हदीसे पाक से होती है जिस में येह फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : जो मेरी सुन्नत इख़्तियार करे वोह मेरा और जो मेरी सुन्नत से मुंह फ़ैर ले वोह मेरा नहीं ।

(تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٣٨ ص ١٢٧)

दाढ़ी के मु-तअल्लिक़ एक इब्रतनाक ख़्वाब : मैं (غَفَى عَنْهُ) दा’वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले के हमराह मुख़्तलिफ़ शहरों का सफ़र करता हुवा हिन्द के सूबए गुजरात के एक साहिली शहर “वेरावल” हाज़िर हुवा, वहां एक क्लीन शेव नौ जवान से मुलाक़ात हुई जिस ने मुझ से कुछ इस तरह ख़्वाब बयान किया : मैं ने देखा, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ किसी के ज़ानू पर सरे अन्वर रख कर लैटे हुए हैं, क़रीब ही दा’वते इस्लामी का एक मुबल्लिग़ हाज़िर है, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ उस मुबल्लिगे दा’वते इस्लामी से फ़रमाने लगे : (अल्फ़ाज़ याद नहीं मज़मून कुछ इस तरह था) “मेरे उम्मती दाढ़ी मुंडवाते हैं



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

इस से मेरे सीने में दर्द होता है।” यह सुन कर उस मुबल्लिग ने मुझ क्लीन शेव के चेहरे पर अपने दोनों हाथ फैर दिये और मेरी आंख खुल गई। (गालिबन वोह ख्वाब ताजा तरीन था उस नौ जवान ने मेरे सामने दाढ़ी बढ़ाने के अज़्म का इज़हार किया)

आका صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की महब्बत की निशानी सजा लीजिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस ने अभी तक दाढ़ी नहीं रखी उस को चाहिये कि अपने मीठे मीठे म-दनी महबूब صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم की महब्बत की निशानी दाढ़ी शरीफ अपने चेहरे पर सजा ले, अब तक मुंडाई या ठोड़ी के नीचे एक मुठ्ठी से घटाई इस से तौबा भी कर ले। शैतान लाख रोके दाढ़ी के मु-तअल्लिक दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का दिल हिला देने वाला रिसाला, “काले बिच्छू” (स-फ़हात 25) का मुता-लआ कीजिये। नीज़ मक-त-बतुल मदीना की जारी कर्दा “काले बिच्छू” नामी ओडियो केसेट सुनिये या V.C.D देखिये।

صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

सरकार का आशिक भी क्या दाढ़ी मुंडाता है

क्यूं इश्क का चेहरे से इज़हार नहीं होता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

تُونُوا إِلَى اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

सूद से बड़ा गुनाह कौन सा है ? : हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिगीन, जनाबे रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ने सहाबए किराम الرضوان عَلَيْهِمُ الرضوان से दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सूद से बड़ा गुनाह कौन सा है ? सहाबए किराम الرضوان ने अज़



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عُزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

की बेहतर जानते हैं : وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ : या'नी अल्लाह عُزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ । फरमाया : बेशक अल्लाह عُزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सूद से बढ़ कर गुनाह है मुसल्मान की इज़्ज़त को हलाल समझना । फिर रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते करीमा तिलावत फरमाई :

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
بَعْدِ مَا كَتَبْنَا لَهُمْ تَنكِحًا
إِثْمًا مُبِينًا ۖ

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और जो ईमान वाले मर्दों और औरतों को बे किये सताते हैं उन्होंने ने बोहतान और खुला गुनाह अपने सर लिया ।

(شُعَبُ الْإِيمَانِ لِلْبَيْهَقِيِّ ج ٥ ص ٢٩٨ حديث ٦٧١١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन मुसल्मान की इज़्ज़त पर हाथ डालना सूद जैसे गुनाहे बद से भी बद तरीन है । इस जिम्न में मज़ीद तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुला-हज़ा फरमाइये :

मुसल्मान की इज़्ज़त पर हाथ डालना सूद से बड़ा गुनाह है : (1) आदमी को मिलने वाला सूद का एक दिरहम अल्लाह عُزَّوَجَلَّ के नज़्दीक छत्तीस (36) बार जिना करने से ज़ियादा बुरा है और बेशक सूद से बढ़ कर गुनाह किसी मुसल्मान की बे इज़्ज़ती करना है । (2) सूद बहत्तर (72) गुनाहों का मज्मूआ है और इन में से अदना तरीन अपनी मां से जिना करने की तरह है और बेशक सूद से बढ़ कर गुनाह किसी मुसल्मान की बे इज़्ज़ती करना है । (3) बद तरीन सूद मुसल्मान की आबरू में नाहक़ दस्त दराज़ी है । (سُنَنِ ابودَاوُد ج ٤ ص ٣٥٣ حديث ٤٨٧٦) हदीसे पाक नम्बर 3 के तहत मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيهِ رَحْمَةُ الْخَنَانِ फरमाते हैं : या'नी सूद ख़्वारी बद तरीन गुनाह है जैसे मां के साथ का'बए मुअज़्ज़मा में जिना करना, सूद



फरमाने मुस्तफा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

ख़्वार को अल्लाह रसूल से जंग करने का अल्टी मेटम दिया गया है, येह तो माली सूद का हाल है, मुसल्मान की आबरू चूंक माल से ज़ियादा अज़ीज़ और कीमती है इसी लिये मुसल्मान की आबरू रेज़ी (गीबत वगैरा कर के), इसे ज़लील करना बद् तरीन सूद क़रार दिया गया।

(मिरात ज ६ व ११८)

बिलयकी ऐसे मुसल्मां हैं बड़े ही नादां
जो हैं सुल्ताने मदीना के हक्कीकी अशिक

अहले इस्लाम की गीबत जो किया करते हैं
गीबतो चुग़िलयो तोहमत से बचा करते हैं

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْبَوَالِي اللَّهَ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मुसल्मान की इज़ज़त की हिफ़ाज़त का सवाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप के सामने जब भी कोई आदमी किसी इस्लामी भाई की ख़ता या उस के ऐब का तज़िकरा उस की मौजूदगी या पसे पुश्त (या'नी पीठ पीछे) शुरूअ करे तो सुनने में अगर कोई मस्लहत शर-ई न हो तो फ़ौरन एहतिरामे मुस्लिम का लिहाज़ करते हुए सवाबे आख़िरत कमाने की निय्यत से अपने इस्लामी भाई की इज़ज़त की हिफ़ाज़त करने की तरकीब कीजिये। ताजदारे रिसालत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, सरापा अ-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अफ़िय्यत निशान है : जो अपने (मुसल्मान) भाई की पीठ पीछे उस की इज़ज़त का तहफ़फ़ुज़ करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्माए करम पर है कि वोह उसे जहन्नम से आज़ाद कर दे। (मुसनिद इमाम अहमद ज ६ व ६१)। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَوةِ وَالسَّلَامِ ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने दुन्या में अपने भाई की इज़ज़त की हिफ़ाज़त की, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो जहन्नम से उस की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा।

(ذَمُّ الْغِيْبَةِ لِأَيِّ الدُّنْيَا ص १३१ حَدِيث १००)



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

गीबत से रोकने के चार फ़ज़ाइल : मुसलमान की ग़ीबत करने वाले को रोकने की कुदरत होने की सूरत में रोक देना वाजिब है, रोकना सवाबे अज़ीम और न रोकना बाइसे अज़ाबे अलीम (या'नी दर्दनाक अज़ाब का बाइस) है इस ज़िम्न में **चार फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा फ़रमाइये :

1. जिस के सामने उस के मुसलमान भाई की ग़ीबत की जाए और वोह उस की मदद पर क़ादिर हो और मदद करे, **अल्लाह** तआला दुन्या और आख़िरत में उस की मदद करेगा और अगर बा वुजूदे कुदरत उस की मदद नहीं की तो **अल्लाह** तआला दुन्या और आख़िरत में उसे पकड़ेगा।
2. जो शख़्स अपने भाई के गोश्त से उस की ग़ीबत (अदम मौजूदगी में) रोके (या'नी मुसलमान की ग़ीबत की जा रही थी इस ने रोका) तो **अल्लाह** عَلَّ पर हक़ है कि उसे जहन्नम से आज़ाद कर दे। (70 حديث (498))
3. जो मुसलमान अपने भाई की आबरू से रोके (या'नी किसी मुस्लिम की आबरू रेज़ी होती थी उस ने मन्अ किया) तो **अल्लाह** عَلَّ पर हक़ है कि क़ियामत के दिन उस को जहन्नम की आग से बचाए। इस के बा'द इस आयत की तिलावत फ़रमाई : **وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ** (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना। (21 الروم: 7))
4. जहां मर्दे मुस्लिम की हतके हुरमत (या'नी बे इज़ज़ती) की जाती हो और उस की आबरू रेज़ी की जाती हो ऐसी जगह जिस ने उस की मदद न की (या'नी येह ख़ामोश सुनता रहा और उन को मन्अ न किया) तो **अल्लाह** तआला उस की मदद नहीं करेगा जहां इसे पसन्द हो कि मदद की जाए और जो शख़्स मर्दे मुस्लिम की मदद करेगा ऐसे मौक़अ पर जहां उस की हतके हुरमत (या'नी बे इज़ज़ती) और आबरू रेज़ी की जा रही हो, **अल्लाह** तआला उस की मदद फ़रमाएगा ऐसे मौक़अ पर जहां इसे महबूब (या'नी पसन्द) है कि मदद की जाए।

(سُنَنِ ابوداؤد ج 4 ص 300 حديث 4884)



फरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उद्द पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज़ाक)

गीबत करने वाले के सामने ता'रीफ़ : हमारे अस्लाफ़ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی किसी से मुसल्मान की गीबत सुनते तो उसे फ़ौरन टोकते और उन का अन्दाज़ भी कितना हसीन होता ! चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की मजलिस में एक शख्स ने सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की गीबत की तो आप رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ शख्स ! तू इमाम के ऐब क्यूं बयान करता है ! उन की शान तो येह थी कि पेंतालीस⁴⁵ साल तक एक वुजू से पांचों वक़्त की नमाज़ अदा करते रहे।

(الْخَيْرَاتُ الْجَسَانِ لِلْهَيْتَمِيِّ ص ١١٧، رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ١ ص ١٥٠)

गीबत करने वाले से पीछा छुड़ाने का तरीक़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का गुनाहों भरी गीबत सुनने से बचने का ज़ब्बा मरहबा ! काश ! सद करोड़ काश ! हमारा येह ज़ेहन बन जाए कि जूं ही किसी मुसल्मान का मन्फ़ी (NEGATIVE) तज़्किरा निकले फ़ौरन ख़बरदार हो जाइये और ग़ौर कीजिये, अगर वोह तज़्किरा गीबत पर मन्वी या गीबत की तरफ़ ले जाने वाला हो तो फ़ौरन उस से बाज़ आ जाइये, अगर कोई और आदमी येह गुफ़्त-गू करने लगा हो तो उस को मुनासिब तरीक़े पर रोक दीजिये, अगर वोह बाज़ न आए तो वहां से उठ जाइये, अगर उसे रोकना या अपना वहां से हटना मुम्किन न हो तो दिल में बुरा जानिये, तरकीब से बात बदल दीजिये उस गुफ़्त-गू में दिलचस्पी मत लीजिये, म-सलन इधर उधर देखने लग जाइये, मुंह पर बेज़ारी के आसार लाइये, बार बार घड़ी देख कर उक्ताहट का इज़हार फ़रमाइये, मुम्किन हो तो इस्तिन्जा ख़ाने का कह कर ही उठ जाइये और फिर आप का कहा झूट न हो जाए इस लिये इस्तिन्जा भी कर लीजिये। “गीबत गाह” में हाज़िर रहने के बजाए मजबूरन इस्तिन्जा ख़ाने में वक़्त गुज़ारना बहुत मुनासिब अमल है اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ इस पर भी सवाब मिलेगा।

अख़लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा

صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

महबूब के सदक़े में मुझे नेक बना दे



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُذَّوْحَل उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

ग़ीबत करने वाले को इशारे से नहीं ज़बान से रोकिये : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْہِ के फ़रमाने वाला शान का खुलासा है : जहां ग़ीबत हो रही हो और येह (मुरुव्वत में नहीं बल्कि) डर के सबब ज़बान से रोक नहीं सकता तो दिल में बुरा जाने तो अब इसे गुनाह नहीं होगा, अगर वहां से उठ कर जा सकता है या गुफ़्त-गू का रुख़ बदल सकता है मगर ऐसा नहीं करता तो गुनहगार है, अगर ज़बान से कह भी देता है कि “ख़ामोश हो जाओ” मगर दिल से सुनना चाहता है तो येह मुना-फ़क़त है और जब तक दिल से बुरा न जाने गुनाह से बाहर न होगा, फ़-क़त् हाथ या अपने अबरू या पेशानी के इशारे से चुप कराना काफ़ी न होगा क्यूं कि येह सुस्ती है और ग़ीबत जैसे गुनाह को मा’मूली समझने की अ़लामत है, (अगर फ़साद का अन्देशा न हो तो) ग़ीबत करने वाले को सख़्ती से वाज़ेह अल्फ़ाज़ में रोके। (احیاء العلوم ج ۳ ص ۱۸۰) ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स के पास किसी मोमिन को ज़लील किया जा रहा हो और वोह ताक़त (रखने) के बा वुजूद उस की मदद न करे अल्लाह तआला क़ियामत के दिन लोगों के सामने उसे रुस्वा करेगा। (مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ۵ ص ۴۱۲ حدیث ۱۵۹۸۵)

उ-लमा को अ़वाम न टोकें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत से रोकने वाले के लिये इतनी मा’लूमात होना ज़रूरी है कि वोह गुनाहों भरी ग़ीबत की पहचान रखता हो नीज़ रोकते वक़्त अपनी बात का वज़्न देखना भी बहुत ज़रूरी है कहीं ऐसा न हो कि आप किसी को मन्अ करें और कोई फ़ितना खड़ा हो जाए येह बात भी ज़ेहन में रखिये कि बा’ज़ अवकात बिल खुसूस अहले इल्म हज़रात की कोई बात सरसरी तौर पर सुनने वाले को ग़ीबत लगती है मगर दर हकीकत वोह गुनाहों भरी ग़ीबत नहीं होती क्यूं कि ग़ीबत की जाइज़ सूरतें भी मौजूद हैं, मुहावरा है : خَطَا ئے بُرُرْگَانِ گِرَفْتَنِ خَطَا اَسْت یا’नी “बुजुर्गों पर ए’तिराज़ करना, उन की ख़ता पकड़ना, खुद ख़ता है।” लिहाज़ा उ-लमाए किराम को अ़वाम हरगिज़ न टोकें और उन के लिये दिल में मैल भी न लाएं। हां अगर आप को ग़ीबत के बारे में मा’लूमात हों और वोह अ़लिम साहिब वाक़ेई सरीह



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हा रत है। (अबू या'ला)

ग़ीबत कर रहे हों तो वहां से उठ जाइये, मुम्किन हो तो बात का रुख़ बदल दीजिये अगर हटना या बात बदलना और किसी तरह से ग़ीबत सुनने से बचना मुम्किन न हो तो दिल में बुरा जानते हुए हत्तल मक्दूर बे तवज्जोही बरतिये। अगर “हां” में सर हिलाएंगे या दिलचस्पी और तअज्जुब का इज़हार करेंगे, ताईद में “अच्छा”, “जी”, “ओहो” वगैरा आवाज़ निकालेंगे तो गुनहगार होंगे।

अ़ालिम को टोकने के मु-तअल्लिक़ फ़रमाने आ 'ला हज़रत : मेरे आका आ 'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने 'मत, अज़ीमुल ब-र-कत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्सू रिसालत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिye बिदअत, अ़ालिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 सफ़हा 708

पर लिखते हैं : उ-लमा पर अ़वाम को (हक्के) ए'तिराज़ नहीं पहुंचता और जो मशहूर ब मा'रिफ़त हो उस का मुआ-मला ज़ियादा नाजुक है हर आमी मुसल्मान के लिये हुक्म है कि उस के (या'नी उस आम मुसल्मान के भी) हर कौल व फ़ैल के लिये सत्तर (70) महूमले हसन (या'नी अच्छे एहतिमालात और जाइज़ तावीलात) तलाश करो, (उन अ़वाम पर भी बद गुमानी मत करो) न कि उ-लमा व मशाइख़ जिन पर ए'तिराज़ का अ़वाम को कोई हक् (ही हासिल) नहीं ! यहां तक कि कुतुबे दीनिया में तस्रीह (या'नी साफ़ लिखा) है अगर सरा-हतन नमाज़ का वक़्त जा रहा है और अ़ालिम नहीं उठता तो जाहिल का येह कहना गुस्ताख़ी है कि “नमाज़ को चलिये”, वोह (या'नी अ़ालिम) इस (या'नी ग़ैरे अ़ालिम) के लिये हादी (या'नी रहनुमा) बनाया गया है न कि येह (जाहिल) उस (अ़ालिम) के लिये। وَاللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰم (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 708)

सुनूं न फ़ोहूश कलामी न ग़ीबतो चुग़ली
करें न तंग ख़यालाते बद कभी कर दे

तेरी पसन्द की बातें फ़क़त सुना या रब
शुक्रो फ़िक़्र को पाकीज़गी अ़ता या रब

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

जिस को सलामती की दुआ दी उसी की गीबत !!!: किसी को सलाम कर के जान व माल और इज़्ज़त व आबरू वगैरा की सलामती की दुआ दी और फिर जूं ही वहां से हटे उसी की इज़्ज़त उछालनी या'नी गीबत करनी शुरूअ कर दी येह कैसा अजीब मुआ-मला है! जी हां, "अस्सलामु अलय कुम" के मा'ना हैं: "तुम पर सलामती हो।" लगे हाथों सलाम की निय्यत भी मुला-हज़ा फ़रमा लीजिये चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत हिस्सा 16 सफ़हा 102 पर लिखे हुए जुज़्इये का खुलासा है: "सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को सलाम करने लगा हूं इस का माल और इज़्ज़त व आबरू सब कुछ मेरी हिफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़ल अन्दाज़ी करना हराम जानता हूं।" (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٩ ص ٦٨٢) अरिफ़ बिल्लाह, हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं: अल्लाह ﷻ के नेक बन्दे मुलाक़ात के वक़्त सलाम करते तो इस से येह मुराद लेते कि तू मेरी तरफ़ से सलामत रहा, मैं तेरी गीबत और मज़म्मत नहीं करूंगा। (قَوْتُ الْقُلُوب ج ١ ص ٣٤٨)

करूं किसी की भी गीबत न मैं कभी या रब
मुआफ़ कर दे गुनाह तू मेरे सभी या रब

खुदाए पाक करम ! अज़ पाए नबी या रब
तुफ़ैले हज़रते शैरे खुदा अली या रब

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ख़ौफ़नाक हादिसा होते होते रह गया : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की त-रबिय्यत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये



फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे । (त-बरानी)

म-दनी इन्आमात के मुताबिक अमल कर के रोजाना फ़िक्रे मदीना के जरीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये । सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में हाज़िरी दीजिये न जाने कब दिल चोट खा जाए और दोनों जहां में भलाइयां इनायत हो जाएं । आप की तरगीब के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार करता हूं : सि. 1425 हि. में होने वाले बैनल अक्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ (सहराए मदीना, मदीनतुल औलिया, मुलतान शरीफ़) के चन्द रोज़ बा'द (सगे मदीना عَلَيْهِ السَّلَام) से मिलने एक साहिब पंजाब से बाबुल मदीना कराची आए, उन के बयान का खुलासा कुछ इस तरह है, “मैं A.C. कोच का ड्राइवर हूं, परेशानियों ने तबाह हाल कर दिया था, शैतान मुझे बावला बना कर मेरा येह ज़ेहन बना चुका था कि दुनिया वाले मत्लबी और बे वफ़ा हैं मुझे **ख़ुदकुशी** कर लेनी है मगर तन्हा नहीं औरों को भी साथ ले कर मरना है । लिहाज़ा मैं ने येह तै किया हुवा था कि खचाखच भरी हुई कोच को पूरी रफ़्तार के साथ गहरी खाई में गिरा कर सब सुवारियों समेत अपने आप को ख़त्म कर दूंगा । ऐसे में सुवारियां ले कर इज्तिमाअ (सहराए मदीना, मुलतान शरीफ़) में आने की सआदत मिल गई । गोया मेरे ही लिये **ख़ुदकुशी का इलाज** नामी बयान हुवा, सुन कर मैं खौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ उठा, मैं ने अच्छी तरह समझ लिया कि **ख़ुदकुशी** से जान छूटती नहीं मज़ीद फंस जाती है । मैं ने सच्चे दिल से तौबा की, बयान करने वाले का नाम व पता लोगों से ले कर अब आप के पास दुआएं लेने आया हूं ।” चुनान्चे उस ने दुआ करवाई और नमाज़ की पाबन्दी, हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में हाज़िरी, म-दनी काफ़िलों में सफ़र वगैरा की **अच्छी अच्छी निय्यतें** कर के रोता हुवा पलट गया ।

क्या ख़ुदकुशी से जान छूट जाती है ? : दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 472 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “**बयानाते अत्तारिय्या**” हिस्सा दुवुम के सफ़हा 404 ता 406 पर है : **ख़ुदकुशी** करने वाले शायद येह समझते हैं कि हमारी जान छूट जाएगी ! हालां कि इस से जान छूटने के बजाए नाराज़िये रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की सूरत में निहायत बुरी तरफ़ फंस जाती है । खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **ख़ुदकुशी का अज़ाब**



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

आग में अज़ाब : हदीसे पाक में है : जो शख्स जिस चीज़ के साथ ख़ुदकुशी करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी चीज़ के साथ अज़ाब दिया जाएगा।

(صحيح بخاری ج ٤ ص ٢٨٩ حديث ٦٦٥٢)

उसी हथियार से अज़ाब : हज़रते सय्यिदुना साबित बिन ज़ह्हाक رضى الله تعالى عنه से मरवी है कि राहते क़ल्बे नाशाद, महबूबे रब्बुल इबाद صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है : जिस ने लोहे के हथियार से ख़ुदकुशी की तो उसे जहन्नम की आग में उसी हथियार से अज़ाब दिया जाएगा।

(صحيح بخاری ج ١ ص ٤٥٩ حديث ١٣٦٣)

गला घोंटने का अज़ाब : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضى الله تعالى عنه से मरवी है, सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस ने अपना गला घोंटा तो वोह जहन्नम की आग में अपना गला घोंटता रहेगा और जिस ने खुद को नेज़ा मारा वोह जहन्नम की आग में खुद को नेज़ा मारता रहेगा।

(صحيح بخاری حديث ١٣٦٥ ج ١ ص ٤٦٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदकुशी का इलाज नामी बयान की केसिट मक-त-बतुल मदीना से हासिल कीजिये और सब घर वालों को सुनाइये और खुसूसन परेशान हालों को सुनने के लिये पेश कीजिये। الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इसी बयान को हस्बे ज़रूरत तरमीम के साथ बनाम : ख़ुदकुशी का इलाज रिसाले की सूरत में भी शाएअ किया गया है। अपने अज़ीजों के ईसाले सवाब के लिये दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना से ज़ियादा से ज़ियादा ख़रीद कर ग़म के मारों, दुखियारों और बीमारों बल्कि आ़म मुसल्मानों में तक्सीम कीजिये। अगर पढ़ कर कोई एक भी मुसल्मान ख़ुदकुशी के इरादे से बाज़ आ गया तो إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ आप का भी बेड़ा पार होगा।



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़ाक)

क़ब्र में शक़ल तेरी बिगड़ जाएगी
बाल झड़ जाएंगे ख़ाल उधड़ जाएगी
मत गुनाहों पे हो भाई बेबाक तू
थाम ले दामने शाहे लौलाक तू

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْتُوا لِي اللَّهُ اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पीप में लाश तेरी लिथड़ जाएगी
कीड़े पड़ जाएंगे ना'श सड़ जाएगी
भूल मत येह हकीक़त कि है ख़ाक़ तू
सच्ची तौबा से हो जाएगा पाक तू

घर जा कर नेकी की दा'वत देते : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ दरैनी عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़हमाइश को जब मा'लूम होता कि किसी शख्स ने उन की ग़ीबत की है तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को जब मा'लूम होता कि किसी शख्स ने उन की ग़ीबत की है तो आप फ़रमाते : ऐ भाई ! आप को क्या हो गया कि आप ने अब्दुल अज़ीज़ के गुनाह उठा लिये ! (تَنْبِيهُ الْمُعْتَرِينَ ص १९२)

“गुनाह उठा लिये” की वज़ाहत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से पता चला कि हमारे अस्लाफ़ अपनी ग़ीबत का सुन कर धूआं फूआं हो कर आस्तीनें चढ़ा कर ग़ीबत करने वाले पर चढ़ दौड़ने के बजाए, अगर जाना पड़ता तो उस के घर जा कर भी उस को नेकी की दा'वत पहुंचाते और उस के दिल को चोट लगाने वाले कलिमात इर्शाद फ़रमाते। इस हिकायत में “गुनाह उठा लिये” जो कहा गया है इस से मुराद येह है कि अगर बिगैर तौबा और मुताब या'नी जिस की ग़ीबत की उस से बे मुआफ़ करवाए मरा तो जिस की ग़ीबत की है उस को अपनी नेकियां देनी पड़ेंगी, अगर नेकियां न हुई या कम पड़ गई तो उस के गुनाह अपने सर उठाने पड़ेंगे ! आह ! ग़ीबत का मुआ-मला बेहद नाजुक है, तौबा तौबा हमारी करोड़ों



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर येजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कजुल उमाल)

बार तौबा । अहद कीजिये : न गीबत करूंगा न सुनूंगा ।

है गीबत से बचने की निय्यत इलाही

मैं काइम रहूँ कर इअानत^१ इलाही

रहमत पलट जाती है : हज़रते सय्यिदुना हातिम असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْبَرُ फ़रमाते हैं : जब

किसी मजलिस में येह तीन बातें हों तो उन लोगों से रहमत पलट जाती है : (१) दुन्या का ज़िक्र

(२) ज़ियादा हंसना और (३) लोगों की गीबत करना । (تَنْبِيْهُ الْمَغْتَرِبِينَ ص १९६)

अज़ाबे क़ब्र के तीन हिस्से : हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : हमें बताया

गया है कि अज़ाबे क़ब्र को तीन हिस्सों में तक्सीम किया गया है : एक तिहाई अज़ाब गीबत से, एक तिहाई चुग़ली से, और एक तिहाई पेशाब (के छींटों से खुद को न बचाने) से होता है ।

(دَمُ الْغَيْبَةِ لِأَبْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ९२ رقم ५२)

कुत्तों की शकल में उठेंगे : सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले

मुहूतशम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : गीबत करने वालों, चुग़ुल ख़ोरों और पाकबाज़

लोगों के ऐब तलाश करने वालों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) कुत्तों की शकल में

उठाएगा । (التَّوْبِيْخُ وَالتَّنْبِيْهُ لِأَبِي الشَّيْخِ الْأَصْبَهَانِي ص ९७ رقم २२०، التَّرْغِيْبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ३ ص ३२० حديث १०)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَانِ

फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि तमाम इन्सान क़ब्रों से ब शकले इन्सानी उठेंगे फिर महशर में

पहुँच कर बा'ज़ की सूरतें मसख़ हो जाएंगी । (या'नी बिगड़ जाएंगी म-सलन मुख्तलिफ़

जानवरों जैसी हो जाएंगी) (مِرْآة ج १ ص ११०)

1. या'नी इमदाद



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्जवाइद)

गोश्त की छोटी सी बोटी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान अगर्चे ब ज़ाहिर गोश्त की एक छोटी सी बोटी है मगर येह खुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ की अज़ीमुश्शान ने मत है । इस ने मत की कद्र तो शायद गूंगा ही जान सकता है । ज़बान का दुरुस्त इस्तिमाल जन्नत में दाखिल और ग़लत इस्तिमाल जहन्नम से वासिल कर सकता है । इस ज़बान से तिलावते कुरआन करने वाला और दुरुदो सलाम पढ़ने वाला रब्बुल इज़्ज़त की इनायत से जन्नत में जाता है । इस ज़बान से किसी मुसल्मान को गाली निकालने वाला नीज़ गीबत, चुगली व तोहमत का मुर-तकिब अज़ाबे नार का हक़दार करार पाता है । अगर कोई बद तरीन काफ़िर भी दिल की तस्दीक़ के साथ ज़बान से لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ ले तो कुफ़्रो शिर्क की सारी गन्दगी से पाक हो जाता है उस की ज़बान से निकला हुवा येह कलिमए तय्यिबा उस के गुज़श्ता तमाम गुनाहों के मैल कुचैल को धो डालता है । ज़बान से अदा किये हुए इस कलिमए पाक के बाइस वोह गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो जाता है जैसा कि उस रोज़ था जिस रोज़ उस की मां ने उसे जना था । येह अज़ीम म-दनी इन्क़िलाब दिल की ताईद के साथ ज़बान से अदा किये हुए कलिमे शरीफ़ की बदौलत आया ।

हर बात पर साल भर की इबादत का सवाब : ऐ काश ! हम भी अपनी ज़बान का सहीह इस्तिमाल करना सीख लें । गीबतों, चुग़लियों और तोहमतों भरी बातों से पीछा छुड़ा लें, बेशक अल्लाह व रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मरज़ी के मुताबिक़ अगर ज़बान को चलाया जाए तो जन्नत में घर तय्यार हो जाएगा । इस ज़बान से हम तिलावते कुरआने पाक करें, ज़िक्रुल्लाह करें, दुरुदो सलाम का विर्द करें, ख़ूब ख़ूब नेकी की दावत दें तो اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ हमारे वारे ही न्यारे हो जाएंगे । मुका-श-फ़तुल कुलूब में है : हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अर्ज की : ऐ रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ जो अपने भाई



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबखा हो गया । (इब्ने सुन्नी)

को बुलाए और उसे नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस शख्स का बदला क्या होगा ? फरमाया : “मैं उस के हर कलिमे के बदले एक साल की इबादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सजा देने में मुझे हया आती है ।” (मुका-श-फतुल कुलूब, स. 48)

आशिकाने रसूल के मीठे बोल की ब-रकात : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की बात बताने, गुनाह से नफ़्त दिलाने और इन कामों के लिये किसी पर इन्फ़िरादी कोशिश का सवाब कमाने के लिये येह ज़रूरी नहीं कि जिस को समझाया वोह मान जाए तो ही सवाब मिलेगा बल्कि अगर वोह न माने तब भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सवाब ही सवाब है और अगर आप की इन्फ़िरादी कोशिश से किसी ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारनी शुरू कर दी फिर तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा । आइये इस ज़िम्न में इन्फ़िरादी कोशिश की एक **म-दनी बहार** सुनते चलें चुनान्वे शहर कुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक नौ जवान इस्लामी भाई की तहरीर बित्सरुफ़ पेश करता हूं : मैं उन दिनों मेट्रिक का तालिबे इल्म था, बुरी सोहबत के बाइस ज़िन्दगी गुनाहों में बसर हो रही थी, मिज़ाज बेहद गुसीला था, बद तमीज़ी की अदते बद इस हद तक पहुंच चुकी थी कि वालिद साहिब कुजा दादाजान और दादीजान के सामने भी कैंची की तरह ज़बान चलाता । एक रोज़ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी का एक “म-दनी काफ़िला” हमारे महल्ले की मस्जिद में आ पहुंचा, खुदा का करना ऐसा हुवा कि मैं आशिकाने रसूल से मुलाक़ात के लिये पहुंच गया । एक इस्लामी भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे दर्स में शिक़त की दा'वत पेश की, उन के मीठे बोल ने मुझ पर ऐसा असर किया कि मैं उन के साथ ही दर्स में बैठ गया । उन्होंने ने दर्स के बा'द इन्तिहाई मीठे अन्दाज़ में मुझे बताया कि चन्द ही रोज़ बा'द सह्राए मदीना मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में दा'वते इस्लामी का तीन रोज़ा बैनल अक्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ हो रहा है आप भी शिक़त कर लीजिये । उन के दर्स ने मुझ पर बहुत अच्छा असर किया था लिहाज़ा मैं इन्कार न कर सका । यहां तक कि मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ (सह्राए मदीना, मदीनतुल औलिया, मुलतान) में हाज़िर हो गया । वहां की रोनकें और ब-र-कतें देख कर मैं हैरान रह गया, इज्तिमाअ में होने वाले



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख़ा हो गया । (इन्ने सुन्नी)

आखिरी बयान “गाने बाजे की होल नाकियां” सुन कर मैं थरा उठा और आंखों से आंसू जारी हो गए । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं गुनाहों से तौबा कर के उठा और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया । मेरी म-दनी माहोल से वाबस्तगी से हमारे घर वालों ने इत्मीनान का सांस लिया, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कत से मुझ जैसे बिगड़े हुए बद अख़्लाक और खस्ता खराब नौ जवान में म-दनी इन्क़ालब से मु-तअस्सिर हो कर मेरे बड़े भाई ने भी दाढ़ी मुबारक रखने के साथ साथ इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया । मेरी एक ही बहन है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मेरी इक्लौती बहन ने भी म-दनी बुरक़अ पहन लिया, घर का हर फ़र्द सिल्सिलए अलिया कादिरिया र-जविया में दाख़िल हो कर सरकारे गौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَكْرَم का मुरीद हो गया । और उस इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले मेरे मोहसिन इस्लामी भाई के मीठे बोल की ब-र-कत से मुझ पर अल्लाहु आ'ज़म عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम फ़रमाया कि मैं ने कुरआने पाक हिफ़ज़ करने की सआदत हासिल कर ली और दर्से निज़ामी (अलिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया और येह बयान देते वक़्त द-र-जए सालिसा या'नी तीसरी क्लास में पहुंच चुका हूं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के तअल्लुक से अलाकाई काफ़िला ज़िम्मादार हूं । मेरी नियत है कि اِنْ شَاءَ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ शा'बानुल मुअज़्ज़म सि. 1427 हि. से यक मुश्त 12 माह के लिये म-दनी काफ़िलों में सफ़र करूंगा ।

दिल पे गर जंग हो, घर का घर तंग हो
ऐसा फ़ैज़ान हो, हिफ़ज़ कुरआन हो

होगा सब का भला, काफ़िले में चलो
कर के हिम्मत ज़रा, काफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْکَیْبِ ا صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

क़ब्र का भयानक तसव्वुर : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर कीजिये ! सोचिये !! हो सकता है आज ही मौत आ जाए, दुन्या की सारी ने'मतें छूट जाएं, सब अरमान खाक में मिल जाएं और देखते ही देखते जनाज़ा क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो जाए, आह ! आह ! आह ! तसव्वुर कीजिये उस वक़्त क्या गुज़र रही होगी जब क़ब्र में तन्हा रख कर, ऊपर से



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मारतबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्जवाहद)

मनों मिट्टी डाल कर नाज़ उठाने वाले रुख़्सत हो रहे होंगे, हाए ! घुप अंधेरा, आह ! वहशत का बसेरा, ऐसे में अगर ग़ीबतों, चुग़लियों, ऐब दरियों, तोहमतों और बद गुमानियों वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों के सबब अंधेरी क़ब्र में ख़ौफ़नाक मारपीट शुरू हो गई, भयानक आग सुलगा दी गई, तरह तरह के ज़हरीले सांप बिच्छू क़फ़न फाड़ कर नाजुक बदन से लिपट गए तो क्या बनेगा ! अक्ल भी सलामत होगी, बेहोशी भी तारी न होगी, चीख़ो पुकार भी बेकार साबित होगी, न किसी को पास बुला सकेंगे, न खुद किसी के पास जा सकेंगे ! हाए मेरे अल्लाह غُرُوْحَل !

घुप अंधेरा ही क्या वहशत का बसेरा होगा	क़ब्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रब ! غُرُوْحَل
गर क़फ़न फाड़ के सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा	हाए बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब ! غُرُوْحَل
डंक मच्छर का भी मुझ से तो सहा जाता नहीं	क़ब्र में बिच्छू के डंक कैसे सहूंगा या रब ! غُرُوْحَل
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी	हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब ! غُرُوْحَل

अप्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !
غُرُوْحَل

भाभी ने जादू करवा दिया है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! घर में बीमारी, परेशानी या बे रोज़गारी हो तो आज कल अक्सर वस्वसा आता है कि शायद किसी ने जादू करवा दिया है, लिहाज़ा “बाबा जी” (ता’वीज़ धागा देने वाले) से राबिता किया जाता है, बिलफ़र्ज़ “बाबा जी” बता दें कि तुम्हारे क़रीबी रिश्तेदार ने जादू करवाया है तो उमूमन बहू या भाभी की शामत आ जाती है। बा’ज अवक़ात “बाबा जी” जादू करने वाले या वाली के नाम का पहला हर्फ़ बल्कि नाम ही बता देते हैं ! कभी कभी तो सूइयों वाला माश के आटे का पुतला और ता’वीज़ वग़ैरा भी घर से बर आमद हो जाता है। और फिर लोग ऐसे “बाबा जी” पर अन्धा भरोसा कर लेते हैं और ख़ानदान भर में ग़ीबत व बोहतान तराशी का बद तरीन सिल्सिला चल



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बदबख़्त हो गया । (इन्ने सुनी)

निकलता और नती-जतन हरा भरा लहलहाता ख़ानदान ता-ख़तो ताराज हो कर रह जाता है । याद रखिये ! बिला सुबूते शर-ई सिर्फ़ अमिलों और बाबाओं के कहने पर अगर आप ने किसी से कहा : म-सलन : “हमारी भाभी जादू करवाती है” तो येह बोहतान, गुनाहे कबीरा, हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम हुवा और अगर किसी ने छुप कर वाक़ेई जादू करवा भी दिया हो और आप को यकीनी तौर पर पता चल गया हो तब भी उस मख़सूस फ़र्द का जादू के हवाले से बिला मस्लहतें शर-ई किसी से तज़्किरा करना ग़ीबत है । ख़याल रहे ! अमिलों या बाबाओं का बताना शर-ई सुबूत नहीं कहलाता ।

अगर घर से सूझ्यों वाला पुतला बर आमद हो जाए तो ! : वस्वसा : “बाबा जी” ने नाम और सूझ्यों वाले पुतले की निशान देही कर दी फिर भी येह शर-ई सुबूत क्यूं नहीं ? क्या “बाबा जी” झूटे हैं ?

वस्वसे का इलाज : देखिये ! किसी बात को दलीले शर-ई न मानना और है और जिस की दलील न मानी गई उसे झूटा समझना और है । म-सलन किसी बात में दो गवाहों की हाज़त हो और गवाह सिर्फ़ एक हो वोह अगर्चे कोई सालेह, नेक बल्कि वली ही हो, काज़ी उस की गवाही रद कर देता है तो इस का येह मत्लब हरगिज़ नहीं कि काज़ी उस को झूटा समझ रहा है बल्कि शरीअत ने गवाही का जो निसाब मुकर्रर किया है काज़ी उस निसाब के हुक्म पर अमल कर रहा है । यूंही हम बाबा जी को झूटा नहीं कह रहे बल्कि हुक्मे शर-ई पर अमल करते हुए बाबा जी के बता देने को दलील बना कर किसी शख्स पर जादू का इल्ज़ाम नहीं साबित कर रहे बहर हाल हुक्मे शरीअत येही है कि किसी बाबा जी का पुतले वगैरा के बारे में बता देना और उस पुतले का बर आमद हो जाना इस बात की दलीले शर-ई नहीं है कि वाक़ेई फुलां रिश्तेदार ही ने येह जादू करवाया है ।

जो बाबा पैसे न मांगते हों वोह कैसे ग़लत हो सकते हैं ? : वस्वसा : जो बाबा जी ता’वीज़ात वगैरा के पैसे नहीं मांगते वोह किस तरह ग़लत हो सकते हैं ?

वस्वसे का इलाज : अ-मलिय्यात की लाइन ऐसी है कि जो पैसे नहीं मांगता बा’ज़ अवकात उस की आमदनी मांगने वालों की निस्बत ज़ियादा होती है क्यूं कि बार बार पैसे मांगने वालों से लोग



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह غُزُوْخُل उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

दूर भागते हैं। हज़रते मौलाए काएनात, मौला अली शेर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ फ़रमाते हैं : बछड़ा जब थनों को बहुत ज़ियादा चूसने लगता है तो उस की मां उस को सींग मारती है। (मुका-श-फ़तुल कुलूब, स. 220) बहर हाल “बाबा” अगर्चे पैसे न मांगता हो तब भी लोग चूंक हकीकत से ना वाकिफ़ होते हैं इस लिये उमूमन ऐसों के ज़ियादा अकीदत मन्द हो जाते हैं और फिर दा’वतों और नज़रानों की तरकीब के साथ साथ शोहरत व इज़्ज़त भी हासिल होती है। हुब्बे जाह या’नी इज़्ज़त व शोहरत की महब्वत का मरज़ जिन को लग जाता है वोह लोग मशहूरी के लिये करोड़ों रुपये अपने पल्ले से खर्च करने से भी नहीं चूकते ! आम इन्तिखाबात के मवाक़ेअ पर जम्हूरी मुमालिक में इस के नज़ारे आम होते हैं। यकीनन शरीअत के किसी भी मुआ-मले में क़तअन झोल नहीं। याद रखिये ! इस्तिख़ारात, मुवक्कलात और जिन्नात के ज़रीए नहीं बल्कि कुरआनो सुन्नत के अहकामात के तवस्सुत से इस्लामी अदालतों के मुआ-मलात तै किये जाते हैं।

अगर तकिये के नीचे से ता’वीज़ निकल आए तो ? : वस्वसा : अगर भाभी या बहू की जेब या उस के तकिये के नीचे से ता’वीज़ बर आमद हुवा हो तो क्या येह भी शर-ई सुबूत नहीं ?

वस्वसे का इलाज : येह भी शर-ई दलील नहीं। जो ता’वीज़ बर आमद हुवा उसे “जादू” करार देने के लिये भी तो कोई मा’कूल दलील होनी चाहिये ! अपने इलाज या किसी निजी मक्सद के लिये भी तो वोह ता’वीज़ इस्ति’माल कर सकती हैं। बिलफ़र्ज़ वोह जादू ही का ता’वीज़ साबित हो जाए तब भी इस का क्या सुबूत है कि आप को नुक्सान पहुंचाने ही के लिये वोह लाई थीं। येह शैतानी ह-र-कत भी हो सकती है कि कोई शरीर जिन्न घर में फ़साद करवाने के लिये तकिये के नीचे या जेब में ता’वीज़ डाल दे !

मुंह की बदबू के बा वुजूद शराबी न कहा जाए : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی के फ़रमान का खुलासा है : किसी शख्स के मुंह से शराब की बू आती हो इस बिना पर उस पर हद लगानी जाइज़ नहीं क्यूं कि हो सकता है इस ने शराब से कुल्ली की हो, खुद न पी हो किसी ने ज़बर दस्ती पीने पर मजबूर कर दिया



फरमाने मुस्तफा ﷺ : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह عزوجل तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

हो। लिहाजा इस मुसल्मान पर (सिर्फ मुंह की बदबू के सबब) **बद गुमानी** न की जाए (या'नी इस को शराबी क़रार न दिया जाए)

(احياء العلوم ج ۳ ص ۱۸۶)

शर-ई सुबूत किसे कहते हैं : शर-ई सुबूत की यहां सूरत येह है कि या तो जिस पर **इल्ज़ाम** है वोह खुद ब होशो ह्वास इक़ार करे कि मैं ने **जादू** करवाया है, अगर वोह इन्कार करे तो दो मर्द मुसल्मान या एक मुसल्मान मर्द और दो मुसल्मान औरतें गवाही दें कि हम ने इस को **जादू** करते हुए अपनी आंखों से देखा है। अगर मज़कूरा शर-ई गवाह नहीं ला सकते तो जिस पर **इल्ज़ाम** है अगर वोह **क़सम** खा ले कि मैं ने **जादू** नहीं करवाया तो उस को सच्चा मानना ज़रूरी है।

तूने चोरी की : देखिये ! शैतान के उक्साने पर बहू वगैरा पर **जादू** का इल्ज़ाम लगाने और पूछगछ के दौरान उस के इन्कार पर हरगिज़ येह बात ज़बान पर न लाइये कि येह फंस गई तो अब इस ने इन्कार करना ही है और आदमी इज़्ज़त बचाने के लिये तो झूटी क़सम भी खा लेता है इस लिये येह भी झूटी क़सम खा रही है। खुदारा एक मुसल्मान की इज़्ज़त की **अहम्मियत** को समझने की कोशिश कीजिये। आप की इब्रत के लिये एक ईमान अफ़रोज़ हदीस शरीफ़ अर्ज़ करता हूं : चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرमाते हैं : **अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब** ﷺ का फ़रमाने अलीशान है : हज़रते **ईसा** इब्ने मरयम ने एक शख्स को चोरी करते देखा तो उस से फ़रमाया : “तूने चोरी की।” वोह बोला : “हरगिज़ नहीं उस की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।” तो हज़रते **ईसा** ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया और मैं ने अपने को आप झुटलाया।

(صحيح مسلم ص ۱۲۸۸ حديث ۲۳۶۸)

..... **कि मेरी आंखों ने देखने में ग़-लती की :** अल्लाहु अक्बर ! देखा आप ने ! हज़रते सय्यिदुना **ईसा** रूहुल्लाह ﷺ ने क़सम खा लेने वाले के साथ कितना अज़ीम बरताव किया। मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عليه رحمۃ الختان उस



फरमाने मुस्तफा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलुद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

क़सम खाने वाले को छोड़ देने के मु-तअल्लिक हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह ﷺ على نبينا وعليه الصلوة والسلام के जज़्बात की अक्कासी करते हुए तहरीर फ़रमाते हैं : या'नी इस क़सम की वजह से तुझे सच्चा समझता हूं कि मोमिन बन्दा अल्लाह ﷻ की झूटी क़सम नहीं खा सकता, (क्यूं कि) उस के दिल में अल्लाह ﷻ के नाम की ता'ज़ीम होती है, अपने मु-तअल्लिक ग़लत फ़हमी का ख़याल कर लेता हूं कि मेरी आंखों ने देखने में ग़-लती की। (मिरात ज ६ ص ६२३) **अल्लाह ﷻ की उन पर** रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो।

امين بجاه النبي الامين ﷺ على الله تعالى عليه السلام

तौबा और मुआफ़ी का तरीक़ा : उम्मीद है मस्अला समझ में आ गया होगा, ऐसे मवाक़ेअ पर सब्र करना चाहिये वरना बद गुमानियों, ग़ीबतों और तोहमतों वग़ैरा गुनाहों से बचना दुश्वार हो जाता है। अब अगर किसी ने इस तरह की ख़ता की है कि बिग़ैर सुबूते शर-ई जादू का इल्ज़ाम लगा बैठा है तो वोह अल्लाह ﷻ की बारगाहे बेकस पनाह में गिड़गिड़ा कर तौबा करे और तौबा के तकाज़े भी पूरे करे नीज़ जिस पर इल्ज़ाम लगाया म-सलन भाभी या बहू वग़ैरा तो उन से मुआफ़ भी करवाए। रस्मी तौर पर सिर्फ़ SORRY कह देना काफ़ी नहीं बल्कि जिस धड़ल्ले (या'नी बेबाकी और धूम धड़क्के) से उस की बदनामी और दिल आज़ारी की है उसी की मुना-सबत से ख़ूब अज़िज़ी कर के, गिड़गिड़ा कर और हाथ जोड़ कर उस से इस क़दर मुआफ़ी मांगे कि उस का दिल मुत्मइन हो जाए और वोह मुआफ़ कर दे नीज़ जिन जिन को येह बात बताई हो उन के सामने भी कहना पड़ेगा कि मैं ने झूटा इल्ज़ाम लगाया था। वाक़ेई यहां नफ़्स मुआफ़ी मांगने से इन्कार ही करेगा। अब बन्दे पर है कि मुआफ़ी मांग कर दुन्यवी तौर पर अपने नफ़्स की मा'मूली सी ज़िल्लत इख़्तियार करे या आख़िरत की दर्दनाक रुस्वाई और होलनाक सज़ा। देखिये ! शैतान तरह तरह के हीले बहाने सुझाएगा, वस्वसे दिलाएगा कि म-सलन यूं तो येह सर चढ़ जाएगी, इस का दिल खुल जाएगा, हम पर क़ब्ज़ा जमा लेगी, हमारी बदनामी हो जाएगी वग़ैरा। आप इन शैतानी ख़यालों की तरफ़ न जाइये, अल्लाह ﷻ की रिज़ा के लिये हुक्मे शरीअत पर अमल कीजिये ان شاء الله ﷻ इस की ब-र-कत खुद ही देख लेंगे। यहां तक कि खुदा न ख़्वास्ता वोह वाक़ेई



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

मुजरिमा हुई तब भी आप की खुश अख़्लाकी और आजिजी की ब-र-कत से اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ आप की खैर ख़्वाह बन जाएगी।

ड्राइवर की जान बच गई : बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाका नयाआबाद की एक इस्लामी बहन के हलफ़िया बयान का खुलासा है कि मेरे एक भाई जो कि अरब शरीफ़ के शहर “रियाज़” में ब हैसिय्यते ड्राइवर मुला-ज़मत कर रहे हैं। एक दिन ड्राईविंग के दौरान ख़तरनाक हादिसा हुवा और वोह बेहोश हो गए। **दिमागी चोटें** इतनी ज़ियादा थीं कि बचने की उम्मीद न रही। हम लोग मजबूर थे उन को देखने भी न जा सकते थे। اِنْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं तबतीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत किया करती थी। मैं ने भाईजान वाली परेशानी अपने अ़लाके की एक इस्लामी बहन को बताई। उन्होंने मुझे दिलासा दिया और मश्वरा दिया कि इसी तरह पाबन्दी से इज्तिमाअ में शिर्कत कर के ख़ूब दुआ किया करो। चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया اِنْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ में की जाने वाली दुआओं की ब-र-कत से तीन माह के अन्दर अन्दर भाईजान ने बातचीत शुरूअ कर दी। डॉक्टर भी हैरान रह गए क्यूं कि **दिमागी चोटें** बहुत ज़ियादा थीं और ब ज़ाहिर बचने की उम्मीद बहुत कम थी। اِنْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाआत की ब-रकात पर मेरी अकीदत और ज़ियादा मज़बूत हुई।

ऐ इस्लामी बहनो कभी छोड़ना मत
तू पर्दे के साथ इज्तिमाआत में आ

मसाइब को देगा भगा म-दनी माहोल
तेरी देगा बिगड़ी बना म-दनी माहोल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रहमतों का नुज़ूल होता है : اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में मांगी जाने वाली दुआएं ज़रूर रंग लाती हैं, क्यूं कि वहां अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र होता है। हज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़यान बिन उय़ैना



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उहद पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज्जाक)

فَرَمَاتے ہیں رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ : عِنْدَ ذِكْرِ الصّٰلِحِیْنَ تَنْزَلُ الرّٰحْمَةُ : یا'نی नेक लोगों के जिक्र के वक़्त रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ उतरती है । (جَلِیَّةُ الْأَوَّلِیَّاء ج ۷ ص ۳۳۵ رقم ۱۰۷۵۰) जब नेक बन्दों के तजिक्रों पर रहमतों का नुज़ूल होता है तो जहां अल्लाह व रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जिक्र खैर होगा वहां रहमतें क्यूं नाज़िल न होंगी और जहां छमाछम रहमतें बरस रही हों वहां दुआएं क्यूं कबूल न होंगी । हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि हम दोनों महबूबे रब्बे जुल जलाल, साहिबे जूदो नवाल, शहन्शाहे खुश ख़िसाल, सुल्ताने शीरी मक़ाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो कौम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का जिक्र करने के लिये बैठती है फिरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और रहमत उन्हें ढांप लेती है और उन पर सकीना नाज़िल होता है और अल्लाह (صَحِیحُ مُسْلِم ص ۱۴۴۸ حَدِیث ۲۷۰۰) अपने फिरिश्तों के सामने उन का जिक्र फ़रमाता है । मिरआत जिल्द 3 सफ़हा 305 पर है : सकीना से मुराद या तो ख़ास मलाएका हैं या दिल का नूर या दिली चैन व सुकून है ।

जिक्र किसे कहते हैं ? : “अल्लाह हू और हक़ हू” की ज़र्बें लगाना बेशक जिक्र है । ताहम तिलावते कुरआन, हम्दो सना, मुनाजात व दुआ, दुरूदो सलाम, ना'त व मन्क़बत, ख़ुत्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वगैरा भी “जिक्रुल्लाह” में शामिल हैं । यकीनन दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत भी जिक्र के हल्के हैं ।

सारे आलम को है तेरी ही जुस्त-जू
याद में तेरी हर एक है सू बसू

जिन्नो इन्सो मलक को तेरी आरजू
बन में वहशी लगाते हैं ज़र्बाते हू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

صَلُّوا عَلَی الْکَیِّبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह ﷻ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

पूरी क़ौम की ग़ीबत का मस्अला : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 सफ़हा 173 पर है : किसी बस्ती या शहर वालों की बुराई की, म-सलन येह कहा कि वहां के लोग ऐसे हैं, येह ग़ीबत नहीं क्यूं कि ऐसे कलाम का येह मक्सद नहीं होता कि वहां के सब ही लोग ऐसे हैं बल्कि बा'ज़ लोग मुराद होते हैं और जिन बा'ज़ को कहा गया वोह मा'लूम (या'नी PARTICULAR) नहीं, ग़ीबत इस सूरत में होती है जब मुअय्यन व मा'लूम (या'नी जो पहचाने जा सकें ऐसे) अश्खास की बुराई ज़िक्र की जाए और अगर इस का मक्सूद वहां के तमाम लोगों की बुराई करना है तो येह ग़ीबत है। (दُرْمُخْتَار ج १ ص १७६)

लंगड़े की नक्काली : किसी लंगड़े की नक्काली में लंगड़ा कर चलना नीज़ किसी मख़सूस मुसल्मान की किसी भी ख़ामी की नक्ल उतारना ग़ीबत है बल्कि येह ज़बान से ग़ीबत करने से भी ज़ियादा बुरा है। क्यूं कि नक्ल करने में पूरी तस्वीर कशी और बात को समझाना पाया जाता है जब कि कहने में वोह बात नहीं होती।

नाम लिये बिगैर ग़ीबत करना : नाम लिये बिगैर ग़ीबत करना गुनाह नहीं, हां अगर नाम तो न लिया मगर जिस को कह रहा है वोह समझ रहा है कि किस के बारे में बात हो रही है तो अब ग़ीबत है।

मुंह पर भी कह सकता हूं ! : ग़ीबत करने वाले का येह समझना या कहना कि मैं उस के मुंह पर भी कह सकता हूं, इस को ग़ीबत के गुनाह से नहीं बचा सकता क्यूं कि ग़ीबत के ह़राम होने की अस्ल वजह ईज़ाए मुस्लिम है और मुंह पर कहने से उस का दिल ज़ियादा दुखेगा तो येह और भी बड़ा गुनाह हुवा। जिस की बुराई की गई वोह हंसने लगा इस का मत्लब हरगिज़ येह नहीं कि वोह अपनी बुराई सुन कर झूम उठा है, फ़ितरतन आ़म आदमी अपनी ता'रीफ़ सुन कर ही खुश होता है अपनी मज़म्मत सुन कर कोई खुश नहीं होता लिहाज़ा अपनी मज़म्मत सुन कर हंसना येह "ख़िस्यानी हंसी" होती है कि आदमी मुरुव्वत में या अपनी झेंप मिटाने के लिये ऐसे मौक़अ पर हंसता है हालां कि अन्दरूनी तौर पर उस का दिल जल रहा होता है।



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (अबू या'ला)

बन्द अल्फ़ाज़ में ग़ीबत : ता'रीज़ या'नी बन्द अल्फ़ाज़ में भी ग़ीबत हो सकती है म-सलन किसी की बुराई का तज़्किरा हुवा तो कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं "ऐसा" नहीं हूं, येह ग़ीबत है क्यूं कि येह भी बुराई करने का ही एक अन्दाज़ है इस का साफ़ मत्लब येही हुवा कि वोह "ऐसा" है ।
कुछ कहूंगा तो ग़ीबत हो जाएगी : किसी मुसल्मान के बारे में बात चली तो कहा : "छोड़ो यार ! मैं उस को जानता हूं, अगर कुछ कहूंगा तो ग़ीबत हो जाएगी ।" ऐसा कहने वाला ग़ीबत कर चुका कि उस ने इस अन्दाज़ में उस की बुराई कर डाली !

इसी तरह ग़ीबत पर मन्बी मज़ीद 14 जुम्ले ★ बस जी अल्लाह मुआफ़ करे, उस के बारे में आप को क्या बताऊं ★ बस भाई क्या कहूं उस के लिये तो दुआ ही की जा सकती है ★ यार ! उस को समझाना अपने बस की बात नहीं, जब उस की सूई अटकती है तो फिर किसी की नहीं सुनता ★ आज कल उस की घूमी हुई है ★ भई ! मैं तो इस से बाज़ आया मेरी सुनता ही कब है ★ जब मत्लब होता है तो "हां जी हां जी" करता है इस के बा'द लिफ़्ट भी नहीं कराता ★ अच्छा ! अच्छा ! दरवाज़े पर फुलां खड़ा हुवा है इस का कोई मत्लब पड़ा होगा ★ उस से जान छुड़ाने की बड़ी कोशिश की मगर वोह तो बिल्कुल ही "चिपक" गया था ★ मैं ने तो उसे टालने की बहुत कोशिश की मगर टस से मस नहीं हुवा ★ यार ! वोह कहां किसी को घास डालता है ★ उफ़ ! वोह मन्हूस कहां आ गया ! ★ वोह तो नादान दोस्त निकला ★ उस का काम नहीं वोह तो "सीधा आदमी" है (उमूमन "सीधा आदमी" कह कर बे वुकूफ़ या नादान या कम अक्ल मुराद लेते हैं) ★ कैसा मीठा मीठा बन रहा था !

ऐब पोशी के लिये झूट जाइज़ होने की एक सूरत : ग़ीबत में एक बहुत बड़ी आफ़त येह भी है कि जब "एक फ़र्द" की ग़ीबत दूसरे के सामने की जाती है तो बा'ज़ अवकात वोह "एक फ़र्द" दूसरे की नज़र से गिर जाता है और शरीअत को येह क़त्अन ना गवार है कि एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार (DEGRADE) हो हत्ता कि मुसल्मान की



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ात करूंगा। (कन्जुल उमाल)

इज़्ज़त बचाने की निय्यत से बा'ज सूरत में झूट बोलने की भी इजाज़त है क्यूं कि मुसल्मान की जान, माल और इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त की शरीअत में निहायत ही अहम्मिय्यत है। इस की एक मिसाल मुला-हज़ा फ़रमाएं चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 सफ़हा 161 पर है: "किसी ने छुप कर बे हयाई का काम किया है, उस से दरयाफ़्त किया गया कि तूने येह काम किया? वोह इन्कार कर सकता है क्यूं कि ऐसे काम को लोगों के सामने ज़ाहिर कर देना येह दूसरा गुनाह होगा। इसी तरह अगर अपने मुस्लिम भाई के भेद पर मुत्तलअ हो तो उस के बयान करने से भी इन्कार कर सकता है।" (رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ٩ ص ٧٠٥)

शरफ़ हज़ का दे दे चले काफ़िला फिर

मेरा काश ! सूए हरम या इलाही

दिखा दे मदीने की गलियां दिखा दे

दिखा दे नबी का हरम या इलाही

खुद को ज़िल्लत पर पेश करना जाइज़ नहीं: मुसल्मान की इज़्ज़त की बहुत अहम्मिय्यत है। खुद अपने हाथों अपनी इज़्ज़त ख़राब करने की भी शरअन मुमा-न-अत है, लिहाज़ा ऐसे मुल्की क़वानीन पर अमल करना शरअन ज़रूरी है जो कि कुरआनो सुन्नत से न टकराते हों और उन पर अमल न करने में ज़िल्लत व मा'सियत का ख़तरा हो। म-सलन ड्राईविंग लाइसन्स के बिगैर स्कूटर, कार वगैरा चलाने की इजाज़त नहीं क्यूं कि चलाई और पकड़ा गया तो बे इज़्ज़ती के साथ साथ झूट, रिश्वत और वा'दा ख़िलाफी वगैरा गुनाहों में पड़ने का क़वी इम्कान मौजूद है लिहाज़ा कई गुनाहों और जहन्नम में ले जाने वाले कामों से बचने के लिये ड्राईविंग लाइसन्स ही बनवा लिया जाए और गाड़ी चलाते वक़्त लाज़िमन अपने साथ रखा जाए। मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 21 सफ़हा 183 पर फ़रमाते हैं: महूज़ बिला वज्हे शर-ई बल्कि बर ख़िलाफ़े वज्हे शर-ई एक गुनाह पर इस्सारे के लिये अपने नफ़्स को सज़ा व ज़िल्लत पर पेश किया और येह भी ब हुक्मे हदीस ह़राम है। जिल्द 29 सफ़हा 93, 94 पर फ़रमाते हैं: हदीस में है: जो शख़्स बिगैर किसी



फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्ताफ़ा करते रहेंगे। (त-बरानी)

मजबूरी के अपने आप को बखुशी ज़िल्लत पर पेश करे वोह हम में से नहीं है।

(४७) (الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ١٤٧ حديث ٤٧١)

मुझे नारे दोज़ख़ से डर लग रहा है

हो मुझ ना तुवां पर करम या इलाही

सदा के लिये हो जा राज़ी खुदाया

हमेशा हो लुफ़ो करम या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤَيِّدُوا إِلَيَّ اللَّهُ اسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दुआ के लिये दर-ख़्वास्त देने का तरीक़ा : बा'ज लोग जब किसी को दुआ के लिये

मक्तूबात या रुक्आत भिजवाते हैं, तो उन में **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** अपनी गन्दी ह-रकात के इन्किशाफ़ात

करते बल्कि अपनी मां बहनों तक के लिये हया सोज़ बातें लिखने से बाज़ नहीं रहते ! म-सलन

मेरी मां या बहन या बेटा या बहू या बीवी के पराए आदमी से ना जाइज़ तअल्लुफ़ात हैं। हद तो

येह है कि इस्लामी बहनें भी एहतियात नहीं करतीं, उन को इस **अम्र** का क़अन एहसास ही नहीं

होता कि हमारी तहरीर न जाने कौन कौन पढ़ता होगा और उस पढ़ने वाले को कैसे कैसे वसाविस

आते होंगे। कोई लिखती है : मेरा शोहर **या** बाप कमाता नहीं बस सारा दिन घर में पड़ा रहता

है और घर में झगड़े करता रहता है, सास **या** नन्द जुल्म करती है, मेरा भाई जूआरी है, मेरी बहन

किसी के साथ भाग गई है, मेरा भाई किसी लड़की के चक्कर में है, मेरा बेटा शराब पीता है, मेरी

बेटी फ़ेशन कर के बे पर्दा घूमती है वगैरा। दुआ का कहने के लिये येह तफ़सीलात बयान करने

के बजाए मुब्हम (या'नी बन्द) अल्फ़ाज़ में बात करनी मुनासिब है म-सलन बेटा या भाई या शोहर

शराब या जूए की बुराई में मुब्तला है तो इन बुराई और बुराई करने वाले की निशान देही किये

बिगैर इन अल्फ़ाज़ में दुआ करवा सकते हैं : “मेरे एक करीबी अज़ीज़ बा'ज बुरी आदतों में



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

गरिफ्तार हैं उन की इस्लाह के लिये दुआ कर दीजिये” यूंही बहन या बेटी भाग गई या किसी लड़के के चक्कर में पड़ गई तो इन अल्फाज में दुआ की दर-ख्वास्त की जा सकती है : “मेरी एक रिश्तेदार किसी ना काबिले बयान बुराई में पड़ गई है उस के लिये दुआ कर दीजिये।” इन अल्फाज से दुआ करवाने में फाएदा यह है कि चूंकि फ़र्द, मुअय्यन (या’नी PARTICULAR) न हुवा लिहाज़ा गीबत का इम्कान अस्लन (या’नी बिल्कुल ही) ख़त्म हो गया। दूसरी बात यह कि मख़सूस बुराई और ख़िलाफ़े हया अल्फाज के बयान से भी बचत हो गई। हां अगर किसी ने दुआ करवाने की निय्यत से अपनी या किसी मख़सूस फ़र्द की ख़ामी या ऐब किसी के आगे बयान कर दिया तो यह गुनाह भरी गीबत नहीं, गुनाह भरी गीबत उसी सूरत में होगी जब कि किसी मुअय्यन व मा’लूम फ़र्द की ख़ामी महज़ उस की बुराई करने की निय्यत से बयान की जाए।

तबीब को उयूब बयान करने का तरीका : तबीब या आमिल को ब निय्यते हुसूले इलाज उयूब बताने में हरज नहीं। अलबत्ता फ़र्दे मुअय्यन का तज़्किरा किये बिगैर काम चल जाता हो तो चला लीजिये म-सलन “मेरा बेटा शराब पीता है” कहने के बजाए यूं कह दीजिये कि “मेरा एक रिश्तेदार शराब पीता है” अगर नाम वगैरा बताना ज़रूरी हो या खुद अपनी ही ख़ामियां बयान किये बिगैर चारा न हो तो यह एहतिyात ज़रूरी है कि उस तबीब या आमिल ही को बताया जाए बिला हाजत कोई भी दूसरा फ़र्द वोह बातें सुनने या जानने न पाए। बड़े डॉक्टर उमूमन अपने कमरे में अलग बुला कर मरीज़ से अहवाल सुनते हैं मगर न जाने क्यूं इन की अक्सरियत उस मौक़अ पर तआवुन के लिये बे पर्दा औरत साथ रखने का गुनाह करती है ! चन्द बार मुझे जब ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा है तो राज़दारी की गुफ़्त-गू न होने के बा वुजूद निगाहों की हिफ़ाज़त की ख़ातिर दर-ख्वास्त कर के औरत को कमरे से बाहर भिजवा दिया है। हर एक को हुक्मे शरीअत पर अमल करना चाहिये।

रूहानी इलाज के बस्ते पर राज़दारी का तरीका

सुवाल : दा’वते इस्लामी की “मजलिस” की तरफ़ से मुल्क व बैरूने मुल्क रूहानी इलाज के बे शुमार बस्ते लगाए जाते हैं, दुखियारे लोग क़ितार लगा कर, अपने मसाइल बता कर



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अब्दुर्रज़ाक)

फ़ी सबीलिल्लाह इलाज हासिल करते हैं, इन में यकीनन राज़ की बातें भी होती हैं, हर एक को अलग से वक़्त देना हमारे बस का रोग नहीं कोई हल बता दीजिये ।

जवाब : रूहानी इलाज के ज़रीए शहन्शाहे रिसालत ﷺ की दुखियारी उम्मत की ख़िदमत बेशक बहुत बड़ी सआदत है मगर इस म-दनी काम और हर हर अमल को गुनाहों से पाक साफ़ रखना ज़रूरी है । हरगिज़ येह नहीं होना चाहिये कि एक मुस्तहब काम के लिये ﷺ गुनाहों भरे हराम और जहन्नम में ले जाने वाले काम होते रहें । लोगों तक आवाज़ न पहुंचे इस के लिये कोई हिक्मते अ-मली इख़्तियार करना ज़रूरी है म-सलन बस्ते के सामने इतने फ़ासिले पर कोई रुकावट रख दी जाए जहां तक आवाज़ न जा सके, जिस की बारी हो उसी को क़रीब बुलाया जाए, परेशानियां सुनने के लिये सिर्फ़ एक फ़र्द हो जो कि ख़ौफ़े खुदा ﷻ का हामिल और मुसलमानों के राज़ों का अमीन हो, बिला इजाज़ते शर-ई उस का कोई मुआविन हरगिज़ क़रीब न रहे । नीज़ दर्जे ज़ैल मज़्मून का बेनर या बोर्ड बनवा कर हत्तल इम्कान बस्ते के ऐन ऊपर की जानिब इस तरह लगा दिया जाए कि क़ितार में मौजूद हर फ़र्द ब आसानी पढ़ सके नीज़ वक़तन फ़-वक़तन उस मज़्मून का ए'लान भी किया जाता रहे । मज़्मून येह है :

कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा : लोगों को ब ग़-रजे इलाज मजबूरन राज़ भी बताने पड़ते हैं लिहाज़ा बस्ते पर होने वाली गुफ़्त-गू को सुनने से दूसरा आदमी अपने आप को बचाए, **सरकारे मदीना** ﷺ का फ़रमाने इब्रत निशान है : जो शख्स किसी कौम की बातें कान लगा कर सुने हालां कि वोह इस बात को ना पसन्द करते हों या उस बात को छुपाना चाहते हों तो क़ियामत के दिन उस के कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा ।

(صحيح بخاری ج ٤ ص ٤٢٣ حديث ٧٠٤٢)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَلَاءِ मज़्कूरा हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी जो दूसरों की ख़ुफ़्या बात छुप कर सुने उस के कान में क़ियामत के दिन सीसा गर्म कर के उंडेला जाएगा । हदीस बिल्कुल ज़ाहिर पर है, इस में किसी



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कन्जुल उम्माल)

तावील की ज़रूरत नहीं, वाक़ेई उसे क़ियामत में येह अज़ाब होगा कि येह भी राज़ो नियाज़ का चोर है । (مرآة المناهج ص १८) (हदीसे पाक की शर्ह बोर्ड या बेनर में न डलवाएं कि मज़्मून काफ़ी तवील हो जाएगा, हां हेन्ड बिल वगैरा में शामिल करने में मुज़ा-यक़ा नहीं)

डॉक्टरों और आमिलों वगैरा के लिये

सुवाल : दूसरों की मौजूदगी में डॉक्टरों, हकीमों, आमिलों, समाजी कारकुनों और सियासी रहनुमाओं को भी ज़रूरतन अपने राज़ बताने पड़ते हैं, इस सिलसिले में भी कुछ म-दनी फूल दे दीजिये ।

जवाब : हर मुसलमान को चाहिये कि खुद भी गुनाहों और उन के अस्बाब से बचे और अपनी मक्दूर भर दूसरों को भी बचाए लिहाज़ा इन साहिबान को भी ऐसी हिक्मते अ-मली इख़्तियार करनी होगी कि एक का ऐब दूसरा न सुन पाए । येह हज़रात भी अगर मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो अपने यहां मज़्कूरा बोर्ड या बेनर लगवा लें और उस में लफ़ज़ “बस्ते पर” की जगह अपनी ज़रूरत के अल्फ़ाज़ म-सलन “पीर साहिब से” “बाबा जी से” “डॉक्टर साहिब से” “हकीम साहिब से” वगैरा की तरकीब फ़रमा लें ।

गीबतों से बचूं, चुग़लियों से बचूं हो निगाहे करम, ताजदारे हरम
बद कलामी न हो, यावह गोई न हो बोलूं मैं कम से कम, ताजदारे हरम

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गीबत की 12 जाइज़ सूरतें : 《1》 बद मज़्हब की बद अक़ीदगी का बयान 《2》 जिस की बुराई से नुक़सान पहुंचने का ख़दशा हो तो दूसरों को उस से बचाने के लिये ब क-दरे ज़रूरत सिर्फ़ उसी बुराई का तज़्किरा म-सलन जो ताजिर धोके से मिलावट वाला माल बेचता हो उस से मुसलमानों को बचाने के लिये उस के उस नाक़िस माल की निशान देही करना । फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ है : क्या फ़ाजिर के ज़िक्र से बचते हो उस को लोग कब पहचानेंगे ! फ़ाजिर का



फरमाने मुस्तफा ﷺ : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुख्खे पाक पढ़ा उसे क़्यामत के दिन मेरी शम्शअत मिलेगी । (मजमउज़्ज़वाइद)

ज़िक्र उस चीज़ के साथ करो जो उस में है ताकि लोग उस से बचें । (السُّنَنُ الْكُبْرَى ج ۱۰ ص ۳۵۴ حدیث ۲۰۹۱۴)

﴿3﴾ म-सलन कारोबारी, शिराकत दारी या शादी वगैरा के लिये मश्वरा मांगने पर जिस के बारे में मश्वरा मांगा गया है उस के अगर ऐसे ड़्यूब मा'लूम हैं जिस से नुक्सान पहुंच सकता है तो ज़रूरतन सिर्फ़ वोही ड़्यूब बताना ﴿4﴾ काज़ी (या पोलीस) से इन्साफ़ के हुसूल के लिये फ़रियाद करते वक़्त कि फुलां ने चोरी की, जुल्म किया वगैरा ﴿5﴾ जो इस्लाह कर सकता हो उस से सिर्फ़ इस्लाह की निय्यत से शिकायत की जा सकती है म-सलन मुरीद की पीर से, बेटे की बाप से, बीवी की शोहर से, रिआया की बादशाह से, शागिर्द की उस्ताज़ से शिकायत की जा सकती है ﴿6﴾ फ़तवा लेने के लिये नाम ले कर बुराई बयान कर सकता है मगर बेहतर येह है कि मुफ़्ती से भी इशारतन या'नी ज़ैद बक्र में दरयाफ़्त करे ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 177, 178, मुलख़बसन)

﴿7﴾ पहचान के लिये ज़रूरतन गूंगा बहरा वगैरा कहना : किसी के जिस्मानी ऐब म-सलन अन्धा, मोटा वगैरा सिर्फ़ पहचान के लिये कहना जब कि वोह इस अ़लामत से मा'रूफ़ (या'नी पहचाना जाता) हो अगर बिगैर ऐब ज़ाहिर किये भी पहचान हो सकती है तो बेहतर येह है कि नाम के साथ ऐब का तज़्किरा न करे । म-सलन ज़ैद मोटा है मगर नाम मअ़ वलदिय्यत बताने या किसी और अ़लामत से तरकीब बन सकती है तो अब मोटा कहने से बचे । चुनान्चे "रियाज़ुस्सालिहीन" में है : म-सलन कोई शख़्स आ'रज (लंगड़े) असम (बहरे), आ'मा (अन्धे), अह्वल (भेंगे) के लक़ब से मशहूर है तो उस की मा'रिफ़त व शनाख़्त (या'नी पहचान) के लिये इन औसाफ़ व अ़लामात के साथ ज़िक्र करना जाइज़ है मगर तन्कीस (या'नी ख़ामी बयान करने) के इरादे से इन औसाफ़ के साथ तज़्किरा जाइज़ नहीं । अगर (ख़ामी भरे) लक़ब के बिगैर पहचान हो सकती हो तो बेहतर येह है कि लक़ब बयान न करे । (رِیَاضُ الصَّالِحِیْنَ لِلنَّوَوِی ص ۴۰۴) दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्क-त-बतुल मदीना की मत्बूअ़ा 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 सफ़हा 178 पर है : बा'ज मर्तबा महज़ पहचानने के लिये किसी को अन्धा या काना या ठिगना या लम्बा कहा जाता है, येह गीबत में दाख़िल नहीं ।



फरमाने मुस्तफा ﷺ : جس کے پاس میرا جिकر ہوا اور اس نے مجھ پر دुरुہدے پاک نہ پڑا تھکیک وہ بدبخت ہو گیا ۔ (بکھنے سونتی)

जो खुल्लम खुल्ला बुराई करता हो उस की गीबत : ﴿8﴾ खुल्लम खुल्ला लोगों से माल छीन लेने, अलल ए'लान शराब पीने, दाढ़ी मुंडाने या एक मुठ्ठी से घटाने वगैरा वगैरा अलानिया गुनाह करने वाले कि जिन को इन गुनाहों के मुआ-मले में लोगों से हया न रही हो उन की सिर्फ उन बातों का तज्किरा करना ﴿9﴾ जालिम हाकिम के उन मजालिम का बयान करना भी जाइज है जो खुल्लम खुल्ला करता हो, हां जालिम भी जो बुरा अमल छुप कर करता हो उस का बयान गीबत है। दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-फहात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 सफहा 177 पर है : जो शख्स अलानिया बुरा काम करता है और उस को इस की कोई परवा नहीं कि लोग उसे क्या कहेंगे, उस की उस बुरी ह-र-कत का बयान करना गीबत नहीं, मगर उस की दूसरी बातें जो ज़ाहिर नहीं हैं उन को जिक्र करना गीबत में दाखिल है। हदीस में है कि जिस ने हया का हिजाब अपने चेहरे से हटा दिया, उस की गीबत नहीं। (बहारे शरीअत) **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हज़रते अल्लामा सय्यिद मुर्तज़ा ज़बैदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : याद रहे ! इस से (या'नी अलल ए'लान जुर्म करने वाले के उस जुर्म के तज्किरे से) सिर्फ लोगों की खैर ख़्वाही मक्सूद हो, हां जिस शख्स ने अपना गुस्सा (या भड़ास) निकालने या अपने नफ़्स का इन्तिक़ाम लेने के लिये फ़ासिके मो'लिन की मज़मूम सिफ़ात को बयान किया वोह गुनाहगार है।

(اتحاف السادة للزبيدي ج ٩ ص ٣٣٢)

﴿10﴾ बतौर अफ़सोस किसी की बुराई बयान करना : किसी ने अपने मुसलमान भाई की बुराई अफ़सोस के तौर पर (बयान) की, कि मुझे निहायत अफ़सोस है कि वोह ऐसे काम करता है येह गीबत नहीं, क्यूं कि जिस की बुराई की अगर उसे ख़बर भी हो गई तो इस सूरत में वोह बुरा न मानेगा, बुरा उस वक़्त मानेगा जब उसे मा'लूम हो कि इस कहने वाले का मक्सूद ही बुराई करना है, मगर येह ज़रूर है कि उस चीज़ का इज़हार इस ने हसरत व अफ़सोस ही की वजह से किया हो वरना येह गीबत है बल्कि एक किस्म का निफ़ाक़ और रिया और अपनी मदह सराई (या'नी अपने मुंह अपनी ता'रीफ़) है, क्यूं कि इस ने मुसलमान भाई की बुराई बयान की और ज़ाहिर येह



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मसतबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़अत मिलेगी । (मनमउज़्ज़वाहद)

किया कि बुराई मक्सूद नहीं येह निफ़ाक़ हुवा और लोगों पर येह ज़ाहिर किया कि येह काम मैं अपने लिये और दूसरों के लिये बुरा जानता हूँ येह रिया है और चूँकि ग़ीबत को ग़ीबत के तौर पर नहीं किया, लिहाज़ा अपने को सु-लहा (नेक बन्दों) में से होना बताया येह तज़्कियए नफ़्स और खुद सितार्ई (अपने मुंह अपनी ता'रीफ़) हुई । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 176, ۱۷۳ ص ۹ (دُرْمُخْتَار، رَدُّ الْمُحْتَار ج ۹)) इस जुज़्ज़ये का येह म-दनी फूल क़ाबिले ग़ौर है कि बयान करने में इज़्हारे अफ़्सोस का अन्दाज़ ऐसा हो कि जिस की ग़ीबत की गई उस को पता चल भी जाए तो वोह येह समझे कि येह बेचारा मेरी कोताही की वजह से ग़मज़दा हुवा, इस लिये इस ने महज़ अफ़्सोस के तौर पर येह बात की है मेरी बुराई करना मक्सूद नहीं । बहुत सोच समझ कर ज़बान खोलने की ज़रूरत है, महज़ ज़बर दस्ती के अफ़्सोस की कैफ़ियत पैदा कर लेना काफ़ी नहीं । आह ! ग़ीबत का अज़ाब सहा न जा सकेगा !

बतौरै अफ़्सोस ग़ीबत करने से बचने ही में अफ़ियत है : हकीकत येही है कि ग़ीबत जाइज़ होने की अफ़्सोस वाली सूरत में ग़ीबत के गुनाह में जा पड़ने का ख़तरा बहुत ज़ियादा है कि आम आदमी के लिये “हकीकी अफ़्सोस” और “अस्ल ग़ीबत” में फ़र्क़ करना बेहद मुश्किल है चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی़ फ़रमाते हैं : बा'ज मु-तकल्लिमीन (या'नी इल्मे कलाम के माहिरीन उ-लमा) फ़रमाते हैं कि किसी ऐसी चीज़ का ज़िक्र करना जिस से सामने वाले की तख़फ़ीफ़ (या'नी तहक्कीर व तज़्लील) होती हो येह उस वक़्त ग़ीबत होगी जब कि इस से (उस की इज़ज़त को) नुक़सान पहुंचाने और बुराई बयान करने का इरादा करे और (हां) इस का उस (के ऐब) को अफ़्सोस के तौर पर ज़िक्र करना ग़ीबत नहीं कहलाएगा । येह लिखने के बा'द हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی़ मज़ीद फ़रमाते हैं कि (इस ज़िम्न में) इमाम समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی़ अपनी “तफ़सीर” में फ़रमाते हैं : मैं कहता हूँ जो उन उ-लमाए किराम اللّٰهِ السّलَام ने बयान फ़रमाया है इस में अज़ीम ख़तरा है क्यूँ कि इस में (या'नी मैं तो बतौरै अफ़्सोस ग़ीबत कर रहा हूँ में) इस बात का गुमान है कि लोगों



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बदबख़्त हो गया। (इन्ने सुनी)

का इस तरह करना (या'नी अपने खयाल में अफ़सोस के लिये ग़ीबत करता हूँ बे एहतियाती की सूरत में) उन को उस बात की तरफ़ ले जाएगा जो महज़ (गुनाह भरी) **ग़ीबत** है लिहाज़ा इस का बिल्कुल तर्क कर देना (या'नी बतौर अफ़सोस किसी की ग़ीबत न करना) तक्वा के ज़ियादा करीब और ज़ियादा एहतियात पर मब्नी है। (तفسير روح البیان ج ९ ص ८९) 11 हदीस के रावियों, मुक़द्दमे के गवाहों और **मुसन्निफ़ीन** पर जरह (या'नी इन के उयूब को ज़ाहिर) करना (रुद्धुलमुहत्तार ج ९ ص १७०) 12 **मुरतद** और काफ़िरे हर्बी की बुराई बयान करना (अब दुन्या में तमाम काफ़िर हर्बी हैं)। येह बयान कर्दा तमाम सूरतें ब ज़ाहिर **ग़ीबत** हैं और हकीकत में गुनाहों भरी **ग़ीबत** नहीं और इन उयूब का बयान करना जाइज़ है बल्कि बा'ज सूरतों में **वाजिब** है।

सुब्ह होती है शाम होती है उम्र यूं ही तमाम होती है
ग़ीबतें चुग़लियां है करवाती जब ज़बां बे लगाम होती है

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

काफ़िर और मुरतद की ग़ीबत के अहक़ाम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! “ज़िम्मी काफ़िर” की ग़ीबत ना जाइज़ और “हर्बी काफ़िर” और **मुरतद** की जाइज़ है, आज कल दुन्या के तमाम यहूदी, क्रिस्चेन और हर काफ़िर “हर्बी” है। मगर पुराने दौर में जब कि मुसल्मानों का ग़-लबा था उस वक़्त “ज़िम्मी काफ़िर” भी पाए जाते थे। उन को तक्लीफ़ देना और उन की **ग़ीबत** करना ना जाइज़ था जैसा कि शाहे अबरार, हम ग़रीबों के ग़म ख़्वार ﷺ का फ़रमाने नसीहत निशान है : “जिस ने किसी यहूदी या नसरानी को तक्लीफ़ देह बात कही उस का ठिकाना जहन्नम है।” (الاحسان بترتيب صحيح ابن جِبّان حديث ٤٨٦٠ ج ٧ ص ١٩٣) ज़िम्मी काफ़िर उस मख़सूस काफ़िर को कहते हैं जो इस्लामी हुकूमत को अपने तहफ़फ़ुज के लिये जिज़्या (TAX) अदा करे। चुनान्वे “**तफ़्सीरे नईमी**” में है : **जिज़्या** या'नी वोह शर-ई महसूल (TAX) जो हुकूमत अहले किताब (यहूद व नसारा) से उन के जान व माल की हिफ़ाज़त के बदले



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह غُرُوحُل उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

वुसूल करे।

(तफ़सीरे नईमी, जि. 10, स. 254, मुलख़बसन)

दे गीबत से तोहमत से नफ़रत खुदाया^{غُرُوحُل}

कि बेशक है इन में हलाकत खुदाया^{غُرُوحُل}

मेरी ज़ात से दिल दुखे न किसी का

मिले मुझ से सब को मुसररत खुदाया^{غُرُوحُل}

बद मज़हबों से हदीस व आयत न सुनी : हज़रते अल्लामा इमाम अबू बक्र मुहम्मद इब्ने

सीरीन^{عليه رحمة الله الفینین} की ख़िदमत में दो बद अक्कीदा आदमी हाज़िर हुए और कहने लगे : ऐ

अबू बक्र ! हम आप को एक हदीस सुनाते हैं। फ़रमाया : मैं नहीं सुनूंगा। दोनों ने कहा : अच्छा

चलिये कुरआने करीम की एक आयत ही सुन लीजिये। फ़रमाया : नहीं सुनूंगा, तुम दोनों मेरे

पास से चले जाओ वरना मैं उठ कर चला जाता हूँ। आख़िर वोह चले गए तो बा'ज़ लोगों ने

(हैरत से) अर्ज़ की : ऐ अबू बक्र ! आप अगर उन से हदीसे पाक या आयते कुरआनी सुन लेते

तो इस में आख़िर क्या हरज था ? फ़रमाया : मुझे येह ख़ौफ़ लाहिक् हुवा कि येह लोग कुरआनो

हदीस के साथ अपनी कुछ तावील लगाएं और वोह मेरे दिल में रह जाए (तो हलाक हो जाऊं

इस लिये मैं ने उन से कुरआनो हदीस सुनना गवारा न किया)।

(سنن دارمی ج ۱ ص ۱۲۰ رقم ۳۹۷، فتاوی رضویہ ج ۱۵ ص ۱۰۶)

बद अक्कीदा शख़्स की गीबत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत में मशहूर ताबेई

बुजुर्ग इमामुल मुअब्बिरीन हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र मुहम्मद इब्ने सीरीन^{عليه رحمة الله الفینین}

ने दो शख़्सों के बारे में येह जो फ़रमाया है कि “मुझे येह ख़ौफ़ लाहिक् हुवा कि येह लोग

कुरआनो हदीस के साथ अपनी कुछ तावील लगाएं” येह ब ज़ाहिर बद गुमानी व गीबत है

मगर येह जाइज़ बद गुमानी व गीबत है बल्कि ऐसी गीबत बाइसे सवाबे आख़िरत होती है क्यूं

कि वोह दोनों बद अक्कीदा थे लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने उन की बद अक्कीदगी का लोगों

पर इज़हार फ़रमा दिया। दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की

मत्बूअ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 175 ता



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह غَوْجَلْ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

176 पर सदरुशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **बद अक़ीदा** लोगों का ज़रर (या'नी नुक़सान) **फ़ासिक़** के ज़रर से बहुत जाइद है, फ़ासिक़ से जो ज़रर (या'नी नुक़सान) पहुंचेगा वोह उस से बहुत कम है जो बद अक़ीदा लोगों से पहुंचता है । **फ़ासिक़** से अक्सर दुन्या का ज़रर (नुक़सान) होता है और **बद मज़हब** से तो दीनो ईमान की बरबादी का ज़रर (नुक़सान) है और बद मज़हब अपनी बद मज़हबी फैलाने के लिये नमाज़ व रोज़ा की ब ज़ाहिर ख़ूब पाबन्दी करते हैं, ताकि इन का वक़ार लोगों में काइम हो फिर जो गुमराही की बात करेंगे उन का पूरा असर होगा, लिहाज़ा ऐसों की बद मज़हबी का इज़हार फ़ासिक़ के फ़िस्क़ के इज़हार से ज़ियादा अहम्म है इस के बयान करने में हरगिज़ दरेग़ न करें ।

(बहारे शरीअत)

मन्हूस बद मज़हबों की बात सुननी ही नहीं है : मज़क़ूरा हिकायत से उन लोगों को भी दर्स हासिल करना चाहिये कि जो येह समझते हैं कि जो कोई भी कुरआनो हदीस बयान करे आंखें बन्द कर के उस से सुन लेना चाहिये अगर ऐसा होता तो मुसल्मानों के जलीलुल क़द्र इमाम हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र **मुहम्मद इब्ने सीरीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْفَیّیन जैसे अज़ीम अ़ालिमे दीन ने उन बद अक़ीदा आदमियों से कुरआनो हदीस को क्यूं नहीं सुना ! बस यूं समझो कि उन्होंने ने न सुन कर गोया हम जैसों को समझाया है कि मैं भी नहीं सुनता तुम भी मत सुनो ! हालां कि आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی अ-रबी दान और जलीलुल क़द्र अ़ालिम व मुज्ताहिद थे, अगर वोह बद अक़ीदा लोग तावील करते तो पकड़े भी जाते मगर इन मन्हूस बद मज़हबों से सुनना ही नहीं है कि शैतान को बहकाते देर नहीं लगती । अगर आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی सुन लेते तो दूसरों के लिये दलील हो जाती और वोह सुन कर गुमराह होते । और हां आप ने उन को जो चले जाने का हुक्म फ़रमाया वोह कोई बद अख़्लाकी नहीं थी बल्कि ऐसा करना ऐन हुस्ने अख़्लाक़ है । **अल्लाह व रसूल** عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ तَعَالٰی के दुश्मनों की ख़ातिर तवाज़ोअ नहीं की जा सकती ।

जो हैं दुश्मन रसूल के उन को

हम ने दिल से निकाल रखवा है



फरमाने मुस्तफा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

बद मज़हबी की बू : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत” (मुकम्मल) सफ़हा 302 पर है : हज़रते उ-मरे फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़े मग़िब पढ़ कर मस्जिद से तशरीफ़ लाए थे कि एक शख्स ने आवाज़ दी : कौन है कि मुसाफ़िर को खाना दे ? अमीरुल मुअमिनीन (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने खादिम से इर्शाद फ़रमाया : इसे हमराह ले आओ। वोह आया (तो) उसे खाना मंगा कर दिया। मुसाफ़िर ने खाना शुरू ही किया था कि एक लफ़्ज़ उस की ज़बान से ऐसा निकला जिस से “बद मज़हबी की बू” आती थी, फ़ौरन खाना सामने से उठवा लिया और उसे निकाल दिया।

(كُنُزُ الْعَمَال ج ١٠ ص ١١٧ رقم ٢٩٣٨٤)

फ़ारिके हक्को बातिल इमामुल हुदा

तैगे मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम

बद मज़हबों के पास बैठना कैसा ? : “मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत” (मुकम्मल) सफ़हा 277 से अर्ज़, इर्शाद का इक्तिबास मुला-हज़ा फ़रमाइये और अपनी आख़िरत की बेहतरी की सूरत बनाइये।

अर्ज़ : अक्सर लोग बद मज़हबों के पास जान बूझ कर बैठते हैं। उन के लिये क्या हुक्म है ?

इर्शाद : (बद मज़हबों के पास बैठना) हराम है और बद मज़हब हो जाने का अन्देशा कामिल और दोस्ताना हो तो दीन के लिये ज़हरे कातिल। रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं :

إِيَّاكُمْ وَإِيَّاهُمْ لَا يُضَلُّونَكُمْ وَلَا يَفْتَنُونَكُمْ يا'नी उन्हें अपने से दूर करो और उन से दूर भागो वोह तुम्हें गुमराह न कर दें कहीं वोह तुम्हें फ़ितने में न डालें। (مَقْدَمُهُ صَحِيحُ مُسْلِمٍ حَدِيثُ ٧ ص ٩) और अपने नफ़्स पर ए'तिमाद करने वाला बड़े कज़ाब (या'नी बहुत बड़े झूटे) पर ए'तिमाद करता है, إِنَّهَا أَكْذَبُ شَيْءٍ إِذَا حَلَفْتُ فَكَيْفَ إِذَا وَعَدْتُ (नफ़्स अगर कोई बात क़सम खा कर कहे तो सब से बढ़ कर झूटा है न कि जब कि ख़ाली वा'दा करे) सहीह हदीस में फ़रमाया : जब दज्जाल निकलेगा, कुछ (अफ़राद) उसे तमाशे के तौर पर देखने जाएंगे कि हम तो अपने दीन पर मुस्तक़ीम (या'नी काइम)



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

हैं, हमें उस से क्या नुक़सान होगा ? वहां जा कर वैसे ही हो जाएंगे। (سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ١٥٧ حدیث ٤٣١٩) हदीस में है नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो जिस क़ौम से दोस्ती रखता है उस का ह़शर उसी के साथ होगा।

(الْمُعْجَمُ الْاَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِی ج ٥ ص ١٩ حدیث ٦٤٥٠)

अल्लाह غَوْحَل फ़रमाता है :

وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَاِنَّهُ مِنْهُمْ ط

(٦٦، المائدة: ٥١)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तुम में से जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो वोह उन्हीं में से है।

एक बुजुर्गु रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ फ़रमाते हैं : (الْاَعْدَاءُ ثَلَاثَةٌ عَدُوُّكَ وَعَدُوُّ صَدِیقِكَ وَصَدِیقُ عَدُوِّكَ) (दुश्मन तीन हैं : एक तेरा दुश्मन, एक तेरे दोस्त का दुश्मन और एक तेरे दुश्मन का दोस्त)।

(المختصر المحتاج الیه للذهبی ص ١٢٥)

صَلُّوْا عَلَی الْخَبِیْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

ग़ैर मुस्लिम का क़बूले इस्लाम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये। ख़ूब हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में शिर्कत कीजिये और दा'वते इस्लामी के हर दिल अज़ीज़ म-दनी चेनल के सिल्सिले देखिये। आप की तरगीब के लिये म-दनी चेनल की एक म-दनी बहार पेश की जाती है चुनान्वे मर्कजुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि हमारे अलाक़े में एक वर्कशोप थी, उस में एक T.V. भी रखा हुआ था जिस पर कारीगर मुख़्तलिफ़ चेनलज़ देखा करते थे। र-मज़ानुल मुबारक सि. 1429 हि.



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अज्र लिखता है और किरात उहुद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज्जाक)

(2008) में जब दा'वते इस्लामी का म-दनी चैनल शुरू हुआ तो उन्हें कुछ ऐसा भाया कि दीगर तमाम चैनल के बजाए अब वोह फ़क़त म-दनी चैनल देखने लगे। उन कारीगरों में एक ग़ैर मुस्लिम नौ जवान भी शामिल था वोह भी "म-दनी चैनल" के पुरसोज़ सिल्सिलों (प्रोग्राम्ज) में दिलचस्पी लेने लगा। म-दनी चैनल में इस्लाम का हकीकी नक्शा देख कर वोह बेहद मु-तअस्मिर हुआ और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ तीन दिन के बा'द वोह कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया।

عَزَّوَجَلَّ
कुफ़ के ऐवां में मौला डाल दे येह ज़लज़ला
یا इलाही ! ता अबद जारी रहे येह सिल्सिला

صَلُّوْا عَلَی الْخَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

25 ग़ैर मुस्लिम कैदियों का कुबूले इस्लाम : दा'वते इस्लामी के मुबल्लिगीन की मसाइये जमीला से वक़तन फ़ वक़तन कुफ़फ़ार की इस्लाम आ-वरी की ख़बरें मिलती रहती हैं। चुनान्वे एक और ईमान अप्पोज़ बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं : बरें आ'ज़म अप्प्रीका के एक मुल्क ज़म्बिया (zambia) के दारुल ख़िलाफ़ा लुसाका (Lusaka) की कम्वाला (Kamwala) जेल में सि. 2004 ई. में दो भाई किसी ग़ैर क़ानूनी काम के इल्ज़ाम में कैद हो गए। वहां पर मुक़ीम चन्द इस्लामी भाई हर दूसरे दिन मुलाक़ात के लिये जाते। खाने के सामान के साथ दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा म-दनी रसाइल भी तोहफ़तन दे आते। ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ व इश्क़े मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मम्लू तहरीरें पढ़ कर दोनों भाइयों के दिलो दिमाग़ में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होना शुरूअ़ हो गया। पन्ज वक़ता नमाज़ के साथ साथ उन्होंने तहज्जुद की पाबन्दी भी शुरूअ़ कर दी, म-दनी इन्आमात को अपने ऊपर नाफ़िज़ करने का इरादा कर लिया और फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देना शुरूअ़ कर दिया।

दर्स की इब्तिदा में बताए जाने वाले दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल सुन सुन कर दीगर मुसल्मान कैदी भी कसरत के साथ दुरूदो सलाम पढ़ने लगे। इस की उन्हें कुछ ऐसी ब-र-कतें नसीब हुईं



फरमाने मुस्तफा ﷺ : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह غَوْحَل उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

कि बहुत से कैदियों को जल्द रिहाई मिल गई। कुफ़ार कैदी दुरुदे पाक की ब-र-कतें जागती आंखों से देख कर बहुत मु-तअस्सिर होते। यूं आहिस्ता आहिस्ता वोह दीने इस्लाम के करीब होते चले गए और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ غَوْحَل तीन से चार माह के कलील अर्से में 25 गैर मुस्लिम कैदी दौलते इस्लाम से मुशरफ़ हो गए। उन में एक पचास सालह पादरी भी शामिल था। उस का किस्सा यूं हूवा कि उस ने कैद के दौरान इस्लामी कुतुब का मुता-लआ शुरू किया तो एक रात ख़्वाब में इन्तिहाई ख़ूब सूरत मस्जिद देखी लेकिन जब उस में दाख़िल होने की कोशिश की तो दरवाज़ा बन्द हो गया। सुब्ह किसी इस्लामी भाई के पास मस्जिदुन्न-बविथ्यिशरीफ़ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ का तुग़रा देख कर बे साख़्ता पुकार उठा कि येह तो वोही मस्जिद है जो मैं ने ख़्वाब में देखी थी। दीने इस्लाम के बारे में मा'लूमात हासिल कर के और इस्लामी भाइयों का सहीह इस्लामी नक्शा अपनी आंखों से देख कर वोह पादरी भी मुसल्मान हो गया और निय्यत की, कि कैद से आज़ाद हो कर अपने सारे ख़ानदान को मुसल्मान होने की दा'वत पेश करूंगा।

मक्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी

सदका तुझे ऐ रब्बे ^{غَوْحَل} गफ़ार मदीने का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

“गीबत की तबाह कारियां” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत

से गीबत पर उभारने वाली 16 चीज़ों का बयान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बहुत सारे अस्बाब ऐसे हैं जिन की वजह से आदमी गीबत की आफ़त में मुब्तला हो जाता है इन में से 16 येह भी हैं :

«1» गुस्सा «2» बुग़जो कीना «3» हसद «4» गहरे दोस्त या घर के किसी अहम्म फ़र्द की हिमायत का ज़ब्बए बे जा «5» ज़ियादा बोलने की आदत «6» तन्ज़ करने की ख़सलत «7» हंसी



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है। (अबू या'ला)

मज़ाक़ की लत (ऐसा शख्स दूसरों को हंसाने के लिये लोगों की नक़लें उतार कर भी बसा अवकात ग़ीबत में मुब्तला हो जाता है) ﴿8﴾ घरेलू नाचाक़ियां (इन हालात में ग़ीबत से बचना क़रीब ब ना मुम्किन है, सुल्ह कर लेने ही में दोनों जहां की अफ़ियत है) ﴿9﴾ रिश्तेदारों या दोस्तों से नाराज़ियां ﴿10﴾ गिला शिक्वा करने की आदत (जहां किसी के बारे में दूसरे से शिक्वा शुरू किया कि शैतान ने बद गुमानियों, ऐब दरियों, ग़ीबतों, तोहमतों और चुग़लियों का ढेर लगवा दिया!) ﴿11﴾ तकब्बुर ﴿12﴾ वहमी तबीअत ﴿13﴾ बे जा तन्कीदी ज़ेहन (तन्कीदे बे जा का मरीज़ किसी की बराहे रास्त इस्लाह करने के बजाए उमूमन दूसरों के आगे ग़ीबतें करता फिरता है कि वोह यूं कर रहा है फुलां ऊं कर रहा है फुलां को यूं नहीं बल्कि यूं करना चाहिये था) ﴿14﴾ ग़ीबत की हलाकत सामानियों और इस के दीनी व दुन्यवी नुक्सानों से ना वाक़िफ़ियत ﴿15﴾ बे जा ज़ब्बातियत और “भड़ास” निकाले बिगैर सुकून न मिलना ﴿16﴾ ख़ौफ़े खुदा عزّوجلّ की कमी और अज़ाबे इलाही عزّوجلّ से अपने आप को डराते रहने की आदत न होना वगैरा। बहर हाल जो ग़ीबत की आफ़ात से खुद को बचाने और क़ब्र व जहन्नम के अज़ाबात से नजात पाने का आरजू मन्द हो उसे बयान कर्दा जुम्ला अस्बाब और इस के इलावा भी ग़ीबत पर उभारने वाली तमाम अश्या का इलाज करना और ग़ीबत से बचने के तरीक़े जानना निहायत ज़रूरी है।

मिटा मेरे रन्जो अलम या इलाही عزّوجلّ

अता कर मुझे अपना ग़म या इलाही عزّوجلّ

शराबे महब्बत कुछ ऐसी पिला दे

कभी भी नशा हो न कम या इलाही عزّوجلّ

ग़ीबत से बचने का आसान तरीन विर्द : हज़रते अल्लामा मज्दुहीन फ़ीरोज़ आबादी رحمه الله تعالى عليه से मन्कूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ तो अल्लाह عزّوجلّ तुम पर एक फ़िरिश्ता मुकर्रर फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा। और जब मजलिस से उठो तो कहो :



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज़ रखेगा।

(الْقَوْلُ الْبَرِّ ص २७८)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गीबत का इज्माली (या 'नी मुख़्तसर) इलाज : ग़ीबत का इज्माली या 'नी मुख़्तसर

इलाज येह है कि इस के अस्बाब का ख़ातिमा किया जाए। म-सलन गुस्सा भी इस का एक सबब है तो जब किसी पर गुस्सा आ जाए और उस की ग़ीबत करने और ऐब खोलने का ज़ब्बा पैदा हो तो फ़ौरन ग़ौर कीजिये कि अगर मेरे इस अमल पर अल्लाह عزّوجلّ ग़ज़बनाक हो गया और उस ने मेरे उयूब खोल दिये तो मैं क्या करूंगा! नीज़ अपने आप को यूं भी डराइये कि अगर मैं गुस्से में आ कर ग़ीबत करूंगा तो गुनहगार और जहन्नम का हक़दार क़रार पाऊंगा कि येह गुनाह के ज़रीए गुस्सा ठन्डा करना हुवा और फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ है : “जहन्नम में एक दरवाज़ा है उस से वोही दाख़िल होंगे जिन का गुस्सा किसी गुनाह के बा'द ही ठन्डा होता है।”

(الفردوس بمأثور الخطاب ج १ ص २०५ حديث ७८४) **‘बुरज़ो कीना** भी “गीबत” का एक बहुत बड़ा सबब है लिहाज़ा इस की तबाह कारियां ज़ेहन में ला कर इन के इलाज की भी तरकीब कीजिये, और खुद को इस वर्ईद से डराइये जैसा कि फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ है : “शा'बान की पन्दरहवीं शब में अल्लाह عزّوجلّ अपने बन्दों को रहमत की नज़र से देखता और सब को बख़्श देता है लेकिन मुश्रिक और कीना परवर को नहीं बख़्शा जाता।” (الاحسان بترتيب صحيح ابن جبان ج १ ص ४७ حديث ५२३)

हसद भी “गीबत” का एक सबब है इस का भी इलाज कीजिये। हज़रते सय्यिदुना अबुदरदा फ़रमाते हैं : जो मौत को कसरत के साथ याद करे उस के हसद और खुशी में कमी आ जाएगी। (مُصَنَّف ابن أبي شَيْبَةَ ج ८ ص १६७ رقم ४) **घरेलू नाचाक़ियां** ख़त्म कीजिये कि इस से ग़ीबत का बहुत बड़ा दरवाज़ा खुलता है, घर के नाराज़ अफ़राद म-सलन मां बाप, भाई बहन नीज़ दीगर रिश्तेदारों से सुल्ह कर लीजिये और आइन्दा भी हरगिज़ इन से न बिगाड़िये, वोह लाख बिगाड़ें मगर आप उन के साथ हुस्ने सुलूक ही करते रहिये। इन दो फ़रामैने मुस्तफ़ा ﷺ



फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिग़फ़र करते रहेंगे। (त-बरानी)

के ज़रीए अपना ख़ूब ज़ेहन बनाइये : (1) “सब से अफ़ज़ल स-दका वोह है जो कीना परवर रिश्तेदार को दिया जाए।” (अल्सुन्दरक़ ललहाक़ ज २ ص २७ حدیث १०१०) इस की वजह येह है कि कीना रखने वाले रिश्तेदार को स-दका देने में स-दका भी है और क़तए रेहूमी करने (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने) वाले के साथ सिलए रेहूमी (या'नी हुस्ने सुलूक) भी। (2) “रिश्ता काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।” (صحيح مسلم ص ३८३ حدیث २००६) **मज़ाक़ मस्ख़री** की आदत पर खुद पर पाबन्दी लगा दीजिये, ख़ामोशी और सन्जीदगी की आदत बनाइये। जब **ग़ीबत** करने को जी चाहे तो उस के दुन्यवी व उख़वी नुक़सानात पर ग़ौर कीजिये, इस के अज़ाबात जैसा कि मुर्दार का गोश्त खाना, तांबे के नाख़ुनों से अपना चेहरा और सीना छीलना, पहलूओं से काट काट कर गोश्त खिलाया जाना वगैरा ज़ेहन में दोहराइये, नीज़ **ग़ीबत** के सबब होने वाली नेकियों की कमी, गुनाहों की ज़ियादती और **बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़** से खुद को ठीक ठाक डरा दीजिये। **ग़ीबत** के इज्माली (मुख़्तसर) इलाज की इन चन्द सुतूर को काफ़ी मत समझिये, आगे आने वाला **ग़ीबत का तफ़सीली इलाज** भी ज़रूर पढ़िये। हां इस से शैतान आप को बहुत रोकेगा और ख़ूब सुस्ती दिलाएगा मगर आप इसे मुकम्मल पढ़ कर इस मरदूद को ना मुराद कीजिये। **ग़ीबत** की तबाह कारियों और इस पर मिलने वाले अज़ाबों का वक़तन फ़ वक़तन मुता-लआ करते रहिये वरना तवज्जोह हट जाने की सूरत में **ग़ीबत** पर दोबारा दिलेर हो जाने का ख़तरा रहेगा।

अफ़व फ़रमा ख़ताएं मेरी ऐ अफ़ू शौक़ो तौफ़ीक़, नेकी का दे मुझ को तू
जारी दिल कर कि हर दम रहे ज़िक़रे हू आदते बद बदल और कर नेक खू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْنُوْا إِلَى اللَّهِ اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

मियां बीवी के क़बूले इस्लाम की ईमान अफ़रोज़ म-दनी बहार : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की त-रबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये और दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में भरपूर हिस्सा लें।

هَذَا الْحَقُّ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ ج ٢: ١٠٠ जहां इस्लामी भाई म-दनी कामों में मसरूफ़ हैं वहां इस्लामी बहनें भी किसी तरह म-दनी कामों में पीछे नहीं, आइये पहले दुरुद शरीफ़ पढ़ लीजिये फिर एक म-दनी बहार सुनते हैं चुनान्चे सेन्ट्रल जेल सख़्खर 2 (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की कैदी ख़ातून के बयान का खुलासा कुछ इस तरह है : मुसल्मान होने से पहले मैं ग़ैर मुस्लिमा थी। हमारी “बेरक” में एक बा पर्दा इस्लामी बहन, कैदी ख़वातीन को कुरआने पाक की ता'लीम देने और सुन्नतें सिखाने के लिये आती थीं। उन का इस्लाम के सांचे में ढला किरदार और चेहरे से तक्दुस के झलकते अन्वार देख कर मुझे उन में अज़ीब कशिश महसूस हुई, उन्हें देख कर मुझे हज़रते सय्यि-दतुना मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا याद आ जातीं। मैं ने जब उन से मुलाक़ात की तो उन्होंने ने अपना तआरुफ़ कुछ यूं करवाया : मेरा तअल्लुक़ दा'वते इस्लामी से है, दा'वते इस्लामी तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक है, दा'वते इस्लामी ने हमें येह म-दनी मक़सद अता फ़रमाया है कि “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है,”

إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ इसी अज़ीम मक़सद को पूरा करने की कोशिश के लिये दा'वते इस्लामी में मुख़्तलिफ़ शो'बों में म-दनी काम करने के लिये जहां दीगर मजालिस क़ाइम हैं वहीं एक मजलिस “फ़ैज़ाने कुरआन” के नाम से भी है जो दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक के जेलख़ाना जात में दा'वते इस्लामी का “म-दनी काम” करने की सअय में मसरूफ़ है, मैं इसी मजलिस की इजाज़त से यहां कैदी



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझे पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़ाक)

ख़्वातीन की इस्लाह की कोशिश का जज़्बा ले कर आती हूँ। अल्लाह करे मेरी कोशिशें बार आवर हों और यहां मौजूद इस्लामी बहनें नेक बन जाएं।

यहां जिस क़दर हैं बहनें सभी म-दनी बुरक़अ पहनें
इन्हें नेक तुम बनाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दा 'वते इस्लामी की उस मुबल्लिगा के अन्दाज़े गुफ़्त-गू ने मुझे अपना ऐसा गिरवीदा कर लिया कि मैं रोज़ाना उन की मुन्तज़िर रहने लगी, जब वोह तशरीफ़ ले आतीं तो मैं अपना ज़ियादा वक़्त उन के साथ ही गुज़ारने की कोशिश करती। उन का पाकीज़ा किरदार देख कर सोचा करती कि इस्लाम अपने मानने वालों को इफ़फ़त व पारसाई का कैसा प्यारा दर्स देता है! उन की सोहबत और इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से मेरे दिल में इस्लाम की महबूबत की शम्अ रोशन होने लगी, बिल आख़िर एक रोज़ मैं ने मुसल्मान होने का अज़मे मुसम्मम कर ही लिया। दूसरे दिन जूँ ही वोह मुबल्लिगा तशरीफ़ लाई मैं ने वुफूरे शौक में बे क़रार हो कर उन से कहा : आप के आ'ला किरदार और पाकीज़ा गुफ़्तार ने मुझे बहुत मु-तअस्सिर किया है। इस्लाम किस क़दर प्यारा दीन है, मैं ने ऐसा तो कभी सोचा भी न था, मैं इस की रोशन ता'लीमात का खुली आंखों से मुशा-हदा कर चुकी हूँ, इस के बा'द जब मैं ने मुसल्मान होने की ख़्वाहिश का इज़हार किया तो उन्होंने ने खुश हो कर फ़ौरन मुझे तौबा करवा कर कलिमा पढ़ा

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ۝ 2 ۝

येह देख कर वहां मौजूद दीगर इस्लामी बहनें अश्कबार हो गई और गले लग कर मुझे मुसल्मान होने की मुबारक बाद देने लगीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने दा 'वते इस्लामी के पाकीज़ा म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर इस्लामी अहकामात पर अमल की कोशिश शुरूअ कर दी और सिल्सिलए कादिरय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ الْاَكْرَم की मुरिदनी बन गई। इस्लाम क़बूल करने के बा'द मैं ने अपने शोहर पर इन्फ़िरादी कोशिश शुरूअ कर दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दो माह बा'द वोह भी जुमादिल आख़िरह सि. 1427 हि. में सायए इस्लाम में आ गए।



फरमाने मुस्ताफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कन्जुल उम्माल)

ऐ इस्लामी बहनो तुम्हारे लिये भी सुनो है बहुत काम का म-दनी माहोल
तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अहकाम येह ता'लीम फ़रमाएगा म-दनी माहोल

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-र-कत से आए दिन बुत परस्तों की इस्लाम आ-वरी की तरकीबें बनती रहती हैं, उन के लिये ज़ैल के दो सुवाल जवाब निहायत कार आमद हैं :

मुशिरका का शोहर मुसल्मान हो गया निकाह का क्या बना ?

सुवाल : अगर शोहर मुसल्मान हो गया और बीवी बुत परस्त है तो बीवी के साथ निकाह बर करार रहा या टूट गया ?

जवाब : सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह, हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَرِیٰ फ़रमाते हैं : औरत अगर मुशिरका है तो मुसल्मान की ज़ौजियत में नहीं रह सकती । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۖ (प २८ سُتَجَحَةِ १०) । न येह उन्हें हलाल न वोह इन्हें हलाल । शोहर के मुसल्मान होने के बा'द काज़ी औरत पर इस्लाम पेश करेगा अगर इस्लाम से इन्कार करे निकाह जाता रहेगा । और जहां काज़ी न हों जैसे आज कल हिन्दुस्तान, यहां औरत को तीन हैज़ आने पर निकाह टूट जाएगा । येह हुक्म निकाह टूटने का है । या'नी अगर तीन हैज़ गुज़रने के बा'द औरत भी मुसल्मान हो गई और उसी शोहर के पास रहना चाहती है तो जदीद निकाह की ज़रूरत होगी कि अब वोह पहला निकाह जाता रहा । रहा औरत से जिमाअ करना तो मर्द के इस्लाम लाते ही (उस काफ़िरा बीवी से) हराम हो गया ।

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 4, स. 416)



फरमाने मुस्फा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुर्कदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी । (मजमउन्नुवाइद)

सुवाल : औरत मुसल्मान हो गई मगर शोहर अभी तक काफ़िर है, निकाह का क्या बना ?

जवाब : सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह, हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली

आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِیٰ फ़रमाते हैं : जो औरत या मर्द मुशरफ़ ब इस्लाम हो तफ़रीक़ (या'नी दोनों को अलग करने) के लिये येह शर्त है कि अर्जे इस्लाम दूसरे पर किया जाए वोह इन्कार कर दे तो फुरक़त (या'नी जुदाई, अलाहिदगी) हो जाएगी और अर्जे इस्लाम काज़ी का काम है यहां येह चीज़ ना मुम्किन सी है ऐसी जगह के लिये हुक्म येह है कि औरत मुशरफ़ ब इस्लाम हो तो जब तक तीन हैज़ न गुज़ार ले फुरक़त नहीं होगी तीन हैज़ या ग़ैरे हाइज़ (या'नी जिस को हैज़ न आता हो उस) के लिये तीन माह गुज़रने से पहले निकाह की इजाज़त नहीं ।

(फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 2, स. 42)

ऐ इस्लामी बहनो तुम्हारे लिये भी
तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अहक़ाम

सुनो है बहुत काम का म-दनी माहोल
येह ता'लीम फ़रमाएगा म-दनी माहोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

बे अमल मुसल्मानों का किरदार क़बूले इस्लाम में रुकावट : नाबीना इस्लामी भाइयों के म-दनी काफ़िले से मु-तअस्सिर हो कर एक ग़ैर मुस्लिम ने पहले क्या कहा फिर कैसे मुसल्मान हुवा येह जानने के लिये इस म-दनी बहार को ग़ौर से सुनिये और झूमिये चुनान्चे बाबुल मदीना कराची (सि. 2007 ई.) में राहे खुदा ﷻ में सफ़र करने वाले नाबीना इस्लामी भाइयों का एक म-दनी काफ़िला मल्लूबा मस्जिद तक पहुंचने के लिये बस में सुवार हुवा । उस म-दनी काफ़िले में चन्द उमूमी (या'नी ग़ैर मा'ज़ूर) इस्लामी भाई भी शरीक थे । अमीरे काफ़िला ने बराबर बैठे हुए शख्स पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उस का नाम वग़ैरा मा'लूम किया तो वोह कुछ यूं कहने लगा कि "मैं ग़ैर मुस्लिम हूं, मैं ने मज़हबे इस्लाम का मुता-लअ किया है और इस से मु-तअस्सिर भी हूं मगर फ़ी ज़माना मुसल्मानों का बिगड़ा हुवा किरदार मेरे इस्लाम क़बूल करने में रुकावट है । अलबत्ता मैं देख रहा हूं कि आप लोग एक



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया । (इने सुनी)

जैसे लिबास में मल्बूस हैं, जब बस में चढ़े तो बुलन्द आवाज़ से अपने इस्लामी तरीके पर सलाम किया¹ और हैरत तो इस बात की है कि आप हज़रत के साथ शामिल नाबीना अफ़्फ़ाद ने भी सफ़ेद लिबास पहना और सर पर सब्ज़ इमामा बांधा हुवा है, इन सब के चेहरों पर दाढ़ी भी है ।”

उस की इस्लाम की तरफ़ झुकाव वाली गुफ़्त-गू सुनने के बा’द अमीरे काफ़िला ने बड़े प्यार से उसे मुख़्तसर तौर पर दा’वते इस्लामी और इस की मजलिस “मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई” का तआरुफ़ करवाया और बताया कि येह मजलिस किस तरह गूंगे बहरों और नाबीनाओं में म-दनी काम करती है । फिर उस से कहा कि “येह नाबीना इस्लामी भाई उन्ही बे अमल मुसल्मानों की इस्लाह के लिये निकले हैं जिन्हें देख कर आप इस्लाम क़बूल करने से कतरा रहे हैं ।” येह बात सुन कर वोह इतना मु-तअस्सिर हुवा कि कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया ।

आइये आशिकी मिल के तब्लीगे दी
कुफ़्र का सर झुके दी का डंका बजे

काफ़िरों को करें काफ़िले में चलो
إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ चलें काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْكَافِرِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا إِلَى اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْكَافِرِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

لَدِينِهِ

1. कुफ़्फ़ार के अक्सरिय्यती मुमालिक कि जहां भारी ता’दाद में ग़ैर मुस्लिम होते हैं वहां अगर बस वग़ैरा में सलाम करे तो मुसल्मानों की निय्यत करे, इस्लामी मुमालिक जैसे पाकिस्तान वग़ैरा में बसों के अन्दर सलाम करने में मुसल्मानों की निय्यत की हाज़त नहीं, अलबत्ता अगर मा’लूम है कि बस में कुफ़्फ़ार भी सुवार हैं तो अब सलाम करने में मुसल्मानों की निय्यत करे ।



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दुरुद पाक पढ़ा उसे क्यामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्ज़वाइद)

गीबत के तफ़्सीली 10 इलाज

इलाज नम्बर 1

तन्हा रहे या अच्छी सोहबत इख़्तियार करे : दीनी मशग़लों और दुनिया के ज़रूरी कामों से फ़राग़त के बा'द ख़ल्वत या'नी तन्हाई इख़्तियार कीजिये या सिर्फ़ ऐसे सन्जीदा और सुन्नतों के पाबन्द इस्लामी भाइयों की सोहबत हासिल कीजिये जिन की बातें ख़ौफ़े खुदा व इश्क़े मुस्तफ़ा صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में इज़ाफ़े का बाइस बनें और वोह वक़्तन फ़ वक़्तन ज़ाहिरी बुराइयों और बातिनी बीमारियों की निशान देही करते और इन का इलाज तजवीज़ फ़रमाते हों । अच्छी सोहबत के मु-तअल्लिक़ दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा फ़रमाएं : (1) अच्छा रफ़ीक़ वोह है कि जब तू खुदा عَزَّوَجَلَّ को याद करे तो वोह तेरी मदद करे और जब तू भूले तो वोह याद दिलाए । (2) अच्छा रफ़ीक़ वोह है कि उस के देखने से तुम्हें खुदा عَزَّوَجَلَّ याद आए और उस की गुफ़्त-गू से तुम्हारे अमल में ज़ियादती हो और उस का अमल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए ।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٧ ص ٥٧ حدیث ٩٤٤٦)

नेक बन्दे की दुआ पर “आमीन” कहने की ब-र-कत : ऐसे नेक बन्दों की ख़िदमत में हाज़िरी की सआदत बसा अवकात बाइसे मग़िफ़रत हो जाती है चुनान्चे हज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِیَّ **शर्हुस्सुदूर** में नक़ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی कहते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ **मुहम्मद** बिन यज़ीद वासित्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِیَّ को ख़्वाब में देखा तो पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला किया ? तो उन्होंने ने फ़रमाया : मेरी मग़िफ़रत कर दी । मैं ने पूछा : मग़िफ़रत का क्या सबब बना ? फ़रमाया : एक मर्तबा हज़रते सय्यिदुना **अबू अम्र बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِیَّ जुमुआ के दिन हमारे पास तशरीफ़ फ़रमा हुए और दुआ की तो हम ने **आमीन** कही, बस



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकीक़ वोह बदबख़्त हो गया । (इन्ने सुन्नी)

इसी लिये मरिफ़रत हो गई ।

(شَرْحُ الصُّدُور ص ۲۸۲، كِتَابُ الْمَنَامَاتِ مَعَ مَوْسُوعَةِ ابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ج ۳ ص ۱۵۶ رقم ۳۳۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि नेक बन्दों के साथ दुआ में शिर्कत बहुत बड़ी सआदत है । लिहाज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ वगैरा में “दुआ” में दिल जर्ई के साथ शिरकत कीजिये न जाने किस की कुरबत और किस की सोहबत और किस की रिक्कत आमेज़ आमीन की ब-र-कत से अपना बेड़ा पार हो जाए ।

عَزَّوَجَلَّ

मुझे बे हिसाब बख़्शा दे मेरे मौला

عَزَّوَجَلَّ

तुझे वासिता नेक बन्दों का या रब

صَلُّوْا عَلٰی الْخَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इलाज नम्बर 2

ज़ाती दोस्तियों में ग़ीबतों से बचना दुश्वार है : ज़ाती दोस्तियों से क़ाअन इज्तिनाब (या'नी परहेज़) किया जाए क्यूं कि अब अक्सर माहोल ऐसा हो गया है कि जब दो मिल कर तीसरे का मन्फ़ी (NEGATIVE) तज़्किरा शुरूअ करें तो क़रीब क़रीब ना मुम्किन है कि ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी व इल्ज़ाम तराशी वगैरा से बच निकलें । इन फ़ालतू सोहबतों में सुन्नतों भरी गुफ़्त-गू कम और मुल्की व सियासी हालात पर तब्सरा ज़ियादा होता है, गोया सारे मुल्क का निज़ाम येही चला रहे हों ! लिहाज़ा कभी किसी वज़ीर पर तन्कीद करेंगे तो कभी किसी लीडर पर और येह दोस्त जब अपने अपने घरों की तरफ़ पलटेंगे तो “बद गुमानियों, ग़ीबतों और तोहमतों के गुनाहों का टोकरा” भी हर एक के साथ जाएगा ! हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ 'ज़म

عَنْهُ فَرَمَاتे हैं : तुम पर ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ लाज़िम है कि बेशक इस में शिफ़ा है और लोगों के तज़्किरों (म-सलन ग़ीबत) से बचो कि येह बीमारी है ।

(احیاءُ الْعُلُوم ج ۳ ص ۱۷۷)



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

फ़ालतू बैठकों से दूर रहिये : गीबत समेत मु-तअद्दिद गुनाहों से हिफ़ाज़त का बेहतरीन नुस्खा लोगों से अलग थलग रहना है चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَوَالٰی के फ़रमाने अली का खुलासा है : अम लोगों की उमूमन आदत होती है कि जहां कहीं मिल के बैठे कि किसी न किसी की “इज़्ज़त” के पीछे पड़े या’नी गीबतों और चुग़लियों का सिल्लिसला शुरू हो गया क्यूं कि उन की ग़िज़ा येही है ! ऐसे लोगों का चूँकि अकेले में दिल उक्ताता है लिहाज़ा मिल जुल कर गप शप और “तेरी मेरी” कर के “टाइम पास” करते हैं अगर आप ऐसों के साथ बैठेंगे तो गुनाहों भरी बातों में भी हां में हां मिलानी पड़ेगी और यूं गुनहगार और अज़ाबे नार के हक़दार होते रहेंगे, अगर “हां, ना” किये बिगैर ख़ामोश बैठे रहेंगे तब भी नहीं बच सकते क्यूं कि बिगैर शर-ई मजबूरी के गीबत सुनने वाला भी गीबत करने वाले ही की तरह गुनहगार होता है ! अगर आप उन की गुनाहों भरी बातों पर ए’तिराज़ करेंगे तो येह आप के ख़िलाफ़ हो जाएंगे, नती-जतन वोह आप की भी गीबतों और दिल आज़ारियों पर उतर आएंगे।

(ماخوذ از: إحياء العلوم ج ٢ ص ٢٨٦ عَزَّوَجَلَّ)

मुझे अपना आशिक़ बना कर बना दे
जो इश्क़े मुहम्मद में आंसू बहाए

तू सर ता पा तस्वीरे ग़म या इलाही
अता कर दे वोह चश्मे नम या इलाही

“टाइम पास” करने की बैठक का नक़्शा पेश करने वाली हिकायत : हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی مस्जिदुल हराम शरीफ़ (मक्कतुल मुकर्रमा اِيَّاہَا اللّٰهُ شَرَفًاوُ تَعْظِيْمًا) में तन्हा तशरीफ़ फ़रमा थे, आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی का एक दोस्त आया, आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने पूछा : कैसे आना हुवा ? जवाब दिया : ऐ अबू अली ! बस यूं ही ज़रा दिल बहलाने के लिये आ गया हूं। फ़रमाया : अल्लाह की क़सम ! येह तो बड़ी वढ़शत दिलाने वाली बात है ! क्या आप येह चाहते हैं कि मैं आप के लिये ज़ीनत इख़्तार करूं और आप मेरे लिये इख़्तियार करें, आप



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

मुझ से झूट बोलें और मैं आप से झूट बोलूँ ! या तो आप यहां से तशरीफ ले जाइये या मैं चला जाता हूँ। (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ فُجَّیْل سَیِّدُنَا سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ) मिल बैठने वालों का नक्शा ही खींच कर दिखा दिया कि जो लोग “टाइम पास” करने के लिये बैठते हैं वोह उमूमन एक दूसरे के लिये जीनतें और बनावटें करते और ख़ूब झूटी गप्पी हांकते हैं !) बा’ज उ-लमाए किराम رَحْمَتُہُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फरमाया है कि अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से महब्वत करता है तो उसे गुमनाम कर देता है।

(ماخوذ از: احیاء العلوم ج ۲ ص ۲۸۷)

फ़क़त तेरा तालिब हूँ हरगिज़ नहीं हूँ तलबगारे जाहो हशम या इलाही
न दे ताजे शाही न दे बादशाही बना दे गदाए हरम या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْخَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

मेलजोल का अहल कौन ? : लोगों से मेलजोल के अहल की मिसाल देते हुए हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی فَرَمَاتे हैं : हज़रते सय्यिदुना ताऊस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقُدُّوس खलीफ़ाए वक़्त हशशाम के पास तशरीफ़ ले गए और पूछा : हशशाम ! कैसे हो ? उस ने गुस्से से कहा : आप ने मुझे “अमीरुल मुअमिनीन” कह कर मुखातब क्यूं नहीं किया ? फ़रमाया : इस लिये कि तमाम मुसल्मान तुम्हारी ख़िलाफ़त से मुत्तफ़ि़क़ नहीं हैं, लिहाज़ा मैं डरा कि तुम्हें अमीरुल मुअमिनीन कहना कहीं झूट न ठहरे। हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی इस हिकायत को नक़ल करने के बा’द फ़रमाते हैं : लिहाज़ा जो आदमी इस क़दर खरा और साफ़ गो हो और इस क़िस्म की बातों (म-सलन ग़ीबतों, चुग़िलयों, रियाकारियों, खुद पसन्दियों, खुशामदों वगैरा वगैरा) से बच सकता हो वोह बेशक लोगों में मिल जुल कर रहे वरना अपना नाम मुनाफ़ि़कों की फ़ेहरिस्त में लिखवाने पर राज़ी हो जाए।

(ماخوذ از: احیاء العلوم ج ۲ ص ۲۸۷)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

ज़ाहिरी अच्छी सोहबतों में भी गीबतों का मरज़ ! : हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल वहहाब शा'रानी قَدَس سرہ النورانی फ़रमाते हैं : मुझे याद नहीं कि मैं ने इस ज़माने के मशाइख़ में से किसी से मुलाकात की हो और मेरा उस के साथ बैठना गीबत से महफूज़ रहा हो, ऐसा बहुत कम हुवा इसी लिये मैं ने अपने दीन की और उन के भी दीन की हिफ़ाज़त की खातिर उन से मुलाकात कम कर दी मगर उन के हुक्क में सुस्ती नहीं की। जब बुजुर्गों की मजलिसों का येह हाल है तो दूसरो की बैठकों का क्या आलम होगा ! तो ऐ भाई ! इस ज़माने में जब किसी शख्स से मुलाकात करे तो अपने नफ़्स की मुकम्मल हिफ़ाज़त कर और इस मुआ-मले में हरगिज़ सुस्ती न कर।

(تَنْبِيْہُ الْمَغْتَرِبِین ص ۲۲۴)

हर आने वाला वक़्त पिछले वक़्त से बुरा है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल वहहाब शा'रानी قَدَس سرہ النورانی (मु-तवफ़्फ़ा 973 हि.) दसवीं सदी हिजरी के बुजुर्ग थे जब उन के दौर में येह हाल था तो अब तो पन्दरहवीं सदी हिजरी है हम उन के दौर से तक्रीबन 450 साल मज़ीद दूर हो चुके हैं और हर आने वाला वक़्त दीनी ए'तिबार से पिछले वक़्त से बुरा है। हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन अद्दी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम ने हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाह में हज़्जाज बिन यूसुफ़ की तरफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ की शिकायत की तो फ़रमाया : “सब्र करो ! क्यूं कि तुम पर कोई ज़माना नहीं आएगा मगर इस के बा'द में आने वाला ज़माना उस से बदतर होगा यहां तक कि तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मिलो, येह मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है।” (صَحِیحُ بُخَارِی ج ۴ ص ۴۳۳ حدیث ۷۰۶۸)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْہِ इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : ज़माना जिस क़दर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दूर होता जाएगा जुल्म व फ़साद भी बढ़ता जाएगा, हर ज़माना पहले ज़माने से दीन के लिहाज़ से बदतर है, कभी कोई गुनाह ज़ियादा कभी कोई गुनाह !

(مِرَاةُ الْمَنَاجِیح ج ۷ ص ۲۰۲ مُلَخَّصًا)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

हर हर फ़र्द गीबत गो नहीं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर जी शुक्र अन्दाज़ा लगा सकता है कि आज कल जब तमाम ही बुराइयां उरूजे बाम पर हैं तो फिर “गीबत” क्यूं पीछे रहेगी ! खैर इस का मत्लब हरगिज़ येह नहीं कि हर हर फ़र्द लाज़िमी तौर पर गीबत में लगा हुवा है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से हरगिज़ दुन्या ख़ाली नहीं। तो जो वाक़ेई नेक बन्दे हों उन की सोहबते बाब-र-कत से ज़रूर फ़ैज़ हासिल करना चाहिये और जो ब ज़ाहिर मज़हबी वज़अ क़अ रखते हों और देखने में “नेक सूरत” हों मगर गीबतों, चुग़लियों, बद गुमानियों, तोहमतों वगैरा वगैरा गुनाहों की गन्दगियों और ग़लाज़तों में लिथड़े रहते हों उन की मजलिसों (बैठकों) से दूर रहने ही में सलामती बल्कि ऐसों से दूर रहना शरअन भी ज़रूरी है। दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 164 पर है : इमरान बिन हि़तान से रिवायत की, कहते हैं : मैं (हज़रते सय्यिदुना) अबू ज़र (गिफ़ारी) رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास गया, उन्हें काली कमली ओढ़े हुए मस्जिद में तन्हा बैठा हुवा देखा। मैं ने कहा : अबू ज़र ! येह तन्हाई कैसी ? उन्होंने ने कहा : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : तन्हाई अच्छी है बुरे हम नशीन से और हम नशीने सालेह (या'नी नेक रफ़ीक़) तन्हाई से बेहतर है और अच्छी बात बोलना ख़ामोशी से बेहतर है और बुरी बात बोलने से चुप रहना बेहतर है।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٤ ص ٢٥٦ حدیث ٤٩٩٣)

हाल हमारा कैसा ज़बू है और वोह कैसा और वोह क्यूं है

सब है तुम पर रोशन शाहा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْکَ وَسَلَّم (सामाने बख़्शिश)

50 सिद्दीकीन का सवाब : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْمِ फ़रमाते हैं : अन्क़रीब लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि उन की बादशाही (हुकूमत) क़त्ल और जुल्म के बिगैर नहीं होगी। और मालदारी तकब्बुर और बुख़्ल से ख़ाली न होगी और लोगों के साथ मजलिस (बैठक) ख़्वाहिशे नफ़्सानी के बिगैर



फरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उद्द पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज्जाक)

न होगी । पस जो शख्स वोह जमाना पाए और सब करे और अपने नफ्स की हिफाजत करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे पचास सिद्दीकीन जैसा सवाब अता करेगा ।

(تَنْبِيْہُ الْمَغْتَرِبِین ص ۲۲۵)

गीबत ख़ोर से तो कुत्ता ही भला : हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन जैद عَلَيْهِ السَّلَام की खिदमत में फरमाते हैं : मैं एक बार हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ السَّلَام की खिदमत में हाज़िर हुवा, उन के सामने एक कुत्ता देख कर मैं ने उसे भगाना चाहा तो फरमाया : **ऐ हम्माद !** इसे छोड़ दो यकीनन येह उस बुरे साथी से बेहतर है जो मेरे पास बैठ कर लोगों की गीबत करता है ।

(تَنْبِيْہُ الْمَغْتَرِبِین ص ۲۲۷)

तो कुत्ता मुझ जैसे सेंकड़ों से अच्छा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुजुर्गों की भी क्या ख़ूब म-दनी सोच हुवा करती थी ! वोह गीबत ख़ोर जो बिगैर तौबा के मर जाए और अल्लाह व रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में वासिले जहन्नम हो जाए वल्लाह बिल्लाह तल्लाह ऐसे आदमी से तो कुत्ता ही करोड़ों द-रजे बेहतर है कि उस के लिये दोज़ख का अज़ाब नहीं । तज़िकरतुल औलिया में है : हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ السَّلَام की खिदमते बा अ-जमत में किसी ने सुवाल किया : आप बेहतर हैं या कुत्ता ? फरमाया : अगर अज़ाब से बच गया तो मैं वरना कुत्ता मुझ जैसे सेंकड़ों से अफ़ज़ल है ।

(تَذْکَرَةُ الْاَوَّلِیَّاءِ حَصَّہٗ اَوَّل ص ۴۳)

आप की गलियों के कुत्ते मुझ से तो अच्छे रहे

है सुकूं उन को मुयस्सर सब्ज़ गुम्बद देख कर

हसन बसरी और एक गोशा नशीन : हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ السَّلَام की खिदमत में फरमाते हैं : एक शख्स को लोगों से अलग थलग रहने वाला पा कर मैं ने इस का सबब पूछा : तो उस ने कहा : मैं बहुत अहम्म काम में मशगूल रहता हूं । मैं ने पूछा वोह क्या है ? कहने लगा : मैं हर सुब्ह अपने आप को ने'मत और गुनाह के दरमियान पाता हूं



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

लिहाज़ा मैं ने'मतों के शुक्र और गुनाहों से तौबा में मशगूल रहता हूँ। मैं ने उस से कहा : ऐ भाई ! तू हसन बसरी से अफ़क़ह या'नी ज़ियादा फ़कीह (बहुत बड़ा आलिम) है, अकेला ही बैठा कर।

(تَنْبِیْہُ الْمُعْتَرِّضِ ص ۲۲۷)

तन्हाई में भलाई ही भलाई है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! वाक़ेई तन्हाई में भलाई ही भलाई है मगर जो ऐसा आलिम हो जिस की मुसल्मानों को हाज़त हो और उस से लोगों को नफ़अ पहुंचता हो वोह मेलजोल तर्क कर के ख़ल्वत (या'नी गोशा नशीनी) इख़्तियार न करे। बाकी लोग अगर मां बाप, अहलो अयाल और दीगर हुकूक़ल इबाद का ख़याल रखने के साथ साथ अपनी अहम दीनी व दुन्यवी ज़रूरतों से फ़ारिग़ हो कर **बक़िय्या** वक़्त उज़लत नशीनी (या'नी तन्हाई) में गुज़ारें (जब कि तन्हाई में रहने के आदाब से भी वाक़िफ़ हों¹) तो उन के लिये नूरुन अला नूर। हज़रते सय्यिदुना उक्बा बिन अमिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **नजात** क्या है ? फ़रमाया : (1) अपनी ज़बान को रोक रखो (या'नी अपनी ज़बान वहां खोलो जहां फ़ाएदा हो, नुक्सान न हो) और (2) तुम्हारा घर तुम्हें किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत घर से न निकलो) और (3) गुनाहों पर रोना इख़्तियार करो।

(سُنَنِ تِرْمِذِي ج ۴ ص ۱۸۲ حدیث ۲۴۱۴)

दिल में हो याद तेरी गोशाए तन्हाई हो

फिर तो ख़ल्वत में अज़ब अन्जुमन आराई हो

गीबत से बचने का अनोखा तरीक़ा : जब भी किसी के बारे में कुछ कहने की नौबत आए तो काश ! हमारा तसव्वुर येह बंध जाए कि वोह हमारे सामने मौजूद है कहीं ऐसा न हो कि कोई लफ़ज़ ऐसा ज़बान से अदा हो जाए जिसे सुन कर येह नाराज़ हो जाए चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : किसी बुजुर्ग़ عَلَيْهِ का फ़रमान है कि जब भी किसी आदमी का मेरे सामने ज़िक़्र किया गया तो मैं ने गोया उसे अपने دین¹

1. लुबाबुल एहया सफ़हा 163 ता 165 पर गोशा नशीनी का बयान मुला-हज़ा फ़रमाइये। इस का ख़ूब तफ़सीली बयान एहयाउल उलूम जिल्द 2 में है।



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (अबू या'ला)

सामने बैठा हुवा पाया और उस के बारे में वोही कलाम किया जिसे वोह पसन्द करे ।
 (فَوْتُ الْقُلُوبِ ج ١ ص ٣٤٩) इसी तरह एक और बुजुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : मेरे सामने जब किसी का तज़्किरा छिड़ता है, अपने दिल में उस का तसव्वुर जमा लेता हूं और जो अपने लिये पसन्द करता हूं, उस के बारे में भी वोही कहता हूं । (ऐज़न)

शरफ़ दे हज़ का मुझे बहरे मुस्तफ़ा या रब
 दिखा दे एक झलक सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की

रवाना सूए मदीना हो काफ़िला या रब
 बस उन के जल्वे में आ जाए फिर क़ज़ा या रब

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُؤْبُوْا لَی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

ग़ैर मुस्लिम मुसल्मान हो गया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की त-रबिय्यत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये । दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना के जारी कर्दा रसाइल और विडियो केसिटें तोहफ़े में बांटते रहिये न जाने कब किस का दिल चोट खा जाए, वोह राहे रास्त पर आ जाए और आप का भी बेड़ा पार हो जाए । आप की तरगीब के लिये एक ईमान अफ़रोज़ बहार आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्वे U.K. (इंग्लैंड) के एक इस्लामी भाई का इस तरह बयान है कि मैं बहुत अर्से से एक ग़ैर मुस्लिम पर इन्फ़िरादी कोशिश कर रहा था कि वोह मुसल्मान हो जाए मगर मुझे काम्याबी नहीं मिल रही थी । एक बार दा'वते



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: جَوْ مُؤِذٍ پَر رَوِجَ جُمُوعًا دُرُودَ شَرِیْفَ پِہُیَا مَیْ کَیْامَتِ کَے دِیْنِ اُس کِی شَافِیْ اُت کَہُیَا ۥ (کنزُیْلِ اُمّالِ)]

इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की जारी कर्दा एक V.C.D. उन को तोहफे में दी गई उस V.C.D. का नाम है : बैनल अक्वामी इज्तिमाअ व इज्तिमाई ए 'तिकाफ़। उस ने V.C.D. को अपने घर वालों को साथ बिठा कर चला दी, वोह V.C.D. देखता गया और उर्दू न समझने के बा वुजूद महज बैनल अक्वामी इज्तिमाअ और इज्तिमाई ए 'तिकाफ़ के रूह परवर मनाज़िर देख कर उस के दिल में इस्लाम की महबबत उतरती चली गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ ﷻ आखिरे कार वोह कलिमा पढ़ कर दाइरए इस्लाम में दाखिल हो गया और दा 'वते इस्लामी के इज्तिमाअ में भी शिर्कत करने लगा, म-दनी माहोल की ब-र-कत से सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़ से उस का सर "सर सब्ज़" हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ ﷻ वोह आशिकाने रसूल के साथ राहे खुदा ﷻ में सफ़र करने वाले म-दनी काफ़िले का मुसाफ़िर भी बना।

اَللّٰہُ کَرَمَ اَیْسَا کَرِے تُوڑ پَے جَہاں مَیں
اَے دا 'وَتَے اِस्लामी تَہِری دُھُم مَچی ہو

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ا صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

इलाज नम्बर 3

ग़ीबत का येह इलाज भी फ़ाएदे मन्द है कि आप अपने ज़ेहन में येह बात एक दम जमा लीजिये कि जब कोई मेरी ग़ीबत करता है तो मुझे तकलीफ़ होती है इसी तरह मैं जिस की ग़ीबत करूंगा उसे भी तो अज़ियत होगी, तो जो काम मुझे अपने लिये ना पसन्द है वोह दूसरे मुसल्मान भाई के लिये क्यूं करूं !

चूहे भगाने के लिये बिल्ली न रखने का ईमान अफ़रोज़ सबब : ग़ीबत से तो बचना ही चाहिये, पुराने ज़माने के लोगों की तो ऐसी म-दनी सोच होती थी कि खुद तकलीफ़ गवारा कर लेते मगर दूसरे को तकलीफ़ न होने देते चुनान्वे "मुका-श-फ़तुल कुलूब" में है : एक साहिब के घर में चूहे बहुत हो गए थे, किसी ने मश्वरा दिया बिल्ली रख लीजिये। उन साहिब ने जवाब दिया : बिल्ली की "मियाउं" सुन कर चूहे भाग तो



फ़रमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

जाएंगे मगर मुझे डर लग रहा है कि कहीं पड़ोसियों के घरों में न घुस जाएं ! अगर यूं हुवा तो मैं ऐसा आदमी बना कि जो अपने लिये जिस तकलीफ़ को ना पसन्द करता है वोही तकलीफ़ उस ने दूसरे के लिये गवारा कर ली ।

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص २८२) صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ख़ैर ख़्वाह हम भी पड़ोसी के बनें

येह करम या मुस्तफ़ा फ़रमाइये

ने 'मते अख़्लाक़ कर दीजे अता

येह करम या मुस्तफ़ा फ़रमाइये

ग़ीबतो चुग़ली की आफ़त से बचें

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

येह करम या मुस्तफ़ा फ़रमाइये

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْنُوْا إِلَى اللَّهِ اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इलाज नम्बर 4

“भड़ास” निकालना ग़ीबत में डाल सकता है : किसी ने दिल दुखा दिया, सख़्त गुस्सा आ गया और सब्र का दामन हाथ से छूट गया इस सबब से दिल दुखाने वाले के बारे में अगर किसी के आगे “भड़ास” निकलने लगी तो समझो कि जहन्नम की आग़ इकट्ठी होनी शुरू हो गई कि अब ग़ीबत व बोहतान तराशी जैसे कबीरा गुनाह, हराम और दोज़ख़ में ले जाने वाले काम से आप को शायद कोई न बचा पाए क्यूं कि जब कोई गुस्से और ज़ब्बात के आलम में भड़ास निकाल रहा होता है उस वक़्त उमूमन सुनने वाला भी सहम जाता है और उस की इस्लाह नहीं कर पाता । उस दिले सियाह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह जो हिदायत की बात सुनने के लिये तय्यार न हो । आह ! ग़ीबत की तबाहकारी ! हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ تَنْبِيْهُ الْمُغْتَرِّينَ (ص १९१) फ़रमाते हैं ग़ीबत दिल को हिदायत और भलाई से महरूम कर देती है ।



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

गुस्से का इलाज कीजिये, दूसरों के आगे भड़ास निकालने के बजाए मुआफ़ी और दर गुज़र से काम लेते हुए जन्नत में बे हिसाब दाखिले की तड़प वाला ज़ेहन बनाइये।

मुआफ़ करने वालों का बे हिसाब जन्नत में दाखिला : मुआफ़ कर देने की फ़ज़ीलत भी ऐसी है कि मुंह में पानी आ जाता है चुनान्वे सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना ﷺ का इर्शादे बा क़रीना है : क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा : जिस का अज़्र अल्लाह ﷻ के ज़िम्माए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाखिल हो जाए। पूछा जाएगा : किस के लिये अज़्र है ? वोह मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला) कहेगा : “उन लोगों के लिये जो मुआफ़ करने वाले हैं।” तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला हिसाब जन्नत में दाखिल हो जाएंगे। (अल्लुम अल्लाह ﷻ) काश ! हमें भी मुआफ़ कर देने का ज़ब्बा नसीब हो जाए। और काश ! काश ! काश ! हम भी बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाखिले की सआदत पा लें।

तू बे हिसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म

ﷺ

देता हूं वासिता तुझे शाहे हिजाज़ का (ज़ौके ना'त)

बुरा कहने से बचने वाले का खुश अन्जाम : हज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي बोस्ताने सा'दी में नक्ल करते हैं : एक नेक सीरत शख्स अपने ज़ाती दुश्मनों का ज़िक्र भी बुराई से न करता था। जब भी किसी की बात छिड़ती, उस की ज़बान से नेक अल्फ़ाज़ ही अदा होते। उस के मरने के बा'द किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : يا'नी अल्लाह ﷻ : مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ? ने तेरे साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया ? येह सुवाल सुन कर उस के होंटों पर मुस्कराहट आ गई और वोह बुलबुल की तरह शीरी (या'नी मीठी) आवाज़ में बोला : दुन्या में मेरी येही कोशिश होती



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़्ज़ाक)

थी कि मेरी ज़बान से किसी के बारे में कोई बुरी बात न निकले, नकीरैन (या'नी मुन्कर नकीर) ने भी मुझ से कोई सख़्त सुवाल न किया और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ यूँ मेरा मुआ-मला बहुत अच्छा (بوستان سعدی ص ۱۴۴) (दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला, "गुस्से का इलाज" का मुता-लआ गुस्से की आदत निकालने के लिये اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ बेहतरीन मुआविन साबित होगा)

सुन लो नुक़सान ही होता है बिल आख़िर उन को
नफ़स के वासिते गुस्सा जो किया करते हैं
इलाज नम्बर 5

ग़ीबत के अज़ाबात याद कीजिये : जब किसी की पीठ पीछे बुराई करने को जी चाहे तो ग़ीबत के अज़ाबात को याद कीजिये, म-सलन तांबे के नाख़ुनों से अपने चेहरे और सीने को नोचने वाला अज़ाब, अपने ही पहलूओं (या'नी करवटों) का गोश्त काट काट कर ख़िलाए जाने का अज़ाब नीज़ तसव्वुर कीजिये कि बरोज़े क़ियामत अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना पड़ेगा और ग़ीबत करने वाला मुंह बिगाड़े चिल्लाता हुवा उसे खाएगा। अब सोचिये कि हलाल जानवर का ताज़ा गोश्त भी कच्चा नहीं खाया जाता तो मरे हुए इन्सान का गोश्त किस तरह खाया जा सकेगा ?

ग़ीबत का ताइब आख़िर में जन्नत में जाएगा : मन्कूल है : अल्लाह ﷻ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह ﷺ की तरफ़ वहूय फ़रमाई कि जो ग़ीबत से तौबा कर के मरा वोह आख़िरी शख़्स होगा जो जन्नत में जाएगा और जो ग़ीबत पर इस्सार करते हुए (या'नी ग़ीबत पर काइम रहते हुए) मरा वोह पहला शख़्स होगा जो जहन्नम में दाख़िल होगा।

(رساله فشریه ص ۱۹۴)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोड़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कन्जुल उम्माल)

गुल मचाएगा, दोज़ख़ में जाएगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो शख्स ग़ीबत करता है उस को सिवाए अपने नुक़सान के कुछ हाथ नहीं आता हत्ता कि अगर तौबा कर के मरा है तो अगर्चे क़ियामत में उस को ग़ीबत पर अज़ाब न होगा ताहम जन्नत में सब लोगों के बा'द जाएगा । और इस सबब से बहुत सख़्त पछताएगा और नदामत उठाएगा । और अगर बिगैर तौबा के मरा और अल्लाह عزّوجلّ ग़ज़ब नाक हुवा तो बरोजे क़ियामत सब से क़ब्ल जहन्नम में जाएगा, अगर्चे गुल बहुत मचाएगा, चीखेगा, चिल्लाएगा मगर रोना धोना वहां काम न आएगा ।

देखिये क्या ह़शर को हो मेरा हाल

मुझ को रहता है येही हर दम मलाल

हो करम मुझ पर खुदाए जुल जलाल

मुझ को जन्नत दे जहन्नम में न डाल

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इलाज नम्बर 6

सोने का पहाड़ स-दका करने से भी पसन्दीदा : अपने नफ़्स पर बार (बोझ) डाले म-सलन अगर ग़ीबत की तो 5 रुपै ख़ैरात करूंगा । खुदा عزّوجلّ की क़सम ! पांच रुपै तो कुछ भी नहीं हैं, हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رحمّة الله تعالى عليه फ़रमाते हैं : अल्लाह عزّوجلّ की क़सम ! मेरे नज़्दीक ग़ीबत को तर्क करना सोने का पहाड़ स-दका करने से ज़ियादा पसन्दीदा है ।

(تنبيه المغتربين ص ۱۹۲)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मर्तबा सुबह और दस मर्तबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमूअन्नुवाइद)

ग़ीबत हो जाती तो ख़ैरात करते : हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْفَرِیْن की आदत थी कि अगर कभी उन से किसी की ग़ीबत सरज़द हो जाती तो ख़ैरात करते थे ।

(तफ़सीर रूउ़ البیان ج ۹ ص ۸۹)

दो दिरहम की ह़िकायत : हज़रते सय्यिदुना अबुल्लैस बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی जब हज़ के लिये निकले तो दो^२ दिरहम इस निय्यत से जेब में डाले कि अगर घर पलटने तक कहीं भी ग़ीबत सादिर हुई तो येह दो दिरहम ख़ैरात कर दूंगा । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सारा सफ़र ग़ीबत से बचे रहे और वोह दो दिरहम जेब में महफूज़ रहे । इन्हीं का फ़रमान है : मैं एक मर्तबा की ग़ीबत को सो मर्तबा के ज़िना से बदतर समझता हूं ।

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ۷۱)

मज़कूरा ह़िकायत की वज़ाहत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबुल्लैस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی बड़े मुत्तकी और परहेज़ गार बुजुर्ग थे आप की म-दनी सोच मरहबा ! ग़ीबत का दरवाज़ा मज़बूती से बन्द करने के लिये आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने दो दिरहम ख़ैरात करने की निय्यत की ज़बर दस्त तरकीब फ़रमाई । यकीनन हज़ के दौरान ग़ीबत करना अ़ाम हालात के मुक़ाबले में ज़ियादा बड़ा गुनाह है और जो ग़ीबतों, चुग़लियों, दिल आज़रियों, गन्दी गालियों और जुम्ला बे हयाइयों से खुद को बचाने में काम्याबी हासिल कर ले वोह गुनाहों से पाक साफ़ हो जाए चुनान्चे दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द अव्वल सफ़हा 1031 पर फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस ने हज़ किया और रफ़स (या'नी फ़ोहूश कलाम) न किया और फ़िस्क़ न किया तो गुनाहों से पाक हो कर ऐसा लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा ।" (بخاری ج ۱ ص ۱۲ حدیث ۱۵۲۱) अफ़सोस ! आज कल जो लोग हज़ के वासिते जाते हैं उन में से बे शुमार हुज्जाज वतन में जिस तरह गुनाह करते रहे हैं इसी तरह बेबाकी से राहे मदीना में भी लगे रहते हैं, यहां तक कि एहराम की हालत में भी लोगों की ख़ूब ग़ीबतें की जाती हैं,



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बदबड़ा हो गया । (इन्ने सुनी)

ह-रमैने शरीफ़ैन اَذْهَبَ اللّٰهُ شَرَفَاؤُنَّ عَظِيْمًا में आम अ-रबों बल्कि अहले मक्का और अहले मदीना की खूब खूब बुराइयां और ग़ीबतें करते हैं और सब के ऐबों को ढूंडा करते हैं ★ कभी किसी बस या टेक्सी ड्राइवर को बद अख़्लाक ★ बद मिज़ाज वगैरा कह कर उस की ग़ीबत करते हैं तो कभी किसी दुकानदार की यूँ ग़ीबत करते हैं कि ★ येह माल बहुत महंगा बेचता है ★ हाजियों को लूटता है ★ कभी किसी होटल वाले को बुरा भला कहते हुए यूँ ग़ीबत करते हैं कि ★ इस ने खाना बहुत महंगा कर दिया है ★ लूटमार मचा रखी है ★ अल्लाह के मेहमानों पर जुल्म करता है ★ पैसे पहले वुसूल कर लिये और थोड़ा सा खाना पकड़ा दिया ★ इस का खाना ग़ैर मे'यारी है वगैरा वगैरा ।

نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرٍ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا (या'नी हम अपने नफ़्स की शरारतों और बुरे आ'माल से अल्लाह की पनाह चाहते हैं)

शरफ़ दे हज़ का मुझे बहरे मुस्तफ़ा या रबِّ عَزَّوَجَلَّ रवाना सूए मदीना हो काफ़िला या रबِّ عَزَّوَجَلَّ
दिखा दे एक झलक सबज़ सबज़ गुम्बद की बस उन के जल्वों में आ जाए फिर क़ज़ा या रबِّ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِيْبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

تُؤْنُوْا لِيَ اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِيْبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

इलाज नम्बर 7

एक चुप सो¹⁰⁰ सुख : सब से ज़ियादा ग़ीबत ज़बान से की जाती है लिहाज़ा इस को काबू करना बहुत ज़रूरी है । ज़बान की हिफ़ाज़त के तअल्लुक़ से 7 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा हों : 《1》 बन्दा कभी बिला इरादा अल्लाह तअाला की खुशनूदी की बात कह देता है जिस से अल्लाह तअाला उस के द-रजे बुलन्द करता है और बन्दा कभी बे सोचे समझे अल्लाह तअाला की नाराज़ी की बात कह देता है जिस से जहन्नम में गिर जाता है । (بخاری ج 4 : ص 241 ح 1674)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्ज़वाइद)

गहराई में गिरता है जो मशिरक़ व मग़िब के फ़ासिले से भी ज़्यादा है । (صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص १०९ حديث २१८८)

﴿3﴾ जो चीज़ इन्सान को सब से ज़ियादा **जन्नत** में दाख़िल करने वाली है वोह तक्वा और हुस्ने खुल्क़ (या'नी अच्छा अख़्लाक़) हैं, और जो चीज़ इन्सान को सब से ज़ियादा **जहन्नम** में ले जाने वाली है वोह दो जौफ़दार चीज़ें हैं मुंह और शर्मगाह। (سُنَن تِرْمِذِي حَدِيث २००४ ص १८०२) ﴿4﴾ जो चुप रहा, उसे नजात है। (ऐज़न, हदीस : 2501, स. 1903) ﴿5﴾ सुकूत (या'नी ख़ामोशी) पर काइम रहना साठ बरस की इबादत से अफ़ज़ल है। (شُعَبُ الْإِيمَان ج ४ ص २४० حَدِيث ४९०३) ﴿6﴾ ज़ियादतिये ख़ामोशी को लाज़िम कर लो कि इस से शैतान दफ़अ होगा और तुम्हें दीन के कामों में मदद देगी। (ऐज़न, स. 243, हदीस : 4942) ﴿7﴾ मेरे लिये छ चीज़ों के ज़ामिन हो जाओ मैं तुम्हारे लिये **जन्नत** का ज़िम्मेदार होता हूं {1} जब बात करो सच बोलो और {2} जब वा'दा करो उसे पूरा करो और {3} जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए उसे अदा करो और {4} अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो और {5} अपनी निगाहें नीची रखो और {6} अपने हाथों को रोको (या'नी हाथ से किसी को ईज़ा न पहुंचाओ)

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج 8 ص 412 حَدِيث 22821)

मेरी ज़बान पे “कुफ़ले मदीना” लग जाए फुज़ूल गोई से बचता रहूं सदा या रब
उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब अता करम से हो ऐसी मुझे हया या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

परिन्दे की नेकी की दा'वत : क़ता (जो कि कबूतर से मिलता जुलता परिन्दा है) जब बोलता है तो कहता है : سَكَتَ سَلَامٌ يَا'नी जो ख़ामोश रहा सलामत रहा । (تفسير قُرطبي ج ٧ ص ١٢٧) ज़बान



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख हो गया । (इन्ने सुनी)

पर कुफ़ले मदीना लगाना या'नी ज़रूरत की बात भी कम से कम अल्फ़ाज़ में करना, जहां जहां मुम्किन हो वहां ज़बान से बोलने के बजाए ख़ामोश रह कर लिख कर या इशारे से काम चलाना भी ग़ीबत से बचने के अस्बाब मुहय्या कर सकता है। मगर येह ज़ेहन में रहे कि ग़ीबत लिख कर बल्कि इशारे से भी हो सकती है और जहां किसी मुसलमान की गुनाहों भरी ग़ीबत हो रही हो वहां शर-ई रुख़सत के बिगैर चुप रहने की इजाज़त नहीं, ग़ीबत करने वाले को ग़ीबत से बाज़ रख कर अपने मुसलमान भाई की इज़ज़त की हिफ़ाज़त करे।

न ग़ीबत करेंगे न ग़ीबत सुनेंगे

ब औने खुदा लब पे काबू रखेंगे

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ مُحَمَّدٌ

सुवारी के जानवर पर ला'नत मत करो : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मल्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 सफ़हा 166 पर है : एक शख़्स ने अपनी सुवारी के जानवर पर ला'नत की, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस से उतर जाओ हमारे साथ में मल्क़न चीज़ को ले कर न चलो, अपने ऊपर और अपनी औलाद व अम्वाल पर बद दुआ न करो कहीं ऐसा न हो कि येह बद दुआ उस साअत में हो जिस में जो दुआ खुदा (عَزَّوَجَلَّ) से की जाए क़बूल होती है।

(صَحِیح مُسْلِم ص ۱۰۶۴ حدیث ۳۰۰۹)

जानवर को बुरा कहना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़बान पर काबू पाने की सख़्त ज़रूरत है। जानवरों पर भी ला'नत करने की मुमा-न-अत है, बिला ज़रूरत इन की बुराई भी ज़बान से क्यूं निकले ! अब ज़ाहिर है जो जानवरों को भी बुरा कहने से बचेगा वोह मुसलमानों की ग़ीबत से ब द-र-जए औला इज्तिनाब (या'नी परहेज़) करेगा। अलबत्ता जानवर का ऐब बयान करने को मुसलमान की ग़ीबत की तरह का जुर्म नहीं क़रार देंगे हां अगर वोह जानवर किसी मुसलमान का हुवा तो उस मुसलमान की ग़ीबत व दिल आज़ारी की सूरत बन सकती है, म-सलन



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह उऽउऽल उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

★ फुलां का घोड़ा मरयल है ★ इस की कुरबानी की गाय की हड्डियां पस्तियां नज़र आ रही हैं ★ उस का बकरा तो हड्डियों का ढांचा है ★ उस के मुर्गे की बांग की आवाज़ बे सुरी है वगैरा वगैरा जुम्लों में इन जानवरों के मालिकान की ईज़ा का पहलू मौजूद है लिहाज़ा येह ग़ीबत है।

मरे हुए कुत्ते की बुराई से भी बचो : हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى

फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह ﷺ एक मरे हुए कुत्ते के पास से गुज़रे,

हवारियों ने अर्ज़ की : येह कुत्ता किस क़दर बदबूदार है ! हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह

ﷺ ने फ़रमाया : इस के दांत कितने सफ़ेद हैं ! गोया आप ﷺ ने

उन को मुर्दार कुत्ते की ग़ीबत से भी मन्अ फ़रमाया और उन को ख़बरदार किया कि बे ज़बान

जानवरों की भी ख़ूबी का ही ज़िक्र करना चाहिये। (माखुनाज़ إحياء العلوم ج ३ ص १७७)

की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़ि़रत हो।

امین بجاه النبی الامین ﷺ

ख़िन्ज़ीर के लिये उम्दा फ़िक़रा इस्ति 'माल फ़रमाया : ﷺ हज़रते सय्यिदुना

ईसा रूहुल्लाह ﷺ के हुस्ने अख़्लाक के भी क्या कहने ! वाक़ेई येह आप

ﷺ का ही हिस्सा था कि मुर्दार कुत्ते की भी ख़ूबी ही की तरफ़ नज़र फ़रमाई।

“तारीख़े दिमिशक़” ज़िल्द 47 सफ़हा 437 पर है कि हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह

ﷺ के सामने से एक ख़िन्ज़ीर गुज़रा, फ़रमाया : “مُرِّسَلَامٍ” या'नी सलामती

से गुज़र जाओ। लोगों ने तअज्जुब के साथ अर्ज़ की : या रूहुल्लाह ! क्या वजह है कि आप

ने सुवर के लिये इतना उम्दा जुम्ला इर्शाद फ़रमाया ? फ़रमाया : मैं अपनी ज़बान पर बुरी बात

लाना नहीं चाहता। (तारिख़ دمشق ج ४ ص ६३७)

की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़ि़रत हो।

امین بجاه النبی الامین ﷺ



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह غُزُوحُल तुम पर रहमत भेजेगा । (इन्ने अदी)

खिचड़े को हलीम कहना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुबारक सोच सद करोड़ मरहबा ! काश ! हमें भी ऐसी समझ नसीब हो जाए कि कहां कौन से अल्फ़ाज़ बोलने चाहिये । बा'ज़ अवकात किसी दुन्यवी शै पर मु-तबर्कि अल्फ़ाज़ न बोलना भी अदब होता है जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक सिफ़ाती नाम **हलीम** भी है लिहाज़ा खाने की चीज़ के लिये “हलीम” का लफ़ज़ कहना जाइज़ होने के बा वुजूद बा'ज़ बन्दगाने खुदा को अच्छा नहीं लगता । इस ग़िज़ा को उर्दू में **खिचड़ा** भी कहते हैं लिहाज़ा वोह येही लफ़ज़ इस्ति'माल करते हैं । तज़िकरतुल औलिया में है : हज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی ने एक बार सुख् रंग का सेब हाथ में ले कर फ़रमाया : “येह बहुत लतीफ़ है ।” ग़ैब से आवाज़ आई : “हमारा नाम सेब के लिये इस्ति'माल करते हुए हया नहीं आई !” अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चालीस दिन के लिये अपनी याद आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ के क़ल्ब से निकाल दी । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने भी क़सम खाई कि अब कभी (अपने वतन) बिस्ताम (शहर का नाम) का फल नहीं खाऊंगा । (تذکرۃ الاولیاء ص ۱۳۴) देखा आप ने ! “लतीफ़” का एक लफ़ज़ी मा'ना “उम्दा” भी है मगर चूंकि “लतीफ़” अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सिफ़ाती नाम है इस लिये सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی को तम्बीह की गई । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी मरिफ़रत हो ।

امین بجاہ النبی الامین علی اللہ تعالیٰ علیہ السلام

हुस्ने अख़्लाक़ मिले भीक में इख़्लास मिले
इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

ज़बान का तीर ख़ता नहीं होता : हर सूरत में ज़बान की हिफ़ाज़त करनी चाहिये कि जब येह चलती है तो क्या का क्या कर डालती है ! मशहूर ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلِیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : लोगों का तीर फेंकना ज़बान के ज़रीए अज़िय्यत पहुंचाने से ज़ियादा आसान है क्यूं कि कमान का तीर ख़ता हो सकता है लेकिन ज़बान का तीर कभी



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक पड़े । (हाकिम)

ख़ता नहीं होता ।

(تَنْبِيْهُ الْمُعْتَرِّين ص ۱۸۹)

ज़बान का ज़ख़्म तलवार के ज़ख़्म से सख़्त होता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने कितने अच्छूते अन्दाज़ में “ज़बान की ईज़ा” की हलाकत ख़ैज़ियों की निशान देही फ़रमाई है ! वाक़ेई लोहे के नोकीले तीर के मुकाबले में ज़बान का ज़ख़्म सख़्त तर होता है । तीर का ज़ख़्म जल्दी भर जाता है मगर ज़बान से की हुई ग़ीबत या दिल आज़ारी का ज़ख़्म आसानी से नहीं भरता अ-रबी मक़ूला है :

جَرَحُ الْكَلَامِ أَصْعَبُ مِنْ جَرَحِ الْحَسَامِ

(الْمُسْتَظَرَف ج ۱ ص ۴۷)

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विदे ज़बां रहे

मेरी फ़ुज़ूल गोई की आदत निकाल दो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

इलाज नम्बर 8

गीबत की आदत निकालने का बेहतरीन नुस्खा : किसी भी मरज़ से बचने का ज़ब्बा पाने के लिये उस के मोहलिकात या'नी तबाहकारियां जानना मुफ़ीद होता है । लिहाज़ा दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-फ़हात पर मुशतमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 169 ता 182 और एहयाउल इलूम जिल्द 3 से ग़ीबत का बयान ज़रूर पढ़ लीजिये । जिस का “नफ़से अम्मारा” ग़ीबत का आदी हो उस को काबू करना आसान नहीं, वोह बोदी दलीलें दे कर, ज़बर दस्ती की ज़रूरतें बावर करवा कर ग़ीबत पर उभारता रहेगा लिहाज़ा इस पर बार बार इब्रत के ताज़ियाने (या'नी कोड़े) बरसाने होंगे, एक आध बार वर्ईदात व नुक्सानात पढ़ लेने से काम चलना बहुत मुश्किल है अव्वल तो हाफ़िज़ा ही अक्सर कमज़ोर और फिर शैतान भी ऐसी बातें फ़ौरन भुला देता है । चुनान्वे मश्वरा है कि शैतान



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

लाख सुस्ती दिलाए दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द 2 का येह बाब ग़ीबत की तबाह कारियां मुकम्मल पढ़ लेने के बा'द भी वक़तन फ़ वक़तन मुता-लए में रखिये, खास कर इस का दर्स घर के अन्दर ज़रूर जारी कीजिये कि आज कल अक्सर घर "ग़ीबत कदे" बने हुए हैं। ^{عَزَّوَجَلَّ} اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ हैरत अंगेज़ तौर पर घर दर्स की ब-र-कतें सामने आ जाएंगी। देखिये हिम्मत कर के पढ़ते (या सुनते) रहियेगा, क्यूं कि शैतान कभी भी नहीं चाहेगा कि आप येह पढ़ें (या सुनें) और ग़ीबत की तबाहकारियों से डरें।

उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब अता करम से हो ऐसी मुझे हया या रब ^{عَزَّوَجَلَّ} किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और सुनें न कान भी ऐबों का तज़्किरा या रब ^{عَزَّوَجَلَّ}

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

इलाज नम्बर 9

ग़ीबत नेकियों की बरबादी और जहन्नम में दाख़िले का सबब बन गई तो ! :

जब किसी की ग़ीबत करने को जी चाहे तो खुद को यूं डराइये कि बरोजे क़ियामत किस क़दर हसरत का मक़ाम होगा अगर ग़ीबत करने के सबब मेरी नेकियां दूसरों के नामए आ'माल में और उन के गुनाहों का बोझ मेरे सर पर आ पड़ा और ग़ीबत के गुनाह के बाइस फ़िरिश्ते मुझे सूए जहन्नम ले चले तो मेरा क्या बनेगा !

माल देने में बख़ील मगर नेकियां लुटाने में सख़ी ! : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْأَكْرَمِ ग़ीबत करने वाले की सर-ज़निश करते (या'नी डांट पिलाते) हुए फ़रमाते हैं : ऐ झूटे इन्सान ! तू अपने दोस्तों को तो दुनिया का हकीर माल देने से बुख़ल करता रहा मगर आख़िरत का माल (या'नी नेकियों का ख़ज़ाना) तूने अपने दुश्मनों पर लुटा दिया ! न तेरा दुन्यवी बुख़ल क़ाबिले कुबूल न ग़ीबतें कर कर के नेकियां लुटाने वाली सख़ावत मक़बूल।

(تَنْبِيْةُ الْغَافِلِيْنَ ص ٨٧)



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

गुसीले मिज़ाज और ग़ीबत की ख़स्लत से मुझ को बचा तू सदा या इलाही
हो अख़लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा मुझे मुत्तकी तू बना या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُؤْنُوْا لَی اللہُ اَسْتَغْفِرُ اللہُ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

गुर्दे का दर्द दूर हो गया : ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये। आप की तरगीब के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक म-दनी बहार गोश गुज़ार की जाती है : हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मुझे गुर्दे में इतना शदीद दर्द उठता कि जब तक 2 इन्जेक्शन न लगते, आराम न आता। खुश किस्मती से हमारे अलाके में इस्लामी बहनों का म-दनी क़ाफ़िला तशरीफ़ लाया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तौफ़ीक़ बख़्शी और मैं भी उन के साथ सुन्नतें सीखने सिखाने के हल्के में शरीक हुई। वहां मेरे गुर्दे में दर्द शुरू हो गया यहां तक कि रात हो गई। जब खाना सामने आया तो चावल थे, मैं घबराई कि अगर चावल खाए तो दर्द मज़ीद बढ़ जाएगा फिर मैं ने सोचा कि ब-र-क़त के लिये खा लेती हूं। ان شاء الله عَزَّوَجَلَّ कुछ नहीं होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ खाने के बा'द मेरा दर्द बढ़ा नहीं बल्कि ख़त्म हो गया।



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उदुद पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज्जाक)

दर्द गुर्दे में है या मसाने में है
मन्फ़अत आख़िरत के बनाने में है

इस का ग़म मत करें क़ाफ़िले में चलो
याद इस को रखें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

मफ़्लूज की हाथों हाथ शिफ़ायाबी : इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1548 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "फ़ैज़ाने सुन्नत" सफ़हा 533 पर है : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सलातो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे में मसाजिद के अन्दर इज्तिमाई ए'तिकाफ़ का सिल्लिसला होता है जिस में मो'तकिफ़ीन की सुन्नतों भरी तरबियत की जाती है। मुआशरे के कई बिगड़े हुए अपराद दौराने ए'तिकाफ़ गुनाहों से ताइब हो कर ज़िन्दगी के नए दौर का आगाज़ करते हैं। बा'ज़ अवकात रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से ईमान अपरोज़ करिश्मात का भी जुहूर होता है चुनान्वे र-मज़ानुल मुबारक सि. 1425 हि. के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में दा'वते इस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में जहां कमोबेश 2000 मो'तकिफ़ीन थे, उन में ज़िल्अ चकवाल (पंजाब, पाकिस्तान) के 77 सालह मुअम्मर बुजुर्ग हाफ़िज़ मुहम्मद अशरफ़ साहिब भी मो'तकिफ़ हो गए। क़िब्ला हाफ़िज़ साहिब का हाथ और ज़बान मफ़्लूज थे और कुव्वते समाअत भी जवाब दे चुकी थी। वोह बड़े खुश अक़ीदा थे। उन्होंने ने एक बार इफ़्तार के खाने में बसद हुस्ने ज़न एक मुबल्लिग़ से जूठा खाना ले कर खाया, उसी से दम भी करवाया, बस उन के हुस्ने ज़न ने काम कर दिखाया, रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ को जोश आया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन को शिफ़ायाब फ़रमाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ उन का फ़ालिज का मरज़ जाता रहा। उन्होंने ने हज़ारों इस्लामी भाइयों की मौजूदगी में फ़ैज़ाने मदीना के मन्व पर चढ़ कर बसद अक़ीदत अपने रू ब सिद्दहत होने की बिशारत सुनाई, येह नवीदे जां फ़िज़ा सुन कर फ़ज़ा "अल्लाह अल्लाह, अल्लाह अल्लाह" की



फरमाने मुस्तफा ﷺ : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह غَوْحَل उस पर सो रहमते नाज़िल फरमाता है। (त-बरांनी)

पुरकैफ़ सदाओं से गूँज उठी। उन दिनों कई मक़ामी अख़्बारात ने इस ख़बरे फ़रहत असर को शाएअ किया।

दा 'वते इस्लामी की क़य्यूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा

दोनों जहाँ में मच जाए धूम
या अल्लाह मेरी झोली भर दे

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

इलाज नम्बर 10

सिर्फ़ अपने ऐबों को देखिये : जब कभी दूसरे के ऐब बयान करने को जी चाहे उस वक़्त अपने उयूब की तरफ़ मु-तवज्जेह हो कर उन को दूर करने में लग जाना चाहिये, खुदा غَوْحَل की क़सम ! येह बहुत बड़ी सआदत मन्दी है। सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स के लिये खुश ख़बरी है जिसे उस के उयूब (पर नज़र) ने दूसरों की ऐबजूई से फ़ैर दिया।

(الْفَرْدُوسُ بِمَأْثُورِ الْخَطَّابِ ج ۲ ص ۴۴۷ حدیث ۳۹۲۹)

अपने ऐबों को याद करो : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का फ़रमान है : जब तू किसी के उयूब बयान करने का इरादा करे तो अपने ऐबों को याद कर लिया कर।

(دَمُ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ۹۰ رقم ۵۶)

अपने ऐबों को जानने के बा वुजूद..... : हज़रते सय्यिदुना जैद कुम्मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : वोह शख़्स कैसा अजीब है जिसे मा'लूम है कि मुझ में फुलां ऐब है फिर भी अपने आप को अच्छा इन्सान समझता है जब कि अपने मुसल्मान भाई को सिर्फ़ शक (या सुनी सुनाई बात) की बुन्याद पर बुरा आदमी तसव्वुर करता है। पस अक्ल कहां है ?

(تَنْبِيہُ الْمُعْتَرِّينَ ص ۱۹۷)



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (अबू या'ला)

जो अपने ऐबों को जान लेता है : हज़रते सय्यि-दतुना राबिआ अ-दविय्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہَا

फ़रमाती थीं : बन्दा जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की महबूबत का मज़ा चख लेता है अल्लाह उसे खुद उस के अपने ऐबों पर मुत्तलअ़ फ़रमा देता है पस इस वजह से वोह दूसरों के ऐबों में मशगूल नहीं होता । (बल्कि अपने ऐबों की इस्लाह की तरफ़ मु-तवज्जेह रहता है)

(تَنْبِيْہُ الْمُعْتَرِّينَ ص ۱۹۷)

छुपी हुई बातों की टटोल मत करो ! : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, रहमते आलम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : ऐ वोह लोगो जो ज़बान से ईमान लाए और ईमान उन के दिलों में दाख़िल नहीं हुवा, मुसल्मानों की ग़ीबत न करो और इन की छुपी हुई बातों की टटोल न करो, इस लिये कि जो शख्स अपने मुसल्मान भाई की छुपी हुई चीज़ की टटोल करेगा, अल्लाह तआला उस के ऐब ज़ाहिर फ़रमा देगा और जिस के अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ऐब ज़ाहिर करेगा । उस को रुस्वा कर देगा, अगर्चे वोह अपने मकान के अन्दर हो ।

(سُنَنِ ابوداؤد ج ۴ ص ۳۵۴ حدیث ۴۸۸۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी मुसल्मान के ऐबों की टोह में नहीं पड़ना चाहिये, रब्बे का एनात عَزَّوَجَلَّ पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत नम्बर 12 में इर्शाद फ़रमाता है : **وَلَا تَجَسَّسُوا** तर-ज़-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐब न ढूंडो । **सदरुल अफ़ज़िल** हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : या'नी मुसल्मानों की ऐबजूई न करो और उन के छुपे हुए हाल की **जुस्त-जू** में न रहो जिसे अल्लाह तआला ने अपनी सत्तारी से छुपाया ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 823)

अल्लाह ऐब पोशी फ़रमाएगा : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, महबूबे रब्बुल आ'ज़म صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का भाई है न उस पर जुल्म करता



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: جَوْ مُؤَلِّفٍ عَلَى رُؤُوسِهِ دُرُودُ شَرِيفٍ يَدْعُوهُ إِلَى كَيْفِيَّةِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ (کنز العمال)

है और न उसे बे यार व मददगार छोड़ता है और जो अपने भाई की हाज़त पूरी करे अल्लाह तआला उस की हाज़त पूरी करता है और जो किसी मुसलमान की तकलीफ़ दूर करे अल्लाह عزّوجلّ क़ियामत की तकलीफ़ों में से उस की तकलीफ़ दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसलमान की ऐबपोशी करे तो खुदाए सत्तार عزّوجلّ क़ियामत के रोज़ उस की ऐब पोशी फ़रमाए। (صحيح مسلم حديث १०८० ص १२९६)

ऐब छुपाओ जन्नत पाओ : हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो शख्स अपने भाई का ऐब देख कर उस की पर्दा पोशी कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। (مسند عبد بن حميد ص २७९ حديث ८८०)

जहन्नम में चीख़ रहे होंगे ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐब पोशी की फ़ज़ीलत व अहम्मियत के भी क्या कहने ! जो चीज़ आख़िरत के लिये जिस क़दर अहम्म होगी शैतान उसी क़दर उस के पीछे लगेगा। लिहाज़ा मुसलमान को मुसलमान की ऐब पोशी से रोकने के लिये पूरा ज़ोर लगा देता है और नौबत यहां तक आ पहुंची है कि आज मुसलमानों की अक्सरियत मुसलमानों की ऐब दरियों और ग़ीबतों में मशगूल है। और अक्सर कोई किसी की ख़ामी ढकने के लिये तय्यार ही नहीं बिना तकल्लुफ़ बल्कि बसा अवकात तो फ़ख़्रिया दूसरों के आगे बयान कर देता है, उन में से अगर किसी ने किसी का ऐब कभी छुपा भी लिया तो बस आरिज़ी तौर पर, जूँ ही कुछ नाराज़ी हुई कि जितने भी ऐब छुपा कर रखे थे सब पर से एक दम पर्दा उठा देता है ! आह ! ख़ौफ़े आख़िरत ही जाता रहा ! यकीनन जहन्नम की सज़ा सही नहीं जा सकेगी। हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह السَّلَامُ عَلَی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ السَّلَامُ फ़रमाते हैं : कितने ही सिहहत मन्द बदन, ख़ूब सूरत चेहरे और मीठा बोलने वाली ज़बानें कल जहन्नम के त-बकात में चीख़ रहे होंगे !

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص १०२)



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

औरों के ऐब छोड़ नज़र ख़ूबियों पे रख
ऐबों की अपने भाई मगर ख़ूब रख परख

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

ग़ीबत ईमान में फ़साद पैदा करती है : हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ इश्राद फ़रमाते हैं : “ग़ीबत बन्दए मोमिन के ईमान में इस से भी जल्दी फ़साद पैदा करती है जितनी जल्दी आकिला की बीमारी उस के जिस्म को ख़राब करती है।” (आकिला पहलू में होने वाले उस फोड़े को कहते हैं जिस से गोश्त पोस्त (खाल) सड़ जाते हैं और गोश्त झड़ने लगता है) मज़ीद फ़रमाया करते : ऐ इब्ने आदम ! तुम उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त को नहीं पा सकते जब तक लोगों के उयूब तलाश करना तर्क न कर दो, जो उयूब तुम्हारे अपने अन्दर पाए जाते हैं तुम उन की इस्लाह शुरू कर दो और उन ऐबों को अपनी ज़ात से दूर कर लो। पस जब तुम ऐसा करोगे तो येह चीज़ तुम्हें अपनी ही ज़ात में मशगूल कर देगी। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक इस तरह का बन्दा सब से ज़ियादा पसन्दीदा है।

(دَمُ الْغِیْبَةِ لَا بِنَّ اَبِی الدُّنْیَا ص ۹۳، ۹۷ رقم ۶۰، ۵۴)

एक नौ मुस्लिम की दर्दनाक आपबीती : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी अहले हक़ की सुन्नतों भरी तहरीक है, इस के अक़ाइद ऐन कुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ हैं, इस से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ आशिक़ाने रसूल की सोहबत की ब-र-कत से ईमान की हिफ़ाज़त का ज़ब्बा, नेकियों की तरफ़ रग़बत और ग़ीबतों वग़ैरा गुनाहों से नफ़रत की सआदत हासिल



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े । (हाकिम)

होगी । हर हालत में ईमान की हिफ़ाज़त ज़रूरी है । अगर ईमान पर ख़ातिमा न हुवा तो इबादत कुछ भी काम न आएगी, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : **يَا'نَمَا الْأَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيمِ** : या'नी आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है । (बुख़ारी ज ४ : ६ حديث ११०७) चाहे कैसी ही आफ़त आन पड़े ईमान हरगिज़ मु-तज़ल्लिज़ नहीं होना चाहिये । इस ज़िम्न में “**एक नौ मुस्लिम की दर्दनाक आपबीती**” सुनने से तअल्लुक़ रखती है चुनान्चे देहली (हिन्द) के अलाके सीलम पूर के मुक़ीम 22 सालह नौ जवान के कुबूले इस्लाम का ईमान अप्रोज़ वाकिअ़ा उन्ही की ज़बानी सुनिये । उन का कहना कुछ यूं है : मैं एक ग़ैर मुस्लिम ख़ानदान से तअल्लुक़ रखता था, मेरे वालिद की ख़्वाहिश थी कि मैं डॉक्टर बनूं, इस सिलसिले में उन्होंने ने मुझे सि. 1994 इ. में अपने डॉक्टर दोस्त के अस्पताल भेज दिया । वोह ग़ैर मुस्लिम डॉक्टर मुसल्मानों से इस क़दर नफ़रत करता था कि उन के हाथों से छूई हुई चीज़ तक खाना या पीना ग़वारा न करता । मेरी भी येही आदत बन गई कि सारा दिन प्यासा रहना मन्ज़ूर मगर मुसल्मानों के हाथ से पानी पीना ना मन्ज़ूर । कई साल यूंही गुज़र गए । एक रोज़ सब्ज़ इमामे में मल्बूस एक इस्लामी भाई आंखों के ओपरेशन के लिये वहां आए । उन की ज़बान व निगाह की हिफ़ाज़त का अन्दाज़ और हुस्ने अख़लाक़ देख कर रफ़ता रफ़ता मैं उन के क़रीब हो गया । वोह मुझ पर वक़तन फ़ वक़तन इन्फ़िरादी कोशिश करते रहते । कुछ दिनों बा'द वोह अस्पताल से चले गए मगर मेरा उन से राबिता रहा और मैं उन के पास आता जाता रहा ।

उन के पास एक ज़ख़ीम किताब थी जिस का नाम “**फ़ैज़ाने सुन्नत**” था, जब वोह चोक वग़ैरा पर उस का दर्स देते तो इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे भी दर्स में शिरकत की दा'वत पेश करते, मैं सुनने बैठ जाता । **फ़ैज़ाने सुन्नत** के दर्स की ब-र-कत से कुछ ही दिनों में मेरा दिल मज़हबे इस्लाम के लिये नफ़रत के बजाए महब्बत महसूस करने लगा । अब मैं मुसल्मानों के साथ खा पी भी लेता और मसाजिद व अज़ान का एहतिराम करता । सि. 2004 ई. में एक रोज़ दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला “**गुस्ल का तरीक़ा**” पढ़ा मगर सहीह तरीक़े से समझ न सका । उन इस्लामी भाई से पूछा तो उन्होंने ने मुझे रिसाले की मदद से तफ़सीलन त़हारत के मसाइल समझाए और फ़रमाया कि **हक़ीक़ी पाकी बिग़ैर मुसल्मान**



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

हुए हासिल नहीं की जा सकती। वोह वक्त मेरी सआदतों की मे'राज का था, उन के अल्फ़ाज़ ने मेरी ज़िन्दगी का रुख़ तब्दील कर दिया, मैं ने कुछ देर सोचा और फिर “कलिमए तय्यिबा” पढ़ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गया। कुफ़्र के अंधेरे छट गए और मेरा दिल नूरे इस्लाम से जग-मगाने लगा।

मैं तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में पाबन्दी से शिरकत करने लगा और हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का मुरीद हो कर सिलसिलए आलिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो गया और बा जमाअत नमाज़ें पढ़ने लगा, मगर कभी कभी शैतान मज़हबे इस्लाम के बारे में वस्वसे डालता था। एक रोज़ दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ रिसाला “बुद्धा पुजारी” पढ़ा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ तमाम वस्वसों की जड़ कट गई। 18 जूलाई सि. 2005 ई. को आशिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की सआदत मिली। इस से पहले मैं ज़रा ज़रा सी बात पर घर वालों से नाराज़ हो जाता, खाना मिज़ाज के ख़िलाफ़ मिलता तो ख़ूब शोर मचाता था, म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से येह आदत भी निकल गई। घर वाले मेरी इस तब्दीली पर हैरान थे और मज़हबे इस्लाम से मु-तअस्सिर हो रहे थे। मैं दाढ़ी शरीफ़ की सुन्नत अपनाने के साथ साथ सर सब्ज़ इमामा भी बांधने लगा मगर घर जाते वक्त उतार लेता।

चन्द दिनों बा'द बा'ज़ लोगों ने मेरे ख़िलाफ़ घर वालों का मन्फ़ी ज़ेहन बनाया जिस पर घर में सख़्ती शुरूअ हो गई, अब मुझे बात बात पर टोका जाता बल्कि मारने से भी दरेग़ न किया जाता। मैं ने तंग आ कर घर छोड़ दिया मगर कुछ ही रोज़ बा'द भाई वग़ैरा ने बहाने से बुलवाया और ज़बरदस्ती नाई (हजाम) के पास पकड़ कर ले गए। जब मैं ने उस नाई को बताया कि मैं मुसल्मान हो चुका हूँ तो वोह डर गया और उस ने दाढ़ी मूँडने से इन्कार कर दिया। मेरे घर वाले भी दाढ़ी काटने से डर रहे थे मगर अफ़सोस कि इल्मे दीन से बे बहरा एक मुसल्मान ने घर वालों से कहा : “दाढ़ी रखना ज़रूरी नहीं है, हमें देखो ! लाखों मुसल्मान कहां दाढ़ी रखते



फरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عُزَّوَجَلَّ के लिये एक किरात अज़ लिखता है और किरात उहुद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज़ाक)

हैं ?" येह सुन कर कुफ़ की तारीकीयों में घिरे हुए घर वालों का दिल एक दम खुल गया और उन्होंने ने सोते में ब्लेड से मेरी दाढ़ी मूंडना शुरू कर दी। मेरी आंख खुल गई, दाढ़ी बचाने की जिद्दो जहद में मेरा चेहरा लहू लुहान हो गया, मैं रो रो कर उन्हें इस काम से बाज़ रहने की इल्तिजाएं करता रहा मगर उन्होंने ने मेरी एक न सुनी और दाढ़ी मूंड कर ही दम लिया। चेहरे से बहने वाला लहू मेरे आंसूओं में शामिल हो गया। उन्होंने ने इसी पर बस नहीं किया बल्कि मुझे एक कमरे में कैद कर दिया। तन के कपड़ों के इलावा मेरे पास और कुछ न था, मेरी निगरानी की जाती मगर मैं किसी न किसी तरह छुप कर नमाज़ें अदा कर लेता। नींद की कुरबानी दे कर भी अपना वुजू काइम रखता ताकि मौक़अ मिलने पर नमाज़ अदा कर सकूं। मेरा कोई पुरसाने हाल न था न ही कोई हमदर्द था कि हमदर्दी के दो मीठे बोल सुना कर मेरी ढारस बंधाता। तक़रीबन 2 माह इसी तरह गुज़र गए यहां तक कि र-मज़ानुल मुबारक का मुक़द्दस महीना तशरीफ़ ले आया। आह! मुझे कौन स-हरी फ़राहम करता! र-मज़ानुल मुबारक का रोज़ा छोड़ना मुझे गवारा न था चुनान्वे मैं ने बिगैर स-हरी ही रोज़ा रख लिया। शाम तक जब मैं ने खाना नहीं खाया तो घर वालों को तशवीश हुई। वोह जम्अ हो कर आए और खाना खाने के लिये ज़ोर देने लगे। मैं ने कहा: "रख दो मैं खा लूंगा।" उन के जाने के बा'द मैं ने मज़ीद इस्सार से बचने के लिये सालन इधर उधर कर दिया और रोटियां जेब में डाल लीं मगर घर वालों को किसी तरह शक हो गया और उन्होंने ने दिन के वक़्त ज़बरदस्ती मुझे खाना खिलाया, मैं दिल ही दिल में कुद़ता रहा मगर मजबूर था, यूं मैं पांच रोज़े न रख सका।

आखिरे कार किसी सबब से घर वालों की तरफ़ से कुछ ढील मिली और मैं दोबारा अस्पताल जाने लगा। मैं बिगैर स-हरी रोज़े की निय्यत कर लेता और ब ज़ाहिर दो पहर का खाना साथ ले जाता मगर शाम के वक़्त उस से इफ़्तारी करता। इसी दौरान मैं ने इस्लाम क़बूल करने के मु-तअल्लिक़ क़ानूनी काग़ज़ात भी मुकम्मल करवा लिये मगर घर वालों को पता नहीं चलने दिया। मैं घर वालों से छुप कर जिस मस्जिद में नमाज़ अदा करने जाता था वहां की इन्तिज़ामिया ने खौफ़ज़दा हो कर मुझे मन्अ कर दिया कि आप यहां न आया करें, कहीं फ़साद न हो जाए। मेरा



फरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عزوجل उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

दिल तो बहुत दुखा कि मैं मुसलमान होते हुए भी हालात की सितम ज़रीफ़ी की वजह से मस्जिद में दाखिले से रोक दिया गया हूँ मगर बे बस व लाचार था क्या करता ! दा'वते इस्लामी का म-दनी मर्कज़ वहां से बहुत दूर था और हालात के पेशे नज़र मैं ने खुद ही उन्हें राबिता करने से मन्अ कर रखा था ।

परेशानियों के तसल्सुल ने मेरे आ'साब शल कर दिये थे, मुझे कोई ऐसा हमदर्द व ग़म गुसार भी नहीं मिलता था कि जिस के कन्धे पर सर रख कर चन्द अशक बहा कर अपने दिल का बोझ हलका कर सकूँ, आह ! मैं बिल्कुल तन्हा था, ऐसे वक़्त में मुझे नमाज़ पढ़ने में बड़ा सुकून और होसला मिलता था, मेरी ज़बान पर दुरूद शरीफ़ जारी रहता । अब मैं ने हिम्मत कर के 3 किलो मीटर दूर "जनता कोलोनी" की मस्जिद में बा जमाअत नमाज़ अदा करने के लिये जाना शुरूअ कर दिया । घर वाले एक बार फिर नर्म पड़ चुके थे । एक रोज़ महल्ले के किसी नाम निहाद मुसलमान ने घर वालों को अच्छा लगाने के लिये उन का कुछ इस तरह ज़ेहन ख़राब करने की कोशिश की, कि "हम भी आखिर मुसलमान हैं, कौन सा रोज़ रोज़ नमाज़ पढ़ते हैं । बस जुमुआ या ईद की नमाज़ पढ़ लिया करते हैं ! लगता है तुम्हारा बेटा किसी जिन्न को काबू करने का अमल कर रहा है, येह पागल हो जाएगा तो तुम्हें पता चलेगा ।" उस की बातें सुन कर घर वाले घबरा गए और फिर से सख़्ती शुरूअ कर दी हत्ता कि दुरूद शरीफ़ वग़ैरा पढ़ने के लिये मेरे होंट हिलाने पर भी पाबन्दी लगा दी गई । घर वाले मुझे पकड़ कर एक अमिल के पास ले गए । उस ने भी कह दिया कि इस पर "अ-सरत" हैं !

इन हालात से मैं बहुत दिल बरदाश्ता हुवा और शायद मैं दोबारा कुफ़्र के अंधेरों में खो जाता मगर रब्बुल अकरम عزوجل का करम शामिले हाल रहा कि الْحَمْدُ لِلّٰهِ عزوجل मैं ने दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में आशिक़ाने रसूल की ज़बानी महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर होने वाले मज़ालिम की दास्तानें सुन रखी थीं, उन मज़ालिम के सामने मेरी तकालीफ़ कुछ भी नहीं थीं, अपने मक्की म-दनी आका صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आजमाइशों और उन पर किये जाने वाले बे मिसाल सब्र को याद कर के मेरा ईमान और मज़बूत हो जाता ।



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझे पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (अबू या'ला)

एक रोज़ मैं छुप कर दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में जा पहुंचा। इत्तिलाअ पा कर घर वाले आ धमके और मुझे वहां से उठा कर ले गए। न मैं ने कोई मुजा-हमत की और न किसी को करने दी कि फ़साद होगा। घर ले जा कर मुझे इतना मारा गया कि मैं नीम बेहोश हो गया। होश आने पर मैं ने घर छोड़ने का अज़मे मुसम्मम कर लिया हालांकि 3 दिन पहले ही मेरी सरकारी नोकरी की तर्कुरी का ओर्डर मौसूल हुवा था जिस के लिये मैं ने सालों मेहनत और कोशिशें की थीं। अब एक तरफ़ ज़ाती मकान, मां बाप और रोशन मुस्तक़बल और दूसरी तरफ़ ईमान जैसी अज़ीम दौलत! मगर मैं ने रब्बुल अकरम عَزَّوَجَلَّ के करम से ईमान की हिफ़ाज़त की खातिर 21 मार्च सि. 2007 ई. को अपनी मरजी से हिजरत की और अपना घर छोड़ दिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ आज मैं हिन्द के मुख़लिफ़ शहरों में आशिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र कर रहा हूं और घर वालों की सख़्ती के बाइस रह जाने वाली तमाम नमाज़ें भी क़ज़ा कर चुका हूं। मेरी ख़्वाहिश थी कि मैं भी कभी नमाज़ में इमामत की सआदत हासिल कर सकूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से चन्द सूरतों को दुरुस्त मख़ारिज के साथ याद करने और नमाज़ के ज़रूरी मसाइल सीखने में काम्याब हो चुका था। लिहाज़ा 13 एप्रिल सि. 2007 ई. को मेरी मुराद बर आई और मुझे हिन्द के “झांसी” नामी शहर में फ़ज़्र की जमाअत में इमामत की सआदत हासिल हो गई। दा'वते इस्लामी पर मेरी जान कुरबान कि इस ने कुफ़्र की आगोश में पलने वाले को न सिर्फ़ दौलते ईमान से नवाज़ा बल्कि इमामत के मुसल्ले पर ला खड़ा किया। येह सब मेरे रब्बुल इज़ज़त عَزَّوَجَلَّ की रहमत, और ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इनायत है।

इन नौ मुस्लिम इस्लामी भाई के बयान का मज़ीद खुलासा है कि दौराने सफ़र “कन्नोज” शहर के मुसल्मानों के महल्ले “कागज़ियानी” हाज़िर हुवा, वहां की “पुरानी मस्जिद” के सामने वाला मैदान लोगों से भरा हुवा था, कोई ताश खेलने में तो कोई जूए में मस्रूफ़ था। नमाज़े अस्स के बा'द मैं उन लोगों के पास नेकी की दा'वत देने के लिये हाज़िर हुवा यकायक एक शख़्स इन्तिहाई गुस्से की हालत में खड़ा हो गया और मुझे गन्दी गन्दी गालियां देते हुए डांटने लगा कि



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (कन्जुल उम्माल)

किसी और को जा कर समझाओ हमें समझाने की कोई ज़रूरत नहीं है। इतने में एक बूढ़े शख्स ने उस से कहा : “इस की बात तो सुनो कि येह क्या कहना चाहता है?” चुनान्चे मैं ने नेकी की दा'वत पेश की और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में सीखे हुए नमाज़ पढ़ने के फ़ज़ाइल और न पढ़ने से मु-तअल्लिक़ वईदें सुनाई, जब महसूस हुवा कि लोहा गर्म हो चुका है तो मैं ने कहा “जो बातें मैं आप को बता रहा हूं येह तो आप हज़रात को मुझे बतानी चाहिएं क्यूं कि मैं ने अभी कुछ अर्सा क़ब्ल ही इस्लाम क़बूल किया है। फिर मैं ने मुख़्तसरन अपने इस्लाम क़बूल करने और इस दौरान आने वाले इम्तिहानात के वाक़िआत सुनाने शुरूअ किये तो वहां मौजूद हज़रात शिद्दते ज़ब्बात से रोने लगे हत्ता कि मुझे गालियां बकने वाला शख्स रोते हुए कहने लगा : बस करो वरना मेरा दम निकल जाएगा। अब येह तमाम हमारे साथ मस्जिद में चलने के लिये तय्यार थे। नमाज़े अस्र में हम दो नमाज़ी थे मगर हैरत अंगेज़ तौर पर नमाज़े मग़रिब में 3 सफ़ें बन गई। एक बुजुर्ग़ फ़रमाने लगे : “मैं इन लोगों को देखते देखते बूढ़ा हो गया हूं आज पहली बार इन्हें मस्जिद में देख रहा हूं।”

काफ़िरो को चलें, मुशिरको को चलें दा'वते दीन दें, काफ़िले में चलो

काफ़िर आ जाएंगे, राहे हक़ पाएंगे اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ, चलें काफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

गीबत से तौबा का तरीक़ा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नदामत के साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार कीजिये। जिस जिस की गीबत की है उस के लिये दुआए मग़िफ़रत कीजिये। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : गीबत के कफ़ारे में येह है कि जिस की गीबत की है, उस के लिये इस्तिग़फ़ार करे, येह कहे : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَهُ या'नी इलाही ! हमें और उसे बख़्श दे। (الدَّعَوَاتُ الْکَبِیْرُ لِلنَّبِیِّهِی ج ۲ ص ۲۹۴ حدیث ۵۰۷)



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह غَوْحَلْ तुम पर रहमत भेजेगा । (इन्ने अदी)

तो रोज़ाना वक़्तन फ़ वक़्तन यूँ कहिये : या अल्लाह غَوْحَلْ ! मैं ने आज तक जितनी भी गीबतें की हैं उन से तौबा करता हूँ । या अल्लाह غَوْحَلْ ! मेरी और आज तक मैं ने जिन जिन मुसल्मानों की गीबत की है उन सब की अपने महबूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े मग़ि़रत फ़रमा । (याद रहे ! क़बूलिय्यते तौबा के लिये येह भी शर्त है कि उस गुनाह से दिल में बेज़ारी और आइन्दा न करने का अज़म हो ।)

मेरी और जिन जिन की मैं ने की है गीबत या खुदा غَوْحَلْ

मग़ि़रत फ़रमा दे, फ़रमा सब पे रहमत या खुदा غَوْحَلْ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

बन्दे से भी मुआफ़ी मांगे : जिस की “गीबत” की उस को पता नहीं चला तो उस से मुआफ़ी मांगना ज़रूरी नहीं । अल्लाहु ग़फ़ार غَوْحَلْ के दरबार में तौबा व इस्तिग़फ़ार कीजिये और दिल में पक्का अहद कीजिये कि आइन्दा कभी किसी की गीबत नहीं करूंगा । अगर उस को मा’लूम हो गया है तो उस के पास जा कर गीबत के मुक़ाबिल उस की जाइज़ ता’रीफ़, और उस से महबूबत का इज़हार कीजिये, ताकि उस का दिल खुश हो और अज़िज़ी के साथ अर्ज़ कीजिये कि मैं ने जो आप की गीबत की है उस पर नादिम हूँ मुझे मुआफ़ फ़रमा दीजिये । अब बिलफ़र्ज़ वोह मुआफ़ न भी करे तब भी اِنْ شَاءَ اللہُ غَوْحَلْ आख़िरत में मुवा-ख़ज़ा न होगा । हां अगर रस्मी तौर पर (SORRY कह दिया) बिला इख़लास मुआफ़ी मांगी और उस ने मुआफ़ कर भी दिया तब भी आख़िरत में मुवा-ख़ज़े (या’नी पूछगछ) का ख़ौफ़ बाकी है ।

(माखूज अज़ : बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 181)

सदका प्यारे की हया का कि न ले मुझ से हिसाब

बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है



फरमाने मुस्तफा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

तौबा के बा'द जिस की गीबत की थी उस को पता चल गया तो ? : गीबत से तौबा कर लेने के बा'द मुग़ताब या'नी जिस की गीबत की थी उस को पता चला तो अब क्या करना चाहिये ! इस जिम्न में मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़तावा र-जविय्या जिल्द 24 सफ़हा 411 पर नक्ल करते हैं : रौ-जतुल उ-लमा में है कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से पूछा कि अगर गीबत उस शख्स तक नहीं पहुंची जिस की गीबत की गई थी तो गीबत करने वाले के लिये तौबा फ़ाएदामन्द होगी या नहीं ? उन्होंने ने फ़रमाया : हां। (फ़ाएदामन्द होगी) क्यूं कि उस ने बन्दे के हक़ के मु-तअल्लिक़ होने से पहले तौबा कर ली है, गीबत बन्दे का हक़ (या'नी हुकूकुल इबाद में शामिल) उस वक़्त होगी जब उस तक पहुंच जाएगी। मैं ने कहा कि अगर तौबा के बा'द उस शख्स तक गीबत पहुंच जाए ? फ़रमाया कि उस की तौबा बातिल नहीं होगी बल्कि अल्लाह तअला दोनों को बख़्श देगा। गीबत करने वाले को तौबा की वजह से और जिस की गीबत की गई उसे उस तक्लीफ़ की वजह से जो उसे गीबत सुन कर हुई है क्यूं कि अल्लाह तअला करीम है उस के मु-तअल्लिक़ येह नहीं कहा जा सकता कि वोह किसी की तौबा क़बूल फ़रमा कर रद फ़रमा दे बल्कि दोनों को बख़्श देगा।

(مِنْهُ الرُّوضُ لِلْقَارِئِ ص ٤٤٠)

डर था कि इस्यां की सज़ा, अब होगी या रोज़े जज़ा

दी उन की रहमत ने सदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

जिस की गीबत की उस को पता चल गया..... फिर मर गया : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : जिस की गीबत की (उस को पता चल गया और अब) वोह मर गया या गाइब हो गया उस से किस तरह मुआफ़ी मांगे ? येह मुआ-मला बहुत दुश्वार हो गया ! लिहाज़ा अब चाहिये कि ख़ूब नेकियां करे ताकि



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

क़ियामत में अगर इस की नेकियां गीबत के बदले दे दी जाएं जब भी उस के पास नेकियां बाकी रह जाएं। (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٩ ص ٦٧٧) **हिकायत :** हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल वह्हाब शा'रानी

قدس سرہ النورانی فرमाते हैं : नेक आ'माल ज़ियादा करता नक्ल करते हैं : मेरे भाई अफ़ज़लुद्दीन عليه رحمة الله المبین फ़रमाते हैं : नेक आ'माल ज़ियादा करता हूं ताकि क़ियामत के दिन मेरे पास आ'माल में से कुछ न कुछ हो, जो कि उन को दिया जा सके जिन का मेरे ज़िम्मे (हुकूक़ इबाद के तअल्लुक़ से) माल या इज़्ज़त का कुछ मुता-लबा हो।

(تنبيه المغترين ص ١٩١)

बाज़ारे अमल में तो सौदा न बना अपना

سَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم
सरकार ! करम तुझ में ऐबी की समाई है

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيب ! صَلَّى اللہ تعالیٰ علی مُحَمَّد

हाए शामते नफ़्स ! : आह ! आह ! आह ! वोह मज्मूअए ग़फ़लत व सरापा मा'सियत कहां जाए जो कि नफ़्स की शामत के सबब ला ता'दाद अफ़राद की गीबत कर चुका हो, मरने या गाइब होने वालों की बात तो दूर रही, जानने पहचानने के बा वुजूद मुरुव्वत की मनो वज़्नी बेड़ियों में जकड़े होने के बाइस मुआफ़ी मांगने से शरमाता हो ! हाए ! हाए ! हाए ! अगर बरोजे क़ियामत ढेर सारे अहले हुकूक़ नेकियां लेने और अपने अपने गुनाह सर लदवाने पर तुल गए तो क्या बनेगा।

आह ! आह ! आह ! सदके या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم !

तुझे हरगिज़ गवारा हो नहीं सकता कि महशर में

जहन्नम की तरफ़ रोता हुवा तेरा गदा निकले

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيب ! صَلَّى اللہ تعالیٰ علی مُحَمَّد



फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عُزَّوَجَلَّ के लिये एक क़िरात अन्न लिखता है और क़िरात उहद पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज़ाक)

दुन्या ही में मुआफ़ करवा लेने में आफ़ियत है : सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस के ज़िम्मे अपने भाई का आबरू वगैरा किसी बात का मज़्लमा (या'नी जुल्म) हो, उसे लाज़िम है कि यहीं उस से मुआफ़ी चाह ले क़ब्ल उस वक़्त के आने के कि वहां न दीनार होंगे और न दिरहम अगर इस के पास कुछ नेकियां होंगी तो ब क़दर उस के हक़ के इस से ले कर उसे दी जाएंगी वरना उस के गुनाह इस पर रखे जाएंगे ।

(صَحیح بُخاری ج ۲ ص ۱۲۸ حدیث ۲۴۴۹)

सब ने सफ़े महशर में ललकार दिया हम को
 صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
ऐ बेकसों के आका अब तेरी दुहाई है

बोहतान की ता'रीफ़ : किसी शख्स की मौजूदगी या ग़ैर मौजूदगी में उस पर झूट बांधना बोहतान कहलाता है । (الْحَدِیْقَةُ النَّوْیَّةُ ج ۲ ص ۲۰۰) इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिये कि बुराई न होने के बा वुजूद अगर पीठ पीछे या रू बरू वोह बुराई उस की तरफ़ मन्सूब कर दी तो येह बोहतान हुवा म-सलन पीछे या मुंह के सामने रियाकार कह दिया और वोह रियाकार न हो या अगर हो भी तो आप के पास कोई सुबूत न हो क्यूं कि रियाकारी का तअल्लुक़ बातिनी अमराज़ से है लिहाज़ा इस तरह किसी को रियाकार कहना बोहतान हुवा ।

बोहतान से तौबा का तरीक़ा : बोहतान से तौबा करे, इस तौबा में तीन बातों का पाया जाना ज़रूरी है : १) आइन्दा बोहतान को तर्क करने का पक्का इरादा करना २) जिस का हक़ ज़ाएअ किया, मुम्किन हो तो उस से मुआफ़ी चाहना म-सलन साहिबे हक़ ज़िन्दा और मौजूद है नीज़ मुआफ़ी मांगने से कोई झगड़ा या अदावत पैदा नहीं होगी ३) (जिन) लोगों (के सामने बोहतान लगाया उन) के सामने अपने झूट (या'नी बोहतान) का इक़्रार करना या'नी येह कहना कि जो मैं ने बोहतान लगाया था उस की कोई हक़ीक़त नहीं ।

(الْحَدِیْقَةُ النَّوْیَّةُ وَالطَّرِیْقَةُ الْمُحَمَّدِیَّةُ ج ۲ ص ۲۰۹)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

मदीना की मत्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 181 पर सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِیٰ फ़रमाते हैं : बोहतान की सूरत में तौबा करना और मुआफ़ी मांगना ज़रूरी है बल्कि जिन के सामने बोहतान बांधा है उन के पास जा कर येह कहना ज़रूरी है कि मैं ने झूट कहा था जो फुलां पर मैं ने बोहतान बांधा था। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 181) नफ़्स के लिये यकीनन येह सख़्त गिरां है मगर दुन्या की थोड़ी सी ज़िल्लत उठानी आसान मगर आख़िरत का मुआ-मला इन्तिहाई संगीन है, खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दोज़ख़ का अज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। लिहाज़ा पढ़िये और लरज़िये :

बोहतान का अज़ाब : नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसल्मान की बुराई बयान करे जो उस में नहीं पाई जाती तो उस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक दोज़ख़ियों के कीचड़, पीप और खून में रखेगा जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से न निकल आए। (سُنَنِ ابوداؤد ج ۳ ص ۴۲۷ حدیث ۳۵۹۷)

गुनाह के इल्ज़ाम का अज़ाब : लोगों पर गुनाहों की तोहमत लगाने वालों के अज़ाब की एक दिल हिला देने वाली रिवायत मुला-हज़ा हो चुनान्वे जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में देखे हुए कई मनाज़िर का बयान फ़रमा कर येह भी फ़रमाया कि कुछ लोगों को ज़बानों से लटकाया गया था। मैं ने जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से उन के बारे में पूछा तो उन्होंने ने बताया कि येह लोगों पर बिला वजह इल्ज़ामे गुनाह लगाने वाले हैं। (شَرْحُ الصُّدُور ص ۱۸۲)

शक्की मिज़ाजों को तम्बीह : जो शक्की मिज़ाज औरतें अपने मर्दों पर तोहमतें धरतीं और इस तरह की बातें करती हैं कि ★ किसी औरत के चक्कर में है ★ सब पैसे उसी को दे आता



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रात है । (अबू या'ला)

है वगैरा यूँ ही जो वहमी मर्द अपनी औरतों पर इस तरह गुनाह की तोहमतें लगाते हैं कि ★ इस की किसी के साथ “आशनाई” है ★ अपने आशना को फ़ोन करती है ★ उस से मिलती है ★ गन्दे काम करवाती है वगैरा । उन को बयान कर्दा इल्ज़ामे गुनाह के अज़ाब की रिवायत से इब्रत हासिल करनी चाहिये । इस ज़िम्न में एक इब्रत अंगेज़ हिकायत मुला-हज़ा हो चुनान्चे

औरत पर तोहमत लगाने के सबब हलाकत : हज़रते अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی شَرْهُस्सुदूर में नक्ल करते हैं : एक शख्स ने ख़्वाब में जरीर ख़-तफ़ी को देखा तो पूछा : **مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟** या'नी अल्लाह ने तुम्हारे साथ क्या मुआ-मला किया ? तो उन्होंने ने कहा : मेरी मग़िफ़रत कर दी । मैं ने पूछा : मग़िफ़रत का क्या सबब बना ? कहा : उस तक्वीर कहने पर जो मैं ने एक जंगल में कही थी । मैं ने पूछा : फ़रज़दक़ का क्या हुवा ? तो उन्होंने ने कहा : अफ़सोस पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाने के बाइस वोह हलाकत में गरिफ़्तार हुवा ।

(شَرْحُ الصُّدُور ص ٢٨٥، البداية والنهاية ج ٦ ص ٤٠٩)

हाए ! हाए ! हाए ! हम ने न जाने ज़िन्दगी में कितनों पर बोहतान बांधे होंगे ! आह !

हर जुर्म पे जी चाहता है फूट के रोऊं

अफ़सोस मगर दिल की क़सावत¹ नहीं जाती

एक दूसरे को गीबत से बचाने का तरीक़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन जिन खुश नसीबों का येह ज़ेहन बन रहा हो कि हमें गीबत के मूजी मरज़ से छुटकारा पाने के लिये कोशिशें तेज़ तर कर देनी हैं वोह आपस में तै कर लें कि हम में से अगर **كَذَّابٌ** कोई गीबत शुरूअ कर दे तो जो मौजूद हो वोह अपनी कुव्वत के मुताबिक़ ज़बान से टोक कर रोक

1. सख़्ती



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (कन्जुल उम्माल)

दे और तौबा करने का कहे नीज़ अव्वल आख़िर ! صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! कह कर दुरुद शरीफ़ पढ़ाने के साथ कहे : “تَوْبُوْا اِلَی اللّٰہِ” (या'नी अल्लाह की तरफ़ तौबा करो!) येह सुन कर ग़ीबत करने वाला कहे : اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ (या'नी मैं अल्लाह तआला से बख़्शिश चाहता हूँ) इस तरह اِنْ شَاءَ اللّٰہُ غُُوْخِل (या'नी मैं अल्लाह तआला से बख़्शिश तलब करता हूँ) मैं समझता हूँ हाथों हाथ तौबा की सआदत मिल जाएगी। जिन्हों ने ग़ीबत करते न सुना हो उन से एहतियात लाज़िमी है, आवाज़ व अन्दाज़ ऐसे न हों कि जिन को पता न था उन को भी मा'लूम हो जाए कि फुलां ने مَعَاذَ اللّٰہِ غُُوْخِل ग़ीबत की।

किसी को काला कहना भी ग़ीबत है : हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن तौबा के मुआ-मले में बिल्कुल नहीं शरमाते थे चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی नक्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَةُ اللّٰہُ الْمُبِیْن ने एक शख्स का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया : वोह आदमी सियाह फ़ाम (या'नी काला) है फिर फ़रमाया : “اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ” या'नी “मैं अल्लाह तआला से बख़्शिश तलब करता हूँ” मैं समझता हूँ कि मैं ने उस की ग़ीबत की है। (احیاء العلوم ج ۳ ص ۱۷۸)

बिग़ैर शरमाए फ़ौरन तौबा कर लेनी चाहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن का ख़ौफ़े खुदा मरहबा ! इतने ज़बर दस्त बुजुर्ग ने फ़ौरन सब के सामने तौबा कर ली इस में येह भी दर्स मिला कि खुदा न ख़्वास्ता कभी लोगों के सामने ग़ीबत वग़ैरा गुनाह सरज़द हो जाए तो एहसास होते ही बिग़ैर शरमाए सब के सामने तौबा कर ली जाए। अगर बा'द में एहसास हो गया और तौबा कर ली तो जिन जिन के सामने ग़ीबत का गुनाह किया उन को अपनी तौबा पर मुत्तलअ कर दिया जाए। तौबा का येह काइदा ज़ेहन में रखिये जैसा कि हदीसे पाक में है : **سُلتّٰنہ دو جہان**, मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, सरवरे जीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जब तुम कोई गुनाह करो तो तौबा कर लो, **اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْرُ لِلطَّبْرَانِ** ج ۲۰ ص ۱۵۹ حدیث ۳۳۱ ()



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह غُذُوخَلْ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

इस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि बिला इजाज़ते शर-ई पीठ पीछे किसी मुसल्मान के जिस्मानी ऐब बयान करना म-सलन ★ काला ★ भूरा ★ बद सूरत ★ कोढ़ी ★ गन्जा ★ मोटा ★ लम्बा ★ ठिगना ★ काना ★ अन्धा ★ बहरा ★ गूंगा ★ बांडा ★ भेंगा ★ लूला ★ लंगड़ा ★ कुबड़ा कहना ग़ीबत है। बा'ज़ इस्लामी भाई काली रंगत वाले इस्लामी भाई को बिलाली कहते हैं, बिला ज़रूरत येह भी न कहा जाए कि पीठ पीछे से कहना ग़ीबत में शुमार होगा क्यूं कि जिस को “बिलाली” के मुरादी मा'ना मा'लूम होंगे या'नी जो समझता होगा कि मैं काला हूं इस लिये मुझे “बिलाली” कह रहे हैं तो उस को बुरा लग सकता है। हां अगर किसी मख़सूस इस्लामी भाई की पहचान ही बिलाली है तो इस निय्यत से बिलाली कहने में हरज नहीं।

गुनाह होते ही फ़ौरन तौबा करना वाजिब है : हज़रते सय्यिदुना इमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی سے मन्कूल है : जूं ही गुनाह सादिर हो फ़ौरन तौबा कर लेना वाजिब है ख़्वाह सगीरा गुनाह ही क्यूं न हो।

(شَرْحُ النَّوَوِيِّ عَلَى صَحِيحِ مُسْلِمٍ الْجُزء السَّابِع عشر ص ٥٩)

किसी की बात ग़ीबत न थी मगर आप ने ग़ीबत कह दी तो ? : किसी बात को गुनाह भरी ग़ीबत क़रार देने के लिये मा'लूमात होना ज़रूरी है अगर आप ने बे सोचे समझे किसी की बात को ग़ीबत ठहराया और उस के मुर-तकिब को गुनहगार क़रार दिया और वोह गुनहगार नहीं था तो इस सूरत में आप गुनहगार होंगे तौबा उस पर नहीं आप पर वाजिब हो जाएगी ! बहर हाल आपस में येह ज़रूर तै कर लीजिये कि ग़ीबत न हो रही हो फिर भी अगर किसी ने ग़लत फ़हमी के सबब اللّٰهُ تَعَالٰی कह दिया तब भी हम “झगड़े” की कैफ़ियत पैदा न होने देंगे वरना शैतान को दूसरे ज़ाविये से या'नी लड़वाने और दिलों में बुज़ व कीना डलवाने के ज़रीए गुनाह करवाने का मौक़अ हाथ आ सकता है।

झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत : ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी दो इस्लामी भाई लड़ पड़ें तो मौक़अ पा कर तीसरा बुलन्द आवाज़ से صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! कह दे, दोनों दुरुद शरीफ़ पढ़ते हुए सुल्ह कर



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आतूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक पड़े । (हाकिम)

लें । जो हक़ पर होने के बा वुजूद नहीं झगड़ता उस का तो **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** बेड़ा ही पार है । चुनान्चे मदीने के सुल्तान, रहमते दो जहान **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो हक़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता मैं उस के लिये जन्नत के (अन्दरूनी) कनारे में एक घर का ज़ामिन हूँ ।

(سُنَنِ ابوداؤد ج ٤ ص ٣٣٢ حدیث ٤٨٠٠)

کھنے کی فज़ीलत : लोगों की मौजूदगी में हर तरह की मा'सियत, बल्कि ना पसन्दीदा ह-र-कत म-सलन फुज़ूल गोई सादिर होने पर बल्कि मौक़अ की मुना-सबत से बिला उन्वान भी बुलन्द आवाज़ से अव्वल आख़िर ! **صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !** के साथ **تُؤْتُوْا لَی اللّٰهُ** कह देना चाहिये कि हर वक़्त तौबा व इस्तिग़फ़ार करते रहना कारे सवाब है । **फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** है : **اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ** है : **اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ عَفْرَلَه :** या'नी जो कोई अल्लाह तअ़ला से इस्तिग़फ़ार (या'नी मग़िफ़रत त़लब) करेगा अल्लाह तअ़ला उस की मग़िफ़रत फ़रमा देगा । **اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ** कहना भी इस्तिग़फ़ार या'नी मग़िफ़रत त़लब करना है)

(سُنَنِ تِرْمِذِی ج ٥ ص ٢٨٨ حدیث ٣٤٨١)

तौबा के तीन अरकान हैं : अलबत्ता गुनाह सरज़द हुवा हो तो उस की महज़ रस्मी तौबा काफ़ी नहीं दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूअ 480 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, **“बयानाते अत्तारिय्या”** हिस्सा अव्वल के सफ़हा 79 पर है : सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी **علیه رحمۃ اللہ الہادی** फ़रमाते हैं : तौबा की अस्ल **رُجُوع اِلَی اللّٰهِ** (या'नी अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ रुजूअ करना) है इस के तीन रुक्न हैं : **﴿1﴾** ए'तिराफ़े जुर्म **﴿2﴾** नदामत **﴿3﴾** अज़मे तर्क (या'नी इस गुनाह को तर्क कर देने का पक्का इरादा) अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो इस की तलाफ़ी (या'नी नुक्सान का बदला) भी लाज़िम म-सलन तारिकुस्सलाह (या'नी बे नमाज़ी) के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा भी लाज़िम है ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 12)



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

सभी ग़ीबत से बचने की तरकीब करें : तमाम मुसलमान, जुम्ला आशिक़ाने रसूल ब शुमूल दा 'वते इस्लामी की तमाम मजालिस के अराकीन व मुबल्लिग़ीन, मुदर्रिसीन व त-लबए इल्मे दीन, मुअल्लिमीन व मु-तअल्लिमीन नीज़ म-दनी काफ़िलों के मुसाफ़िरीन वग़ैरा ग़ीबत से बचने के मज़क़ूरा तरीक़ों पर अमल करेंगे तो इन के लिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** रहमतें ही रहमतें और मग़ि़रतें ही मग़ि़रतें होंगी। या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! मुसलमानों को बद गुमानियों, ग़ीबतों, तोहमतों, चुग़िलयों, दिल आज़ारियों वग़ैरा गुनाहों से महफूज़ फ़रमा, या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की मग़ि़रत फ़रमा।

امین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुआए अत्तार : या रब्बे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जो भी इस्लामी भाई या इस्लामी बहन अपने यहां “एक दूसरे को ग़ीबत से बचाने का तरीक़ा” राइज करे उस की और जो जो साथ दें उन सब की ग़ैब से मदद फ़रमा, उन सब की ग़ीबत बल्कि हर मा'सियत से हिफ़ाज़त फ़रमा कर उन के दिलों में अपनी और अपने प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची महबूबत भर दे। उन सब को जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िल फ़रमा कर प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के पड़ोस में बसा दे और येह तमाम दुआएं मुझ पापी व बदकार, गुनहगारों के सरदार के हक़ में भी कबूल फ़रमा। या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की मग़ि़रत फ़रमा।

خُदाया **عَزَّوَجَلَّ** अजल आ के सर पर खड़ी है
मुसल्मां है अत्तार तेरी अता से

दिखा जल्वए मुस्तफ़ा या इलाही **عَزَّوَجَلَّ**
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही **عَزَّوَجَلَّ**

امین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

تُؤْنُوْا اِلَی اللّٰہِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमू'उन्नुबाइद)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मुहत्तशम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोजे क़ियामत शु-हदा के साथ रखेगा ।

(مَجْمَعُ الرِّوَايَاتِ ج ١٠ ص ٢٥٣ حديث ١٧٢٩٨)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ مُحَمَّدٌ

“गीबत ना जाइज़ व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है”
के चालीस हुरूफ़ की निस्बत से 40 हिकायात

﴿1﴾ दो ग़ीबत करने वालियों की हिकायात

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रहमते आ-लमियान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को एक दिन रोज़ा रखने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया : जब तक मैं इजाज़त न दूं, तुम में से कोई भी इफ़्तार न करे । लोगों ने रोज़ा रखा । जब शाम हुई तो तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एक एक कर के हाज़िरे ख़िदमते बा ब-र-कत हो कर अर्ज करते रहे : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं रोज़े से रहा, अब मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं रोज़ा खोल दूं । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे इजाज़त मर्हमत फ़रमा देते । एक सहाबी رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हाज़िर हो कर अर्ज की : आका صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दो औरतों ने रोज़ा रखा और वोह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की



फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे । (त-बरानी)

खिदमते बा ब-र-कत में आने से हया महसूस करती हैं, उन्हें इजाज़त दीजिये ताकि वोह भी रोज़ा खोल लें । अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने उन से रुखे अन्वर फैर लिया, उन्होंने ने फिर अर्ज की, आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने फिर चेहरए अन्वर फैर लिया, उन्होंने ने फिर येही बात दोहराई आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने फिर चेहरए अन्वर फैर लिया, वोह फीर येही बात दोहराने लगे आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने फीर रुखे अन्वर फैर लिया, फिर ग़ैब दान रसूल صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : “उन दोनों ने रोज़ा नहीं रखा वोह कैसी रोज़ादार हैं वोह तो सारा दिन लोगों का गोश्त खाती रहीं ! जाओ उन दोनों को हुक्म दो कि वोह अगर रोज़ादार हैं तो कै कर दें ।” वोह सहाबी رضي الله تعالى عنه उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें फ़रमाने शाही صلى الله تعالى عليه وآله وسلم सुनाया । उन दोनों ने कै की, तो कै से जमा हुवा खून निकला । उन सहाबी رضي الله تعالى عنه ने आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की खिदमते बा ब-र-कत में वापस हाज़िर हो कर सू-रते हाल अर्ज की । म-दनी आका صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है, अगर येह उन के पेटों में बाकी रहता, तो उन दोनों को आग खाती । (क्यूं कि उन्होंने ने ग़ीबत की थी)

(دَمُ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ٧٢ رقم ٣١)

एक और रिवायत में है कि जब सरकारे मदीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने उन सहाबी رضي الله تعالى عنه से मुंह फैरा तो वोह सामने आए और अर्ज की : या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ! वोह दोनों प्यास की शिद्दत से मरने के करीब हैं । सरकारे मदीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने हुक्म फ़रमाया : उन दोनों को मेरे पास लाओ । वोह दोनों हाज़िर हुई । सरकारे आली वकार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने एक पियाला मंगवाया और उन में से एक को हुक्म फ़रमाया : इस में कै करो ! उस ने खून, पीप और गोश्त की कै की, हत्ता कि आधा पियाला भर गया । फिर आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने दूसरी को हुक्म दिया कि तुम भी इस में कै करो ! उस ने भी इसी तरह की कै की, यहां तक कि पियाला भर गया । अल्लाह के प्यारे रसूल, रसूले मक्बूल, सय्यिदह आमिना के



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

गुलशन के महकते फूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : इन दोनों ने अल्लाह عزّوجلّ की हलाल कर्दा चीज़ों (या'नी खाने, पीने वगैरा) से तो रोज़ा रखा मगर जिन चीज़ों को अल्लाह عزّوجلّ ने (इलावा रोज़े के भी) ह़राम रखा है उन (ह़राम चीज़ों) से रोज़ा इफ़्तार कर डाला ! हुवा यूं कि एक लड़की दूसरी लड़की के पास बैठ गई और दोनों मिल कर लोगों का गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) लगीं ।

(मुस्निद़ इमाम अहमद अहमद बिन हनबल ज ९ व १६० हदीथ २३७१)

इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा ﷺ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह हुवा कि अल्लाह عزّوجلّ की अज़ा से हमारे मीठे मीठे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा ﷺ को इल्मे ग़ैब हासिल है और आप ﷺ को अपने गुलामों के तमाम मुआ-मलात मा'लूम हो जाते हैं । जभी तो उन लड़कियों के बारे में मस्जिद शरीफ़ में बैठे बैठे ग़ैब की ख़बर इर्शाद फ़रमा दी । इस हिकायत से येह भी पता चला कि ग़ीबत और दूसरे गुनाहों का इरतिकाब करने से बराहे रास्त इस का असर रोज़े पर भी पड़ सकता है जिस की वजह से रोज़े की तकलीफ़ ना क़ाबिले बरदाश्त हो सकती है । बहर हाल रोज़ा हो या न हो, ज़बान क़ाबू ही में रखनी चाहिये वरना येह ऐसे गुल खिलाती है कि तौबा !

सरवरे दी लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर

नफ़सो शैता सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿2﴾ ग़ीबत से बाज़ रखने का ह़सीन अन्दाज़

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कहते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना इयास बिन मुआविया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पास बैठा हुवा था, इतने में एक शख्स क़रीब से गुज़रा, मैं ने उस की बुराई बयान करना शुरू कर दी, उन्होंने ने कहा : ख़ामोश ! फिर फ़रमाने लगे :



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़ाक)

सुफ़यान ! क्या तुम ने रूमियों और तुर्कों के खिलाफ़ जंग की है ? जवाब दिया : नहीं । वोह बोले : तुर्क और रूमी तो तुम से बच गए लेकिन एक मुसल्मान भाई महफूज़ न रह सका (या'नी देखते ही तुम ने उस की ग़ीबत शुरू कर दी !) हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान عليه رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی कहते हैं : (मेरा दिल चोट खा गया और) इस के बा'द मैं ने कभी किसी की ग़ीबत और आबरू रेज़ी नहीं की । (تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٨٨) **अल्लाह عزّوجلّ की उन पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी मफ़िरत हो ।**

امين بجاہ النبی الامین ﷺ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी हमारे सामने कोई ग़ीबत वगैरा का इरतिकाब करे तो मुम्किना सूरत में उसे समझाना चाहिये कि समझाना राएगां नहीं जाता । रब्बे काएनात عزّوجلّ पारह 27 सू-रतुज्ज़ारियात आयत नम्बर 55 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है । (پ ۲۷، الذّٰریت: ۵۵)

अमल का हो जज़्बा अता या इलाही عزّوجلّ

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही عزّوجلّ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿3﴾ रूई वाले ने ख़ियानत की !

एक नेक शख्स ने अपनी रफ़ीक़ए हयात (या'नी बीवी) के लिये रूई ख़रीदी । जब घर पहुंचा तो वोह कहने लगी कि रूई बेचने वालों ने आप के साथ ख़ियानत (ठगबाज़ी) की है । उस शख्स ने औरत को फ़ौरन तलाक़ दे दी ! उस आदमी से जब इस का सबब पूछा गया तो कहा : मैं एक ग़ैरत मन्द इन्सान हूं, मुझे ख़दशा लाहिक् हुवा कि बरोजे कियामत अगर रूई बेचने वाले इस ग़ीबत (व तोहमत) की वजह से इस से अपने हक़ के तलबगार हुए तो कहीं



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (कजुल उमाल)

अहले महशर येह न कहें कि देखो ! फुलां की बीवी से रूई बेचने वाले अपना हक मांग रहे हैं ! इस लिये मैं ने उसे तलाक दे दी !

(تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٨٩)

ताजिरो की गीबत की 17 मिसालें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी कौम या महकमे की गीबत करना म-सलन कहना : “पोलीस वाले रिश्वत खोर होते हैं।” येह गुनाहों भरी गीबत नहीं क्यूं कि महकमए पोलीस या कौम या ग्रूप के अन्दर अच्छे बुरे दोनों तरह के लोग होते हैं अलबत्ता किसी कौम या महकमए पोलीस के हर हर फर्द की बुराई मक्सूद हो तो जरूर गीबत है। मज़कूरा हिकायत में किसी मख्सूस रूई वाले का नहीं मुत्लकन “रूई वालों” का जिक्र है। इस लिहाज से तो येह गीबत न हुई मगर हो सकता है कि उस गाउं में रूई की दो या तीन ही दुकानें हों और उस औरत ने जो गीबत भरी गुफ्त-गू की इस के सियाक व सबाक से उस नेक आदमी ने येही मुराद समझी हो कि वोह हमारे यहां के हर हर रूई वाले को खाइन व ठग कह रही है लिहाजा खौफे क़ियामत के सबब फ़ौरन तलाक दे दी हो। ﷲ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَ رَسُوْلُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم।

बहर हाल इस हिकायत से वोह लोग इब्रत हासिल करें जो बिला किसी मस्लहतें शर-ई बात बात पर ताजिरो की गीबत व तोहमत के मु-तअल्लिक बिला तकल्लुफ़ इस तरह के जुम्ले कहते रहते हैं : ★ इस ने ठग लिया ★ ठगी है ★ ठगिया है ★ गाहकों को लूटता है ★ नफ़अ ज़ियादा लेता है ★ इस का माल सब से महंगा होता है ★ धोकेबाज़ है ★ मिलावट करता है ★ तोल में डन्डी मारता है ★ चिकनी चुपड़ी बातें कर के गाहक को फांस लेता है ★ बहुत लालची है सब से आखिर में दुकान बन्द करता है ★ कपड़ा खींच कर नापता है ★ उधार माल ले कर लौटाने का नाम नहीं लेता ★ इस से कर्ज की वसूली आसान नहीं, धक्के बहुत खिलाता है ★ सूदखोर है ★ न जाने कितनों के पैसे खा के बैठा है ★ झूटी कस्में खाता है।



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुर्हुदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शपथ अत मिलेगी। (मबम-उज्जवाइद)

दे रिज़्के हलाल अज़ पए गौसे आ ज़म
हो अख़्लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ

हराम माल से तू बचा या इलाही
मुझे मुत्तकी दे बना या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

मुलाज़िमीन की ग़ीबतों की 18 मिसालें : मुलाज़िमीन के बारे में बिला मस्लहते शर-ई बोले जाने वाले गुनाहों भरे कलिमात व फ़िक़्रात की मिसालें ★ कामचोर है ★ सुस्त है ★ ढीला है ★ जब देखो छुट्टियां करता है ★ हराम ख़ोर है ★ दुकान में चोरियां करता है ★ काम पर भेजो तो बहुत टाइम पास कर के आता है ★ जब देखो बस फ़ोन पर लगा रहता है ★ बहुत मुंह चढ़ा है ★ बात बात पर नाराज़ हो जाता है ★ गाहक को बराबर “डील” नहीं कर सकता ★ बावला ★ अहमक ★ बुद्धू है ★ इस के नख़्खे बढ़ गए हैं ★ एक तो देर से आता है और ★ जल्दी भागने की करता है ★ दुकान में चोरी हो गई है मुझे फुलां नोकर पर शक है।

दुकानदारों की आपसी ग़ीबत की 10 मिसालें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कारोबार में ऊंच नीच होती रहती है, अहादीसे मुबा-रका से मुस्तफ़ाद होता है कि गुनाहों के बाइस भी बे ब-र-कती होती है। मुसल्मान को चाहिये कि अगर कभी बे ब-र-कती हो या बिकरी में कमी आए तो अपने आ'माल का मुहा-सबा करे मगर बा'ज़ लोग ऐसे मौक़अ पर शैतान के बहकावे में आ कर बद गुमानियों, ग़ीबतों और तोहमतों पर उतर आते हैं और कुछ यूं कहते सुनाई देते हैं : ★ लगता है फुलां मेरे कारोबार की तरक्की देख नहीं सकता ★ मेरे गाहक तोड़ता है ★ जान बूझ कर दाम कम बता कर मेरे गाहक ख़राब कर देता है ★ खुद मिलावट वाला माल बेचता है मगर ★ मेरे गाहक को बदज़न करने के लिये मेरी चीज़ों को मिलावट वाली कहता है ★ बद मआशी कर के मेरी दुकान के आगे पथारा लगवा दिया है ★ येह चाहता है कि बस किसी तरह मैं येह दुकान छोड़ दूं ★ उस ने ऐसी नज़र लगा दी है कि गाहक क़रीब नहीं फटकता ★



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख़ हो गया । (इन्ने सुनी)

वोह सामने वाला दुकानदार जब देखो हाथ में तस्बीह ले कर पढ़ पढ़ कर हमारी दुकान की तरफ फूंकता रहता है ★ उस दिन तो बा काइदा मुसल्ला बिछा कर नमाज़ें पढ़े जा रहा था और दो एक बार तो हमारी दुकान की तरफ देखा भी था हो न हो इसी ने जादू के ज़ोर से कारोबार की बन्दिश कर दी है ! मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात गिरेह में बांध लीजिये कि जिक्रो अज़्कार, नमाज़ों और पाक कलामों के ज़रीए जादू हो ही नहीं सकता लिहाज़ा किसी मुसलमान के बारे में बद गुमानियों, ग़ीबतों और तोहमतों के गुनाहों में मत पड़िये, अपनी नज़र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर रखिये ।

हुकूक़ल इबाद ! आह ! होगा मेरा क्या !

सरे ह़शर रखना भरम या इलाही عَزَّوَجَلَّ

बड़ी कोशिशों की गुनह छोड़ने की

रहे आह ! नाकाम हम या इलाही عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

(4) मर्हूमा अम्मीजान ने म-दनी काम करने की इजाज़त दिलवाई : ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये । सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में ख़ूब सफ़र कीजिये, इस्लामी बहनें अपने महारिम के साथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआदत हासिल करें, आप की तरगीब के लिये म-दनी बहार गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे कोट अत्तारी (कोटरी बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक इस्लामी बहन का बयान है कि مُحَمَّدٌ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है, लिहाज़ा मैं ख़ूब बढ़ चढ़ कर दा'वते इस्लामी का म-दनी काम करना चाहती थी मगर मेरे



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी। (मजमउज्जवाइद)

बच्चों के अब्बू इजाजत नहीं देते थे। मैं फिर भी शरीअत के दाइरे में रहते हुए अपनी बिसात के मुताबिक म-दनी काम किया करती। मेरी खुश नसीबी कि स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1430 हि. के मुबारक महीने में हमारे अलाके के एक घर में दा'वते इस्लामी की इस्लामी बहनों का म-दनी काफ़िला तशरीफ़ लाया। जदवल के मुताबिक दूसरे दिन होने वाले तरबिय्यती इज्तिमाअ में मुझे भी शिकत की सआदत मिली। मैं ने वहां पर येह दुआ मांगी : “या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से मेरे बच्चों के अब्बू मुझे दा'वते इस्लामी का म-दनी काम करने की इजाजत दे दिया करें।” اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ उसी रात मेरे बच्चों के अब्बू को मेरी मर्हमा अम्मीजान (या'नी इन की सास जो इन्हें बेटों की तरह चाहती थीं) की ख़्वाब में ज़ियारत हुई, मर्हमा ने फ़रमाया : “तुम मेरी बेटी को दा'वते इस्लामी के म-दनी काम क्यूं नहीं करने देते ! उसे इस की इजाजत दे दो।” मेरे बच्चों के अब्बू ने येह ख़्वाब सुना कर मुझे हंसी खुशी दा'वते इस्लामी के म-दनी काम करने की इजाजत दे दी। यूं इस्लामी बहनों के म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से मेरे दिल की मुराद बर आई।

काफ़िले में ज़रा मांगो आ कर दुआ
होगा लुत्फ़े खुदा आओ बहनो दुआ

पाओगे ने 'मतें काफ़िले में चलो
मिल के सारे करें काफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

म-दनी काम की तड़प मरहबा !: इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! म-दनी काफ़िलों की भी कैसी प्यारी प्यारी बहारें हैं ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इस में ख़ूब दुआएं क़बूल होती हैं। म-दनी काम के ज़रीए नेकी की दा'वत आम करने की तड़प मरहबा ! कि इस में सवाब ही सवाब है इस ज़िम्न में चार अहदीसे मुबा-रका पेश की जाती हैं :



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाकन पढ़ा तहकीक वोह बदबख़ा हो गया । (इने सुनी)

चार⁴ फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : «1» नेकी की राह दिखाने वाला नेकी करने वाले की तरह है।⁽¹⁾ «2» अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख्स को हिदायत अता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास सुख उंट हों।⁽²⁾ «3» बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्ते, आस्मान और ज़मीन की मख़्लूक यहां तक कि चूंटियां अपने सूराखों में और मछलियां (पानी में) लोगों को नेकी सिखाने वाले पर “सलात” भेजते हैं।⁽³⁾ **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَزَّوَجَلَّ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की “सलात” से उस की ख़ास रहमत और मख़्लूक की “सलात” से खुसूसी दुआए रहमत मुराद है।⁽⁴⁾ «4» बेहतरीन स-दका येह है कि मुसलमान आदमी इल्म हासिल करे फिर अपने मुसलमान भाई को सिखाए।⁽⁵⁾

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُؤْبُوْا اِلَی اللّٰہِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

«5» इमामे आ 'ज़म का अपने गुस्ताख़ के साथ हुस्ने सुलूक

इमामुल अइम्मह, **सिराजुल उम्मत** हज़रते सय्यिदुना इमामे आ 'ज़म अबू हनीफ़ा **मिना शरीफ़** की मस्जिदुल ख़ैफ़ में तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख्स ने आ कर मस्अला पूछा आप **عَزَّوَجَلَّ** ने उस का जवाब दिया फिर किसी ने कहा कि येह हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **عَزَّوَجَلَّ** के जवाब के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। इर्शाद फ़रमाया : इस मस्अले में हसन बसरी **عَزَّوَجَلَّ** ने इज्तिहादी ख़ता की। फिर एक और शख्स आया उस ने

دینہ (1) سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٤ ص ٣٠٥ حديث ٢٦٧٩ (2) صَحِيح مُسْلِم ص ١٣١١ حديث ٢٤٠٦ (3) سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٤ ص ٣١٤ حديث ٢٦٩٤

(4) مَرَاة الْمَنَاجِيح ج ١ ص ٢٠٠ (5) سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ١ ص ١٥٨ حديث ٢٤٣



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

अपना चेहरा छुपाया हुआ था, उस ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ को गाली निकाली और कहा : तुम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ को ख़ताकार कहते हो। मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ की कुव्वते बरदाश्त का येह आलम कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ के चेहरे पर कोई गुस्सा नज़र न आया। हाज़िरीन तैश में आ कर उस गुस्ताख़ को मारने के लिये उठे, सय्यिदुना इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ ने लोगों को ठन्डा किया और उस शख्स से फ़रमाया : “हसन बसरी (عَلَيْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ) से इज्तिहादी ग़-लती हुई और हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस बाब में जो रिवायत की वोह सहीह है।” (المناقب للموفق ج ۲ ص ۹) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी मग़िफ़रत हो।

امین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

गुस्से पर क़ाबू के भी क्या ख़ूब फ़ज़ाइल हैं ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! करोड़ों ह-नफ़िय्यों के अज़ीम पेशवा हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म फ़कीहे अफ़ख़म इमाम अबू हनीफ़ा عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ का सब्रो तहम्मूल ! हालां कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ चाहते तो लोग मार मार कर उस का भुरकस निकाल देते मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعालٰی عَلَيْہِ ने ऐसा न होने दिया। जब कोई अपनी बे इज़्ज़ती करे तो उमूमन गुस्सा आ जाता है मगर ऐसे मौक़अ पर गुस्से को रोक कर उस के फ़ज़ाइल का हक़दार बनना चाहिये। दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मल्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 188 ता 189 पर है : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अज़ीम है : जो शख्स अपनी ज़बान को महफूज़ रखेगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा और जो अपने गुस्से को रोकेगा, क़ियामत के दिन अल्लाह तआला अपना अज़ाब उस से रोक देगा और जो अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) से उज़्र करेगा, अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) उस के उज़्र को क़बूल फ़रमाएगा।

(شُعَبُ الْاِیْمَان ج ۶ ص ۳۱۵ حدیث ۸۳۱۱)



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ पढ़ो अल्लाह عُزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

क्या इमामे आ 'जम ने हसन बसरी की गीबत की ? : मज़कूरा हिकायत में सय्यिदुना
इमामे आ'जम अबू हनीफा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي की येह कह कर गीबत की कि “उन्होंने ने इज्तिहादी ख़ता की” मगर येह जाइज़ गीबत थी क्यूं कि एक मुफ़्ती शर-ई मस्अले पर ख़ता करे तो दूसरा मुफ़्ती उस का रद कर सकता है। चुनान्वे “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 178 ता 179 पर है : हदीस के रावियों और मुक़दमे (CASE) के गवाहों और मुसन्निफ़ीन पर जरह करना और उन के उयूब बयान करना जाइज़ है अगर रावियों की ख़राबियां बयान न की जाएं तो हदीसे सहीह और ग़ैरे सहीह में इम्तियाज़ न हो सकेगा। इसी तरह मुसन्निफ़ीन के हालात न बयान किये जाएं तो कुतुबे मोअ-त-मदा व ग़ैरे मोअ-त-मदा (या'नी क़ाबिले ए'तिमाद व ना क़ाबिले ए'तिमाद किताबों) में फ़र्क न रहेगा। गवाहों पर जरह न की जाए तो हुकूके मुस्लिमीन की निगह दाश्त (देखभाल) न हो सकेगी।

हमद की बीमारी बढ़ चली है, लड़ाई आपस में ठन गई है
मिटा मेरी गीबतों की आदत, हो दूर बे जा हंसी की ख़स्तत

शहा मुसलमान हों मुनज़ज़म, इमामे आ 'जम अबू हनीफा
दुरूद पढ़ता रहूं मैं हर दम, इमामे आ 'जम अबू हनीफा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

تُؤْبُوْا لَی اللہِ اَسْتَغْفِرُ اللہِ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

﴿6﴾ इमामे आ 'जम ने कभी दुश्मन की भी गीबत नहीं की

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَالِک ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي से कहा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ “इमामे आ'जम अबू हनीफा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالٰی عَنْهُ गीबत से इतना ज़ियादा बचते हैं कि मैं ने कभी उन को दुश्मन की गीबत करते भी नहीं सुना !”

(مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيحِ ج ١ ص ٧٧)



फरमाने मुस्तफा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

आधे अहले ज़मीन से भी इमामे आ 'ज़म की अक्ल ज़ियादा : मीठे मीठे इस्लामी

भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना इमामे आ 'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم की अक्ल मन्दी के क्या कहने !

यकीनन अक्ल मन्द वोही है जो अपने आप को अल्लाह व रसूल ﷺ की

इताअत में लगाए रखे वरना तो वोह बेवुकूफ ही क्या बेवुकूफों का भी सरदार है जो मुसल्मानों की

गीबतों में पड़ कर अपनी नेकियां बरबाद कर के जहन्नम का हकदार बनता रहे। दा 'वते इस्लामी

के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 649 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब,

“हिकायतें और नसीहतें” सफ़हा 332 पर है: हज़रते सय्यिदुना अली बिन आसिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की

ने इर्शाद फ़रमाया : अगर निस्फ़ (या'नी आधे) अहले ज़मीन की अक्लों से इमाम अबू हनीफ़ा

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की अक्ल का मुवा-ज़ना किया जाए तो भी आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की अक्ल ज़ियादा होगी।

(تبيينُ الصّحيفة في مناقب الامام ابى حنيفة للسيوطى ص ۱۲۸)

गीबतें मत कीजिये पछताएंगे

घुप अंधेरी क़ब्र में जब जाएंगे

सांप बिच्छू देख कर चिल्लाएंगे

बेबसी होगी न कुछ कर पाएंगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

﴿7﴾ क़ब्र वाले गीबत नहीं किया करते

दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 649 स-फ़हात

पर मुश्तमिल किताब, “हिकायतें और नसीहतें” सफ़हा 477 पर है: हज़रते सय्यिदुना सरी स-

क़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं: एक बार मुझे क़ब्रिस्तान जाना हुवा। वहां मैं ने हज़रते सय्यिदुना

बहलूल दाना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को देखा कि एक क़ब्र के करीब बैठे मिट्टी में लोट पोट हो रहे हैं!

मैं ने यहां तशरीफ़ फ़रमा होने का सबब पूछा तो जवाब दिया: “मैं ऐसी क़ौम के पास हूं जो मुझे



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

अजिय्यत नहीं देती और अगर मैं यहां से गाइब हो जाऊं तो मेरी ग़ीबत नहीं करती।”
(الرَّوَضُ الْفَائِقُ (عربی) ص ۲۴۶) اَللّٰہُ غَوَّخِلْ کی उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी
मग़िफ़रत हो।

امین بِجَاوِ النَّبِیِّ الْاَمِینِ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

اَللّٰہُ वालों की भी क्या ख़ूब म-दनी सोच हुवा करती है, वाक़ेई क़ब्रिस्तान
में वक़्त गुज़ारने वाले को अपनी मौत याद आने के साथ साथ ग़ीबत से बचत की भी सअ़ादत
नसीब होती है, न वोह किसी की ग़ीबत करते न क़ब्र वाले उस की ग़ीबत करते हैं।

मौत को मत भूलना पछताओगे क़ब्र में ऐ आसियो ! जब जाओगे
सांप बिच्छू देख कर घबराओगे भाग न हरगिज़ वहां से पाओगे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

﴿8﴾ हम अब सिर्फ़ म-दनी चेनल देखते हैं

ग़ीबत करने सुनने की अ़ादत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की अ़ादत डालने के लिये
दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये
म-दनी क़ाफ़िलों में अ़ाशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी
गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्-अ़ामात के मुताबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना
फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर
अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये। सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में
ख़ूब सफ़र कीजिये, इस्लामी बहनें अपने महारिम के साथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की
सअ़ादत हासिल करें, आप की तरगीब के लिये म-दनी बहार गोश गुज़ार की जाती है चुनान्वे
शहदाद पूर (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक इस्लामी बहन (उम्र तक्रीबन 45 साल) के बयान का
खुलासा है कि हमारे घर में नमाज़ों की अदाएंगी की कोई तरकीब नहीं थी, केबल के ज़रीए
T.V. पर ख़ूब फ़िल्में और डिरामे देखे जाते। इल्मे दीन से महरूमी और नेक सोहबत से दूरी
की बिना पर आवे का आवा ही बिगड़ा हुवा था। हमारी खुश नसीबी कि अप्रील 2009 ई.
में हमारे अ़लाक़े के अन्दर दा'वते इस्लामी की इस्लामी बहनों का म-दनी क़ाफ़िला तशरीफ़



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उद्द पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज्जाक)

लाया । “अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा’वत” के दौरान म-दनी काफ़िले की इस्लामी बहनें हमारे घर भी आईं । उन की दा’वत पर मैं म-दनी काफ़िले की जाए क़ियाम पर होने वाले बयान में शरीक हुई । इस बयान ने मेरे दिल की दुनिया बदल डाली, मैं दरियाए ग़म में डूब गई कि अफ़सोस ! मेरी सारी उम्र गुनाहों में गुज़र गई । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों के म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से मुझे तौबा की सआदत मिली, न सिर्फ़ मैं ने बल्कि मेरी बेटियों ने भी पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ना शुरू कर दी और अब हमारे घर कोई और नहीं सिर्फ़ दा’वते इस्लामी का म-दनी चेनल देखा जाता है ।

दिल की कालक धुले सुख से जीना मिले आओ आओ चलें काफ़िले में चलो
छूटें बंद आदतें सब नमाज़ी बनें पाओगे रहमतें काफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْخَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

नमाज़ बुराइयों से बचाती है : देखी आप ने ! म-दनी काफ़िले की ब-र-कत ! रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इबादत से दूर रहने वाले घराने में اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ों की बहार आ गई ! हर मुसलमान को नमाज़ पढ़नी चाहिये اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ की ब-र-कत से बुराइयां भी छूट जाएंगी चुनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 21 सू-रतुल अन्कबूत आयत नम्बर 45 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالنُّکْرِۤیۡ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक नमाज़ मन्अ करती है
وَالنُّکْرِۤیۡ बे हयाई और बुरी बात से ।

इत्तिबाए न-बवी में खुशक टहनी हिलाई : नमाज़ की फ़ज़ीलत के क्या कहने ! चुनान्चे दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 743 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “जन्नत में ले जाने वाले आ’माल” सफ़हा 76 पर है : हज़रते सय्यिदुना अबू उस्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह غُذُوخِل उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

एक दरख़्त के नीचे खड़ा था कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस दरख़्त की एक खुशक टहनी को पकड़ा और उसे हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फरमाया : ऐ अबू उस्मान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने ऐसा क्यों किया ? मैं ने पूछा कि आप ने ऐसा क्यों किया ? तो फरमाया : एक मरतबा मैं रहमते आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था तो सरकारे मदीना صَلَّय ने इसी तरह किया और उस दरख़्त की एक खुशक टहनी को पकड़ कर हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फरमाया : ऐ सलमान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने यह अमल क्यों किया ? मैं ने अर्ज़ की : आप ने ऐसा क्यों किया ? इर्शाद फरमाया : बेशक जब मुसलमान अच्छी तरह वुजू करता है और पांच नमाज़ें अदा करता है तो उस के गुनाह इस तरह झड़ते हैं जिस तरह ये पत्ते झड़ जाते हैं। फिर आप صَلَّय ने यह आयते मुबा-रका पढ़ी :

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُفْقَائِنَ
الَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ
ذَلِكَ ذِكْرِي لِلذِّكْرَيْنِ ۝

(بَحْرُ الدَّامُوعِ ص १८०)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और नमाज़ काइम रखो दिन के दोनों कनारों और कुछ रात के हिस्सों में बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं यह नसीहत है नसीहत मानने वालों को।

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ९ ص १७८ حَدِيثُ २३७६८)

आज बनता हूं मुअज़्ज़ज़ जो खुले हृश में ऐब
अपव कर और सदा के लिये राजी हो जा

हाए रुस्वाई की आफत में फंसूंगा या रब غُذُوخِل
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब غُذُوخِل

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُونُوا إِلَى اللَّهِ اسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है ! (अबू या'ला)

﴿9﴾ ग़ीबत के सबब बरज़ख़ में कैद

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 स-फ़हात की किताब, "आंसूओं का दरिया" में है : फ़कीह अबुल हसन अली बिन फ़रहून कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْأُولٰی अपनी किताब "अज़्ज़ाहिर" में फ़रमाते हैं : मैं ने 555 सिने हिजरी में "शहरे फ़ास" में इन्तिक़ाल करने वाले अपने चचा को ख़्वाब में देखा कि घर के अन्दर तशरीफ़ लाए और दीवार से टेक लगा कर बैठ गए, मैं भी उन के सामने बैठ गया, मैं ने उन का बदला हुवा रंग देखा तो पूछा : "चचाजान ! आप को आप के रब عَزَّوَجَلَّ से क्या मिला ?" फ़रमाया : "बेटा ! मेहरबान से मेहरबानी के सिवा और क्या मिलता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ग़ीबत के इलावा हर चीज़ में मुझ पर नरमी फ़रमाई, मैं मरने के बा'द से ले कर अब तक ग़ीबत की वजह से हिरासत (या'नी कैद) में हूँ, अब तक मेरा येह गुनाह मुआफ़ नहीं हुवा, बेटा ! मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि ग़ीबत व चुग़ली से बचते रहना क्यूं कि मैं ने आख़िरत में ग़ीबत से बढ़ कर किसी और चीज़ पर पकड़ नहीं देखी ।" येह कह कर वोह मुझ से रुख़्सत हो गए ।

(بَحْرُ الْأُمُوع ص ۱۸۰)

घुप अंधेरा ही क्या वह्दशत का बसेरा होगा
गर कफ़न फाड़ कर सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा
डंक मच्छर का भी मुझ से तो सहा जाता नहीं
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी

क़ब्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रब !
हाए बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब !
क़ब्र में बिच्छू के डंक कैसे सहूंगा या रब !
हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

अफ़व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफाअत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

﴿10﴾ हिजड़े की महब्बत में फंसने की वजह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ग़ीबत ने फ़ौतगी के बा'द फंसा कर रख दिया ! ग़ीबत, चुगली, बद गुमानी वगैरा ऐसी ना मुराद आफ़ात हैं कि बसा अवकात इन्सान को हीने हयात या'नी जीते जी भी इबादात से दूर कर के मज़ीद गुनाहों के तन्दूर में झोंक देती हैं, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल कासिम कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي नक्ल करते हैं कि सय्यिदुना शैख़ अबू जा'फ़र बलख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : हमारे हां बलख़ में एक नौ जवान था। यूं तो वोह ख़ूब इबादत व रियाज़त किया करता मगर ग़ीबत की आफ़ात में मुब्तला था अक्सर कहता : फुलां ऐसा है, फुलां वैसा है। एक रोज़ मैं ने उसे लोगों के कपड़े धोने वाले हीजड़ों के पास से निकलता देखा, मैं ने उस से इस का सबब पूछा, कहने लगा : येह लोगों को बुरा भला कहने या'नी ग़ीबतें करने की सज़ा है कि मुझे इस हाल में डाल दिया गया है, अफ़सोस ! मैं इन में से एक मुख़न्नस (या'नी हीजड़े) की महब्बत में मुब्तला हो गया हूं, उसी मुख़न्नस के इश्क़ की वजह से मैं इन धोबी हीजड़ों की ख़िदमत करता हूं और रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से पहले मुझे जो बातिनी अहवाल हासिल थे सब जाते रहे। लिहाज़ा आप अल्लाह तआला से दुआ कीजिये कि मुझ पर रहम फ़रमाए।

कहीं ग़ीबत तो नहीं ले डूबी ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ग़ीबत की तबाहकारी ने एक इबादत व रियाज़त करने वाले नौ जवान को हिजड़े के इश्क़ में फंसा डाला ! ग़ीबतों की नुहूसतों के सबब वोह इबादतों की लज़ज़तों से भी महरूम हो गया। यहां वोह इस्लामी भाई ग़ौर फ़रमाएं जिन्हें पहले सुन्नतों भरे बयानों, प्यारे आका ﷺ की ना'तों, ज़िक्रुल्लाह और दुआओं में बहुत दिल जर्म्द हासिल होती थी मगर अब ऐसा नहीं बल्कि दिल हर दम गुनाहों की तरफ़ माइल रहता है, उन्हें कहीं “ग़ीबत” की आफ़ात तो नहीं ले डूबी ! सच्ची तौबा करें कि अल्लाह रब्बुल इज़ज़त عَزَّوَجَلَّ की रहमत बहुत बड़ी है।



फरमाने मुस्त्फा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिगफ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली
येह दिल नेकियों में नहीं लग रहा है

मेरा हृश्र में होगा क्या या इलाही !
इबादत का दे दे मज़ा या इलाही !

मुझे बे हिसाब बख़्श दे मेरे मौला
पए शाहे खैरुल वरा या इलाही !

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿11﴾ नमाज़ दोहराओ

हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन सबीह عليه رَحْمَةُ اللَّهِ السَّمِيع फ़रमाते हैं : दो आदमी मस्जिदुल हुराम शरीफ़ رَاٰهُمَا اللَّهُ شَرَفًاوُ تَعْظِيْمًا के एक दरवाज़े के करीब बैठे थे कि इतने में एक आदमी गुज़रा जो कि मुखन्नस मा'लूम हो रहा था, उसे देख कर ना गवारी महसूस करते हुए दोनों वहां से उठ गए । जब नमाज़ का वक़्त हुवा तो दोनों ने बा जमाअत नमाज़ अदा की । फिर उन्हें एहसास हुवा कि हम कहीं दिल की ग़ीबत में तो मुब्तला नहीं हो गए ! चुनान्चे फ़ौरन हज़रते सय्यिदुना अता की رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की ख़िदमते बा ब-र-कत में हाज़िर हो कर मस्अला पूछा, फ़रमाया : वुजू कर के अपनी नमाज़ दोहराओ, जब उन्होंने ने बताया कि हमारा रोज़ा भी है तो फ़रमाया : अपने रोज़े की भी क़ज़ा करो !

(دَمُ الْغَيْبَةِ لِابْنِ أَبِي الدُّنْيَا ص ٨٥ رقم ٤٢)

क्या ग़ीबत से रोज़ा टूट जाता है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा किसी मुसल्मान के लिये ज़ब्बए हक़ारत व नफ़रत और बद गुमानी दिल में जमाना दिल की ग़ीबत है । दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 984 पर सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : एहतिलाम हुवा या ग़ीबत की तो रोज़ा न गया (دُرْمُخْتَارُ ج ٣ ص ٤٢١, ٤٢٨) अगर्चे ग़ीबत बहुत सख़्त कबीरा (गुनाह) है । कुरआने मजीद में ग़ीबत करने की निस्बत फ़रमाया : “जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना ।” और हदीस में फ़रमाया :



फरमाने मुस्तफा : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शस्त्र मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

“**ग़ीबत** जिना से भी सख़्त तर है।” (النَّبِيُّ الْأَوْسَطُ ج ٥ ص ٦٣ حديث ٦٥٩٠) अगर्चे **ग़ीबत** की वजह से रोज़े की नूरानिय्यत जाती रहती है। सफ़ह 996 पर फ़रमाते हैं : झूट, चुगली, **ग़ीबत**, ग़ाली देना, बेहूदा (या’नी बे हयाई की) बात, किसी को तक्लीफ़ देना कि येह चीज़ें वैसे भी ना जाइज़ व हुराम हैं रोज़े में और जियादा हुराम और इन की वजह से रोज़े में **कराहत** आती है।

(बहारे शरीरत)

हर ख़ता तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की
 یا ^{عزوجل} इलाही ! मग़ि़रत कर बे कसो मजबूर की

❧12❧ एक हीजड़े की मग़िफ़रत की ह़िकायत

जो लोग हीजड़े (मुखन्नस, जन्खे, खुन्सा) से नफ़रत करते और उसे हक़ारत से देखते हैं, उन को ऐसा नहीं करना चाहिये कि येह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का बन्दा है और उसी عَزَّوَجَلَّ ने इसे पैदा फ़रमाया है और हीजड़े को भी चाहिये कि गुनाहों और नाच गानों जैसे हुराम और जहन्नम में ले जाने वाले काम से परहेज़ करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहते हुए सुन्नतो भरी ज़िन्दगी गुज़ारे। जो फ़ीतरतन مُحَنَّن या'नी हीजड़ा हो उस खुद को सताए जाने के सबब दील थोड़ा करने के बजाए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रहमत पर नज़र रखनी चाहिये। आइये एक खुश नसीब हीजड़े की हिक़ायत मुला-हज़ा फ़रमाइये, शायद हर हीजड़े को उस पर रश्क आए कि काश ! मेरे साथ भी ऐसा ही हो। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल वहहाब बिन अब्दुल मजीद स-क़फ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَوْف़ी फ़रमाते हैं : मैं ने एक जनाज़ा देखा जिसे तीन मर्द और एक ख़ातून ने उठा रखा था, ख़ातून की जगह मैं ने उठा लिया, नमाज़े जनाज़ा की अदाएंगी और तदफ़ीन के बा'द मैं ने उस ख़ातून से मा'लूम किया : मर्हूम से आप का क्या रिश्ता था ? बोली : मेरा बेटा था। पूछा : पड़ोसी वग़ैरा जनाज़े में क्यूं नहीं आए ? कहा : दर अस्त मेरा फ़रज़न्द मुखन्नस (या'नी खुन्सा, हीजड़ा) था। इस लिये लोगों ने इस के जनाज़े में शिर्कत को अहम्मिय्यत नहीं दी। सय्यिदुना शैख़ अब्दुल वहहाब बिन अब्दुल मजीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَوْف़ी फ़रमाते हैं : मुझे उस ग़मज़दा मां पर बड़ा रहम आया, मैं ने उसे



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफा की। (अब्दुर्रज़ाक)

कुछ रक़म और ग़ल्ला वगैरा पेश किया। उसी रात सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक आदमी चौदहवीं के चांद की तरह चेहरा चमकाता हुवा मेरे ख़्वाब में आया और शुक्रिया अदा करने लगा, मैं ने पूछा : **مَنْ أَنْتَ ؟** या'नी आप कौन हैं ? बोला : मैं वोही मुख़न्नस हूं जिसे आज आप ने दफ़न किया है, लोगों के मुझे हकीर समझने की वजह से **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने मुझ पर रहम फ़रमाया। (رساله قشيريّه ص ۱۷۳ مَلَخَصًا) **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की उन पर रहमत हो और उन के सद्के हमारी मरिफ़रत हो।

امین بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ ﷺ

तुम्हें मा'लूम क्या भाई ! खुदा का कौन है मक्बूल
किसी मोमिन को मत देखो कभी भी तुम हक़ारत से

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿13﴾ राना बद मआश

गीबत करने सुनने की अ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की अ़दत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और चोक दर्स, मस्जिद दर्स, बाज़ार दर्स वगैरा में शिक़त कीजिये और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** तौफ़ीक़ दे तो आप खुद भी रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत से कम अज़ कम दो दर्स दीजिये। चोक दर्स की एक म-दनी बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये चुनान्चे सूबा उतरांचल (हिन्द) के एक 20 सालह नौ जवान इस्लामी भाई ने जो कुछ लिख कर दिया वोह ब तसरुफ़ पेशे ख़िदमत है : मैं बुरी सोहबत के बाइस कमो बेश 14 साल की उम्र ही से जराइम के दलदल में फंस चुका था। शराब पीना और औरतों का पीछा करना मेरा महबूब मशग़ला था। फिर मैं ने बद मआशी शुरू कर दी। लोगों से बे वजह लड़ना, मारपीट करना, मेरी अ़दत में शामिल हो गया यहां तक कि मैं राना



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कजुल उमाल)

बद मआश के नाम से पहचाना जाने लगा । मैं उम्र में छोटा ज़रूर था मगर मैं किसी से डरे बिगैर सामने वाले पर पै दर पै वार करना शुरू कर देता था । हर तरफ़ मेरी धाक बैठ गई, लोग मेरे नाम से डरने लगे । वालिदैन् मुझ से बेज़ार हो चुके थे मगर बेबस थे । मेरे काले करतूत दिन ब दिन बढ़ते जा रहे थे । एक दिन गली के नुक्कड़ पर एक सब्ज़ इमामे वाले इस्लामी भाई को चोक दर्स देता देख कर मैं करीब जा खड़ा हुवा, जो कुछ सुना वोह मुझे बहुत अच्छा लगा । मैं ने किताब पर नज़र डाली तो उस पर फ़ैज़ाने सुन्नत लिखा था । दर्स देने वाले इस्लामी भाई ने मुझ से बड़ी महब्वत के साथ मुलाकात की और इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे म-दनी काफ़िले में सफ़र की दा'वत पेश की, फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स ने मेरे अन्दर हलचल मचा रखी थी, मैं ने हामी भर ली और आशिक़ाने रसूल के हमराह तीन दिन के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफ़िले में सफ़र करते हुए "जनक पूर" पहुंचा और मज़ीद तीन दिन के लिये राहे खुदा ﷺ में "जगन्नाथ पूर" जाने वाले म-दनी काफ़िले के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआदत हासिल की । ﷺ चोक दर्स और म-दनी काफ़िले में सफ़र की सआदत हासिल करने की ब-र-कत से मेरे दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, मैं ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली और दाढ़ी शरीफ़ सजाने की भी निय्यत कर ली । दुआ फ़रमाइये कि रब्बुल इज़ज़त मुझे इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए । मेरे घर वाले मुझ में आने वाले इस म-दनी इन्क़िलाब से बे इन्तिहा खुश हैं । वालिदैन् मोहतरमा दा'वते इस्लामी के लिये ख़ूब दुआएं करती हैं । ﷺ मुझ समेत मेरे घर वालों ने सिल्सिलए आलिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक ﷺ की गुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया है ।

जज़्बा गो सर्द हो, काफ़िले में चलो तुम जवां मर्द हो, काफ़िले में चलो
बख़्त खुल जाएंगे, काफ़िले में चलो जुर्म धुल जाएंगे, काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्ज़वाइद)

चाहे गुनाह आस्मान तक पहुंच गए हों : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ

की रहमत बहुत बड़ी है, बिलफ़र्ज किसी से बड़े से बड़े गुनाह भी सरज़द हो गए हों, वोह मायूस न हो, बेशक तौबा का दरवाज़ा खुला हुवा है। बन्दा सिदक़े दिल से उस के दरबारे करम बार में झुक जाए तो उस का फ़ज़लो करम अपनी आगोश में ले ही लेता है। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

لَوْ اَخْطَاْتُمْ حَتّٰی تَبْلُغَ خَطَايَاكُمْ السَّمَاءَ ثُمَّ تُبْتُمْ لَنَابٍ عَلَیْكُمْ : अगर तुम इतने गुनाह करो कि वोह आस्मान तक पहुंच जाएं फिर खुदा عَزَّوَجَلَّ से तौबा करो तो अल्लाह तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाएगा । (سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ٤ ص ٤٩٠ حدیث ٤٢٤٨)

बल्कि तौबा करने वाले से अल्लाह तबा-र-क व तअ़ाला इस क़दर राज़ी होता है कि हम इस का अन्दाज़ा ही नहीं लगा सकते ! इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूअ 132 स-फ़हात

पर मुश्तमिल किताब, “तौबा की रिवायात व हिकायात” सफ़हा 12 पर मरकूम है : सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुसरत निशान है :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मोमिन बन्दे की तौबा से उस शख्स से ज़ियादा खुश होता है जो किसी हलाकत खैज़ ज़मीन पर पड़ाव करे उस के साथ उस की सुवारी भी हो जिस पर उस के खाने पीने का सामान लदा हुवा हो फिर वोह सर रख कर सो जाए और जब बेदार हो तो उस की सुवारी जा चुकी हो, वोह उसे तलाश करे यहां तक कि उस पर धूप और प्यास या जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा ग़ालिब आ गई और वोह परेशान हो कर कहे कि मैं उसी जगह लौट जाता हूं जहां सो रहा था फिर सो जाता हूं यहां तक कि मर जाऊं फिर वोह अपनी कलाई पर सर रख कर मरने के लिये सो जाए फिर जब बेदार हो तो उस के पास उस की सुवारी मौजूद हो और उस पर उस का तोशा भी मौजूद हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मोमिन बन्दे की तौबा पर उस शख्स के अपनी सुवारी के लौटने पर खुश होने से भी ज़ियादा राज़ी होता है । (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है और उस पर इन्आमो इक्राम करता है)

(صَحِیحُ مُسْلِم ص ١٤٦٨ حدیث ٢٧٤٤)



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख़ा हो गया । (इब्ने सुन्नी)

न हो मायूस आती है सदा गोरे ग़रीबां से

ﷺ

عزوجل

नबी उम्मत का हामी है खुदा बन्दों का वाली है

﴿14﴾ ग़ीबत में लज़ज़त की वजह

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह ﷺ एक मर्तबा कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे, इस्नाए राह शैतान को देखा कि एक हाथ में शहद और दूसरे में राख उठाए चला जा रहा था, आप ﷺ ने पूछा : ऐ दुश्मने खुदा ! येह शहद और राख तेरे किस काम आती है ? बोला : शहद ग़ीबत करने वालों के होंटों पर लगाता हूं ताकि इस गुनाह में वोह और आगे बढ़ें और राख यतीमों के चेहरों पर मलता हूं ताकि लोग इन से नफ़रत करें ।

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ٦٦)

नाम निहाद भयानक सुकून : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकई ग़ीबत की भी अज़ीब लज़ज़त है कि जिस को इस मोहलिक मरज़ की चाट लग जाती है वोह जब तक किसी की बुराई बयान न कर ले उस को एक गूना बेचैनी सी रहती है और जब ग़ीबत कर के “भड़ास” निकाल लेता है तो सुकून मिल जाता है मगर येह वोह सुकून है जो कि बहुत सारी बे सुकूनियों का बाइस है । अल्लाह ﷻ इस “नाम निहाद भयानक सुकून” से हमें महफूज़ व मामून फ़रमाए और हमें अपनी और अपने प्यारे हबीब ﷺ की सच्ची महब्बत की बे क़रारी नसीब फ़रमाए ।

امين بجاه النبي الامين ﷺ

मेरे दिल को दर्दे उल्फ़त वोह सुकून दे इलाही !

عزوجل

मेरी बे क़रारियों को न कभी क़रार आए



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी। (मजमउज्जवाइद)

﴿15﴾ मरा हुवा ख़च्चर

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक मुर्दा ख़च्चर के करीब से गुज़रे तो बा'ज अहबाब से इर्शाद फ़रमाया : इसे पेट भर कर खाना मुसल्मान का गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) से बेहतर है।

(التوبيخ والتنبيه لابی الشیخ الاصبہانی ص ۹۷ رقم ۲۱۲)

صَلُّوا عَلَی الْکَیِّبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

﴿16﴾ इन्सान नुमा कुत्तों का सालन

हज़रते सय्यिदुना इमाम जैनुल आबिदीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَیْنِ ने किसी शख्स को ग़ीबत करते हुए सुना तो फ़रमाया : ग़ीबत से बचो, क्यूं कि येह इन्सान नुमा कुत्तों का सालन है।

(ذَمُّ الْغِیْبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْیَا ص ۱۸۱ رقم ۱۶۱)

कुत्तों से तशबीह देने की वजह : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़लूमे करबला हज़रते सय्यिदुना इमाम जैनुल आबिदीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَیْنِ ने ग़ीबत करने वालों को इन्सान नुमा कुत्तों के साथ इस लिये तशबीह दी है कि कुरआने मजीद और अहदादीसे मुबा-रका में ग़ीबत को मुर्दार का गोश्त खाने की मिस्ल बताया गया है और मुर्दार का गोश्त चबाना और खाना कुत्तों का काम है लिहाज़ा ग़ीबत करने वाले गोया कुत्तों की मिस्ल हो कर आदमियों की अक्साम से ख़ारिज हुए क्यूं कि अगर आदमी होते तो इन में आदमी की सिफ़्त होती और इन्सान की ख़स्लत इन में पाई जाती, किसी की ग़ीबत न करते, किसी का गोश्त कुत्तों की तरह न चबाते।

नबी का सदक़ा सदा ग़ीबतों से दूर रखना

कभी भी चुगली करूं मैं न या रब !

तेरे हबीब अगर मुस्कराते आ जाएं

तो गोरे तीरह में हो जाए चांदना या रब !

صَلُّوا عَلَی الْکَیِّبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया । (इने सुनी)

﴿17﴾ अनोखी छींक

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफिलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफर कीजिये, आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक म-दनी बहार पेशे खिदमत है चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस तरह का बयान है कि मेरी रीढ़ की हड्डी का मोहरा अपनी जगह से हिल गया था । बहुत इलाज कराया मगर इफ़ाका न हुवा । एक इस्लामी भाई के तरगीब दिलाने पर आशिकाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफिले में सफर किया । रात के खाने के वक़्त अचानक मुझे जोरदार छींक आई जिस से मेरा सारा जिस्म लरज़ उठा । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ उस अनोखी छींक की ब-र-कत से मेरी रीढ़ की हड्डी का मोहरा अपनी जगह पर दुरुस्त हो गया ।

रीढ़ की हड्डियों, की भी बीमारियों
ताजदारे हरम, का जो होगा करम

से मिलेगी शिफा, काफिले में चलो
पाएगा दिल जिला, काफिले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْخَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

छींक की ब-र-कतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! म-दनी काफिले की भी क्या ख़ूब बहारें हैं ! कि इस की ब-र-कत से जोरदार छींक आई और पीठ का मोहरा दुरुस्त हो गया ! छींक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द है और इस की भी क्या ख़ूब ब-र-कतें हैं ! दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ 32 स-फ़हात पर मुश्तमिल रिसाला, “101 म-दनी फूल” सफ़हा 13 ता 14 पर है : ﴿1﴾ जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلَیْ کُلِّ حَال कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फैर लिया करे तो اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से महफूज़ रहेगा । ﴿2﴾ हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم (مراۃ المناجیح ج ۶ ص ۳۹۶) ।



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

फरमाते हैं : जो कोई छींक आने पर **اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ** कहे तो वोह दाढ़ और कान के दर्द में कभी मुब्तला नहीं होगा। (مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح ج ۸ ص ۴۹۹ تحت الحديث ۴۷۳۹) 3) छींक आने पर **اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ** कहना चाहिये बेहतर येह है कि **اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ** या **اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ** कहे। 4) सुनने वाले पर वाजिब है कि फौरन **”يَرْحَمُکَ اللّٰہُ“** (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रहम फरमाए) कहे। और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला खुद सुन ले। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 119) 5) जवाब सुन कर छींकने वाला कहे : **”يَغْفِرُ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ“** (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़रत फरमाए) या येह कहे **”يَهْدِیْکُمْ اللّٰہُ وَیُصْلِحْ بِاَلْکُمْ“** (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा हाल दुरुस्त करे)। (आलमगीरी, जि. 5, स. 326)

18) अमरद के साथ मज़ाक़ करने वाले की गीबत

हज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْهَادِی फरमाते हैं : एक आबिद (या'नी इबादत गुज़ार आदमी) ने किसी “लड़के” से खुश तर्ब्द (मज़ाक़ मस्खरी) की। जब दूसरे आबिदों को मा'लूम हुवा तो वोह **बद गुमानियों** और **गीबतों** में पड़ गए कि ओहो ! ऐसा परहेज़ गार आदमी हो कर भी **अमरद** (या'नी ख़ूब सूत लड़के) के चक्कर में फंस गया वगैरा। रफ़ता रफ़ता येह ख़बर उस आबिद तक पहुंच गई तो उस ने कहा : ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने “लड़के” के साथ साफ़ निय्यत वालों के लिये तफ़रीह्न हंसने बोलने को **हराम** नहीं किया, अलबत्ता **बद गुमानी** और **गीबत** को ज़रूर **हराम** किया है। तुम्हें किस ने कह दिया कि **बद गुमानी** और **गीबत** हलाल है !

(ماخوذ از: بوستان سعدی ص ۱۸۹)

किसी को “अमरद परस्त” कहना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई क़ाबिले तवज्जोह हिकायत है। इस में कोई शक नहीं कि बड़े इस्लामी भाइयों को अमरदों (बे रीश लड़कों) से दूर ही रहना चाहिये, ताहम किसी को **अमरद** के साथ देख कर उस के बारे में **बद गुमानियां**



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عُزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

करने की शरअन हरगिज़ इजाज़त नहीं। याद रखिये! मुसल्मान पर बद गुमानी हुराम है। ऐसे मौक़अ पर कहे जाने वाले मु-तवक्कअ ग़ीबतों और गुनाहों भरे जुम्लों की 5 मिसालें मुला-हज़ा हों: ﴿1﴾ वोह “अमरद परस्त है” ﴿2﴾ उस ने अमरद से जोड़ी बनाई है ﴿3﴾ ख़ूब सूरत लड़कों से तरकीबें बनाता है ﴿4﴾ निय्यत ख़राब मा’लूम होती है ﴿5﴾ कुछ किया तो जूते खाएगा वग़ैरा वग़ैरा।

हुस्ने ज़न का जाम पीजिये : बिलफ़र्ज़ ज़ेहनी तौर पर वोह शख्स वाक़ेई ऐसा हो तब भी आप के पास इस का कौन सा वाज़ेह करीना है? अगर आप के पास यकीनी मा’लूमात हैं तो अच्छी अच्छी निय्यतें कर के बेशक उस को तन्हाई में समझाइये, आख़िर दूसरों के सामने ग़ीबत करने में क्या मस्लहत है? बहर हाल तौबा तौबा और तौबए ताम्म कीजिये, अल्लाह عُزَّوَجَلَّ का नाम लीजिये, करने का काम कीजिये और अगर दिल के अन्दर बद गुमानी पैदा हो रही है तो हुस्ने ज़न का जाम पीजिये कि फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ है: **حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ** : या’नी हुस्ने ज़न उम्दा इबादत है। (मुसन्नद़ इमाम अहमद ज ३ ص ५६७ حديث १०३६८) दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1548 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “फ़ैज़ाने सुन्नत” जिल्द अव्वल सफ़हा 523 पर है मेरे आका आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن नक्ल फ़रमाते हैं: ख़बीस गुमान ख़बीस दिल ही से पैदा होता है। (फ़तावा र-जविय्या, जि. 22, स. 400) बेशक दिल का हाल रब्बे जुल जलाल عُزَّوَجَلَّ ही जानता है लिहाज़ा जो लोग वाक़ेई “अमरद परस्त” हैं और बा वुजूद शहवत के इन से दोस्तियां करते हैं। उन को खुदा का ख़ौफ़ करना चाहिये। और इस लरज़ा ख़ैज़ हिकायत पर गौर कर के अपनी अक़िबत की फ़िक्क करनी चाहिये चुनान्वे

﴿19﴾ दो अमरद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी

दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 472 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बयानाते अत्तारिय्या” हिस्सए दुमुव सफ़हा 123 ता 127 पर है :



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अहमद मुअज़्ज़िन عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमाते हैं : मैं त्वाफ़े का'बा में मशगूल था कि एक शख्स पर नज़र पड़ी जो ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर एक ही दुआ की तक्कार कर रहा था : “**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दुनिया से मुसल्मान ही रुख़्सत करना ।” मैं ने उस से पूछा : इस के इलावा कोई और दुआ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : मेरे दो भाई थे, बड़ा भाई **चालीस साल** तक मस्जिद में बिला मुआ-वज़ा अज़ान देता रहा । जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने कुरआने पाक मांगा, हम ने उसे दिया ताकि इस से ब-र-कतें हासिल करे, मगर **कुरआन शरीफ़** हाथ में ले कर वोह कहने लगा : “तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं कुरआन के तमाम ए'तिकादात व अहकामात से बेज़ारी ज़ाहिर करता और **नसरानी** (क्रिस्चेन) मज़हब इख़्तियार करता हूं ।” फिर वोह मर गया । इस के बा'द **दूसरे भाई** ने **तीस बरस** तक मस्जिद में फ़ी सबीलिल्लाह عَزَّوَجَلَّ अज़ान दी । मगर उस ने भी आखिरी वक़्त **नसरानी** (या'नी क्रिस्चेन) होने का इक़्रार किया और मर गया । लिहाज़ा मैं अपने ख़ातिमे के बारे में बेहद फ़िक्र मन्द हूं और हर वक़्त **ख़ातिमा बिलख़ैर** की दुआ मांगता रहता हूं । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अहमद मुअज़्ज़िन عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से इस्तिफ़सार फ़रमाया कि तुम्हारे दोनों भाई आखिर ऐसा कौन सा गुनाह करते थे ? उस ने बताया : “**वोह ग़ैर औरतों में दिल चस्पी लेते थे और अम्मदों** (या'नी बे रीश लड़कों) **को** (शहवत से) **देखते थे ।”**

(الرَّوْضُ الْفَائِقُ ص ١٤)

रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़ब हो गया ! क्या अब भी ग़ैर औरतों से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी से बाज़ नहीं आएंगे ? क्या अब भी ग़ैर औरतों नीज़ अपनी भाभी, चची, ताई, मुमानी (कि येह सब भी शरअन ग़ैर औरतें ही हैं इन) से अपनी निगाहें नहीं बचाएंगे ? इसी तरह चचाज़ाद, तायाज़ाद, मामूज़ाद, फूफीज़ाद और ख़ालाज़ाद का नीज़ बीबी की बहन और बहनोई का आपस में पर्दा है । **ना महरम पीर और मुरी-दनी** का भी पर्दा है । मुरी-दनी अपने ना महरम पीर का हाथ नहीं चूम सकती ।



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

अमरद को शहवत से देखना हराम है : ख़बरदार ! अमरद तो आग है आग ! अमरद का कुर्ब, उस की दोस्ती उस के साथ मज़ाक़ मस्ख़री, आपस में कुशती, खींचातानी और लिपटा लिपटी जहन्नम में झोंक सकती है। अमरद से दूर रहने ही में अफ़ियत है अगर्चे उस बेचारे का कोई कुसूर नहीं, अमरद होने के सबब उस की दिल आज़ारी भी मत कीजिये, मगर उस से अपने आप को बचाना बेहद ज़रूरी है। हरगिज़ अमरद को स्कूटर पर अपने पीछे मत बिठाइये, खुद भी उस के पीछे मत बैठिये कि आग आगे हो या पीछे उस की तपश हर सूरत में पहुंचेगी। शहवत न हो जब भी अमरद से गले मिलना महल्ले फ़ितना (या'नी फ़ितने की जगह) है, और शहवत होने की सूरत में गले मिलना बल्कि हाथ मिलाना बल्कि फु-क़हाए किराम **فَرَمَاتے جَفْمُہُمُ اللّٰہُ السَّلَام** किराम फ़रमाते हैं : **अमरद की तरफ़ शहवत के साथ देखना भी हराम है।** (لُرْمُخْتَار ج ۲ ص ۹۸، تفسیرات احمدیہ ص ۵۵۹) उस के बदन के हर हिस्से हत्ता कि लिबास से भी निगाहों को बचाइये। इस के तसव्वुर से अगर शहवत आती हो तो इस से भी बचिये, उस की तहरीर या किसी चीज़ से शहवत भड़कती हो तो उस से निस्वत रखने वाली हर चीज़ से नज़र की हिफ़ाज़त कीजिये, हत्ता कि उस के मकान को भी मत देखिये। अगर उस के वालिद या बड़े भाई वगैरा को देखने से उस का तसव्वुर काइम होता है और शहवत चढ़ती है तो उन को भी मत देखिये।

अमरद के साथ 70 शैतान : अमरद के ज़रीए किये जाने वाले शैताने अय्यार व मक्कार के तबाहकार वार से ख़बरदार करते हुए मेरे आका आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ** फ़रमाते हैं : मन्कूल है : औरत के साथ दो^२ शैतान होते हैं और अमरद के साथ सत्तर।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 721)

बहर हाल अज्जबिय्या औरत (या'नी जिस से शादी जाइज़ हो) उस से और अमरद से अपनी आंखों और अपने वुजूद को दूर रखना सख़्त ज़रूरी है वरना अभी आप ने उन दो भाइयों की अम्वात के तश्वीश नाक मुआ-मलात पढ़े जो ब ज़ाहिर नेक थे। मेहरबानी फ़रमा कर दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ मुख़्तसर रिसाला अमरद पसन्दी



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अज़्र लिखता है और किरात उहुद पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज़ाक)

की तबाह कारियां का मुता-लआ फरमा लीजिये ।

नफ़से बे लगाम तू गुनाहों पे उक्साता है

तौबा तौबा करने की भी आदत होनी चाहिये

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ مُحَمَّدٌ

﴿20﴾ शैख़ सा'दी के उस्ताज़ ने क्या ख़ूब टोका

हज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : मैं ने एक बार अपने उस्तादे मोहतरम हज़रते अल्लामा अबुल फ़रज अब्दुर्रहमान बिन जौजी سے अर्ज़ की : मैं लोगों में दर्से हदीस पेश करता हूँ तो फुलां शख़्स हसद करता और जलता है ! उस्तादे मोहतरम ने फ़रमाया : ऐ सा'दी ! तअज्जुब है कि तुम हसद को तो बुरी चीज़ तस्लीम करते हो मगर मेरे सामने किसी को “हासिद” कह कर उस की बिला तकल्लुफ़ ग़ीबत कर रहे हो ! आख़िर तुम्हें येह किस ने कह दिया कि सिर्फ़ हसद ही हुराम है क्या ग़ीबत हुराम नहीं ? याद रखो ! अगर हासिद जहन्नम का हक़दार है तो ग़ीबत करने वाला भी अज़ाबे नार का सज़ावार है ।

(بوستانِ سعدی ص ۱۸۸ مَلْخَصاً)

ग़ीबत से रोकना कब वाजिब है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحَنَ اللّٰهِ ! असातिज़ा हों तो ऐसे ! सिर्फ़ मख़सूस अस्बाक़ पढ़ाने ही से ग़रज़ न हो, बल्कि त-लबा की अख़्लाकी तरबियत का भी ध्यान रखें, एक उस्ताज़ ही क्या हर मुसल्मान अपनी इस ज़िम्मेदारी को समझे और नेकी की दा'वत और गुनाह से मुमा-न-अत की तरकीब व सूरत बनाता रहे । येह मस्अला ज़ेह्न में रखिये कि जब कोई शख़्स गुनाह म-सलन ग़ीबत कर रहा हो उस वक़्त मौजूद शख़्स का ज़न्ने ग़ालिब हो कि मैं मन्अ करूंगा तो येह बाज़ आ जाएगा तो उस के लिये वाजिब है कि उस को ग़ीबत से रोके, अगर नहीं रोकेगा तो गुनहगार होगा । दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत”



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

हिस्सा 16 सफ़हा 255 पर है : सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अलीशान है : “क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है ! या तो अच्छी बात का हुक्म करोगे और बुरी बात से मन्अ करोगे या अल्लाह तआला तुम पर जल्द अपना अज़ाब भेजेगा, फिर दुआ करोगे और तुम्हारी दुआ क़बूल न होगी।” (सुन्न त्रिमुज़ी ज ६ व १९ व २१११)

हसद के मु-तअल्लिक़ ग़ीबत की सात मिसालें : “बोस्ताने सा’दी” की हिकायात से येह भी सीखने को मिला कि “फुलां मुझ से हसद करता है” कहना ग़ीबत है, बल्कि येह जुम्ला ग़ीबत से भी सख़्त गुनाह तोहमत की तरफ़ जा रहा है क्यूं कि “हसद” बातिनी अमराज़ में से है और इस का तअल्लुक़ दिल से है अगर्चे कभी कभार वाजेह़ क़राइन (या’नी बिल्कुल साफ़ अलामतों) से भी हसद का इज़हार हो जाता है मगर अक्सर लोग क़ियास ही से किसी को हासिद कह दिया करते हैं। हसद के मु-तअल्लिक़ ग़ीबत के मज़ीद सात फ़िक़रात मुला-हज़ा हों : ★ जल कुक्कड़ है ★ मुझ से जलता है ★ मेरी तरक्की देख नहीं सकता ★ मेरी खुशी से खुश नहीं हुवा ★ मेरा नुक़सान चाहता है ★ मेरी भलाई में राज़ी नहीं ★ मुझे देख कर उस के तन बदन में आग लग गई।

बहरे शाहे करबला मेरा गुनाहों का मरज़
फ़िक़रे नज़रू रूहो क़ब्रो ह़शर से बच जाता गर

दूर कर दीजे खुदारा ऐ तबीबे ज़ी व़कार
काश ! होता आप की गलियों का मैं गर्दो गुबार

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُؤْنُوْا اِلَی اللّٰہِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हातरत है । (अबू या'ला)

﴿21﴾ मिनी सिनेमा घर बन्द कर दिया

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्ज़ामात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़्रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये । आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार करता हूँ चुनान्वे एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि सूबए पंजाब के ज़िलअ बहावल पूर की तहसील टैलवाला में एक साहिब (उम्र तक्रीबन 37 साल) का मिनी सिनेमा घर था, वोह रोज़ाना कई शो चलाते जिस में सेंकड़ों अफ़ाद फ़िल्में देखते और अपनी आंखों में जहन्नम की आग़ भरने का सामान किया करते । इलावा अर्ज़ी वोह किराए पर फ़िल्मों की वीसीडीज़ भी दिया करते । एक मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें म-दनी चैनल चलाने की तरगीब दी, खुश किस्मती से उन साहिब ने कभी कभार म-दनी चैनल चलाना शुरूअ किया, जिसे वोह खुद भी देखा करते । चन्द हफ़्तों के बा'द या'नी 9 शा'बानुल मुअज़्ज़म 1430 हि. को "यज़मान" शहर में होने वाले "इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त" में सेंकड़ों इस्लामी भाइयों के सामने उन्होंने बताया कि म-दनी चैनल की ब-र-कत से मेरे अन्दर ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ पैदा हुवा है मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली है और अपना मिनी सिनेमा बन्द कर दिया है, नीज़ उन्होंने ने नमाज़ों की पाबन्दी करने, दाढ़ी शरीफ़ सजाने और र-मज़ानुल मुबारक में दा'वते इस्लामी के 10 दिन के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठने की अच्छी अच्छी नियतें कीं । क़ादिरिय्या र-ज़विय्या सिल्सिले में बैअत हो कर हुजूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْأَكْرَم के मुरीद बन गए । उन्होंने ने फ़िल्मों वग़ैरा की तक्रीबन 40 हज़ार रुपै मालियत की वीडियो सीडीज़



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ात करूंगा। (कन्जुल उमाल)

जाएअ कर दीं। मिनी सिनेमा की जगह पर मक्तबा काइम किया जिस में मक-त-बतुल मदीना का सामान या'नी किताबें, वीसीडीज़ वगैरा रखीं और रिज़्के हलाल कमाने में मसरूफ़ हो गए। अल्लाह عزّوجلّ उन्हें और हमें इस्तिफ़ामत नसीब फ़रमाए।

امين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ ﷺ

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही

मुझे नेक बन्दा बना या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْتُوا إِلَى اللَّهِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿22﴾ दोनों में से कौन बेहतर ?

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से किसी ने सुवाल किया : जो शख्स (नफ़ली) इबादत भी ज़ियादा करता है और गुनाह भी ज़ियादा करता है वोह बेहतर है या वोह जो कि (नफ़ली) इबादत भी कम करता है और गुनाह भी कम करता है ? हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने जवाब दिया जो शख्स (नफ़ली) इबादत कम करता है और गुनाह भी कम करता है वोह बेहतर है और सलामती उसी के लिये है। (مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ ج ٨ ص ٩٦، تَنْبِيْهُ الْغَافِلِينَ ص ٢٠٢)

छोड़ने में ज़ियादा सवाब है।



फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरस्ते उस के लिये इस्तिग़फ़र करते रहेंगे। (त-बरानी)

हकीकी मुत्तकी कौन ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फी ज़माना मुत्तकी व परहेज़ गार होने का दारो मदार ज़ाहिरी नफ़ली इबादतों म-सलन नफ़ली नमाज़ों और नफ़ली रोज़ों पर ही रह गया है, जो शख़्स ब कसरत नवाफ़िल पढ़ता या बहुत नफ़ली रोज़े रखता है या अक्सर तस्बीह हाथ में रखता और ख़ूब ज़िक्रो अज़्कार करता और गिड़गिड़ा कर दुआएं किया करता है या स-दका ख़ैरात बहुत करता है, उसी को लोग मुत्तकी और परहेज़ गार कहा करते हैं, अगर्चे इन इबादतों के साथ साथ दिन भर लोगों की ग़ीबतें करता फिरता हो, बिला वजह मुसल्मानों को झाड़ता और उन के दिल दुखाता हो तब भी उस के तक्वे को आंच नहीं आती ! अगर कोई आदमी ज़ाहिर में नफ़ली इबादत कम करता हो मगर ग़ीबत वग़ैरा गुनाहों से बचता हो उस को फी ज़माना मुत्तकी नहीं कहा जाता। इस की वजह कहीं येह तो नहीं कि लोगों की नज़र में ग़ीबत करने न करने की कुछ अहम्मियत ही नहीं। याद रखिये ! जो फ़राइज़, वाजिबात और मुअक्कदा सुन्नतों की पाबन्दियों के साथ साथ ग़ीबतों वग़ैरा गुनाहों से भी बचता हो। वोह बहुत बड़ा मुत्तकी है। बाकी चाहे कोई सारा ही साल नफ़ली रोज़े रखे, सारी सारी रात नफ़ली इबादात बजा लाए, हर साल हज़ को जाए, हर बरस र-मज़ानुल मुबारक में उमरे की सआदत पाए, दाढ़ी रखाए, जुल्फें बढ़ाए, इमामा शरीफ़ सजाए ब ज़ाहिर कैसा ही नेक सूरत हो मगर ग़ीबतें करता हो, मुसल्मानों के उयूब खोलता उन के दिल दुखाता हो वोह मुत्तकी व परहेज़ गार तो ख़ाक होगा, “नेक बन्दा” भी नहीं, फ़ासिक व गुनहगार और अज़ाबे नार का हक़दार है।

उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब अता करम से हो ऐसी मुझे हया या रब
किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और सुनें न कान भी ऐबों का तज़्किरा या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿23﴾ एक बार की हुई ग़ीबत के सबब बेहोश हो गए

हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एक मक़ाम से गुज़रे तो बेहोश हो गए। होश आया तो लोगों ने बेहोशी का सबब पूछा : फ़रमाया : यहां पहुंचते ही एक दम याद आया कि इस



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

मक़ाम पर मैं ने एक शख्स की गीबत की थी लिहाज़ा मुझे अल्लाह عزّوجلّ की पकड़ और आखिरत के हिसाब का खयाल आ गया इस खौफ़ से मैं बेहोश हो गया । (نُزهة المجالس ج ۱ ص ۱۹۹)

बरोज़े हशर ईट और धागे का मुता-लबा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुजुर्गों का खौफ़े खुदा عزّوجلّ भी मरहबा ! किसी गुनाह से लाख तौबा करें मगर खौफ़ ख़त्म नहीं होता, नदामत नहीं जाती, एक हम हैं कि गुनाह करने के बा'द हंसते हंसते अपने गालों पर बारी बारी हाथ लगा कर दिल को मना लेते हैं कि हम गुनाहों से साफ़ सुथरे हो चुके और फिर उस गुनाह को अपने पर्दे खयाल से हर्फ़े ग़लत की तरह मिटा देते और अपनी मस्तियों में बद मस्त हो जाते हैं ! आह ! क़ियामत का हिसाब ! खुदा की क़सम ! बिल खुसूस हुकूकुल इबाद का मुआ-मला इन्तिहाई तश्वीश नाक है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رحمه الله القوی फ़रमाते हैं : क़ियामत में अपना हक़ वुसूल करने के लिये एक शख्स दूसरे का हाथ पकड़ लेगा वोह दूसरा शख्स कहेगा : मैं तुझे नहीं पहचानता, तू कौन है ? पहला शख्स कहेगा : तूने मेरी दीवार से एक ईट निकाली थी और तूने मेरे कपड़े से धागा निकाला था । (इस सबब से मैं तुझ पर अपने हक़ की वुसूली के लिये दा'वा करता हूँ) (احياء العلوم ج ۵ ص ۹۹)

चालीस बरस से रो रहा हूँ : इसी लिये हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ الْفَهِين लोगों के ब जाहिर इन्तिहाई मा'मूली नज़र आने वाले हुकूक से भी बहुत डरते थे । हज़रते सय्यिदुना कहमस رحمه الله تعالى फ़रमाते हैं : मैं एक गुनाह की नदामत के सबब चालीस बरस से रो रहा हूँ । किसी ने पूछा : या सय्यिदी ! वोह कौन सा गुनाह है ? फ़रमाया : एक मरतबा मेहमान के लिये मछली ली थी फिर उस के खाने के बा'द हाथ धोने के लिये मैं ने अपने पड़ोसी की दीवार से बिला इजाज़त मिट्टी का टुकड़ा ले लिया था । (رساله فُشیریه ص ۱۴۹)



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अब्दुर्रज़ाक)

बहुत कोशिशों की गुनह छोड़ने की
ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है

रहे आह ! नाकाम हम या इलाही
येह तेरा ही तो है करम या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿24﴾ गीबत करने वाले का वक़ार जाता रहता है

एक दाना (अक्ल मन्द) के सामने किसी शनासा ने एक मुसल्मान की गीबत की, उस दाना ने कहा : ऐ शख्स ! पहले मेरा दिल फ़ारिग़ था, अब तूने गीबत के ज़रीए मेरा दिल उस मुसल्मान के ऐबों के मु-तअल्लिक वस्वसों और नफ़रतों में मशगूल कर दिया और उस मुसल्मान को मेरी नज़र में हकीर बनाने की सअय की और इस तरह से तू भी मेरे नज़्दीक “गन्दा” हुवा, क्यूं कि मैं समझता था कि तू अमीन (या’नी अमानत दार) है और बात को ख़ूब छुपाता है, अब जब कि तूने उस का ऐब खोला तो मा’लूम हो गया कि तू अमीन नहीं है तेरे दिल में कोई बात रुकती नहीं ।

(ماخوذ از تنبيه الغافلين ص ٩٢)

﴿25﴾ माज़ी की याद..... दो नाबीना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई गीबत करने वाला खुद ही गन्दा बनता और ज़लील होता है । लोग गीबत के अदियों से कतराते, घिन खाते और खुद को बचाते हैं । अपने लड़कपन की धुंदली यादों में से दो नाबीनाओं का तज़्किरा करता हूं । एक नाबीना मुकम्मल दाढ़ी वाला, कुरआने पाक का बहुत पक्का हाफ़िज़ और मज़हबी वज़अ क़तअ का शख्स था मगर बातें और गीबतें बहुत ज़ियादा किया करता था, किसी को नहीं छोड़ता था, मैं (या’नी सगे मदीना (عَلَيْ عَنهُ) उस से कतराता था । दूसरा नाबीना दाढ़ी मुन्डा या ख़शख़शी दाढ़ी वाला आम सा आदमी था, उस की ख़ूबी येह थी कि एक दम ख़ामोश तबीअत था उस का नाम तक मुझे मा’लूम नहीं, कभी भी उस के मुंह से मैं ने किसी की गीबत नहीं सुनी, मुझे नमाज़ के बा’द बारहा लाठी पकड़ कर उसे उस के घर तक ले जाने का मौक़अ मिला है । लगे हाथों नाबीना को चलाने की फ़ज़ीलत भी मुला-हज़ा कीजिये ।



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

नाबीना को चालीस क़दम चलाने की फ़ज़ीलत : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मल्बूआ 244 स-फ़हात पर मुशतमिल किताब, "बिहिश्त की कुन्जियां" सफ़हा 226 पर है : हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि जो किसी नाबीना को चालीस क़दम हाथ पकड़ कर चलाएगा उस के चेहरे को जहन्नम की आग नहीं छूएगी।

(تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر ج ٤ ص ٣)

नाबीना को चलाने का तरीक़ा : एक और रिवायत भी मुला-हज़ा हो चुनान्चे ! हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि खा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिस ने किसी नाबीना को एक मील तक चलाया तो उसे मील के हर ज़िराअ (या'नी गज़) के बदले एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा। जब तुम नाबीना को चलाओ तो उस का उलटा हाथ अपने सीधे हाथ से थाम लो कि येह भी स-दका है।

(ألفردوس بمأثور الخطاب ج ٥ ص ٣٥٠ حدیث ٨٣٩٧)

गुलाम आज़ाद करने की फ़ज़ीलत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खुदाए रहमान रज़ुअल रहमतों पर कुरबान कि उस ने हमारे लिये सवाब कमाना किस क़दर आसान रखा है। गुलाम आज़ाद करने पर क्या सवाब मिलता है इस बारे में ब कसरत रिवायात हैं, अल्लाह रज़ुअल चाहे तो अपने फ़ज़लो करम से नाबीना का हाथ पकड़ कर चलाने पर वोह सब सवाब अता फ़रमा दे। तरगीब के लिये एक हदीसे मुबारक बयान की जाती है चुनान्चे सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़िफ़रत निशान है : जो शख़्स मुसल्मान गुलाम को आज़ाद करेगा इस (गुलाम) के हर उज़्व के बदले में अल्लाह रज़ुअल उस (आज़ाद करने वाले) के हर उज़्व को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाएगा। सईद बिन मरजाना रज़ुअल फ़रमाते हैं : मैं ने जब सय्यिदुना जैनुल अबिदीन रज़ुअल की ख़िदमते अली



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़यामत के दिन मेरी शफ़ात मिलेगी ॥ (मजमउज़्ज़वाइद)

में येह हदीसे पाक सुनाई तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना एक ऐसा गुलाम आज़ाद कर दिया जिस की हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا दस हज़ार दिरहम कीमत लगा चुके थे !
(صحيح بخاری ج ۲ ص ۱۵۰ حدیث ۲۵۱۷)

कुछ ऐसा कर दे मेरे किर्द-गार आंखों में हमेशा नक्श रहे रूए यार आंखों में
न कैसे येह गुलो गुन्चे हों ख़्वार आंखों में बसे हुए हैं मदीने के ख़ार आंखों में

﴿26﴾ म-दनी चेनल की ब-र-कत से ग़ीबत से परहेज़

हैदरआबाद (पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि हमारे घर वालों ने तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के सो फ़ी सदी इस्लामी चेनल या'नी सुन्नतों भरे म-दनी चेनल पर "ग़ीबत की तबाह कारियों" के मौजूअ पर एक मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी का बयान सुना। जिस में उन्होंने ने मुआशरे में बोले जाने वाले ग़ीबत के अल्फ़ाज़ की तरफ़ भी तवज्जोह दिलाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ उस बयान को सुन कर ग़ीबत से बचने का बहुत ज़ेहन बना। एक मर्तबा मैं ने घर के अन्दर कहा कि "छोटा भाई फुलां चीज़ ले कर अभी तक वापस नहीं आया, बहुत सुस्त है।" तो मेरी वालिदए मोहतरमा ने फ़ौरन मेरी गरिफ़्त फ़रमाई कि येह तो तुम ने उस की ग़ीबत कर डाली क्यूं कि तुम ने उस को "बहुत सुस्त" कह कर उस की बुराई की ! चुनान्चे मैं ने फ़ौरन तौबा की। अब घर के अफ़राद की येह हालत है कि बात बात पर एक दूसरे की तवज्जोह दिलाते हैं कि अभी जो बात हुई या फुलां लफ़ज़ बोला कहीं येह ग़ीबत तो नहीं !

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

मुझे नेक बन्दा बना या इलाही عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُؤْنُوْا اِلَی اللہِ اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया। (इब्ने सुन्नी)

«27» “वोह मुर्दे की तरह सोया है” कहना

हजरते सय्यिदुना शैख सा'दी عليه رحمة الله الهادي फरमाते हैं : मैं बहुत छोटी ही उम्र से रातों को जाग कर इबादत किया करता था। एक बार वालिदे मोहतरम के साथ सारी रात इबादत में गुजारी और तिलावते कुरआन करता रहा। चन्द अपराद हमारे करीब मजे से सो रहे थे। मैं ने वालिदे मोहतरम से कहा : इन में से कोई एक भी ऐसा नहीं जो उठ कर (तहज्जुद के) दो नफल ही पढ़ ले, येह तो मुर्दों की तरह सोए पड़े हैं ! वालिदे गिरामी ने फरमाया : बेटा ! तुम इबादत करने के बजाए सारी रात सोए रहते येही बेहतर था क्यूं कि तुम बेदार रह कर ग़ीबत की आफ़त में गरिफ़्तार हो गए।

(تفسير رُوح البَيان ج ٩ ص ٨٩)

“ग़ीबत करना गुनाह है” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से

नफ़ली कामों के मु-तअल्लिक़ ग़ीबत की 14 मिसालें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से मा'लूम हुवा की तहज्जुद वगैरा नफ़ली इबादात से गाफ़िल हो कर सारी रात सोया रहना उस के हक़ में बेहतर है जो कि रात भर इबादत तो करे मगर ग़ीबत की आफ़त में भी जा पड़े। तहज्जुद व नवाफ़िल अदा करना बेशक कारे सवाब है मगर ग़ीबत करने वाला हक़दारे अज़ाब है। इस हिकायत में उन लोगों के लिये इब्रत के कसीर म-दनी फूल हैं जो बिला हाजते शर-ई इस तरह से ग़ीबतें करते हैं म-सलन

- ★ फुलां इशराक़ चाशत नहीं पढ़ता
- ★ उस को बहुत जगाया मगर फ़ज्र (या) तहज्जुद के लिये नहीं उठा, बस
- ★ मुर्दे की तरह सोया पड़ा रहा
- ★ बा जमाअत नमाज़ की पाबन्दी नहीं करता
- ★ पीर शरीफ़ का रोज़ा नहीं रखता
- ★ जब भी इज्तिमाअ की दा'वत देता हूं “आंटी मार देता है”
- ★ म-दनी इन्आमात पर अमल करने में सुस्त है
- ★ इज्तिमाअ में देर से आता या
- ★ बाहर बस्तों पर घूमता या
- ★ होटल में बैठा या
- ★ दोस्तों के साथ बातें करता रहता है
- ★ म-दनी मश्वरे में हमेशा ताख़ीर से आता है
- ★ कभी म-दनी काफ़िले में सफ़र नहीं करता और
- ★ समझाओ तो झूठे बहाने कर देता है।



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब् और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्जवाइद)

﴿28﴾ बुराई करने वाले के साथ भलाई की अनोखी हिकायत

हज़रते सय्यिदुना सुल्तानुल मशाइख़ ख़्वाजा महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ की एक आदमी ख़ूब ग़ीबतें करता और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ पर तरह़ तरह़ की तोहमतें बांधता फिरता था । इस के बा वुजूद आप रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ उस के घर खर्च के लिये रोज़ाना कुछ न कुछ भिजवा दिया करते थे, तबील मुद्दत तक येह सिल्लिसला चलता रहा । एक दिन उस की जौजा ने ग़ैरत दिलाते हुए कहा : दस्तूर तो येह है कि जिस का खाना उस का गाना, मगर येह कहां का इन्साफ़ है कि जिस का खाना उसी पर गुराना ! आप भी अज़ीब शख़्स हैं कि एक ऐसे बुजुर्ग के पीछे लगे हुए हैं जो बिग़ैर सुवाल आप के बच्चों को पाल रहा है ! बीबी की बातें सुन कर उस को नदामत हुई, ग़ीबतों और तोहमतों से बाज़ आ गया । उसी रोज़ से हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने भी अख़्वाजात भिजवाने बन्द कर दिये । वोह हाज़िरे दरबार हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : **सरकार !** इस में क्या हिक्मत है कि जब तक आप के बारे में खुराफ़ात बकता रहा मुझ पर इन्आमात व इक्रामात की बरसात रही मगर जूँ ही मुज़ख़फ़ात (या'नी वाहियात बकवासात) से बाज़ आया इनायात व नवाज़िशात बन्द हो गई ! इर्शाद फ़रमाया : जब तक तुम मेरी आबरू रेज़ी करते रहे मुझे तुम्हारी तरफ़ से नेकियां मिलती रहीं और ख़ताएं मिटती रहीं, उन दिनों तुम गोया मेरे अजीर या'नी मजदूर थे लिहाज़ा मैं तुम्हें नेकियां भेजने और गुनाह मैटने की उजरत (मजदूरी) पेश करता रहा, अब जब कि तुम ने येह काम तर्क कर दिया है तो फिर मैं उजरत किस बात की दूँ ! (سبع سنابل ص ۹۰ مَلْخَصًا) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के **सदके हमारी मफ़िरत हो ।**

امین بجاؤ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

गुनाहगार हूं मैं लाइके जहन्नम हूं

बुराइयों पे पशेमां हूं रहम फ़रमा दे

करम से बख़्श दे मुझ को न दे सज़ा या रब

है तेरे क़हर पे हावी तेरी अता या रब



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया। (इन्ने सुनी)

ईंट का जवाब नायाब गोहर से : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना सुल्तानुल मशाइख़ ख़्वाजा महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की मज़कूरा हिकायत में येह म-दनी फूल भी इन्तिहाई खुशबूदार है कि अहलुल्लाह ईंट का जवाब पथ्थर से नहीं “नायाब गोहर” से दिया करते हैं ! अल्लाह वाले बुराई को बुराई से नहीं भलाई से टाला करते हैं और वोह ऐसा क्यूं न करें कि पारह 24 सूरए السَّجْدَةِ की 34वीं आयते करीमा में इर्शाद है :

ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ सुनने वाले ! बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त ।

हुस्ने सुलूक का नतीजा : सय्यिदुना सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عليه رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي “ख़ज़ाइनुल इरफ़ान शरीफ़” में बुराई को भलाई से टालने का तरीक़ा बताते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : म-सलन गुस्से को सब्र से, जहल को हिल्म से, बद सुलूकी को अफ़व (व दर गुज़र) से कि अगर कोई तेरे साथ बुराई करे तू मुआफ़ कर । इस ख़स्लत का नतीजा येह होगा कि दुश्मन दोस्तों की तरह महबबत करने लगेंगे ।

शाने नुज़ूल : कहा गया है कि येह आयत अबू सुफ़यान के हक़ में नाज़िल हुई कि बा वुजूद उन की शिद्दते अ़दावत के नबिय्ये करीम ﷺ ने उन के साथ सुलूके नेक किया, उन की साहिब ज़ादी को अपनी ज़ौजियत का शरफ़ अ़ता फ़रमाया, इस का नतीजा येह हुवा कि वोह सादीकुल महबबत जां निसार हो गए ।

﴿29﴾ **हम्ला आवर के साथ हैरत अंगेज़ हुस्ने सुलूक :**

बुराई को भलाई से टालने के ज़िम्न में एक अज़ीबो ग़रीब हिकायत मुला-हज़ा फ़रमाइये चुनान्चे एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना शैख़ नसीरुद्दीन महमूद बिन यूसुफ़ रशीद अवधी عليه رَحْمَةُ اللهِ الْتَوٰى



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह غُذُوخِل उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

के आस्तानए आलिया (देहली) में दाखिल हो कर छुरी से 15 या 17 वार कर के आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ को शदीद ज़ख्मी कर दिया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ ने कमाले सब्र का मुज़ा-हरा करते हुए हम्ला आवर से फरमाया : फौरन अन्दर वाले कमरे में छुप जाओ वरना लोग पहुंच गए तो शायद तुम्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे, वोह छुप गया। लोगों ने बहुत तलाशा मगर हम्ला आवर का सुराग न मिला, आधी रात के वक़्त मौक़अ पा कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْہِ ने हम्ला आवर को वहां से रुख़सत कर दिया। (سبع سنّات ص ٦٤ مُلَخَّصًا) **अल्लाह غُذُوخِل की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो।**

امین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

औलियाउल्लाह की भी कैसी बुलन्द शानें होती हैं! वोह अपनी बुराइयां करने वालों बल्कि जान के दर पै रहने वालों के साथ भी हुस्ने सुलूक किया करते हैं, किसी ने सच ही तो कहा है

بدی را بدی سہل باعہد جزا
اگر مردی احسن الی من آسا

(या'नी बदी का बदला बदी से देना तो आसान है अगर तू मर्द है तो बुराई करने वाले के साथ भी भलाई कर)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

﴿30﴾ दो गुदड़ियों वाला

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्क-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 413 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "उयूनुल हिकायात" हिस्सा दुवुम सफ़हा 18 पर है : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी कबीर رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِیْر عَلَيْہِ फ़रमाते हैं : सर्दियों के दिन थे मैं मस्जिद के दरवाजे पर बैठा हुवा था कि क़रीब से एक शख़्स गुज़रा जिस ने दो गुदड़ियां ओढ़ रखी थीं। मेरे दिल में बात आई कि शायद येह भिकारी है, क्या ही अच्छा होता कि येह अपने हाथ से कमा कर खाता। जब मैं सोया तो ख़्वाब में दो फ़िरिश्ते आए मुझे बाज़ू से पकड़ा और उसी मस्जिद में ले गए। वहां एक



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

शख्स दो गुदड़ियां ओढ़े सो रहा है जब उस के चेहरे से गुदड़ी हटाई गई तो येह देख कर मैं हैरान रह गया कि येह तो वोही शख्स है जो मेरे करीब से गुज़रा था ! फिरिशतों ने मुझ से कहा : “इस का गोश्त खाओ ।” मैं ने कहा : मैं ने इस की कोई ग़ीबत तो नहीं की । कहा : “क्यूं नहीं ! तूने दिल में इस की ग़ीबत की, इस को हकीर जाना और इस से नाखुश हुवा ।” हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम आजुरी कबीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيرُ फ़रमाते हैं : फिर मेरी आंख खुल गई, खौफ की वजह से मुझ पर लरज़ा तारी था, मैं मुसल्लसल तीस (30) दिन उसी मस्जिद के दरवाज़े पर बैठा रहा, सिर्फ़ फ़र्ज नमाज़ के लिये वहां से उठता । मैं दुआ करता रहा कि दोबारा वोह शख्स मुझे नज़र आ जाए ताकि उस से मुआफ़ी मांगूं । एक माह बा’द वोह पुर असरार शख्स मुझे नज़र आ गया, पहले की तरह उस के जिस्म पर दो गुदड़ियां थीं । मैं फ़ौरन उस की तरफ़ लपका, मुझे देख कर वोह तेज़ तेज़ चलने लगा, मैं भी पीछे हो लिया । आखिरे कार मैं ने उस को पुकार कर कहा : “ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मैं आप से कुछ बात करना चाहता हूं ।” उस ने कहा : ऐ इब्राहीम ! क्या तुम भी उन लोगों में से हो जो दिल के अन्दर मुअमिनीन की ग़ीबत करते हैं ? उस के मुंह से अपने बारे में ग़ैब की ख़बर सुन कर मैं बेहोश हो कर गिर पड़ा । जब होश आया तो वोह शख्स मेरे सिरहाने खड़ा था । उस ने कहा : क्या दोबारा ऐसा करोगे ? मैं ने कहा : “नहीं, अब कभी भी ऐसा नहीं करूंगा ।” फिर वोह पुर असरार शख्स मेरी नज़रों से ओझल हो गया और दोबारा कभी नज़र न आया । (عَبْدُ اللّٰهِ الْحَكَايَات (عربی) २१२) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सद्क़े हमारी मग़िफ़रत हो ।

امین بجاہ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

बद गुमानी भी ग़ीबत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से हमें इब्रत के बे शुमार म-दनी फूल चुनने को मिलते हैं, इस से येह भी मा’लूम हुवा कि किसी के बारे में बद गुमानी भी ग़ीबत है । या’नी किसी वाज़ेह करीने के बिगैर किसी के बारे में बुराई को दिल में जमा लेना कि वोह ऐसा ही है बद गुमानी कहलाता है जो कि ग़ीबतुल क़ल्ब या’नी दिल की ग़ीबत है । किसी के सादा लिबास वगैरा को देख कर उसे हकीर और भीक मांगने वाला फ़कीर



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

जानना बड़ी भूल है। क्या मा'लूम हम जिसे हकीर तसव्वुर कर रहे हैं वोह कोई गुदड़ी का ला 'ल या'नी पहुंची हुई हस्ती हो। जैसा कि मज्कूरा हिकायत से ज़ाहिर हुवा कि वोह गुदड़ी पोश शख्स कोई आम आदमी नहीं खुदा रसीदा बुजुर्ग थे !

न पूछ इन खिर्का पोशों को अकीदत हो तो देख इन को
यदे बैजा लिये फिरते हैं अपनी आस्तीनों में

﴿31﴾ पुर असरार हबशी

मज्कूरा हिकायत से मिलती जुलती एक और ईमान अफ़्रोज़ हिकायत मुला-हज़ा फ़रमाइये चुनान्वे मन्कूल है : हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِیْ बे इन्तिहा मुन्कसिरुल मिज़ाज थे। हर शख्स को अपने से बेहतर तसव्वुर किया करते। एक दिन दरियाए दिजला के कनारे किसी हबशी को शराब की बोतल के साथ एक औरत के हमराह देखा, आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने दिल में कहा : क्या येह शराबी हबशी भी मुझ से बेहतर हो सकता है ! इसी दौरान एक कशती गुज़री जिस पर सात अफ़ाद सुवार थे, यकायक वोह ग़-रके आब हो गई और सातों आदमी डूब गए। येह देख कर हबशी दरिया में कूद गया और उस ने एक एक कर के छ अफ़ाद को बाहर निकाला, फिर मुझ से बोला : सातवां आप निकालिये, मैं तो आप का इम्तिहान ले रहा था कि आप साहिबे बातिन भी हैं या नहीं ! येह भी सुन लीजिये ! येह औरत और कोई नहीं बल्कि मेरी अम्मी जान हैं और बोतल में शराब नहीं सादा पानी है। आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی समझ गए कि येह हबशी कोई आम आदमी नहीं बल्कि मेरी इस्लाह के लिये आई हुई ग़ैबी हस्ती है। लिहाज़ा आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने उस का एहतिराम किया और दुआ की दर-ख़्वास्त की, उस ने दुआ की : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को नूरे बसीरत (या'नी दिल की नज़र के नूर) से नवाज़े। इस के बा'द आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने कभी भी खुद को किसी से बेहतर नहीं समझा यहां तक कि एक बार किसी ने इस्तिफ़सार किया कि कुत्ता बेहतर है या आप ? फ़रमाया : अगर अज़ाब से नजात पा गया तो मैं बेहतर वरना कुत्ता मुझ जैसे सेंकड़ों गुनहगारों से बेहतर है। (माखुदः از: تذکرة الاولیاء حصّه ۱ ص ۴۳) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

सदके हमारी मरिफ़रत हो।

امین بجاؤ النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुआ कि किसी मुसलमान के मु-तअल्लिक झटपट ग़लत राय नहीं काइम कर लेनी चाहिये हमें क्या मा'लूम कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किस का क्या मक़ाम है !

عَزَّوَجَلَّ
नज़रे करम खुदारा मेरे सियाह दिल पर
बन जाएगा येह दम भर में बे बहा नगीना
﴿32﴾ हबशी ने जूं ही दुआ मांगी.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुआ वोह हबशी कोई पहुंचे हुए बुजुर्ग थे। लिहाज़ा किसी की ज़ाहिरी शक्लो सूरत और लिबास वगैरा को देख कर उस की हरगिज़ तहकीर नहीं करनी चाहिये। हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِیُّ में कहत हुआ लोगों को अज़ हद ग़म हुआ, एक रोज़ अहले मदीना नमाज़े इस्तिस्का (या'नी बारिश मांगने की नमाज़) के वासिते निकले और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی भी साथ थे, सब लोग रो रो कर दुआ मांगने लगे किसी की दुआ क़बूल नहीं होती थी, इतने में दो चादरों में मल्बूस एक हबशी आया और बारगाहे खुदा वन्दी में यूँ अर्ज़ गुज़ार हुआ : “इलाही ! हम गुनहगार हैं तूने हम लोगों को अदब सिखाने के लिये पानी रोक लिया है, या अल्लाह ! अपनी रहमत से इसी वक़्त पानी बरसा, इसी वक़्त पानी बरसा, इसी वक़्त पानी बरसा।” फ़िलफ़ौर घन्घोर घटा उमन्ड आई, और मूसलाधार बारिश बरसने लगी। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی वहां से हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی के पास आए, उन्होंने ने फ़रमाया : क्या बात है कि आप उदास नज़र आ रहे हैं ? उन्होंने ने हबशी की दुआ और बारिश वाला वाकिआ सुनाया, येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ तَعَالٰی ने चीख़ मारी और बेहोश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। (माख़ुनाज़: احياء العلوم ج ١ ص ٤٠٨) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह غُزُوْحُل के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उद्द पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज्जाक)

और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

महबबत में अपनी गुमा या इलाही

न पाऊं मैं अपना पता या इलाही

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा

मैं थरथर रहूँ कांपता या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

﴿33﴾ औलादे नरीना हो गई

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्ज़ामात के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की नियत की भी क्या ख़ूब बहार है चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ यूँ कहना है, मेरी भाभी "उम्मीद" से थीं। अल्ट्रा साउन्ड के ज़रीए बताया गया कि बेटी है, भाईजान ने नियत की अगर बेटा हुवा तो दा'वते इस्लामी के आशिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ غُزُوْحُل मेरे भाई के घर बेटा पैदा हुवा।

नेक औलाद की, दाद फ़रियाद की

ख़ातिर आओ चलें, क़ाफ़िले में चलो

क़ल्ब भी शाद हो, घर भी आबाद हो

पाओगे राहतें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

जितनी निय्यतें ज़ियादा सवाब भी ज़ियादा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! مَا شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

अच्छी निय्यत और वोह भी म-दनी काफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र करने की, سُبْحَانَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस की भी क्या ख़ूब ब-र-कत है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ औलादे नरीना से गोद हरी हो गई ! येह ज़ेह्न में रहे कि जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होगी उतना ही सवाब में इज़ाफ़ा होगा लिहाज़ा किसी जाइज़ मक़सद पाने की निय्यत के साथ सवाबे आख़िरत की निय्यत को नहीं भूलना चाहिये। म-सलन अगर सिर्फ़ औलाद की निय्यत से म-दनी काफ़िले में सफ़र किया तो म-दनी काफ़िले में सफ़र का सवाब नहीं मिलेगा। अगर सवाब की निय्यत भी की होगी तो औलाद न भी मिले اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ सवाब ज़रूर मिल जाएगा। जैसा कि पारह 13 सूरए यूसुफ़ आयत 56 में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इशारे गिरामी है :

وَلَا تُضَيِّعْ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ⑤ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और हम नेकों का नेग जाएअ नहीं करते। (प १३ यूसुफ़: ५६)

﴿34﴾ ग़ीबत करने वाले को तोहफ़ा

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوٰی को किसी ने कहा कि फुलां ने आप की ग़ीबत की है तो आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने ग़ीबत करने वाले आदमी को खजूर का एक थाल भर कर रवाना किया और साथ ही कहला भेजा कि सुना है आप ने मुझे अपनी नेकियां हदिय्या की हैं तो मैं ने उन का बदला देना बेहतर जाना इस लिये खजूरें हाज़िर की हैं। (منهاج العाबدين ص ६०) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़ि़रत हो।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझे पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (अबू या'ला)

गीबत करने वाले को दुआए खैर से नवाज़िये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा
आप ने ! औलियाउल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی का नेकी की दा'वत का अन्दाज़ भी कितना अनोखा हुवा करता था, जब ज़माने के वली की तरफ़ से ग़ीबत करने वाले को बदले में खजूरों का थाल पहुंचा होगा वोह किस क़दर मु-तअस्सिर हुवा होगा ! और येह भी हक़ीक़त है कि जिस की ग़ीबत की जाए वोह फ़ाएदे में रहता है क्यूं कि जिस ने ग़ीबत की उस की नेकियां इस (या'नी जिस की ग़ीबत की गई उस) के आ'माल नामे में मुन्तक़िल की जाती हैं और जो नेकियां गोया तोहफ़े में दे वोह एक तरह से हमारा खैर ख़्वाह या'नी भलाई चाहने वाला ही हुवा। लिहाज़ा उस से उलझने के बजाए उस के हक़ में दुआए खैर करनी चाहिये।

जो ग़ीबत से चुगली से रहता है बच कर
मैं देता हूं उस को दुआए मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿35﴾ इत्र की शीशी का तोहफ़ा

एक मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी का कुछ इस तरह बयान है : मुझे पता चला कि फुलां साहिब ने मेरे ख़िलाफ़ लोगों में ग़ीबत की है, मुझे हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की हिकायत मा'लूम थी (जो अभी गुज़री) लिहाज़ा इन की पैरवी की निय्यत से उन साहिब को तोहफ़तन “इत्र की शीशी” भिजवाई और जिन के ज़रीए भिजवाई उन को दर-ख़्वास्त कर दी कि सोगात भिजवाने का सबब बयान कर के आप उन की तफ़हीम कीजिये या'नी समझाने की तरकीब बनाइये, बात आई गई हो गई। एक बार हम चन्द इस्लामी भाई इत्तिफ़ाक़ से उन ग़ीबत व मुख़ालफ़त करने वाले साहिब की दुकान के करीब से गुज़रे, देखते ही वोह अपनी दुकान से बाहर आ गए, पुर तपाक तरीक़े पर मुलाक़ात की, फल के रस या किसी मशरूब से हमारी



फरमाने मुस्ताफा ﷺ: جَوِّ مُدُنٍ عَلَى رُجُلٍ مُدُنٍ دُرُودُ شَرِيفٍ يَدْعُوهُ فِي كَرَامَتِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ (کنز العمال)

खातिर तवाजोअ की और अपनी दुकान के अन्दर मुझ से हाथ उठवा कर दुआए ब-र-कत करवाई । **لِلَّهِ الْحَمْدُ**

ईंटों के तू पथ्थर से जवाबात न देना

शैतान के हर वार को नाकाम बना दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿36﴾ म-दनी मुन्ने की जान बच गई

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाजों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा 'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आमात** के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना **फ़िक़रे मदीना** के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये । **हैदरआबाद** (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई का बयान बित्तसर्फ़ अर्ज करता हूं : मेरा म-दनी मुन्ना जिस की उम्र 5 माह है मुसल्सल बीमार रहता था । हैदरआबाद के तक़रीबन तमाम बड़े बड़े अस्पतालों में इलाज करवाया, जब "जाम शोरू अस्पताल" से लिवर स्कीन करवाया तो पता चला कि बच्चे का एक कनेक्शन नहीं है जो जिगर से आंतों को पहुंचता है । बड़े डॉक्टर ने बताया कि इस का ओपरेशन होगा मगर उस के काम्याब होने के इम्कानात कम हैं ।

र-मज़ानुल मुबारक में हम बाबुल मदीना (कराची) पहुंच गए और **ओपरेशन** के लिये म-दनी मुन्ने को N.I.C.H अस्पताल में दाख़िल करवा दिया । हफ़्ते वाले रोज़ म-दनी मुन्ने का **ओपरेशन** हुवा तो डॉक्टरों ने बताया कि इस का तो **कनेक्शन** भी नहीं, **पित्ता** भी नहीं और **जिगर** भी बहुत कमज़ोर है जो कि सिर्फ़ 25 फ़ीसद काम कर रहा है । इस बच्चे के बचने का इम्कान बहुत ही कम है । दूसरे हफ़्ते म-दनी मुन्ने का **दूसरा ओपरेशन** तै हुवा, मैं ओपरेशन के एक दिन



फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिग़फ़र करते रहेंगे। (त-बरानी)

पहले या'नी जुमुआ के रोज़ म-दनी काफ़िले में आशिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र पर रवाना हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी काफ़िले से वापसी पर पता चला कि मेरे म-दनी मुन्ने का ओपरेशन काम्याब हो गया है मगर उस को दूध नहीं दे सकते थे और पेशाब में खून आ रहा था। मैं दूसरे हफ़्ते फिर म-दनी काफ़िले में सफ़र पर रवाना हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी काफ़िले में सफ़र के दौरान ही घर वालों ने फ़ोन पर इत्तिलाअ दी कि पेशाब में खून आना भी बन्द हो गया है और इस ने दूध पीना भी शुरूअ कर दिया है। मैं म-दनी काफ़िले से इतवार को वापस आया और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दूसरे दिन या'नी पीर शरीफ़ को अस्पताल से छुट्टी भी मिल गई और हम म-दनी मुन्ने को घर ले आए। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से मेरा म-दनी मुन्ना बिल्कुल ठीक हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल को सलामत रखे।

امين بحاء النبي الامين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

बच्चा बीमार है, बाप बेज़ार है ग़म के साए ढलें, काफ़िले में चलो
ग़म चले जाएंगे, दिन भले आएंगे सब्र से काम लें, काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

﴿37﴾ 15 सालह मरीज़ा की ईमान अफ़रोज़ सिद्दहत याबी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से नाक़िस बच्चा न सिर्फ़ जिन्दा बच गया बल्कि सिद्दहत मन्द भी हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कुदरत के येह सब करिश्मे हैं, यकीनन दा'वते इस्लामी वालों पर रब्बुल अकरम عَزَّوَجَلَّ का बे इन्तिहा करम है। बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो कैसा ही गम्भीर मस्अला हो चुटकी में हल हो जाता है। इस जिम्न में एक ईमान अफ़रोज़ हिकायत सुनिये और झूमिये चुनान्वे बग़दाद शरीफ़ में एक अ-लवी लड़की रहती थी, वोह पन्दरह साल तक अपाहिज (या'नी मा'ज़ूर) रही, एक रात वोह सो कर उठी



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

तो तन्दुरुस्त थी, अब वोह उठ कर बैठ भी सकती थी और खड़ी भी हो सकती थी, उस से इस सिल्लिले में पूछा गया तो उस ने कहा : एक रात में सख्त दिल बरदाश्ता हुई, मैं ने अल्लाह तआला से दुआ मांगी कि या तो इस मुसीबत से नजात अता फरमा दे या फिर मौत दे दे और बहुत रोई । ख़्वाब में देखा कि एक बुजुर्ग मेरे पास तशरीफ लाए हैं, मैं कांप गई, और मैं ने कहा : क्या आप का इस तरह मेरे पास आना जाइज है ? उन्होंने ने फरमाया : मैं तुम्हारा वालिद हूं, मैं ने गुमान किया कि शायद मेरे जद्दे आ'ला हज़रते अमीरुल मुअमिनीन अलिय्युल मुर्तजा शरे खुदा ﷺ हैं, मैं ने अर्ज की : या अमीरल मुअमिनीन ! आप मेरी हालत नहीं देखते ? उन्होंने ने फरमाया : मैं तेरा वालिद मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) हूं । मैं ने रोते हुए अर्ज की : या रसूलुल्लाह ﷺ ! अल्लाह तआला से मेरे लिये सिद्दहत की दुआ फरमा दीजिये । आप ﷺ ने अपने दोनों होंटों को ह-र-कत दी । फिर फरमाया : अपना हाथ लाओ, मैं ने अपना हाथ पेश कर दिया तो आप ﷺ ने उसे पकड़ कर खींचा और मुझे बिठा दिया । फिर फरमाया : अल्लाह का नाम ले कर खड़ी हो जाओ । मैं ने अर्ज की : मैं कैसे खड़ी हो जाऊं मैं तो मा'जूर हूं ! फरमाया : अपने दोनों हाथ लाओ, आप ﷺ ने उन्हें पकड़ कर खींचा तो मैं खड़ी हो गई, आप ﷺ ने तीन दफ़ा इसी तरह किया, फिर फरमाया : खड़ी हो जाओ, अल्लाह तआला ने तुम्हें सिद्दहत व अफ़ियत अता फरमा दी है, तुम उस की हम्द करो और उस से डरो, फिर मुझे छोड़ा और तशरीफ ले गए । जब मैं बेदार हुई तो तन्दुरुस्त थी, उन का वाकिआ बग़दाद शरीफ़ में ख़ूब मशहूर हुवा ।

(مصباح الظلام في المستغيثين بخير الانام ص ١٥٣)

सरे बालीं इन्हें रहमत की अदा लाई है

हाल बिगड़ा है तो बीमार की बन आई है



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफा की। (अब्दुर्रज्जाक)

﴿38﴾ लम्बा सियाह आदमी

खालिद र-ब-ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फरमाते हैं कि मैं जामेअ मस्जिद में बैठा था कि कुछ लोग एक शख्स की गीबत करने लगे, मैं ने उन्हें इस से मन्अ किया तो गीबत से बाज आ कर किसी और मौजूअ पर आ गए, कुछ देर बा'द फिर उसी शख्स के ख़िलाफ़ बोलने लगे, अब की बार मैं भी कुछ देर के लिये गुफ़्त-गू में शरीक हो गया। रात को ख़्वाब देखा कि एक लम्बा सियाह आदमी थाल में खिन्ज़ीर के गोश्त का लोथड़ा लिये आया और कहने लगा : खाओ ! मैं ने कहा : मैं..... मैं..... मैं क्यूँ “खिन्ज़ीर का गोश्त” खाऊँ ? अल्लाह की क़सम ! मैं नहीं खाऊंगा। उस ने मुझे सख़्ती से झन्झोड़ा और कहा : तुम ने तो इस से भी गन्दी चीज़ खाई (या'नी गीबत की) है। येह कह कर उस ने मुझे गुदी से पकड़ा और खिन्ज़ीर का गोश्त जिस से खून बह रहा था मेरे मुंह में ठूंसने लगा हत्ता कि मैं नींद से बेदार हो गया। खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तीस दिन तक मुझे उस की बदबू आती रही और मैं जब भी खाना खाता तो उस से खिन्ज़ीर के गोश्त का ज़ायका अपने मुंह में महसूस करता।

(دَمُ الْغَيْبَةِ لِأَبِي الدُّنْيَا ص ٨٥ رقم ٤٣)

﴿39﴾ अमरद बीनी वगैरा की हाथों हाथ गैबी सज़ाएं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बुजुर्ग नसीबदार थे कि इन को दुन्याए ना पाएदार ही में ख़्वाब के ज़रीए ख़बरदार कर दिया गया। आह ! हमारा क्या बनेगा ! अफ़्सोस ! हम ने तो न जाने कितनों की गीबतें की और सुनी होंगी। अल्लाह रब्बुल इज़ज़त عَزَّوَجَلَّ हमें दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लत से बचाए। बा'ज अवकात ऐसा भी होता है कि गुनाह करते ही हाथों हाथ सज़ाएं मिलती और ख़ूब ख़ूब रुस्वाई होती है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 853 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “जहन्नम में ले जाने वाले आ 'माल'” सफ़हा 646 पर है : बा'ज लोगों ने अमरद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) को शहवत के साथ या औरत



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

को देखा तो उन की आंखें बह कर रुख़्सारों (या'नी गालों) पर आ गई! बा'ज ने जूं ही अपना हाथ किसी औरत के हाथ पर रखा तो दोनों के हाथ आपस में चिमट गए और ख़ूब रुस्वाई हुई, लोग उन्हें जुदा करने में नाकाम हो गए, यहां तक कि बा'ज उ-लमाए किराम رحمهم الله السلام ने उन की रहनुमाई फ़रमाई कि सच्चे दिल से तौबा करें और अहद करें कि आइन्दा ऐसी गन्दी ह-र-कत कभी नहीं करेंगे। जब उन्होंने ने ऐसा किया, तो अल्लाह عزوجل ने उन्हें छुटकारा अता फ़रमाया। इस किताब के मुसन्निफ़ हज़रते अल्लामा इब्ने हज़र رحمه الله الاکبر फ़रमाते हैं: इसी तरह मेरे एक जानने वाले के साथ हुवा जो कि खुश शकल व खुश अन्दाम था, उस ने गुनाह किया भी तो कैसी मुक़द्दस जगह पर! मस्जिदुल ह़राम के अन्दर वोह भी ह-जरे अस्वद के पास उस पर शैतान सुवार हुवा और उस ने एक औरत को चूम लिया! क़हरे इलाही عزوجل की बिजली गिरी और उस का चेहरा पूरे का पूरा मस्ख़ हो गया, (या'नी बिगड़ गया) तन बदन बे ढब हुवा, अक्ल कुन्द हुई और आवाज़ भी ख़राब हो गई अल गरज़ सरापा इब्रत का नुमूना बन गया। हम भटकने से अल्लाह عزوجل की पनाह मांगते हैं और अल्लाह عزوجل से इल्तिजा करते हैं कि हमें मरते दम तक आजमाइशों से बचाए, बेशक वोह सब से ज़ियादा करीम व रहीम है।

गुनाहों ने कहीं का भी न छोड़ा
करम हम पर हबीबे किब्रिया हो

﴿40﴾ लिफ़्ट का पंखा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! यकीनन अपनी चीज़ की बुराई सुनना किसी को भी अच्छा नहीं लगता, इस ज़िम्न में अपना एक वाक़िआ तसरुफ़ के साथ अर्ज करता हूं चुनान्वे सख़्त गर्मियों के दिन थे, हम चन्द इस्लामी भाई किसी के घर से खाना खा कर निकले और लिफ़्ट में सुवार हुए, गर्म हवा का एहसास हुवा, एक ने कहा: पंखा लगा हुवा है, दूसरा बोला: फुलां किराएदार इस्लामी भाई की इमारत की लिफ़्ट तो एयर कन्डीशन्ड है, इस पर हमारा मेज़बान जो कि उस



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउन्नवाइद)

इमारत के एक फ़्लेट का किराएदार था वोह बोल उठा : “येह इमारत काफ़ी पुरानी है ।” सगे मदीना غَفَى عَنْہُ ने तीसरे से अर्ज़ की : येह बताइये कि आप की बात कि “येह इमारत काफ़ी पुरानी है” सुन कर मकान मालिक खुशी से झूम उठेगा या दिल बरदाश्ता होगा ? इस पर वोह पशेमान हुए कि वाक़ेई पता लगने की सूरत में उसे ईज़ा पहुंचेगी । फिर मेरी बात की तौसीक करते हुए उन्होंने ने अपना एक वाक़िअ सुनाया कि मेरे पास एक पुरानी कार थी एक बार मेरे बे तकल्लुफ़ दोस्त ने कहा : यार ! इस “खटारे” को छुट्टी भी करवाओ ! मुझे इस जुम्ले से सख़्त सदमा पहुंचा और मैं ने वोह कार इस्ति’माल करना छोड़ दी और एक दोस्त के गेराज में डलवा दी । अर्सा हुवा यूं ही पड़ी है, बेचने को भी दिल नहीं करता क्यूं कि उस के साथ मेरी बा’ज मु-तबर्रिक यादें वाबस्ता हैं । जो जो इस्लामी भाई गुफ़्त-गू में शरीक थे اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ غُرُوْحَل सब ने ग़ीबतें करने सुनने से तौबा की ।

ऐब बयान करना ग़ीबत है भी और नहीं भी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा हिकायत से बखूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि फुज़ूल गुफ़्त-गू किस क़दर ख़तरनाक होती है कि ग़ीबत हो जाती है और कानों कान ख़बर भी नहीं होती ! इस हिकायत में एक नहीं कम अज़ कम दो ग़ीबतें हैं एक तो वोही “इमारत बहुत पुरानी है” और इस से पहले की जाने वाली बात कि इस की लिफ़्ट में तो सिर्फ़ पंखा है जब कि फुलां की लिफ़्ट में A.C. है । अगर येह बात भी मकान मालिक सुने तो उस को ना गवार गुज़रे लिहाज़ा येह भी ग़ीबत है । यहां येह वज़ाहत करता चलूं कि अगर बुराई बयान करने का कोई सहीह मक्सद हो म-सलन इमारत में फ़्लेट किराए पर लेना था और इस ज़िम्न में येह गुफ़्त-गू हुई कि येह इमारत भी पुरानी है और लिफ़्ट में भी सिर्फ़ पंखा लगा हुवा है, फुलां इमारत बेहतर है कि उस की लिफ़्ट में भी A.C. है, चलो वहीं फ़्लेट बुक करवाते हैं । तो येह गुनाह भरी ग़ीबत नहीं । अगर किसी सहीह मक्सद की नित्यत नहीं बस यूं ही किसी का ऐब या उस की किसी चीज़ की ख़राबी को पीठ पीछे बयान कर दिया जैसा कि आज



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुर्हदे पाक न पड़ा तहकीक़ वोह बदबखा हो गया । (इन्ने सुन्नी)

कल हमारी अक्सरिय्यत की आदत है तो येह गुनाह भरी ग़ीबत है और मज़कूरा हिकायत में भी महज़ फुज़ूल बक बक के तौर पर बिना मक्सदे सहीह इमारत के ऐब बयान किये गए लिहाज़ा वोह दोनों बातें गुनाहों भरी ग़ीबतें शुमार होंगी ।

दुआए अत्तार : या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे सारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें ग़ीबतों चुग़िलियों, तोहमतों, बद गुमानियों, दिल आज़ारियों और हर तरह के गुनाहों से बचा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें पक्का नमाज़ी और सुन्नतों का आदी, म-दनी इन्आमात का आमिल और म-दनी काफ़िलों का मुसाफ़िर बना । या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिफ़ामत इनायत फ़रमा । या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे प्यारे प्यारे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत की मग़िफ़रत फ़रमा ।

ख़ुदाया अजल आ के सर पर खड़ी है ^{عَزَّوَجَلَّ} दिखा जल्वए मुस्तफ़ा या इलाही ^{صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم}
मुसल्मां हैं अत्तार तेरी अता से ^{عَزَّوَجَلَّ} हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही ^{عَزَّوَجَلَّ}

امین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِینِ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُونُوْا لِی اللہ اَسْتَغْفِرُ اللہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फरमाने मुस्फा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुख्दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज्जवाइद)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ की, कि (सारे विद, वज़ीफ़े, दुआएं छोड़ दूंगा और) मैं अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा। तो सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।” (سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٤ ص ٢٠٧ حديث ٢٤٦٥)

एहयाउल इलूम से गीबत की ता'रीफ़ और मिसालें : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللہِ الْوَالِي एहयाउल इलूम जिल्द 3 सफ़हा 177 पर फ़रमाते हैं : **गीबत** येह है कि तुम अपने (मुसल्मान) भाई का ज़िक्र उन अल्फ़ाज़ के साथ करो कि अगर उस तक येह बात पहुंचे तो वोह उसे ना पसन्द करे। चाहे उस के ब-दनी या न-सबी (या'नी ख़ानदानी) ऐब का तज़्किरा करो या अख़्लाक़ और अमल के ए'तिबार से कोताही बयान करो, उस की दुन्यवी ख़राबी का ज़िक्र करो या उख़वी का, हत्ता कि उस के कपड़े, मकान और जानवर के हवाले से नक्स (ख़ामी) बयान करना भी गीबत है।

बदन में नक्स (ख़ामी) की सूरत येह है कि म-सलन ★ चुन्धा (या'नी कमज़ोर नज़र वाला या तेज़ रोशनी बरदाश्त न करने के सबब आंखें झपकाने वाला) है ★ भेंगा (जिस को एक के दो नज़र आएँ या आंखें दबा कर देखने वाला) है ★ गन्जा है ★ उस का क़द छोटा या ★ लम्बा है ★ उस का रंग सियाह (काला) या ★ ज़र्द (पीला) है वग़ैरा वग़ैरा या'नी हर वोह बात जिसे वोह ना पसन्द करता है वोह गीबत है, बात फिर जिस तरह की भी हो।



फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे । (त-बरानी)

नसब (खानदान) के हवाले से गीबत येह है कि म-सलन वोह यूं कहे कि उस का बाप ★ मोची है या ★ खाकरूब (झाड़ू देने वाला) है । अख़लाक के हवाले से गीबत इस तरह है कि ★ वोह बद अख़लाक है ★ बखील (कन्जूस) ★ मु-तकब्बिर (मगरूर) ★ रियाकार ★ बहुत गुस्से वाला ★ बुजदिल ★ अजिज ★ कमजोर दिल और ★ ला परवाह । अफ़अाल में गीबत येह है कि ऐसे कामों का जिक्र किया जाए जिन का दीन से तअल्लुक है जैसे तुम कहो कि ★ वोह चोर है ★ झूठा है ★ शराब खोर है ★ खियानत करने वाला या ★ जालिम है ★ नमाज या ★ जकात में सुस्ती करने वाला है या येह कि ★ रूकूअ और ★ सज्दा भी अच्छी तरह नहीं करता ★ नजासतों (या'नी नापाकियों) से नहीं बचता ★ मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक नहीं करता ★ जकात सहीह मक़ाम पर अदा नहीं करता या ★ इस (या'नी जकात) की तक्सीम सहीह तरीक़े पर नहीं करता या कि ★ अपने रोज़े को गुनाहों ★ गीबतों और ★ लोगों की इज़्जतों में दख़ल अन्दाज़ी से नहीं बचाता । और दुन्या से मु-तअल्लिक अफ़अाल में गीबत की सूरत येह है कि ★ वोह ज़ियादा बा अदब नहीं है ★ लोगों के साथ तौहीन आमेज़ सुलूक करता है ★ अपने आप पर किसी दूसरे का हक़ नहीं जानता या येह कि ★ वोह दूसरों पर सिर्फ़ अपना हक़ समझता है या येह कि ★ वोह बहुत ज़ियादा बातें करता है ★ बहुत खाता है ★ बहुत सोता है ★ बे वक़्त सोता है ★ हर जगह बैठ जाता है । कपड़ों के मु-तअल्लिक गीबत की सूरत येह है कि म-सलन ★ उस की आस्तीन बहुत खुली है ★ दामन लम्बा है और कपड़े मैले हैं ।

(احياء العلوم ج ۳ ص ۱۷۷)

आह ! हमारी ज़बान की बे एह्तियातियां ! ! ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आह ! हमारी ज़बान की बे एह्तियातियां ! ! ! आज कल अक्सर लोग मुसलमानों के बारे में न जाने क्या क्या बक कर रोज़ाना कितनी ही बार गीबत या बोहतान वगैरा का इरतिकाब करते हुए مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ अज़ाबे नार के हक़दार ठहरते होंगे ! हर कौम, हर शो'बे, हर तब्क़े की अपनी अपनी ज़बान में फी ज़माना बे शुमार हज़ारों हज़ार ऐसे अल्फ़ाज़ बोले जाते हैं जो गीबत या बोहतान पर मुश्तमिल होते हैं, इसी तरह अक्सर औरतों की बातों में भी गुनाहों भरे कलिमात व मुहावरात की कसरत व



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

बोहतात होती है। अभी एहयाउल उलूम के हवाले से आप ने इज्माली तौर पर गीबत की मिसालें मुला-हज़ा कीं, येह सारे के सारे अल्फ़ाज़ आज भी मुख़लिफ़ अन्दाज़ में हमारे यहां बतौर गीबत राइज हैं। इस के इलावा भी मैं अपनी नाक़िस मा'लूमात के मुताबिक़ उर्दू ज़बान और अपने गिर्दों पेश के माहोल में बोले जाने वाले ऐसे अल्फ़ाज़ और जुम्लों की तफ़्सीली तौर पर निशान देही करने की कोशिश करता हूं जिन में अक्सर का तअल्लूक गीबत से है जब कि बुराई बयान करने के लिये पीठ पीछे कहे जाएं। मौक़अ महल और निय्यत की ख़राबियों के ए'तिबार से बसा अवकात येही अल्फ़ाज़ ऐब दरी या तोहमत या बद गुमानी या गाली या बद अल्फ़ाबी या दिल आज़ारी वगैरा बल्कि एक ही वक़्त में इन छ समेत मज़ीद कई गुनाहों पर भी मुत्तबिक़ (या'नी लागू) हो सकते हैं। अगर येह मिसालें आप ज़ेहन नशीन फ़रमा लेंगे और आख़िरत के नुक़सान से बचने की कुदन नसीब हुई तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इन के ज़रीए गुनाहों भरे मज़ीद बे शुमार कलिमात व फ़िक़रात खुद ही समझ में आ जाएंगे और इन गुनाहों से दूर रहने में बहुत ही मदद मिलेगी। पढ़ने वाले की दिल चस्पी और सहूलत के लिये मुख़लिफ़ उन्वानात की सुख़ियां लगा कर मिसालों को बयान किया गया है। शैतान लाख कोफ़्त दिलाए मगर आप गोश बर आवाज़ रहिये और ख़ूब तवज्जोह से गीबत वगैरा गुनाहों के दलदल में धंसाने वाले अल्फ़ाज़ और जुम्ले समाअत फ़रमाते चले जाइये :

“गीबत ईमान को काट देती है” के बीस हुरूफ़ की निस्बत से पड़ोसियों के बारे में गीबतों की 20 मिसालें

- ★ उस जैसे पड़ोसी से तो अल्लाह बचाए ★ फुलां पड़ोसन चाल चलन की अच्छी नहीं
- ★ उस की लड़कियां ख़राब हैं ★ उस के सारे लड़के नम्बरी हैं ★ वोह पड़ोसन तो जब देखो कुछ न कुछ मांगने आ जाती है माचिस तक घर में नहीं रखी ★ उस के घर का माहोल बहुत बुरा है ★ इस को ज़रा मुंह दे दिया तो अब जब देखो ठीक खाने के वक़्त किसी न किसी बहाने से



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफा की। (अब्दुर्रज़ाक)

आ जाती है ★ उस की नाक बहुत तेज़ है हमारे खाने की खुशबू उसे फौरन पहुंच जाती है ★ आए दिन उस के हां तो झगड़ा ही रहता है ★ मियां बीवी की आपस में बनती नहीं ★ उन की लड़की घर से भाग गई है ★ कल उस के बड़े बेटे ने उस पर हाथ उठाया था ★ वोह पड़ोसी तो बिल्कुल पड़ोसियों का कोई हक ही नहीं जानता ★ ऊपर की मन्ज़िल वाला बुढ़ा बहुत सताता है ★ पहली मन्ज़िल वाले के बच्चे बहुत शरारती हैं ★ एक तो मेरे बच्चे को उस के बच्चे ने मारा, जब फरियाद ले कर गया तो ऊपर से मुझ से झगड़ने लगा ★ उस के बच्चों की शिकायत करूं तो बिल्कुल नहीं सुनता ★ बिगैर दस्तक दिये हमारे घर के अन्दर घुस जाता है ★ हमारा मकान मालिक ऊपर की मन्ज़िल पर रहता है ऐसा तंग करता है कि बस क्या कहूं ★ उस पड़ोसी के बेटे की धूमधाम से शादी हुई मगर हमें झूठे बहाने शादी कार्ड तक नहीं दिया वरना हम कौन सा उन के खाने के लिये बैठे हैं, अल्लाह عزوجل ने हम को बहुत दिया है।

“गीबत की हलाकत खैज़ियां” के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से मंगनी/ शादी में गीबतों की 17 मिसालें

जब रिश्ता तै करना होता है तो फ़रीक़ैन मीठे मीठे बन कर तरकीब बना लेते हैं, मगर इस दौरान भी और बा'द में तो अक्सर गीबतों का सिल्सिला रहता है इस की 17 मिसालें मुला-हज़ा हों : ★ बे मुरुव्वत लोग हैं ★ घर आ कर दा'वते देनी चाहिये थी ★ सिर्फ़ कहलवा दिया या ★ फ़ोन से ही गुज़ारा कर लिया ★ सास ने किसी को बुलाने के लिये भी नहीं भेजा ★ हम ने उन को अपने यहां के लिये ज़ियादा आदमियों को साथ लाने की दा'वत दी थी मगर उन्होंने ने हम को बहुत थोड़े आदमियों की दा'वत दी है ★ मैं दा'वत में गया तो सुसर ने मुझे ख़ास लिफ़्ट नहीं दी ★ मुझे येह तक नहीं बोला कि “और खाओ” ★ लड़की वालों की तरफ़ से बहुत दिन हुए कोई दा'वत नहीं मिली येह कोई तरीक़ा है ! ★ कन्ज़ूस मक्खी चूस हैं ★ खाने का सिर्फ़ पतीला भिजवा दिया देग आनी चाहिये थी ★ सास का दिल बहुत छोटा है ★ आम की सिर्फ़ एक ही पेट्टी भेजी और ★ आम भी बस ऐसे ही थे ★ बड़े भाई के लिये घड़ी ★



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

बाजी के लिये सूट और ★ अम्मी के लिये चादर की तरकीब थी मगर हर चीज़ घटिया पकड़ाई वगैरा वगैरा। इन में बा'ज तो वोह गीबतें हैं जिन को शायद “चोरी और सीना ज़ोरी” कहें तब भी ग़लत नहीं क्यूं कि अव्वल तो जिन चीज़ों के गिले शिक्वे हो रहे हैं उन के अन्दर अक्सर रिश्वत की भयानक आफ़त भी शामिल है। म-सलन येह मुता-लबात करना कि लड़के के भाई और वालिदैन् को लड़की वाले येह येह चीज़ें देंगे तो ही हम रिश्ता करेंगे तो येह “रिश्वत” हुई लड़की वाले अगर तहाइफ़ नहीं देते तो लड़के वाला फ़रीक़ ता'ने महने देता है लिहाज़ा अपनी लड़की को सुसराल वालों के शर से बचाने के लिये आम की पेटियां और खाने के पतीले वगैरा पेश किये जाते हैं। मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़रमाते हैं : “रिश्वत वोह है जो बा'ज कौमों में राज़ है कि अपनी बेटी या बहन का रिश्ता किसी से उस वक़्त तक नहीं करते जब तक ख़ातिब (या'नी निकाह का पैग़ाम देने वाले) से अपने लिये कोई चीज़ हासिल न कर लें, नीज़ रिश्वत वोह है कि कोई शख्स अपने ज़ेरे विलायत (या'नी ज़ेरे सर परस्ती) लड़की का रिश्ता तो कर दे मगर अपने लिये कुछ लिये बिगैर वोह लड़की शोहर के हवाले न करे।” (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 12, स. 257) याद रखिये ! रिश्वत ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है चुनान्चे हदीसे पाक में है : **الرَّاشِيّ وَالْمُرْتَشِيّ فِي النَّارِ** या'नी रिश्वत देने वाला और रिश्वत लेने वाला दोनों जहन्नमी हैं।

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ٥٥٠ حديث ٢٠٢٦)

रिश्वत से तौबा का तरीक़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस ने रिश्वतें ली हों, अब नादिम है तो सिर्फ़ ज़बानी तौबा काफ़ी नहीं, तौबा के साथ साथ सारी रिश्वतें उन को लौटाना होंगी जिन जिन से ली हैं, वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को दे, उन का भी पता न लगे तो फ़कीर को दे दे। रिश्वत की मज़ीद मा'लूमात के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल सफ़हा 540 ता 554 का मुता-लआ फ़रमा लीजिये।



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर दस मारतबा सुद्ध और दस मर्तबा शाम दुहुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़अत मिलेगी। (मजमूज़ुबवाइद)

“मुसल्मान की आबरू रेज़ी हराम है” के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से सुसराली रिश्तों की ग़ीबतों की 22 मिसालें

★ मेरी बहन को उस की सास तंग करती है ★ बहनोई घर का खर्च नहीं देता ★ कमा कर सब मां को दे देता है ★ दामाद मेरी बेटी पर जुल्म करता है ★ अपनी मां की बातों में आ कर बार बार घर से निकाल देने की तड़ियां देता है ★ मां के चढ़ाने पर बात बात पर मारता है ★ तलाक़ की धमकियां देता है ★ रात देर तक घर से बाहर रहता है ★ दिन को देर तक सोता रहता है ★ हड हराम है ★ दूसरी औरत के चक्कर में है ★ इस के दोस्त अच्छे नहीं हैं ★ सुना है नशा वगैरा भी करता है ★ हम को बहुत मन्हूस आदमी से पाला पड़ गया है ★ एवई (या'नी बस ऐसा ही) है ★ ज़हरीला सांप है ★ उस के दिल में दगा है ★ उजड ★ गंवार ★ जाहिले मुल्लक़ है ★ बेटे की सास जादूगरनी है ★ बहू ने ता'वीज़ गन्डे करवा कर मेरे बेटे को अपनी तरफ़ कर लिया है इस लिये बेटा मेरी एक नहीं सुनता।

“गीबत ना जाइज़ व हराम है” के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से मैके जा कर सुसराल के मु-तअल्लिक़ की जाने वाली ग़ीबतों की 17 मिसालें

★ सास हर वक़्त मुंह फुलाए रहती है ★ बात बात में कीड़े निकालती है ★ मेरा पकाना उसे पसन्द ही नहीं आता ★ मेरी तबीअत ख़राब हो तो सास कहती है बहाने बनाती है ★ दूसरी बहू को बड़ा चाहती है मेरे साथ पराया सुलूक क्यूं करती है ★ बड़ी अखड़ और सख़्त मिज़ाज है ★ मुझ पे हर वक़्त अपना हुक्म चलाती रहती है ★ शोहर को मेरे ख़िलाफ़ भड़काती है ★ सास मुझ से काम बहुत करवाती है खुद सारा दिन बिस्तर पर पड़ी रहती है ★ मां बेटी मिल कर मेरी बुराइयां करती रहती हैं ★ सास ने शोहर को मेरे ख़िलाफ़ कर दिया है अब ★ मैं उन्हें सोना बन कर भी दिखाऊं वोह मुझे पाऊं की जूती ही समझेंगे ★ कई कई घन्टे उन का इन्तिज़ार करती हूं आते ही मुंह फुला कर बैठ जाते हैं ★ उन की कलमुखी तलाक़न बहन की भी ख़िदमते



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकी वोह बदबख़ हो गया । (इन्ने सुनी)

करनी पड़ती हैं ★ मेरी फुलां तलाक़न नन्द बड़ी मुंहफट है ★ तलाक़ ली मगर जोर नहीं गया
★ सुना है उस ने अपने मियां को एक दिन भी सुख नहीं दिया था आखिर बेचारा तलाक़ न देता
तो क्या करता ।

**“गीबत करने वाला बरोज़े फ़ियामत कुत्ते की शक्ल में
आएगा” के सैंतीस हुरूफ़ की निस्बत से मंगनी टूटने या
तलाक़ होने पर की जाने वाली ग़ीबतों की 37 मिसालें**

अगर मंगनी टूट जाए या तलाक़ वाक़ेअ हो जाए तो अक्सर शैतान फ़रीक़ैन को कान पकड़
कर रिंग में लाता और वोह नाच नचाता है कि अल अमान वल हफ़ीज़ ! ! ! ग़ीबतों, तोहमतों,
इल्ज़ाम तराशियों, ऐब दरियों, दिल आज़ारियों, बद गुमानियों और बद कलामियों का एक तूफ़ान
खड़ा हो जाता है, हर खूबी भी “ऐब” बन कर रह जाती है ! हर फ़रीक़ अपने आप को “मज़्लूम”
साबित करने के लिये एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर झूट बोलता है हालां कि बरसों से घर चल रहा
होता है मगर जब दो ख़ानदानों में “जंग” छिड़ती है, तो फ़रीक़े मुक़ाबिल को **“بَدَّ اللَّهُ عَوَّلُ”** “बद
अक़ीदा” तक कह दिया जाता है ! ऐसे मवाक़ेअ पर की जाने वाली ग़ीबतों की 37 मिसालें मुला-
हज़ा हों : लड़की वालों की तरफ़ से ग़ीबतें : ★ शराबी था ★ जूआरी ★ लुच्चा ★ लफ़ंगा
★ लोफ़र ★ आवारा था ★ 420 था ★ कमाता नहीं था ★ घर का खर्च नहीं देता था ★
सब पैसे मां के हाथ में दे देता था ★ उस ने कभी घर को घर नहीं समझा ★ सास रोटी नहीं
देती थी इस लिये लड़की पल्ले से खाती थी ★ बहुत ज़ालिम लोगों से पाला पड़ा था ★ फंस गए
थे ★ बड़ी मुश्किल से जान छूटी है ★ हमारी लड़की को बे कुसूर मारता था ★ हमारे सामने बहुत
अकड़ता था ★ उस का सारा ख़ानदान नीच है हमारे मे'यार के लोग ही नहीं थे ★ हमारी लड़की
पर सोकन लाना चाहता था ★ हमें जान से मारने की धमकियां देने लगा था ★ हमारी लड़की को
बदनाम करना शुरूअ कर दिया था ★ कमीने ने आखिर अपनी ज़ात दिखाई ।

लड़के वालों की तरफ़ से ग़ीबतें : ★ लड़की का चाल चलन सहीह नहीं था ★ बहुत सारे
आशना बना रखे थे ★ घर में ज़बान बहुत चलाती थी ★ इस की मां ने खाना पकाना भी नहीं



फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज़्जवाइद)

सिखाया था ★ बरतन भी मांझने नहीं आते थे ★ कपड़े भी बराबर नहीं धो सकती थी ★ बहुत झगड़ालू थी ★ चोरियां करती थी ★ ता'वीज़ गन्डे करवाती थी ★ जादूगरनी थी ★ चुड़ैल थी ★ हमारे घर का सुकून बरबाद कर दिया था ★ इस की मां घर आ कर हम को कोसनें दे गई थी ★ हम को इस ने बदनाम कर दिया है ★ हम ने ग़रीब समझ कर तरस खाया था मगर उस का तो दिमाग़ आस्मान पर पहुंचा हुवा था वगैरा वगैरा।

घर की बात बाहर करने वाला कमज़ात होता है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हिदायते ख़ैर की दुआ है, यकीनन जो ग़ीबतें वगैरा करता है वोह बहुत ही बुरा बन्दा है। आइये ! आप को एक अच्छे बन्दे की हिकायत अर्ज़ करूं चुनान्वे एक बुजुर्ग عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : एक साहिबे राज़ (या'नी पेट के मज़बूत आदमी) का निकाह हुवा मगर दोनों के माबैन ज़ेहनी हम आहन्गी का फुक्दान था (या'नी कमी थी) किसी तरह उस के दोस्त को इस बात की भनक मिल गई, उस ने पूछा : तुम्हारे घर का क्या मस्अला है ? उस साहिबे राज़ ने जवाब दिया : मैं इतना कमज़ात नहीं कि घर की बात किसी को बता दूं ! बात आई गई हो गई। बिल आख़िर घर न चल सका और तलाक़ देनी पड़ गई। जब उस के दोस्त को पता चला तो बोला : वोह तो अब तुम्हारी बीवी नहीं रही, बता दो क्या मुआ-मला था ? उस समझदार शख्स ने जवाब दिया : अब तो वोह मेरे लिये गोया ग़ैर औरत हो चुकी है और किसी ग़ैर औरत के मु-तअल्लिक़ मैं कैसे बात करूं !

عَزَّوَجَلَّ
अल्लाह हम को फ़ज़ल से अक्ले सलीम दे
شَمَوْنِ هَیَا تُوْ بَہَرِے رَسُوْلَہِ کَرِیْمِ دَہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तद्दीक वोह बदबख्त हो गया । (इन्ने सुनी)

जोड़ों की बीमारी भी गई और बे रोज़गारी भी गई : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, म-दनी इन्आमात के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, म-दनी काफ़िले की एक म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्वे एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मेरी एक तरफ़ बे रोज़गारी थी तो दूसरी तरफ़ जोड़ों के दर्द की पुरानी बीमारी थी, तंगदस्ती और शदीद दर्द के बाइस सख़्त बेज़ारी थी, बहुत इलाज करवाया मगर कुछ फ़ाएदा न हुवा । किसी इस्लामी भाई ने इन्फ़रादी कोशिश के ज़रीए ज़ेहन बना कर दा'वते इस्लामी के आशिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र की तरकीब बना दी । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी काफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र और आशिक़ाने रसूल की शफ़क़त भरी सोहबत की ब-र-कत से मेरी बरसों पुरानी जोड़ों की बीमारी बिल्कुल सहीह हो गई । म-दनी काफ़िले से वापसी पर दूसरे ही दिन एक इस्लामी भाई आए और उन्होंने ने मुझे काम पर लगा कर मेरे रोज़गार की तरकीब भी बना दी । येह बयान देते हुए اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ एक साल से ज़ियादा अर्सा गुज़र चुका है मेरा काम एक दिन भी बन्द नहीं हुवा और दर्द भी पलट कर नहीं आया ।

जोड़ जोड़ आप के, हों अगर दुख रहे कर के हिम्मत चलें, काफ़िले में चलो
तंगदस्ती मिटे, रिज़क़ सुथरा मिले दर करम कें खुलें, काफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

मुर्दे को अच्छा पड़ोस दो : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! म-दनी काफ़िले की ब-र-कत से जोड़ों का पुराना दर्द भी टला और रोज़गार भी मिला । आशिक़ाने रसूल की



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

सोहबत जहां ज़िन्दगी में रहमत दिलाती है, वहां मरने के बा'द भी राहत का सामान फ़राहम करती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िलों के सदके हमें मरने के बा'द आशिक़ाने रसूल का पड़ोस नसीब फ़रमाए। मरने के बा'द मिलने वाली अच्छी सोहबत की ब-र-कत की झलक मुला-हज़ा हो चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत” (मुकम्मल) सफ़हा 270 पर है : अपने मुर्दों को बुजुर्गों के पास दफ़न करो कि इन की ब-र-कत के सबब उन पर अज़ाब नहीं किया जाता। هُمُ الْقَوْمُ لَا يَشْفَىٰ بِهِمْ جَلِيسُهُمْ या'नी येह ऐसी कौम है जिस का हम नशीन भी महरूम नहीं रहता। व लिहाज़ा हदीस में फ़रमाया : اَذْفُنْؤُا مَوْتَكُمْ وَسَطُ قَدَمِ صَالِحِيْنَ अपने मुर्दों को नेकों के दरमियान दफ़न करो। (أَلْفُرْدَوْسُ بِمَأْثُورِ الْخَطَّابِ ج ١ ص ١٠٢ حديث ٣٣٧) आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ इस ज़िम्न में एक निहायत ईमान अफ़रोज़ हिंकायत नक्ल करते हुए फ़रमाते हैं :

गुलाब के फूल या अज़्दहों के मुंह ! : मैं ने हज़रत मियां साहिब क़िब्ला قُدِّسَ سِرُّهُ को फ़रमाते सुना : एक जगह कोई क़ब्र खुल गई और मुर्दा नज़र आने लगा। देखा कि गुलाब की दो शाखें उस के बदन से लिपटी हैं और गुलाब के दो फूल उस के नथनों पर रखे हैं। उस के अज़ीजों ने इस ख़याल से कि यहां क़ब्र पानी के सदमे से खुल गई, दूसरी जगह क़ब्र खोद कर उस में रखा, अब जो देखा तो दो अज़्दहे (या'नी दो बहुत बड़े सांप) उस के बदन से लिपटे अपने फनों से उस का मुंह भम्भोड़ (या'नी नोच) रहे हैं, हैरान हुए। किसी साहिबे दिल से येह वाक़िआ बयान किया, उन्होंने ने फ़रमाया : वहां भी येह अज़्दहे ही थे मगर एक वलिय्युल्लाह के मज़ार का कुर्ब था, उस की ब-र-कत से वोह अज़ाब रहमत हो गया था, वोह अज़्दहे दरख़्ते गुल की शकल हो गए थे और उन के फन गुलाब के फूल। इस की (मय्यित की) ख़ैरियत चाहो तो वहीं ले जा कर दफ़न करो। वहीं ले जा कर रखा फिर वोही दरख़्ते गुल थे और वोही गुलाब के फूल।



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह غُفُورٌ तुम पर रहमत भेजेगा । (इन्ने अदी)

“गीबत एक नासूर है” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से दा'वतों में की जाने वाली गीबतों की 14 मिसालें

★ अल्लाह ने बहुत कुछ दिया है, पहले बेटे की शादी है मगर खर्च करने में हाथ खींच कर रखा है ★ खाने की डिशें कम की हैं ★ सजावट पर खर्च कम किया है ★ खर्च बचाने के लिये मेहमान कम बुलाए हैं ★ गोश्त बूढ़े बैल का है जभी तो नहीं गला ★ बकरे का गोश्त होना चाहिये था येह कहां ग़रीब है ! ★ पानी में बर्फ़ भी नहीं डलवाया ! ★ डेकोरेशन का सामान भी बस ऐसा ही मंगवाया है ! ★ ग़रीब आदमी है कर्ज़ें ले कर दुन्या को दिखाने के लिये इतनी बड़ी दा'वत करने की क्या ज़रूरत थी ! ★ खाना तो ज़रा अच्छे बावर्ची या “किचन” से बनवाया होता ★ सस्ते “किचन” से फिर खाना कैसा बनेगा ! ★ उस ने मीठी डिश में सिर्फ़ फ़िरनी से गुज़ारा कर लिया है ★ ज़र्दा भी होना चाहिये था ★ बचा हुआ खाना फेंकने के बजाए मद्रसे भेज कर कौन सी सखावत की है !

“गीबत ज़िना से सख़्त तर है” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से बेटे के बारे में गीबत की 16 मिसालें

अपनी समझदार औलाद को सब के सामने बुरा भला कहते रहने से उन का दिल दुखता, इस्लाह के बजाए बिगाड़ बढ़ता है, और बिला मस्लहते शर-ई पीछे से ख़ामियां बयान करने से गीबतों का गुनाह मिलता और औलाद को पता लग जाने की सूरत में उस का बाग़ियाना ज़ेहन बनता है। और दोनों जहान के नुक़सान व खुसरान का सामान पैदा होता है। लिहाज़ा औलाद की शफ़क़त व हिक्मत के साथ तरबियत करनी चाहिये। बा'ज मां बाप मुंह भर कर औलाद की गीबतें किया करते हैं इस के बे शुमार जुम्लों में से नुमूनतन 16 मिसालें पेश की जाती हैं : ★ सब से बड़ा बेटा ना फ़रमान ★ ज़िद्दी और ★ बद तमीज़ है ★ मेरी इज़ज़त नहीं करता ★ कमा कर दोस्तों में उड़ा देता है ★ घर का एक भी काम नहीं करता ★ दुकान पर वक़्त नहीं देता ★ रात बहुत देर से आता है और अपनी मां को रुलाता है ★ हम को बहुत सताता है ★ रात



फरमाने मुस्तफा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

देर से सोता और फ़ज़्र में नहीं उठता ★ छोटे बहन भाइयों को मारता है ★ बीमार बाप की ख़बर नहीं लेता ★ बाप को सामने जवाब देता है ★ अपनी मां को झाड़ देता है ★ घर में सीधे मुंह किसी से बात नहीं करता ★ बाहर तो सब से “जी जनाब” से बात करता है मगर घर में तू तड़ाक़ से।

“गीबत महब्बतें मिटाती है” के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से बाप के बारे में गीबत की 17 मिसालें

★ मेरी मां को मारते हैं ★ पूरी खर्ची नहीं देते ★ सुना है जूआ की लत पड़ गई है ★ मां के ज़ेवरात बेच कर खा लिये हैं ★ बुरी सोहबत की वजह से रात देर से घर में आते हैं और फिर झगड़ते हैं और सब की नींदें ख़राब करते हैं ★ सारा दिन सिगरेट फूंकते रहते हैं ★ घर को कभी घर नहीं समझा ★ घर में गन्दी गन्दी गालियां निकालते हैं जवान बेटी का भी लिहाज़ नहीं करते ★ हम भाई बहन जवान हो गए हैं हमारी शादी की तरकीब क्या करेंगे, इस की तो बात सुनने के लिये भी तय्यार नहीं ★ ज़बान बहुत चलाते हैं इस लिये ख़ानदान में सब से बिगड़ी हुई है ★ जुमुआ की भी नमाज़ नहीं पढ़ते ★ दीन की बिल्कुल समझ नहीं ★ पक्के दुन्यादार हैं ★ दा'वते इस्लामी वालों को अच्छा नहीं समझते ★ मुझे दा'वते इस्लामी से रोकते हैं कहते हैं तुम को मौलवी नहीं बनने दूंगा ★ मेरा इमामा छुपा दिया था बड़ी मुश्किल से अम्मी ने ढूंड कर दिया है ★ मुझे इज्तिमाअ से मन्अ करते हैं वगैरा।

वस्वसा : बाप इज्तिमाअ से रोके, दाढ़ी और इमामा न बांधने दे वाक़ेई बे नमाज़ी और पक्का दुन्यादार हो फिर भी येह बातें सच सच बयान करना क्यूं कर गीबत हो गया ?

वस्वसे का जवाब : येह बातें सच हैं जभी बिला मस्लहते शर-ई पीछे से बयान करना गीबत है, इस तरह की बातों से आप के वालिद साहिब की इज़ज़त में कमी ही आएगी और वोह लोगों की निगाहों में ज़लील होंगे, जब उन को पता चलेगा कि लोगों को आप येह सारी बातें बता देते हैं तो



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

यकीनन वोह आप से खुश नहीं बल्कि नाराज़ ही होंगे कि तुम मुझे बदनाम कर रहे हो, इस तरह और ख़राबियां पैदा होंगी और घर में फ़साद खड़ा होगा। बाप तो फिर बाप है उस के हुक्क से दुन्या में ओहदा बर आ होना मुम्किन नहीं। किसी और मुसल्मान के बारे में भी अगर आप कहेंगे कि “वोह पक्का दुन्यादार आदमी है” “जुमुआ भी नहीं पढ़ता” तो अगर्चे वोह वाक़ेई ऐसा ही हो फिर भी वोह पीठ थपक कर आप को शाबाश नहीं देगा बल्कि यकीनन उस का दिल दुखेगा लिहाज़ा बिला इजाज़ते शर-ई किसी भी मुसल्मान के बारे में कोई ऐसा लफ़ज़ न बोला जाए जो उसे मा’लूम हो तो ना गवार गुज़रे।

“गीबत की नुहूसतें” के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से मां की तरफ़ से बेटी की गीबत की 13 मिसालें

★ गुस्से की बहुत तेज़ है ★ बहुत चिड़चिड़ी और ★ ज़िद्दी हो गई है ★ मेरी बिल्कुल नहीं सुनती ★ घर में झाड़ू पोचे नहीं लगाती ★ धोने पकाने में मेरा हाथ नहीं बटाती ★ हर वक़्त कंधी चोटी में लगी रहती है ★ ज़रा कोई भलाई की बात करूं तो रोने बैठ जाती है ★ हर बात में अपनी चलाती है ★ दोनों बहनों की बिल्कुल नहीं बनती ★ मेरी बिल्कुल इज़ज़त नहीं करती ★ बहुत ज़बान दराज़ है ★ बात बात पर मुझ से झगड़ती है।

“गीबत करने वाले दोज़ख़ के ख़ौलते हुए पानी व आग के दरमियान मौत मांगते दौड़ते फिरते होंगे” के सड़सठ हुरूफ़ की निस्बत से घरों में उमूमन बोले जाने वाले गीबतों के अल्फ़ाज़ की 67 मिसालें

★ बुध्दू ★ लचर ★ अहमक़ ★ बे वुकूफ़ ★ बचकाना ज़ेहन है ★ बात ज़रा देर से समझता है ★ कोई भाषा नहीं समझता ★ घर में सब से लड़ता है ★ मां को सताता है ★ बाप को तंग कर के रख दिया है ★ दिन को देर तक सोता रहता है ★ उस की बीवी बद ज़बान



फरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह उसके लिये एक किरात अज़ लिखता है और किरात उहुद पहाड़ जितना है। (अदुर्गज़ाक)

है ★ वोह अपनी बेगम से डरता है ★ उस के घर में रोज़ रोज़ लड़ाई झगड़े होते हैं ★ बड़ा बेटा खर्चा नहीं देता ★ बेटी ★ या बेटा मेरी इज़्ज़त नहीं करता ★ मेरा बेटा शादी के बा'द लड़ कर घर से अलग हो गया ★ मेरा बेटा मेरा ना फ़रमान है ★ बेटा सारा दिन घर में पड़ा रहता है ★ निखटू ★ निकम्मा ★ नाकारा ★ ढीला ★ सुस्त ★ कामचोर है ★ चिड़चिड़ा ★ खर दिमाग़ ★ गुस्से वाला ★ दिमाग़ का गर्म ★ मगज़ का तीखा है ★ अड़यल ★ अड़ीबाज़ ★ हटीला ★ ज़िद्दी है ★ शोर मचाता ★ भौंकता ★ हाउ हाउ करता है ★ ना शुक्रा ★ बे सभ्रा ★ वहमी ★ ला उबाली ★ चन्चल ★ लड़ाकू ★ घर घुसडू ★ घर घुसना ★ हर वक़्त खाता रहता है ★ आवारा ★ मवाली ★ ला परवाह है ★ सफ़ाई नहीं रखता ★ उस का कोई ढंग धड़ा नहीं ★ किसी की नहीं सुनता ★ बस अपनी मन मानी करता है ★ घर की बात बाहर बोल आता है ★ चुप चुप ! वोह आ रहा है, सुन लेगा तो बाहर फूंक आएगा ★ कान का कच्चा है ★ पेट का हलका है ★ इस के पेट में कोई बात नहीं समाती ★ ढोल है ★ ढंडोरा पीट देता है ★ B.B.C है ★ फुलां का बेटा किसी लड़की के चक्कर में है ★ इस के बच्चे बहुत शरारती हो गए हैं ★ बच्चों को बिगाड़ रखा है ★ अपने बाल बच्चों का ख़याल नहीं रखता ★ बाहर भीगी बिल्ली बन कर रहता है मगर घर में शेर है ।

“फुज़ूल गुफ़्त-गू से बचिये” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से जाती मुआ-मलात के फुज़ूल सुवालात की 15 मिसालें

बा 'ज़ लोगों की आदत होती है कि घरेलू मुआ-मलात की टोह में लगे रहते और ऐसे ऐसे सुवालात करते हैं कि आदमी शरमा जाता है, शर्म मगर उन को नहीं आती । सारे सुवालात अगर्चे गुनाहों भरे नहीं होते मगर पूछने वाले से सुलझे हुए लोग बदज़न होते और बा'ज़ ग़ैर मोहतात अफ़राद मुरुव्वतन झूट या गीबत के गुनाह में जा पड़ते हैं । ऐसे ख़ानगी मुआ-मलात के फुज़ूल सुवालात की 15 मिसालें मुला-हज़ा हों : ★ क्या काम करते हो ? ★ तन-ख़्वाह कितनी



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

है ? ★ सेठ सहीह आदमी है या नहीं ? (बिला इजाज़ते शर-ई येह सुवाल गुनाह भरा है और सामने वाले को गुनाह में डाल सकता है) ★ कितने भाई बहन हो ? ★ इन में कौन कौन शादी शुदा है ? ★ आप के बच्चे कितने हैं ? ★ बड़े बच्चे की कितनी उम्र है ? ★ ओहो ! येह जवान हो गया है ★ इस की शादी कब करवा रहे हो ? ★ मकान जाती है या किराए का ? ★ आप की उम्र काफ़ी हो गई है, शादी में क्या रुकावट है ? ★ बड़ी बहन घर में क्यों बैठी हुई है ? ★ आप की बेटी ﷺ जवान हो गई है रिश्ता क्यों नहीं कर रहे ? ★ बड़ा भाई कहां नोकरी करता है ? ★ घर में भी पैसे देता है या नहीं ? (येह सुवाल भी बिला मस्लहतें शर-ई हो तो गुनाह भरा है और सामने वाले को गुनाह में डाल सकता है)

“गीबत ह़राम व गुनाह है” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से ख़ानदान के मु-तअल्लिक़ ग़ीबत की 15 मिसालें

किसी मुसलमान के ह़सब नसब की कमज़ोरी का बिला इजाज़ते शर-ई बतौर ऐब तज़्किरा करना भी ग़ीबत है, इस की 15 मिसालें मुला-हज़ा हों : ★ उस का बाप चपरासी (PEON) है ★ उस का दादा मोची है ★ वोह ख़ानदानी मीरासी है ★ उस का दादा पेशावर भिकारी था ★ येह भले पढ़ा लिखा है मगर येह लोग ख़ानदानी हज़ाम हैं ★ येह अफ़सर बन गया है मगर इस का बाप दफ़्तर में झाड़पूँछ करता और गन्द कचरा उठाता था ★ इस की दादी गाय का गोबर उठा कर लाती और उपले थाप कर बेचती थी ★ येह जो अरब साहिब हैं, अस्ली अ-रबी नहीं इन के बाप दादा हिन्दी (सिन्धी या बलूची या पंजाबी) हैं ★ वोह नौ जवान जो अभी गुज़रा उस की मां तवाइफ़ थी ★ उस का वालिद शादियों की तक़रीबों में नाचने का पेशा करता था ★ फुलां का घटिया ख़ानदान से तअल्लुक़ है ★ उस की बिरादरी ख़ास मुअज़्ज़ज़ नहीं मानी जाती ★ उस का वालिद मालिश्या था (या'नी लोगों की तेल मालिश करने का काम करता था) ★ वोह चरवाहे का बेटा है ★ येह जो सय्यिद कहलाता है, इस से इस का नसब नामा पूछ लो, मैं इन लोगों को जानता हूँ, ख़ानदानी फ़कीर हैं।



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (अबू या'ला)

“गीबत में आखिरत की बरबादी है” के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से परेशान हालाँ के मु-तअल्लिक़ गीबत की 21 मिसालें

★ उस का दीवालिया निकल गया है ★ बहुत क़र्ज़ा ले लिया था अब फंस गया है और मुंह छुपाता फिरता है ★ क़र्ज़ ख़्वाहों से पीछा छुड़ाने के लिये घर से भाग गया है ★ क़र्ज़ा अदा नहीं किया तो उस पर क़र्ज़ ख़्वाह ने केस कर दिया है ★ फुलां को पोलीस पकड़ कर ले गई है ★ लोकअप या जेल में बन्द हो गया है ★ उस की इम्लाक का नीलाम होने वाला है ★ उस की इम्लाक ज़ब्त हो गई है ★ उस की मंगनी टूट गई है ★ उस को कोई रिश्ता नहीं दे रहा ★ वोह तलाक़न या ★ तलाक़ड़ी ★ या मुतल्लक़ ★ या तलाक़ शुदा है ★ वोह बांझ है ★ उस की लड़की भाग गई है ★ उस के बेटे ने कोर्ट में जा कर अपनी पसन्द की शादी कर ली है ★ उस को सुसराल वालों ने धक्के मार कर घर से निकाला ★ उस बद मआश के आगे ज़बान चलाने की क्या ज़रूरत थी, उस ने उठा कर घूसा दे मारा और इस के दांत तोड़ डाले ★ कैसा अकड़ी दिखाता था, आखिर सवा सैर टकरा ही गया और उस ने इस का सर फाड़ डाला ★ मेरे मन्अ करने के बा वुजूद आधी रात को कीमती मोबाईल फ़ोन ले कर निकला, डाकू ने छीन लिया, अब नाक कटी तो बैठा ।

“गीबत की नुहूसत” के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से मरीजों की गीबतों की 11 मिसालें

★ शूगर का मरीज़ है मगर मौसिम में इस को दो आम चाहिएं ★ ख़ूब आम खाता है फिर फोड़े हो जाते हैं ★ इस को ठन्डा पानी और खटाई नहीं चलती मगर मानता नहीं है फिर हर वक़्त खांसता रहता है ★ इस का पेट ख़राब रहता है क्यूं कि वज़्नी ग़िज़ाओं से बाज़ नहीं आता ★ ख़ूब पेट निकला हुवा है मगर नाश्ते (या स-हरी) में पराठे खाता है ★ वोह मोटापे से अगर्चे बेज़ार है मगर आम, मिठाई, कबाब समोसे और ठन्डी बोतलें छोड़ने के लिये तय्यार नहीं ★ उस ने वक़्त बे वक़्त खा खा कर मेअूदा तबाह कर दिया है मगर अब भी डट कर खाने से बाज़ नहीं



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

आता ★ एक बार इस को दिल का दौरा पड़ चुका है मगर फिर भी इस को नाश्ते में मस्का बन चाहिये ★ इस का कोलेस्ट्रॉल हाई रहता है मगर पिज़्ज़े परांठे का शैदाई है ★ इस को दाइमी कब्ज़ की शिकायत है मगर मुझ से कह रहा था, परहेज़ी कौन करे ★ इस को डॉक्टर ने रोज़ाना पैदल चलने की ताकीद की है मगर सुस्ती करता है।

“गीबत दुआ की क़बूलिय्यत में रुकावट है” के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से मरने वाले मुसल्मान की गीबत की 25 मिसालें

★ आदमी सहीह नहीं था ★ मेरी रक़म खा गया था ★ उस ने खुदकुशी की ★ फुलां की बद दुआ लग गई और कुत्ते की मौत मरा ★ गन्दे नाले (या गटर) में डूब कर मरा येह उस के गुनाहों की सज़ा थी ★ बैतुल ख़ला में मरा (अगर कोई मुरतद बैतुल ख़ला में मरे तो इब्रत के लिये तज़्किरा करने में हरज नहीं अलबत्ता मुसल्मान के साथ इस तरह का ह़ादिसा हो तो उस का पर्दा रखना ज़रूरी है) ★ फुलां को कफ़न तक नसीब न हुवा कि ज़ालिम जो था ★ मरने के बा'द भी उस के मुंह पर नुहूसत बरस रही थी ★ रिश्वत ख़ोर था ★ सूदख़ोर था ★ मां बाप का गुस्ताख़ था ★ पोलीस मुक़ाबले में कुत्ते की मौत मारा गया ★ दूध में मिलावट किया करता था ★ हेरोइन्ची ★ चरसी ★ शराबी ★ जूआरी ★ ज़ानी था ★ मन्शियात फ़रोश था ★ ह़राम कमाता और खाता था ★ मुंह काला करने के दौरान ही उसे मौत ने आ लिया ★ उस का फुलां के साथ चक्कर था ★ अपने पीछे ह़रामी औलाद छोड़ गया है ★ महल्ले के लोग उस से इतनी नफ़रत करते हैं कि उस के जनाजे में भी शामिल नहीं हुए ★ अच्छा हुवा मर गया, ज़मीन पर बोझ था।

“गीबत से नफ़रत बढ़ती है” के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से डॉक्टर के बारे में गीबत की 17 मिसालें

★ ना तज़िबा कार है ★ इस ने बीमारी को समझा ही नहीं ★ बहुत गर्म दवाएं दे दीं ★ पैसे बहुत लेता है ★ ग़लत इन्जेक्शन लगा दिया है ★ इन्जेक्शन लगाने में उस का हाथ भारी



फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे । (त-बरानी)

है ★ सेम्पल की दवाएं बेच डालता है ★ ओपरेशन ग़लत कर दिया है ★ बे रहूम है ★ ऐसी दवाएं दे दीं कि मेरा मेअूदा तबाह हो गया है ★ बहुत महंगी दवाएं लिख देता है जिस से आरिज़ी तौर पर मरीज़ खड़ा तो हो जाता है मगर बा'द में तकलीफ़ मज़ीद बढ़ जाती है ★ बात बात पर TEST लिख देता है ★ मरज़ को ख़्वाह म ख़्वाह गम्भीर बता कर ओपरेशन कर दिया ★ उस से ओपरेशन करवाया था, फ़ेल हो गया ★ फुलां ने ग़लत ओपरेशन कर दिया ★ जब देखो ओपरेशन ही की बात करता है मक्सूद सिर्फ़ पैसे खींचना है और ★ हम को दो लाख रुपै के खर्चें में उतार दिया है ! वगैरा वगैरा ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक बा'ज़ डॉक्टर बद उन्वान भी होते हैं, अगर ऐसे डॉक्टर से किसी मरीज़ को बचाना मक्सूद हो और इस की वजह से किसी मख़्सूस डॉक्टर की कमजोरी या ख़ामी सिर्फ़ उस के आगे बयान की जिस को बताना ज़रूरी था तो गुनहगार नहीं मगर अक्सर लोग बिला हाज़त **गीबत** करते और गुनहगार होते हैं । येह ज़ेहन में रहे कि कम्पनी वाले तश्हीर की गरज़ से डॉक्टरों को जो दवाएं मरीज़ों को मुफ़्त देने के लिये देते हैं उन पर NOT FOR SALE लिखा होता है, डॉक्टर उन दवाओं का मालिक नहीं सिर्फ़ "वकील" (या'नी नाइब) होता है । लिहाज़ा ऐसी दवाएं बेचना और मा'लूम होने के बा वुजूद ख़रीदना गुनाह है । नीज़ फ़लाही इदारों या मालदारों की तरफ़ से बीमारों के लिये अतिर्य्ये (DONATION) में मिली हुई दवाएं बेच कर खा जाने वाले गुनहगार और अज़ाबे नार के हक़दार हैं ।

डॉक्टरों की रहनुमाई के लिये : इस्लाम से महब्वत रखने और अल्लाह ﷻ से डरने वाले डॉक्टरों की रहनुमाई के लिये दा'वते इस्लामी के दारुल इफ़ताए अहले सुन्नत से जारी कर्दा एक इन्तिहाई मा'लूमाती फ़तवा पेशे ख़िदमत है । अल ज़वाब : डॉक्टरों को दवाओं की कम्पनी की जानिब से तोहफ़तन जो दवाएं, घड़ी, क़लम और पेड वगैरा मिलते हैं वोह उमूमन मा'मूली होते हैं और कम्पनी येह अश्या अपनी मशहूरी के लिये देती है क्यूं कि अक्सर अवकात उन पर कम्पनी



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

का नाम भी मौजूद होता है जैसा कि बहुत से इदारे सालाना अपनी डायरी जारी करते हैं और मुख्तलिफ़ लोगों को मुफ़्त देते हैं। लिहाज़ा इस मुआ-मले पर उर्फ़ जारी होने की वजह से इन मा'मूली अश्या का लेना और कम्पनी का उन्हें देना जाइज़ है और येह रिश्वत के जुमरे में नहीं।

दवा की कम्पनियों की तरफ़ से डॉक्टरों को रिश्वत : इस के इलावा कार, A.C. और दीगर मुमालिक के सफ़र के लिये टिकट वगैरा उमूमन कम्पनी की जानिब से तोहफ़तन नहीं दिया जाता क्यूं कि डॉक्टर जो दवाई लिख कर दे रहा है वोह तो उस का काम है और वोह इलाज की रक़म भी वुसूल करता है। कम्पनी के लिये उस ने जुदागाना कोई ऐसा काम नहीं किया जिस की उजरत बनती हो लिहाज़ा शरअन येह कमीशन या उजरत नहीं। हां अगर रिश्वत ही को कमीशन कहें तो और बात है जैसा कि येह भी हमारे उर्फ़ ही में है कि बा'ज़ अवकात जब पोलीस किसी का काम करवा देती है तो उस पर रिश्वत लेती है मगर उसे रिश्वत कहने के बजाए अपने हक़ या कमीशन का नाम देती है तो ऐसा कमीशन भी रिश्वत ही है। कम्पनी के मुख्तलिफ़ चीज़ें देने का मक्सद सिर्फ़ अपनी मेडीसीन (दवाएं) ज़ियादा से ज़ियादा बिकवाना होता है तो काम निकलवाने के लिये देना रिश्वत है लिहाज़ा डॉक्टर कमीशन का मुता-लबा करे तो रिश्वत का मुता-लबा है और अगर मुता-लबा न भी करे तब भी सरा-हतन या दला-लतन तै होने की (या'नी खुले लफ़्ज़ों में या जो अलामत से ज़ाहिर हो, (UNDERSTOOD) हो उस) सूरत में रिश्वत ही है और रिश्वत हराम है।

रिश्वत किसे कहते हैं ? : सय्यिदी आ'ला हज़रत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عليه رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इर्शाद फ़रमाते हैं : रिश्वत लेना मुत्लक़न हराम है किसी हालत में जाइज़ नहीं जो पराया हक़ दबाने के लिये दिया जाए रिश्वत है य़ूहीं जो अपना काम बनाने के लिये हाकिम को दिया जाए रिश्वत है लेकिन अपने ऊपर से दफ़्ए जुल्म के लिये जो कुछ दिया जाए देने वाले के हक़ में रिश्वत नहीं, येह दे सकता है (अलबत्ता) लेने वाले के हक़ में वोह भी रिश्वत है और उसे लेना हराम।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 597)



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़्ज़ाक)

रिश्वत की एक सूरत : अपना काम बनाने के लिये जो हाकिम को दिया जाए सिर्फ़ वोही रिश्वत नहीं बल्कि हाकिम के इलावा को भी अगर अपना काम बनाने के लिये कुछ दिया जाए तो वोह रिश्वत ही है। जैसा कि “जौहरए नय्यरह” में है : अगर बीवियों में से कोई अपना हक़ अपनी सोकन के लिये छोड़ने पर राज़ी हो गई तो जाइज़ है और उसे रुजूअ का हक़ भी है इस लिये कि उस ने वोह हक़ साक़ित किया है जो अभी साबित नहीं हुवा था तो गोया येह तबर्नुअ हुवा और तबर्नुअ (या’नी एहसान) के मुआ-मले में इन्सान पर ज़ब्र नहीं। और अगर किसी बीवी ने शोहर को इस लिये माल दिया ताकि वोह उस का हिस्सा दूसरी बीवियों की निस्बत ज़ियादा करे या शोहर ने बीवी को माल दिया ताकि वोह अपनी बारी का दिन अपनी सोकन के लिये कर दे तो येह ना जाइज़ है और माल उसी को वापस किया जाएगा जिस ने दिया है इस लिये कि येह रिश्वत है और रिश्वत हराम है। (जुवहे ज २ व ३६)

रिश्वत लेने देने वाले पर ला’नत : हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है : रसूलुल्लाह ﷺ ने रिश्वत देने वाले, रिश्वत लेने वाले और इन दोनों के दरमियान मुआ-मला करवाने वाले पर ला’नत फ़रमाई है। (मुस्नदु इमाम अहमद ज ८ व ३२७ حديث २४६१)

अगर कम्पनी वाले डॉक्टर को तोहफ़ा कह कर दें तो ? : अगर कम्पनी वाले येह कहें कि हम बतौर तोहफ़ा डॉक्टर को येह अश्या देते हैं लिहाज़ा इस में कोई हरज नहीं होना चाहिये तो इस का जवाब येह है कि तोहफ़ा और रिश्वत में एक बहुत वाज़ेह फ़र्क़ है और वोह येह है कि रिश्वत इस शर्त के साथ दी जाती है कि जिस को दी गई है वोह देने वाले का कोई काम करेगा जब कि तोहफ़ा बिग़ैर किसी शर्त के दिया जाता है और सूरते मस्क़ला (या’नी पूछी गई सूरत) में इसी शर्त पर दिया जाता है कि डॉक्टर इसी कम्पनी की दवाएं लिखे, जो डॉक्टर इस कम्पनी की दवाएं नहीं लिखता उन्हें “येह खास तहाइफ़” नहीं दिये जाते। “फ़त्हुल क़दीर” में है :
يَا’नी रिश्वत



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस ने मुन्न पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

और तोहफे में फर्क येह है कि रिश्वत इस शर्त पर दी जाती है कि जिसे रिश्वत दी गई वोह देने वाले की मदद करेगा जब कि तोहफे के साथ ऐसी कोई शर्त नहीं होती। (فتْحُ الْقَدِير ج ٧ ص ٢٥٤)

बिला हाजत टेस्ट या दवा लिख देना ख़ियानत है : डॉक्टर के बक़िया दीगर मुआ-मलात कि जिस दवाई या टेस्ट की हाजत नहीं और उसे लिख दिया येह ख़ियानत है और बिला वजह मरज़ को बढ़ा चढ़ा कर बता कर मरीज़ और उस के घर वालों को तश्वीश में डालना इन्सानी और अख़्लाकी और इस्लामी उसूलों के ख़िलाफ़ है और झूट होने की सूरत में झूट का गुनाह जुदा। दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है और मुसल्मान की परेशानी दूर करने वाले की परेशानियां अल्लाह तआला क़ियामत के दिन दूर करेगा। इन उमूर में जो अफ़राद, कम्पनियां, लेबोरेटरियां शरीक हों वोह अपने तआवुन व शिक़त की ब क़दर जुर्म में शरीक शुमार की जाएंगी। (फ़तवा यहां मुकम्मल हुवा)

रिश्वत से तौबा का तरीक़ा : डॉक्टर इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी चन्द रोज़ा है, नफ़्स की हीला बाज़ियों में पड़ कर “रिश्वत” को हाथ मत लगाइये अगर रिश्वत ली है तो तौबा भी कीजिये और जिस से ली है उसी को लौटा दीजिये वोह दुन्या में न रहा हो तो उस के वारिसों को दे दीजिये वोह भी न रहे हों या याद ही न हो कि किस किस से रिश्वत ली है तो फ़कीर को दे दीजिये। याद रखिये ! ख़ाली तौबा काफ़ी नहीं। अगर तौबा और उस के तकाज़े पूरे किये बिग़ैर मौत आ गई तो क्या बनेगा ! अगर खुदा ﷻ नाराज़ हुवा, मीठे मीठे मुस्तफ़ा ﷺ रूठ गए तो अज़ाब सहा न जा सकेगा। आप की तख़वीफ़ (या’नी डराने) के लिये एक लरज़ा ख़ैज़ हिकायत अर्ज करता हूं :

क़ब्र का भयानक सियाह कुत्ता : एक शख़्स जो कि हज़ का नुमाइन्दा बना और मालदार हो गया मरने के बा’द उस की क़ब्र खुलने का दिल हिला देने वाला वाक़िआ दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 853 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “जहन्म मे ले जाने वाले आ’माल” सफ़हा 70 में एक शख़्स के हवाले से कुछ यूं है कि जब



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज्जवाइद)

हम ने एक मुर्दे को दफ़नाने के लिये उस के करीब क़ब्र खोदी तो इत्तिफ़ाक़ से उस की क़ब्र खुल गई हम ने उस की क़ब्र में एक बहुत बड़ी ज़न्जीर देखी, एक बहुत बड़ा सियाह कुत्ता उस ज़न्जीर में उस के साथ बंधा हुआ उस के सर पर खड़ा था और उसे अपने पन्जों और नाखूनों से चीरना फाड़ना चाहता था, हम येह ख़तरनाक मन्ज़र देख कर बहुत ज़ियादा खौफ़ज़दा हुए और जल्दी जल्दी उस की क़ब्र को मिट्टी से ढांप दिया ।

عَزَّوَجَلَّ
कर ले तौबा रब की रहमत है बड़ी

क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُؤْنُوْا لَی اللّٰہِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

“राहे हलाकत” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से

ड्राइवर की गीबत की 8 मिसालें

★ गाड़ी बहुत रफ़ चलाता है ★ सिग्नल तोड़ देता है ★ फुलां बस वाला ओवर टेकिंग बहुत करता है ★ उस को गाड़ी चलाना कहां आती है ★ वोह ड्राइवर ट्रक चलाते चलाते सो जाता है ★ बिगैर ड्राइविंग लाइसन्स के स्कूटर चलाता है ★ बस में भेड़ बकरियों की तरह सुवारियां भरता है ★ लम्बे रूट पर येह बस वाला फुलां होटल पर बस रोक देता है क्यूं कि यहां इस को होटल से मुफ़्त खाना मिलता है वगैरा ।

लम्बे रूट की बस वगैरा के ड्राइवरों और होटल वालों को गुनाहों से बचाने के ज़ब्बे के तहत दा'वते इस्लामी के दारुल इफ़्ताए अहले सुन्नत का एक मा'लूमाती फ़तवा पेशे खिदमत है पढ़िये और फ़िक्रे आख़िरत में कुदिये :



फरमाने मुस्तफा ﷺ : جس کے پاس میرا جिकر ہوا اور اس نے مجھ پر دुरूدے پاک نہ پڑھا تو وہ بد بخت ہو گیا۔ (بکریٰ)

لम्بے رُٹ کی بسےں اور مځسُوس هوتلےں

سوال : بڊے رُٹ کی جو بسےں اور وِغَنےں وِغِیرا مځسُوس هوتلوں پر تَرکیب کے مُتَابِق رُکےں تاکی سواریاں وِहां خاएं پِیےں اور هوتل کی بیکری ہو اور اِس کے اِصْجَر ڈرائِور، کَنڊِکٲر وِغِیرا کو مُفْت مِیں خانا یا کَمِیْشَن مِل جَاے یہ سُورَت کِیسی هے ؟ اِس تَره خِلانا اور خانا یا رُکَم کا لَیْن دَیْن هَلال یا هَرَام ؟ 'بَیِّنُوا تَوَجَّرُوا' (بَیان فَرماؤ اَجْر پاؤ)

جواب : سُورَتِ مَسْکُولا (یا'نی پُھْی گئی سُورَت) مِیں ڈرائِور اور کَنڊِکٲر کو هوتل والوں کا مُفْت خِلانا اور اِن کا مُفْت خانا نا جَایْز وِ هَرَام اور جَهَنَّم مِیں لے جانے والا کام هے کُیُونْکی یہ رِشْوََت هے۔ هوتل والے اُن کو اِس لِیے مُفْت خانا دے رھے هے تاکی یہ اِیْنڊا بھی بَس اِسی هوتل پر رُکےں۔ هوتل والے اِپنا کام نِکالوانے کے لِیے یہ خانا وِغِیرا دے رھے هے اور یہی رِشْوََت هے۔ فو-کُھاے کِرامَ اللّٰه السَّلَام فَرماوے هے : رِشْوََت اور توھفے مِیں فَرک یہ هے کِی رِشْوََت اِس شَرْت پر دی جاتی هے کِی جِسے رِشْوََت دی گئی وہ دینے والے کی مَدَد کرےگا جب کِی توھفے کے ساِث اِسی کوئی شَرْت نَہیْں هوتی۔ (فَتْحُ الْقَدِیر ج ۷ ص ۲۵۴) هُجَرَتِ سَیْیْدُنا سَؤْبان رَضِیَ اللّٰه عَنْہُ سے رِواَیَت هے : رَسُولُ اللّٰه ﷺ نے رِشْوََت دینے والے، رِشْوََت لےنے والے اور اِن دوئوں کے دَرمِیاَن مُا-مَلا کروانے والے پر لَآ'نَت فَرمائی هے۔

(مُسْنَدُ اِمَامِ اَحْمَد ج ۸ ص ۳۲۷ حَدِیْث ۲۲۶۶۲)

لُکْمِے هَرَام کی نُھُوسَت : دا'وتے اِسْلَامِی کے اِشْااِتی اِداَرے مَک-ت-بَتُل مَدِیْنَا کی مَٹْبُؤا 480 س-فُهاَت پر مُشْتَمِل کِتاب، "بَیْاَنَاتِے اُتْتاَرِیْیَا" هِیْسْاے اِوْول کے سَفْها 211 پر هے : مُکا-ش-فَتُل کُلُوب مِیں هے : اِداْمِی کے پِٹ مِیں جب لُکْمِے هَرَام پِڊا تو جَمِیْن وِ اِسْمَان کا هَر فِریْشْتا اُس پر لَآ'نَت کرےگا جب تَک اُس کے پِٹ مِیں رھےگا اور اِگر اِسی هَالَت مِیں (یا'نی پِٹ مِیں هَرَام لُکْمِے کی مَؤْجُودگی مِیں) مَؤْیْت آ گئی تو داخِلے جَهَنَّم هُؤْگا۔

(مِکاشَفَةُ الْقُلُوب ص ۱۰)



फरमाने मुस्फा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुख्दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज्जवाइद)

लुक़्मए हलाल की फ़ज़ीलत : हमें हमेशा हलाल रोज़ी कमाना, खाना और खिलाना चाहिये लुक़्मए हलाल की तो क्या ही बात है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1548 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "फ़ैज़ाने सुन्नत" जिल्द अव्वल सफ़हा 179 पर है : हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی का कौल नक्ल करते हैं कि एहयाउल उलूम की दूसरी जिल्द में एक बुजुर्ग عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی का कौल नक्ल करते हैं कि मुसल्मान जब हलाल खाने का पहला लुक़्मा खाता है, उस के पहले के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं । और जो शख्स त-लबे हलाल के लिये रुस्वाई के मक़ाम पर जाता है उस के गुनाह दरख़्त के पत्तों की तरह झड़ते हैं ।

(احیاء العلوم ج ۲ ص ۱۱۶)

“गीबत कीजिये न सुनिये !” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से सुवारी और सुवार की गीबत की 15 मिसालें

★ उस की गाड़ी धक्का स्टार्ट है ★ उस की कार है या गधागाड़ी ! ★ उस की गाड़ी की रफ़्तार बहुत कम है ★ उस की गाड़ी का मॉडल बहुत पुराना है ★ उस की गाड़ी तो “खचड़ फचड़” है ★ पुरानी गाड़ी रंग करवा रखी है और लोगों से कहता फिरता है कि नई ख़रीदी है ★ उस की गाड़ी तो निरी सर दर्द है, चलते चलते कहीं भी ख़राब हो जाती है ★ फटफट करती गाड़ी न जाने कहां से ले आया, लगता है मुफ़्त में मिली है ★ इस खटारे से तो बेहतर था साइकिल ले लेता ★ इस की गाड़ी का इन्जन बहुत पुराना हो गया है अब तो येह पेट्रोल “पीती” है ★ बिगैर लाइसन्स के गाड़ी चलाता है ★ बहुत रफ़ ड्राइविंग करता है ★ गाड़ी बराबर चलानी कहां आती है ★ उस की गाड़ी अचानक बीच सड़क में अड़ी कर के रुक गई, ट्राफ़िक जाम हो गया, बड़ी मुश्किल से धक्के लगा कर उस को साइड पर लगाना पड़ा ★ इतने दिन हो गए मगर उस ने अपनी गाड़ी का “डेन्ट” नहीं बनवाया ।



फरमाने मुस्ताफ़ा ﷺ: जिस ने मुझ पर दस मारतबा सुब्द और दस मारतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज़्जवाइद)

“आख़िरत बचाइये” के दस हुरूफ़ की निस्बत से रेल्वे का सफ़र और मु-तवक्क़अ 10 ग़ीबतें

★ रेल्वे का फुलां अफ़सर घपले बाज़ है ★ इस ने रेल्वे का निज़ाम तबाह कर के रख दिया है ★ नए डिब्बे बेच कर खा गया है और ★ पुराने घिसे पिटे डिब्बे साथ लगवा दिये हैं ★ फुलां कुली पहले से टिकटें ले कर रख लेता और ब्लेक में बेचता है ★ पैसे निकलवाने के लिये रश का बहाना करता है इस को ★ ज़ाइद रक़म दो तो सीट भी मिल जाएगी और बर्थ भी ★ इस अफ़सर के होते हुए हमारी रेल्वे का खुदा ही हाफ़िज़ है ★ हमारी रेल्वे का वज़ीर चोर है चोर ★ टिकट कलक्टर अपनी जेबें भरता है सरकारी ख़ज़ाने में कहा जम्अ करवाता होगा !

एक हेरोइन्ची की आपबीती : ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ ज़िन्दगी के शबो रोज़ बसर कीजिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे बाबुल मदीना कराची के अलाके “कोरंगी” के एक इस्लामी भाई ने जो कुछ हलफ़िया (या'नी क़सम खा कर) बयान दिया उस का खुलासा अर्ज करता हूं : तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, “दा'वते इस्लामी” के कोरंगी में होने वाले तीन रोज़ा बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ का वाकिआ है। कोरंगी का आख़िरी इज्तिमाअ था उस के बा'द येह इज्तिमाअ मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में मुन्तक़िल कर दिया गया। हम चन्द दोस्त रस्मी तौर पर इज्तिमाअ में हाज़िर तो हो गए मगर बयानात की ब-रकात छोड़ कर रात इज्तिमाअ गाह के बाहर एक जगह बैठ कर ख़ूब सिगरेट के कश और गपशप लगाने में मशगूल हुए इसी में ज़िन्न व भूत के सन्सनी ख़ैज़ वाकिआत भी छिड़ गए, जिस की बिना पर कुछ डरावना सा माहोल बन गया। इतने में सब्ज़ इमामे वाले



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझे पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बदबज़ हो गया । (इन्ने सुनी)

एक उधेड़ उम्र के इस्लामी भाई ने करीब आ कर हमें सलाम किया और फ़रमाने लगे : अगर इजाज़त हो तो कुछ अर्ज़ करूं ! हम ने कहा : फ़रमाइये ! उन्होंने ने बड़े हमदर्दानी लहजे में कहा : आप हज़रात के इज्तिमाअ में शिर्कत का अन्दाज़ देख कर मुझे अपनी पिछली ज़िन्दगी याद आ गई ! मैं ने सोचा कि अपनी आपबीती गोश गुज़ार करूं कि शायद आप लोगों को इस में कुछ इब्रत के म-दनी फूल मिल जाएं । फिर उन्होंने ने अपनी दास्ताने हिदायत निशान कुछ इस तरह बयान करनी शुरूअ की : पहले पहल मेरी सिगरेट नोशी की आदत पड़ी और फिर बुरे दोस्तों की सोहबत की नुहूसत ने मुझे चरस और हेरोईन जैसे मोहलिक नशे का आदी बना दिया, आह ! मैं सोलह साल तक नशे का आदी रहा । येह बताते हुए उन की आवाज़ भर्रा गई, मगर बयान जारी रखते हुए कहा : मेरी बुरी आदतों से बेज़ार हो कर मुझे घर से निकाल दिया गया । मैं फुटपाथ पर सोता और कचरे के ढेर से उठा कर या मांग कर खाता । आप को शायद यकीन न आए कि मैं ने एक ही लिबास में सोलह साल गुज़ार दिये ! मेरी कैफ़ियत बिल्कुल एक पागल की तरह हो चुकी थी !

एक मुक़द्दस रात का किस्सा है, ग़ालिबन वोह र-मज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब थी । मैं इसी गन्दी हालत में बद मस्त एक गली के कोने में कचरा कूंडी के पास लैटा हुवा था कि सलाम की आवाज़ पर चौंका ! जब आंखें मलते हुए देखा तो मेरे सामने सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए दो इस्लामी भाई खड़े मुस्करा रहे थे, उन्होंने ने बड़ी महब्वत से मेरा नाम पूछा, शायद ज़िन्दगी में पहली बार किसी ने इतनी महब्वत से मुझे मुखातब किया था । फिर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्होंने ने शबे क़द्र की अ-ज़मत से मु-तअल्लिक़ बड़ी प्यारी प्यारी बातें बताईं । मैं उन के अपनाइयत वाले अन्दाज़ और हुस्ने अख़्लाक़ की बिना पर वैसे ही मु-तअस्सिर हो चुका था, मज़ीद उन की शहद से भी मीठी मीठी म-दनी गुफ़्त-गू तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त हो गई, मैं उन के साथ मस्जिद की तरफ़ चल पड़ा । मस्जिद के गुस्ल खाने में अपना मैला चिक्कट लिबास उतारा और गुस्ल कर के साफ़ सुथरे कपड़े पहन कर 16 साल बा 'द जब पहली बार मस्जिद में दाख़िल हो कर नमाज़ के लिये



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

मैं ने निय्यत बांधी तो अपने आंसू न रोक सका, रो रो कर मैं ने नशे और दीगर गुनाहों से तौबा कर ली और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया। الْحَمْدُ لِلَّهِ घर वालों ने मुझे वापस ले लिया। मैं कादिरिया र-जविया सिल्ले में दाखिल हो कर हुजूर गौसे आ'जम عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ الْاَكْرَم का मुरीद बन गया। मैं ने येह निय्यत कर ली कि अब हर कीमत पर नशे की आदत छुड़ाऊंगा। इस के लिये मुझे बड़ी आजमाइशों से गुजरना पड़ा, मैं तक्लीफ के बाइस चीखता, बुरी तरह तड़पता, घर वाले मेरी ये हालत देख कर रो पड़ते। बा'ज लोग मश्वरा देते कि हेरोईन का एक आध सिगरेट ही पी लो ! मगर मैं ने ऐसा न किया कि इस तरह तो मैं फिर इस नुहूसत में गरिफ्तार हो जाऊंगा बल्कि घर वालों से कहता कि जरूरतन मुझे चारपाई से बांध दिया करो। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता बेहतरी आने लगी और मुझे नशे से मुकम्मल तौर पर नजात मिल गई और मैं आज दा'वते इस्लामी का एक अदना सा मुबल्लिग हूं। उन की दास्ताने इब्रत निशान सुन कर हम अशकबार हो गए, हम ने साबिका गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गए। मैं येह बयान देते वक़्त الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ बाबुल मदीना कराची के एक डिवीज़न के म-दनी इन्आमात के ज़िम्मेदार की हैसियत से नेकी की दा'वत की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं।

छोड़ें बद मस्तियां, और नशे बाजियां जामे उल्फत पियें, काफिले में चलो
ऐ शराबी तू आ, आ जूआरी तू आ सब सुधरने चलें, काफिले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ مُحَمَّدٌ

“नेकियां बचाइये” के बारह हुरूफ़ की निस्बत से मे 'मार
व मजदूर की मु-तवक्क़अ गीबतों की 12 मिसालें

★ फुलां ने हम्माम में ढलवान (SLOPE) सहीह नहीं बनाया ★ वोह मिस्तरी अनाड़ी था ★ फ़िनिशिंग सहीह नहीं की ★ रंग चूना बराबर नहीं किया ★ सिमेन्ट में बजरी ज़ियादा डाली है ★ मजदूरी पूरी ली मगर काम पूरा नहीं किया ★ ज़िद कर के तै शुदा मजदूरी से ज़ियादा



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुखद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

रक़म ले गया ★ काम बराबर नहीं जानता ★ पलस्तर सहीह नहीं किया ★ देर से आता और जल्दी भागने की करता है ★ खाने में वक़्त ज़ियादा लगा देता है ★ कोई चीज़ लेने भेजो तो काफ़ी वक़्त निकाल कर आता है ।

“मुर्दों के गोश्त से बचिये” के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से होटल वाले की मु-तवक्क़अ ग़ीबत की 17 मिसालें

★ उस का खाना टेस्टी नहीं था ★ मसाले वग़ैरा घटिया इस्ति'माल करता है ★ कढ़ी बिल्कुल पानी जैसी थी ★ आलू गलाए नहीं थे ★ सब्ज़ी बासी लग रही थी ★ गोश्त बहुत बूढ़े जानवर का था ★ कन्जूस है ठन्डा पानी भी नहीं रखता ★ मैं ने गरेबी मांगी तो झाड़ दिया था ★ इस को तो दाल भी पकाना नहीं आती ★ येह क़ोरमा बहुत महंगा देता है ★ बस लूटमार मचा रखी है ★ पकाने में इस का हाथ सहीह नहीं, कभी मिर्च कम तो कभी नमक ज़ियादा ★ इस के होटल में सफ़ाई नहीं होती ★ इस की चाय बेकार होती है ★ बस जी इस के नसीब अच्छे हैं इतना रफ़ खाना होने के बा वुजूद भीड़ लगी रहती है ★ इस की नहारी में दम नहीं था ★ इस की नहारी ऊंट के गोश्त की होती है ।

“ख़बरदार ! ग़ीबत का बाज़ार गर्म न करें” के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से ताजिरो के मु-तअल्लिक़ 26 ग़ीबतें

★ येह फ़राडी आदमी है ★ गाहक फंसाना तो कोई इस से सीखे ★ बातों का जादूगर है ★ धोकेबाज़ है ★ इसे माल बेचना नहीं आता ★ माल की पहचान नहीं कर पाता ★ गाहक तो उसे उल्लू बना जाते हैं ★ बोटल पिला के उन की खाल उतार लेता है ★ जब भी किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ी, मौजूद होने के बा वुजूद मन्अ कर देता है ★ कभी (रक़म का) खुला नहीं देता ★ झूट बहुत बोलता है ★ “टोपियां” पहनाता है ★ हराम कमाता है ★ मत्लबी है ★ बहुत महंगा बेचता है ★ दो नम्बर माल रखा हुवा है ★ नक्ली को अस्ली बता कर बेचता है ★ काम की चीज़ तो उस के पास मिलती ही नहीं ★ अब येह मेरी रोज़ी पर भी लात मारेगा ★ इस को



फरमाने मुस्तफा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

क्या तकलीफ़ थी अपनी दुकान पर येह माल रखने की ★ मेरे गाहकों को मेरे खिलाफ़ भड़काता है ★ मेरे माल की बुराइयां बयान करता है ★ उस ने जादू करवा कर मेरे गाहक अपनी तरफ़ कर लिये ★ टेक्स की चोरी करता है ★ बिजली चोर है ★ पोलीस को भत्ता देता है।

“गीबत मत कर” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से सेठ और मुलाज़िम की एक दूसरे के मु-तअल्लिक़ ग़ीबतों की 8 मिसालें

★ सेठ साहिब बड़े सख़्त मिज़ाज हैं ★ काम लेते वक़्त मिनट मिनट का हिसाब रखते हैं पैसे देते वक़्त उन्हें मौत पड़ती है ★ किसी की मजबूरी का ख़याल नहीं करते ★ खुद तो A.C में बैठे हैं यहां आ कर देखें तो पता चले ★ फुलां मुलाज़िम वक़्त पर नहीं आता ★ काम में बड़ा सुस्त है ★ दिल लगा कर काम नहीं करता ★ फुलां पक्का कामचोर है।

“अपनी आख़िरत बचाइये” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से मुख़्तलिफ़ कारीगरों के मु-तअल्लिक़ ग़ीबतों की 14 मिसालें

★ अनाड़ी है ★ अस्ल पुर्जे निकाल कर दो नम्बर के लगा देता है ★ थोड़े काम को बहुत लम्बा कर देता है ★ जान बूझ कर ख़राबियां बढ़ाता है ★ झूटा और ★ दगाबाज़ है ★ मैं इस के पास बेकार ले आया अब धक्के खाने पड़ रहे हैं ★ वोह दरज़ी बचा हुवा कपड़ा रख के उस की टोपियां बना कर बेचता है ★ बिल ज़ियादा बना देता है ★ दो नम्बर बिल दे कर ज़ियादा पैसे ले लिये ★ उस की कढ़ाई में सफ़ाई नहीं ★ सिलाई साफ़ नहीं ★ टाइम जाएअ करता है ★ वा'दे के मुताबिक़ काम कर के नहीं देता।



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

“जहन्नम में ले जाने वाला काम” के बीस हुरूफ़ की निस्बत से दफ़्तर के खादिम के मु-तअल्लिक़ ग़ीबतों की 20 मिसालें

★ मेरी जगह की सफ़ाई अच्छी नहीं करता ★ हाथ मार कर चला जाता है सफ़ाई कहां करता है ★ पांच मिनट में सफ़ाई मुकम्मल कर ली, सोचो क्या सफ़ाई की होगी ! ★ दीवारों के कोने अक्सर छोड़ देता है ★ दिल लगा कर सफ़ाई करे तो येह हाल न हो ★ अगले हिस्से की सफ़ाई करता है, पिछला हिस्सा वैसे ही गन्दा रहता है ★ सफ़ाई करने बहुत देर से आता है ★ मुझ से चाय और खाने का जान बूझ कर नहीं पूछता ★ नख़्के बहुत बढ़ गए हैं ★ चापलूस है ★ कामचोर है ★ पैसे खा जाता है ★ दो की चाय तीन को पिला कर बाकी रक़म जेब में ★ अपने लिये चाय, खाना बचा लेता है ★ मुझे खुद खाना देने नहीं आता ★ जो पैसे दे उस की बड़ी इज़्ज़त करता है ★ देर से आता और जल्दी चला जाता है ★ चीज़ें चुराता है ★ इसे मांगने की आदत है ★ ड्यूटी में कोताही कर के हराम की रोज़ी खाता है ।

“कुफ़्ले मदीना लगा लीजिये” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से मकान व साहिबे मकान की ग़ीबत की 16 मिसालें

★ उन के मकान (या कारख़ाने या दुकान या होटल) में बदबू फैली हुई थी या सफ़ाई नहीं थी ★ उन का हम्माम (या लेट्रीन) गन्दा था ★ वोह अपने मकान (या दुकान) पर रंग या ★ मरम्मत नहीं करवाता ★ घर है या कबाड़ ख़ाना ! ★ निहायत बे ढंगा मकान बनाया हुआ है ★ इस का कमरा है या क़ब्र ? ★ उस का मकान हवादार नहीं है ★ मिट्टी के गारे से बना लिया सिमेन्ट से चुनाई नहीं कराई ★ उस के घर का पलस्तर जगह जगह से उखड़ा हुआ था ★ उस के घर का पंखा “खड़ खड़” बोल रहा था ★ उस का A.C. काफ़ी पुराना मा'लूम होता था । ठन्डक (COOLING) बराबर नहीं दे रहा था ★ इतना मालदार है मगर घर में A.C. नहीं लगवाया ★ इस कंगले के ठाठ तो देखो घर पर A.C. लगवा लिया है ★ इस के पास इतनी रक़म कहां ! किसी पार्टी से A.C. की तरकीब बनाई होगी ★ इस ने



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह جَلَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उद्द पहाड़ जितना है। (अदुर्गज़ाक)

इतना बड़ा मकान कैसे बनवा लिया ? पैसे कहां से आए होंगे !

“दर्दनाक अज़ाब से बचिये” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से किरायादार के बारे में की जाने वाली ग़ीबतों की 16 मिसालें

★ मेरे घर की दीवारें और फ़र्श ख़राब कर दिया ★ मेरा किराया खा गया ★ कई महीनों से किराया नहीं दिया ★ येह किरायादार सहीह आदमी नहीं ★ मेरे घर पर कब्ज़ा करना चाहता है ★ मालिक बन बैठा है ★ मुझ से ले कर किसी और को किराए पर बिठा दिया है ★ मेरे मकान को कबाड़ ख़ाना बना दिया है ★ मकान की गटर लाइन तबाह कर डाली है ★ जिधर देखो दीवारों में कीलें ठोक दी हैं ★ मेरा घर ख़ाली नहीं करता ★ धमकी देता है कि तुम से जो हो सके कर लो ★ मुझे बहुत तकलीफ़ में डाल दिया है ★ जब भी घर ख़ाली करने की बात करूं तड़ियां देता है ★ पड़ोसी मुझ से इस की शिकायत करते हैं मगर मेरी येह सुनता कब है ★ मेरे किराएदारों को मेरे ख़िलाफ़ भड़काता है ।

“अपनी इस्लाह के लिये म-दनी इन्आमात पर अमल कीजिये” के पैंतीस हुरूफ़ की निस्बत से सियासी तब्सरों में की जाने वाली ग़ीबत की 35 मिसालें

★ धांदली कर के इन्तिखाब जीता है ★ इस ने बहुत सारे आदमी मरवाए हैं ★ लुच्चा ★ लफ़ंगा ★ गुन्डा ★ लोटा ★ राशी ★ पैदागीर ★ दादागीर ★ टेढ़ा ★ खोछड़ा ★ तड़ीबाज ★ बद मआश ★ दहशत गर्द ★ ज़ालिम (सरकश) ★ ज़लील ★ कमीना ★ बद जात ★ पाजी है ★ चलता पुर्जा ★ बिकाउ माल (जिधर पैसा देखता है उधर लुढ़क जाता) है ★ मल्लबी ★ खुद गरज़ ★ थाली का बेंगन ★ मफ़ाद परस्त ★ पैसों का भूका है ★ अपनी बद इन्वानियां छुपाने के लिये हुकूमत से जा मिला है ★ फ़न्ड ग़रीबों को देने के बजाए खुद खा गया है ★ वोट लेने के वक़्त पीछे पीछे फिरता है ★ अब घास नहीं डालता ★ इस ने अपने मन पसन्द



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عزوجل उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

लोगों को ही नोकरियां दिलवाई हैं ★ सरकारी ख़ज़ाने पर ऐश कर रहा है ★ हम ने इसे वोट दिये मगर उस ने हमारे लिये कुछ नहीं दिया ★ अन्दर खाते फुलां पार्टी से मिला हुवा है ★ वतन का ग़द्दार है।

“वक्त कीमती दौलत है” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से फुज़ूल जुम्लों की 14 मिसालें

अफ़सोस सद अफ़सोस ! आज कल अच्छी सोहबतें कम्प्याब हैं। कई “अच्छे” नज़र आने वाले भी बद किस्मती से भलाई की बातें बताने के बजाए फुज़ूल बातें सुनाने में मशगूल नज़र आ रहे हैं। काश ! हम सिर्फ़ रब्बे का एनात عزوجل ही की खातिर लोगों से मुलाकात करें और हमारा मिलना सिर्फ़ ज़रूरत की बात करने की हद तक हो। मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत, मम्बए जूदो सखावत, सरापा फ़ज़लो रहमत ﷺ का फ़रमाने अफ़ियत निशान है : “आदमी के इस्लाम की अच्छाई में से ये है कि लाया’नी चीज़ छोड़ दे।” (मुठ्ठा امام مالك ج 2 ص 403 حديث 1718) **सदरुशरीअह, बदरुत्तरीकह** हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ’ज़मी عليه رحمة الله القوی ये हदीसे पाक नक़ल करने के बाद फ़रमाते हैं : या’नी जो चीज़ कार आमद न हो उस में न पड़े, ज़बान व दिल व ज़वारेह (या’नी आ’ज़ा) को बेकार बातों की तरफ़ मु-तवज्जेह न करे। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 163) **याद रहे !** फुज़ूल बातें करना गुनाह नहीं अलबत्ता इन से बचना मुनासिब है चुनान्वे **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عليه رحمة الله التوایی फ़रमाते हैं : “बे फ़ाएदा बातों में मसरूफ़ होना या फ़ाएदा मन्द गुफ़्त-गू में ज़रूरत से ज़ियादा अल्फ़ाज़ मिला लेना हराम या गुनाह नहीं अलबत्ता इसे छोड़ना बहुत बेहतर है।” (احياء العلوم ج 3 ص 142) ग़ैर ज़रूरी बातें करते करते “गुनाहों भरी” बातों में जा पड़ने का क़वी इम्कान रहता है लिहाज़ा **ख़ामोशी** ही में भलाई है। हमारे मुआशरे में आज कल बिला हाज़त ऐसे ऐसे सुवालात भी किये जाते हैं कि सामने वाला शरमिन्दा हो जाता है और अगर ज़वाब में एहतियात् से काम न ले तो झूट के गुनाह में भी पड़ सकता है। बसा अवकात इस तरह के सुवालात ज़रूरतन भी किये जाते हैं अगर ऐसा है तो **फुज़ूल** न हुए। इस तरह के सुवालात की 14 मिसालें पेशे खिदमत



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (अबू या'ला)

हैं अगर ज़रूरत है तो ठीक और इस के बिगैर काम चल सकता है तो मुसलमानों को शरमिन्दगी या गुनाहों के ख़दशात से बचाइये। म-सलन ★ हां भई क्या हो रहा है! ★ यार! आज कल दुआ वुआ नहीं करते! ★ अरे भाई! नाराज़ हो क्या? ★ यार! लगता है आप को मज़ा नहीं आया! ★ येह गाड़ी कितने में ख़रीदी? ★ किस साल का मोडल है? ★ आप के अलाके में मकान का क्या भाव चल रहा है? ★ यार! महंगाई बहुत ज़ियादा है ★ फुलां जगह पर मौसिम कैसा है? ★ उफ़! इतनी गरमी! ★ आज कल तो कड़कड़ाती सर्दी है ★ न जाने येह बारिश अब रुकेगी भी या नहीं! ★ ज़रा बारिश आई कि बिजली गई! ★ आप के यहां बिजली थी या नहीं वगैरा वगैरा। उमूमन मु-तज़क्करा कलिमात और इस तरह के बे शुमार फ़िक़्रात बिला ज़रूरत बोले जाते हैं। ताहम इस तरह के जुम्ले बोलने वाले के मु-तअल्लिक कोई बुरी राय काइम न की जाए, बल्कि हुस्ने ज़न ही से काम लिया जाए कि हो सकता है जो बात फुज़ूल लग रही है इस में काइल की कोई मस्लहत हो जो मैं नहीं समझ सका। बिलफ़र्ज़ वोह सुवाल या जुम्ला फुज़ूल भी हो तब भी काइल गुनहगार नहीं।

थोक बन्द गीबतों की चार⁴ मिसालें

अगर किसी ग्रूप, आबादी, या महक़मे की बुराई की और इस से उस क़ौम वगैरा के हर हर फ़र्द की बुराई करना मक़सूद हो तो गोया बुराई करने वाले ने एक ही जुम्ले में उस क़ौम की ता'दाद के बराबर गीबतें कर डालीं, अब अगर उस क़ौम में 10 हज़ार अफ़राद हैं तो 10 हज़ार गीबतों का गुनाह हुवा। इस की चार मिसालें पेश की जाती हैं: ★ हमारा सारा ही ख़ानदान (या सारा गाउं) गुमराह हो गया है एक मैं ही बचा हुवा हूं (उमूमन ऐसा नहीं होता, बड़े बूढ़े, ख़वातीन और बच्चे अक्सर महफूज़ होते हैं) ★ हमारे सारे ही सरकारी अफ़सर रिश्वत ख़ोर हैं ★ इलेक्ट्रिक सपलाय वाले सब के सब बद मआश हैं (مَعَاذَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ) ★ हुकूमत में सब के सब चोर भरे हैं वगैरा। अलबत्ता बा'ज़ अवक़ात ऐसा होता है कि किसी जुम्ले में "कुल या इस से मिलता जुलता" कोई लफ़ज़ होता है लेकिन वहां उर्फ़न तमाम लोग नहीं बल्कि अक्सर अफ़राद मुराद होते हैं तो अगर काइल या'नी कहने वाले ने हर हर फ़र्द मुराद न लिया हो तो ऐसी जगह पर तमाम लोगों की गीबत



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफअत करूंगा । (कन्जुल उमाल)

का हुक्म नहीं होगा लेकिन येह याद रखें कि आम लोगों के लिये इस तरह के जुम्लों में फर्क समझना और काइम रखना मुश्किल होता है लिहाजा अफिय्यत इसी में है कि ऐसे अल्फाज से बिल्कुल गुरेज किया जाए जिस में हजारों गीबतों में पड़ जाने का अन्देशा हो ।

“ऐ काश ! लग जाए कुफ़ले मदीना” के उनीस हुरूफ़ की निस्बत से बकर ईद पर किये जाने वाले फुजूल सुवालात की 19 मिसालें

बकर ईद के मौक़अ पर बिगैर लेने देने के किये जाने वाले फुजूल सुवालात की 19 मिसालें : ★ गाय लेने कब जाएंगे ? ★ आज कल तो मन्डी तेज़ हो गई होगी ! ★ हां भई ! गाय कितने में लाए ? ★ यार ! गाय है तो बड़ी जानदार ! ★ कितने दांत की है ? ★ टक्कर तो नहीं मारती ? ★ चला कर लाए या सूजूकी में ? ★ सूजूकी वाले ने कितना किराया लिया ? ★ कब कटेगी ? ★ क़स्साब वक़्त पर आया या नहीं ? ★ क़स्साब छुरी फैर कर चला गया फिर बड़ी देर से आया ★ हां यार ! क़स्साब लोग लटका देते हैं ★ फुलों की गाय क़स्साब के हाथ से छूट कर भाग खड़ी हुई, बड़ा मज़ा आया ! ★ हां यार ! क़स्साब अनाड़ी था ! (इस जुम्ले में गीबत, तोहमत, दिल आज़ारी, बद गुमानी और बद अल्काबी वगैरा गुनाहों की बदबू है अलबत्ता अगर वाक़ेई वोह क़स्साब अनाड़ी हो और जिस को बताया उस को उस से बचाना मक़सूद हो तो इस जुम्ले में हरज नहीं) ★ आप का बकरा कितने दांत का है ? ★ कितने में मिला ? ★ ओहो ! बड़ा महंगा मिला ★ चलता भी है या नहीं ? ★ कितनी कटाई लगी ? वगैरा वगैरा ।

“झूट हलाकत ख़ैज़ है” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से झूट पर मजबूर करने वाले सुवालात की 14 मिसालें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज अवकात लोग ऐसे सुवालात कर देते हैं कि जवाब देने में बे एहतियाती और मुरुव्वत की वजह से आदमी के मुंह से झूट निकल सकता है अगरचें सुवाल करने वाला गुनहगार नहीं ताहम मुसल्मानों को गुनाहों से बचाने के लिये बिला ज़रूरत इस तरह के सुवालात से इज्तिनाब (या'नी परहेज़) करना मुनासिब है । सुवालात की 14 मिसालें



फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़र करते रहेंगे। (त-बरानी)

हाज़िर हैं : ★ हमारा घर ढूँडने में कोई परेशानी तो नहीं हुई ? ★ हमारे घर का खाना पसन्द आया ? ★ मेरे हाथ की चाय कैसी थी ? ★ हमारा घर आप को अच्छा लगा ? ★ मेरे लिये दुआ करते हैं या नहीं ? ★ मैं ने अभी जो बयान किया आप को कैसा लगा ? ★ मैं ने जो ना'त शरीफ़ पढ़ी थी इस में आप को मेरी आवाज़ कैसी लगी ? ★ मेरी बात आप को बुरी तो नहीं लगी ? ★ मेरे आने से आप को तकलीफ़ तो नहीं हुई ? ★ मेरी वजह से आप को बोरियत तो नहीं हो रही ? ★ मैं आ कर आप की बातों में कहीं मुख़िल तो नहीं हो गया ? ★ आप मुझ से नाराज़ तो नहीं ? ★ आप मुझ से खुश हैं ना ? ★ मेरे बारे में आप का दिल तो साफ़ है ना ? वगैरा ।

सब से ख़तरनाक अबुल फ़ुज़ूल : बा'ज़ लोग तो बड़े ही अजीब होते हैं, बात बात पर ख़्वाह म ख़्वाह इस तरह ताईद त़लब करते हैं : ★ हां भई क्या समझे ? ★ मेरी बात का म़ल्लब समझ गए ना ? अलबत्ता ज़रूरतन शागिर्दों या मा तहूतों से उस्ताज़ या बुजुर्गों वगैरा का पूछना कभी मुफ़ीद भी होता है ताकि किसी को समझ में न आया हो तो समझाया जा सके। ऐसे मौक़अ पर समझ में न आने की सूरत में सामने वाले को चाहिये कि झूट मूट हां में हां न मिलाए ★ क्यूं भई ! ठीक है ना ! ★ “मैं ग़लत तो नहीं कह रहा ?” ★ “क्या ख़याल है आप का ?” अब बात लाख ना काबिले क़बूल हो या गीबत पर मुश्तमिल हो मगर बसा अवकात मुरुव्वत में हां में हां मिला कर बारहा झूट और गीबत की ताईद के गुनाह करने पड़ते हैं। ऐसे अबुल फ़ुज़ूल और बातूनी लोगों की इस्लाह की हिम्मत न पड़ती हो तो फिर इन से कोसों दूर रहने ही में अफ़ियत है कि इन की गीबतों और तोहमतों वगैरा गुनाहों भरी बातों में भी हां में हां मिलाना कहीं जहन्नम में न पहुंचा दे ! यहां तक कि इस तरह के बकवासी लोग कभी तो गुमराही की बातें बल्कि **مَعَادُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** कुफ़्रिय्यात बक कर भी हस्बे अ़दत ताईद हासिल करने के लिये : “क्यूं जी ठीक कह रहा हूं ना ?” कह कर सामने वाले से हां कहलवा कर बा'ज़ अवकात उस का भी ईमान बरबाद



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

करवा देते हैं। क्यूं कि होश व हवास के साथ कुफ़र की ताईद भी कुफ़र है। اَلْعِيَاذُ بِاللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

ऐ काश ! ज़रूरत के सिवा कुछ भी न बोलूं

عَزَّوَجَلَّ
अल्लाह ज़बां का हो अता कुफ़ले मदीना

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़ोन पर की जाने वाली फुज़ूल बातों की 5 मिसालें

★ क्या कर रहे हो ? ★ कहां हो ? ★ गाड़ी में फ़ोन आया तो सामने से सुवाल होगा इस वक़्त आप के पास कौन कौन है ? ★ किधर से गुज़र रहे हो ? ★ कहां तक पहुंचे ? वगैरा । हां जो जो सुवाल ज़रूरतन किया जाए वोह फुज़ूल नहीं कहलाएगा मगर बा'ज सुवालात आदमी को शरमिन्दा कर के झूट पर मजबूर कर सकते हैं म-सलन हो सकता है कि पहले तीन सुवालात का जवाब वोह दुरुस्त न दे पाए क्यूं कि वोह नहीं चाहता कि किसी को पता चले कि क्या कर रहा है या कहां है या उस के पास कौन कौन है । बस काम की बात वोह भी हस्बे ज़रूरत करने ही में दोनों जहानों की आफ़ियत है ।

“गीबत नुक्सान देह है” के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से

फ़ोन करने के हवाले से गीबत की 13 मिसालें

फ़ोन, S.M.S., इन्टरनेट पर चेटिंग और बर्की डाक (या'नी E-MAIL) के ज़रीओं से भी गीबतों, बद गुमानियों और तोहमतों का सिल्लिसला हो सकता है । आप ने किसी को चन्द बार बल्कि 100 बार भी फ़ोन या SMS या ई मेइल किया हो और जवाब न मिला हो तब भी अपने मुसल्मान भाई के साथ हुस्ने ज़न से काम ले कर उम्दा इबादत का सवाब कमा लिया करें जैसा



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

के हक़दार बनिये। मुसलमान का दिल खुश करने के सवाब की भी क्या बात है! चुनान्वे दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 743 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "जन्नत में ले जाने वाले आ 'माल" सफ़हा 534 पर है: हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक फ़राइज़ की अदाएगी के बा'द सब से अफ़ज़ल अमल मुसलमान के दिल में खुशी दाख़िल करना है।

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِي ج ١١ ص ٥٩ حديث ١١٠٧٩)

“गीबत से नफ़रत फैलती है” के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से किसी का फ़ोन आने की सूरत में ग़ीबत की 17 मिसालें

★ यार इस का फ़ोन कहां आ गया अब ★ येह लम्बी करेगा ★ जल्दी जान नहीं छोड़ेगा ★ बहुत चिकनी करता है ★ मैं तो इस का फ़ोन वुसूल (ATTEND) नहीं करता क्यूं कि ख़्वाह म ख़्वाह इधर उधर की बातें कर के वक़्त ख़राब करता है ★ अच्छा उस चिकने घड़े का फ़ोन आया था ★ यार वोह तो “मिस कोल” ही देता है ★ कन्जूस है उस को तो मुझे ही फ़ोन करना पड़ता है ★ एक तो “मिस कोल” देता है और जल्दी रिप्लाय न दूं तो ऊपर से मुझ पर बिगड़ता है ★ जब मैं फ़ोन करूं तो ख़ूब लम्बी करता है अगर खुद ★ इस ने फ़ोन किया हो तो पैसे बचाने के चक्कर में फ़ौरन बात ख़त्म कर देता है ★ इस का फ़ोन तो बस काम के दौरान ही आ टपकता है ★ फ़ारिग़ आदमी है ★ दूसरों की ग़ीबत करता है ★ इसे नम्बर दे कर फंस गया ★ अब कान खाएगा ★ सब को अपनी तरह फ़ालतू समझता है।

“गीबत आफ़त है” के नव हुरूफ़ की निस्बत से किसी का फ़ोन न आने की सूरत में ग़ीबत की 9 मिसालें

★ जब अपना मत्लब था तो वक़्त बे वक़्त फ़ोन करता था ★ मत्लब निकल गया तो पलट कर हाल तक नहीं पूछा ★ (बेटे के लिये मां कहे) जब बीवी घर में थी तो रोज़ फ़ोन करता



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब् और दस मरतबा शाम दुख्दे पाक पढ़ा उसे क़्यामत के दिन मेरी शम्शत मिलेगी ॥ (मजमउज़्ज़वाइद)

था अब हमें घास भी नहीं डालता ★ इसे इतनी तौफीक़ कहां कि फ़ोन करे, जब भी किया है मैं ने ही किया है ★ (मां कहे) सुसराल में अगर दो दिन फ़ोन न करे तो बेचैन हो जाता है ★ और अपने घर महीनों गुज़र जाएं कोई फ़िक्र ही नहीं होती ★ (मां बाप कहे) दूसरों को फ़ोन करने के लिये उस के पास वक़्त भी है और पैसे भी, हमारे लिये उस के पास टाइम ही नहीं ★ शादी के बा'द हमें बिल्कुल ही भूल गया है ★ जान बूझ कर फ़ोन नहीं करता ।

“ज़बान संभालो !” के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से किसी को फ़ोन करते देख कर की जाने वाली ग़ीबतों की 11 मिसालें

★ पेकेज करवाया होगा वरना इस कन्जूस मक्खी चूस के पास इतना दिल कहां कि रक़म खर्च करे ★ इस ने फ़ोन पर ज़रूर मेरी चुग़िलयां की होंगी ★ (सास कहे) अपने मैके वालों से हमारी बुराइयां कर रही होगी ★ मेरे ख़िलाफ़ मेरे बेटे के कान भर रही होगी ★ (बहू कहे) अपने बेटे को मेरे ख़िलाफ़ भड़का रही होगी ★ (मुलाज़िमीन कहे) सेठ साहिब रिश्वत का रेट फ़ाइनल कर रहे होंगे ★ (अफ़सर कहे) ऊपर मेरी शिकायत लगा रहा होगा ★ मुख़ालिफ़ ग्रूप को हमारे राज़ बता रहा होगा ★ बड़ा फूल रहा है कि मेरी फुलां अफ़सर/सेठ/M.N.A/M.P.A/सूबाई वज़ीर/वफ़ाकी वज़ीर से बात हो रही है ★ ख़्वाह म ख़्वाह फ़ोन पर लगा रहता है ★ देख तो कैसे चीख़ चीख़ कर बात कर रहा है ।

“गीबत से बचिये” के दस हुरूफ़ की निस्बत से SMS के हवाले से की जाने वाली ग़ीबतों की 10 मिसालें

★ इस बुध्दू को sms लिखना ही नहीं आता ★ इस का कोई धन्दा ही नहीं, जब देखो sms ही लिखता रहता है हत्ता कि चलते चलते भी sms लिखने से नहीं रुकता ★ बहुत कन्जूस है सिर्फ़ sms से ही काम चलाता है ★ बोर sms भेजता है ★ इसे तो रोमन लिखनी ही नहीं



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझे पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया । (इब्ने सुन्नी)

आती इस लिये उर्दू में लिखता है ★ इंग्लिश में sms लिखते वक्त बहुत ग़-लतियां करता है ★ किसी का sms चुरा के अपने नाम से भेजता है ★ फुलां SMS कर कर के मुझे तंग करता रहता है ★ सलाम तक नहीं लिखता ★ बेहूदा sms करता है

CHATTING के हवाले से की जाने वाली ग़ीबतों की 3 मिसालें :

★ चेटिंग के इलावा इस का कोई काम ही नहीं होता ★ चेटिंग के दौरान बहुत झूट बोलता है ★ हमें तो चेटिंग से मन्अ करता है और खुद बाज़ नहीं आता ।

INTERNET के हवाले से की जाने वाली ग़ीबतों की 5 मिसालें :

★ येह नेट के ज़रीए दूसरों के कम्प्यूटर में घुस कर उन का मवाद चोरी करता है ★ इस ने अपना कनेक्शन कहां लिया होगा ! चोरी का इस्ति'माल कर रहा होगा ★ न जाने क्या क्या देखता है ★ भाई येह तो फुरसती है, हर वक्त नेट पर ही बैठा रहता है ★ बहुत पैसा ज़ाएअ करता है ।

चोक दर्स की बहार आका ﷺ का दीदार : ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, और ख़ूब ख़ूब दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत दीजिये और सुनिये और इस की ब-र-कतें लूटिये, तरगीब के लिये एक म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं : बांद्रा (बम्बई, हिन्द) के एक इस्लामी भाई ने जो कुछ बताया उस का खुलासा है कि सि. 2000 ई. में अलाके के अन्दर होने वाले चोक दर्स में एक दिन मुझे शिर्कत की सआदत मिली, दर्स के बा'द मुलाक़ात करते हुए एक इस्लामी भाई ने मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की दा'वत



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मसतबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मनमउज़्ज़वाइद)

पेश की । मैं इज्तिमाअ में हाज़िर हुवा, वहां मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी दुरुदे पाक की फ़ज़ीलत बयान फ़रमा रहे थे इस का कुछ ऐसा असर हुवा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने रोज़ाना 313 मर्तबा दुरुदे पाक पढ़ने का मा'मूल बना लिया । चन्द ही दिनों बा'द एक रात जब सोया तो सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, मैं ने ख़्वाब में देखा कि कोई कह रहा है : फुलां जगह पर सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं । येह सुन कर मैं अ़लामे दीवानगी में ज़ियारत की निय्यत से दौड़ा तो आगे लोगों का एक हुजूम था, सीधे हाथ की तरफ़ वाक़ेअ एक घर से नूर निकल रहा था, मैं उस में दाख़िल हो गया वहां देखा कि अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْكَرِیْم तशरीफ़ फ़रमा हैं, मैं ने उन से अर्ज़ की : सरकारे दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहां तशरीफ़ फ़रमा हैं ? आप كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْكَرِیْم ने मुझे अन्दर जाने का इशारा फ़रमाया, मैं मज़ीद अन्दर की तरफ़ गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ रसूलों के सरदार, मदीने के ताजदार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अहमदे मुख़्तार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बुलन्द जगह जल्वा अफ़ोज़ थे । मैं ने सलाम अर्ज़ किया, जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब इर्शाद फ़रमाया और मुझ से मुसा-फ़हा किया, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم का चेहरा मुबारक गुलाब के फूल की तरह खिला हुवा था और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के चेहरा अन्वर से जो नूर निकल रहा था वोह पूरे घर को रोशन कर रहा था । سُبْحٰنَ اللہِ عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त से मैं दा'वते इस्लामी से वाबस्ता हूं और इस के म-दनी माहोल की ब-र-कतें लूट रहा हूं ।

ऐसी क़िस्मत खुले, देखने को मिले

शौक़ हज़ का है गर, और आका का दर

सब्ज़ गुम्बद का नूर, देखने का सुरूर

जल्वाए मुस्तफ़ा, काफ़िले में चलो

तुम को है देखना, काफ़िले में चलो

पाओगे आओ ना, काफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْكَیِّبِ ا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया । (इन्ने सुन्नी)

दा 'वते इस्लामी दुरूदो सलाम के जाम पिलाती है

! سُبْحَنَ اللهُ ! سُبْحَنَ اللهُ ! سُبْحَنَ اللهُ कैसे खुश बख्त इस्लामी भाई हैं कि आते ही रहमतों से झोली भर गई । الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ दा 'वते इस्लामी आशिकाने रसूल की सुन्नतों भरी तहरीक है और भर भर कर दुरूदो सलाम के जाम पिला रही है और आ आ कर प्यासे सैराब हो रहे हैं और मुक़दर वाले जल्वए मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से फ़ैज़याब हो रहे हैं

कोई आया पा के चला गया कोई उम्र भर भी न पा सका

मेरे मौला तुझ से गिला नहीं येह तो अपना अपना नसीब है

नूरे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जल्वे सामानियां : ख़्वाब देखने वाले ने चेहरए अन्वर के नूर से घर रोशन देखा, ! سُبْحَنَ اللهُ ! क्यूं न हो कि रब्बे ग़फ़ूर عَزَّوَجَلَّ की अज़ा से मेरे हुज़ूर, “सरापा नूर” हैं जैसा कि दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ 48 स-फ़हात पर मुश्तमिल रिसाला, “सियाह फ़ाम गुलाम” सफ़हा 8 और 9 पर है : “शिफ़ा शरीफ़” में है : जब रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुस्कराते थे तो दरो दीवार रोशन हो जाते । (الشِّفَا ص १) उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : मैं स-हरी के वक़्त घर में कपड़े सी रही थी कि अचानक सूई हाथ से गिर गई और साथ ही चराग़ भी बुझ गया, इतने में मदीने के ताजदार, मम्बए अन्वार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ घर में दाख़िल हुए और सारा घर मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के चेहरए अन्वर के नूर से रोशन व मुनव्वर हो गया और गुमशुदा सूई मिल गई । (الْقَوْلُ الْبَدِيع ص ३०२) बल्कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ तो क़ासिमे नूर हैं जिसे चाहें पुरनूर कर दें चुनान्वे इसी रिसाले सियाह फ़ाम गुलाम सफ़हा 6 पर है : हज़रते सय्यिदुना असीद बिन अबी उनास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मदीने के ताजदार, शहन्शाहे अली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने एक बार मेरे चेहरे और सीने पर अपना दस्ते पुर अन्वार फ़ैर दिया, इस की ब-र-कत येह ज़ाहिर हुई कि मैं जब भी



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह غُزُوْخُل उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

किसी अंधेरे घर में दाखिल होता वोह घर रोशन हो जाता।

(الْخَصَائِصُ الْكُبْرَى لِلْسَيُوطِي ج ٢ ص ١٤٢، تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٢٠ ص ٢١)

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले

मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

“गीबत गुनाहे कबीरा और मुर्दा भाई का गोश्त खाने के बराबर है, गीबत करने वाला तौबा कर ले तब भी सब से आखिर में जन्नत में जाएगा” के

बानवे हुरूफ़ की निस्बत से

दोस्तों में की जाने वाली गीबतों की 92 मिसालें

★ लम्बी करता है ★ चिकनी करता है ★ चिकना घड़ा है ★ लिपलिपिया है ★ मुंह फट ★ बातूनी ★ बड़ बोला ★ बड़बड़िया ★ बकवासी ★ फुजूल गो है ★ येह आता है तो मुझे बड़ी कोफ़्त होती है ★ बोर करता है ★ आता है तो फिर जान नहीं छोड़ता ★ दिमाग़ खा जाता है ★ मग़ज़ की “दही” है ★ इस का तो कुत्ते, या ★ लोहे का भेजा है ★ अपने आप को कुछ समझता है ★ खुद को बड़ा होशियार समझता है ★ बहुत सियाना बनता है ★ शोबाज़ी करता है ★ डेढ़ होशियार है ★ मुझे बे वुकूफ़, या ★ उल्लू बना रहा था ★ ले ! मेरे को बिल्कुल मामा समझ रखा है ! ★ ख़्वाह म ख़्वाह का रो'ब झाड़ता है ★ किसी को ख़ातिर में ही नहीं लाता ★ शो बाज़ ★ बोल बचनी ★ चालबाज़ ★ ढोंगी है ★ बद अख़्लाक़ ★ बद तमीज़ ★ बद ज़बान ★ तुन्द मिज़ाज ★ उलटी खोपड़ी का ★ बे मुरुव्वत ★ बे शर्म ★ बे हया ★ ढोर है ★ इस का मुंह हर वक़्त चढ़ा, या ★ सूजा, या ★ फूला हुवा रहता है ★ मरयल टट्टू ★ मुर्दार ★ डरपोक ★ बुज़दिल है ★ इस में दम कहां है ! ★ झगड़ालू ★ लड़ाकू ★ फ़ितना ★ फ़ितने की जड़ ★ फड़ुबाज़ है ★ “गन्द” करता है ★ खाऊ ★ पेटू ★ खाता बहुत है ★ माल खाऊ ★ पेट भरू ★ मुफ़्त ख़ोरा ★ नकटा है ★



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عُزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

बिल्कुल अन्धी चला रखी है ★ शैखी बघारता ★ ख़ाली बातें बनाता ★ अफ़वाहें उड़ाता ★ बड़ी बड़ी बातें करता ★ फेंकू ★ गप्पी ★ डींगिया है ★ फेंकता ★ ठोकता ★ छोड़ता ★ हांकता ★ “हवाई फ़ायर” करता है ★ आंटियां मारता ★ चक्कर देता ★ गोल गोल बातें करता है ★ निर्यत ख़राब है, या ★ आदमी सहीह नहीं ★ बहाने बाज़ ★ हीले बाज़ ★ आंटी बाज़¹ ★ झूटा ★ 420 ★ फ़राडी ★ नम्बरी ★ ठग, या ★ चीटर है ★ ख़ारबाज़ ★ मेरी तरक्की देख नहीं सकता ★ मुझ पर ख़ार खाता है ★ इस की जब सूई अटकती है तो फिर इस को कोई नहीं समझा सकता ।

“अपने सर पर वबाल न लीजिये” के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से मुसन्निफ़ के बारे की जाने वाली ग़ीबतों की 19 मिसालें

किताबों के मुसन्निफ़ीन की ख़ामियां और कमज़ोरियां सहीह मक्सद के तहत बयान करना जाइज़ है, अलबत्ता ख़्वाह म ख़्वाह बुराई करना ग़ीबत है यहां मु-तवक्क़अ ग़ीबतों और तोहमतों की 19 मिसालें बयान की जाती हैं : ★ इन्शा परदाज़ी के फ़न में कोरा है ★ इस की तहरीर बोरियत कुन होती है ★ ज़रा सी ता'रीफ़ होने पर फूल गया है ★ खुद को तहरीर के फ़न का इमाम समझता है ★ उर्दू की चन्द किताबें पढ़ कर मुसन्निफ़ बन बैठा है ★ किसी का मवाद चोरी कर के अपने नाम से मन्सूब कर लिया है ★ दूसरों की किताब का चरबा उतार लेता है ★ इसे किताब पर अपना नाम अल्फ़ाबात के साथ लगवाने का बड़ा शौक है ★ इस की तहरीर जानदार नहीं ★ इस ने किताब में मौजूअ से हट कर मवाद बहुत डाल दिया है ★ उर्दू जुम्ले दुरुस्त नहीं ★ जुम्लों में रब्त नहीं ★ इसे उर्दू अदब की अलिफ़ बे नहीं आती ★ इस मौजूअ पे लिखने की क्या ज़रूरत थी ★ इस का अपना एक भी जुम्ला नहीं होता ★ काम किसी से करवा कर

لینے

1. किसी की टांग में अपनी टांग अड़ा कर गिरा देने को “आंटी देना” कहते हैं मगर हमारे यहां येह लफ़्ज़ बतौर मुहावरा भी इस्ति'माल होता है, या'नी जो उलटी सीधी दलीलें दे कर सामने वाले को बेबस कर दे या उलझन में डाल दे उस को “आंटी बाज़” बोलते हैं चूंकि येह लफ़्ज़ शरीफ़ आदमी के लिये नहीं बोला जाता और जिस के लिये बोला जाए मा'ना समझने की सूरत में उस को ना गवार मा'लूम होता है इस लिये इस को ग़ीबत की मिसालों में शामिल किया है ।



फरमाने मुस्तफा ﷺ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

अपने नाम से छाप देता है ★ इतनी रद्दी किताब, इस से अच्छा था कि न ही लिखता ★ इस से अच्छा तो मैं खुद लिख सकता हूँ ★ आता जाता कुछ है नहीं किताबें लिखने बैठ गया है।

वेबसाइट के मु-तअल्लिक़ मु-तवक्कअ 5 गीबतें

उमूमन साइट्स इदारों की होती हैं या अफ़ाद की हों तो अक्सरो बेशतर साइट का मालिक मुअय्यन व मा'लूम आदमी नहीं होता लिहाज़ा गीबत जभी होगी जब कि मुअय्यन व मा'लूम फ़र्द या अफ़ाद की की जाए। हां अगर मा'लूम है कि येह वेबसाइट फुलां मुसल्मान की है और बिला इजाज़ते शर-ई बुराई बयान की नीज़ जिस के सामने बुराई बयान की वोह भी समझ रहा है कि फुलां की बुराई हो रही है तो अब गुनाह भरी गीबत है। इस काइदे को पेशे नज़र रखते हुए वेबसाइट्स के मु-तअल्लिक़ गीबत की 5 मिसालें मुला-हज़ा फ़रमाइये : ★ फुलां ने क्या बेकार वेबसाइट बनाई है ★ बहुत देर से खुलती है ★ कलर और डीज़ाईनिंग अच्छी नहीं की ★ लोगो (LOGO) चुरा कर अपना बना लिया है ★ “फ़्री होस्टिंग” पर बनाता है कन्जूस है, अपने पैसे खर्च नहीं करता।

“गीबत से बच” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से इस्तिन्जा ख़ाने की लाइन में गीबत की 8 मिसालें

सफ़रे मदीना के दौरान ह-रमैने तय्यिबैन व मिना शरीफ़ वगैरा में नीज़ मदारिस व मसाजिद के इस्तिन्जा ख़ानों पर भीड़ के मौक़अ पर सब्र कीजिये, आवाज़ें लगाने, बार बार दरवाज़ा बजाने और क़ितार में खड़े हुए लोगों के आगे अन्दर गए हुए शख्स के मु-तअल्लिक़ ज़बान चलाने की सूरत में दिल आज़ारी और गीबत वगैरा से बचना मुश्किल हो जाएगा, ऐसे मौक़अ पर की जाने वाली गीबत की 8 मिसालें मुला-हज़ा हों : ★ अन्दर जा कर बैठ गया है ★ पाए चढ़ाए हैं ★ इस को दूसरों का ख़याल रखना चाहिये ★ अरे ! येह कहां अन्दर चला गया, यार ! इस को तो बड़ी देर लगती है ★ वोह जल्दी नहीं निकलता ★ पता नहीं अन्दर जा कर क्या करता है ! ★ अन्दर सो तो नहीं गया ★ गन्द कर के चला जाता है ठीक से पानी भी नहीं बहाता।



फरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुखदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्ज़वाइद)

“गीबतें करने वाला तांबे के नाखुनों से चेहरे और सीने को बार बार छील रहा था” के अड्डावन हुरूफ़ की निस्बत से जिस्मानिय्यत में ग़ीबत की 58 मिसालें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिला मस्लहतें शर-ई किसी के जिस्म का ऐब बयान करना भी ग़ीबत है । लिहाज़ा किसी “कमज़ोर” को भी कमज़ोर कहते हुए कहने की मस्लहत पर ग़ौर कर लेना ज़रूरी है कि इस को “कमज़ोर” क्यों कह रहा है ! अगर बतौर बुराई कह रहा है तो यह ग़ीबत है । जिस्मानिय्यत के मु-तअल्लिक़ ग़ीबत की मज़ीद 58 मिसालें मुला-हज़ा हों : ★ मरयल घोड़ा है ★ इतना पतला है कि फूंक मारो तो उड़ जाए ★ मोटा है ★ पेट निकला हुवा है ★ बे डोल जिस्म वाला है ★ लम्बा ★ लम्बू ★ ऊंट ★ टावर ★ बांस है ★ नाटा ★ ठिंगू ★ ठिंगना है ★ भेंगा ★ चुन्धा ★ काना ★ अन्धा है ★ कोढ़ी ★ चेचक के दाग़ वाला है ★ लूला ★ लंगड़ा ★ कुबड़ा है ★ औरतों जैसी चाल है ★ मुखन्नस ★ हीजड़ा ★ नामर्द है ★ भूरा ★ काला ★ कल्वा जल्वा है ★ इस की नाक चपटी है ★ तोतला ★ हकला ★ नाक में से बोलता है ★ बद सूरत है ★ बूढ़ा खूसट है ★ क़ब्र में पाऊं लटक गए हैं ★ गन्जा ★ एयरपोर्ट है ★ दन्तू ★ दन्ता ★ दन्तीला है ★ इस के मुंह से या बदन से या कपड़ों से पसीने की बदबू आती है ★ बहरा है ★ रेल्वे का पुराना इन्जन (या’नी बहुत काला) है ★ इस में कोई नक्स है जभी तो अब तक कोई बच्चा पैदा नहीं हुवा ★ मोटी भेंस है ★ लम्बी नाक ★ लम्बे मुंह वाला है ★ उस के नाखुनों में मैल भरी हुई थी ★ उस के कानों से मैल की बू आ रही थी ★ वोह कटी नाक वाला ! ★ उस के दांत ड्रेकूला जैसे हैं ★ पान गुटका खा खा कर दांत ख़राब कर दिये हैं ★ इतनी ज़ोर से हंसता है कि डरा देता है ★ जब देखो उस का मुंह पागलों की तरह खुला ही रहता है ★ उस के हाथ पाउं पर बहुत मैल जमा हुवा था ★ खा खा कर मोटा हो गया है ★ सोते में इतने ज़ोर से ख़राटे लेता है कि किसी को सोने नहीं देता ।



फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे । (त-बरानी)

“गीबत सूद से भी बड़ा जुर्म है” के बीस हुरूफ की निस्बत से इबादात के बारे में गीबत की 20 मिसालें

★ फ़ज़्र में कहां उठता है ! ★ नमाज़ जल्दी जल्दी पढ़ता है ★ उस से हुरूफ़ की अस्ल मख़ारिज से अदाएंगी नहीं होती ! ★ बे नमाज़ी है ★ र-मज़ान के रोज़े नहीं रखता ★ ज़कात नहीं देता ★ ज़कात लेने जाओ तो धक्के खिलाता है ★ चन्दा देने में कन्जूसी करता है ★ नमाज़ या रोज़े या ज़कात के मसाइल नहीं जानता ★ हज़ फ़र्ज़ हो चुका है मगर नहीं जाता क्यूं कि इस को कारोबार से फुरसत नहीं ★ लोगों पर कस्रते इबादत का सिक्का जमाने के लिये तहज़ुद पढ़ता है ★ दूसरे इस्लामी भाई हों तो ही इशराक़ व चाशत पढ़ता है अकेले में नहीं पढ़ता ★ इस को र-मज़ानुल मुबारक में भी तिलावत की तौफीक़ नहीं ★ अ़स्र व इशा की सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा तो कभी पढ़ता ही नहीं ★ नमाज़ के बा'द जल्दी भागने की करता है, फ़ातिहए सानी के लिये रुकता ही नहीं ★ तस्बीह हाथ में पकड़ कर ख़ाली होंट हिलाता रहता है पढ़ता वढ़ता कुछ नहीं ★ लोगों को दिखाने के लिये तस्बीह हाथ में रखता है ★ माथे पर सज्दे का निशान बनाने के लिये ज़मीन पर ख़ूब सर रगड़ता है ★ रोज़ा रख कर भी फ़िल्में डिरामे देखता है ★ बड़ा नमाज़ी बनता है तरावीह तक तो जमाअत से नहीं पढ़ता ।

“गीबत बद बला है” के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से हाफ़िज़े कुरआन की गीबतों की 11 मिसालें

★ फुलां हाफ़िज़ पैसों की खातिर तरावीह पढ़ाता है ★ हाफ़िज़ साहिब ने सामेअ (या'नी तरावीह सुनने वाले हाफ़िज़) से कोई तरकीब बना रखी है इसी लिये तो वोह इन की ग़-लतियां नहीं निकालता ★ इस की मन्ज़िल कच्ची है (कुरआने पाक हिफ़ज़ कर के भुला देना गुनाह है लिहाज़ा जो कोई थोड़ा सा भी भूल जाए वोह बिना इजाज़ते शर-ई किसी और को न बताए क्यूं कि गुनाह का इज़हार भी गुनाह है) ★ वोह हिफ़ज़ कर के भूल गया है ★ तरावीह पढ़ाते हुए इस को कुछ ज़ियादा



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

ही मु-तशा-बहात¹ लग जाते हैं ★ इस हाफ़िज़ को तरावीह में “लुक़्मे” बहुत देने पड़ते हैं ★ वोह तो ख़ाली नाम का हाफ़िज़ है ★ सारा साल कुरआने पाक खोल कर नहीं देखता इस लिये मन्ज़िल कच्ची हो जाती है, बस र-मज़ानुल मुबारक में वोह भी मुसल्ला सुनाने और पैसे कमाने के लिये दौर करता है ★ अगर कोई ग़रीब कुरआन ख़्वानी की दा'वत दे तो हमारे हाफ़िज़ जी के पास मसरूफ़ियत का उज़्र मौजूद होता है हां कोई मालदार ख़त्म शरीफ़ पर बुलाए तो वहां आगे आगे नज़र आते हैं ★ वोह हाफ़िज़ जी बहुत शरारती हैं कहीं इस लिये तो नहीं जैसा कि अ़वामी मुहावरा है कि हाफ़िज़ की एक रग ज़ियादा होती है (याद रहे! येह मुहावरा बिल्कुल ग़लत है) ★ हाफ़िज़े कुरआन हो कर झूट बोलता है।

“ब कसरत ग़ीबत करने वाले की दुआ क़बूल नहीं होती” के चौंतीस हुरूफ़ की निस्बत से सफ़रे हज़ के बारे में की जाने वाली 34 ग़ीबतें

★ फुलां ट्रेवल एजन्सी वाले ने मुझे धोका दिया ★ कारवां वाले ने कहा था कि रिहाइश हरम शरीफ़ के क़रीब होगी पर यहां आ कर मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ बहलावा था ★ इस ने जिन सहूलतों के वा'दे किये थे वोह कहां हैं? ★ वतन में तो “जी जनाब” से बात करता रहा और जब वहां पहुंचे तो कारवां वाले ने पूछा तक नहीं ★ वोह कारवां वाला तो बस जी अल्लाह के मेहमानों को लूटता है ★ येह मौलवी जो हर साल हज़ पर जाता है पूछो तो सही इतनी रक़म कहां से लाता है? ★ अरे भई, तुम को क्या ख़बर! इस की पार्टियों से बड़ी तरकीब है उन्हीं से हज़ के अख़राजात निकलवाता होगा ★ फुलां जो हर बरस हज़ करता है ना, वोह दर अस्ल “फैरा” लगाता है, खर्च भी निकाल लेता है और बचत भी हो जाती है ★ वोह हाजी तो हज़ के मसाइल से बिल्कुल ही

1. मु-तशाबह की जम्अ। मु-तशाबह लगाना या'नी मिलती जुलती आयत होने की वजह से हाफ़िज़ साहिब का कहीं का कहीं पढ़ जाना।



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफा की। (अब्दुर्रज़ाक)

कोरा है ★ अरे उस को देखो ! एहराम कितना ग़लत बांधा है ★ उस को एहराम दुरुस्त बांधना नहीं आता ★ मैं ने मन्अ किया फिर भी वोह त़वाफ़ में इधर उधर देखता था ★ उस ने सअय के सात फ़ैरों का तरीका ही नहीं समझा 14 फ़ैरे लगा डाले फिर थकन से हांप रहा था ★ उस ने मक्के शरीफ़ में अपने हज़ की एक ग़-लती बता कर मुझ से मस्अला पूछा, मैं ने कहा, आप पर दम वाजिब हो गया तो ज़ोर से हंस कर कहने लगा, अल्लाह मुआफ़ करेगा ★ वोह यूं तो सिह्हत मन्द है मगर भीड़ की वजह से डर कर एक दिन भी रमीए ज-मरात (या'नी शैतान को कंकरियां मारने) के लिये नहीं गया, किसी और को कंकरियां मारने का वकील कर दिया, मैं ने इस से दम वाजिब होने न होने की सूरतें बयान कीं मगर उस ने सुनी अनसुनी कर दी क्यूं कि उस पर दम वाजिब हो रहा था ★ मैं ने आंखों से देखा उस ने हज़ की कुरबानी में दुम्बे का बहुत छोटा बच्चा ज़ब्द किया, मैं ने जब शर-ई मस्अला बता कर कहा कि आप की येह कुरबानी दुरुस्त नहीं दूसरी करनी होगी येह सुनते ही वोह आग बगोला हो गया ★ वोह हाजी साहिब जो हाथ चुमवा रहे हैं बिल्कुल ही जाहिल हैं, इन को हज़ का मस्अला एक भी नहीं आता ★ वोह हाजी साहिब पक्के रियाकार हैं, देखो घर कैसा सजाया हुवा है और हज़ मुबारक का बोर्ड भी चढ़ा रखा है (हाजी का आते जाते अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ घर सजाना हज़ मुबारक का बोर्ड लगाना जाइज़ है) ★ वोह हाजी बहुत बड़ा रियाकार है एक एक को पकड़ कर कह रहा था कि मेरा येह बारहवां हज़ है (अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बल्कि वैसे ही कोई अपने हज़ की ता'दाद बताए उस को हरगिज़ गुनहगार नहीं कहा जा सकता, बिला दलील उस को रियाकार कहने वाला तोहमत के और अगर दलील हो तो ग़ीबत के गुनाह में गरिफ़्तार व अज़ाबे नार का हक़दार है) ★ वोह मस्जिदैने करीमैन में टिक कर कहां बैठता था ★ बस बाजारों में घूमता रहता था ★ उस हाजी ने ख़ूब शोपिंग की है अब जद्दा शरीफ़ के मतार पर वज़्न के लिये झगड़े करेगा और ★ वतन के कस्टम ऑफ़ीसर को रिश्वत दे कर बाहर निकलेगा ★ वतन में ना'तें सुन कर बहुत रोता था मगर अब मदीना शरीफ़ पहुंच कर इस की आंखों के कूंएं ही खुश्क हो गए हैं ★ हमारे क़ाफ़िले का वोह हाजी जब देखो सोया रहता है ★ न उम्मे करता है ★ न ही नफ़ली त़वाफ़ ★ मैं जब भी चलने को कहता हूं बीमारी



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

का बहाना कर देता है ★ हां खाने के वक़्त सहीह हो जाता है और सब से पहले चोकड़ी मार कर दस्तर ख़वान पर बैठ जाता है ★ इस मोटे हाजी को देखो रमल करते हुए कैसा लग रहा है ★ वोह शुर्ती (या'नी पोलीस वाला) जो सामने खड़ा है उस ने कल मुझे ख़वाह म ख़वाह झाड़ दिया था ★ वोह दोनों हाजी जब देखो हरम शरीफ़ के बाहर बैठ कर बातें करते रहते हैं, यहां आ कर इन को ख़ूब इबादत करनी चाहिये, अल्लाह عزوجل इन को हिदायत दे ★ मैं ने तो कहा था मगर इस ने हज की किताब नहीं पढ़ी अब सब को मस्अले पूछता फिरता है ★ फुलां हाजी कैसा बद नसीब है, उस ने सुस्ती की वजह से मस्जिदे न-बवी में 40 नमाज़ें अदा नहीं की।

“सुनो ! एक चुप सो सुख” के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से हज से लौटने वाले से फुज़ूल सुवालात की 13 मिसालें

येह 13 फुज़ूल सुवालात अगर्चे ना जाइज़ नहीं ताहम पूछने से पहले इन की मस्लहत पर गौर कर लीजिये, अगर हाजत न हो तो न पूछिये क्यूं कि इन में बा'ज सुवालात हाजी को शरमिन्दा करने वाले, बा'ज तरहुद में डालने वाले और बा'ज के जवाबात में अगर एहतियात् न की गई तो झूट के गुनाह में फंसाने वाले हैं। लिहाज़ा “एक चुप हज़ार सुख” ★ सफ़र में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई ? ★ भीड़ तो बहुत होगी ! ★ महंगाई तो नहीं थी ? ★ मकान सहीह मिला या नहीं ? ★ घर हरम से दूर था या क़रीब ? ★ वहां मौसिम कैसा था ? ★ ज़ियादा गरमी तो नहीं थी ? ★ रोज़ाना कितने तवाफ़ करते थे ? ★ कितने उम्रे किये ? ★ मक्के में मेरे लिये ख़ूब दुआएं मांगी या नहीं ? ★ मिना में आप का खैमा ज-मरात से क़रीब था या दूर ? ★ मदीने में कितने दिन मिले ? ★ मदीने में मेरा नाम ले कर सलाम कहा या नहीं ?



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस ने मुझ पर दस मारतबा सुद्ध और दस मर्तबा शाम दुहुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़अत मिलेगी। (मजमउज़्ज़वाइद)

“गीबत कर के नेकियां बरबाद न करें” के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वान के बारे में ग़ीबत के अल्फ़ाज़ की 25 मिसालें

★ मीरासी है ★ इस को ना'त पढ़ने का ढंग नहीं आता ★ इस की आवाज़ बस ऐसी ही है ★ इस की आवाज़ बे सुरी है ★ फटे हुए ढोल जैसी आवाज़ है ★ दूसरे ना'त ख़्वानों की तर्ज़ें चुराता है ★ दूसरों के शे'र चुरा कर खुद शाइर बन बैठा है ★ पैसों के लिये ना'त पढ़ता है ★ येह तो प्रोफ़ेशनल ना'त ख़्वान है ★ सिर्फ़ बड़ी पार्टियों की महफ़िलों में जाता है ★ इस में इख़्लास नहीं है ★ ज़ियादा लोग हों या ★ ईको साउन्ड हो जभी पढ़ता है ★ जब आता है माइक नहीं छोड़ता ★ दूसरों की बारी ही नहीं आने देता ★ जान बूझ कर रौने जैसी आवाज़ निकालता है ★ आहा ! बड़ा महंगा सूट पहन रखा है ज़रूर ना'त ख़्वानी करवाने वालों ने ले कर दिया होगा ★ इस की अदाएं देखो ! लगता है गाना गा रहा है ★ इस की आंखें नींद से भरी पड़ी हैं फिर भी पैसों के लालच में ना'त पढ़ने आ गया है ★ जिस शे'र पर नोटें आना शुरू हो जाएं बार बार उसी शे'र को पढ़ता रहता है ★ बस किसी जगह महफ़िल का पता चल जाए, येह वहां पैसों के लालच में बिन बुलाए भी पहुंच जाता है ★ रात गए तक ना'तें पढ़ता है, फ़ज़्र मस्जिद में जमाअत से नहीं पढ़ता ★ अब इस के पास टाइम कहां होगा इस के तो सीज़न के दिन हैं, बड़े नोट दिखाओ तो आएगा ★ पिछली बार शायद पैसे कम मिले थे तभी इस बार नहीं आया ★ अपना केसेट निकलवाने के लिये कम्पनी वालों की बड़ी चापलूसी करता है।

“गीबत से हम को बचा, या इलाही” के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वानी/जल्से या इज्तिमाअ में होने वाली ग़ीबत की 19 मिसालें

★ येह मुबल्लिग़ (या मौलाना या ना'त ख़्वान) कहां खड़ा हो गया अब तो येह माइक नहीं छोड़ेगा ★ उस की आवाज़ अच्छी है इस लिये क़िराअत सुन कर लोग दाद देते हैं वैसे तजवीद की काफ़ी ग़-लतियां करता है ★ इस के तलफ़्फ़ुज़ ग़लत होते हैं ★ इस को तक्रीर



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बदबख़ हो गया । (इने सुनीं)

करनी ★ या ना'त पढ़नी ही कहां आती है ★ चलो ! चलो ! अब येह लम्बी करेगा ★ नोटें चलती हैं तो इस की आवाज़ खुल जाती है ★ हमारे शहर में आने के लिये तो इस ने हवाई जहाज़ का रीटर्न टिकट मांगा था ★ इस ना'त ख़्वान का मिज़ाज तो आस्मान पर रहता है ★ इस को तो बस एक ही तर्ज़ आती है ★ येह तो दूसरे ना'त ख़्वानों की तर्ज़ें चुराता है ★ इस ने बयान की तय्यारी नहीं की इधर उधर की बातें कर के वक़्त गुज़ार रहा है ★ आयतें तो पढ़ता नहीं बस किस्से कहानियां सुनाता है ★ उस मुक़र्रिर की आवाज़ अच्छी है मगर उस की तक़रीर में ख़ास मवाद नहीं होता ★ ख़िताब बड़ा जोशीला था मगर दलाइल में दम नहीं था ★ हमारे ख़तीब साहिब अपने बयान में सुन्नत एक नहीं बताते बस लठ ले कर बद मज़हबों के पीछे पड़े रहते हैं ★ आज ख़तीब साहिब के बयान में मज़ा नहीं आया ★ वोह मौलाना साहिब जल्से में देर से आने के आदी हैं ★ फुलां की तक़रीर में बस जोश ही जोश होता है अपने पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता ।

ला उबाली नौ जवान : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपनी ज़िन्दगी "म-दनी इन्आमात" के सांचे में ढालिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत कीजिये । सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की ब-र-कत का अन्दाज़ा इस म-दनी बहार से लगाइये जैसा कि मुलतान रोड़ (मर्कजुल औलिया लाहोर) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह की तहरीर भेजी कि मैं ला उबाली और शौख़ तबीअत का मालिक था, अपनी मस्ती में मस्त, दुन्या की महबूबत के नशे में धुत, गुनाहों और ग़फ़लतों की वादियों में गुम था । टिफ़न बजा कर बच्चों वाले गीत गाने और क़व्वालों की नक़लें उतारने के मुआ-मले में ख़ानदान भर में मशहूर था । शादी व दीगर तक़रीबात में मुज़ाहि्या चुटकुले और फ़िल्मी ग़ज़लें सुनाना, गाने गाना, बे ढंगे अन्दाज़ में नाच दिखाना और तरह तरह के नख़्रों से लोगों को हंसाना मेरा महबूब मशग़ला था, स्कूल का ज़माना था, एक बा इमामा इस्लामी भाई अक्सर बड़े



फरमाने मुस्ताफा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस ने मुझे पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुख्दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज्जवाइद)

भाईजान से मिलने आया करते थे। एक दिन भाईजान ने मेरा तआरुफ़ करवाया तो उन्होंने ने मुझे तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की दा'वत पेश की। मैं उन की दा'वत पर जुमा'रात को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में जा पहुंचा, मुझे बहुत अच्छा लगा। यूँ मैं ने पाबन्दी से जाना शुरूअ कर दिया और दीगर क्लास फ़ेलोज़ को भी दा'वत पेश की जिस पर वोह भी आने लगे। मैं ने नमाजों की पाबन्दी शुरूअ कर दी। आहिस्ता आहिस्ता इमामा शरीफ़ भी सज गया, जिस पर घर के बा'ज अफ़राद ने सख़्ती के साथ मुखा-लफ़त की हत्ता कि बसा अवकात عَزَّوَجَلَّ इमामा शरीफ़ खींच कर उतार दिया जाता। दर्स देने से रोका जाता, जुल्फ़ें रखीं तो घर वालों ने ज़बर दस्ती कटवा दीं, दाढ़ी अभी निकली नहीं थी मगर सजाने की निय्यत कर ली थी। इन तमाम आजमाइशों के बा वुजूद म-दनी माहोल की कशिश और आशिक़ाने रसूल का हुस्ने सुलूक मुझे दा'वते इस्लामी के क़रीब से क़रीब तर करता चला गया। मक-त-बतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनने से ढारस बंधी और हौसला मिलता चला गया। عَزَّوَجَلَّ आहिस्ता आहिस्ता घर में भी म-दनी माहोल बन गया। वोह घर वाले जो सुन्नतों भरे इज्तिमाअ और म-दनी काफ़िले में सफ़र की इजाज़त नहीं देते थे उन्होंने ने मुझे यकमुश्त बारह माह सफ़र की इजाज़त दे दी। घर में इस्लामी बहनों का इज्तिमाअ शुरूअ हो गया। वालिद साहिब ने दाढ़ी सजा ली। येह बयान देते वक़्त عَزَّوَجَلَّ ता दमे तहरीर तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी की एक "मजलिस" की तन्जीमी तौर पर सूबाई सत्ह पर जिम्मादारी मिली हुई है।

गर चे फ़नकार हो, काफ़िले में चलो
खुल्द दरकार हो, काफ़िले में चलो

गो गुलूकार हो, काफ़िले में चलो
फ़ज़ले ग़फ़़ार हो, काफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



फ़रमाने मुस्तफ़ि صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तद्वकी वोह बदबख़ हो गया। (इने सुनी)

गुनाह की दस नुहूसतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा 'वते इस्लामी का म-दनी माहोल किस क़दर इन्क़िलाबी है, इस के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में शिर्कत की सआदत और म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से बसा अवक़ात बड़े से बड़ा बिगड़ा हुवा शख्स भी राहे रास्त पर आ जाता, गुनाहों से पीछा छुड़ाता, सुन्नतें अपनाता और आ'माल नामे में ख़ूब नेकियां बढ़ाता है। वाक़ेई गुनाह छोड़ ही देने चाहिएं, खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! गुनाह व मा'सियत में नुहूसत ही नुहूसत है, दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 300 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "आंसूओं का दरिया" सफ़हा 48 ता 49 पर है : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से हरगिज़ धोके में न पड़ना :

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرٌ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं और जो बुराई लाए तो उसे बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर।

فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا (پ الانعام: ۱۶۰)

क्यूं कि गुनाह अगर्चे एक ही हो अपने साथ दस बुरी ख़स्लतें ले कर आता है :

- ﴿1﴾ बन्दा गुनाह कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ग़ज़ब दिलाता हैं और वोह عَزَّوَجَلَّ उसे पूरा करने पर कुदरत रखता है
- ﴿2﴾ वोह (या'नी गुनाह करने वाला) इब्लीसे मलऊन को खुश करता है
- ﴿3﴾ जन्नत से दूर हो जाता है
- ﴿4﴾ जहन्नम के क़रीब आ जाता है
- ﴿5﴾ वोह अपनी सब से प्यारी चीज़ या'नी अपनी जान को तक्लीफ़ देता है
- ﴿6﴾ वोह अपने बातिन को नापाक कर बैठता है हालां कि वोह पाक होता है
- ﴿7﴾ आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों या'नी किरामन कातिबीन को ईज़ा देता है
- ﴿8﴾ वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रौज़ए मुबा-रका में रन्जीदा कर देता है
- ﴿9﴾ ज़मीन व आस्मान और तमाम मख़्लूक को अपनी ना फ़रमानी पर गवाह बना लेता है
- ﴿10﴾ वोह तमाम



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

इन्सानों से ख़ियानत और रब्बुल आ-लमीन عُزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है।

“गीबतें करने वाले क़ियामत में कुत्ते की शक्ल में उठेंगे” के चालीस हुरूफ़ की निस्बत से ना’त ख़्वानों के माबैन होने वाली ग़ीबतों की 40 मिसालें

“ना’त ख़्वानी” निहायत उम्दा इबादत है, सुरीली आवाज़ बेशक रब्बुल इज़्ज़त عُزَّوَجَلَّ की इनायत है मगर इस में इम्तिहान बहुत सख़्त है, जिसे इख़्लास मिल गया वोही काम्याब है। बा’ज ना’त ख़्वान ﷺ ज़बर दस्त आशिके रसूल होते हैं जो कि बिगैर किसी दुन्यवी लालच के आंखें बन्द किये इश्क़े रसूल में डूब कर ना’त शरीफ़ पढ़ते हैं और सामिर्दन के दिलों को तड़पा कर रख देते हैं जब कि बा’ज ला उबाली चन्चल और इन्तिहाई ग़ैर सन्जीदा होते हैं, इस तरह के ना’त ख़्वानों में जिन बद नसीबों का दिल ख़ौफ़े खुदा عُزَّوَجَلَّ से ख़ाली होता है, वोह पीछे से एक दूसरे पर जी भर कर तन्कीदें करते, ख़ूब ख़ूब ग़ीबतें करते, आवाज़ों की नक्लें उतार कर ठीक ठाक मज़ाक़ उड़ाते और ऊपर से ज़ोरदार कहकहे लगाते हैं। **अल्लाहु रहमान** عُزَّوَجَلَّ हकीकी म-दनी ना’त ख़्वान हज़रते सय्यिदुना हस्सान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सदके उन्हें भी इश्क़े रसूल ﷺ में रोने रुलाने वाला मुख़्तस ना’त ख़्वान बनाए। **اٰمِنْ بِحَاوِ النَّبِیِّ الْاٰمِیْنِ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** ऐसे ना’त ख़्वानों की इस्लाह के ज़ब्बे के तहत इन के दरमियान होने वाली मु-तवक्क़अ ग़ीबतों की 40 मिसालें अर्ज़ करता हूं: ★ पता नहीं येह मौलवी **माइक** पर कहां से आ गया कि इतनी लम्बी तक्रीर शुरूअ कर दी है! ★ लोग उकता कर उठ उठ कर जा रहे हैं मगर येह है कि माइक ही नहीं छोड़ता ★ बानिये महफ़िल ने लाइट का इन्तिज़ाम ठीक नहीं करवाया ★ मन्च (स्टेज) पर डेकोरेशन कम थी ★ इस ने ना’त ख़्वानों को गरमी में मार दिया एक पैड स्टिल फ़ेन ही रख दिया होता ★ यार! येह साउन्ड वाला भी बिल्कुल बेकार साउन्ड लाया है ★ कोर्डलेस (Cordless) माइक की तरकीब भी ठीक नहीं थी ★ उस ना’त ख़्वान ने सारा वक़्त ले लिया हमारी बारी ही नहीं आने दी मुझे ताख़ीर से मौक़अ दिया ★ मुझे कम वक़्त दिया ★ यार! येह ना’त ख़्वान माइक पर नहीं आना चाहिये था, इस ने रुलाने वाली ना’त पढ़ कर महफ़िल का रुख़ ही बदल



फरमाने मुस्तफा ﷺ: मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह غَوْعَلْ तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

डाला, लोग तो झूमाने वाली तर्ज पर नोटें लुटाया करते हैं ! ★ यार ! इस ना'त ख़्वान ने नया कलाम सुना कर बड़ी चालाकी से जेबें ख़ाली करवा ली हैं हमारे लिये कुछ नहीं बचा ! ★ अरे ! इस को माइक कहां दे दिया ! एक तो आवाज़ बे सुरी है और ऊपर से लम्बी करता है लोग उठ जाते हैं, हम किस के सामने ना'त पढ़ेंगे ? ★ आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का कलाम पढ़ना नहीं आता ★ पुरानी तर्ज में पढ़ता है ★ पुरसोज़ तर्जें ठीक से नहीं पढ़ पाता ★ इस को झूमाने वाले कलाम पढ़ने नहीं आते ★ अ-रबी कलाम नहीं पढ़ पाता ★ येह ना'त ख़्वान तर्जें बिगाड़ कर पढ़ता है ★ फुलां ना'त ख़्वान जहां माल ज़ियादा हो वहीं जाता और वहां के हिसाब से कलाम पढ़ता है ★ वोह जब ना'त पढ़ता है तो उस का मुंह कैसा बन जाता है ! ★ अरे उस के ना'त पढ़ने का अन्दाज़ देखा है ऐसा टेढ़ा मुंह कर के गला फाड़ कर सुर बनाता है कि हंसी रोकना मुश्किल हो जाता है ★ बानिये महफ़िल बड़ा कन्जूस है, जेब में हाथ ही नहीं डालता था ★ फुलां की आवाज़ ज़रा अच्छी है तो मग़रूर हो गया है ★ वोह तो भई बहुत बड़ा ना'त ख़्वान है, हम जैसे छोटे ना'त ख़्वानों को तो लिफ्ट भी नहीं करवाता ★ मन्व (स्टेज) पर मालदारों को बिठा रखा था ★ इस के नख़्खे बहुत हो गए हैं ★ तर्ज कलाम के मुताबिक नहीं थी ★ ईको साउन्ड पर इस का गला ज़ियादा काम करता है ★ इस को नज़राने मिलने पर कैसा जोश चढ़ता है ★ ज़ियादा लोगों में ज़ियादा खुलता है ★ फुलां ना'त ख़्वान चूँकि फ़ारिग़ है, इस लिये नई नई तर्जें बनाता रहता है ★ भई ! वोह तो जैसे बहुत बड़ा ना'त ख़्वान न हो महफ़िल में अपनी बारी के वक़्त ही आता और कलाम पढ़ कर चला जाता है ★ इस और उस ना'त ख़्वान की जोड़ी है येह दोनों किसी को घास नहीं डालते ★ बार बार एक ही कलाम पढ़ता है ★ फुलां ना'त ख़्वान की नक्काली करता है ★ न जाने किस शाइर का कलाम उठा लाया था ★ बानिये महफ़िल ने सना ख़्वानों की कोई ख़िदमत ही नहीं की ★ बानिये महफ़िल ने मुझे टेक्सी का किराया तक नहीं दिया, बहुत कन्जूस निकला ★ गला फाड़ फाड़ कर खाना सारा हज़्म हो गया, बा'द को मा'लूम हुवा कि बानिये महफ़िल ने सना ख़्वानों के लिये खाने का कोई इन्तिज़ाम ही नहीं किया था ★ कल जिस के यहां महफ़िल थी वोह बड़ा दिलेर था, कवर खोला तो 1200 रुपै थे ! मगर आज वाला बानिये महफ़िल कन्जूस है 100 रुपल्ली थमा दी !



फरमाने मुस्तफा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

“गीबत नुक्सान देह है” के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से ईको साउन्ड वालों और केमेरा मेन के मु-तअल्लिक़ गीबतों की 13 मिसालें

★ इस का ईको साउन्ड पुराना है ★ आवाज़ की मिक्सिंग ठीक तरह नहीं करता ★ ईको कम खोलता है ★ ठीक तरह चलाना नहीं आता ★ आवाज़ के उतार चढ़ाव के साथ साउन्ड की आवाज़ कम या ज़ियादा नहीं करता ★ बच्चे को भेज दिया और खुद कहीं और चला गया ★ पेडल पे काम चला दिया मिक्सर जान बूझ कर नहीं लाया ★ स्पीकर छोटे और पुराने हैं ★ स्टेन्ड जंग आलूद थे ★ ना'त ख्वां को मज़ा नहीं आया ★ मूवी वाला जान बूझ कर देर से आया था ★ अच्छा केमेरा नहीं लाया ★ इसे तो केमेरा पकड़ना ठीक तरह नहीं आता, मूवी खाक बनाएगा !

“गीबत न करें” के दस हुरूफ़ की निस्बत से मुबल्लिगीन व मुकर्ररीन के मु-तअल्लिक़ गीबतों की 10 मिसालें

★ बयान के लिये वक़्त देते वक़्त नख़्ते बहुत करता है ★ ख़्वाह म ख़्वाह अपनी वेल्यू बढ़ाता है ★ फुलां मौलाना बहुत पैसे लेता है इस लिये हमारी पहुंच से बाहर है ★ बिगैर रक़म लिये ख़िताब ही नहीं करता, सुवारी का मुता-लबा अलग करता है ★ बयान की तय्यारी कर के नहीं आता ★ रिसाला पढ़ के सुना दिया ★ बयान में अपने औसाफ़ ज़रूर बताएगा ★ निगरान की इजाज़त के बिगैर बयान करने चला जाता है ★ निगरान को तो कुछ समझता ही नहीं ★ बनावटी सोज़ और रिक्कत पैदा करता है।

“सुन लो ! गीबत करने वाला सब से पहले जहन्म में जाएगा” के सैंतीस हुरूफ़ की निस्बत से इमाम व ख़तीब के बारे में की जाने वाली मु-तवक्क़अ गीबतों की 37 मिसालें

★ इमाम साहिब की शक़ल अच्छी नहीं है ★ क्या तुम्हें कोई दूसरा इमाम नहीं मिला था



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

जो इसे उठा लाए! ★ इमाम साहिब मोडर्न जेहन के हैं सादा लिबास नहीं पहनते ★ इमाम साहिब के बाल बड़े अजीब लगते हैं ★ सर के बालों और दाढ़ी में तेल तक नहीं लगाते ★ इमाम साहिब को ढंग से इमामा बांधना भी नहीं आता ★ अक्सर नमाज़ में टाइम पर नहीं पहुँचते ★ आप टाइम पर आते हैं आप से पहले वाले फुलां इमाम साहिब शायद ही किसी नमाज़ में टाइम पर पहुँचे हों ★ तक्बीर कहते वक्त इमाम साहिब ठीक तरह से हाथ सीधे नहीं करते ★ तक्बीर कहने के बा'द हाथ नीचे लटका कर फिर बांधते हैं, सुन्नत के मुताबिक हाथ बांधना भी नहीं आता ★ इमाम साहिब की क़िराअत मजेदार नहीं ★ फ़ज़्र में बहुत लम्बी क़िराअत कर जाते हैं ★ क़िराअत में अक्सर भूल जाते हैं ★ उस दिन उलटी तरतीब से सूरतें पढ़ डालीं, इन का हाफ़िज़ा कमज़ोर है ★ इन की आवाज़ में गूँज नहीं है ★ इमाम साहिब नमाज़ पढ़ाते वक्त सर ऊँचा रखते हैं ऐसा लगता है जैसे चांद को देख रहे हों ★ नमाज़ पढ़ते वक्त आंखें घुमा कर इधर उधर देखते हैं ★ दौराने क़ियाम नज़र सज्दे की जगह पर नहीं रखते ★ रुकूअ में जाते वक्त ठीक तरह झुकते नहीं ★ इमाम साहिब को पता नहीं क्या जवानी चढ़ी है बहुत जल्द नमाज़ ख़त्म कर देते हैं ★ इमाम साहिब नमाज़ पढ़ा कर हुजरे में जा बैठते हैं नमाज़ियों से मिलने के लिये नहीं रुकते ★ पता है आज फ़ज़्र की नमाज़ मुअज़्ज़िन ने पढ़ाई, नमाज़ के बा'द में हुजरे में गया तो इमाम साहिब सोए पड़े थे, मैं ने उठा दिया वरना शायद आज उन की फ़ज़्र ही क़ज़ा हो जाती ★ उन का जेहन म-दनी नहीं ★ म-दनी कामों में बिल्कुल तआवुन नहीं करते ★ आज इमाम साहिब बिगैर इमामे के घूम रहे थे येह कैसे दा'वते इस्लामी वाले हैं! ★ इज्तिमाअ में हल्के में नहीं आते ★ म-दनी काफ़िले में कभी सफ़र नहीं किया ★ अन्दाजे गुफ़्त-गू दा'वते इस्लामी वाला नहीं ★ नमाज़ियों के नाम तक याद नहीं रखते ★ इतने दुबले पतले हैं कि मिम्बर पर बैठे हुए बड़े अजीब दिखते हैं ★ बहुत मोटे ताजे हैं ★ पेट निकला हुवा है ★ पर्दे में पर्दा नहीं करते ★ बहुत देर से बयान शुरूअ करते हैं ★ अन्दाजे बयान बस ऐसा ही है ★ जोशीला बयान नहीं करते ★ बिजली चले जाने की वजह से स्पीकर बन्द हो तो इन का गला बैठ जाता है।



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अज्र लिखता है और किरात उहुद पहाड़ जितना है। (अदुर्ज़ाक)

“उफ़ अहले मस्जिद की गीबत !!” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से मस्जिद इन्तिज़ामिया के मु-तअल्लिक़ की जाने वाली गीबतों की 15 मिसालें

★ येह तो बस नाम का सद्र है अस्ल हुक्म किसी और का चलता है ★ ऐसा सद्र होगा तो मस्जिद का येही हाल होगा ★ खुद तो चन्दा करता नहीं मुझे ही कहता रहता है ★ इमाम को तो तन-ख़्वाह पहले दे देता है मेरे (या'नी मुअज़्ज़िन के) के साथ पता नहीं क्या दुश्मनी है ★ अपनी बात साबित करने के लिये दलाइल देना शुरूअ कर देता है किसी और की सुनना तो गवारा ही नहीं करता ★ इस का दिमाग़ अभी बचकाना है ★ सोच समझ कर बात नहीं करता बस जो मुंह में आया बोल देता है ★ किसी की परेशानी का एहसास ही नहीं करता ★ हूं! 200 रुपये ख़ैर ख़्वाही के पकड़ा दिये इस से मेरा क्या बनेगा ★ ख़ादिम उस का दोस्त है ना! इसी लिये उस से काम की पूछगछ नहीं करता मैं (मुअज़्ज़िन) एक बार ग़ैर हाज़िर हो जाऊं तो पकड़ लेता है ★ खुद अपना घर इतने पैसों में चला के दिखाए देखता हूं अक्ल ठिकाने आती है या नहीं ★ इतने सालों से यहां हूं एक पल में बोल दिया कि तुम यहां क्यों पिस रहे हो कोई और काम कर लो ★ बड़ा सद्र बना फिरता है फ़ज्र में तो आता नहीं ★ किसी इमाम या ख़तीब को टिकने नहीं देता ★ इस मस्जिद का मु-तवल्ली बड़ा अड़यल आदमी है।

“ख़बरदार ! गीबत करने वाला अज़ाबे क़ब्र में गरिफ़्तार होगा और उस को जहन्नम में मुर्दार भी खाना पड़ेगा” के अड़सठ हुरूफ़ की निस्बत से मज़हबी तब्क़े में की जाने वाली गीबतों की 68 मिसालें

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें शैताने अय्यार व मक्कार से हर दम पनाह में रखे, येह दीनदार तब्क़े को भी ख़ूब ख़ूब गीबतें करवाता और गुनाहों के गहरे ग़ार में गिराता है, इस मरदूद ने मज़हबी लोगों में गीबत के ऐसे ऐसे अल्फ़ाज़ राइज कर दिये हैं कि येह अक्सर गीबत कर जाते हैं और इन्हें कानों



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

कान इस की ख़बर भी नहीं होती ! इस ज़िम्न में 68 मिसालें अर्ज करने की कोशिश करता हूँ जिन का बिला इजाज़ते शर-ई इस्ति'माल या तो ग़ीबत है या तोहमत या बद गुमानी या चुगली वगैरा ।

★ फुलां का ज़ेहन मज़हबी नहीं है ★ वोह शर-अ शरीअत में कहां समझता है ★ हमारी मस्जिद के इमाम की क्या बात करते हो वोह तो तन-ख़्वाह दार मौलवी है ★ हमारा मुअज़्ज़िन (या फुलां) पैसे वालों से तरकीबें बनाता रहता है ★ वोह बे अमल है ★ दीनी मा'लूमात से कोरा है ★ उस को नमाज़ भी नहीं आती ★ इस से तो फुलां ज़ियादा बा अमल है ★ दुनिया को नसीहत करता है और घर वालों को छोड़ रखा है जभी तो उस की बेटी या बहन या बीवी बे पर्दा घूमती है ★ इस से तो अच्छे अच्छे पड़े हैं ★ “मैं मैं” करता है ★ अपने मुंह मियां मिठू बनता है ★ अपनी ता'रीफ़ सुनने का बड़ा शौक है ★ अपने नाम की पड़ी है ★ नाम के लिये करता है ★ अपनी वाह वाह चाहता है ★ खुशामद पसन्द है ★ बहुत फैल गया है ★ आगे आगे बैठने का बड़ा शौक है ★ उस को मूवी में आने का बहुत ज़ब्बा है ★ चुगुल ख़ोर ★ दो रुखा ★ दोगला ★ धोकेबाज़ ★ वा'दा ख़िलाफ़ है ★ उस ने ग़ीबत की ★ तोहमत लगाई ★ बद गुमानी की ★ झूट बोला ★ ग़लत काम किया ★ लोफ़र ★ जूआरी ★ शराबी ★ नशई ★ चरसी ★ भंगड़ी ★ हेरोइन्ची ★ अफ़यूनी ★ बद चलन ★ बद मस्त सांड ★ ज़ानी ★ इग़लाम बाज़ है ★ लड़कियों को ताड़ता है ★ इस की ज़ेहनियत गन्दी है । मेरा बाप हलाल हराम रोज़ी की परवाह नहीं करता ★ बड़ा भाई बे नमाज़ी है ★ बहन बे पर्दा है ★ मेरे वालिदैन् आपस में लड़ते रहते हैं ★ घर में कोई भी कुरआन नहीं पढ़ा हुवा ★ छोटा भाई फ़िल्में डिरामे देखता है ★ बातें तो बड़ी सूफ़ियाना करता है ★ नमाज़ एक नहीं पढ़ता ★ पार्टियों के आगे पीछे घूमता है ★ कल तक तो इस के पास चाय पीने के पैसे नहीं होते थे आज इस के पास महंगी गाड़ी न जाने कहां से आ गई ! ★ ज़रूर मस्जिद (या मद्रसे) के चन्दे पर हाथ मारा होगा ! ★ मुफ़्त का माल खा खा कर पेट बढ़ा रखा है ★ तक्रीर में पहले अपने क़सीदे पढ़ेगा फिर मौजूअ पर आएगा ★ येह तो दूसरे मुक़र्रीन का वक़्त भी खा जाता है ★ बड़े जल्से (या इज्तिमाअ) में तो ख़ूब



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है ! (अबू या'ला)

गरजता बरसता है, अपनी मस्जिद में इस की आवाज़ नहीं निकलती ★ कोई इस के हाथ न चूमे तो नाराज़ हो जाता है ★ इस को नज़राना न दिया या खाना अच्छा न खिलाया तो अगली मर्तबा नहीं आएगा ★ यह उन्ही का यार है जो इस की हां में हां मिलाते हैं, जो ज़रा इख़िलाफ़ करे उसे जूती की नोक पर रखता है ★ खुशामद पसन्द है ★ चार तक़ीरें रट रखी हैं जहां जाता येही बयान करता है ★ खुद को बड़ा अल्लामा समझता है ★ फुलां भी कोई अलिम है ! ★ इस के मद्रसे में वोही मुफ़्ती रह सकता है जो इस के मन पसन्द फ़तवे दे ★ चार किताबें पढ़ ली हैं तो इस का दिमाग़ आस्मान पर चढ़ गया है ★ जुमुआ जुमुआ आठ दिन नहीं हुए तन्ज़ीम में शामिल हुए और हमें नसीहतें करना शुरू कर दी हैं !

“गीबत में ऐसी बू होती है कि अगर समुन्दर में डाल दी जाए तो उसे भी बदबूदार कर देगी” के साठ हुरूफ़ की निस्बत से गीबत की मु-तफ़र्रक़ 60 मिसालें

★ दुन्यादार ★ नफ़्स का बन्दा है ★ बीवी पर जुल्म करता है ★ क़र्ज़ा दबा लिया है ★ चोर ★ ख़ाइन ★ बद दिया नत ★ घपले बाज़ ★ ले भागू ★ पैसे खा गया है ★ खुशक मिज़ाज ★ सख़्त दिल ★ बे वफ़ा ★ इस का तो माले मुफ़्त दिले बे रहूम वाला हिसाब है ★ एहसान फ़रामोश है ★ फ़टीचर ★ भगोड़ा ★ बावला ★ पगला ★ घन चक्कर ★ अक्ल का अन्धा है ★ इस की अक्ल घास चरने गई है ★ इस के दिमाग़ में भूसा भरा हुवा है ★ शक्की मिज़ाज ★ वस्वसिया है ★ ड्यूटी पूरी नहीं देता ★ हराम का माल खाता है ★ मगरूर ★ अकड़ फूँ है ★ इस का दिमाग़ हर वक़्त आस्मान पर रहता है ★ लालची ★ हरीस ★ बख़ील ★ इस की तो भई ! चमड़ी जाए मगर दमड़ी न जाए ★ कन्जूस मक्खी चूस है ★ किसी की चलने नहीं देता ★ किसी को आगे नहीं आने देता ★ अपनी लीडरी चमकाता है ★ अपने नम्बर बनाता है ★ चौधराहट जमा रखी है ★ नख़े बाज़ ★ “गले पड़ू” ★ ढीट ★ चलता पुर्जा



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

★ बिकाउ माल ★ जिधर पैसा देखता है उधर लुढ़क जाता है ★ लार्ड साहिब ★ या नवाब साहिब है ★ माल से महब्बत करता है ★ ग़रीबों को घास भी नहीं डालता ★ पेट का बन्दा है ★ मस्के बाज़ ★ चापलूस ★ बटर पालिश करने वाला ★ खुशा-मदी है ★ हर मुआ-मले में टांग अड़ाता है ★ बड़ा बे हया है, आज फिर नमाज़ में इस का मोबाईल बज रहा था ★ खुद को बड़ा अक्ल मन्द समझता है ★ पक्का मल्लबी है ★ मफ़ाद परस्त है।

“चुप रहो सलामत रहोगे” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से वक्फ़ के अजीरों के मु-तअल्लिक़ ग़ीबतों की 15 मिसालें

★ लेट आता है मगर पैसे बचाने के लिये हाज़िरी बर वक़्त आने की लगाता है ★ इजारे के वक़्त इधर उधर की बातों में वक़्त ज़ियादा ज़ाएअ करता है ★ उर्फ़ के ख़िलाफ़ ज़ाती काम करने के बा वुजूद भी कटौती नहीं करवाता ★ शो'बा ज़िम्मेदार का चहीता है तभी वोह इसे कुछ नहीं कहता ★ मेरी तरक्की की राह में रुकावट है ★ मुझे ज़िम्मादारी मिल जानी थी इस ने नहीं मिलने दी ★ येह काबिलिय्यत में मुझ से बहुत कम है पर तन-ख़्वाह मेरे बराबर की ले रहा है ★ शो'बा ज़िम्मेदार बस एवई है इसे काबिलिय्यत और सलाहिय्यत के मुताबिक़ काम लेना नहीं आता ★ इसे काम न देना, लटका देगा ★ इसे ठीक से पढ़ाना नहीं आता ★ काम में ग़-लतियां बहुत करता है ★ हवाले निकालने में बहुत देर लगा देता है ★ रद्दी तरजमा करता है ★ काम मुकम्मल करने में बहुत दिन लगा देता है ★ थोड़ा सा काम था इतने दिन लगा दिये।

बग़ल में केन्सर के गुदूद : ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, म-दनी इन्आमात के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये, आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार की जाती है, बाबुल मदीना कराची के अलाके



फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरस्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

नयाआबाद की एक इस्लामी बहन का कुछ यूँ कहना है कि मुझे बग़ल में गुदूद हो गए और डॉक्टरों ने केन्सर क़रार दे दिया । येह सुन कर मेरे पैरों तले से ज़मीन निकल गई, बे बसी का आलम था मैं कर भी क्या सकती थी, रो धो कर चुप हो रही, हालत दिन ब दिन बिगड़ती जा रही थी, यहां तक कि तीन तीन दिन तक उल्टियां करती रहती थी, एक इस्लामी बहन ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए जूनागढ़ होल (नयाआबाद) में हर बुध को होने वाले तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की दा'वत पेश की और दिलासा देते हुए फ़रमाया : **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की ब-र-कत से आप की परेशानी दूर हो जाएगी । **أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने इस्लामी बहनों के इज्तिमाअ में जब शिक़्त की तो इस की ब-र-कत से हैरत अंगेज़ तौर पर न सिर्फ़ बग़ल के गुदूद गाइब हो गए बल्कि केन्सर का मरज़ भी जाता रहा । **أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** अब मैं सिद्दहत मन्द हूँ, और इस पर डॉक्टर्ज़ भी हैरान हैं । वाह ! सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की क्या बात है कि इस की ब-र-कत से मेरी केन्सर जैसी मोहलिक बीमारी ख़त्म हो गई है !

पड़े आ के कैसी भी उफ़्ताद¹ तुम पर
ऐ बीमारे इस्यां² तू आ जा यहां पर

न घबराना लेगा बचा म-दनी माहोल
गुनाहों की देगा दवा म-दनी माहोल

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“या रब ! इल्म की ब-र-कतों से महरूम न कर” के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से त-लबा में की जाने वाली ग़ीबतों की 26 मिसालें

★ फुलां पढ़ाई में कमज़ोर है ★ इस के तलफ़फ़ुज़ ग़लत होते हैं ★ इस के मख़ारिज दुरुस्त नहीं ★ इस का हाफ़िज़ा कमज़ोर है ★ ठोठ ★ कुन्द ज़ेहन ★ जाहिल ★ अनपढ़ है

1. या'नी आफ़त

2. गुनाहों का मरीज़



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

★ बात ज़रा देर से समझता है ★ इस की अक्ल मोटी है ★ गुल्ले मारता है ★ नक्लें मार कर
★ रिश्त दे कर ★ सोर्स लगा कर ★ इम्तिहान पास किया है ★ मैं ने बहुत मेहनत से तय्यारी
की थी, फुलां मुम्तहिन (या'नी इम्तिहान लेने वाले) ने ना इन्साफ़ी की, कि फुलां जो कि पढ़ाई में
मुझ से कमज़ोर है उस को ज़ियादा नम्बर दे दिये ! ★ मद्रसे की इन्तिज़ामिया का सद्र या फुलां
रुक्न खुशामद पसन्द (या ना इन्साफ़ या ज़ालिम) है उस लड़के का कुसूर ज़ियादा था मगर मेरा नाम
ख़ारिज कर दिया ★ इस बेचारे को बे कुसूर निकाल दिया है हमारी इन्तिज़ामिया के फुलां रुक्न
ने तो बिल्कुल अन्धी चला रखी है। ★ नाज़िम बावर्ची को चीजें भी बराबर नहीं देता तो खाना
कहां से अच्छा बनेगा ★ नाज़िम साहिब को जब देखो अपने कमरे में बैठे रहते हैं, कभी हमारे
कमरे में आ कर हमारी ख़स्ता हाली तो देखें ★ इन्तिज़ामिया (या मजलिस) को ख़ाली चन्दा जम्अ
करने से मत्लब है हम पर खर्च करने का कोई ख़याल नहीं ! ★ इतना बद मज़ा खाना ! हमारा
बावर्ची भी चूल्हे पर खाना रख कर सो जाता है ! अप्सोस की बात तो येह है कि नाज़िम भी इस
को कुछ नहीं कहता ! ★ सर परस्त साहिब ने चन्दे के माल से घर बना लिया, गाड़ी ख़रीद ली
। मगर हमारे कमरे के पंखे तक ठीक करवा कर नहीं दिये ★ मद्रसे (या'नी जामिआ) में आने वाले
★ हमारे मुहाफ़िज़े कुतुब (या'नी लायब्रेरियन) के दिमाग़ में लगता है भुस भरा हुवा है जिस किताब
के बारे में पूछो इन्कार में सर हिला देते हैं ★ फुलां इतनी लम्बी छुट्टी ले कर के आया उस को
तो द-रजे में बिठा लिया, मैं ने दो दिन छुट्टी की तो मद्रसे से नाम ख़ारिज कर दिया, आख़िर
इन्साफ़ भी कोई चीज़ होती है !

“उस्ताज़ तो रूहानी बाप होता है” के बाईस हुरूफ़ की
निस्बत से असातिज़ा की गीबतों की 22 मिसालें

इल्मे दीन पढ़ाने वाला उस्ताज़ इन्तिहाई क़ाबिले एहतिराम होता है मगर बा'ज नादान
त-लबा अपने असातिज़ा के नाम बिगाड़ते, मज़ाक़ उड़ाते हुए नक्लें उतारते, तोहमतें लगाते, बद



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अब्दुर्रज़ाक)

गुमानियां और गीबतें करते हैं, उन की इस्लाह की खातिर असातिज़ा की गीबतों की 22 मिसालें हाज़िर की हैं : ★ आज उस्ताज़ साहिब का मूड ऑफ़ है लगता है घर से लड़ कर आए हैं ★ येह फुलां मद्रसे में पढ़ाते थे ★ वहां तन-ख़्वाह कम थी, ज़ियादा तन-ख़्वाह के लिये हमारे मद्रसे में तशरीफ़ लाए हैं ★ तौबा ! तौबा ! हमारे उस्ताज़ (या क़ारी साहिब) बालिगात को ट्यूशन पढ़ाने उन के घर जाते हैं ★ उस्ताज़ साहिब पढ़ाने में मुझ ग़रीब पर कम मगर फुलां मालदार के लड़के पर ज़ियादा तवज्जोह देते हैं ★ हमारे उस्ताज़ साहिब जब देखो मुझे ज़लील करते रहते हैं ★ त-लबा पर बिला वजह सख़्ती करते हैं ★ पढ़ाना आता नहीं, उस्ताज़ बन बैठे हैं ! ★ देखा ! आज उस्ताज़ साहिब मेरे सुवाल पर कैसे फंसे ! ★ उस्ताज़ साहिब को किताब के हाशिये से मु-तअल्लिक कोई सुवाल पूछ लो तो आए बाएं शाएं करने लगते हैं ★ उस्ताज़ साहिब ने इस सुवाल का जवाब ग़लत दिया है, आओ मैं तुम्हें किताब दिखाता हूं ★ उस्ताज़ साहिब को खुद इबारत पढ़नी नहीं आती इस लिये हम से पढ़वाते हैं ★ उस्ताज़ साहिब को तो ढंग से तरजमा करना भी नहीं आता ★ उस्ताज़ साहिब सबक़ को ख़्वाह म ख़्वाह लम्बा कर देते हैं ★ फुलां उस्ताज़ से तो मैं मजबूरन पढ़ रहा हूं, मेरा बस चले तो इन से पिरयड (या सबक़) ले कर किसी और को दे दूं या इन्हें मद्रसे ही से निकाल दूं ★ फुलां उस्ताज़ तो “बाबाए उर्दू शुरुहात” हैं, उर्दू शर्ह से तय्यारी कर के आते हैं, जब तक उर्दू शर्ह न पढ़ लें सबक़ नहीं पढ़ा सकते ★ आज उस्ताज़ साहिब सबक़ तय्यार कर के नहीं आए थे इसी लिये इधर उधर की बातों में वक़्त गुज़ार दिया ★ जब येह ज़ेरे ता'लीम थे तो पढ़ाई में इतने कमज़ोर थे कि रोज़ाना अपने उस्ताज़ से डांट खाते थे ★ मैं हैरान हूं कि फुलां तालिबे इल्म की पोज़ीशन कैसे आ गई ! ज़रूर उस्ताज़ साहिब ने इस को परचे के सुवालात बताए होंगे ★ फुलां उस्ताज़ (या क़ारी साहिब) का ज़ेहन म-दनी नहीं है उन्होंने ने कभी द-रजे में म-दनी कामों के बारे में एक लफ़ज़ नहीं बोला ★ फुलां फुलां उस्ताज़ की आपस में बनती नहीं जब देखो एक दूसरे के ख़िलाफ़ बातें करते रहते हैं ★ हमारे उस्ताज़ (या क़ारी साहिब) आज कल फुलां अमरद में बड़ी दिल चस्पी ले रहे हैं ।



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोने जुमुआ दो सो बार दुखदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कन्जुल उम्मा)

“दा 'वते इस्लामी का म-दनी मक्सद है, “मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है” के सड़सठ हुरूफ़ की निस्बत से म-दनी माहोल में की जाने वाली गीबत की 67 मिसालें

मक्कए मुकर्रमा व मदीनए मुनव्वरह رَادَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا, मस्जिदैने करीमैन, मिना, मुज्दलिफ़ा और अ-रफ़ात वगैरा वगैरा मुक़द्दस मक़ामात पर भी शैतान गुनाह करवा देता है, न हज़ वालों को छोड़ता है न उम्रे वालों को, इसी तरह दा 'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से मुन्सलिक इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें भी “गुनाह प्रूफ़” नहीं, इन को भी इस तरह गीबतें करवाता है कि इन्हें कानों कान ख़बर तक नहीं होती लिहाज़ा ख़ास म-दनी माहोल में की जाने वाली गीबतों की 67 मिसालें पेश की जाती हैं ताकि इन से और इन जैसे दीगर कलिमात व फ़िक़रात से बचने की तरकीब की जा सके ★ वोह म-दनी मर्कज़ की इताअत नहीं करता ★ उस का तन्कीदी ज़ेहन है ★ उस का अभी तक ज़ेहन नहीं बना ★ वोह ज़िम्मादारान से उलझता रहता है ★ वोह बात बात पर ए'तिराज़ करता है ★ म-दनी काम बिल्कुल नहीं करता मगर आगे आगे आने का बहुत शौक़ है ★ कल रुकने शूरा के सामने टाइट इमामा बांध कर आ गया था ★ सारा दिन इमामा नहीं बांधता ★ बहुत मिन्नतें की मगर वोह उस को तो इमामा बांधना भी नहीं आता फुलां से बंधवाता है ★ वोह क्या दर्स देगा पहले दर्स सुनने तो बैठे ★ वोह इज्तिमाअ में देर से आने का आदी है ★ उस ने तो आज तक म-दनी काफ़िले में सफ़र ही नहीं किया ★ लाख समझाया मगर वोह म-दनी इन्आमात का रिसाला जम्अ नहीं करवाता ★ वोह इशराक़ चाशत के नवाफ़िल नहीं पढ़ता ★ الْحَمْدُ لِلّٰهِ हमारे अलाके की मस्जिद में तहज्जुद बा जमाअत होती है मगर हमारा जैली निगरान तआवुन नहीं करता ★ उस का बयान तन्ज़ीमी नहीं होता ★ उस का बयान तो मौलवियों वाला होता है, (مَعَاذَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ) ★ वोह तो उर्दू नहीं पढ़ा हुवा दर्स कहां से देगा ★ वोह सदाए मदीना क्या लगाएगा पहले ये तो पूछो कि फ़ज़्र में उठता भी है या नहीं ! ★ हमारे निगरान ने बस एक से जोड़ी बना रखी है और उसी की सुनता है ★ वोह ज़बान (या आंखों या पेट) का कुफ़ले मदीना नहीं लगाता ★ वोह दीवाना नहीं सियाना है ★ उस का म-दनी ज़ेहन कहां है ★ मेरा बाप या



फरमाने मुस्तफा ﷺ: जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज़्ज़बाइद)

बड़ा भाई (या फुलां) दुन्यादार है ★ मुझे इज्तिमाअ में नहीं आने देता ★ सुन्नतों भरे बयान की केसिटें भी नहीं सुनने देता ★ इस को सुन्नतों का जज़्बा नहीं ★ इस के बयान में कहां दम है ! ★ इस से तो फुलां इस्लामी भाई अच्छा मुबल्लिग़ है ★ इस के बयान में मज़ा नहीं आया ★ बयान में लम्बी बहुत करता है ★ अपने बयान पर खुद तो अमल करता नहीं है ★ रियाकार है ★ सब को दिखाने के लिये रोता है ★ आंसू निकालने के लिये ज़ोर ज़ोर से आंखें भिंचता है ★ दुआ (मुनाजात या ना'त) में जान बूझ कर रोने जैसी आवाज़ निकालता है ★ ढोंग करता है ★ डिरामा बाज़ है ★ एक्टिंग करता है ★ लोगों के सामने ही इस को “वज्द” आता है ! ★ छुप छुप कर फ़िल्में डिरामे देखता है ★ गाने बाजे का शौकीन है ★ अम्मदों से दोस्ती करता है ★ इस को लोगों की लाइन लगवा कर मुलाक़ात करने का बड़ा शौक़ है ★ हमारा निगरान हर दूसरे इज्तिमाअ में खुद बयान करने खड़ा हो जाता है ★ मुझे बयान नहीं देता कि कहीं आगे न निकल जाऊं ★ निगरान ने बड़ी रात के “इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त” में बे सुरे ना'त ख़्वानों को बिठा दिया हम जैसे तज़िबा कारों को मन्च पर क़दम तक नहीं रखने दिया ★ हमारा निगरान अपनी शख़्सियत बनाता है ★ इस्लामी भाइयों को म-दनी मर्कज़ की महबूबत या इताअत का ज़ेहन नहीं देता ★ निगरान ने फ़्रेंड सर्कल बना रखा है, नए इस्लामी भाइयों पर तवज्जोह नहीं देता ★ किसी को आगे नहीं बढ़ने देता ★ पुराने इस्लामी भाइयों को साइड पर कर रहा है ★ फुलां ने निगरान की ग़-लती निकाली तो निगरान ने तो इन्तिक़ामन बेचारे का पत्ता ही काट दिया ★ आज दुआ करवाने वाला मुबल्लिग़ लगता है घड़ी देखना भूल गया था जभी इतनी लम्बी दुआ करवाई, हमारे तो हाथ थक गए ★ आज फिर ए'लानात करने वाले इस्लामी भाई ने जल्दी जान नहीं छोड़ी ★ भई ! सारे उसूल हमारे लिये हैं येह जो चाहे करे ★ हमारी शहर मुशा-वरत का निगरान मेरी सलाहियतों से ख़ौफ़ज़दा है जभी तो मुझे इज्तिमाअ में बयान का कभी मौक़ा नहीं दिया ★ इस की निगराने पाक से पक्की तरकीब है इस लिये बड़ी रात का बयान इसे मिला, मुझे पूछा तक नहीं ★ जहां कोई नहीं जाता वहां बयान के लिये मुझे भेज देता है ★ हमें कहता है कि इज्तिमाअ की रात ए'तिकाफ़ किया करो और खुद सलातो सलाम के बा'द घर निकल जाता है ★ येह खुद पहले



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहक्कीक वोह बदबख्त हो गया । (इन्ने सुनी)

दाढ़ी मुन्डा था, मेरी ही इन्फ़िरादी कोशिश से म-दनी माहोल में आया, आज मुझे लिफ्ट ही नहीं करवाता ★ फुलां इस्लामी भाई ने कभी अलाके में म-दनी कामों में कोई तआवुन नहीं किया वैसे बड़ा ज़िम्मेदार बनता है ★ आज तो म-दनी मर्कज़ का बड़ा वफ़ादार बनता है जब लात पड़ेगी फिर देखूंगा ★ मुर्शिद का गुस्ताख़ है ★ कल तक म-दनी मर्कज़ पर तन्कीद करता था, आज ज़िम्मेदारी मिल गई तो मर्कज़ मर्कज़ की गरदान करता है ★ सुना है फुलां को ज़िम्मेदारी से हटा दिया गया है उस ने ज़रूर कोई गड़बड़ की होगी ★ म-दनी अतिय्यात में तरकीब “आउट” की होगी ।

“गीबत कर के ब-र-कतों से महरूम न हों” के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से म-दनी काफ़िले के मु-तअल्लिक़ की जाने वाली ग़ीबत की 26 मिसालें

تَبْلِیْغِے کُرْآنِو سُنْنت کی اَلاَمْغِیْرِ گِیْرِ سِیْیَاسِی تَهْرِیْکِ، دَا 'وَتِے اِسْلَامِی کے تَهْت سُنْنتِو کی تَرَبِیْیَتْ کے لِیْے سَفَرِ کَرْنِے وَالِے اَاشِیْکَآنِے رَسُوْل کے م-دَنِی کَافِیْلِو میں ن جانے کِیْتَنِو کی بِیْغِڈِی بَن جَاتِی، نَمَاجِ ن پَڑْنے وَالِے نَمَاجِی اَوْر تَرَه تَرَه کے جَرَااِم پِشَا اَفْراَد سُنْنتِو کے اَدِی بَن جَاتِے هِیْن । تَاہْم شَیْطَان جِو کِی مَسْجِد تِو مَسْجِد اِیْن کَا 'بِے مِیْن بْیِ مِوْسَلْمَان کَا پِیْछَا نْهَیْن اِخْوَڈَا ! تِو فِیْر م-دَنِی کَافِیْلِو کے مِوْسَافِیْرِو کِو بْهَلَا کْیُوْن اِخْوَڈِے گا !! لِیْہَا جَا بَا 'جِ نَا دَان اِسْلَامِی بْہَا بْیِ شَیْطَان کے هَتْھِے چَڈْ هِی جَاتِے اَوْر گِیْ بَتِو مِیْن پَڈْ هِی جَاتِے هِیْن لِیْہَا جَا اِیْسِو کِو خَبَر دَار کَرْنِے کے لِیْے مِو-تَوक्کُزْ گِیْ بَت کی 26 مِیْ سَالِے پِشَا کِی جَاتِی هِیْن : ★ مَا شَاءَ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ یِہ اَمِیْرِے کَافِیْلَا فُولاں اَمِیْرِے کَافِیْلَا سِے جِیْیَا دَا مِیْلَن سَار هِی اُس کے تِو اَخْلاَقْ هِی سَہِیْہ نْهَیْن تْهے ★ اُس کے سَا تْھ جَب سَفَر کِیَا تْھَا بِلْکُول مَجَا نْهَیْن اَیَا تْھَا ★ وَه اِسْلَامِی بْہَا جَدْوَل کی پَا بَنْدِی نْهَیْن کَر تَا ★ جَب دِخْو سِو یَا رِہ تَا هِی ★ وَه نِے کِی کِی دَا 'وَت مِیْن گَا اِیْب هِو گِیَا تْھَا مَگَر ★ خَا نِے کے وَکْت جَلْدِی جَلْدِی اَ کَر چِو کِڈِی مَار کَر بَیْٹ گِیَا ★ اَب کِی بَار کے کَافِیْلِے مِیْن جِیْس کِو پَکَانِے کِی جِیْمِے دَارِی مِیْلِی هِی اُس کِو پَکَا نَا کْہَاں اَ تَا هِی ! ★ پِیْछَلِی بَار پَکَا نِے وَالَا اِیْس کے



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुद्ध और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्ज़वाइद)

मुकाबले में ग़नीमत था ★ दाई नेकी की दा'वत में घबराहट की वजह से कुछ ग़-लतियां कर गया था ★ वोह दुकानदार बड़ा सख़्त दिल है ★ हम नेकी की दा'वत देने जाते हैं तो लिफ़्ट ही नहीं करवाता ★ इस मस्जिद के इमाम का मुंह हम से "फूला" रहता है और ★ ख़ारबाज़ी की वजह से दसों बयान में भी नहीं बैठता ★ हां यार ! पिछली बार तुम नहीं थे इस इमाम ने तो मुबल्लिग़ को ख़्वाह म ख़्वाह झाड़ दिया था ★ इस मस्जिद का मु-तवल्ली भी बस ऐसा ही है ★ म-दनी क़ाफ़िला आता है तो खुश नहीं होता ★ बच्चियां पंखे चलाएं तो कुड़ कुड़ करता है ★ दरियां रखने बिछाने और दीगर मुआ-मलात में टोकता रहता है येह तो फुलां से हमारी तरकीब अच्छी है और मु-तवल्ली उस के रो'ब में है ★ वरना हमें यहां क़ाफ़िला ठहराने भी न देता ★ फुलां यूं तो हर तीस दिन में तीन दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करता है मगर बाकी दिनों में दा'वते इस्लामी का कोई काम नहीं करता बल्कि ★ नमाज़ के मुआ-मले में भी कमज़ोर है ★ दर अस्ल इस का सेठ दा'वते इस्लामी का चाहने वाला है, वोह इस को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के अख़राजात भी देता है और तन-ख़्वाह भी नहीं काटता तो भाई बस माले मुफ़्त दिले बे रहूम वाला मुआ-मला है ★ फुलां ने भी म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करना था मगर ऐन वक़्त पर बहाना कर के जान छुड़ा ली ★ फुलां को मस्जिद में आने की दा'वत दी थी तो कैसे सीने पर हाथ रख कर सर झुका कर वा'दा किया था मगर वा'दा ख़िलाफ़ी कर गया और नहीं आया ★ आज फुलां मुबल्लिग़ ने बयान बहुत लम्बा कर दिया था ★ इस अ़लाके के फुलां फुलां आदमी बहुत खुशक हैं कितनी ही दा'वत दो मस्जिद का रुख़ नहीं करते ।

म-दनी माहोल से रूठे हुए को मनाने के ग़ीबतों भरे

अन्दाज़ का फ़र्ज़ी ख़ाका

जब कोई इस्लामी भाई रूठ जाए या किसी वजह से म-दनी माहोल से दूर हो जाए तो इस मुआ-मले में भलाई चाहने वालों को भी शैतान नहीं छोड़ता, वोह हमदर्दी ही हमदर्दी में ग़ीबतों के कीचड़ में सर ता पा लतपत हो जाते हैं और उन्हें कानों कान ख़बर तक नहीं होती ! ऐसे मौक़अ पर मु-तवक्क़अ ग़ीबतों भरी गुफ़्त-गू का फ़र्ज़ी ख़ाका : (ग़ीबतों को वावैन डाल कर



फरमाने मुस्तफा ﷺ: جس نے मुझ पर दस مرتबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुरुद्दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमूअन्नुवाइद)

वाजेह किया है) ज़ैद ने बक्र से पूछा : आज कल वलीद इज्तिमाअ में नज़र नहीं आ रहा ख़ैरिय्यत तो है ? बक्र ने जवाब देते हुए कहा : आप को मा'लूम नहीं उस ने हमारे निगराने पाक से ★ “गुस्ताख़ाना गुफ़्त-गू” की थी और ★ “गुस्से” में ★ “चीख़ता” था ! ज़ैद : ★ अच्छा अच्छा येह बात है ज़भी मैं ने परसों सलाम किया तो उस ने “जवाब नहीं दिया” ★ उस का “मुंह फूला हुआ था” ★ वाक़ेई बन्दा है “बड़ा अड़यल ।” मगर यार उस को ज़ाएअ नहीं करना चाहिये । बक्र : ★ मेरे से तो “सीधे मुंह बात भी नहीं करता ” ★ पता नहीं “अपने आप को क्या समझता है !” ज़ैद : ★ मैं मानता हूं कि ★ “बहुत वायड़ा (या'नी टेढ़ा) है” ★ “बात करने की भी तमीज़ नहीं” ★ “समझता भी ज़रा देर में है” ★ इस की एक वजह येह भी हैं कि “अनपढ़” है । कुछ भी है इस को बचा लेना चाहिये वरना ★ नमाज़ें छोड़ देगा ★ दाढ़ी मुंडवा देगा और ★ फ़िल्में डिरामे देखने लगेगा । आओ यार दोनों चलते हैं, इस को समझाते हैं ।

अफ़सोस ! हमें बात करनी ही नहीं आती : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! शैतान दीन का काम करने वालों से किस तरह खेलता है ! ! ! ज़ैद व बक्र साहिबान हमदर्दी की रौ में बह कर 13 अ़दद ग़ीबतें और आख़िर में तीन बद गुमानियां कर के गुनाहों का गठर गरदन पर लाद कर वलीद को “म-दनी माहोल” में दोबारा लाने के लिये चले ! ! ! ! येह तो हलकी सी झलक पेश करने की सअूय की है वरना येह 13 ग़ीबतें और तीन बद गुमानियां बहुत कम हैं अगर आज कल की जाने वाली सिर्फ़ पांच मिनट की ग़ैर मोहतात गुफ़्त-गू का कोई “म-दनी अल्ट्रा साउन्ड” करने वाला हो तो शायद उस में से कितनी ही मुना-फ़-क़तें, ग़ीबतें, तोहमतें, झूठे मुबा-लगे, दिल आज़ार फ़िक्रे, बद गुमानियां, ऐब दरियां, रियाकारियां, और न जाने क्या क्या ज़ाहिर कर के रख दे ! अफ़सोस ! हमारी ज़िन्दगी गुज़र गई मगर बात करने का ढंग न आया । काश ! सद करोड़ काश ! ! ! हमें हकीकी मा'नों में ज़बान का कुफ़्ले मदीना नसीब हो जाता आह ! कहीं ऐसा न हो कि हमारी इबादतें और रियाज़तें धरी की धरी रह जाएं और ज़बान की कारस्तानियां जहन्नम में पहुंचा दें । ऐ अल्लाह ﷻ तुझ से तेरी रहमत का सुवाल है !



फरमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

बे सबब बख़्श दे न पूछ अमल
ऐब मेरे न खोल महशर में

नाम रहमान है तेरा या रब !
नाम सत्तार है तेरा या रब !

ना जाइज़ गुफ़्त-गू जहन्म में गिराएगी : हज़रते सय्यिदुना मुअ़ाज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने अज़्र की : “ऐ अल्लाह के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम लोग ज़बान से जो बातें करते हैं इस पर हमारी गरिफ़्त होगी ?” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “ऐ मुअ़ाज़ ! तेरी मां तुझ पर रोए, लोगों को उन के मुंह के बल आग में गिराने वाली इसी ज़बान की बातें होंगी ।” (سُنَنِ تَرْمِذِي ج ٤ ص ٢٨٠ حَدِيث ٢١٢٥) मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَانِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : ज़बान से कुफ़्र, शिर्क, ग़ीबत, चुग़ली, बोहतान सब कुछ होते हैं जो दोज़ख़ में ज़िल्लतो ख़वारी के साथ फेंके जाने का ज़रीआ हैं ।

(مِرَاة ج ١ ص ٥٣)

मुअ़ाफ़ फ़ज़लो करम से हो हर ख़ता या रब
बिला हिसाब हो जन्नत में दाख़िला या रब

हो मग़िफ़रत पए सुल्ताने अम्बिया या रब
पड़ोस खुल्द में सरवर का हो अ़ता या रब

पहले इज्तिमाअ में आता था अब नहीं आता उसे समझाने के
मु-तअल्लिक़ मु-तवक्क़अ 14 गुनाहों भरे जुम्ले और ग़ीबतें

कोई इस्लामी भाई पहले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में आता था मगर अब कम आता है या नहीं आता उस की हमदर्दी करने वालों को भी शैतान बसा अवकात वोह गुल खिलाता है कि अल अमान वल हफ़ीज़ ! ऐसे मौक़अ पर मु-तवक्क़अ गुनाहों भरी गुफ़्त-गू का फ़र्ज़ी ख़ाका : (गीबतों वग़ैरा को वावें डाल कर वाजेह कर दिया है) ज़ैद व बक्र बाहम कुछ यूं गुफ़्त-गू करते हैं, ज़ैद पूछता है : आज कल वलीद इज्तिमाअ वग़ैरा में कम नज़र आता है क्या मस्अला है ? बक्र जवाब



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

देता है : ★ “जरा माल खींचने के चक्कर में पड़ गया है।” मंगनी की भी तरकीब बन रही है मुझ से “डरते डरते” कह रहा था कि ★ घर वाले दाढ़ी कटवाने का कह रहे हैं “क्यों कि लड़की वालों का” ★ “दाढ़ी साफ़ करवाने” और ★ “म्यूज़िकल फंक्शन रखवाने का मुता-लबा है,” ★ यार ! “मेरा भी वहीं शादी करने का दिल है हो सकता है उन के मुता-लबे पूरे करने पड़ जाएं !” जैद : हां यार ! ★ मेरा भी येही खयाल था कि “वलीद थोड़ा पैसों का लालची हो गया है,” येह भी सुनने में आया था कि ★ “किसी लड़की के चक्कर में पड़ गया है” आप की बातों से भी तस्दीक़ हो रही है। और हां ★ “येह भी सुना था कि छुप छुप कर घर में T.V.पर फ़िल्में भी देखने लगा है। जैद ने मज़ीद बयान जारी रखते हुए कहा : एक इस्लामी भाई बता रहे थे कि वलीद ने उस दिन हेडफ़ोन लगाया हुवा था मैं ने पूछा तो ★ “झूटमूट कह दिया कि ना’तें सुन रहा हूं” मगर मैं ने तरकीब से ★ उस का हेडफ़ोन खींच कर अपने कानों पर लगा लिया ! खुदा عزوجل की पनाह ! तौबा ! तौबा ! “बहुत गन्दा गाना बज रहा था !” वलीद मेरी इस ह-र-कत पर सख़्त नाराज़ हुवा ★ और “उस के मुंह से गालियां निकल गईं” ख़ैर मैं ने उस को ठन्डा कर लिया। जैद : यार ! बात तो तश्वीश नाक है। मगर बन्दा काम का है, इस का म-दनी माहोल में रहना हमारे लिये मुफ़ीद है, आओ दोनों चल कर उस को समझाते हैं, उस को बोलेंगे, ★ भाई ! भलें दाढ़ी मुंडा दो, शादी के बा’द रख लेना ★ शादी में म्यूज़िकल फंक्शन भी OK कर दो ★ घर वालों के जाइज़ ना जाइज़ सब मुता-लबे पूरे कर लो मगर म-दनी माहोल मत छोड़ना क्यूं कि हम को पता है कि म-दनी माहोल से जो अलग हो जाता है वोह बहुत गुनाहों में पड़ जाता है ! आओ चलते हैं और समझाते हैं येह कह कर ग़ीबतों, बद गुमानियों, ऐब दरियों, और ख़ियानतों के गुनाहों के टोकरे सर पर रख कर दाढ़ी मुंडवाने, म्यूज़िकल फंक्शन करने और घर वालों के ना जाइज़ मुता-लबात मान लेने के मश्वरे देने की बुरी बुरी निय्यतो के साथ दोनों इस्लामी भाई वलीद को समझाने की नेकी कमाने के लिये रवाना होते हैं।



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अब्दुर्रज़ाक)

बात अमानत होने का क़रीना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस “फ़र्जी खाके” से सिर्फ़ समझाना मक्सूद है सभी अगर्चे इस तरह के गुनाह नहीं करते मगर बा’ज नादान कुछ न कुछ गुनाहों में पड़ ही जाते हैं । ज़ैद व बक्र दोनों की बातों में ग़ीबतों के इलावा दीगर गुनाह भी शामिल हैं म-सलन ग़ीबत सुनना, उयूब उछालना, डरते डरते राज़दारी में कही हुई बात का पर्दा फ़ाश करना वगैरा । जब खुद तस्लीम किया है कि डरते डरते बात की थी इस से दला-लतन वोह बात अमानत साबित होती है, फिर ऐबों से भी भरपूर थी लिहाज़ा पीछे से बयान कर देने में ग़ीबत के साथ साथ ख़ियानत का जुर्म भी लागू हुवा, बात के अमानत होने के लिये येह शर्त नहीं कि कहने वाला सरा-हतन (या’नी साफ़ लफ़्ज़ों में) मन्अ करे कि किसी को मत बताना, बल्कि अगर वोह बात करते हुए इस तरह इधर उधर देखे कि कोई सुन तो नहीं रहा ! येह भी बिल्कुल वाज़ेह क़रीना है कि येह बात अमानत है । चुनान्चे सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा (سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٣ ص ٣٨٦ حَدِيث ١٩٦٦) “जब कोई आदमी बात कर के इधर उधर देखे तो वोह बात अमानत है ।”

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या’नी अगर कोई शख़्स तुम से अकेले में कोई बात कहे और बात के दौरान या बात के दरमियान में इधर उधर देखे कि कोई सुन न ले तो वोह अगर्चे मुंह से न कहे कि येह किसी से न कहना मगर उस की येह ह-र-कत बताती है कि वोह राज़ की बात है लिहाज़ा उसे अमानत समझो, उस का राज़ ज़ाहिर न करो, किसी से येह बात न कहो । (سُبْحَنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ) कैसी पाकीज़ा ता’लीम है ! (مِرَاةُ الْمَرْءِ ج ١ ص ٢٩)

सुधरने की जिद्दो जहद जारी रखिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ीबतों और गुनाहों की आदतों से तौबा कीजिये और सुधरने के लिये ख़ूब जिद्दो जहद फ़रमाइये और सुधरने की दुआ से भी हरगिज़ न उकताइये और यूं भी दिल थोड़ा मत कीजिये कि मैं तो इतना अर्सा हुवा म-दनी माहोल से वाबस्ता हो चुका हूं, ख़ूब दुआएं भी मांगता हूं मगर मेरी सहीह मा’नों में इस्लाह नहीं हो पाती । फ़ोरी तौर पर तौबा की क़बूलिय्यत के आसार ज़ाहिर हो जाएं येह कोई ज़रूरी नहीं,



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कन्जुल उम्माल)

तौबा करने से हरगिज़ न उकताएं हर दम तौबा किये जाएं, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ ज़रूर ज़रूर करम होगा । नेक बन्दे उम्र भर बारगाहे खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में गिड़गिड़ाते रहते थे, कभी भी नहीं उकताते थे चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 344 स-फ़हात पर मुशतमिल किताब, "मिन्हाजुल आबिदीन" सफ़हा 41 ता 43 पर है : हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू इस्हाक़ अस्फ़राइनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मैं ने तीस³⁰ बरस अल्लाह तआला से तौ-बतुन्नसूह नसीब होने की इल्तिजा की, तीस³⁰ बरस के बा'द मैं अपने दिल में मु-तअज्जिब हुवा और दरबारे खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अर्ज़ की : "ऐ परवर्द गार (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझे तीस बरस हो चुके हैं तुझ से सिर्फ़ एक हाज़त के लिये इल्तिजा करते हुए लेकिन तूने अब तक वोह भी पूरी नहीं फ़रमाई ।" जब मैं सोया तो ख़्वाब में एक शख़्स देखा जो मुझे कह रहा था : तू अपनी तीस³⁰ सालह दुआ पर तअज्जुब करता है ! तुझे येह मा'लूम नहीं कि तू कितनी बड़ी चीज़ का मुता-लबा कर रहा है ? तू उस चीज़ का मुता-लबा कर रहा है कि अल्लाह तआला तुझे अपना दोस्त बना ले, क्या तूने अल्लाह तआला का येह इर्शाद नहीं सुना कि :

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ

الْمُتَّطَهِّرِينَ ﴿٢٢٢﴾ (البقرة ٢٢٢)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को ।

तो क्या तू तौबा को मा'मूली शै ख़याल करता है ? : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : अगर तुम जल्द तौबा करोगे तो उम्मीद है कि अन्करीब गुनाहों पर इस्सार करने के मरज़ का तुम्हारे दिल से क़ल्अ क़मअ (या'नी ख़ातिमा) हो जाए और गुनाहों की नुहूसत का बोझ तुम्हारी गरदन से उतर जाए । और गुनाहों की वजह से जो क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) पैदा होती है इस से हरगिज़ बे ख़ौफ़ न हो । बल्कि हर वक़्त अपने दिल पर निगाह रखो, क्यूं कि बा'ज़ सालिहीन رَحْمَهُمُ اللَّهُ الْفَيِّن ने फ़रमाया है : बेशक गुनाह करने से दिल सियाह हो जाता है, और दिल की सियाही की अ़लामत येह होती है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती, ताअत (या'नी इबादत) के लिये मौक़अ नहीं मिलता, नसीहत



फरमाने मुल्फा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुद्ध और दस मरतबा शाम दुकंदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ात मिलेगी। (मबमदुज्जवाइद)

से कोई फ़ाएदा नहीं होता (या'नी नसीहत व बयान सुन कर दिल पर असर नहीं होता)। ऐ अज़ीज़ ! किसी गुनाह को मा'मूली न खयाल कर और कबीरा गुनाहों पर इस्सार करने के बा वुजूद अपने आप को ताइब (या'नी तौबा करने वाला) गुमान न कर।

मुहीत दिल पे हुवा हाए नफ़से अम्मारा
मैं कर के तौबा पलट कर गुनाह करता हूँ

दिमाग़ पर मेरे इब्नीस छा गया या रब
हकीकी तौबा का कर दे शरफ़ अता या रब

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُؤْبُوْا اِلٰی اللّٰہِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

“गीबत बड़ी तबाहकार है” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से
“मजालिस” के बारे में की जाने वाली गीबतों की 16 मिसालें

★ निगरान ने मजलिस में सिर्फ़ खुशा-मदी इस्लामी भाइयों को लिया है ★ मजलिस के किसी भी फ़र्द की आपस में नहीं बनती ★ पता नहीं क्या देख कर इस को येह ज़िम्मेदारी दे दी गई है ★ मैं इतना पुराना हूँ निगरान ने फिर भी मजलिस में नहीं लिया और उसे म-दनी माहोल में आए जुमुआ जुमुआ आठ दिन हुए हैं मजलिस में ले लिया ★ मजलिस में रहना है तो बस इस की हां में हां मिलाने जाओ ★ मजलिस के फुलां फुलां रुकन इज्तिमाअ के दौरान मक्तब में बैठे गप्पे हांक रहे थे ★ इक़ामत हो गई फिर भी फुलां फुलां अपने मक्तब से निकल कर बा जमाअत नमाज़ के लिये अन्दरूने मस्जिद नहीं आए ★ सूए इत्तिफ़ाक़ कि “मजलिस” के सारे ही अराकीन बड़े रफ़ हैं ★ फुलां मजलिस का निगरान बिल्कुल एक्टिव (ACTIVE) नहीं बस ★ शो पीस है ★ फुलां मजलिस का निगरान अपना मक्तब साफ़ नहीं रखता और ★ वहां चीजें भी इधर उधर बिखरी रहती हैं ★ हमारी मजलिस के फुलां रुकन को इन्फ़रादी कोशिश करना ही नहीं आती ★ एक नए इस्लामी भाई से उलझ बैठा था वोह तो मैं पहुंच गया और तरकीब बन गई मगर नया इस्लामी भाई सख़्त बद ज़न हो चुका था ★ फुलां ज़िम्मेदार



फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरस्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे । (त-बरानी)

तो है मगर फअूअल नहीं दर अस्ल इस को रखना मजबूरी है फारिग करेंगे तो ग्रूप बनाएगा और तंग करेगा ★ फुलां के निगरान का जेहन हड़ा हूड़ी वाला है ।

“वक्त की बरबादी” के ग्यारह हुरूफ की निस्बत से मजलिस बराए इज्तिमाअ और मु-तवक्कअ 11 गीबतें

हफ्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ के लिये म-सलन किसी ने आप से कहा कि इस बार फुलां मुबल्लिग को बयान का मौकअ दे दिया जाए तो आप की तरफ से जवाब मिला : मा'ज़िरत ख्वाह हूं, उन को बयान नहीं दे सकूंगा । इतना जवाब काफी था मगर अब आगे जो कुछ कहा जाएगा वोह गुनाहों भरा है म-सलन कहा : इस की वजह येह है ★ येह लटका देता है ★ बहुत लेट आता है ★ इस के बयान में दम नहीं होता ★ इस का बयान ठन्डा होता है ★ लोग इस के बयान में उठ उठ कर चले जाते हैं ★ बयान की तय्यारी कर के नहीं आता ★ इस के तलफुज ग़लत हैं ★ बहुत लम्बी करता है ★ काफी चिकनी करता है ★ माइक नहीं छोड़ता ★ इस को बयान करना कहां आता है ! वगैरा वगैरा । अगर कोई पूछे कि उस को बयान क्यों नहीं देते तब भी जवाबन मुबल्लिग की पोलें खोलने की ज़रूरत नहीं और येह भी न कहिये कि “कुछ कहूंगा तो गीबत हो जाएगी” कि येह भी गीबत ही की एक सूरत है अगर आप ने उस का कोई मख्सूस ऐब ज़ाहिर नहीं किया मगर इस जुम्ले के ज़रीए येह ज़रूर इज़हार कर दिया कि “उस में कुछ ख़ामियां मौजूद हैं ।” सिर्फ़ शुरूअ वाला जुम्ला ही जो गीबत से पाक था वोह दोहरा दीजिये कि “मा'ज़िरत ख्वाह हूं, उन को बयान नहीं दे सकूंगा ।” मज़ीद कहिये कि अगर वोह मुबल्लिग खुद पूछेंगे तो मुम्किन सूरत में उन को वुजूहात अर्ज कर दूंगा । अब अगर वोह मुबल्लिग आ जाएं और उन में वाकई ख़ामियां हों तो तन्हाई में अहसन तरीक़े पर समझा दीजिये । इस तरह **गीबत** वगैरा की आफ़त से काफी हिफ़ाज़त रहेगी, म-दनी माहोल का तक्दुस भी बर करार रहेगा और आपस में महब्बतों के रिश्ते उस्तुवार रहेंगे । बस येह जेहन में बिठा लीजिये : न गीबत करूंगा न गीबत सुनूंगा । **ان شاء الله عزوجل**



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

सुनूं न फोहूश कलामी न गीबतो चुगली तेरी पसन्द की बातें फ़क़त सुना या रब
करें न तंग खयालाते बद कभी, कर दे शुक्रो फ़िक्र को पाकीज़गी अता या रब

सिनेमा घर के मालिक की तौबा : गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों पर अमल की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपनी ज़िन्दगी "म-दनी इन्आमात" के सांचे में ढालिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, और हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत कीजिये । आप की तरगीब के लिये एक म-दनी बहार पेश की जाती है चुनान्वे **बाबुल इस्लाम** सिन्ध के मशहूर शहर हैदरआबाद के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह बताया कि ग़ालिबन येह 1991 ई.के किसी हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ वाली रात की बात है, मेरी मुलाकात एक **सिनेमा घर के मालिक** से हुई जो कि शराबी और गुनाहों का आदी था । मैं ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उसे तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की दा'वत पेश की, कुछ पसो पेश के बा'द वोह मेरे हमराह चल पड़ा । इख़ितामी दुआ के दौरान **सिनेमा घर के मालिक** की हालत ग़ैर हो गई । हत्ता कि दुआ ख़त्म होने के बा'द भी उस का हिचकियों के साथ रोना बन्द न हुवा । बा'द में उस ने बताया कि मैं ने जब दुआ के लिये हाथ उठाए और आंखें बन्दी कीं तो ऐसा लगा जैसे दुआ की ब-र-कत से मेरे दिल की सख़्ती दूर हो रही है, मुझे अपने किये हुए गुनाह याद आने, उस का अन्जाम डराने और ख़ौफ़े खुदा عزّوجلّ में रुलाने लगा । इसी दौरान जिस वक़्त कि मेरी आंखें बन्द थीं मैं ने अपने आप को मदीनए मुनव्वरह **مَدِينَةُ الْمَدِينَةِ** में सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के रू बरू पाया, हर तरफ़ नूर फैला हुवा था और भीनी भीनी खुशबू से फ़ज़ा महक रही थी । मैं काफ़ी देर तक सब्ज़ गुम्बद के जल्वों से अपने दिल को मुनव्वर करता और रोता रहा । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली है ।



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़ाक)

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ वोह मेरे साथ पाबन्दी से इज्तिमाअ में आने लगे, पन्ज वक्ता नमाज़ भी शुरूअ कर दी। एक दिन जब मैं मुलाक़ात के लिये पहुंचा तो उन्होंने ने बताया कि मेरे बा'ज वोह दोस्त जिन्हों ने बदकारी के मुआ-मलात से आज तक मुझे नहीं रोका बल्कि मेरे साथ शराब व रबाब की महफ़िलों में हमेशा आगे आगे रहते थे, मेरी इज्तिमाअ में शिर्कत और नेकियों की तरफ़ रग़बत का सुन कर मेरे पास आ पहुंचे। उन में जो अक़ाइदे अहले सुन्नत से मुत्तफ़िक नहीं था वोह मुझे समझाते हुए कहने लगा : “तुम जिन के इज्तिमाअ में जाते हो येह लोग तो बद अक़ीदा हैं कि औलियाए किराम की नियाज़ दिलाते हैं, या रसूलल्लाह पुकारते हैं, इन के साथ मत जाया करो।” सिनेमा घर के मालिक का कहना है मैं ने उस से कहा कि मैं ने दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल सिर्फ़ सुन कर नहीं बल्कि देख कर अपनाया है, मैं ने तो दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की और वहां मुझे इस इस तरह मदीनए मुनव्वरह رَاحَتُهَا اللَّهُ شَرَفًاوُ تَعْظِيمًا की ज़ियारत हुई, अब तुम बताओ जिन आशिकाने रसूल के इज्तिमाआत में गुम्बदे खज़रा के जल्वे नज़र आते हों येह किस तरह ग़लत हो सकते हैं ? मेरा तो मश्वरा है कि तुम भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में शामिल हो जाओ। खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब तो कोई मेरे बच्चों के गलों पर छुरी फ़ैर दे तब भी मैं दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल नहीं छोड़ सकता।

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर

نَجْمٌ هُوَ وَأَوَّلُ نَجْمٍ هُوَ إِتْرَتِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इज्तिमाए ज़िक्र में गुनहगार भी बख़्शे जाते हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में मुआशरे के एक से एक बिगड़े हुए अपराद आते हैं और अपनी बिगड़ी बनाते हैं और बा'ज खुश नसीब तो हाथों हाथ रहमतों की बरसात



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमाआ दो सो बार दुखदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (कजुल उमाल)

के जल्वे भी देख लेते हैं, खैर जल्वे नज़र आना न आना अपने अपने मुक़द्दर की बात है । येह ज़ेहन में रहे कि किसी इज्तिमाअ वग़ैरा में सिर्फ़ अच्छा ख़्वाब नज़र आ जाना ही उस के हक़ पर होने की यक़ीनी दलील नहीं मगर **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** दा'वते इस्लामी अहले सुन्नत की सुन्नतों भरी तहरीक है और अहले सुन्नत अहले हक़ और सच्चे अशिक़ाने रसूल हैं, इन के अक़ाइद ऐन कुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ हैं । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** अशिक़ाने रसूल की सोहबत में ज़िक़े ख़ुदा **व मुस्तफ़ा** ﷺ करने की तो क्या बात है । दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 743 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "जन्नत में ले जाने वाले आ'माल" सफ़हा 418 ता 419 पर है : **अल्लाह** ﷻ के कुछ फ़िरिशते घूम फिर कर ज़िक़ की मजालिस तलाश करते हैं । जब वोह कोई ऐसी मजलिस देखते हैं जिस में **अल्लाह** ﷻ का ज़िक़ हो रहा हो तो उन लोगों के साथ जा कर बैठ जाते हैं और एक दूसरे को अपने परों से ढांप लेते हैं, यहां तक कि आस्मान तक का ख़ला पुर हो जाता है । जब वोह मजलिस मु-तफ़रिक् (या'नी मुन्तशिर) होती है तो फ़िरिशते आस्मान की तरफ़ परवाज़ कर जाते हैं । फिर **अल्लाह** ﷻ उन से पूछता है हालां कि वोह ज़ियादा जानने वाला है, तुम कहां से आए हो ? तो वोह अर्ज़ करते हैं : हम ज़मीन से तेरे बन्दों के पास से आ रहे हैं वोह तेरी पाकी और बड़ाई बयान कर रहे थे, तेरा कलिमा पढ़ते और तेरी ता'रीफ़ करते थे और तुझ से सुवाल करते थे । **रब** तअ़ाला फ़रमाता है : वोह क्या मांगते थे ? फ़िरिशते अर्ज़ करते हैं : तुझ से तेरी जन्नत मांग रहे थे । **अल्लाह** ﷻ फ़रमाता है : क्या उन्होंने मेरी जन्नत को देखा है ? फ़िरिशते अर्ज़ करते हैं : नहीं । **रब** तअ़ाला फ़रमाता है : अगर वोह उसे देख लेते तो क्या करते ? फिर फ़िरिशते अर्ज़ करते हैं : और वोह तेरी पनाह त़लब कर रहे थे । **अल्लाह** ﷻ फ़रमाता है : किस चीज़ से पनाह चाहते थे ? अर्ज़ करते हैं : ऐ **अल्लाह** ﷻ ! जहन्नम से । **रब** तअ़ाला फ़रमाता है : क्या उन्होंने जहन्नम को देखा है ? फ़िरिशते अर्ज़ करते हैं : नहीं । **अल्लाह** ﷻ फ़रमाता है : अगर वोह उसे देख ले ते तो क्या करते ? फिर फ़िरिशते अर्ज़ करते हैं : वोह तुझ से मग़ि़रत चाहते थे । **रब** तअ़ाला फ़रमाता है : मैं ने उन की मग़ि़रत फ़रमा दी और उन की मुराद उन्हें अता फ़रमा दी और जिस से वोह पनाह चाहते



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मारतबा सुब्ह और दस मारतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ा अत मिलेगी । (मजमउज़्जवाइद)

थे उन्हें उस से पनाह अता फ़रमा दी । वोह अर्ज करते हैं : या رَبِّ عَزَّوَجَلَّ ! उन में फुलां शख्स भी है जो बहुत गुनहगार है वोह वहां से गुज़र रहा था और उन के साथ बैठ गया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मैं ने उस को भी बख़्श दिया क्यूं कि येह ऐसी क़ौम है जिस का हम नशीन (या'नी हम सोहबत) भी महरूम नहीं रहता ।

(صَحِيحُ سُلَيْمٍ ص ١٤٤٤ حَدِيثُ ٢٦٨٩)

बरसता नहीं देख कर अब्रे रहमत

बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

“जहन्नम का खौलता हुवा पानी पीने और आग में जलने से बचें” के इक्तालीस हुरूफ़ की निस्बत से हारिसीन व ख़ादिमीन के बारे में की जाने वाली ग़ीबतों की 41 मिसालें

दा'वते इस्लामी के म-दनी मर्कज़ में और बा'ज ज़िम्मेदारान के पास हालात की नज़ाकत के पेशे नज़र हिफ़ाज़ती इन्तिज़ामात रखे गए हैं, मुसल्लह गार्ड के लिये “हारिसीन” और ग़ैर मुसल्लह के लिये “ख़ादिमीन” की इस्ति़लाह दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में बोली जाती है । मुसल्लह हारिसीन की अक्सरिय्यत का तअल्लुक़ ता दमे तहरीर मह-क-मए पोलीस से है, इस्लामी भाइयों को इन की ग़ीबतों से और खुद इन हारिसीन व ख़ादिमीन को आपसी ग़ीबतों से बचाने के मुक़द्दस ज़ब्बे के तहूत मु-तवक्क़अ ग़ीबत की 41 मिसालें पेश की जाती हैं : ★ ड्यूटी के दौरान ऊंघता है ★ ड्यूटी अच्छी नहीं करता ★ ड्यूटी के दौरान बातों में मसरूफ़ रहता है ★ ड्यूटी पर हमेशा ताख़ीर से आता है ★ छुट्टियां बहुत करता है ★ एजन्सी का मुख़ि़र लगता है ★ वफ़ादार नहीं लगता ★ हम्ला हुवा तो फ़िरार हो जाएगा ★ एलर्ट नहीं है ★ गन बराबर



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बदबख़्त हो गया । (इने सुनी)

पकड़ना नहीं आती ★ रस्मी चेकिंग करता है ★ जान पहचान वाले की चेकिंग नहीं करता ★ ठीला है ★ रिश्वत की चाट पड़ गई है ★ मा'मूली सी चीज़ भी जेब से नहीं ख़रीदता, मांग लेता है ★ इस को हलाल हराम की तमीज़ ही कहां है ★ दूसरे हारिसीन से बना कर नहीं रखता ★ मुन्शी के साथ तआवुन नहीं करता ★ मुन्शी के ख़िलाफ़ ग़लत प्रोपेगन्डा करता है ★ लगता है इस को मुन्शी बनना है ★ हिफ़ाज़ती उमूर की मजलिस की ख़ामियां निकालता रहता है ★ हिफ़ाज़ती उमूर वालों के नाक में दम कर दिया है ★ अपने आप को कुछ समझता है ★ हारिसीन से लड़ता रहता है ★ बहुत बे रहूम शख्स है ★ किसी को झाड़ देना ★ दिल दुखा देना इस के लिये कोई मस्अला ही नहीं ★ इतना बोलता हूं मगर नमाज़ नहीं पढ़ता ★ र-मज़ानुल मुबारक में रोज़े नहीं रखता ★ तरावीह नहीं पढ़ता ★ बहुत जलाली है ★ ख़र खोपड़ी है ★ मेरे से तो सीधे मुंह बात भी नहीं करता ★ अपने आप को पता नहीं क्या समझता है ★ मजलिस वालों के कान भरता है ★ अ़लाक़े में दादागीरी करता है ★ ख़ादिमीन पर ओर्डर चलाता है ★ मजलिसे हिफ़ाज़ती उमूर में एक भी बन्दा सहीह नहीं ★ निगराने मजलिस ने उस हारिस की बदली ग़लत करवाई है ★ नया वाला हारिस तो बिल्कुल एवई है ★ है जी-दार मगर थोड़ा अड़यल ।

“चुप रहो सलामत रहोगे” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से म-दनी चेनल के मु-तअल्लिक़ ग़ीबत की 15 मिसालें

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का हर दिल अज़ीज़ म-दनी चेनल सुन्तों की ख़ूब धूमें मचा रहा है और इसे ऐन शरीअत के मुताबिक़ चलाया जा रहा है । इस में नमाज़ें, इज्तिमाआत, और बा'ज़ दीगर सिल्सिले बराहे रास्त भी दिखाए जाते हैं, म-सलन रोज़ाना बराहे रास्त बा जमाअत नमाज़े तहज्जुद फिर रिक्कत अंगेज़ दुआ व मन्ज़ूम मुनाजात, अज़ान व नमाज़े फ़ज़्र, इस के बा'द म-दनी हल्का जिस में दर्से फ़ैज़ाने सुन्त, तीन आयाते कुरआनी की तिलावत मअ तर-ज-मए कन्जुल ईमान व तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, बा'दुहू श-ज-रए कादिरिय्या



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया । (इने सुनी)

र-जविय्या पढ़ा जाता है इस के बा'द बा जमाअत नमाजे इश्राक व चाश्त के नवाफिल दिखाए जाते हैं। सेंकड़ों इस्लामी भाई इस में शरीक होते हैं। मरदूद शैतान जो कि मुसल्मान को ऐन हालते नमाज में भी वस्वसों का शिकार बनाता है वोह भला घर घर जा कर इस्लाम का पैग़ाम आम करने वाले इस अछूते म-दनी चैनल पर नज़र आने वालों और नाज़िरीन (या'नी देखने वालों) को क्यूं छोड़ेगा ! लिहाज़ा इन्हें भी ख़ूब गीबतो पर उक्साता है चुनान्चे म-दनी चैनल के ज़िम्न में मु-तवक्कअ गीबत की 15 मिसालें पेश की जाती हैं : ★ अरे फुलां ! पहले तो आखिरी सफ़ में होता था और अब म-दनी चैनल पर आने के लिये जल्दी जल्दी पहली सफ़ में आ कर बैठ जाता है ★ फुलां पहले तो समझाने से भी जल्दी नहीं आता था और अब म-दनी चैनल की वजह से इज्तिमाअ में सब से आगे होता है ★ उस को देखो म-दनी चैनल की खातिर कैसा "टाइट इमामा" बांध कर बैठा है ★ वोह यूं तो चादर को हाथ भी नहीं लगाता मगर म-दनी चैनल की खातिर कैसा चादर ओढ़ कर बैठा है ★ उस को देखो म-दनी चैनल में नज़र आने के लिये ना'तों में कैसा झूमता है ★ वोह जो म-दनी चैनल में मुनाजात में रोता है ना ! मैं उस को जानता हूं, पक्का ढोंगी है ★ फुलां को तो इमामा शरीफ़ बांधना भी नहीं आता मगर म-दनी चैनल पर आने के लिये दूसरे से इमामा बंधवा कर ख़ूब सलीक़े से सफ़ेद चादर ओढ़ कर आगे आ कर बैठ जाता है ★ जब म-दनी चैनल पर बयान करना हो, चादर ओढ़ लेता है, आगे पीछे चादर न जाने कहां होती है ★ मजलिस के निगरान को फुलां के साथ न जाने क्या ख़ार है उसे मौक़अ ही नहीं देता ★ फुलां फुलां मुबल्लिग़ को आता जाता कुछ नहीं, देख कर बयानात करते हैं ★ मजलिस के मुबल्लिग़ ने बे सुरे ना'त ख़्वानों को इकठ्ठा कर रखा है ★ मजलिस के निगरान ने अनाड़ी केमेरा मेन रखे हुए हैं ★ इस ने फुलां "सिल्सिला" तो ख़ाली टाइम पास करने के लिये रखा हुवा है ★ इस से तो पहले वाला मुबल्लिग़ अच्छे अन्दाज़ में येह "सिल्सिला" कर रहा था, इसे तो ठीक से बोलना भी नहीं आता ★ म-दनी चैनल पर आने वाले फुलां फुलां रियाकार हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُؤْبِئُوا لِلَّهِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमउज़्ज़वाइद)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

गीबत के बारे में सुवाल जवाब और दीगर अहम मा'लूमत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल ड्यूब

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हकीकत निशान है : तुम्हारे दिनों में सब से अफ़ज़ल दिन जुमुआ है, इसी दिन हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह पैदा हुए, इसी में उन की रूहे मुबा-रका कब्ज़ की गई, इसी दिन सूर फूँका जाएगा और इसी दिन हलाकत तारी होगी लिहाज़ा इस दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ तक पहुंचाया जाता है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप के विसाल के बा'द दुरूदे पाक आप तक कैसे पहुंचाया जाएगा ? इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को खाना ज़मीन पर ह़राम फ़रमाया है।

(سُنَنِ ابوداؤُد ج ۱ ص ۳۹۱ حدیث ۱۰۴۷)

صَلُّوا عَلَى الْكَئِيبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّد

सुवाल : गीबत क्या है ?

जवाब : किसी के बारे में उस की ग़ैर मौजूदगी में ऐसी बात कहना कि अगर वोह सुन ले या उस को पहुंच जाए तो उसे ना गवार मा'लूम हो।



फ़रमाने मुस्तफ़ा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

सुवाल : अगर वोह बात उस में मौजूद हो तो ?

जवाब : जभी तो ग़ीबत है अगर मौजूद न हो फिर भी ऐसी बात उस की तरफ़ मन्सूब कर दी तब तो येह ग़ीबत से भी बड़ा गुनाह हो गया जिस को **बोहतान** (इल्ज़ाम, तोहमत) कहते हैं ।

सुवाल : चुग़ली किसे कहते हैं ?

जवाब : लोगों में फ़साद करवाने के लिये उन की बातें एक दूसरे तक पहुंचाना **चुग़ली** है ।

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي شاره‌ہے بخاری ہجرۃ اہللاما بدرہدین ۛنی (شرح مُسَلِم لِلنَّوَوِي ج ۲ ص ۱۱۲)
लिखते हैं कि जम्हूर इसी ता'रीफ़ के काइल हैं । (عُمْدَةُ الْقَارِي ج ۱ ص ۲۰۹)

सुवाल : किसी पर “ऐब खोलना” कब कहलाएगा ?

जवाब : किसी का ऐब ऐसे शख्स को बताना जिस को पहले से मा'लूम न हो ।

सुवाल : जो पहले ही से आगाह हो उस के आगे उसी ऐब का तज़्किरा करने में कोई हरज तो नहीं ?

जवाब : क्यूं हरज नहीं ! बिला इजाज़ते शर-ई तज़्किरा किया गया तो येह भी ग़ीबत में शुमार होगा ! येह थोड़े ही है कि जिस की एक बार किसी मुआ-मले में ग़ीबत कर ली बस अब ज़िन्दगी भर छुट्टी हो गई और आइन्दा के लिये उस बात में उस की ग़ीबत करना जाइज़ हो गया !

सुवाल : दो अफ़ाद ने आपस में किसी की ग़ीबत की अब उस ख़ामी का आपस में आइन्दा दोबारा तज़्किरा करें तो क्या वोह भी ग़ीबत है ?

जवाब : क्यूं नहीं ! अगर एक ही बुराई का दोनों आपस में हज़ार बार तज़्किरा करेंगे तो येह एक हज़ार ग़ीबतें होंगी ।



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

ग़ीबत के जाइज़ ना जाइज़ होने का कैसे पता चले ?

सुवाल : ग़ीबत से बचना सुनने के मुक़ाबले में आसान लगता है। क्यूं कि ग़ीबत की जाइज़ सूरतें भी हैं, पता कैसे चले कि सामने वाला जाइज़ ग़ीबत कर रहा है या ना जाइज़ ?

जवाब : अक्सरियत का हाल येह है कि सिर्फ़ बोलने की खातिर बोलती है और अग़लब या'नी ग़ालिब तरीन मुआ-मलात ऐसे हैं कि जिन में सामने वाला महज़ बुराई बयान करने के लिये ही ग़ीबत कर रहा होता है। फिर भी जब तक यकीनी कैफ़ियत न हो उस वक़्त तक फ़ैसला न सुना दिया जाए, अगर कभी दौराने गुफ़्त-गू ग़ीबत की इब्तिदा हो और आप की बात सुनी जाती हो तो मु-तकल्लिम (या'नी बोलने वाले) से नरमी के साथ पूछ लीजिये कि मा'ज़िरत के साथ अर्ज़ है कि जो बात आप करने लगे हैं वोह ग़ीबत की तरफ़ जा रही है अगर आप के नज़्दीक इस ग़ीबत करने का कोई सहीह मक़सद है तो बता दीजिये ! इस सुवाल के बा'द إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ बात वाज़ेह हो जाएगी।

क्या ग़ीबत सुनते ही सामने वाले को गुनहगार समझ लिया जाए

सुवाल : क्या किसी को ग़ीबत करता देख कर फ़ौरन उस को गुनहगार समझ लिया जाए कि बस अब तो येह फ़ासिक़ हो गया।

जवाब : चूंकि ग़ीबत के जवाज़ की भी सूरतें मौजूद हैं लिहाज़ा जब तक ग़ीबत की वाज़ेह सूरत मु-तअय्यन न हो जाए उस वक़्त तक मु-तकल्लिम (या'नी कलाम करने वाले) को गुनहगार नहीं ठहरा सकते। जिस की बात सुनी जाती हो वोह ऐसे मौक़अ पर अहसन अन्दाज़ में उसी से उस की जाने वाली ग़ीबत का सबब दरयाफ़्त कर ले, إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ बात वाज़ेह हो जाएगी, अगर जाइज़ ना जाइज़ की सूरत तै न हो पा रही हो तो यूं कह दीया जाए कि चूंकि आप की बात के अन्दर गुनाह भरी ग़ीबत में जा पड़ने का ख़दशा है लिहाज़ा इस से एह्तियातन तौबा कर लेते हैं और फिर तौबा कर लीजिये, बात बदल दीजिये।



फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़ाक)

जाइज़ समझ कर सुन ले फिर पता चले कि येह ना जाइज़ ग़ीबत थी तो.....?

सुवाल : किसी ने ग़ीबत शुरू की और सुनने वाला समझा कि येह जाइज़ सूरत है लिहाज़ा वोह तवज्जोह से सुनता रहा मगर बा'द को पता चला कि वोह तो यूं ही “भड़ास” निकाल रहा था, या'नी वोह गुनाह भरी ग़ीबत थी क्या सुनने वाला भी गुनहगार हो गया ?

जवाब : अगर क़राइन व सियाक़े गुफ़्त-गू या'नी बात चीत के अन्दाज़ वग़ैरा से “जाइज़ ग़ीबत” होना समझ में आ रहा था इस लिये सुन ली थी तब तो सुनने वाला गुनहगार नहीं और अगर क़राइन से गुनाह भरी ग़ीबत होना ज़ाहिर था मगर सुनता रहा तो गुनहगार है, और अगर जाइज़ ना जाइज़ का फ़ैसला नहीं कर पा रहा था तब भी सुनना मम्नूअ़ कि आज कल बात चीत में की जाने वाली ग़ीबतों का राजेह या'नी ग़ालिब पहलू गुनाहों भरा ही होता है। तो या तो येह सूरत बनेगी कि कुछ ग़ीबतें जाइज़ वाली होंगी और कुछ ना जाइज़ वाली तो नतीजा येही निकलेगा कि गुनहगार बहर हाल हो जाएंगे और या “शक” की सूरत बनेगी या'नी या जाइज़ है या ना जाइज़ है यूं दोनों तरफ़ बराबर बराबर ज़ेहन जा रहा होगा, बहर हाल जहां जाइज़ व ना जाइज़ का फ़ैसला न हो पा रहा हो वहां भी ग़ीबत सुनना मम्नूअ़ ही रहेगा कि यहां कम से कम द-र-जए मुश-तबिहात (या'नी मश्कूक चीज़ों) का बनता है और हदीसे पाक में इस से भी बचने का हुक्म फ़रमाया गया है कि जिस ने अपने आप को मुश-तबिहात (या'नी शुब्हे वाली चीज़ों) से बचा लिया उस ने अपनी इज़्ज़त और दीन को बचा लिया।

अवाम जाइज़ व ना जाइज़ ग़ीबत में कैसे तमीज़ करें ?

सुवाल : अक्सर अवाम के पास इतना इल्म ही नहीं होता कि वोह “जाइज़ व ना जाइज़” ग़ीबत में तमीज़ कर सकें, ऐसे में क्या किया जाए ?

जवाब : आसान और मोहतात त़रीक़ा समझाने की मैं ने कोशिश की है और मैं येही कर सकता हूं, ग़ीबत के सारे अहक़ाम घोल कर पिला नहीं सकता, दुन्या का हर फ़न सीखने से आता है लोग जब कोशिश करते हैं तो मुश्किल से मुश्किल फ़न भी सीख ही लेते हैं और इन को सीखने के लिये मुल्क ब मुल्क का सफ़र भी करना पड़े तो करते हैं तो वोह ग़ीबत



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

जिस के ज़रूरी अहकाम सीखना फ़र्ज है उस के लिये भी ख़ूब कोशिश करनी होगी, अगर फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 का बाब “गीबत की तबाह कारियां” बार बार गौर से पढ़ेंगे तो **عَزَّوَجَلَّ** काफ़ी हद तक इस “फ़र्ज इल्म” को भी हासिल कर लेंगे और **अल्लाह** ने चाहा तो फिर “जाइज़ व ना जाइज़” ग़ीबत में तमीज़ करना भी आ जाएगा।

घर में ग़ीबत से किस तरह बचे ?

सुवाल : आज कल घरों का माहोल कौन नहीं जानता, बहुत कम घर ऐसे होंगे जहां ग़ीबतें न होती हों और हर इस्लामी भाई की बात का अपने घर में इतना वज़न भी नहीं होता कि वोह घर वालों को ग़ीबतों से रोक सके, ऐसी सूरत में क्या किया जाए ?

जवाब : वाक़ेई हालात ना गुफ़्तह बिह हैं, बिलफ़र्ज दूसरों को बचाना मुम्किन नहीं तब भी खुद को तो बचाने की तरकीब की जा सकती है, घर में ग़ीबतें हो रही हैं इस लिये मजबूरी समझ कर दिल चस्पी के साथ खुद भी शरीक हो गया तो गुनहगार होगा। लिहाज़ा जो रोकने पर क़ादिर हो उस के लिये ज़रूरी है कि रोके और जो कुदरत नहीं रखता, वोह ऐसे मौक़अ पर वहां से हट जाए, अगर कभी ऐसा फंस गया कि हट भी नहीं सकता तो बात बदलने की कोशिश करे, इस की भी तरकीब मुम्किन नहीं और भी कोई सूरत ख़लासी की नज़र नहीं आती तो दिल में बुरा जाने और ग़ीबतों की तरफ़ से तवज्जोह हटाने की भरपूर कोशिश करे। घर में म-दनी माहोल बनाने के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द 2 के बाब “गीबत की तबाह कारियां” के दर्स का सिल्सिला **عَزَّوَجَلَّ** बेहद मुफ़ीद रहेगा। जब घर वाले ग़ीबत की तबाह कारियों से बा ख़बर होंगे तो **عَزَّوَجَلَّ** बचने का ज़ेहन बनेगा और इस तरह एक नहीं हज़ार फ़ितनों से **عَزَّوَجَلَّ** महफूज़ हो कर घर अमन का गहवारा बन जाएगा।



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमूअुन्नुवाइद)

दा'वते इस्लामी को जाहिलों का टोला कहना कैसा ?

सुवाल : एक शख्स ने मुझ से कहा कि दा'वते इस्लामी में मत जाओ येह जाहिलों का टोला है ! उस शख्स ने येह कह कर ग़ीबत की या नहीं ?

जवाब : ग़ीबत मु-तअय्यन व मा'लूम शख्स या अशख़ास में मौजूद ऐब या बुराई को पीठ पीछे बयान करने को कहते हैं। लिहाज़ा मज़कूर जुम्ला ग़ीबत नहीं कहलाएगा क्यूं कि इस में मुअय्यन फ़र्द या अफ़राद का तज़्किरा नहीं है। हां अगर काइल की निय्यत दा'वते इस्लामी के हर फ़र्द को जाहिल कहने की है तो अलबत्ता ग़ीबत हुई और एक फ़र्द की नहीं उन तमाम मुसल्मानों की हुई जो जाहिल हैं और इस में शामिल हैं। चूंकि हर हर फ़र्द को जाहिल कहा गया है और फ़िल हकीकत दा'वते इस्लामी जाहिलों का टोला नहीं है कि इस में हज़ारों उ-लमाए किराम كُرْهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसों की कसरत फ़रमाए। आमीन) भी शामिल हैं तो अगर उस ने येह जानते हुए भी हर हर फ़र्द को जाहिल कहने की निय्यत से दा'वते इस्लामी को जाहिलों का टोला कहा है तो उन उ-लमाए किराम की तौहीन भी हुई और उन पर जहालत की तोहमत भी। शख़से मज़कूर का येह कहना कि दा'वते इस्लामी में मत जाओ अगर बिला किसी मस्लहते शर-ई है तो येह नेकी से रोकना है और रोकने वाला इस हुक्मे कुरआनी : مَّا لِلْخَافِرِ مَعَدٍّ اَتَيْتُمْ (پ ۲۹ القلم: ۱۲) (तर-ज-मए कन्जुल ईमान : भलाई से बड़ा रोकने वाला हद से बढ़ने वाला गुनहगार) में दाख़िल है।

बहुत सारे मुसल्मानों की इकट्ठी ईज़ा

सुवाल : दा'वते इस्लामी को जाहिलों का टोला कहने वाले की निय्यत अगर मा'लूम न हो कि आया उस ने एक एक फ़र्द को जाहिल कहा है या क्या, और अगर उस पर ग़ीबत का हुक्म नहीं लगेगा तो क्या इस तरह का जुम्ला कहना जाइज़ है ?

जवाब : ग़ीबत की एक मख़सूस ता'रीफ़ है लिहाज़ा जो कलिमा या इशारा वगैरा उस ता'रीफ़ के तहत दाख़िल हो वोही ग़ीबत है मगर जो बात ग़ीबत नहीं है उस का बे गुबार होना ज़रूरी भी नहीं। मज़कूर जुम्ले में ईज़ाए मुस्लिम का पहलू नुमायां है मगर इस की बा'ज सूरतें



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बदबख हो गया । (इन्ने सुनी)

हैं म-सलन (1) अगर दा'वते इस्लामी के दो मुखालिफ़ीन या दा'वते इस्लामी से गैर मु-तअल्लिका दो अफ़राद आपस में बैठे येह जुम्ले कहते हैं तो यहां ईजा रसानी का गुनाह नहीं होगा लेकिन इस में बा अमल मुसल्मानों के एक बहुत बड़े तब्के के बारे में झूट या तोहमत या तहकीर व इस्तिहज़ा (या'नी उन को हकीर समझने और उन का मज़ाक़ उड़ाने) का पहलू भी मौजूद है और येह सब उमूर हराम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं लिहाज़ा येह जुम्ला या इस से मिलते जुलते जुम्ले कहने वाले और सुन कर ताईद करने वाले अपनी आख़िरत की ज़रूर ज़रूर ज़रूर फ़िक्र करें (2) कोई दा'वते इस्लामी वाला या दा'वते इस्लामी का मुहिब (या'नी अहले महब्बत) मौजूद है और उस के सामने कहा कि दा'वते इस्लामी जाहिलों का टोला है तो येह उस दा'वते इस्लामी वाले या अहले महब्बत की दिल आज़ारी है और (3) अगर दस इस्लामी भाई या सो इस्लामी भाई बैठे हुए थे और उन से येह जुम्ला कहा और सब को इत्तिलाअ हुई तो सब की ईजा रसानी और दिल आज़ारी का गुनाह हुवा और बेशक मुसल्मान की तहकीर (या'नी उस को हकीर जानना) या उस का मज़ाक़ उड़ाना और दिल दुखाना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। बहरो बर के बादशाह, दो आलम के शहन्शाह, साहिबे मज्दो जाह, उम्मत के खैर ख़्वाह, आमिना के महरो माह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **الْمَغْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِي ج ٢ ص ٣٨٦ حديث ٣٦٠٧** या'नी जिस ने (बिला वज्हे शर-ई) किसी मुसल्मान को ईजा दी उस ने मुझे ईजा दी और जिस ने मुझे ईजा दी उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ईजा दी।

इज्तिमाई दिल आज़ारियों के 12 जुम्लों की मिसालें : बयान कर्दा सूरतों की रोशनी में एक या बहुत सारे मुसल्मानों के लिये ईजा का बाइस बन सकने वाले जुम्लों की 12 मिसालें मुला-हज़ा हों : ★ पोलीस वाले रिश्वत ख़ोर होते हैं ★ पोलीस वाले अपने बाप को भी नहीं बख़्शते ★ फुलां कबीले वालों का पेशा ही चोरियां करना है ★ फुलां ज़ात के लोग सूदख़ोर होते हैं ★ फुलां ख़ानदान के अफ़राद नीच (या'नी कमीने) होते हैं ★ फुलां बिरादरी



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मारतबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुक़दे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज़्जवाइद)

वाले बुज़दिल होते हैं ★ म-दनी चैनल बस ऐसा ही है ★ फुलां मद्रसे या फुलां इदारे के मदारिस का मे'यारे ता'लीम सहीह नहीं ★ फुलां क़बीले के लोग झगड़ालू होते हैं ★ इन्कम टेक्स के ओफ़ीसर्ज़ रिश्वत के बिगैर क़ाबू नहीं आते ★ फुलां कौम वालों से तअल्लुकात मत बढ़ाना येह फ़राडी होते हैं ★ मारवाड़ (हिन्द) के बाशिन्दे कन्जूस होते हैं जभी तो येह मुहावरा बना : “फुलां कन्जूस मारवाड़ी है।”

सुवाल करने वाले के भूलने पर हंसना

सुवाल : म-दनी मुज़ा-करे या मद्रसे के द-रजे में एक इस्लामी भाई सुवाल पूछने के लिये खड़े हुए मगर घबरा गए और सुवाल का कुछ हिस्सा भूल गए इस पर बा'जों को हंसी आने लगी मगर उन्होंने ने एक दम खुद पर क़ाबू पा लिया, बा'ज बे इख़्तियार हंस पड़े, बा'ज हंस हंस कर लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहे थे, और साइल के पीछे बैठने वालों में से एक ने मुस्करा कर दूसरे की तरफ़ देखा और साइल की तरफ़ कुछ इस तरह आंखों से इशारा किया कि देखो तो कैसा परेशान हो रहा है ! इस पर दूसरे ने भी मुस्करा कर इसी तरह का इशारा किया। इन सब के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : जिन्होंने ने हंसी रोकी वोह बहुत अच्छे रहे, जो बे इख़्तियार हंस पड़े वोह भी बे कुसूर हैं, क़स्दन हंसने और लुत्फ़ अन्दोज़ होने वाले जान बूझ कर साइल की दिल आज़ारी का बाइस बने और पीछे से आंखों ही आंखों में तन्ज़िया इशारे करने वालों ने ग़ीबत का इरतिकाब किया। जान बूझ कर दिल आज़ारी का बाइस बनने वाले तौबा के साथ साथ साइल से मुआफ़ भी करवाएं, ग़ीबत करने वाले तौबा करें और अगर तौबा से पहले ही साइल को पता चल गया हो तो उस से मुआफ़ भी करवाएं।

इस किताब के बारे में वस्वसा

सुवाल : ब कसरत लोग गुनाहों और बुराइयों से इस ख़ौफ़ की वजह से बच जाते हैं कि देखने वाला क्या कहेगा या येह किसी और को जा कर बता देगा, या लोगों में येह बात फैल



फ़रमाने मुत्ताफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुहुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मजमूज़ुव्वाइद)

जाएगी तो मेरी बे इज़्ज़ती होगी । **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द 2 का बाब “**ग़ीबत की तबाह कारियां**” आम हो जाने में कहीं ऐसा न हो कि छुप कर गुनाह करने वालों का दिल खुल जाए कि मेरे गुनाह पर मुत्तलअ होने वाला अब तो किसी से जा कर मेरी **ग़ीबत** करेगा ही नहीं और यूं वोह उस गुनाह को मुस्तक़िलन इख़्तियार न कर लें या अपनी इस्लाह की कोशिश में सुस्ती न करें या सिर से कोशिश ही तर्क न कर दें, क्या इस तरह गुनाहों में दलेरी बढ़ नहीं जाएगी ? म-सलन अगर कोई अपनी ज़ौजा को बिग़ैर इजाज़ते शर-ई मारने पीटने का आदी हो और वोह इस्लामी बहन **ग़ीबत** के डर से किसी से तज़्किरा न करे तो क्या येह शोहर “ज़ालिम” से “अज़्लम” (या’नी बहुत ज़ियादा जुल्म करने वाला) नहीं बन जाएगा ? या कोई इस्लामी भाई जमाअत वाजिब होने के बा वुजूद घर में नमाज़ पढ़ लेता हो और उसे येह पता हो कि मेरा भाई किसी और के सामने मेरा ऐब नहीं खोलेगा तो क्या वोह घर पर नमाज़ पढ़ने ही को अपनी आदते सानिया नहीं बना लेगा ?

जवाब : अब्बल तो येह बात ज़ेहन में रखिये कि “**ग़ीबत की मजम्मत**” दा’वते इस्लामी वालों की ईजाद नहीं, इस की तो पिछली शरीअतों में भी मुमा-न-अत थी नीज़ कुरआने करीम व अह़ादीसे मुबा-रका में भी इस की मुख़ा-लफ़त ब शिद्दत मौजूद है, **ग़ीबत** के ज़रूरी अहक़ाम जानना हर अक़िल बालिग़ मुसल्मान पर **फ़र्जे ऐन** है, जो नहीं जानता वोह गुनहगार और नारे दोज़ख़ का हक़दार है । **ग़ीबत** के मसाइल में काफ़ी तफ़सील है । मुत्तलक़न या’नी किसी भी सूरत में किसी का ऐब खोल ही नहीं सकते ऐसा नहीं, **ग़ीबत** की जाइज़ सू-रतें भी मौजूद हैं जिन का पीछे बयान गुज़र चुका । कहीं ऐब और ऐबी की नौइय्यत का ए’तिबार है तो कहीं ऐब खोलने वाले की निय्यत पर हुक्मे शर-ई का इन्हिसार है । अब म-सलन शोहर वाक़ेई जुल्म करता है और बीवी इस से नजात पाने की निय्यत से सिर्फ़ ऐसे फ़र्द से उस जुल्म का तज़्किरा करती है जो उसे जुल्म से छुड़ा



फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरस्ते उस के लिये इस्तिगफ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

सकता है तो येह “जाइज़ ग़ीबत” है । इसी तरह बिला उज़्र बिगैर जमाअत नमाज़ पढ़ने वाले का भाई अगर उसे समझाने पर कादिर नहीं और किसी कुदरत रखने वाले से इस निय्यत से ज़िक्र करता है कि वोह इस को समझाए या इस निय्यत से किसी पर इज़हार करता है ताकि भाई शरमिन्दा हो कर तर्के जमाअत के गुनाह से बाज़ आ जाए तो येह भी “जाइज़ ग़ीबत” बल्कि सवाब का हक़दार बनाने वाली ग़ीबत है ।

बद गुमानी मत कीजिये : बाकी रही येह बात कि ग़ीबत न करने वाले की वजह से बा’ज लोग गुनाहों पर दलेर हो जाएंगे तो येह शैतानी वस्वसा ही है और इस की वजह से शर-ई अहक़ाम से मुसल्मानों को जाहिल नहीं रखा जा सकता बल्कि मुअय्यन मुसल्मानों के बारे में क़राइने वाजेहा (या’नी साफ़ साफ़ अलामात) न होने के बा वुजूद अगर येह ज़ेहन बना लिया कि फुलां फुलां अब गुनाहों पर दलेर हो जाएगा तो येह बद गुमानी है जो कि हराम है ।

फ़तावा र-ज़विय्या में एक वस्वासी की गोशमाली : मेरे आका आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने’मत, अज़ीमुल ब-र-कत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ू रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहि्ये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाहे आलीशान में एक ऐसे शख्स के बारे में सुवाल हुवा जो कि कहता था कि मैं तो आज कल की दा’वतों में नहीं जाता क्यूं कि अक्सर दा’वतें दिखावे और रियाकारी की होती हैं और लोग रिज़्क या’नी खाने की भी काफ़ी बे हुरमती करते हैं । आ’ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی ने इस सुवाल का जो कुछ जवाब इर्शाद फ़रमाया उस का लुब्बे लुबाब है : क़बूले दा’वत सुन्नत है । किसी मुअय्यन या’नी मख़सूस मुसल्मान के लिये बिगैर क़राइने वाजेहा के (या’नी साफ़ साफ़ अलामतों के बिगैर) येह समझ लेना कि इस ने नामवरी और



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

रिया के लिये येह दा'वत की है ऐसी **बद गुमानी हरामे क़र्ई** है । अगर कहीं हुबूबे त़आम (या'नी खाने के दानों और ग़िज़ा के अज्ज़ा) की बे अ-दबी होती भी है तो इस शख्स को चाहिये कि बे अ-दबी करने वालों को समझाए अगर वोह लोग न मानें तो वबाल उन्हीं लोगों पर है । हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम सफ़ार عليه رَحْمَةُ اللهِ الْغَنَاءُ फ़रमाते हैं : “मैं आज कल दा'वत में जाने की कोई निय्यत नहीं कर पाता सिवाए इस के कि **नमक दानी** रोटी पर से उठाऊंगा ।” आ'ला हज़रत “फ़तावा हिन्दिय्या” के हवाले से मज़ीद फ़रमाते हैं : रोटी और चपाती पर पियालों का रखना दुरुस्त (या'नी मुनासिब) नहीं....., । मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर येह शख्स **نَسِيَ عَنِ الْفُكْرِ** या'नी बुराई से मन्अ करने की निय्यत से जाएगा तो सवाब पाएगा । (तफ़सील के लिये देखिये फ़तावा र-जविय्या, जि. 21, स. 672 ता 674)

दा 'वत में जाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिए : रोटी पर से नमक दानी उठाने की निय्यत से जाने वाले बुजुर्ग के अमल से येह सीखने को मिला कि दा'वत में जाने के लिये इस तरह की अच्छी अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं कि वहां अगर किसी को खाना जाएअ करता या कोई काम ख़िलाफ़े सुन्नत करता पाऊंगा तो नेकी की दा'वत देने का सवाब कमाऊंगा और येह भी मा'लूम हुवा कि रोटी पर **नमक दानी**, चाट मसा-लहे की शीशी, सालन या रायते का पियाला या अचार चटनी की पियाली रखनी मुनासिब नहीं । दा'वत में जाने न जाने की बा'ज़ सूरतें भी हैं म-सलन मा'लूम है कि वहां गाने बाजे होंगे और इस के जाने से न येह बन्द होंगे न ही येह उन को रोक सकता है तो अब दा'वत में जाने की शरीअत में इजाज़त नहीं । (तफ़सीलात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “**बहारे शरीअत**” हिस्सा 16 सफ़हा 31 ता 38 पर “वलीमा और ज़ियाफ़त का बयान” पढ़ लीजिये या कम अज़ कम सफ़हा 35 से मस्अला नम्बर 1,2,3 मुला-हज़ा फ़रमा लीजिये)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (अब्दुर्रज़ाक)

सिर्फ़ लोगों के डर से गुनाह छोड़ने का नुक्सान : लोगों से डर कर गुनाह छोड़ना भी अगर्चे मुफ़ीद है कि गुनाह के इरतिकाब से बच जाएगा ताहम **अल्लाह** ﷻ से डर कर गुनाह से कनारा कशी का ज़ेहन बनाना चाहिये । दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ 480 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, “**मुका-श-फ़तुल कुलूब**” के सफ़हा 267 पर है एक बुजुर्ग **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : इन्सान जितना तंगदस्ती से डरता है अगर उतना जहन्नम से डरता तो दोनों से नजात पा लेता, और जितनी इसे दौलत से **महब्बत** है अगर जन्नत से उतनी महब्बत होती तो दोनों को पा लेता, और जितना ज़ाहिर में लोगों से डरता है अगर उतना बातिन में **अल्लाह** तआला से डरता तो दोनों जहानों की सआदतें पा लेता । (मुका-श-फ़तुल कुलूब, स. 129) अगर खौफ़े खुदा **عَزَّوَجَلَّ** के बजाए सिर्फ़ लोगों के डर से ही गुनाह छोड़ने का ज़ब्बा रहा तो जो जो गुनाह लोगों में बाइसे शर्म नहीं होंगे उन पर बेबाकी और जुरअत बढ़ती चली जाएगी और आज कल इस के नज़ारे आम हैं म-सलन बे नमाज़ी होना अब मुसल्मानों में **مَعَادُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** बाइसे शर्म व आर नहीं रहा तो हालत येह हो चुकी है कि ग़ालिबन दुन्या के 95 फ़ीसद मुसल्मान नमाज़ नहीं पढ़ते और जो पढ़ते हैं उन में शायद 99 फ़ीसद को दुरुस्त नमाज़ पढ़नी नहीं आती और सीखने की ज़हमत भी कम ही करते हैं !! अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस ! कि नमाज़ों के अवकात में मुसल्मानों के दुन्यवी कारोबार धूम धड़क्के से जारी रहते हैं । नमाज़ के मुकाबले में **र-मज़ानुल मुबारक** में “रोज़ा” न रखना मुसल्मानों में ब ज़ाहिर अब भी क़दरे मा'यूब समझा जाता है लिहाज़ा जो रोज़ा नहीं रखते उन में के अक्सर लोग इस का इज़हार नहीं होने देते और दिन के वक़्त छुप कर खाना खाते हैं । काश ! हर अमल **अल्लाह** ﷻ के लिये करने का म-दनी ज़ेहन बन जाए । मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **هَدَايَةِ بَخِيْشِ شَرِيْفِ** में फ़रमाते हैं :



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (कन्जुल उम्माल)

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह वोह ख़बरदार है क्या होना है
अरे ओ मुज़रिमे बे परवा देख सर पे तलवार है क्या होना है
काम ज़िन्दा¹ के किये और हमें शौक़े गुलज़ार है क्या होना है
इस कड़ी धूप को क्यूंकर झेलें शो 'लाज़न नार है क्या होना है
उन को रहम आए तो आए वरना वोह कड़ी मार है क्या होना है
मुंह दिखाने का नहीं और सहर² आम दरबार है क्या होना है

ले वोह हाकिम के सिपाही आए

सुब्ह इज़हार है क्या होना है

ग़ीबत से बचने की तरबियत किस तरह हासिल हो ?

सुवाल : “ग़ीबत की तबाह कारियां” पढ़ कर येह एहसास हुवा कि वाक़ेई मुआशरे की अक्सरियत ग़ीबत की लपेट में है, तक़रीबन आवे का आवा ही बिगड़ा हुवा है, उमूमन तवज्जोह भी नहीं होती और कई ग़ीबतें अपनी नुहसतें लुटा चुकी होती हैं। ऐसे होशरुबा हालात में मुआशरे के अन्दर इन्सान कैसे गुज़ारा करे ? घर, दुकान, बाज़ार, महल्ला, दोस्त अहबाब की बैठकें जिधर जाएं अक्सर ग़ीबतें ही ग़ीबतें ! ग़ीबत से बचने की तरबियत कैसे हासिल हो ? मुआ-मला बहुत ही मुश्किल मा'लूम हो रहा है !

जवाब : देखिये ! दस्तूर येही है कि हर काम सीखने से आता है अगर किसी काम के बारे में पहले ही से ज़ेहन बना लिया जाए कि येह बहुत मुश्किल है ! तो फिर नफ़िसयाती तौर पर इस का असर येह होता है कि वोह वाक़ेई मुश्किल बन जाता है। अगर ज़बान पर

لَا يَنْفَعُ

1. कैदखाना

2. सुब्ह



फरमाने मुल्फा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा मुक़ और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मबमउर्रज्जवाइद)

कुफ़ले मदीना लगा रहे, अच्छी बुरी सोहबत की तमीज़ आ जाए, तन्हाई में दिल लगाने की मश्क़ कर ली जाए तो एक गीबत ही क्या मज़ीद बे शुमार गुनाहों से भी जान छूट सकती है। किसी चीज़ को सीखने के लिये उस की धुन होनी ज़रूरी है, म-सलन ड्राइविंग ही को ले लीजिये, वाक़ेई इस का सीखना इन्तिहाई दुश्वार अम्र है येह तसव्वुर ही कितना ख़ौफ़नाक है कि जान हथेली पर ले कर गाड़ी चलानी होगी ज़रा भी चूकेंगे तो हाथ पैर तुड़वा बैठेंगे या जान ही चली जाएगी ! ड्राइविंग की तरबिय्यत लेने वाला पहले पहल तो स्टेरिंग पर हाथ रखते ही कांप जाता होगा। क्यूं कि उसे येह बताया जाता है कि दो पाउं से एक साथ क्लच, ब्रेक और एक्सीलेटर (clutch, break, Accelerator) को संभालना है, फिर दो हाथों से स्टेरिंग के साथ साथ गीअर (gear) को भी हस्बे ज़रूरत बदलते रहना है, साथ ही गाड़ी चलाते हुए इन दो आंखों से आगे, पीछे, दाएं और बाएं भी देखना है, तरबिय्यत लेने वाले को इस बात का भी ख़याल रखना है कि न मुझ से किसी को नुक़सान पहुंचे और न ही मुझे कोई नुक़सान हो। आख़िरे कार तरबिय्यत लेते लेते वोह गाड़ी चलाना सीख ही जाता है। सारी गाड़ियों में रेलगाड़ी चलाना शायद सब से मुश्किल काम है, येही वजह है कि तय्यारा उड़ाने वाला (PILOT) आप को नौ जवान मिल जाएगा मगर रेलगाड़ी का ड्राइवर सिर्फ़ उधेड़ उम्र ही का मिलेगा क्यूं कि इस के लिये इतनी तवील मुद्त तक मश्क़ करनी पड़ती है कि जवानी ही रुख़्सत हो जाती है ! इस के बा वुजूद रेलगाड़ी के ड्राइवरों की भी एक ता'दाद दुन्या में मौजूद है।

हमारी अक्सरिय्यत को बात करना ही नहीं आती : बहर हाल हमें बात करने की भी तरबिय्यत लेनी होगी और इस की एहतियातें भी सीखनी होंगी, जी हां अन्दाज़े गुफ़्त-गू को यक्सर बदल कर इस पर अज़िज़ी व नरमी का पानी चढ़ाना और हुस्ने अख़्लाक़ की मुलम्मअ़ कारी और ख़ूब पोलिश करनी होगी। यक़ीन मानिये आज हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत को शरीअत व सुन्नत के मुताबिक़ बातचीत करना ही नहीं आती, मा'मूली सा ख़िलाफ़े मिज़ाज मुआ-मला होते ही



फरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बदबख्त हो गया । (इन्हे सुनी)

अच्छ ख़ासा मज़हबी वज़अ क़तअू का आदमी भी एक दम ज़ारिहाना अन्दाज़ पर उतर आता है ! एक ग़ीबत ही नहीं, तोहमत, चुगली, बद गुमानी, झूटा मुबा-लगा, दिल आज़ारी और ईज़ाए मुस्लिम के तअल्लुक़ से बहुत सारी चीज़ें आज कल की जाने वाली अक्सर गुप्त-गू का हिस्सा होती हैं । लिहाज़ा दिल बरदाश्ता हुए बिगैर अव्वलन इस बात को तस्लीम कर लीजिये कि हमें दुरुस्त बोलना ही नहीं आता मगर जिस तरह पैहम कोशिश के बा'द इन्सान एक अच्छा ड्राइवर बन जाता है, हम भी मुसल्लसल जिद्दो जहद करेंगे तो **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** शरीअत व सुन्नत के मुताबिक़ बात करना सीख ही जाएंगे ।

गीबत के ज़रूरी अहक़ाम सीखना फ़र्ज़ है : गाड़ी चलाने के लिये बदन के अक्सर आ'ज़ा म-सलन दिमाग़, आंखें, कान, हाथ, पाठं वगैरा एक ही वक़्त में सरगमैं अमल (ACTIVE) रखे जा सकते हैं तो आख़िर ग़ीबत से बचने के लिये हम चोकन्ने क्यूं नहीं रह सकते ! गाड़ी चलाने में ख़ता की सूरत में माली व जानी नुक़सानात का अन्देशा है लेकिन ग़ीबत का इलाज वगैरा न सीखने में जहन्नम में जा पड़ने का ख़दशा है । याद रखिये ! जो ड्राइविंग नहीं जानता वोह मा'मूली सा भी गुनहगार नहीं जब कि ग़ीबत जो कि मोहलिकात (या'नी हलाक करने वाली चीज़ों) में से है, उस के ज़रूरी अहक़ाम जानना हर मुसल्मान अक़िल बालिग़ पर फ़र्ज़ ऐन है और ग़ीबत के बारे में ज़रूरी मसाइल न जानने वाला गुनहगार और जहन्नम का हक़दार है ।

गीबत करूंगा न सुनूंगा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! “गीबत” से बचने की तदबीर करते रहिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़रूर करम होगा और इस से बचना भी आसान हो जाएगा । किसी ज़िम्मेदार इस्लामी भाई का बयान है कि एक दिन मेरे पास जुदा जुदा वक़्त में दो इस्लामी भाई कुछ इस अन्दाज़ से आए कि मैं समझ गया कि अब ग़ीबत की नुहूसत में फंसे ही फंसे, मैं ने अपने सीने पर सजा हुवा वोह कार्ड दोनों को पढ़ा दिया जिस पर जली हुरूफ़ में लिखा था : **गीबत करूंगा न सुनूंगा** (**اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**) इस की ब-र-कत येह ज़ाहिर हुई कि एक तो चुप साध गया जब



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमूज़्ज़वाइद)

कि दूसरे ने ख़ूब संभल कर गुफ़्त-गू की और वोह भी फ़क़त दो मिनट। (कार्ड दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब किया जा सकता है)

क्या शिकायत सुन ही नहीं सकते ? : देखिये ! बिल्कुल ऐसा भी नहीं है कि हर हर बात गुनाहों भरी ग़ीबत ही हो, तन्ज़ीमी मसाइल के हल के लिये शिकायात भी सुनी जा सकती हैं और इस का हल भी पेश किया जा सकता है मगर कुछ एहतियाती तदाबीर इख़्तियार की जाएं म-सलन जो ग़ीबत के इब्तिला का ख़ौफ़ महसूस करे वोह आने वाले को इब्तिदाअन मु-तज़क्करा ज़िम्मेदार की तरह कार्ड पढ़ा दे या ज़बानी ही कह दे : **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ غَوَّحَلْ** **ग़ीबत करूंगा न सुनूंगा**। “ग़ीबत की ता'रीफ़” बता दे, **ग़ीबत** पर अज़ाब की एक आध वईद सुना दे और दर-ख़्वास्त करे कि सिर्फ़ हस्बे ज़रूरत ही शिकायत कीजिये नीज़ ऐसे मौक़अ पर इस बात का ख़ास ख़याल रखा जाए कि एक भी ग़ैर ज़रूरी फ़र्द गुफ़्त-गू में शरीक न होने पाए। दा'वते इस्लामी की **मर्कज़ी मजलिसे शूरा** की तरफ़ से इनायत कर्दा म-दनी मश्वरों में पढ़ कर सुनाने वाले 19 **म-दनी फूलों** में की येह तहरीर हो सके तो हिफ़ज़ कर लीजिये। **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ غَوَّحَلْ** **ग़ीबत** वग़ैरा गुनाहों से बचने में बहुत मदद मिलेगी। वोह तहरीर येह है : आइये हाथों हाथ कुछ अच्छी अच्छी निय्यतें भी किये लेते हैं :

★ **ग़ीबत करूंगा न सुनूंगा** ★ चुगली नहीं खाऊंगा ★ किसी ज़िन्दा या (मुर्दा) मुसल्मान के अन्दर मौजूद ख़ामी या बुराई को बिला इजाज़ते शर-ई पीठ पीछे बयान कर के **ग़ीबत**, मुंह पर बयान कर के **दिल आज़ारी** और जिस ने बुराई न की हो इस के बा वुजूद उस की तरफ़ बुराई मन्सूब कर के **तोहमत** का गुनाह नहीं करूंगा। **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : “**ग़ीबत** करने वालों, **चुगुल** ख़ोरों और पाकबाज़ लोगों के ऐब तलाश करने वालों को **अल्लाह** غَوَّحَلْ (क़ियामत के दिन) **कुत्तों** की शक़ल में उठाएगा”। (التَّوْبَةُ وَالتَّوْبَةُ ج ٣ ص ٣٢٥ حديث ١٠)

चुगली की ता'रीफ़ : किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को



फ़रमाने मुस्तफ़ि صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बदबज़ा हो गया । (इब्ने सुनी)

पहुंचाना चुगली है । (عُمْدَةُ الْقَارِی ج ۲ ص ۵۹۴ تحت الحديث ۲۱۶) ★ किसी के बारे में दिल में बुरा यकीन कर लेने से बचूंगा कि येह बद गुमानी है । आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ नक्ल फ़रमाते हैं : ख़बीस गुमान (या'नी बद गुमानी) ख़बीस दिल से निकलता है । (फ़तावा र-ज़विय्या जि. 20, स. 231) ★ झूठी मुबा-लगा आराई, खुशामद, खुद पसन्दी (या'नी अपनी राय को ही दुरुस्त समझने) से बचूंगा ।

काश ! हमारा येह ज़ेह्न बन जाए कि जूँ ही किसी मुसल्मान का "मन्फ़ी तज़्किरा" निकले फ़ौरन ख़बरदार हो जाएं और ग़ौर करें, अगर वोह ग़ीबत हो तो फ़ौरन इस से बाज़ आ जाएं कोई और येह गुफ़्त-गू करने लगा हो तो उस को मुनासिब तरीक़े पर रोक दें, अगर वोह बाज़ न आए तो वहां से उठ जाएं, या बात बदल दें । अगर उसे रोकना या अपना वहां से हटना मुम्किन न हो तो उस गुफ़्त-गू में दिल चस्पी न लें बल्कि दिल में बुरा जानें ।

अख़लाक हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा

महबूब के सदक़े में मुझे नेक बना दे

तन्ज़ीमी मसाइल का हल और ग़ीबत : शैतान ग़ीबतें करवा कर दीन के म-दनी काम का भी बहुत नुक़सान करवाता है । लिहाज़ा अगर आप किसी इस्लामी भाई में बुराई पाएं तो बिला इजाज़ते शर-ई दूसरों पर इज़हार कर के ग़ीबत का कबीरा गुनाह करने के बजाए बराहे रास्त उसी को अकेले में नरमी के साथ समझाइये अगर नाकामी हो तो ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाइये और उस के लिये दुआ कीजिये । अगर दीनी नुक़सान का अन्देशा हो तो अपने ज़ैली मुशा-वरत के निगरान को तन्हाई में बता कर या लिख कर उस का तआवुन हासिल कीजिये जब कि वोह मस्अला हल कर सकता हो । वरना शरीअत के दाएरे में रहते हुए मज़ीद आगे म-सलन हल्का मुशा-वरत के निगरान से रुजूअ कीजिये, यहां भी बात न बने तो ब तदरीज (या'नी तरतीब वार) ऊपर वाले ज़िम्मेदार से तरकीब बनाइये । याद रखिये ! अगर शर-ई मस्लहत के बिग़ैर किसी एक से भी ख़्वाह



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

वोह कितना ही बड़ा तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार हो उस इस्लामी भाई की बुराई बयान की तो आप गुनहगार व अज़ाबे नार के हक़दार हो जाएंगे। अगर आप ने बात अ़ाम कर दी और ग़ीबतों, तोहमतों, बद गुमानियों, ऐब दरियों, और दिल आज़ारियों के गुनाहों का दरवाज़ा खुल गया, अ़लाके में तन्ज़ीमी मसाइल खड़े हो गए और सुन्नतों भरे म-दनी कामों को भी नुक़सान पहुंचा तो येह सब मुआ-मलात आप की आख़िरत के लिये सख़्त नुक़सान देह साबित हो सकते हैं।

फ़ितने फैलाने की वर्इदें : जो बद नसीब लोग मुसल्मानों में बुरे चर्चे जगाते और फ़ितने उठाते हैं उन को डर जाना चाहिये कि पारह 18 सू-रतुन्नूर आयत नम्बर 19 में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इब्रत निशान है :

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चर्चा फैले उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है दुनिया और आख़िरत में।

बा'ज़ लोग बहुत ही झगड़ालू तबीअत के मालिक होते हैं, ख़्वाह म ख़्वाह ग़ीबतें करते, चुग़लियां खाते, तन्कीदें करते, बाल की खाल उतारते, बात बात पर फ़सादात बरपा करते और मुसल्मानों के लिये ईज़ा का बाइस बनते रहते हैं, ऐसे लोगों को डर जाना चाहिये कि पारह 30 सू-रतुल बुरूज की दसवीं¹⁰ आयते मुबा-रका में रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादि इब्रत बुन्याद है :

إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝ तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक जिन्होंने ने ईज़ा दी मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों को फिर तौबा न की उन के लिये जहन्नम का अज़ाब है और उन के लिये आग का अज़ाब।



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

फ़ितना जगाने वाले पर ला 'नत : हदीसे पाक में है : “फ़ितना सोया हुआ होता है उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला 'नत जो इस को बेदार करे ।” (الْجَامِعُ الصَّغِيرُ لِلْسُّيُوطِيِّ ص ۳۷۰ حدیث ۵۹۷۵)

अगर मीज़ां पे पेशी हो गई तो हाए ! बरबादी !! गुनाहों के सिवा क्या मेरे नामे में भला निकले !
करम से उस घड़ी सरकार पर्दा आप रख लेना सरे महशर मेरे ऐबों का जिस दम तज़िकरा निकले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

تُؤْنُوْا لِيَّ اللّٰہِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

इन्फ़रादी कोशिश के ग़लत अन्दाज़ का फ़र्जी मुका-लमा : इन्फ़रादी कोशिश करने में सुवालात से परहेज़ करना बहुत मुनासिब है क्यूं कि बा'ज सुवालात सामने वाले को मरुव्वत में झूट बुलवा सकते हैं, “इन्फ़रादी कोशिश” के ग़लत अन्दाज़ को फ़र्जी मुका-लमे की सूरत में पेश करने की सअूय करता हूं : बाबुल मदीना के किसी मुबल्लिग़ और ज़ैद की मुलाकात हुई, सलाम दुआ के बा'द मुबल्लिग़ ने इन्फ़रादी कोशिश करते हुए सुवाल किया : हफ़्तावार इज्तिमाअ में आते हैं या नहीं ?

ज़ैद ने शिर्कत से महरूमी के बा वुजूद येह सोचते हुए कि बाबुल मदीना में होने वाले हज़ारों के इज्तिमाअ में मेरे आने न आने का इस “मुबल्लिग़” को पता चलने से रहा लिहाज़ा मरुव्वत में कह दिया : जी हां ।

मुबल्लिग़ ने अपने जो'म (या'नी ख़याल) में काम पक्का करने के लिये पूछा : क्या पाबन्दी से आते हैं ?

ज़ैद जो कि एक बार झूट बोल चुका था उस से इन्कार न बन पड़ा इस लिये कह दिया : क्यूं नहीं ।



फरमाने मुस्तफा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े। (हाकिम)

मुबल्लिग : अच्छा जल्दी आ जाते हैं या देर से ?

जैद जो कि पहली बार झूट बोल कर फंस चुका था और दूसरी बार भी झूट बोल दिया था यूं दिल भी झूट के हवाले से खुलने लगा था लिहाजा बोल उठा : मैं तो जल्दी जल्दी आ कर बैठ जाता हूं।

मुबल्लिग : مَا شَاءَ اللَّهُ! अच्छा येह तो बताइये सारी रात रुकते हैं या नहीं ? तहज्जुद के लिये उठते हैं या नहीं ? वहीं बा जमाअत नमाजे फ़ज्र अदा करते हैं या नहीं ? फिर म-दनी हल्के में शिर्कत करते हैं या नहीं ? इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल और इख़ितामी सलातो सलाम पढ़ कर ही घर जाते हैं ना ?

जैद ने मुरुव्वत में : हां हां, क्यूं नहीं, जी, बेशक कहते हुए हर सुवाल की तोसीक़ कर दी और जान छुड़ाने कि लिये जूं ही पल्टा कि **मुबल्लिग** ने कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा : अच्छा येह तो बताते जाइये ! इस साल तीन रोज़ा इज्तिमाअ में मुल्तान शरीफ़ भी आए थे ना ?

जैद जो कि बिल्कुल नया इस्लामी भाई था इस ने सोचा कि अगर “ना” कहूंगा तो येह **मुबल्लिग** नाराज़ हो जाएगा और लेक्चर सुनाएगा, लाखों के इज्तिमाअ में किस को पता कि कौन आया था और कौन नहीं लिहाजा यहां भी झूट का सहारा लेते हुए उस ने कह दिया : आया था।

मुबल्लिग : पहले दिन आए थे या आखिरी दिन ?

जैद : पहले ही दिन से आ गया था।

मुबल्लिग : अच्छा येह तो बताइये कि अकेले आए थे या दोस्तों को भी साथ लाए थे ?

जैद : हम चार दोस्त मिल कर आए थे।

मुबल्लिग : भाई ! वहां से आप चारों ने हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी किया या नहीं ?



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

जैद : जी हां, क्यों नहीं। अच्छा मैं चलता हूँ.....

मुबल्लिग : अरे भाई ज़रा ठहरिये ! येह तो बताइये कि म-दनी चेनल देखते हैं या नहीं ?

जैद ने मुरुव्वत में यहां भी झूट मूट “हां” कह कर जान छुड़ाई। (मगर अभी जान कहां छूटी थी मुबल्लिग ने मजीद एक और सुवाल जड़ दिया)

मुबल्लिग : अच्छा येह तो बताइये दूसरों को म-दनी चेनल देखने की दा'वत भी देते हैं या नहीं ?

जैद : (जो कि 13 अदद झूट बोल चुका था, यहां भी उस ने झूट बोल दिया) क्यों नहीं मैं ने तो सारे खानदान वालों में म-दनी चेनल की तश्हीर कर दी है। अच्छा मुझे इजाज़त दीजिये।

देखा आप ने ! **मुबल्लिग** अगर्चे मज़कूरा सुवालात कर के गुनहगार न हुवा ताहम इस के इन्फ़रादी कोशिश के ग़लत अन्दाज़ के सबब जैद झूट के 15 अदद गुनाहों में फंसा। बेशक जैद ही गुनहगार हुवा कि यहां कोई इक्वाह की सूरत न थी या'नी सच बोलने में जान चली जाने या शदीद पिटाई होने या किसी उज़्व के बेकार कर दिये जाने वगैरा का अन्देशा नहीं था और न ही झूट की इजाज़त का कोई दूसरा सबब पाया जा रहा था, मुरुव्वत में झूट बोले थे जिन की शरीअत में इजाज़त न थी।

इन्फ़रादी कोशिश म-दनी कामों की जान है : इन्फ़रादी कोशिश म-दनी कामों की जान है, दा'वते इस्लामी का तक़ीबन 99 % म-दनी काम इन्फ़रादी कोशिश से ही हो रहा है। इन्फ़रादी कोशिश की रूह मिलन सारी है, इन्फ़रादी कोशिश वाले कि लिये मुख़ातब (या'नी जिस से बात कर रहा है उस) की नफ़िसयात परख्ना बेहद ज़रूरी है। ग़फ़लत व बे एहतियाती का दौर है आज कल अक्सर बिला तकल्लुफ़ झूट बोला जाने लगा है इस लिये सख़्त एहतियात की हाज़त है, हम जब कि मुसल्मानों को नेक बनाने के मुस्तहब काम की कोशिश में लगे हैं तो आख़िर येह



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह उसे के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उद्द पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज्जाक)

कहां की समझदारी है कि किसी को नेक बनाने के लिये उस को गुनाहों में धकेलने वाले अन्दाज़ इख़्तियार किये जाएं हमारी तो येह कुदून हो कि हर मुसलमान को गुनाहों से बचाया जाए लिहाज़ा इन्फ़रादी कोशिश हो या म-दनी काफ़िला या इज्तिमाअ के सुन्नतों भरे हल्के हों या दीन दुन्या कोई सा मुआ-मला कहीं भी किसी एक फ़र्द से बराहे रास्त इसी तरह के सुवालात न किये जाएं, जिस की वजह से उस के झूट में मुब्तला होने का ख़तरा पैदा हो अलबत्ता म-दनी मश्वरे जिन में ज़िम्मेदारान से कारकदर्गी ली जाती है उन में ज़रूरतन सुवालात करने में हरज नहीं। इसी तरह मदारिस में तरबियत के लिये असातिज़ा त-लबा से सुवालात करते हैं इस में भी कोई मुज़ा-यका नहीं।

आप नमाज़ पढ़ते हैं या नहीं ? : बा'ज नादान इस्लामी भाई इन्फ़रादी कोशिश करते हुए येह तक सुवाल कर देते हैं : भाई नमाज़ पढ़ते हैं या नहीं ? नमाज़ी होने की सूरत में बा'ज अवकात येह सुवाल उस को ना गवार गुज़रता है कि क्या सिर्फ़ येह “मौलाना साहिब” ही नमाज़ पढ़ते हैं ! और अगर बे नमाज़ी हुवा तो इन्कार कर देता है और इस तरह वोह तर्के नमाज़ के गुनाह के साथ साथ गुनाह के इज़हार के गुनाह में भी फंस जाता है, जी हां बिला मस्ल-हते शर-ई गुनाह का इज़हार भी गुनाह है। म-सलन बिला इजाज़ते शर-ई येह कहना गुनाह है कि मैं नमाज़ नहीं पढ़ता, मैं तो बे नमाज़ी हूं या था, मैं र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े नहीं रखता इतने रोज़े नहीं रखे। मैं फ़ज्र की नमाज़ नहीं पढ़ता, मैं फ़िल्में डिरामे देखता हूं, गाने बाजे सुनता हूं, बद निगाही से नहीं बचता, मैं ग़ीबतों, चुग़लियों वग़ैरा गुनाहों में मुब्तला हूं या था कहा मैं चोर, डाकू, शराबी, जूआरी हूं या था वग़ैरा वग़ैरा। अगर कोई दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में आ कर इस्लाह पज़ीर हुवा और उस ने इस निय्यत से अपने साबिका गुनाहों का इज़हार किया ताकि लोग गुनाहों से ताइब हो और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की तरफ़ माइल हो इस में हरज नहीं। वोह लोग यकीनन गुनहगार होते हैं जो कि बिला इस्लाहे निय्यत ख़्वाह म ख़्वाह अपना रो'ब डालने या लोगों को हैरत में डालने या उन की तवज्जोह और हमदर्दी हासिल करने के लिये जराइम का इज़हार करते रहते



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह ﷻ उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (त-बरानी)

हैं कि मैं तो पहले डान्सर था, दहशत गर्दी करता था, मैं ने लोगों पर छुरियां चलाई हैं, लोगों को खौफ़जदा करने के लिये ख़ूब फ़ाएरिंग करता था, इतने इतने क़त्ल किये हैं, कातिल हूँ, डकैतियों में माहिर था, जूआ का अड्डा चलाता था वगैरा। नीज़ बिला इजाज़ते शर-ई किसी अक़िल बालिग़ मुसल्मान से येह सुवाल करना ही ग़लत है कि आप नमाज़ पढ़ते हैं या नहीं ? आप फ़ज़्र के लिये उठते हैं या नहीं ? वगैरा। क्यूं कि अगर इस सुवाल से सामने वाले के तर्के नमाज़ की मा'लूमात हासिल करना मक़सूद है तो येह गुनाह की टोह (या'नी तलाश) में लगना है और कुरआने पाक में इस से साफ़ साफ़ मन्अ किया गया है चुनान्वे पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत नम्बर 12 में इर्शाद होता है : **وَلَا تَجَسَّوْا** (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐब न ढूंढो) और अगर गुनाह की मा'लूमात का तजस्सुस मक़सूद नहीं है तब भी येह सुवाल सामने वाले के लिये इज़्हारे गुनाह का सबब हो सकता है। बहर हाल "इन्फ़िरादी कोशिश" में सुवालात के बजाए कोई फ़ज़ीलत सुना दीजिये और नमाज़ की तरगीब इस अन्दाज़ में दिलाइये कि वोह नमाज़ी हो तब भी उस को बुरा न लगे और बे नमाज़ी हो तब भी बोल न पड़े कि मैं बे नमाज़ी हूँ, नीज़ उस के अलाफ़े की उस मस्जिद में नमाज़ की दर-ख़्वास्त कीजिये जहां दा'वते इस्लामी का म-दनी काम हो रहा हो।

सुवालात के बजाए तरगीबात से काम लीजिये : इज्तिमाअ और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र वगैरा के लिये इन्फ़िरादी कोशिश में सख़्त ज़रूरत के बिगैर सुवालात कर के किसी को शरमिन्दा करने, मुरुव्वतन झूट बोल देने या गुनाह का इज़्हार कर बैठने के ख़तरात में डालने के बजाए तरगीबी अन्दाज़ इख़्तियार कीजिये और इज्तिमाअ व म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कतें और फ़ज़ीलतें बयान कीजिये। अगर सामने वाला "सिर्फ़ हं" कहे तो उस से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** भी कहलवा लीजिये। और मुम्किना सूरत में येह भी कह दीजिये कि हमें मा'ना पर नज़र रखते हुए **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कहने की आदत डालनी चाहिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** के मा'ना हैं "अल्लाह ने चाहा तो" और वाकेई अल्लाह के चाहे बिगैर हम कुछ भी नहीं कर सकते। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तारीख़ ले लीजिये, नाम व पता, फ़ोन नम्बर वगैरा अपने पास महफूज़ कर लीजिये। और उस



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (अबू या'ला)

वक्त तक राबिता करते रहिये, जब तक सफ़र मुकम्मल कर लेने की सआदत हासिल न कर ले । और बा'द में भी उस से मरबूत (या'नी राबिते में) रहिये यहां तक कि वोह म-दनी माहोल में रच बस कर दूसरों को म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनाने वाला न बन जाए ।

वा'दा करने के अल्फ़ाज़ : जब भी किसी से इज्तिमाअ में शिकत या म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र वगैरा का वा'दा लें तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ (और जो मा'ना न जानता हो उस से “अल्लाह ने चाहा तो”) ज़रूर कहलवा लिया करें, कि इस तरह वा'दा ख़िलाफ़ी के गुनाह से बचत रहेगी । क्यूं कि अगर दिल में वा'दा पूरा करने की निय्यत न होने के बा वुजूद अगर उस ने जान छुड़ाने के लिये म-सलन कह दिया : मैं वा'दा करता हूं फुलां दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा” तो वोह वा'दा ख़िलाफ़ी के गुनाह में पड़ जाएगा । हां अगर उस ने लफ़ज़ “वा'दा” नहीं बोला बल्कि म-सलन इस तरह के अल्फ़ाज़ कहे : “मैं फुलां दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा” तो ज़रूरी नहीं कि येह वा'दा ही हो महूज़ इत्तिलाअ भी हो सकती है । इत्तिलाअ का मतलब होता है “किसी को किसी काम के करने या न करने की ख़बर देना ।” इत्तिलाअ देते वक्त निय्यत का बहर हाल ए'तिबार है, म-सलन ख़बर देने की निय्यत से नहीं सिर्फ़ जान छुड़ाने के लिये कह दिया कि इस जुमा'रात को इज्तिमाअ में आऊंगा या फुलां दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा मगर दिल में निय्यत येही हो कि इज्तिमाअ में नहीं जाऊंगा, उस दिन सफ़र नहीं करूंगा तो येह अगर्चे वा'दा ख़िलाफ़ी न हुई मगर झूट हुआ । वा'दा येह है कि किसी से बा काइदा वा'दे के तौर पर तै किया कि “फुलां काम करूंगा या फुलां काम नहीं करूंगा” अगर लफ़ज़ “वा'दा” न कहा मगर अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ के ज़रीए अपनी बात को मुअक्कद किया या'नी उस बात की ताकीद ज़ाहिर की तब भी “वा'दा” है म-सलन “म-दनी क़ाफ़िले” में सफ़र करूंगा के साथ “वा'दा करता हूं” कहा, या येह कहने के बजाए कहा : बिल्कुल पक्की बात कह रहा हूं या कहा : यकीन मानिये, या कहा : बिल्कुल तै है कि, या कहा : नहीं नहीं आप मुत्मइन रहिये कि, या कहा : बस अब तै हो गया कि...वगैरा । इस की मिसाल यूं दूं जैसा कि “मंगनी” कि येह वा'दा है अगर्चे इस में “वा'दे” का लफ़ज़ नहीं बोला जाता मगर बा काइदा लड़की वालों से तै किया जाता है और यहां “तै करना” ही वा'दा है ।



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (कन्जुल उम्माल)

“वा’दा नहीं इरादा कर लीजिये” कहलवाना कैसा ? : बा’ज लोग येह जुम्ला बोलते हैं : “चलिये वा’दा नहीं करते तो इरादा ही कर लीजिये” हो सकता है कि इस तरह इरादा या निय्यत करवाना भी बहुत सों को गुनाहों में मुब्तला कर देता हो । जी हां, दिल में इरादा (या’नी निय्यत) न होने के बा वुजूद म-सलन किसी ने कह दिया कि “मैं इरादा (या निय्यत) करता हूं 12 माह (या 30 दिन या तीन दिन) के म-दनी काफ़िले में सफ़र करूंगा ।” तो येह सरीह (या’नी खुला) झूट है । लिहाज़ा जब भी किसी से इरादा करवाएं साथ में اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ भी कहलवा लिया करें तो अगर दिल में इरादा न भी हुवा अगला गुनाह से बच जाएगा ।

“कोशिश करूंगा” कहलवाना : “कोशिश करूंगा” कहने में भी गुनाह में पड़ने का ख़तरा मौजूद है या’नी दिल में निय्यत न होने के बा वुजूद जान छुड़ाने के लिये कह दिया “कोशिश करूंगा”, तो येह भी झूट है लिहाज़ा यूं कहलवाइये : “मैं اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ कोशिश करूंगा या अल्लाह ने चाहा तो कोशिश करूंगा ।” येह जुम्ला, “कोशिश करूंगा” हमारे यहां बहुत ही आम है कहने वाले को पहले अपनी निय्यत पर गौर कर लेना चाहिये । अगर “कोशिश करूंगा” कहने के साथ में “اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ” कहने की आदत पड़ गई तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ की आफ़ियत ही आफ़ियत है । اِنْ شَاءَ اللّٰهُ कहते वक़्त इस के मा’ना पर भी नज़र रखी जाए, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ के मा’ना हैं : “अल्लाह ने चाहा तो” अक्सर लोग इस का तलफ़ुज़ ग़लत अदा करते हैं, सहीह अदाएगी की ख़ूब मशक़ कीजिये : اِنْ شَاءَ اللّٰهُ

कह कर भी बात को निभाइये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मिन कुल्ले वुजूह (या’नी हर हाल में) खुद भी मोहतात जुम्ले बोलने की कोशिश फ़रमाइये और दूसरों से भी मोहतात जुम्ले कहलवाइये । इन्फ़िरादी कोशिश के दौरान ख़्वाह किसी से वा’दा लें, इरादा करवाएं या कोशिश करूंगा कहलवाएं साथ में اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ कहलवाना न भूलें, इसी तरह आप भी अपने



फरमाने मुस्तफा : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे। (त-बरानी)

लिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** कहने की आदत बनाइये। मगर इस तरह के जुम्लों को भी निभाना ही मुनासिब होता है वरना अ़वाम बद ज़न होते और बसा अवकात ग़ीबतों वगैरा पर उतर आते हैं कि फुलां ने हमारे साथ वा 'दा ख़िलाफ़ी की वगैरा।

बद गुमानी मत कीजिये : देखिये ! यहां आप ने खुद को बद गुमानियों से बचाना और हुस्ने ज़न निभाना है या 'नी क़राइने वाज़ेहा के बिगैर किसी के बारे में येह ज़ेहन नहीं बनाना कि फुलां ने ग़लत वा 'दा कर के या कोशिश करूंगा या इरादा करता हूं कह कर जान छुड़ा ली, आप उस को सच्चा ही तसव्वुर कीजिये।

हां में सर हिला देना : किसी को आइन्दा के लिये कुछ करने या इज्तिमाअ वगैरा में आने का कहा जाए तो उमूमन जान छुड़ाने कि लिये इस्बात (या 'नी हां) में सर हिला देते हैं मगर दिल में तै होता है कि येह जो कुछ कह रहा है मैं इस के मुताबिक़ अमल नहीं करूंगा। येह भी बा 'ज़ सूरतों में झूट और बा 'ज़ सूरतों में वा 'दा ख़िलाफ़ी है। ऐसों की रहनुमाई और उम्मत की भलाई की अच्छी अच्छी निय्यतों से चन्द रिवायात व म-दनी हिदायात मुला-हज़ा फ़रमा लीजिये।

اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ बे इन्तिहा फ़ाएदा होगा।

पारह 15 सूरए बनी इस्राईल आयत नम्बर 34 में इशादे रब्बुल इबाद **عَزَّوَجَلَّ** है :

اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक अ़हद से सुवाल होना है।

वा 'दा ख़िलाफ़ी मुनाफ़िक़ की निशानियों में से है : अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने इब्रत निशान है : मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : जब बात करे झूट कहे, जब वा 'दा करे ख़िलाफ़ करे और जब उस के पास अमानत रखी जाए ख़ियानत करे।

(صحيح بخارى ج ١ ص ٢٤ حديث ٢٣)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (त-बरानी)

वा 'दा ख़िलाफ़ी की वईदात पर मब्नी चार रिवायात : दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 207 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "जहन्नम के ख़तरात" सफ़हा 113 ता 114 से तीन रिवायात मुला-हज़ा फ़रमाइये : ﴿1﴾ जो मुसल्मान अहद शिकनी और वा 'दा ख़िलाफ़ी करे उस पर अल्लाह और फ़िरिशतों और तमाम इन्सानों की ला 'नत है और उस का न कोई फ़र्ज क़बूल होगा न नफ़ल (بخاری ج ۲ ص ۳۷۰ حدیث ۲۱۷۹) ﴿2﴾ हर अहद शिकनी करने वाले की सुरीन (या 'नी बदन का वोह हिस्सा जिस के बल इन्सान बैठता है उस) के पास क़ियामत में उस की अहद शिकनी का एक झन्डा होगा । ﴿3﴾ लोग उस वक़्त तक हलाक न होंगे जब तक कि वोह अपने लोगों से अहद शिकनी न करेंगे । (سَنَنِ ابوداؤد ج ۴ ص ۱۶۶ حدیث ۴۳۴۷)

झूटा वा 'दा करना हराम है : मेरे आका आ 'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 25 सफ़हा 69 पर लिखते हैं "अश्बाह वन्नज़ाइर" में है : خُلِفَ الْوَعْدِ حَرَامٌ या 'नी वा 'दा झूटा करना हराम है ।

(فताوا ر-ज़विय्या، الاشباه والنظائر ص ۲۸۸)

वा 'दा ख़िलाफ़ी किसे कहते हैं ? : हुज़ूरे पुर नूर सय्यिदुल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "वा 'दा ख़िलाफ़ी येह नहीं कि आदमी वा 'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की भी हो बल्कि वा 'दा ख़िलाफ़ी येह है कि आदमी वा 'दा करे और उस की निय्यत उसे पूरा करने की न हो ।" (الجامع لاخلاق الراوى للخطيب البغدادى ج ۲ ص ۶۰ رقم ۱۱۷۹) एक और हदीसे पाक में है कि जब कोई शख्स अपने भाई से वा 'दा करे और उस की निय्यत पूरा करने की हो फिर पूरा न कर सके, वा 'दा पर न आ सके तो उस पर गुनाह नहीं । (سَنَنِ ابوداؤد ج ۴ ص ۳۸۸ حدیث ۴۹۹۵)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुर्रज़ाक)

वा'दा पूरा करने की निय्यत न हो मगर इत्तिफ़ाक़न पूरा हो जाए तो.....:

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَلْقَانِ फ़रमाते हैं : हदीस का मतलब यह है कि अगर वा'दा करने वाला पूरा करने का इरादा रखता हो मगर किसी उज़्र या मजबूरी की वजह से पूरा न कर सके तो वोह गुनाहगार नहीं, यूँ ही अगर किसी की निय्यत वा'दा ख़िलाफ़ी की हो मगर इत्तिफ़ाक़न पूरा कर दे तो गुनहगार है उस बद निय्यती की वजह से। हर वा'दे में निय्यत का बड़ा दख़ल है। (मिरआत, जि. 6, स. 492)

शर-ई क़बाहत हो तो वा'दा पूरा न करे : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” हिस्सा 16 सफ़हा 295 पर सदरुशशरीअह हज़रते मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيِّ लिखते हैं : वा'दा किया मगर उस को पूरा करने में कोई शर-ई क़बाहत (या'नी शर-ई बुराई) थी इस वजह से पूरा नहीं किया तो उस को वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं कहा जाएगा और वा'दा ख़िलाफ़ी का जो गुनाह है इस सूरत में नहीं होगा अगर वा'दा करते वक़्त उस ने इस्तिस्ना न किया हो कि यहां शरीअत की तरफ़ से इस्तिस्ना मौजूद है, इस को ज़बान से कहने की ज़रूरत नहीं म-सलन वा'दा किया था कि “मैं फुलां जगह पर आऊंगा और वहां बैठ कर तुम्हारा इन्तिज़ार करूंगा।” मगर जब वहां गया तो देखता है कि नाच रंग और शराब नोशी वगैरा में लोग मसरूफ़ हैं, (लिहाज़ा) वहां से चला आया तो येह वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं है, या उस का इन्तिज़ार करने का वा'दा किया और इन्तिज़ार कर रहा था कि नमाज़ का वक़्त आ गया येह चला आया (तो येह) वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं हुवा। (बहारे शरीअत)

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली : ग़ीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुन्दे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे । (कब्जुल उम्मा)

वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी काफिलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफर कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आखिरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमात के मुताबिक अमल करते हुए रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये । आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक अज़ीमुश्शान म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्वे तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी की "मर्कज़ी मजलिसे शूरा" के रुक्न मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक अत्तारी अल म-दनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی के बारे में मेरा हुस्ने ज़न है कि वोह दा'वते इस्लामी के मुख़्लिस मुबल्लिग़ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले बुजुर्ग थे और गोया इस हदीसे पाक के मिस्दाक़ थे : **كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ** : "दुनिया में इस तरह रहो कि गोया तुम मुसाफ़िर हो ।" (صَحِيحُ بُخَارِي ج ٤ ص ٢٢٣ حَدِيثُ ٦٤١٦) 18 मुहर्रमुल हराम 1427 हि. ब मुताबिक 17-2-2006 बरोज़ जुमुआ नमाज़े जुमुआ की अदाएगी के बा'द अपनी क़ियाम गाह वाक़ेअ (गुलशने इक़बाल, बाबुल मदीना कराची) में अचानक ह-र-कते क़ल्ब बन्द होने के सबब ब उग्र तक्रीबन 30 बरस जवानी के आलम में इन्तिक़ाल फ़रमा गए थे । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को सह्राए मदीना, बाबुल मदीना कराची में दफ़न किया गया । विसाल शरीफ़ के तक्रीबन 3 साल 7 महीने 10 दिन बा'द या'नी 25 र-जबुल मुरज्जब सिने हि. 1430 ब मुताबिक 18-7-2009 हफ़्ता और इतवार की दरमियानी रात बाबुल मदीना कराची में कई घन्टे तक मूसलाधार बरसात हुई जिस की वजह से मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलहाज हाफ़िज़ मुहम्मद फ़ारूक अत्तारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की क़ब्र दरमियान से खुल गई । जो इस्लामी भाई सह्राए मदीना में हिफ़ाज़ती उमूर पर मु-तअय्यन हैं उन्होंने ने सुब्ह के वक़्त देखा कि क़ब्र से सब्ज़ रंग की रोशनी निकल रही है । आरिज़ी तौर पर क़ब्र दुरुस्त करने वाले इस्लामी भाइयों का हलफ़िया (या'नी क़सम खा कर) कुछ यूं बयान है कि हम ने देखा कि तदफ़ीन के तक्रीबन साढ़े तीन साल बा'द भी मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدْسِ سِرُّهُ السَّامِی की मुबारक लाश और कफ़न इस तरह सलामत थे कि गोया अभी अभी इन्तिक़ाल हुवा हो, तक्फ़ीन के वक़्त सर पर रखा जाने वाला सब्ज़ सब्ज़ इमामा



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउज़्ज़वाइद)

शरीफ़ आप के सरे मुबारक पर अपने जल्वे लुटा रहा था, इमामे शरीफ़ की सीधी जानिब कान के नज़्दीक आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ की जुल्फों का कुछ हिस्सा अपनी बहारें दिखा रहा था, पेशानी नूरानी थी और चेहरा मुबारक भी क़िब्ला रख था। मुफ़्तये दा'वते इस्लामी की क़ब्र मुबारक से खुशबू की ऐसी लपटें आ रही थीं कि हमारे मशामे जां मुअत्तर हो गए। क़ब्र में बारिश का पानी उतर जाने की वजह से यह इम्कान था कि क़ब्र मज़ीद धंस जाए और सिलें मर्हूम के वुजूदे मस्क्रूद को स-दमा पहुंचाएं लिहाज़ा इस वाक़िए के तक्रीबन दस रोज़ बा'द या'नी शबे बुध 6 शा'बानुल मुअज़्ज़म 1430 हि. (28-7-2009) ब शुमूल मुफ़्तयाने किराम व उ-लमाए इज़ाम हज़ारहा इस्लामी भाइयों का कसीर मज्मअ हुवा, गुलाम ज़ादा अबू उसैद हाजी उबैद रज़ा इब्ने अत्तार म-दनी سَلَّمَ اللّٰهُ عَلَیْہِ पहले से मौजूद शिगाफ़ के ज़रीए क़ब्र के अन्दर उतरे ताकि येह अन्दाज़ा लगाएं कि आया मुन्तक़िली के लिये जिस्मे मुबारक बाहर निकालने की हाज़त है या अन्दर रहते हुए भी क़ब्र शरीफ़ की ता'मीरे नौ मुम्किन है। उन्होंने ने अन्दर का जाइज़ा लिया और अन्दर ही से दा'वते इस्लामी के “दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत” के मुफ़्ती साहिब को सूरते हाल बयान की, उन्होंने ने बदन मुबारक बाहर न निकालने का हुक्म फ़रमाया, गुलाम ज़ादा हाजी उबैद रज़ा को मूवी केमेरा दिया गया चुनान्वे पुरानी क़ब्र के अन्दरुनी माहोल और ऊपर से मिट्टी वगैरा गिरने के बा वुजूद उन्होंने ने इमामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और जुल्फों के बा'ज हिस्से की काम्याब मूवी बना ली, जो कि कुछ ही देर के बा'द “सहराए मदीना” में लगाए गए मुख़्तलिफ़ स्क्रीनों पर हज़ारों इस्लामी भाइयों को दिखा दी गई, उस वक़्त लोगों के जज़्बात दीदनी थे, येह रूह परवर मन्ज़र देख कर बे शुमार इस्लामी भाई अशक़बार हो गए। उस के बा'द आने वाली रात या'नी बुध और जुमा'रात की दरमियानी शब 7 शा'बानुल मुअज़्ज़म 1430 हि. (29-7-2009) को दा'वते इस्लामी के म-दनी चैनल पर बराहे रास्त “खुसूसी म-दनी मुका-लमा” नशर किया गया जिस में दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक के लाखों नाज़िरीन को केमेरे के अन्दर महफूज़ कर्दा क़ब्र का अन्दरुनी मन्ज़र और मुफ़्तये दा'वते इस्लामी قُدْسِ سِرُّہ السّامی की तक्रीबन साढ़े तीन साल पुरानी



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक्कीक वोह बदबखा हो गया । (इन्ने सुनी)

सहीह सलामत लाश मुबारक के इमामा शरीफ़, पेशानी मुबारक और गेसू मुबारक के कुछ बालों की ज़ियारत करवाई गई । चूंकि येह ख़बर हर तरफ़ जंगल की आग की तरह फैल चुकी थी लिहाज़ा मुख़्तलिफ़ शहरों के जुदा जुदा अ़लाकों के इस्लामी भाइयों के बयानात का लुब्बे लुबाब है कि **ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमे** के दौरान कई गलियां और बाज़ार इस तरह सूने हो गए थे जिस तरह मुसलमानों के अ़लाकों में र-मज़ानुल मुबारक में इफ़तार के वक़्त होते हैं और T.V. पर घर घर से “ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमे” की आवाज़ सुनाई दे रही थी । होटलों, नाई की दुकानों वगैरा में जहां जहां T.V. सैट मौजूद थे वहां अ़वाम हुज़ूम दर हुज़ूम जम्अ हो कर **म-दनी चेनल** पर मुफ़्तिये दा’वते इस्लामी **فُؤْدِسْ سُرُّہُ السَّامِی** की म-दनी बहारों के नज़्ज़ारे कर रहे थे । एक इत्तिलाअ के मुताबिक़ म-दनी चेनल पर “ख़ुसूसी म-दनी मुका-लमा” सुन कर और मुफ़्तिये दा’वते इस्लामी **فُؤْدِسْ سُرُّہُ السَّامِی** की तक्रीबन साढ़े तीन साल पुरानी मुबारक लाश की रूह परवर झलकियां देख कर एक ग़ैर मुस्लिम मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गया । **دَا’وَتَہُ اِیْسْلَامِی** के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना ने इस सिल्सिले में शबे बराअत हि. 1430 के मुबारक मौक़अ पर एक तारीख़ी V.C.D बनाम “मुफ़्तिये दा’वते इस्लामी की जब क़ब्र खुली” जारी कर दी । ता दमे तारीख़ हज़ारों V.C.Ds फ़रोख़्त हो चुकी हैं ।

जर्बी मैली नहीं होती दहन मैला नहीं होता

ग़ुलामाने मुहम्मद का कफ़न मैला नहीं होता

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त **عَزَّوَجَلَّ** की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मरिफ़रत हो ।

امین بجاہ النبی الامین ﷺ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मारतबा सुब्द और दस मर्तबा शाम दुर्हदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मजमउर्रजवाइद)

निगरान की तब्दीली पर तश्वीश न किया करें

सुवाल : हमारे अ़लाक़ाई मुशा-वरत के निगरान को फ़ारिग़ कर दिया गया इस से बा'ज़ इस्लामी भाइयों को तश्वीश है। अब हमारे अ़लाके का म-दनी काम कैसे होगा ?

जवाब : दा'वते इस्लामी में म-दनी कामों की ज़िम्मेदारी किसी को भी उम्र भर के लिये नहीं दी जाती, हर ज़िम्मेदार की मुद्दत 12 माह मुक़रर है, इस के बा'द या तो तजदीद कर के उसे बर क़रार रखा जाता है या तब्दील कर दिया जाता है, नीज़ दा'वते इस्लामी के अज़ीम तर मफ़ाद के पेशे नज़र अहकामे शरीअत के दाएरे में रहते हुए किसी भी वक़्त किसी भी ज़िम्मेदार को फ़ारिग़ किया जा सकता है। मीअ़ाद के मुताबिक़ होने वाले तबा-दुले या तन्ज़ीमी मसालेह की बिना पर किसी की फ़राग़त पर तश्वीश हो तो इस को दबा देना आप के और दा'वते इस्लामी के हक़ में बेहतर है, सभी को अपने ज़िम्मेदारान के मु-तअल्लिक़ येह हुस्ने ज़न रखना चाहिये कि येह तन्ज़ीमी मफ़ादात को हम से ज़ियादा बेहतर समझते हैं, उन्होंने ने जो भी फैसला किया होगा सोच मसझ कर ही किया होगा। येह ज़ेहन रखना हरगिज़ मुनासिब नहीं कि फुलां चला गया तो अब म-दनी काम नहीं होगा ! बराए करम ! नज़र "सबब" पर नहीं "मुसब्बिब" या'नी सबब बनाने वाले रब عَزَّوَجَلَّ पर रखिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुसब्बिबुल अस्बाब है, वोह जिस से चाहेगा काम ले लेगा। अगर वोह किसी से मज़ीद काम लेना न चाहेगा तो जिस ने म-दनी कामों की धूमें मचा रखी हैं वोही सुस्त पड़ जाएगा या कोई भी सबब हो जाएगा जिस से काम टूट जाएगा। बे शुमार उ-लमाए रब्बानिय्यीन رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ الْغَنِیُّ दुन्या में तशरीफ़ लाए दीने इस्लाम का ख़ूब काम किया और पर्दा फ़रमा गए लेकिन चमने इस्लाम अभी तक हरा भरा लहलहा रहा है। अगर निगरान की मौकूफी बहाली पर बहूसें करते रहेंगे तो जो थोड़ा बहुत काम रहा होगा वोह भी ख़त्म हो सकता है। लिहाज़ा आप सब म-दनी काम करते रहिये اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब ख़ूब म-दनी बहारें आएंगी। दा'वते इस्लामी की



फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा विक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदवखा हो गया । (इने सुनी)

मर्कजी मजलिसे शूरा के निगरान मर्हूम हाजी मुश्ताक अत्तारी رحمة الله الباری फरमाया करते थे : हमें दा'वते इस्लामी में शख्सियत को नहीं "सिस्टम" (या'नी निज़ाम) को मजबूत करना है ।

हमें निगरान का कुसूर बताया जाए

सुवाल : जो इतने अर्से से म-दनी काम कर रहा था उस को जब मा'जूल किया है तो चलिये उस का कोई कुसूर होगा, वोह कुसूर ही बता दिया जाए ताकि अलाके के इस्लामी भाइयों की बेचैनी दूर हो ।

जवाब : देखिये मा'जूली और है और तब्दीली और, 12 माह की मुद्दत पूरी हो जाने के बा'द जिस की तब्दीली अमल में आई उस का कुसूर वार होना हरगिज़ ज़रूरी नहीं, इस बात को इस मिसाल से समझिये जैसे आप ने 12 माह में ख़ाली कर देने के मुआ-हदे पर दुकान किराए पर ली, मुद्दत पूरी हो जाने के बा'द मालिक ने दुकान वापस ले ली इस पर उस से इस का सबब पूछने का येह महल (या'नी मौक़अ) ही नहीं क्यूं कि येह तो पहले ही से तै था, इसी पर दोबारा ज़िम्मेदारी न मिलने को क़ियास कर लीजिये । हां मुद्दत पूरी होने से क़ब्ल अमल में आने वाली मा'जूली के अस्बाब हो सकते हैं म-सलन खुद अपनी मजबूरी के बाइस मुस्ता'फी हो जाना, निज्जी मस्रूफ़ियात के बाइस वक़्त न दे पाना, तन्ज़ीमी तरीक़े कार के मुताबिक़ म-दनी काम न करना, म-दनी मर्कज़ की इताअत न करना वगैरा, नीज़ बा'ज अस्बाब येह भी हैं म-सलन किसी ज़िम्मेदार का मुख़रिबे अख़लाक़ सरगर्मियों में मुलव्वस होना, म-दनी अतिय्यात में ख़ुर्द बुर्द करना, फ़ोहूश ह-र-क़त में मुब्तला हो जाना वगैरा । सबबे मा'जूली की टोह में पड़ना और "कुसूर" तलाशना गुनाहों में डाल सकता है लिहाज़ा मा'जूली की मा'लूमात न की जाए वरना क़वी इम्क़ान है कि जिस निगरान को मा'जूल किया गया उस के ऐबों पर से पर्दे उठें, उस की सुस्तियों, कोताहियों वगैरा के तज़िक़रे निकलें और यूं ग़ीबतों के दरवाज़े खुलें फिर जवाबन भी किज़्ब बयानियों, ग़ीबतों, बद गुमानियों, तोहमतों, बद अल्फ़ाबियों और दिल आज़ारियों वगैरा वगैरा गुनाहों का तूफ़ान खड़ा हो, दीन के म-दनी कामों का नुक़सान हो और



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جَسَدُ الْإِنْسَانِ عَلَيْهِ وَالْهَوَسُ مَا جِئَ بِهِ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पड़ा अल्लाह ﷻ उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

बरबादिये आखिरत का सामान हो। लिहाज़ा म-दनी इल्तिजा है कि ख़्वाह किसी को भी उस की ज़िम्मेदारी से हटाया जाए या खुद आप की ज़िम्मेदारी को तब्दील किया जाए, अपनी मजलिस के मु-तअल्लिक हुस्ने ज़न रखते हुए ख़ामोशी से सरे तस्लीम ख़म कर के महज़ रिज़ाए इलाही ﷻ के लिये सुन्नतों की ख़िदमत जारी रखिये, रूठ कर घर बैठ जाने में आप की अपनी महरूमी है। याद रखिये ! वफ़ा का इम्तिहान ओहदा दे कर नहीं ओहदा ले कर लिया जाता है। वोह शख्स किस क़दर नादान है कि जब तक उस के पास ओहदा हो, उस वक़्त तो “म-दनी मर्कज़ के फ़रमान पर जान भी कुरबान है” के ना’रे लगाता हो और जूँ ही ओहदा वापस ले लिया जाए एक दम मुख़ा-लफ़त पर उतर आए, अब तक दा’वते इस्लामी की जिन “ख़ूबियों” को बयान किया करता था वोह उस की नज़र में यक्सर “ख़ामियों” में तब्दील हो जाएं और अपना जुदागाना “ग्रूप” बना ले। कहीं इस का मतलब येह तो नहीं कि येह आज तक दीन का काम महज़ ओहदे की वजह से कर रहा था, रिज़ाए इलाही ﷻ पेशे नज़र न थी।

عَزَّوَجَلَّ
अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात

जिस दिल अन्दर इश्क़ न रचिया कुत्ते ऊस तों चंगे
मालिक दे घर राखी देंदे साबिर पख़खे नंगे
मालिक दा दर नई छड दे पावें मारो सो सो जुत्ते
उठ बुल्हिया चल यार मना ले नई ते बाज़ी ले गए कुत्ते

तमाम ओहदेदारान के लिये लाइक़े तक्लीद मिसाल : हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضي الله تعالى عنه जिन का लक़ब سيّوف الله (या’नी अल्लाह की तलवारों में से तलवार) था लश्करे इस्लाम के सिपह सालार (या’नी कमान्डर इन्चीफ़) थे, इमामुल आदिलीन, मुतम्मिमुल अर-बईन हज़रते अमीरुल मुअमिनीन, सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ’ज़म رضي الله تعالى عنه



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (इन्ने अदी)

ने आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ से सिपह सालारी का ओहदा वापस ले लिया मगर आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस फैसले को क़बूल करने से इन्कार किया न कोई मुखा-लफ़त और न ही आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़ब्र ख़िदमते इस्लाम में किसी किस्म की कोई कमी आई । मन्सब चले जाने के बा'द भी आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ एक आम सिपाही की तरह राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद फ़रमाते रहे और बहुत सी फ़तूहाते इस्लामिया म-सलन दिमिशक़, हम्स, मरअश, किन्नसरीन वगैरा में शरीक रहे । हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ के राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में कुरबानियों के ज़ब्र का आलम ही निराला था खुद ही फ़रमाते हैं : बिलफ़र्ज हर रात मुझे मेरी पसन्द की नई नवेली ख़ूब सूरत दुल्हन पेश की जाए तब भी मेरे नज़दीक़ इस से ज़ियादा प्यारी वोह रात है जो सख़्त ठन्डी हो, बर्फ़ बारी भी हो रही हो और मैं किसी सरिया (या'नी फ़ौजी दस्ते) में हूँ और दुश्मन पर शबख़ून मारूँ या'नी रातों रात हम्ला कर दूँ । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

امين بجاؤ النبی الامین صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ज़िम्मेदारी सोंपने के लिये मा'लूमात

सुवाल : दा'वते इस्लामी की तहसील मुशा-वरत का निगरान किसी को तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी देना चाहता है अगर बिगैर मा'लूमात किये ज़िम्मेदार बना देता है तो तन्ज़ीमी नुक़सान का इम्कान है और अगर मा'लूमात के लिये किसी को पूछता है तो ग़ीबतें सुनने का अन्देशा है क्या करे ?

जवाब : किसी को तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी सोंपनी हो, मुलाज़िम रखना हो, किसी के यहां मुला-ज़मत करनी हो, तिजारत वगैरा में शराक़त दार (PARTNER) बनना हो, माल उधार देना हो, किसी से किराए पर मकान लेना हो, शादी करनी हो, किसी के साथ सफ़र करना हो वगैरा वगैरा ज़रूरियात के मवाक़ेअ पर मा'लूमात हासिल करने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं बल्कि तहक़ीक़ कर लेनी चाहिये ताकि धोका न खाना पड़े । नीज़ जिस से मश्वरा लिया गया वोह "अमीन" है उस के लिये वाजिब है कि सहीह मश्वरा दे या'नी अगर वोह उस की ऐसी बुराई जानता है जिस से मश्वरा तलब करने वाले को नुक़सान हो सकता है तो बताना ज़रूरी है हां ऐसी बुराइयां ज़ाहिर न करे जिस



फरमाने मुस्तफा ﷺ: उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक पड़े। (हाकिम)

की हाजत नहीं। दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 सफ़हा 177 पर है : जिस से किसी बात का मश्वरा लिया गया वोह अगर उस शख्स का ऐब व बुराई ज़ाहिर करे जिस के मु-तअल्लिक़ मश्वरा (लिया गया) है, येह गीबत नहीं। हदीस में है : "जिस से मश्वरा लिया जाए वोह अमीन है।" लिहाज़ा उस की बुराई ज़ाहिर न करना ख़ियानत है, म-सलन किसी के यहां अपना या अपनी औलाद वगैरा का निकाह करना चाहता है, दूसरे से इस के मु-तअल्लिक़ तज़्किरा किया कि मेरा इरादा ऐसा है तुम्हारी क्या राय है ? उस शख्स को जो कुछ मा'लूमात हैं बयान कर देना गीबत नहीं। इसी तरह किसी के साथ तिजारत वगैरा में शिर्कत करना चाहता है या उस के पास कोई चीज़ अमानत रखना चाहता है या किसी के पड़ोस में सुकूनत (या'नी रिहाइश इख़्तियार) करना चाहता है और उस के मु-तअल्लिक़ दूसरे से मश्वरा लेता है येह शख्स (या'नी जिस से मश्वरा लिया गया वोह) उस की बुराई बयान करे (येह) गीबत नहीं। (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٩ ص ٦٧٥)

नेक कामों में गैर हाज़िर रहने वालों का पूछना

सुवाल : जो पहले इज्तिमाअ वगैरा में आता था और अब नहीं आता उस के बारे में किसी से येह पूछना कैसा कि फुलां आज कल नज़र नहीं आता ? ऐसे में गीबत सुनने से बचना बहुत मुश्किल लगता है कि जवाब में अक्सर गीबतें सुनने को मिलती हैं।

जवाब : पूछने में कोई हरज नहीं, हां जिस को पूछा वोह अगर ख़्वाह म ख़्वाह गीबतों पर उतर आए तो उस को फ़ौरन रोक दिया जाए। अफ़ियत इसी में है कि मुम्किन सूरत में बराहे रास्त उसी से मिल लिया जाए। जो गैर हाज़िर रहने लगा है उस पर इन्फ़रादी कोशिश करने में भी येह अन्देशा मौजूद है कि वोह किसी ज़िम्मेदार के बारे में गीबतें और गिले शिक्वे शुरूअ कर दे। अब अगर सुल्ह करवाना आप के बस में नहीं है तो उस को गीबत से बाज़ रखते हुए कोशिश कर के मु-तअल्लिक़ ज़िम्मेदार से मिलवा कर खुद हट जाइये। बहर हाल तब्लीग़ व इस्लाह की निय्यत से मा'लूमात करने में कोई हरज नहीं बल्कि जितनी अच्छी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा मिलेगा।



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (त-बरानी)

इस्लाह के हवाले से मा'लूमात करना हमारे बुजुर्गों का तरीका रहा है चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द अव्वल सफ़हा 578 पर है : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सुब्ह की नमाज़ में सुलैमान बिन अबी हसमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नहीं देखा, बाज़ार तशरीफ़ ले गए, रास्ते में सुलैमान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का घर था, उन की मां (सय्यि-दतुना) शिफ़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि सुब्ह की नमाज़ में, मैं ने सुलैमान को नहीं पाया, उन्होंने ने कहा : रात में नमाज़ पढ़ते रहे फिर नींद आ गई, फ़रमाया कि सुब्ह की नमाज़ जमाअत से पढ़ूँ, येह मेरे नज़दीक इस से बेहतर है कि रात में क़ियाम (या'नी नफ़ली इबादत) करूँ। (मوطा امام मालक ج १ ص १२६ حديث २००) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के स-दक़े हमारी मग़िफ़रत हो।

امین بجاو النبی الامین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग : आह ! “ग़ीबत” ने उम्मत की अक्सरिय्यत को निहायत ही शिद्दत के साथ अपनी हिरासत में लिया हुवा है, शैतान ग़ीबत के ज़रीए भरपूर तरीक़े पर लोगों को जहन्नम की तरफ़ धकेलता चला जा रहा है। होश में आइये ! ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग कर के एक दम मोरचे पर डट जाइये ! जिस जिस ने अब तक जिस क़दर ग़ीबतों की हों उन की तौबा और मुआफ़ी तलाफ़ी में लग जाए, अज़्मे मुसम्मम कीजिये कि “न ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे” अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस ! ग़ीबत हमारे म-दनी माहोल को दीमक की तरह चाट रही है लिहाज़ा दा'वते इस्लामी के तमाम ज़िम्मेदार इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में मेरी हाथ जोड़ कर “म-दनी इल्तिजा” है कि ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग के ज़िम्न में ग़ीबतों के दरवाज़ों पर ताले लगाते चले जाइये, अब तक जो भी आप की ज़िम्मेदारी के दौरान



फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उहुद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज्जाक)

म-दनी माहोल से दूर हुए, उन के मुआ-मले में 112 बार गौर कर लीजिये कि कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्होंने ने आप की गीबतें की हों और आप को गुस्सा आ जाने की वजह से या खुद आप ने उन की गीबतें की हों इस सबब से वोह दिल बर्दाश्ता हो कर घर जा बैठे हों। अगर ऐसा है तो अच्छी अच्छी नियतें कर के बराए रिजाए रखे अक्बर عَزَّوَجَلَّ फौरन से पेशतर मगर बुला कर नहीं, उन के पास खुद जा कर हाथ जोड़ कर पाउं पकड़ कर ऐ काश ! रो रो कर मुआफी तलाफी की तरकीब बना कर उन्हें मना कर राजी कर के गले लगा लीजिये। बल्कि हर बिछड़े हुए को तलाश कर के उन के पास भी खुद जा कर हाथ बांध कर, मिन्नत व समाजत कर के उन्हें दोबारा म-दनी माहोल में ले आइये और इन्फिरादी कोशिश के ज़रीए उन सभों को फिर से सुन्नतों की खिदमतों में मसरूफ़ कर दीजिये।” (जिन पर तन्ज़ीमी जिम्मेदारी नहीं वोह भी इसी तरह करें, हां जिन पर तन्ज़ीमी पाबन्दी लगी हो उन को न छेड़ें, उन के बारे में बड़े जिम्मेदारान जो तन्ज़ीमी फैसला करें उन पर अमल करें)

ऐ खासए खासाने रुसुल वक्ते दुआ है
छोटों में इताअत है न शफ़क़त है बड़ों में
जो कुछ है वोह सब अपने ही हाथों के है करतूत
देखे है येह दिन अपनी ही ग़फ़लत की ब दौलत
हम नेक हैं या बद फिर आख़िर हैं तुम्हारे

उम्मत पे तेरी आ के अज़ब वक़्त पड़ा है
प्यारों में महबूबत है न यारों में वफ़ा है
शिकवा है ज़माने का न किस्मत का गिला है
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है
निस्बत बहुत अच्छी है अगर हाल बुरा है

तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई

हां एक दुआ तेरी कि मक्बूले खुदा है

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُونُوْا لِی اللہِ اَسْتَغْفِرُ اللہَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनों के म-दनी चेनल देखने का शर-ई मस्अला

म-दनी चेनल की बहारों के क्या कहने ! **م-دنى چينال** देख कर बा'ज कुफ़्फ़ार को तो ईमान की दौलत ही नसीब हो गई ! नीज़ न जाने कितने ही बे नमाज़ी नमाज़ी बन गए, मु-तअद्दिद अफ़राद ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी जिन्दगी का आगाज़ कर दिया । **م-دنى چينال** सो फ़ी सदी इस्लामी चेनल है, न इस में मूसीकी है न ही औरत की नुमाइश । **م-دنى چينال** में क्या है ? इस में फैज़ाने कुरआन, फैज़ाने हदीस, फैज़ाने अम्बिया, फैज़ाने सहाबा और फैज़ाने औलिया है । इस में तिलावतें, ना'तें, मन्क़बतें हैं, दुआ व मुनाजात में इल्हाह व ज़ारी के दिल हिला देने वाले और इश्क़े रसूल में रोने, रुलाने और तड़पाने वाले रिक्क़त अंगेज़ मनाज़िर हैं, दारुल इफ़ता अहले सुन्नत, रूहानी तिब्बी इलाज, सुन्नतों भरे म-दनी फूल, आख़िरत बेहतर बनाने वाली ख़ूब म-दनी बहारें हैं । अल ग़रज़ **م-دنى چينال** एक ऐसा चेनल है कि इस के ज़रीए इन्सान घर बैठे अच्छा ख़ासा इल्मे दीन सीख सकता है ! हां इस्लामी बहनों को **م-دنى چينال** देखने से पहले 112 बार ग़ौर कर लेना चाहिये क्यूं कि म-दनी चेनल में अक्सर नौ जवानों ही के मनाज़िर होते हैं और औरत नाज़ुक शीशी है और इसे मा'मूली सी ठेस ही काफ़ी । कहीं **مَعَاذِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** वोह बद निगाही के गुनाह में न जा पड़े । **سدرُشّشَرى اَه، بَدَرُتّرى کِه** हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **مک-ت-بَتول** मदीना की मत्बूआ **بَهَارِ شَرى اَه** हिस्सा 16 सफ़्हा 86 पर फ़रमाते हैं : औरत का मर्दे अजनबी की तरफ़ नज़र करने का वोही हुक्म है जो मर्द का मर्द की तरफ़ नज़र करने का है और येह उस वक़्त है कि औरत को यकीन के साथ मा'लूम हो कि उस की तरफ़ नज़र करने से शहवत नहीं पैदा होगी और अगर इस का शुबा भी हो तो हरगिज़ नज़र न करे । (अलमगीरी जि. 5, स. 327)

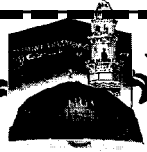
आका की हया से झुकी रहती थीं निगाहें

आंखों पे मेरी बहन लगा कुफ़ले मदीना

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى مُحَمَّدٍ



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (त-बराजी)

बा'ज मज़ामीन की
 “गीबत की तबाह
 कारियां” से मुना-सबत के
 सबब तरमीम व इज़ाफ़े के
 साथ येह रिसाला यहां
 शामिल किया गया है
 वरक़ उलटिये.....



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है। (अबू या'ला)

अफ़वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत

मअ

एक अहम म-दनी वसिय्यत

★ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ से
अहम इक्तिबासात

★ दा'वते इस्लामी से बिछड़ने वालों
के लिये इत्मामे हुज्जत

★ या अल्लाह तू गवाह रहना

★ ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग

★ मुआफ़ी तलाफ़ी कर लीजिये

★ म-दनी इल्तिजा



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा़रत है। (अबू या'ला)

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अफ़वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत

मअ

एक अहम म-दनी बशिख़ा

दुरुद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा
 صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की
 दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में
 से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरुद शरीफ़ पढ़े होंगे।

(अल्फ़रदुस बमा'तुर अख़्बाब ज ५ व ३७० हदीथ ८११०)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

म-दनी आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अफ़वो दर गुज़र : हज़रते सय्यिदुना अनस
 رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ तَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह चल
 रहा था और आप صَلَّی اللہُ तَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم एक नजरानी चादर ओढ़े हुए थे जिस के कनारे मोटे और
 खुरदरे थे। एक दम एक बदवी (या'नी अरब शरीफ़ के देहाती) ने आप صَلَّی اللہُ तَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की
 चादर मुबारक को पकड़ कर इतने ज़बर दस्त झटके से खींचा कि सुल्ताने ज़मन, महबूबे रब्बे
 जुल मिनन صَلَّی اللہُ तَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم की मुबारक गरदन पर चादर के कनारे से ख़राश आ गई, वोह
 कहने लगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का जो माल आप صَلَّی اللہُ तَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم के पास है, आप صَلَّی اللہُ तَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़अत करूंगा । (क़जुल उम्माल)

हुक्म दीजिये कि उस में से मुझे कुछ मिल जाए । रहमते आलम ﷺ उस की तरफ़ मु-तवज्जेह हुए और मुस्करा दिये फिर उसे कुछ माल अता फ़रमाने का हुक्म दिया ।

(صحيح بخارى ج ٢ ص ٣٥٩ حديث ٣١٤٩)

हर ख़ता पर मेरी चश्म पोशी, हर तलब पर अताओं की बारिश
मुझ गुनहगार पर किस क़दर हैं, मेहरबां ताजदारे मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने म-दनी आका ﷺ ने बदवी से कैसा हुस्ने सुलूक फ़रमाया, मीठे मुस्तफ़ा ﷺ के दीवानो ! ख़्वाह कोई आप को कितना ही सताए, दिल दुखाए ! अफ़वो दर गुज़र से काम लीजिये और उस के साथ महब्वत भरा सुलूक करने की कोशिश फ़रमाइये ।

हि़साब में आसानी के तीन अस्बाब : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : तीन बातें जिस शख्स में होंगी अल्लाह तआला (क़ियामत के दिन) उस का हि़साब बहुत आसान तरीक़े से लेगा और उस को अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा । सहाबाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह है, वोह कौन सी बातें हैं ? फ़रमाया : «1» जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अता करो और «2» जो तुम से क़तए तअल्लुक़ करे (या'नी तअल्लुक़ तोड़े) तुम उस से मिलाप करो और «3» जो तुम पर जुल्म करे तुम उस को मुआफ़ कर दो ।

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِي ج ٤ ص ١٨ حديث ٥٠٦٤)

जन्नत का महल : हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सुलताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रहमते आ-लमियान ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) महल बनाया जाए और उस के द-रजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो उस पर जुल्म करे येह उसे मुआफ़ करे और जो उसे महरूम करे येह उसे



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عزّوجلّ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

अता करे और जो उस से क़त्ल तअल्लुक़ करे येह उस से नाता जोड़े ।

(المُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ३ ص १२ حديث ३२१०)

मुआफ़ करने से इज़्ज़त बढ़ती है : ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल अ-लमीन

ﷺ का फ़रमाने रहमत निशान है : “स-दका देने से माल कम नहीं होता और बन्दा किसी का कुसूर मुआफ़ करे तो अल्लाह عزّوجلّ उस (मुआफ़ करने वाले) की इज़्ज़त ही बढ़ाएगा और जो अल्लाह عزّوجلّ के लिये तवाज़ोअ (या'नी आजिजी) करे, अल्लाह عزّوجلّ उसे बुलन्द फ़रमाएगा ।”

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص १३९७ حديث २०८८)

मुअज़्ज़ज़ कौन ? : हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह ﷺ ने अर्ज

की : “ऐ रब्बे आ'ला عزّوجلّ ! तेरे नज़्दीक कौन सा बन्दा ज़ियादा इज़्ज़त वाला है ?” फ़रमाया : “वोह जो बदला लेने की कुदरत के बा वुजूद मुआफ़ कर दे ।”

(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ६ ص ३१९ حديث ८३२७)

जो मुआफ़ नहीं करता उसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा : हज़रते सय्यिदुना जरीर

رضي الله تعالى عنه से मरवी है कि सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह्तशम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया : जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता और जो मुआफ़ नहीं करता उस को मुआफ़ नहीं किया जाएगा ।

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ७ ص ७१ حديث १९२६६)

दुन्या व आख़िरत के अफ़ज़ल अख़्लाक़ : हज़रते सय्यिदुना उक्बा बिन अमिर

رضي الله تعالى عنه कहते हैं कि मैं ने सुल्ताने दो जहान, सरवरे ज़ीशान, महबूबे रहमान ﷺ का दस्ते मुनव्वर थाम लिया और की मुलाक़ात का शरफ़ पाया तो फ़ौरन हुजूरे अन्वर ﷺ का दस्ते मुनव्वर थाम लिया और आप ﷺ ने मेरे हाथ को जल्दी से पकड़ लिया । फिर फ़रमाया : “ऐ उक्बा ! दुन्या व आख़िरत के अफ़ज़ल अख़्लाक़ येह हैं कि तुम उस को मिलाओ जो तुम्हें जुदा करे और जो तुम



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े । (हाकिम)

पर जुल्म करे उसे मुआफ़ कर दो और जो येह चाहे कि उम्र में दराज़ी और रिज़क़ में कुशा-दगी हो, वोह अपने रिश्तेदारों के साथ सिला रहूमी (या'नी अच्छा सुलूक) करे ।”

(المُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٥ ص ٢٢٤ حدیث ٧٢٦٧)

मुआफ़ करो मुआफ़ी पाओ : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकररमा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : “रहूम किया करो तुम पर रहूम किया जाएगा और मुआफ़ करना इख़्तियार करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआफ़ फ़रमा देगा ।”

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ٢ ص ٦٨٢ حدیث ٧٠٦٢)

हम ने ख़ता में न की तुम ने अ़ता में न की
कोई कमी सरवरा तुम पे करोड़ों दुरूद

मुआफ़ करने वालों की बे हिसाब मग़ि़रत : हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा : जिस का अज़्र अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्माए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए । पूछा जाएगा : किस के लिये अज़्र है ? वोह मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला) कहेगा : “उन लोगों के लिये जो मुआफ़ करने वाले हैं ।” तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे ।

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج ١ ص ٥٤٢ حدیث ١٩٩٨)

क़ातिलाना हम्ले की कोशिश करने वाले को मुआफ़ फ़रमा दिया : दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 862 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “सीरते मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم” सफ़हा 604 ता 605 पर है : एक सफ़र में नबिय्ये मुअज़्ज़म, रसूले मोहतरम, सरापा जूदो करम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे थे कि गौरस बिन



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

हारिस ने आप ﷺ को शहीद करने के इरादे से आप की तलवार ले कर नियाम से खींच ली, जब सरकारे नामदार ﷺ नींद से बेदार हुए तो गौरस कहने लगा : “ऐ मुहम्मद ! (ﷺ) अब आप ﷺ को मुझ से कौन बचा सकता है ?” आप ﷺ ने फ़रमाया : “अल्लाह”। नुबुव्वत की हैबत से तलवार उस के हाथ से गिर पड़ी और सरकारे अ़ली व़क़ार ﷺ ने तलवार हाथ मुबारक में ले कर फ़रमाया : अब तुम्हें मेरे हाथ से कौन बचाने वाला है ?” गौरस गिड़गिड़ा कर कहने लगा : आप ﷺ ही मेरी जान बचाइये। रहमते अ़लम ﷺ ने उस को छोड़ दिया और मुअ़फ़ फ़रमा दिया। चुनान्वे गौरस अपनी क़ौम में आ कर कहने लगा कि ऐ लोगो ! मैं ऐसे शख्स के पास से आया हूं जो दुन्या के तमाम इन्सानों में सब से बेहतर है। (الشّفا ج ۱ ص ۱۰۶)

सलाम उस पर कि जिस ने खूँ के प्यासों को क़बाएं दीं

सलाम उस पर कि जिस ने गालियां सुन कर दुआएं दीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا ﷺ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ज़ुल्म करने वाले के लिये दुआए हिदायत : ग़ज़वए उहुद में जब मदीने के सुल्तान, रहमते अ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान ﷺ के मुबारक दन्दान को शहीद और चेहरए अन्वर को ज़ख्मी कर दिया गया मगर आप ﷺ ने उन लोगों के लिये इस के सिवा कुछ भी न फ़रमाया कि اللَّهُمَّ اهْدِ قَوْمِي فَإِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ मेरी क़ौम को हिदायत दे क्यूं कि येह लोग मुझे जानते नहीं। (الشّفا ج ۱ ص ۱۰۵)

सोया किये ना-बकार बन्दे

रोया किये ज़ार ज़ार आका

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا ﷺ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक किरात अन्न लिखता है और किरात उद्द पहाड़ जितना है । (अब्दुर्रज़ाक)

जादू करने वाले से दर गुज़र : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम

صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ने इस पर लबीद बिन आ'सम ने जादू किया तो रहमते आलम صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم का बदला नहीं लिया । नीज़ उस यहूदिय्या को भी मुआफ़ फ़रमा दिया जिस ने आप صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم को ज़हर दिया था ।

(أَلْمَوَاهِبُ الدِّينِيَّةُ لِلْقَسْطَلَانِي ج ۲ ص ۹۱)

क्यूं मेरी ख़ताओं की तरफ़ देख रहे हो

जिस को है मेरी लाज वोह लजपाल बड़ा है

صَلُّوا عَلَى الْخِيَبِ ! صَلَّی اللہ تعالیٰ علی مُحَمَّد

शाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका

صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم फ़रमाती हैं कि मेरे सरताज, साहिबे मे'राज, महबूबे रब्बे बे नियाज़ صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم न तो आदतन बुरी बातें करते थे और न तकल्लुफ़न और न बाज़ारों में शोर करने वाले थे और न ही बुराई का बदला बुराई से देते थे बल्कि आप صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم मुआफ़ करते और दर गुज़र फ़रमाया करते थे ।

(سُنَنِ تَرْمِذِي ج ۳ ص ۴۰۹ حديث ۲۰۲۳)

रोज़ाना 70 बार मुआफ़ करो : एक शख्स बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और अर्ज

की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ! हम खादिम को कितनी बार मुआफ़ करें ? आप صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ख़ामोश रहे । उस ने फिर वोह सुवाल दोहराया, आप صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم फिर ख़ामोश रहे, जब तीसरी बार सुवाल किया तो इर्शाद फ़रमाया : “रोज़ाना सत्तर⁷⁰ बार ।”

(سُنَنِ تَرْمِذِي ج ۳ ص ۳۸۱ حديث ۱۹۵۶)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَان इस हदीसे पाक के

तहत फ़रमाते हैं : अ-रबी में सत्तर का लफ़ज़ बयाने ज़ियादती के लिये होता है या'नी हर दिन उसे



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

बहुत दफ़अ मुआफ़ी दो, येह इस सूरत में हो कि गुलाम से ख़ताअन ग़-लती हो जाती है ख़बासते नफ़स से न हो और कुसूर भी मालिक का ज़ाती हो शरीअत का या कौमी व मुल्की कुसूर न हो कि येह कुसूर मुआफ़ नहीं किये जाते। (मिरआत, जि. 5, स. 170)

गालियों भरे ख़ुतूत पर आ 'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ का अफ़वो दर गुज़र : काश

! हमारे अन्दर येह ज़ब्बा पैदा हो जाए कि हम अपनी ज़ात और अपने नफ़स की ख़ातिर गुस्सा करना ही छोड़ दें। जैसा कि हमारे बुजुर्गों का ज़ब्बा होता था कि उन पर कोई कितना ही जुल्म करे येह हज़रात उस ज़ालिम पर भी शफ़क़त ही फ़रमाते थे। चुनान्वे “हयाते आ 'ला हज़रत” में है, मेरे आका आ 'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में एक बार जब डाक पेश की गई तो बा'ज ख़ुतूत मुग़ल्लज़ात (या'नी गन्दी गालियों) से भरपूर थे। मो'तकिदीन बरहम (गुस्से) हुए कि हम इन लोगों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दाइर करेंगे। इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰन ने इर्शाद फ़रमाया : “जो लोग ता'रीफ़ी ख़ुतूत लिखते हैं पहले उन को जागीरें तक्सीम कर दो, फिर गालियां लिखने वालों पर मुक़द्दमा दाइर कर दो।” (हयाते आ 'ला हज़रत, जि. 1, स. 143 मुलख़ब़सन) मतलब येह कि जब ता'रीफ़ करने वालों को तो इन्आम देते नहीं फिर बुराई करने वालों से बदला क्यूं लें !

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ

अहमद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

ख़ुरशीदे इल्म उन का दरख़्शां है आज भी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

نُؤْبُوْا اِلَی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरुद्वे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तूहारत है। (अबू या'ला)

एक अहम म-दनी वसिय्यत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मेरी उम्र ता दमे तहरीर तक़रीबन 60 बरस हो चुकी है, मौत लम्हा ब लम्हा करीब आ रही है, न जाने कब आंख बन्द हो जाए। **अल्लाहु रहमान** ﷻ के दरबारे वाला शान में सला-मतिये ईमान और नज़्अ व क़ब्रो ह़शर में अम्नो अमान, बे हिसाब बख़्शिश और जन्नतुल फ़िरदौस में म-दनी सरकार ﷺ के जवार का त़लब गार हूं। मैं ने अपनी मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में दुनिया के बहुत नशीबो फ़राज़ देखे हैं, इख़लास कम और दिखावा कसीर, वफ़ा कम और खुशामद ख़तीर (या'नी ज़ियादा) है, इस से बढ़ कर भी क्या बे वफ़ाई होगी कि वोह मां बाप जिन्हों ने हज़ार एहसानात किये होते हैं मगर उन की कोई एक मा'मूली सी बात भी ना गवार गुज़र जाती है तो सारे एहसानात भुला कर, ना ख़लफ़ औलाद उन को लात मार देती है ! आह ! मक्कार व अय्यार शैतान ने कुलूब व अज़्हान में बहुत ज़ियादा ख़राबियां डाल दी हैं। **दा'वते इस्लामी** में लाखों लाख मुसल्मान शामिल हैं जैसा कि उमूमन तन्ज़ीमों में लोगों का आना जाना रहता है इसी तरह दा'वते इस्लामी से भी रूठ टूट कर कुछ अपराद को अलग होते पाया है, म-दनी माहोल से दूरी के बा'द बा'जों की बे अ-मलियों का सिल्सिला भी सामने आया है, बा'ज नाराज़ इस्लामी भाइयों ने अपना अपना जुदागाना "ग्रूप" भी बनाया है, बा'जो ने मेरे ख़िलाफ़ बहुत कुछ कहा, लिखा और दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की भी जी भर कर मुख़ा-ल-फ़तें की हैं मगर **अल्लाहु** ﷻ येह अल्फ़ाज़ लिखने तक दा'वते इस्लामी बराबर तरक्की की मनाज़िल तै कर रही है और कोई भी ग्रूप ब जाहिर अब तक दा'वते इस्लामी से आगे बढ़ना कुजा बराबरी भी नहीं करने पाया। मैं ने तन्ज़ीमी कामों में ज़िन्दगी का काफ़ी हिस्सा गुज़ारा है, लिहाज़ा अपने तजरिबात की रोशनी में तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में महूज़ आख़िरत की भलाई के पेशे नज़र हाथ जोड़ कर **म-दनी वसिय्यत** करता हूं : मेरी येह बात हमेशा के लिये गिरेह में बांध लीजिये कि मेरे जीते जी भी और मेरे मरने के बा'द भी **दा'वते इस्लामी** में एक बार शुमूलिय्यत कर लेने के बा'द दा'वते इस्लामी का तशख़्ख़ुस (म-सलन सब्ज़ इमामा शरीफ़ वगैरा) रखते हुए तरीक़ाए कार से हट कर हरगिज़ किसी किस्म का "मु-तवाज़ी ग्रूप" मत बनाइयेगा, दीन के काम के हवाले से



फरमाने मुस्ताफा ﷺ: जो मुझ पर रोजे जुम'आ दुरूद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़जुल उम्माल)

मदीनतुल
मुनव्वरह

जन्मद्वारा
अर्कीअ

मदीनतुल
मूनव्वरह



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

ऐतुल्लाह शरीफ़ की इमारत को इस लिये अहले कुरैश की बुन्यादों पर काइम रखा ताकि जो लोग नए नए इस्लाम लाए वोह किसी ग़लत फ़हमी में मुब्तला न हो जाएं । (फ़तावा र-जविय्या मुखर्रजा, जि. 7, स. 680 मुलख़बसन) ★ तन्फ़ीरे मुस्लिमीन (या'नी मुसल्मानों को नफ़रत में मुब्तला करने) से बचने के लिये ज़रूरतन मुस्तहब को तर्क कर देने का हुक्म है । जैसा कि मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ मुसल्मानों के दरमियान प्यार व महब्बत की फ़ज़ा काइम रखने का एक म-दनी उस्ूल बयान करते हुए फ़रमाते हैं : “इतयाने मुस्तहब व तर्के ग़ैरे औला पर मुदाराते ख़ल्क व मुराआते कुलूब को अहम जाने और फ़ितना व नफ़रत व ईज़ा व वहशत का बाइस होने से बहुत बचे ।” (फ़तावा र-जविय्या मुखर्रजा, जि. 4, स. 528) ★ मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ शरीअते मुतहहरा का काइदा बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ذَرُّهُ الْمَفَاسِدِ أَهْمٌ مِنْ حَلِّبِ الْمَصَالِحِ या'नी ख़राबियों के अस्बाब दूर करना ख़ूबियों के अस्बाब हासिल करने से अहम है । (फ़तावा र-जविय्या मुखर्रजा, जि. 9, स. 551)

صَلُّوا عَلَى النَّبِيِّ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

जिस ने तशख़्ख़ुस तब्दील कर लिया ! : रहे वोह हज़रात जो दा'वते इस्लामी का तशख़्ख़ुस तर्क कर चुके और बिला इजाज़ते शर-ई दा'वते इस्लामी की किसी क़िस्म की मुख़ा-लफ़त भी नहीं करते और ग़ीबतों, तोहमतों और बद गुमानियों वग़ैरा में पड़े बिग़ैर अपनी तरकीब से दीनी ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं, अल्लाह तआला उन की काविशों को क़बूल फ़रमाए । मगर वोह जो तशख़्ख़ुस तब्दील कर के अलग ग्रूप बनाने के बा'द बिला इजाज़ते शर-ई दा'वते इस्लामी की मुख़ा-लफ़त कर के नेकी की दा'वत आम करने वाली इस म-दनी तहरीक को कमज़ोर करने की मज़्मूम कोशिशों में मस्रूफ़ हों, इस मक्सद के लिये ग़ीबतों, तोहमतों, बोहतान तराशियों, बद गुमानियों, ऐब दरियों, बुरे चर्चों, इल्ज़ाम तराशियों और चुग़लियों को अपना हथियार बना लें और इसे अपने जो'मे फ़ासिद में दीन की बहुत बड़ी ख़िदमत तसव्वुर करें, ऐसों को संभल जाना चाहिये कि येह दीन की ख़िदमत नहीं, इन्तिहाई द-रजे की मज़्मूम ह-र-कत है बल्कि शरअन इन ना जाइज़ कामों का इरतिकाब कर के अपने नामए आ'माल को



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आतूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े ।

गुनाहों से पुर करना है । यूँही जो तशख़्खुस बर करार रखते हुए भी बिला इजाज़ते शर-ई दा'वते इस्लामी की मुखा-लफ़त करेगा और लोगों को मु-तनफ़िफ़र कर के (या'नी नफ़रत दिला कर) दा'वते इस्लामी और इस के तरीक़ए कार को नुक्सान पहुंचाना उस का मक्सद होगा वोह भी फ़े'ले ना जाइज़ का मुर-तकिब ठहरेगा ।

बुरा चर्चा करना ह़राम है : देखा येह गया है कि जब कोई शख्स किसी की मुखा-लफ़त पर उतर आता है तो ख़्वाह म ख़्वाह उस पर तन्कीदें करता, बाल की खाल उतारता और उस की ख़ामियों या ख़ताओं का बुरा चर्चा करता फिरता है (मगर जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बचाए) । जब उन की आपस में बनती थी तो इसे गोया उस के पसीने में से भी खुशबू आती थी अब नाराज़ी के बा'द उस का इत्र भी बदबूदार लगता है । याद रखिये ! किसी मुबल्लिग़ बिल खुसूस सुन्नी अ़ालिम की किसी ख़ामी या ख़ता को बिला मस्लहते शर-ई किसी पर ज़ाहिर करना या लोगों में उस का बुरा चर्चा करना नेकी की दा'वत और इस्लाम की तब्लीग़ के काम के मुआ-मले में बहुत, बहुत और बहुत नुक्सान देह और आख़िरत में बाइसे अज़ाब है, मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 29 सफ़हा 594 पर फ़रमाते हैं : “और अहले सुन्नत से ब तक्दीरे इलाही जो ऐसी लग़िशो फ़ाहिश वाक़ेअ हो उस का इख़फ़ा (या'नी छुपाना) वाजिब है कि مَعَاذُ اللّٰهِ लोग उन से बद ए'तिक़ाद होंगे तो जो नफ़अ उन की तक्रीर और तहरीर से इस्लाम व सुन्नत को पहुंचता था उस में ख़लल वाक़ेअ होगा । इस की इशाअत, इशाअते फ़ाहिशा (या'नी बुरा चर्चा करना) है । और इशाअते फ़ाहिशा ब नस्से कुरआने अज़ीम ह़राम, قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی (या'नी अल्लाह तआला फरमाता है)

إِنَّ الَّذِينَ يُجِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ
فِي الَّذِينَ أَمْسُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ط (پ ۱۸ النور ۱۹)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह लोग जो चाहते हैं कि मुसल्मानों में बुरा चर्चा फैले उन के लिये दर्दनाक अज़ाब है दुन्या और आख़िरत में ।”

(फ़तावा र-ज़विय्या , जि. 29, स. 594)



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त्हायत है। (अबू या'ला)

दा 'वते इस्लामी से बिछड़ने वालों के लिये इत्मा मे हुज्जत : जो आज तक मुझ से नाराज़ हो कर या मर्कज़ी मजलिसे शूरा से रूठ कर जुदा हो गए, उन में से जिन जिन की मेरी वजह से दिल आज़ारी या किसी किसम की हक़ त-लफ़ी हुई हो उन से हाथ जोड़ कर मुआफ़ी का तलब गार हूं, दोनों गुलाम ज़ादे और निगरान व अराकीने शूरा भी मुआफ़ी मांग रहे हैं, मुझे और इन्हें ख़ुदा व मुस्तफ़ा ﷺ के लिये मुआफ़ मुआफ़ और मुआफ़ फ़रमा दें। हम सब ने भी रिज़ाए ख़ुदा व मुस्तफ़ा ﷺ के लिये उन सब को जिन्हों ने हक़ त-लफ़ियां की हों उन को मुआफ़ किया। नाराज़ हो कर या इख़िलाफ़ कर के जिन्हों ने अपनी अपनी तन्ज़ीमें काइम कीं, जुदागाना ग्रूप बनाए उन सभी को खुले दिल से दा'वत देता हूं कि अल्लाह व रसूल ﷺ का वासिता सुल्ह फ़रमा लें, मद्हज़ रिज़ाए इलाही की ख़ातिर, मैं हर नाराज़ मुसल्मान से ग़ैर मशरूत तौर पर भी सुल्ह के लिये तय्यार हूं। हां जो तन्ज़ीमी इख़िलाफ़ात को मुज़ाकरात के ज़रीए हल कर के सुल्ह करना चाहते हैं उन के लिये भी दरवाज़े खुले हैं, जल्दी राबिता कीजिये और मर्कज़ी मजलिसे शूरा के साथ बैठ जाइये। अगर आप हुक्म फ़रमाएंगे तो मुम्किना सूरत में **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** शूरा के साथ साथ मैं भी बैठ जाऊंगा। आइये, आ जाइये, अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत और ताजदारे रिसालत **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की निगाहे इनायत से मुत्तहिद हो कर शैतान के हथकन्डों को नाकाम बनाते हैं, **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** मिलजुल कर दीन का ख़ूब म-दनी काम करेंगे।

अगर आप दा 'वते इस्लामी के साथ काम करना नहीं चाहते तो.....: अगर कोई नाराज़ इस्लामी भाई दा 'वते इस्लामी के साथ मिल कर म-दनी काम नहीं करना चाहता तो कम अज़ कम ना राज़ियां ही दूर कर के हमें मुआफ़ी से नवाज़ दे और इस पर हमें मुत्तलअ कर के मुसल्मान का दिल खुश करने के सवाब का हक़दार बने कि इस तरह **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** नफ़रतें मिटेंगी, फ़ासिले सिमटेंगे और शैतान मरदूद का मुंह काला और मुआफ़ करने वाले का मुंह उज्याला होगा। एक बार फिर इस हदीसे पाक का वासिता दे कर हम मुआफ़ी मांगते हैं जिस में हमारे मक्की म-दनी आका मीठे मीठे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इर्शाद फ़रमाया है : “जो कोई अपने



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़अत करूंगा । (कन्जुल उम्माल)

मुसलमान भाई से मा'ज़िरत करे और वोह (बिला इजाज़ते शर-ई) उस का उज़्र क़बूल न करे तो उसे हौज़े कौसर पर हाज़िर होना नसीब न होगा ।” (۳۷۶ حدیث ۱۲۹۰) याद रखिये ! इस तरह की बात करना हरगिज़ मुनासिब नहीं कि इल्यास को हमारे पास खुद आना चाहिये अगर खुद नहीं आ सकता तो निगराने शूरा या किसी रुक्ने शूरा ही को हमारे पास या हमारे फुलां “बड़े” के पास भेज दे । इस तरह की बातें करने वाले के बारे में येह वस्वसे आ सकते हैं कि येह सुल्ह करना नहीं चाहते इस लिये टालम टोल से काम ले रहे हैं, जब हम ने तहरीर की सूरत में पहल कर ही दी है तो मुख़िलसीन के लिये रुकावट किस चीज़ की है ! हर नाराज़ इस्लामी भाई को चाहिये कि रिज़ाए इलाही ﷺ की खातिर आगे बढ़े और गले लग जाए । अगर आ कर मिलना नहीं चाहता तो किसी भी रुक्ने शूरा से कम अज़ कम फ़ोन ही पर राबिता कर ले ।

عَزَّوَجَلَّ
अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

या अल्लाह ﷺ तू गवाह रहना : या रब्बे मुस्तफ़ा ﷺ ! तू गवाह रहना मैं ने अपने बिछड़े हुए इस्लामी भाइयों के लिये सुल्ह का पैग़ाम मुश्तहर कर दिया है । ऐ मेरे प्यारे प्यारे अल्लाह ﷺ ! मेरे नाराज़ इस्लामी भाइयों के दिलों में मुझ मिस्कीन के लिये रहम डाल दे कि वोह मुझे मुआफ़ी की भीक दे कर मुझ से सुल्ह कर लें, या अल्लाह ﷺ ! तू मेरे दिल के हाल से बा ख़बर है कि इस सुल्ह की दर-ख़्वास्त में मेरा अस्ल मक्सद सिर्फ़ सिर्फ़ और सिर्फ़ उख़्ख़वी मफ़ाद है, मैं मरने से पहले पहले फ़क़त तेरी रिज़ा के लिये हर नाराज़ मुसलमान से सुल्ह करना और अपने रूठे हुए इस्लामी भाइयों को मना लेना चाहता हूँ । या अल्लाह ﷺ ! मैं तेरी ख़ुफ़या तदबीर से बहुत डरता हूँ, ऐ मेरे प्यारे परवर्द गार ﷺ ! तू कभी भी मुझ से नाराज़ न होना, मेरे पाक परवर्द गार ﷺ ! मेरा



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा। (इब्ने अदी)

ईमान एक लम्हे के करोड़वें हिस्से के लिये भी कभी मुझ से जुदा न हो, **या अल्लाह**! मेरी और मेरे रूठे हुए तमाम इस्लामी भाइयों समेत हर दा'वते इस्लामी वाले और वाली की बे हिसाब बख़्शिश फ़रमा। **या अल्लाह**! अपने प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सड़के सारी उम्मत की मग़िफ़रत फ़रमा। **या अल्लाह**! हमारी सफ़ों में इत्तिहाद पैदा फ़रमा। **या अल्लाह**! हमें ज़ेहनी हम आहंगी नसीब फ़रमा, **या अल्लाह**! हमें बिला त-लबे मन्सब एक साथ मिल कर इख़लास के साथ तेरे दीन की ख़िदमत की सआदत इनायत फ़रमा।

अमिन بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सुन्नतें आम करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसलमान मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग : आह! "ग़ीबत" ने उम्मत की अक्सरिय्यत को निहायत शिद्दत के साथ अपनी हिरासत में लिया हुआ है, शैतान ग़ीबत के ज़रीए भरपूर तरीक़े पर लोगों को जहन्नम की तरफ़ धकेलता चला जा रहा है। होश में आइये! ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग कर के एक दम मोरचे पर डट जाइये! जिस जिस ने अब तक जिस क़दर ग़ीबतों की हों उन की तौबा और मुआफ़ी तलाफ़ी में लग जाए, अज़्मे मुसम्म कीजिये कि "न ग़ीबत करेंगे न सुनेंगे" (اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ) अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस! ग़ीबत हमारे म-दनी माहोल को दीमक की तरह चाट रही है लिहाज़ा दा'वते इस्लामी के तमाम ज़िम्मेदार इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में मेरी हाथ जोड़ कर "म-दनी इल्तिजा" है कि ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग के ज़िम्न में ग़ीबतों के दरवाज़ों पर ताले लगाते चले जाइये, अब तक जो भी आप की ज़िम्मेदारी



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े । (हाकिम)

के दौरान म-दनी माहोल से दूर हुए, उन के मुआ-मले में 112 बार गौर कर लीजिये कि कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्होंने ने आप की ग़ीबतें की हों और आप को गुस्सा आ जाने की वजह से या खुद आप ने उन की ग़ीबतें की हों इस सबब से वोह दिल बरदाश्ता हो कर घर जा बैठे हों। अगर ऐसा है तो अच्छी अच्छी निय्यतें कर के बराए रिज़ाए रखे अक्बर عَزَّوَجَلَّ फ़ौरन से पेशतर मगर बुला कर नहीं, खुद उन के पास जा कर हाथ जोड़ कर पाउं पकड़ कर ऐ काश ! रो रो कर मुआफ़ी तलाफ़ी की तरकीब बना कर उन्हें मना कर राज़ी कर के गले लगा लीजिये। बल्कि हर बिछड़े हुए को तलाश कर के उन के पास भी खुद जा कर हाथ बांध कर, मिन्नत व समाजत कर के उन्हें दोबारा म-दनी माहोल में ले आइये और इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए उन सभों को फिर से सुन्नतों की ख़िदमतों में मस्रूफ़ कर दीजिये। (जिन पर तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी नहीं वोह भी इसी तरह करें, हां जिन पर तन्ज़ीमी पाबन्दी लगी हो उन को मत छेड़िये, उन के बारे में बड़े ज़िम्मेदारान जो तन्ज़ीमी फैसला करें उन पर अमल कीजिये)

ऐ खासए खासाने रुसुल वक्ते दुआ है
छोटों में इताअत है न शफ़क़त है बड़ों में
जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत
देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़लत की बदौलत
हम नेक हैं या बद हैं फिर आख़िर हैं तुम्हारे

उम्मत पे तेरी आ के अज़ब वक़्त पड़ा है
प्यारों में महब्बत है न यारों में वफ़ा है
शिकवा है ज़माने का न किस्मत का गिला है
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है
निस्बत बहुत अच्छी है अगर हाल बुरा है

तदबीर संभलने की हमारे नहीं कोई

हां एक दुआ तेरी कि मक्बूले खुदा है

मैं ने इल्यास कादिरी को मुआफ़ किया : तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से दस्त बस्ता आजिज़ाना अर्ज़ करता हूं कि अगर मैं ने नीज़ गुलाम जादों और निगरान व अराकीने



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (त-बरानी)

मर्कज़ी मजलिसे शूरा में से जिस जिस ने आप में से किसी की ग़ीबत की हो, तोहमत धरी हो, डांट पिलाई हो, किसी तरह से दिल आज़ारी की हो मुझे और उन्हें मुआफ़ मुआफ़ और मुआफ़ फ़रमा दीजिये। जान व माल, अहलो इयाल और इज़्ज़त आबरू में दुनिया के अन्दर जो छोटे से छोटे और बड़े से बड़े हुकूकुल इबाद (या'नी बन्दों के हुकूक) तसव्वुर किये जा सकते हैं, फ़र्ज़ कीजिये कि वोह हुकूक मैं ने, गुलाम ज़ादों और निगरान व अराकीने शूरा ने आप के तलफ़ (या'नी ज़ाएअ) कर दिये हैं, उन तमाम हुकूक को ज़ेहन में रखते हुए हमारे सबब से तलफ़ शुदा हुकूक मुआफ़ मुआफ़ और मुआफ़ फ़रमा कर सवाबे अज़ीम के हक़दार बनिये। हाथ बांध कर म-दनी इल्तिजा है कि कम अज़ कम एक बार दिल की गहराई के साथ कह दीजिये : “मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-ज़वी, गुलाम ज़ादों और निगरान व अराकीने शूरा को मुआफ़ किया।” हम सब ने भी हमारी तमाम छोटी बड़ी हक़ त-लफ़ियां करने वालों को अल्लाह व रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खातिर मुआफ़ किया।

फ़र्ज़ ख़्वाहों से म-दनी इल्तिजा : जिस का मुझ पर फ़र्ज़ आता हो या मैं ने कोई चीज़ आरिख्यतन ली हो और वापस न लौटाई हो तो वोह दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान या गुलाम ज़ादों से रुजूअ करे, अगर वुसूल करना नहीं चाहता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआफ़ी की भीक से नवाज़ कर सवाबे आख़िरत का हक़दार बने। जो लोग मेरे मक्रूज़ हैं, उन को मैं ने अपने तमाम ज़ाती फ़र्ज़ मुआफ़ किये। या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

तू बे हिसाब बख़्शा कि हैं बे हिसाब जुर्म

देता हूं वासिता तुझे शाहे हिजाज़ का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد



फरमाने मुसफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक किरात अज़ लिखता है और किरात उदुद पहाड़ जितना है। (अब्दुर्रज़ाक)

गूंगी बोल उठी !

गीबत करने सुनने की आदत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आदत डालने के लिये दा 'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में पाबन्दी से शिर्कत फ़रमाइये, सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आमत के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना फ़िक़रे मदीना के ज़रीए रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाइये आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक म-दनी बहार पेश की जाती है। चुनान्वे ज़िल्अ ख़ोशाब (पाकिस्तान) के किसी गाउं में एक इस्लामी बहन की यकायक ज़बान बन्द हो गई, किसी इलाज से फ़ाएदा न हुवा, ब ग-रजे इलाज इन्हें बाबुल मदीना (कराची) लाया गया, यहां भी डॉक्टरी इलाज कारगर न हुवा, इन की ज़बान बन्द हुए तक़रीबन 6 माह गुज़र चुके थे, इन को तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा 'वते इस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के तहख़ाने में हर इतवार को दो पहर तक़रीबन ढाई बजे होने वाले इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में हाज़िरी की सआदत हासिल हुई। वहां एक इस्लामी बहन ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुसल्सल 12 इज्तिमाअ के अन्दर हाज़िरी देने के लिये उन को राज़ी किया, तरतीब वार शिर्कत करते हुए 8 र-मज़ानुल मुबारक 1430 हि. को उन का छटा इज्तिमाअ था, इस इज्तिमाअ के इख़िताम पर पढ़े जाने वाले सलातो सलाम के दौरान اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अचानक वोह गूंगी इस्लामी बहन बोल उठी !

هَیْیَ اللّٰهُ تَعَالٰی غَنِّہَا
हज़रते शब्बीरो शब्बर के तुफ़ैल

عَلٰی اللّٰهُ تَعَالٰی غَلِّہُ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
टाल हर आफ़त ऐ नानाए हुसैन

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلٰی اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْبِ ا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

“मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है” के बाईस हुरूफ़ की निस्खत से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 म-दनी फूल



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।
(حلیۃ الاولیاء ج ۱۰ ص ۴۵ رقم ۱۴۴۶)



सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “अल्लाह तआला उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी हदीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।”
(سُنَنِ تِرْمِذِی ج ۴ ص ۲۹۸ حدیث ۲۶۶۵)



हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَی نَبِیْنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नामे मुबारक की एक हिकमत येह भी है कि कुतुबे इलाहियह की कस्रते दर्सी तदरीस के बाइस आप عَلَی नَبِیْنَا وَعَلِیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम इदरीस हुवा।
(تفسیر کبیر ج ۷ ص ۵۰، تفسیر الحسنات ج ۴ ص ۴۸)



हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं، دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قَطْبًا (या'नी मैं इल्म का दर्स लेता रहा यहां तक कि मक़ामे कुत्बियत पर फ़ाइज़ हो गया)
(«U' l'» °K' A' k)



फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देना भी दा'वते इस्लामी का एक म-दनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कौलेज, चौक वगैरा में वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना दर्स के ज़रीए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के म-दनी फूल लुटाइये और ढेरों सवाब कमाइये।



फ़ैज़ाने सुन्नत से रोज़ाना कम अज़ कम दो दर्स देने या सुनने की सआदत हासिल कीजिये।



पारह 28 सू-रतुत्तहरीम की छठी आयत में इर्शाद होता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ

نَارًا وَقُوْذًا لِّلنَّاسِ وَالْجَارَاتِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईधन आदमी और पथ्थर हैं।

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स भी है। (दर्स के इलावा सुन्नतों भरे बयान या



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (अबू या'ला)

म-दनी मुज़ाकरे का रोज़ाना एक केसिट भी घर वालों को सुनाइये)

ज़िम्मादार घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना चौक दर्स का एहतिमाम करें । म-सलन रात 9 बजे मदीना चौक (साढ़े नव बजे) बग़दादी चौक में वग़ैरा । छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर चौक दर्स का एहतिमाम कीजिये । (मगर हुकूके आम्मा तलफ़ न हों म-सलन मुसल्मानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे) दर्स के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें ।

दर्स वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत अदा फ़रमाइये ।

मेहराब से हट कर (सेहून वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़सूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो ।

ज़ैली निगरान को चाहिये कि अपनी मस्जिद में दो ख़ैर ख़्वाह मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़अ पर जाने वालों को नरमी से रोके और सब को करीब करीब बिठाएं ।

पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर दर्स दीजिये । अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े हो कर या माईक पर देने में भी हरज नहीं जब कि नमाज़ियों वग़ैरा को तशवीश न हो ।

आवाज़ न तो ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिल्कुल आहिस्ता हत्तल इम्कान इतनी आवाज़ से दर्स दीजिये कि सिर्फ़ हाज़िरीन सुन सकें । इस बात की हमेशा एहतियात फ़रमाइये कि दर्स व बयान की आवाज़ से किसी सोते हुए या किसी नमाज़ी या मशगूले तिलावत वग़ैरा को तकलीफ़ न हो ।

दर्स हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये ।

जो कुछ दर्स देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुता-लआ कर लीजिये ताकि ग़-लतियां न हों ।

फ़ैज़ाने सुन्नत के मुअर्रब अल्फ़ाज़ ए'राब के मुताबिक़ ही अदा कीजिये इस तरह **तलफ़फ़ुज़** की दुरुस्त अदाएगी की आदत बनेगी ।

हम्द व सलात, दुरुदो सलाम के दोनों सीगे, आयते दुरुद और इख़ितामी आयात वग़ैरा



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़अत करूंगा । (कन्जुल उम्माल)

किसी सुन्नी आलिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये । इसी तरह अ-रबी दुआएं वगैरा जब तक उ-लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में भी न पढ़ा करें ।

फ़ैज़ाने सुन्नत के इलावा **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ होने वाले **म-दनी रसाइल** से भी **दर्स** दे सकते हैं ।¹

दर्स मअ इख़ितामी दुआ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये ।

हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह **दर्स का तरीक़ा**, बा'द की **तरगीब** और **इख़ितामी** दुआ ज़बानी याद कर ले ।

दर्स के तरीक़े में इस्लामी बहनें हस्बे ज़रूरत तरमीम कर लें ।

फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का तरीक़ा

तीन बार इस तरह ए'लान फ़रमाइये : क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये । पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस तरह इब्तिदा कीजिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَتَاْبَعُوْا عَوْدًا بِاَللّٰهِ مِنَ السَّيِّئِيْنَ الرَّجِيْمِيْنَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इस के बा'द इस तरह दुरुदो सलाम पढीये :

وَعَلٰی الْكَ وَاصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

وَعَلٰی الْكَ وَاصْحَابِكَ يَا نُوْرَ اللّٰهِ

अगर मस्जिद में हैं तो इस तरह ए'तिकाफ़ की निय्यत करवाइये :

نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَافِ (तरजमा : मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

फिर इस तरह कहिये : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़रीब क़रीब आ कर दर्स की ता'ज़ीम की निय्यत से हो सके तो दो ज़ानू बैठ जाइये अगर थक जाएं तो जिस तरह आप को आसानी हो उसी तरह बैठ कर निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ **फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स** सुनिये कि ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास बदल या बालों वगैरा को सहलाते हुए सुनने से इस की ब-र-कतें ज़ाइल होने का अन्देशा है । (बयान के आगाज़ में भी इसी अन्दाज़ में तरगीब दिलाइये) येह कहने के बा'द **फ़ैज़ाने सुन्नत** से देख कर दुरुद शरीफ़ की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिये । फिर कहिये :

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِيْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये । आयात व अ-रबी इबारात का सिर्फ़ तरजमा पढ़िये । किसी भी आयत या हदीस का अपनी राय से हरगिज़ खुलासा मत कीजिये ।

لَدَيْنَا

1 : अमीरे अहले सुन्नत عَلَيْهِ السَّلَام के रसाइल के इलावा किसी और किताब से दर्स की इजाज़त नहीं ।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़अत करूंगा । (कन्जुल उम्माल)

किसी सुन्नी आलिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये । इसी तरह अ-रबी दुआएं वगैरा जब तक उ-लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में भी न पढ़ा करें ।

फ़ैज़ाने सुन्नत के इलावा **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ होने वाले **म-दनी रसाइल** से भी **दर्स** दे सकते हैं ।¹

दर्स मअ इख़ितामी दुआ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये ।

हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह **दर्स का तरीक़ा**, बा'द की **तरगीब** और **इख़ितामी** दुआ ज़बानी याद कर ले ।

दर्स के तरीक़े में इस्लामी बहनें हस्बे ज़रूरत तरमीम कर लें ।

फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का तरीक़ा

तीन बार इस तरह ए'लान फ़रमाइये : क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये । पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस तरह इब्तिदा कीजिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَتَاْبَعُوْا عَوْدًا بِاَللّٰهِ مِنَ السَّيِّئِيْنَ الرَّجِيْمِيْنَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इस के बा'द इस तरह दुरुदो सलाम पढीये :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَعَلٰی الْاٰلِ وَاصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا نَبِیَّ اللّٰهِ وَعَلٰی الْاٰلِ وَاصْحَابِكَ يَا نُوْرَ اللّٰهِ

अगर मस्जिद में हैं तो इस तरह ए'तिकाफ़ की निय्यत करवाइये :

نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَافِ (तरजमा : मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

फिर इस तरह कहिये : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़रीब क़रीब आ कर दर्स की ता'ज़ीम की निय्यत से हो सके तो दो ज़ानू बैठ जाइये अगर थक जाएं तो जिस तरह आप को आसानी हो उसी तरह बैठ कर निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ **फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स** सुनिये कि ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास बदल या बालों वगैरा को सहलाते हुए सुनने से इस की ब-र-कतें ज़ाइल होने का अन्देशा है । (बयान के आगाज़ में भी इसी अन्दाज़ में तरगीब दिलाइये) येह कहने के बा'द **फ़ैज़ाने सुन्नत** से देख कर दुरुद शरीफ़ की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिये । फिर कहिये :

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِيْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये । आयात व अ-रबी इबारात का सिर्फ़ तरजमा पढ़िये । किसी भी आयत या हदीस का अपनी राय से हरगिज़ खुलासा मत कीजिये ।

لَدَيْنَا

1 : अमीरे अहले सुन्नत عَلَيْهِ السَّلَام के रसाइल के इलावा किसी और किताब से दर्स की इजाज़त नहीं ।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

दर्स के आख़िर में इस तरह तरगीब दिलाइये

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्स व बयान के आख़िर में बिला कमी व बेशी इसी तरह तरगीब दिलाया करे)

تَبْلِيغِي كُرْآنُو سُنَنَتِ كِي اَآلَمْغِيرِ غَيْرِ سِيْیَاسِی تَهْرِیكِ دَا 'وَتِے اِस्लَامِی كِ مَهْكَ مَهْكَ م-دَنِی مَآهْل مِے ب كَسْرَت سُنَنَتِے سِیْخِی اُور سِیْخَآءِ جَآتِی هِے । (अपने यहां के हफ़्तावार इज्तिमाअ का ए'लान इस तरह कीजिये म-सलन अहमदआबाद वाले कहें) हर जुमा'रात को फ़ैज़ाने मदीना त्री कोनिया बगीचे के पास मिरज़ा पूर में इशा की नमाज़ के बा'द होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है । अशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक़्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़्त करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा । हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है । اِنْ شَآءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये म-दनी इन्आमात पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है । اِنْ شَآءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

اَللّٰهُ كَرَمَ اِیْسَا كَرِے تُوْझ पे जहां में ऐ दा 'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

आख़िर में खुशूअ व खुजूअ (या'नी बदन की अजिजी व इन्क़िसारी और दिल व दिमाग़ की हाज़िरी) के साथ दुआ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुए बिला कमी व बेशी इस तरह दुआ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ؕ

या रब्बे मुस्तफ़ा ﷺ ! ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा ﷺ हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़ि़रत फ़रमा । या अल्लाह ﷻ ! दर्स की ग़-लतियां और तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमा, अमल का ज़ब्बा दे, हमें परहेज़ गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना । या अल्लाह ﷻ ! हमें अपना और अपने म-दनी हबीब ﷺ का मुख़्लिस अशिक़ बना । हमें गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा अता फ़रमा । या अल्लाह ﷻ ! हमें म-दनी इन्आमात पर अमल करने, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और इन्फ़रादी कोशिश के ज़रीए दूसरों को भी म-दनी कामों की तरगीब दिलवाने का ज़ब्बा अता फ़रमा । या अल्लाह ﷻ ! मुसल्मानों को बीमारियों, क़र्ज दारियों, बे रूज़गारियों, बे औलादियों, बे जा मुक़द्दमा बाज़ियों और तरह तरह की



फरमाने मुस्तफा ﷺ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक पड़े ।

परेशानियों से नजात अता फरमा । या अल्लाह ! इस्लाम का बोल बाला कर और दुश्मनाने इस्लाम का मुंह काला कर । या अल्लाह ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिफामत अता फरमा । या अल्लाह ! हमें जेरे गुम्बदे खजरा जल्वए महबूब ﷺ का पड़ोस नसीब फरमा । या अल्लाह ! मदीने की खुशबूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासिता हमारी तमाम जाइज दुआएं कबूल फरमा ।

जिस किसी ने भी दुआ के वासिते या रब कहा
कर दे पूरी आरजू हर बे कसो मजबूर की

امين بجاہ النبی الامین ﷺ

शे'र के बा'द येह आयते दुरुद और दुआ की इखितामी आयात पढ़िये :

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

सब दुरुद शरीफ पढ़ लें फिर पढ़िये :
سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبَّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝
وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ۝ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

दर्स की कमाई पाने के लिये (खड़े खड़े नहीं बल्कि) बैठ कर खन्दा पेशानी के साथ लोगों से मुलाकात कीजिये, चन्द नए इस्लामी भाइयों को अपने करीब बिठा लीजिये और इन्फिरादी कोशिश के जरीए उन्हें म-दनी इन्आमात और म-दनी काफिलों की ब-र-कतें समझाइये ।

तुम्हें ऐ मुबल्लिग येह मेरी दुआ है
किये जाओ तै तुम तरक्की का ज़ीना

दुआए अत्तार : या अल्लाह ! मुझे और पाबन्दी के साथ फ़ैज़ाने सुन्नत से रोज़ाना कम अज़ कम दो दर्स एक घर में दूसरा मस्जिद, चौक या स्कूल वगैरा में देने और सुनने वाले की मरिफ़रत फरमा और हमें हुस्ने अख़लाक का पैकर बना ।

امين بجاہ النبی الامین ﷺ

मुझे दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तौफ़ीक़ मिले दिन में दो² मरतबा या इलाही